

मानव अर्थशास्त्र

धर्मदत्तश्च कामश्च ।

नरहरि द्वारपादास परीक्ष
अनुवाक
रामनारायण चौधरी



नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
महमदाबाद-१४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजा टात्याभाई दगान
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद-१४

© नवजीवन ट्रस्ट १९६४

पहला आवृत्ति १०००

जो अर्थशास्त्र किसी भी व्यक्ति या राष्ट्रके विकास अथवा कल्याणमें
रुकावट डालता है और जो एक देशको दूसरे देशमें लूट चलानेकी
छूट देता है वह अर्थशास्त्र अनीतिमय है पापरूप है।

यम इंडिया १३-१०-२१

गाधीजी

'हमारे गांव पामाल हो गये ह क्योंकि हमें सच्च अर्थशास्त्र और
सच्चे समाजशास्त्रका ज्ञान नहीं है।

यम इंडिया १३-३-२७

गाधीजी

प्रकाशकका निवेदन

मानव अथगाम्त्र का मूल गुजराती सस्करण सन १९४५ में नवजीवन द्वारा प्रकाशित किया गया था। उसके ग्यारह वर्ष बाद उत्तरी द्वारी आवृत्ति प्रकाशित हुई। इस बीच भाग्य स्वतंत्र हुआ और जगमें अनेक परिवर्तन हुए। एक पंचवर्षीय योजना पूरी हुई और दूसरी पंचवर्षीय योजना आरम्भ हुई। पुस्तकका दूसरा आवृत्ति प्रकाशित करने समय जगमें विधि सथापन और परिवर्तन करना समय न हो सका। परन्तु मूल गुजराती पुस्तकका हिन्दी अनुवाद कराने समय उसमें आवश्यक परिवर्तन करवा लेना हमें उचित मालूम आ। हमारा विनताम श्री विठ्ठलदास काठारी यह कार्य अपने हाथमें लिया। मूल गुजराती पुस्तक पहली बार प्रकाशित हुई उसका पूर्व श्री विठ्ठलदासभाई उस आघोषात देण गय थ और उनके विषयमें उन्होंने उपमाणा सूचनायें भी की थी। पुस्तक प्रकाशित होनेके बाद श्री काठारीने वर्षों तक गुजरात विद्यापीठके महाविद्यालयमें इस पुस्तकका उपयोग किया है। अपन इसी अनुभवके आधार पर मूल पुस्तककी दूसरी आवृत्तिमें जा परिवर्तन करना उह उचित लगा वह सब करके उन्होंने उसे अद्यतन बनानेका प्रयत्न किया है।

आशा है यह हिन्दी सस्करण अथशास्त्र-मन्व-की गाधीवादी दृष्टि पर प्रमाण डालनेमें सहायक होगा और विद्यार्थियों तथा सामान्य पाठकोंके लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। इस सस्करणके विषयमें प्राध्यापक गण और पाठक अपने अनुभव और सूचनायें दृष्ट्या हमें भजेंगे, तो इसकी दूसरी आवृत्तिक समय उन पर ध्यान दिया जायगा।

श्री विठ्ठलदास काठारीने कठिन परिश्रम करके मूल पुस्तकको अद्यतन बनाया उसीके फलस्वरूप हम यह हिन्दी सस्करण पाठकोंके सामने रख सके हैं। इसके लिए हम श्री विठ्ठलदासभाईके हृदयसे आभारी हैं।

लेखकका निवेदन

[पहली आवृत्ति]

सन १९३० में नासिक जेम्में श्री किशोरलालभाई और म पाम पास विस्तर लगाकर काफी समय तक साथ रहे थे। अथ अनेक वानोक साथ हमन अपन देगरे आशिर प्रश्नोकी भी खासी छानवीन की। कम्युनिस्ट मित्राके साथ भी हमारी काफी चर्चाए होनी था। इसने मिया कुछ विद्यार्थी मेरे पाम गावोके प्रश्न हल कराने और खादीका अयगास्त्र पन्न आने थे। इसने स्वा भाविक रूपमें ही अयगास्त्रक सिद्धान्ताकी चर्चा कभी कभी निकरनी थी और यह कभी भी महसूस होती थी कि इस विषय पर गुजरानीमें कोई अच्छा पुस्तक नहीं है। श्री किशोरलालभाई मुझे बार बार कहा करते थे कि आप अयगास्त्र पर एक पुस्तक लिख डालिये। मैं कहता इसने लिए बहुत पुस्तकें पन्नी पडगी। इतना समय म कहासे निकारू? तब व कहने 'कोई भी पुस्तक दने माल बिना जा कुछ स्मरण हो रही विद्यार्थियाके साथ वानचीन करते हा इम ढगने अपना नई दष्टिम लिख डालिये।' नासिक जेम्मे ता हम सजा पूरी हानम पढक ही छूट गये। उसक बाद १९३० म भाई मेहरअजी और म वगाव पैलमें साथ हो गय। इमानी इच्छा ता साथ रहनका बहुत थी परन्तु हमें अलग अलग बरकामें रना गया था। फिर भी रोज नामका चारने पाब वज तक हम मित्रने थे और घूमन घूमन वानें करते थ। उहाने भी मुझसे बहुत आग्रह किया कि आपका अयगास्त्र पर एक विस्तत पाठ्यपुस्तक लिखनी ही चाहिये। उसक बाद भा जब जब भाई मेहरअजी मुझसे मिल तब तब उन्हान मुझसे अयगास्त्रकी पाठ्यपुस्तककी माग की। साथ तीर पर इन दो मित्राकी प्ररणासे ही म यह पुस्तक लिखनमें प्रवत्त हुआ एसा वना जा सकना है। निननी ही देखे क्या न हो म इनका प्ररणासे उत्पन्न हुए सफलता पूरा कर सका हू इसके लिए आनरनी भावनाके साथ साथ इन दोना प्रियजनाने प्रति कृतज्ञताकी भावना भी म अनुभव कर रहा हू।

आज तक ज्यागानर अयगास्त्रियान पूजीवादी पढनिजा ही ममयन क्रिया है और इम वानका ही मन्त्व लिया है कि किसी भी तरह सपत्तिजा उत्पानन बढाया जाय। अयगास्त्रकी पाठ्यपुस्तककी भूमिकामें यह लिखा

सुरक्षितताकी बातें कहलवाता है। फिर भी हमारे कला और वाणिज्य व्यवसायके कॉलेजोंमें अभी तक वही पुराना व्यवसाय पुराने ढंग पर पढाया जाता है। प्रतिस्पर्धाको निरस्त रखना जावकी आवश्यकताय बनते जाना यह मानना कि चीजोंकी कीमतें मांग और पूर्तिके आधार पर ही निश्चित हो सकनी ह किसी भी तरह मालकी सस्ता बनाना विज्ञापनो द्वारा और बचनकी चतुराई द्वारा इस मालके प्राहक खड करना—इन्ही बातोंमें आर्थिक प्रगति समाई हुई है। इस बजीव खयाल अपन दिमागमें भरकर हमारे नौजवान विद्यार्थी कॉलेजोंमें निकलन ह। इस पुस्तकका एक उद्देश्य यह भा ह कि विद्यार्थियोंके दिमागमें भरे जानवाले इन गलत विचारोंका भ्रम दूर करके अध्यात्मिक उस सच्चे मिद्वान्त प्रस्तुत किये जाय जिनसे समाजका भला हो सके। म यह आगा ता नहा रखता कि आजके सरकारी कॉलेजोंमें यह पुस्तक पाठ्यपुस्तकके रूपमें रखी जायगी। परन्तु इस पुस्तकका कॉलेजोंके विद्यार्थी यदि पढ़ें तो म इतनी आगा जरूर रखता ह कि उनके दिमागमें भरे जानवाले गलत विचारोंको सुधारनका और अध्यात्मिकको उसक सच्चे रूपमें समझनका एक साधन उहे जरूर मिल जायगा।

यह पुस्तक लिखत समय यतमान जय व्यवस्थाय पाई जानवाला नीचे लिखी वडी बडी बुगइया मेरी दृष्टिमें रही ह

- (१) दुनिया भरमें फली हुई भयकर बकारी और आर्थिक असुरक्षितता।
- (२) इतनी थोडा मजदूरी जिनमें मजदूरोंको आय पेट रहना पडे।
- (३) मजदूरोंके साथ अमानुषिक व्यवहार।

(४) आर्थिक असमानता—जिसमें जायदादवाला आत्मी समाजके लिए उपयोग्य हो एसा कोई भी काम धधा किये बिना मुफ्तमें होनवाली आयसे अपना निर्वाह कर सकता है और दिनभर समाजके लिए बहुत जरूरी जीन्ताड महत्त्व करनेवालोंको पेटभर खानका भा नहा मिलता। इसके सिवा अलग अलग धधाकी कमाईमें भी बडा अंतर है। एक तरफ इतनी थोडी मजदूरी मिलती है कि मनुष्यका निवाह भी न हो सके और दूसरा तरफ लाखोंकी कमाई होती है।

(५) सुखके लिए आस्था और भोग विलासका सामान तयार करनमें होनवाला कुदरती और मानव-सम्पत्तिका निगाड। इसा तरह खान-पीनकी चीजोंमें होनवाली मिलावट और झूठ विज्ञापनका द्वारा हानिकारक चीजोंकी बिक्रीसे हानेवाला नुकसान।

अवगत्य जाता है कि सम्पत्ति एक मानव है साध्य तो मनुष्यका सुख-सुविधा ही होना चाहिये। परन्तु उनका बान्त मारी पुस्तकमें इसका विचार ही नहीं किया जाता कि मनुष्यकी सुख-सुविधाका और मनुष्यका क्या होता है। सम्पत्ति ही साध्य बन जाती है। कूदरतन जितना ज्यादा साधना या मन उनका साध कर भौतिक साधन-सम्पत्ति जितनी बनाई या मन उनका बान्तना योजनाएँ ही साची जाती ह। मनुष्यकी सम्पत्तिके योग-श्रमका और उमक सच्चे उपयोग और विकासकी कोई योजना नहीं बनाई जानी इतना ही नहीं उमका विचार तक नहीं किया जाता। जा, चीजें जरूरतन कम पना होता हा उनका उत्पादन बान्तनकी योजना जरूर बनाई जाना चाहिये। एकिन उममें मिक्र गाना माल तयार करनेका ही खयाल नहीं रखना चाहिये बल्कि यन् भी दखना चाहिये कि उत्पादनके काममें लग गए मनुष्याका क्या होता है। यन् काम करनेसे मनुष्यकी शक्तिया कुशिल नहीं होनी चाहिये बल्कि उनका विकास जाना चाहिये। मनुष्यका मच्चा सुख और मच्ची उन्नति इस बान्तन नग है कि उम सिफ उपभागक लिए ज्यादा चाजें मिलें बल्कि इस बातमें है कि उस एसा काम मिलता रहे जिसमें उमकी समस्त शक्तियाका विकास हो और वह अपना जीवन तरह-तरहकी एमी विविध प्रवृत्तियाँ भरा हुआ बना सके जा उसके और समाजक विकासकी पापक हा।

इस पुस्तकमें सारे आर्थिक प्रश्नाका विचार मनुष्यके सुख और प्रगतिको ध्यानमें रखकर ही किया गया है। इसीलिए इस पुस्तकका नाम मानव अथ गाम्त्र रखा गया है। यह नाम रखनका दूसरा हतु यह भा है कि इसमें किसी एक ही वग या एक हा देनकी भलाईका दृष्टिस विचार नहीं किया गया है, बल्कि सारे मानव-समाजके हिनकी लक्षिमें — गाथागाके गलामें सर्वोप्यकी दृष्टिसे — विचार किया गया है।

पूजावाद और साम्राज्यवादके खिलाफ आज सारी दुनियामें प्रचंड विद्रोह उठ खडा हुआ है। इन वादाणि समकक इस बातको समन गये हैं और यथासभव अपन अस्तित्वकी कायम रखनके लिए व अपन विरोधमें खडी होनवाग शक्तियाके साथ समझौता करनकी कोणिगों भी कर रह हैं। अथगास्त्रके जिन पुराने सिद्धान्ताका लाभ उठाकर पूजावाद पुष्ट हुआ और स्थिर बना उन पुराने सिद्धान्तोकी भाषामें अब पजीपति भा बात नहीं करत। सबनाग समुत्पन्न अथ त्यजति पण्डित — इस सूत्रक अनुसार व जितना बचाया जा सके उनको बचा लेनेमें ही बुद्धिमानी समझने हैं। उनका समयाना स्वाय उनक मुहने भी मजदूरीकी भलाई और समाजकी

सुरभितताकी बातें कहठवाना है। फिर भी हमारे यला और वाणिज्य व्यवसायके कॉलेजमें अभी तक बनी पुराना अयगास्त्र पुराने ढा पर पढाया जाता है। प्रतिस्पर्धाको निरखुग रखना जीवनकी आवश्यकतायें ब्यात जाना य मानना कि चीजाकी कीमतें माग और पूर्तिके आधार पर ही निर्दिष्ट हो सकती ह किसी भी तरह मागको सस्ता बनाना विनापना द्वारा और बचनकी चतुराग द्वारा इस मालक ग्राहक खड करना—इन्ही बातमें आर्थिक प्रगति समाई हुई है एम अजीब खयाल अपन निमागमें भरकर हमार नौजवान विद्यार्थी कॉलेजोंसे निकलते ह। इस पुस्तकका एक उद्देश्य यह भी है कि विद्यार्थियाक निमागमें भरे जानेवाठे इन गलत विचाराका भ्रम दूर करके अयशास्त्रक एस सच्चे मिद्वान प्रस्तुत किय जाय जिनसे समाजका भला हा सके। म यह आगा ता नहीं रखता कि आजके सरकारी कॉलेजमें यह पुस्तक पाठयपुस्तकके रूपमें रखी जायगी। परंतु इस पुस्तकका कॉलेजके विद्यार्थी यदि पढ़ें तो म इतनी आगा जरूर रखता ह कि उनके दिमागमें भरे जानेवाठे गगन विचाराकी सुधारनका और अयगास्त्रको उसके सच्चे रूपमें समझनका एक साधन उठे जरूर मि जायगा।

यह पुस्तक लिखत समय बतमान अय-व्यवस्थाम पाइ जानाली नीचे लिखी बडी बडी बुराइया मेरी दष्टिम रही ह

- (१) दुनिया भरमें फगी हुई मयजर बचारी और आर्थिक असुरमितता।
- (२) इतनी थोडा मजदूरी जियसे मजदूराको आध पेट रहना पडे।
- (३) मजदूराके माय अमानुषिक व्यवहार।

(४) आर्थिक अममानता—जिसमें जायदादवाला आमी समाजके लिए उपयागा हा एसा काइ भी काम घधा क्रिये बिना मुफ्तम होनवाली आपसे अपना निवाह कर सकता है और निनभर समाजके लिए बहुत जरूरी जी-त्ताड मेहनत करनेवालेको पेटभर खानका भा नहीं मिलता। इसक सिवा अलग अलग घधाका कमाईमें भा बडा अजर है। एक तरफ इतनी थोडी मजदूरी मिलती है कि मनुष्यका निवाह भी न हो मके और दूसरा तरफ लाखोका कमाई होती है।

(५) युद्धके लिए गस्त्रास्त्र और भोग विलासका सामान तयार करनमें होनवाला कुदरती और मानव-सम्पत्तिका विगाड। इसी तरह खान-पीनकी चीजमें होनवागी मिलावट और झूठ विनापनाके द्वारा हानिकारक चीजाकी बित्रीसे हानवाला नुकसान।

(६) प्राथमिक आवश्यकताकी चीजा—जमें अनाज दूध सागभाजी कपड मकान चगरा—का जरूरतसे बम उत्पादन।

(७) आर्थिक प्रवृत्तिका प्ररक हतु गेगाकी जरूरतकी चीज उत्पन्न करना न होकर नफा कमाना और रपया कमाना होता है।

(८) इसके कारण सारी अर्थ-व्यवस्था पर पसेवाका नियंत्रण।

(९) मनुष्यको जड जोर गुलाम बना डालनेवाला यत्राका दिनोदिन बलनवाला उपयोग।

(१०) अयामपूण और लूटन चूसनवाके आन्तर राष्ट्रीय व्यापारके गारा यत्रोद्यागामें पिछडे हुए देगाका खासकर बहाके गावाका गोपण और गावाकी बगाली।

एन सत्र बुराइयोको दूर करनेके लिए हमें क्या क्या करना चाहिए इसकी चचा इस पुस्तकमें जगह जगह प्रस्तुत विषयाका ध्यान रखकर की गई है।

यह पुस्तक लिखनमें मन टाउजिंग टामस और सेलिग्मनका अयगास्त्रक सिद्धान्त (प्रिसिपल्स आफ इकानामिक्स) नामक तीन पुस्तकाका काफी उपयोग किया है। हमार देगसे सम्बन्ध रखनवाकी हकीकतके लिए मन प्रिसिपाल जठार और बरीकी इडियन इकानामिक्स और प्रो० वाडिया और मर्चेंटकी अवर इकानामिक प्रांटेम नामक पुस्तकोका काफी उपयोग किया है। इनके सिवा अर्थ अर्थ पुस्तकाम से भी हकीकत ली गई है। इन सबका म आभारी हूँ।

परन्तु एन सब लेखकासे मेरा दृष्टिकोण सबया भिन्न है। विभिन्न आर्थिक प्रश्नों पर इस पुस्तकमें मन जो विचार और मत प्रगट किये ह वे उन उन विषयो पर गाधीजीके विचारको जसा मन समझा है उसीके अनुसार ह। ज्यादातर तो मन गाधीजीके लेखोका ही अनुसरण किया है फिर भी हो सकता है कि जो विचार गाधीजीके विचारोके रूपम यहा प्रस्तुत किय गये ह उनमें से कुछ विचारके लिए मैं गाधीजीके लेखसे कोई आधार न बता सक। गाधीजीके अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्योंमें लग रहनके कारण एतना बडा ग्रथ पन्नका बोझ उन पर डालना मुझ ठीक नहीं लगा। इसलिए गाधीजीने विचारके रूपमें बताये गये सभी विचारके लिए मेरे पास गाधीजीका प्रमाणपत्र नहीं है पर गाधीजीके विचारको जसा मन समझा है वसा ही उह यहा प्रगट किया है यह बात ध्यानमें रखनकी पाठकोस मेरा प्रार्थना है।

भ पिछले २८ वषमे बाबासाहब बालेलकर और विशोरलाभाईके निवट सम्पत्तमें रहकर काम करता रहा हू। इसलिए जीवन-सम्बन्धी लगभग प्रत्येक प्रश्न पर उनके साथ चर्चा करनेसे अवसर मुझ मित्रे ह। इस कारण इस पुस्तकमें प्रगट किये गये बहुतेम विचार मुझ इन दोनामे प्राप्त हुए ह। यदि इन दोनोमे मन छपनेसे पहले यह पुस्तक पत्र जानेके लिए कहा होता, तो वे जरूर पढ़ जात और उसमें बहुत कीमती सुझाव या परिवर्तन भी करते। लेकिन पुस्तकके प्रकाशनमें देर न हा इस खयालसे मने यह लाभ भी छाड़ दिया है। इस पुस्तकका दूसरा संस्करण छापनेका अवसर आया तो उस समय यह लाभ उठाकर इस पुस्तकमें रही त्रुटियोंका पूरा करनेकी म आशा रखता हू। अग्य भाई वहनसि भी म प्राथना करता हू कि वे भी इसमें सुधार, परिवर्तन या वांछाट करनेसे वारमें अपनी सूचनाएं दनकी कृपा करे।

द्रव्य-बाजार (मनी मार्केट) के वारमें मुझे खुद अनुभव न होनेसे द्रव्य और सराफी (बंकिंग) सम्बन्धी प्रकरण लिखना मरे लिए मुश्किल था। पर इस मामलेमें इस विषयके निष्णात श्री बलुभाई मजमुदारसे जिनके साथ सन् १९४४ में सावरमती जन्म रहनवा लाभ मुझ मित्र था, मुझे बडी कीमती सहाय और सूचनाएं मिली ह। साथ ही मेरी प्राथना स्वीकार करके उन्होंने द्रव्य बाजार पर एक विस्तृत लेख भी लिख दिया है और उस लेखका इन प्रकरणोंके लिखनेमें मुच उन्होंने स्वतंत्रतासे उपयोग करन लिया है। अलवत्ता उन लेखमें मे भी मने जो कुछ लिखा है वह अपनी मसझसे अनुसार ही किया है और यहा लिखा है और उस सम्बन्धमें प्रवट किये गये मत ता मरे अपन ही ह। इसलिए मुझ कहना चाहिय कि इन प्रकरणोंम कुछ अच्छी बात हो तो उसके यगके भागी श्री बलुभाई ह और काई गेप हो तो उसकी जिम्मेदारी पूरी तरह मरी है। श्री बलुभाईन मुच जा सहायता दी उसके लिए म उनका बहुत आभारी हू।

प्रेसमें देासे पहले इस पुस्तकको गुजरात विद्यापीठके मेरे साथी भाई विठ्ठलदास वाठारा आवापान पढ़ गये ह और उन्होंने कुछ बहुत कीमती सूचनाएं भी की ह। उनका अनुभव मन कही कही पुस्तकमें परिवर्तन भी किये ह। इनसे सिवा उन्होंने अयोग्यताके पारिभाषिक शब्दोंकी जो सूची तयार की है उसका भी मन लाभ उठाया है। वट सूची पुस्तकके अन्तमें दी गई है।

हा पुस्तकको भरसक आमान बनानक खयालसे जहा तक पारिभाषिक शब्दोंसे बिना काम चल सकता था वहा तक मन उन शब्दोंका उपयोग नहीं

किया है। इसके सिवा भाई विद्वल्लामन मेन्नन करके इस पुस्तककी जो वर्णानुक्रम सूची तयार बा है उसन लिए म उनका ऋणी हू।

यह पुस्तक जनताके सामन प्रस्तुत करते हुए मुझे सवाच हो रहा है। मन इस विषयका व्यवस्थित अध्ययन नही किया है। इसलिए मुझ इसका भान है कि इस पुस्तकमें कई त्रुटिया रह गई ह। साथ ही मुव इसका भी भान है कि म अपन सारे विचार सुनिश्चित भाषाम नही रख सका हू। फिर भी एभी पुस्तककी हमारी भाषामें जरूरत होनेके कारण मन यह साहस किया है। वह कहा तक ठीक है इसका निणय तो विद्वान पाठक ही करग।

सेवाग्राम १०-१२-४५

नरहरि परीख

अनुक्रमणिका

पहला भाग प्रास्ताविक

पृष्ठ

- १ अर्थशास्त्र क्या है ? ३-१२
 मनुष्यता जावश्यकतायें ३ आवश्यकतायें कम पूरी हाता
 ह? ४ अर्थशास्त्रका विषय ६ अर्थशास्त्रका उद्देश्य ८ अर्थ
 शास्त्रक नियम ९।
- २ अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र १२-२०
 राजनैतिशास्त्रक साथ साथ १२, विद्याशास्त्रक साथ
 साथ १४ समाज रचनाके साथ साथ १७ नीतिशास्त्रके साथ
 साथ १९।
- ३ सम्पत्तिकी परिभाषा २१-२७
 सब-मुक्त सम्पत्ति २१ आर्थिक सम्पत्ति २१ सावजनिक
 सम्पत्ति २३ कुत्सृती साधन-सम्पत्ति २४ द्रव्य और सम्पत्ति
 २४ अमूल सम्पत्ति २५।
- ४ आर्थिक जागृका विकास २८-४२
 मृगया-वृत्ति २८ गणवृत्ति २९ कृषिवृत्ति ३१ वाणिज्य
 वृत्ति ३३ औद्योगिक वृत्ति ३५ मर्यान्तित जिम्मेदारीवाली
 कानूनिया ८ प्रवचक २९।
- ५ आर्थिक प्रगतिकी बुनियातें ४२-६२
 आवश्यकताआका वृद्धि ४२, व्यक्तिगत स्वामित्वका अधि-
 कार ४६ प्रतिस्पर्धा ५२ आर्थिक स्वतंत्रता ५६।

दूसरा भाग उत्पादन

- १ कुदरत ६५-७२
 २ धर्म ७३-७७
 ३ उत्पादक और अनुत्पादक धर्म ७८-८७

४ पूजा ८८-९७

पूजाकी वृद्धि ९० पञ्जीका वर्गीकरण स्वल्पके आधार पर ९२ स्वाभिवृत्ते आधार पर ९२ नियोजनके आधार पर ९२ पञ्जीकी भीमासा ९४।

५ प्रवर्धक ९८-१०२

६ काय विभाग १०२-१७

नसर्गिक काय विभाग १०२ सामाजिक काय विभाग १०७
औद्योगिक काय विभाग १०८ प्राणिक अथवा भौतिक काय
विभाग ११४।

७ यत्रोकी मर्यादा ११८-३०

८ बड़े पमान पर उत्पादन १३०-३७

९ बढ़ते घटते उत्पादनका नियम १३८-४०

बढ़ते उत्पादनका नियम १ ८ घटते उत्पादनका नियम
१३९ स्थिर उत्पादनका नियम १४०।

तीसरा भाग विनिमय

१ प्रास्ताविक १४३-४७

२ बाजार १४८-५५

हाट अथवा गजरी १४८ स्वाया बाजार १४९ बाजारका
विशेष अथ १४९ स्थानाय बाजार और विनिमयापी बाजार १५०
विभागीय बाजारकी आवश्यक गतें १५३ द्रव्य और पूज्यक बाजार
१५५।

३ मूल्य और कीमत १५५-५९

४ माग और पूर्ति १६०-७१

माग और पूर्तिकी विधि अथ १६० उपयोगिताका सीमा
और माग १६१ द्रव्यका उपयोगिताकी तुलना १६४ उप
योगिताकी सीमा निश्चिन करनम अन्याय १६४ ऋचकदान माग
और ऋचकदार माग १६६ लचकहीन पूर्ति और ऋचकदार पूर्ति
१६८ समकत माग १६८ वकल्पित माग १६९ समकत पूर्ति
१७ ।

५ बाजारकीमा १७१-८५

प्रचलित बाजारकीमत और मामाग कीमत १७४ विकता
और खरीदारक बीचकी असमानता १७६ उत्पादन-खर्च द्रव्य

वच तथा मानव-वच १७७ आवृत्त वच और पूजी-वच १८९
 वदत घटत मा स्थिर उत्पादनके नियमका बाजार-कीमत पर
 असर १८१ उत्पादन-वचकी मयादा १८२ मार १८४।

६ एकाधिकार-कीमत १८६-९७

एकाधिकार-कीमत और बाजार-कीमतकी तुलना १८८,
 एकाधिकार कीमतकी मयादाए १८९ एकाधिकारके हानि-लाभ
 १९० व्यापार चिह्न छाप और विनायत १९३।

७ सट्टा १९८-२०४

सट्टाका पूर्वपथ २०० 'हजिग वाण्ट' २०१ सट्टाकी
 बुराब्या २०३।

८ उचित कीमत २०५-१५

वाल मावसका थम मूल्यका सिद्धान्त २००।

९ द्रव्य २१६-२६

वस्तु विनिमय २१६ द्रव्यकी शोष २१७ अच्छ द्रव्यके
 विगिष्ट लक्षण २१७ द्रव्यके नाम २१९ नरद द्रव्य और
 प्रतिनिधि द्रव्य २२१ मिक्के और टक्काल २२१ प्रामाणिक
 द्रव्य साकेतिक द्रव्य और रजगारा २२३ घटिया द्रव्य २२५,
 प्रशमका सिद्धान्त २२५।

१० चलनी नाट और सराफी द्रव्य २२७-४०

वच-नोट २२७ सरकारी चरनी नोट २२८ चलनी नाटोके
 लिए नकल अमानत २२९ न भुननेवाले चरनी नाट २३०
 सराफी द्रव्य २३१ हुडिया २३२ दशना हडी और मुहती हुडी
 २३६ चक २३५ चैकका काय २३६, ड्राफ्ट २३७, आयान
 निर्यातके विल २३८

११ चलनक प्रकार २४१-४७

डि घातु चलन २४१ लगा चलन २४२ स्वण-चलन
 २४२ स्वण-माट चलन २४३ स्वण विनिमय-चलन २४४ स्वण
 चलनक मध्य नाम २४५ स्वण चलनके दोष २४६।

१२ हमारे देशका चलन रुपये और नोट २४७-६०

कलगर रुपया (१८३५ स १८९३) २४८ काउन्सिल
 विल और रिपस काउन्सिल विल २५०, रुपयेकी कामनामें
 उद्यम-मुद्य (१८९३ स १९२७) २५१ १८ पैसका रुपया २५३

विनिमयकी दरका अमर २५४ रपयका स्टलिंगक साथ सबध
२५५ हमारा नोटका चलन २५७।

१३ द्रव्यका मूल्य और महगाई-सस्ताई २६०-७५

द्रव्यका मूल्य २६१ द्रव्यकी मात्राका भावा पर प्रभाव
२६२ द्रव्यका मात्रा किस वहे २६३ चलनका वेग २६४
भावाकी सूचीसल्या निबालनेकी रीति २६७ भावामे घट-ब
घतानवाला बाण्टक २६७ महगाई-सस्ताईका समाजके जग-अजग
वर्गों पर असर २७१।

१४ भविष्यके चलनकी योजना २७६-८३

१५ उधार-व्यवहार और सराफी (बचिंग) २८४-३०३

उधार-व्यवहार और पसा २८४ उधार-व्यवहार और
पूजी २८५ सराफ और बक २८६ बकके मुख्य काय २८७
लकी अवधिके लिए पसा उधार दना अथवा पूजी गगाना २९४
केन्द्रीय बक २९७ द्रव्य-बाजारका नियन्त्रण २९९ याजकी दर
२९१।

१६ हमारे देगकी सराफी और हमारे बक ३०४-१६

देगी सराफी ३०४ यरोपीय पद्धतिके बकाका प्रारभ ३०६
इम्पीरियल बक आफ इण्डिया ३०७ दूसर सराफी बक ३०८
विदगी विनिमय बक ३०८ विनिमय बकोके विरुद्ध शिकायतें
३०९ रिजर्व बक आफ इण्डिया ३१० रिजर्व बकके मुख्य काम
३११ रिजर्व बक क्या क्या काय कर सकता है? ३१२ रिजर्व
बक क्या क्या काय नही कर सकता? ३१३ रिजर्व बकके बारमें
कुछ और जानकारी ३१३ महकारी बक ३१४ भूमि-बचक बक
३१४ पोस्टल सेविंस बक ३१६।

१७ आतर राष्ट्रीय व्यापार ३१७-३३

दो प्राता और दो गगक बीचका व्यापार ३१८ मुक्त
व्यापार बनाम सरक्षण ३२५ मक्त व्यापारकी हिमायत ३२४
सरक्षणकी हिमायत ३२६ साम्राज्यक अगमूत देगको तरजीह—
इम्पीरियल प्रिफरेंस ३२८ सरक्षणके प्रकार ३२९ मालका
शुदना (डम्पिंग) ३३० व्यापारकी तुला और गन-दोकी तुला
३३१।

- १८ व्यापार-सम्बन्धी लेन-देनका निगरा ३३३-४१
 देणके भीतरका लेन-देन ३३४ विन्नाके माथ हानवाला
 लेन-देन ३३६ दिनमय-पत्रोंका भाव ३३७ चलनकी खरीद
 गतिनके आधार पर उसके मूल्यकी तुलना ३४०।

- १९ तेजी-मदीका घब और आर्थिक सकट ३४२-५७
 उद्योग घघाका एक-दूसरे पर अमर ३४२ उत्पादनका क्रम
 क्रम ३४३ तेजा मनीका नियमित पुनरावतन ३४५ पिछल आर्थिक
 सकट ३४६ आर्थिक सकटका स्पष्टीकरण ३४७ कुतरती सकट
 ३४७ उत्पादनकी पूजीवादी रचना ३४८ सराफी द्रव्यकी करा
 मान ३५० नू कस हाती ह? ३५२ बाजारका रूप ३५४
 इसके उपाय ३५६।

चौथा भाग बटवारा या वितरण

- १ प्रास्ताविक ३६१-६६
 २ भाडा ३६४-७३

भाडेका विनय अथ ३६६ अनुभाजित नफा ४६९ भाडका
 अनौचित्य ३७२।

- ३ ब्याज ३७४-८१
 वचन ३७६ वचतको खब करनेमें खतर ३७५ ब्याजके
 कारण ३७७ ब्याजकी मीमासा ४७९।

- ४ मजदूरी ३८२-९५
 मजदूरीका व्यापक अथ ३८२ थम बाजार वस्तु माना
 जा सकता है? ३८३ मजदूरीका काला वानून ३८४ मजदूरी
 फण्डका सिद्धान्त ३८५ उत्पादनके अनुसार मजदूरीका दर
 ३८६ जावन निवाहका स्तर निश्चित करनेकी प्रकृत ३८८
 मजदूरीकी उचा दरका स्पष्टीकरण ४८९ दिग्याई देती उचा
 दर और सच्ची तर ३९१ सबका काम पाने और अन्ती तरह
 जीनेका अधिनार ३९२ ऊचेसे ऊचे पारिधमिककी मर्यादा
 निश्चित की जाय ३९२।

- ५ मुनाफा या लाभ ३९५-४०२
 मजदूरी और मुनाफा ३९५ ब्याज और मुनाफा ३९६
 मुनाफका स्वरूप ३९६ मुनाफक प्रकार ३९७, मुनाफे पर निय
 प्रणकी जरूरत ४०१।

- ६ मजदूर-सघ ४०३-१८
 सघकी आवश्यकता ४०३ मजदूर-सघके उद्देश्य ४ ५
 मजदूर-सघकी प्रवृत्तिका आरम्भ ४०५ वोनम और मनाफमें
 हिस्सा ४०८ मजदूरोंका कल्याण ४०९ हस्ताल ४१० ममझौता
 और पच-फमला ४१३ हमारे देशमें मजदूर-सघ ४१४ इण्ड
 स्ट्रियल लिम्प्यूस एक्ट ४१६।
- ७ मजदूरोंकी भलाईके कानून ४१९-२४
- ८ आर्थिक सुरक्षितता और बीमा ४२५-३५
 बीमा-पद्धति ४२५ बीमेकी आवश्यकता ४२७ बीमा
 प्रयाके दोष ४२९ सामाजिक सुरक्षितता ४३९ प्रावराज योजना
 ४३० याजनाकी बीमासा ४ ४।
- ९ सहकारिता-आंदोलन ४३६-४३
 सहकारी भंडार ४३६ वज देनवाला सहकारी समितिया
 ४३८ किसानोंकी सहकारी समितिया ४३९ ड-माक्का सहकारी
 आंदोलन ४४० हमारे देशमें सहकारी आंदोलन ४४० भारतका
 सहकारी समितिया ४४१।
- १० सरकारी आय-व्यय ४४४-४५
 सरकारी खर्चके त्रेतु ४४४ व्यक्ति और समाजके आय
 व्ययमें अन्तर ४४४ सरकारका कर्तव्य और खर्च ४४५
- ११ सरकारी आयके साधन ४४६-४७
- १२ कर निर्धारण ४४८-६२
 करका सामान्य स्वरूप ४४८ कर निश्चित करकी पद्धति
 ४५० करके बारेमें सरकारा नीति ४५३ विविध प्रकारके कर
 ४५५।
- १३ सरकारी ऋण ४६३-६५
 सरकारी बनाम व्यक्तिगत ऋण ४६३।
- १४ राष्ट्रीय ऋणका स्वरूप और कारण ४६५-७०
- १५ ऋणके प्रकार ४७१-७२

पाचवा भाग आय

- १ राष्ट्रीय सम्पत्ति और राष्ट्रीय आय ४७५-८२
 द्रव्यके रूपमें सम्पत्तिका माप ४७६ सवाआकी आय ४७७
 आयका हिमाव उमानकी रातिया ४७८ डा रावका हिसाब
 ४७९ इसका पहले उगाय गय हिसाब ४८१।

२ जनसंख्या

४८३-९९

माल्यसकी चेतावनी ८८३, उद्वि पर प्रत्यग तथा अप्रत्यग
 अकु ८८४, जन-मरणन जाग ४८७ जनसंख्याका अयमान
 वटयाग ४९० हमारे दगाका म्यनि ४०१ स्थानक अनुसार
 वर्गीकरण ४९२ घघक अनुमार वर्गीकरण (१९६१) ४९३
 क्या लामें पयाप्त अन है? ४९३ जनसंख्याकी वद्विका राकनक
 उपाय ८९५ अछटी सनान पदा वरना ४९६।

३ सम्पत्तिका व्यय

६९९-५१३

व्ययके वारमें उपमा ४ नस्ययक लिए अगिब कुगलना
 चाहिमे ५०१ उपयोग करनकी गकिनमें अन्तर ५०२ दुव्ययके
 प्रसार और वारण ५०३, पूजावाग उत्पादन और नफाकारी
 ५०६ साक्ष पनार्योमें मिलावट ५ ७ छूठी दवाए ५०९ प्राय
 मिक समाजमें दुयय नही होना था ५१०।

छठा भाग नवीन अय रचना

१ समाजवाद

५१७-३२

पूजाका सचय मजदूरक गापणमें इइ वचतका परिणाम
 ५१९ आधिक नियतिवाद ५२० वग विग्रह ५२५ मजदूर
 दलकी तानागाही ५२९ वगविहान समाज ५३०।

२ समाजवादकी भीमासा

५३२-४३

३ गांधीजीका आर्थिक कायक्रम

५४३-६४

स्वामी ५४५, यत्राका मयाग ५५०, आवश्यकताआकी वृद्धि
 पर अकु ५५२ गरोर-अम ५५६ सरक्षवताका मिद्वान ५५७,
 क्रान्तिनागे मूल्य-परिवतन ५६०।

पारिभाषिक गदाकी सूची

५६५

सूची

५७२

मानव अर्थशास्त्र

पहला भाग

प्रास्ताविक

अयशास्त्र क्या है ?

मनुष्यकी आवश्यकतायें

१ हर मनुष्यको पेट भर खाना चाहिये शरीरकी रक्षाके लिए कपड़े चाहिये और रहनेकी मकान चाहिये। सम्य मनुष्यके जीवनकी ये प्राथमिक आवश्यकतायें मानी जाती हैं। इनके बिना जीवन टिक नहीं सकता। मनुष्य चाह जिस स्थितिमें रहना हो परन्तु इतनी चीजके बिना उसका काम चल ही नहीं सकता। अपने जीवनकी इन प्राथमिक आवश्यकताओंके बारेमें भी कोई योगी यति या अवधूत बेपरवाह हो सकता है, परन्तु ऐसे लोग बिरले ही हान हैं। अतः वे अपवाद मान जायेंगे। ज्यामानर लोगका तो पहली चिन्ता अपने जीवनकी इन प्राथमिक आवश्यकताओंकी ही करनी पड़ती है। काइ मा समाज सुव्यवस्थित और सुखी तभी हो सकता है जब उस समाजमें रहनेवाले सभी लोगोंकी ये प्राथमिक आवश्यकतायें अच्छी तरह पूरी हो जाय। लेकिन मनुष्यको अपनी प्राथमिक आवश्यकतायें पूरी हो जानेसे ही कभी सतोष नहा होता। अन्य कई सुविधायें पान करनेके लिए और अपने शरीरकी तथा आसपासकी चीजोंकी शोभा और सजावट बढ़ानेके लिए भी आरम्भ ही उसकी कोशिश रहती है। रोटीका हाथमें रखकर खानेसे भी भूख तो मिट जाती है पर मनुष्य ऐसा करता नहीं। वह खानकी चीजें अच्छा तरह रखनेके लिए थाली बनाता है खानेका तरल चीजके लिए कटोरी रखता है माजना के लिए बटनको पाट या डूमरे आसन जुटाता है। इस तरह वह अपनी आवश्यकतायें पूरी करनेके प्रत्येक कायमें सुविधाओं साधन बनाता जाता है और उसीके साथ साथ उनमें सुन्दरता और कलाकी वृद्धि करनेकी तरफ भी उसका ध्यान रहता है। इस तरह जैसे जैसे समाज आगे बढ़ता है वैसे वैसे मनुष्यकी आवश्यकतायें बढ़ती जाती हैं और उन्हें पूरी करनेके लिए वह अपनी प्रयत्न भी बनाता जाता है।

२ मनुष्य अपना आवश्यकतायें बढ़ाता जाय, इसे आजके अर्थशास्त्री सम्यता और प्रगतिकी निशानी मानते हैं। लेकिन आवश्यकतायें बढ़ाते जाना और उनको पूरा करनेके पीछे ही पडे रहना मनुष्य-जीवनका सच्चा ध्येय

नहीं हो सकता। सम्यता और प्रगति आवश्यकताओं और सुगम सुविधाओं के विस्तारमें नहीं है बल्कि मनुष्यकी ऊँची भावनाओं जैसे भ्रातृभाव सहनार-याय स्वतंत्रता आदिके विकासमें है। ऐसी ऊँची भावनाओंको छोड़ कर मनुष्य अपनी आवश्यकताओं बढ़ाने के पीछे और उन्हें पूरा करने के लिए उत्पादन बताने के पीछे ही पड़ा रहे तो उसे सच्ची सम्यता या प्रगति नहीं कहा जा सकता।

३ परन्तु साथ ही साथ यह भी स्पष्ट रूपसे समझ लेना चाहिये कि कष्ट कठिनाई या कगालीमें रहना भी हमारा ध्येय नहीं है और न होना चाहिये। कष्ट कठिनाई और कगालीका जीवन बितानेवाले समाजमें ऊँचे विचार और ऊँची भावनाएँ उत्पन्न नहीं हो सकती। आज हमारे देशके गरीब और पिछड़ हुए वर्गोंकी यही स्थिति है। इसलिए इतनी आवश्यकताएँ तो सबकी पूरी होनी ही चाहिये कि जिनसे जीवन सुविधापूर्ण स्वस्थ और स्फूर्तिमय रह सके। इन आवश्यकताओंको विचारपूर्वक निश्चित करना और स्वेच्छासे उनकी मर्यादा बाधना समाजके सुख और सतोषके लिए बहुत जरूरी और वाञ्छनीय है। ऐसा करनेसे ही मनुष्यका सच्चा सुख और सच्चा सतोष बढ़ता है और ऐसा करनेमें ही मनुष्य जातिका सच्चा विकास और विश्वकी शांति समाप्ती हुई है।

आवश्यकताएँ कैसे पूरी होती हैं ?

४ हमारी कुछ आवश्यकताएँ ऐसी हैं जिनको पूरा करने के लिए हमें कोई श्रम नहीं करना पड़ता। उदाहरणार्थ हवा हमारी ऐसी आवश्यकता है, जिसके बिना हमारा काम चल ही नहीं सकता। लेकिन वह हर मनुष्यको श्रमके बिना ही मिलती है। यही बात सूर्यकी गरमी और प्रकाशकी है। खुलेमें रहनेवाले मनुष्योंको हवा धूप और प्रकाश बिना श्रम किये जिनसे चाहिये उतने मिलते हैं। इसी तरह नदी या तालाबके किनारे रहनेवाले लोगोंको वहाँ जाकर पाने भरका श्रम करनेसे पानी मिल जाता है। ये सब वस्तुएँ जीवनके लिए बहुत ही आवश्यक और महत्वकी हैं। लेकिन वे बिना श्रम और बिना दामके मिल जाती हैं। वे सचमुच अमूल्य हैं। उनके बदलेमें हमें कोई कितना ही मूल्य दे तो भी हमारा काम उनके बिना नहीं चल सकता इस अर्थमें वे अमूल्य हैं और उनका हम कुछ भी मूल्य नहीं देना पड़ता इस अर्थमें भी वे अमूल्य हैं।

५ हमारी दूसरी आवश्यकताएँ जैसे खानकी कपडकी और धरकी ऐसी हैं जिन्हें श्रम किये बिना मनुष्य पूरा नहीं कर सकता। उसके सामन

विनाल कुदरत रागी पडी है। जमीनको खोदकर जोतकर और उसमें बीज बोकर वह अपनी जहूरतका सारा अनाज, फल और माग भाजी बगरा उत्पन्न कर लेता है। फिर उसमें कपास उगाकर उससे कपडे तयार करना है। जगलामे से पेड काटकर वह इधनके लिए लकडी और घर बनानेके माधन जुटाता है। खाने खोदकर उनमें से कौयला लोहा तेल आदि कई वस्तुएँ निवाकता है। पशुआ आदिको मारकर उनका मास खाता है और उनका चरबी, चमड आदिका उपयोग करता है या पशुओंका पाकर उनसे दूध घी ऊन जसी चीजें प्राप्त करता है। पशुसे सवारोका और बोझ डोन बगराका काम भी वह रता है। हवा और पानीका भी वह गनितके रूपमें उपयोग करता है। मनुष्यके उपयोगमें आनेवाली तमाम वस्तुआकी— जिह हम धन या सम्पत्ति कहेंगे—जड कुदरतके भीतर है। कुदरतने अपने भंडार उतारतासे मनुष्यके लिए छुले छाड दिय ह। उनम से मनुष्य परिश्रम करके अपनी जहूरतकी वस्तुएँ उत्पन्न कर लेता है।

६ हम यदि एसी कल्पना कर लें कि मनुष्यको जो भा वस्तुएँ चाहिये वे सब वह खुद ही पदा कर ले और खुद ही उहे कामम ले तब तो दुनियाका व्यवहार बिलकुल सीधा-सादा हा जाम, एक मनुष्यका दूमरे मनुष्यके साथ कोई सम्बन्ध न रहे। लेकिन यह जाननमें नहा आता कि बहुत पुरान समयमें भी कभा दुनियामें ऐसी स्थिति रही हो। जबम मनुष्य पृथ्वी पर उत्पन्न हुआ, तभीमे वह समूह बनाकर रहता देखनेम आया है। सारा समूह इकट्ठा होकर अपनी आवश्यकताकी वस्तुएँ जुटा लेता था और सब मिलकर ही उनका उपयोग करते थे। आजकल तो हमारा व्यवहार बहुत पेचीदा या अटपटा हो गया है। किसान खेत जोतकर अनाज पदा करता है किन उसका हल बिभी दूसरे ही मनुष्य यानी बढईका बनाया हुआ टोता है, हलके लिए लकडी जगलसे कोई दूसरा ही मनुष्य काटकर लाया होता है। और उस हलकी फालका लोहा किसी खानमें से किसी तीसरे ही मनुष्यका खोदकर निकाला हुआ होता है और लोहको ठोक-पीटकर फाल बनानेवाला कोई चौथा ही— दुहार—होता है। इसके सिवा, अपनी खतीक काममें किसान दूसरे मजदूरकी सहायता भी लेता है। इस तरह यदि गिनने बठें तो खतमें अनाज उत्पन्न करनेके कामम सबडा मनुष्योका अपना-अपना हिस्सा माशूम होगा। मनुष्य अकेला रहनेवाला जीव नही है वह मामाजिक प्राणी है। बहुतसे मनुष्य एकत्र होकर तथा एक-दूसरेके साथ सहयोग करके अपने समाजका आवश्यकताकी चीजें उत्पन्न करते ह।

अर्थशास्त्र का विषय

७ समाजके लिए आवश्यक वस्तुएँ बनानेकी प्रवृत्तिमें हर मनुष्य वही काम करता है जिसमें वह अधिक कुशल होता है। वह अपनी बनाई हुई वस्तुएँ दूसरोंको देकर या दूसरोंके लिए काम करके बदलमें अपनी आवश्यकताकी वस्तुएँ और सेवाएँ लेता है। कुछ लोग खेतीका काम करते हैं कुछ बुनाईका काम करते हैं और कुछ मोचीका काम करते हैं। इसके सिवा दूसरे लोग उत्पन्न हुए मालको उसका उपयोग करनेवाला जगह तक पहुँचानेका काम करते हैं। इनमें कुछकर और थोड़ा माल खरीदन और बेचनेवाले व्यापारी होते हैं। इसी तरह एक स्थानसे दूसरे स्थान पर माल पहुँचानेवाले बनजार—गधवाले थलवाले ऊँटवाले गाड़ीवाले मोटर-लारीवाले और रेलवाले होते हैं तथा जलमार्गों यही काम करनेवाले छोटी नावों मत्लाहासे लेकर बड़े जहाजवाले लोग होते हैं।

८ इस प्रकार मालका खरीद-बिक्री या मालका अदल-बदल आसपासके स्थानोंके बीच भी हाता है और दूर-दूरके स्थानोंके बीच भी हाता है। आज हमारे दैनिक उपयोगकी वित्तीय वस्तुएँ अत्यन्त दूर-दूरके देशोंमें आती हैं। दियासलाई स्वीडनसे आती है। घासलेट ब्रह्मदेश और अमरीकासे आता है। गेटेकी वस्तुएँ इंग्लैंड जमनी और जापानसे आती हैं। इस तरह यदि हिसाब रगान बठें तो हर देश किसी दूसरे देशकी कोई न कोई वस्तु काममें आता है और दूसरे देशको अपनी कोई न कोई वस्तु भेजता है। मालके इस तरहके अदल-बदलके व्यवहारको वस्तुओं अथवा सम्पत्तिका विनिमय कहा जाता है। यह विनिमय पहले तो वस्तुके बदले वस्तु देकर ही किया जाता था। परन्तु इसमें जब बड़ी असुविधा होने लगी तो ऐसा कोई माप या मान बूझ निकालनेका प्रयत्न होने लगा जो विनिमयके लिए सबमाप हो सके। इस तरहके मापके लिए विभिन्न वस्तुओंको आजमाकर देखनेका बाद आज सोन चांदीके सिक्कोंको या उनके प्रतिनिधि माने जानेवाले कागजके नोटोंको सब देशोंमें विनिमयका सबमाप मान स्वीकार कर लिया गया है। निश्चित गुणवाला निश्चित वजनवाला और निश्चित आकारवाला सोने चांदीका सिक्का तथा उसका प्रतिनिधि कागजाका नोट द्रव्य कहलाता है। द्रव्य लेकर अपना बनाई हुई वस्तुएँ मनुष्य दूसरोंको देता है और इस द्रव्यसे वह अपनी आवश्यकताकी सब वस्तुएँ खरीदता है। इस तरहकी अदल-बदली करनेके लिए वस्तुओंकी कीमत निश्चित करनेके प्रयत्न सड़े होते हैं। कीमतें किस तरह निश्चित की जाती हैं और कीमत निश्चित

होनेमें कौन-कौनस बल कसा काम करते ह यह अथशास्त्रवा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विषय माना जाता है।

९ कीमत निश्चित होनेके बाद भी बहुतसे प्रश्न खड़े होत ह। यदि पूरी वस्तु एक ही मनुष्यके श्रमसे बनी हो, तब तो उमकी पूरी कीमत पर उसके बनानेवालेका ही अधिकार माना जायगा। लेकिन हमने देखा है कि एक छाटीसी वस्तु बनानमें भी बहुतसे मनुष्याका अलग अलग रूपमें हिस्सा हाता है। इसलिए यह प्रश्न पदा होता है कि किसी वस्तुकी कीमतमें से उसे बनानेमें मजद करनवाला हर मनुष्यका कितना भाग मिलना चाहिये। खादीका उदाहरण उ तो उसके उत्पादनमें मजद उत्पादन करनवाला मजद ओटनवाला, रुईको पीजकर पूनी बनानवाला इन पूनियासे सूत कातनेवाला और इस सूतको बुननेवाला — इस तरह कई लोगका भाग हाता है। ये सारी क्रियाएँ करनवाले अपने-अपने कामके बदलेमें मजदूरी पाते ह। और इस सारी मजदूरीके कुल खर्च परसे खादीकी कीमत निश्चित की जाती है। अथवा यह भी कह सकते ह कि खादी बेचने पर खादीका जो कीमत मिलती है वह खादी तयार करनेमें जित जिन लोगों द्वारा हिस्सा लिया जाता है उनका बीच उनके मजद श्रमके अनुपातमें बंट जाती है। कई मनुष्याके सहयोगसे उत्पन्न होनेवाली संपत्तिके बंटवारेके सम्बन्धमें अनेक महत्त्वपूर्ण तथा न्याय और नीतिके एम प्रश्न खड़े होते ह जिन पर बहुत धारीकी और गहराईसे विचार करनी जरूरत होनी है।

१० यह भी बड़े महत्त्वका विषय है कि उत्पन्न हुई संपत्तिका उपभोग कमे किया जाय। किसी भी वस्तुका पूरा पूरा उपयोग कर लेना अथवा उसका थोडा भी बिगाड न होने देना उसके उपभोग या श्रममें बड़े महत्त्वकी बात है। आज मनुष्य जातिके हाथमें जितनी संपत्ति है उसका अगर सम्बन्ध ही, तो मनुष्य-जातिके सुखकी मात्रा आजमे कहा अधिक बू जाय। लेकिन हम इस पुस्तकमें देखेंगे कि आज तो हम वस्तुओंका भारी दुर्व्यय कर रहे ह।

११ इस तरह अथ या संपत्तिस सम्बन्ध रखनवाली जो प्रवृत्ति मनुष्य करता है, उसके उत्पादन विनियम, वितरण और व्यय या उपभोग जैसे चार मुख्य विभाग हो जाते ह। इन चारों विभागसम्बन्धित मनुष्यक व्यवहारका विवेचन करके तथा उनसे सम्बन्धित नीति नियम निश्चित करनेका प्रयत्न करके उनका आशास्त्र रचा गया है उसे अथशास्त्र कहते ह। उसमें किसी एक व्यक्ति या वर्गके हितकी दृष्टिमें नहीं बल्कि सारे समाजक हितकी दृष्टिस विचार किया जाता है, अथवा किया जाना चाहिये। किया जाना चाहिये'

मन इसलिए कहा है कि आज वस्तुतः ऐसा होता नहीं है। प्रत्येक देशके अर्थशास्त्रियोंने इसी बातका अधिक विचार किया है कि अपने देशका उत्पादन और व्यापार किस तरह बढे। इस उत्पादन और व्यापारसे बहुत छोटे लोग ही लाभ उठाते हैं और अधिकतर लोगोंको तो अपनी प्राथमिक आवश्यकतायें पूरी करने जितना भी नहीं मिलता। इस दुराईकी तरफ अर्थशास्त्रियोंका ध्यान अभी अभी ही गया है।

अर्थशास्त्रका उद्देश्य

१२ जिस रूपमें और जिस पद्धतिसे आज इस विषयकी चर्चा होती है अर्थात् आज जिसे अर्थशास्त्र कहा जाता है उसका जन्म और विकास पिछले तीन सौ वर्षमें ही हुआ है। यूरोपके कुछेरे राष्ट्रोंने सात समुद्र पार करके व्यापारके नाम पर दुनियाभरमें जो लूट मचाई उसीके साथ इस शास्त्रका जन्म हुआ है और यूरोपमें कारखानों और पूजीवादका जो विकास हुआ उसीके साथ इस शास्त्रका विकास हुआ। इसलिए भयकर अत्याचार अन्याय और शोषणके साथ वर्तमान अर्थशास्त्रके जन्म और विकासका गहरा सम्बन्ध है। आर्थिक प्रगतिके नाम पर यूरोपके अर्थशास्त्रियोंने यूरोपके राष्ट्रोंने इस अत्याचार अन्याय और शोषणका बचाव भी किया है। आज दुनियामें हम देखते हैं कि थोड़ेसे धनवान लोगोंको किसी भी चीजकी कमी नहीं रहती और बहुत बड़े गरीब वर्गको पेटभर खानको भी नहीं मिलता। इस अन्यायपूर्ण विषमताका कारण यह है कि अर्थ या संपत्तिसे सम्बन्धित हमारे व्यवहार जिस शास्त्रक अनुसार चलते हैं उस शास्त्रका सच्चा उद्देश्य और उसका सच्चा स्वरूप हमने समझा ही नहीं है। अर्थशास्त्रका सच्चा उद्देश्य तो ऐसे नियम खोज निकालना होना चाहिये जिनके अनुसार अर्थ-सम्बन्धी हमारे सारे व्यवहारकी ऐसी व्यवस्था हो सके कि समाजमें किसीको किसी भी तरहका आर्थिक कष्ट न होना पाय। अर्थात् हर मनुष्यको पूरा काम मिल पाय और जो पूरा काम करे उसे अपनी उचित आवश्यकताकी सारी चीजें मिल जायें। किसी भी अर्थ व्यवस्थाको समाजके लिए हितकारी समझा जा सकता है जब समाजके प्रत्येक व्यक्तिको अपनी शक्तिके अनुसार अनबूल काम करनेका पूरा पूरा मौका मिलता रहे अर्थात् उस कामको करनेके लिए जिन साधनों या औजारोंकी आवश्यकता हो उनके मिशनमें कोई रुकावट न हो तथा उन कामोंके लिए जो कुदरती साधन चाहिये उन्हें आवश्यकताके अनुसार काममें लेनेकी पूरी-पूरी स्वतन्त्रता हो। इसके बिना यह भी जरूरी है कि उसके किये हुए कामोंसे होनेवाले उत्पादन अथवा उत्पन्न से मिलनेवाले फलका लाभ दूसरे लोग अनुचित

या गलत तरीकेसे न उठा लें। सार यह कि समाजमें भुखमरी और गरीबी न रहे, एक देश दूसरे देशका और एक ही देशमें एक बग दूसर बगका शोषण न कर सके। ऐसी अथ-व्यवस्था किस ढंगसे निमाण की जा सकती है यह बताना अथशास्त्रका काम है।

१३ इनमें यह याद रखना चाहिये कि अथ अथवा संपत्ति ता केवल साधन है। अथशास्त्रका मूल और मुख्य उद्देश्य इस बातका विवचन करना है कि इन साधनके सच्चे स्वरूप तथा उसका उत्पादन उससे विनिमय उसके वितरण और व्यय आदिकी व्यवस्था किस प्रकार की जाय जिससे मानव जातिको नुन गान्ति मिले और उसका कल्याण हो। अर्थात् अथशास्त्रकी दृष्टिमें अथ अथवा संपत्ति ता साधन मानो जानी चाहिये और मानव जातिका सुख और कल्याण साध्य माना जाना चाहिये। लेकिन आजकलकी अथ प्रवृत्तिकी जाच करनेसे मात्तूम होना है कि उसमें साधनको ही साध्य मान लिया गया है। आजकल समाजके विनाश जन-समुदायकी आर्थिक स्थितिका उपेक्षा करके इसी विचारको प्रधानता दी जाती है कि उत्पादन किस तरह बनाया जाय अथवा नफा किम तरह कमाया जाय। इस विचारका समर्थन करनेवाले अथशास्त्रा भी दुनियामें मौजूद हैं और अथशास्त्रके नाम पर अनेक बुराईया उत्पन्न हो गई हैं।

अथशास्त्रके नियम

१४ किसी भी विषयका शास्त्रीय विवेचन करनेके लिए अथवा शास्त्रकी रचनाके लिए हम उस विषयसे सम्बन्ध रखनेवाले तथ्योंकी दारीकीसे जाच करके और उनका एकत्र करके उनका व्यवस्थित वर्गीकरण करते हैं और इस तरह बानानिक पद्धतिसे जमाये हुए तथ्या परसे उनके बारेमें सबसामान्य नियम निकालते हैं। इस पुस्तकमें हम देखगे कि अथशास्त्रके भी ऐसे नियम या धानून निश्चित करनेके प्रयत्न किये गये हैं।

१५ भौतिकशास्त्रा — जैसे पत्तय विज्ञान, रसायनशास्त्र आदि — के नियम जितने निश्चित और पूर्ण बन गये हैं उतने निश्चित और पूर्ण अथशास्त्रके नियम नही मान जा सकते। गुह्रत्वावपणका नियम किसी भा देशमें और किसी भी समय लागू होगा ही। आप दी माप हाइड्रोजनके त्कर उसमें एक माप आक्सीजनका मिलायगे तो पानी बनगा ही। ऐसा अथशास्त्रके नियमोंके सम्बन्धमें होता नही दिखाई देता। इसका कारण यह है कि जहा भौतिकशास्त्रमें जड वस्तुएँ एक-दूसरे पर अपना प्रभाव डालती दिखाई देती हैं वहा अथशास्त्र एक सामाजिक शास्त्र होनेके कारण उसमें विभिन्न स्वभावा

विविध विचारों विविध भावनाओं और विविध आदर्शोंवाले मानवांगी प्रवृत्तियाँ तथा उनके आपसी व्यवहार अपना अपना पाठ अंग करते हैं। मनुष्य-स्वभाव सब देशों और सब समयों में एकसा ही नहीं रहता। इसीलिए इंग्लैंड में अर्थशास्त्रके जनक माने जानेवाले प्रसिद्ध लेखक एडम स्मिथन मनुष्यको एक देश और हर जमानत स्वायत्त पुत्र मानकर अपने अर्थशास्त्र का नियम बनाये वे अधिकतर गलत सिद्ध हुए हैं और अनय करनेवाले भी मिथ हुए हैं। वैसे ही एक अन्य लेखक रिचार्डोंने मनुष्यको माल पदा करनेवाला जड़ यंत्र समझकर उसे इतनी ही मजदूरी मिलनेका नियम दूना निश्चय जिसे मजदूर मुश्किलसे जिंदा रह सके। इस नियमका उसने अर्थशास्त्रमें स्थान दे दिया। वह नियम भारी अत्याचार और अयायवों का कारण बन गया इसलिए उस नियममें आज परिवर्तन हो रहे हैं। मतलब यह कि अर्थशास्त्रके नियम कभी बदल न सकें और सदाके लिए अटल ही ऐसी कोई बात नहीं है।

१६ इसके अतिरिक्त देश और कालके अनुसार भी अर्थशास्त्रके नियम बदलते देखे जाते हैं। स्वामित्वके अधिकारके नियमका ही उदाहरण लीजिये। जब वह मानव जातिके प्रगतिके लिए आवश्यक मालूम हुआ तब धीरे धीरे उसका विकास हुआ और स्वामित्वके अधिकारमें बड़े अगाध समावेश हुआ। लेकिन आज वह शोषणकारी और आलस्यका कारण बनकर मनुष्यके हितमें रुकावट डालनेवाला हो गया है। इसलिए उसमें काफी काटछाट होनी पड़ी है और यहाँ तक कहा जान लगा है कि उत्पादनके साधनों परसे तो स्वामित्वका अधिकार बिलकुल उठ ही जाना चाहिये। कालकी तरह देशके अनुसार भी अर्थशास्त्रके नियम बदलते हैं। किसी भी देशके अर्थशास्त्रका आधार उसकी भौगोलिक परिस्थिति पर अर्थात् वहाँकी आबो-वा जमीनका स्वरूप तथा नदियों पहाड़ों समुद्र आदिकी सुविधाओं और असुविधाओं पर होता है। फिर भौगोलिकके साथ ऐतिहासिक कारणोंसे भी किसी देशके निवासियोंका स्वभाव विशेष प्रकारका बन जाता है। इस मानव-स्वभाव पर भी उस देशके अर्थशास्त्रका आधार रहता है। इंग्लैंडके अर्थशास्त्रसे जर्मनीका अर्थशास्त्र भिन्न है। इंग्लैंडने दूसरे देशोंके बाजारोंको हथिया कर तथा अपना माल उन बाजारोंमें भरकर उनका शोषण आरम्भ किया और अपने इस शोषणको टिकाव रखनेके लिए ऐसा सिद्धान्त निकाला कि अप्रतिबद्ध अथवा मुक्त व्यापारकी नीति ही अर्थशास्त्रको माय हो सकती है। परन्तु जर्मनी नये नये उद्योग खड कर रहा था। अतः उसके अर्थशास्त्रियोंने सरक्षित व्यापारकी नीतिको ही समयन किया। फिर जिस अप्रतिबद्ध अथवा मुक्त

व्यापारकी नीतिने इरलण्डको मालामाल कर दिया, उसी नीतिको उसने भारत पर जबरन लादकर उसे बगाल बना दिया। इरलण्ड और जमनी जैसे छोटे देशका लाभ इसीमें है कि वे अपन उद्योग धंधे यत्रा द्वारा ही चलावें। यह भा समझमें आ सकता है कि यूनाइटेड स्टेट्स (अमेरिका) जस विशाल विन्तु बहुत थोड़ी आबादीवाले देशको यत्रोका सहाय लेना पड़े। परन्तु भारत जसा विशाल क्षेत्रफलवाला और उतनी ही विशाल आबादीवाला देश भी अपने सारे उद्योग धंधे यदि यत्रोकी मददसे चराने लगे, ता देशके चालीस करोड लोगोमें से तीस करोडस अधिक लोगोको बेकार होना पडगा, अथवा सारे लोगोका यदि यत्रोसे चरानेवाले उद्योग धंधामें लगा दिया जाय तो इतना अधिक माल तयार हो जायगा कि यही न मूवेगा कि उस मालका क्या किया जाय। इस प्रकार हर दशक लिए आर्थिक नियम उसकी परिस्थितियोके अनुसार भिन्न भिन्न होते ह। इस कारणसे जो वस्तु एक देशके लिए अमूल्य हो वही दूसरे देशके लिए जहर जसी हो सकती है। रोएदार चमकेका कोट केनाडा या स्वाटलण्ड जमे बहुत ठडे देशामें आवश्यक माना जायगा, परन्तु गरम देशाम वह बोज़ बन जायगा।

१७ इस तरह कालक अनुसार देशके अनुसार तथा वहाके मनुष्य-समाजके स्वभाव और आदशके अनुसार अध्यात्मिक नियम भिन्न भिन्न होने ह। इसके अलावा, भौतिकशास्त्रके नियमोमें मनुष्य कोई परिवर्तन कर ही नहीं सकता परन्तु अध्यात्मिक नियमामें यह बात नहीं होती। इसका कारण यह है कि अध्यात्मिक नियमोका आधार परिस्थितिया पर रहता है और मनुष्य अपने प्रयत्नसे परिस्थितियो पर नियंत्रण पा सकता है और उनमें बहुत परिवर्तन भी कर सकता है। उदाहरणके लिए, कसी भी प्रतिकूल परिस्थिति हो ता भी विनापत जीवनकी प्राथमिक आवश्यकताओके बारेमें हर देश अपने परा पर खडा रहने और अपन ही साधनोसे उन्हें पूरा कर लेनेम अपनी सुरक्षिता समर्थता है। इन आवश्यकताओकी चीजें अपने देशमें उत्पन्न न करके दूसरे देशोसे मगानेम बहुत सस्ती पडती हो तो भा मंहगे-सस्तेके नियमोको ताकमें रखकर उस देशके लोग भारी बचट उठाकर भी ऐसी स्वावलम्बी स्थिति प्राप्त करने और उसे टिकाये रखनेका परिश्रम करते ह। इसका अर्थ इतना ही हुआ कि अध्यात्म हर देश और हर समयमें एकसा रहनवाग्य साम्य नहीं है। फिर भी इस शास्त्र इसलिए कहा जाता है कि किसी विशेष कालमें किसी विशेष देशकी परिस्थितियाको देखकर और उनके कारणाकी गहक करके हम इस प्रश्न पर शास्त्रीय पद्धतिसे विचार कर सकते ह कि उन

परिस्थितियोंमें तथा उन कारणाके रहते हुए वहाँके जन-समाजकी प्रगति और कल्याण साधनेकी दृष्टिसे हमारी आर्थिक प्रवृत्तिया वैसे चलाई जाय और विचार करनके बाद इन आर्थिक प्रवृत्तियाके नियम भी बना सकते हैं।

२

अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र

१ विविध मानव-व्यवहारों और सबधाका सार जन-समाजकी सुख गति, प्रगति और कल्याणकी दृष्टिसे विचार और विवेचन करनेवाले शास्त्रोंके लिए सामान्यतः समाजशास्त्र शब्दका प्रयोग किया जाता है। संपत्तिके स्वरूप और उसके उत्पादन विनिमय आदिसे संबंधित मनष्यके व्यवहारोंके विचार अर्थशास्त्र करता है इसलिए वह समाजशास्त्रकी एक शाखा माना जाता है। राजनीति शास्त्र विधानशास्त्र समाज रचना नीतिशास्त्र—ये सब भी मानवीय व्यवहारोंसे संबंध रखनेवाले शास्त्र होनेके कारण समाजशास्त्रकी ही शाखाएँ हैं। अर्थशास्त्रमें मानव-आर्थिकी सुख गति आदिके लिए संपत्ति जैसे एक साधन मानी जाती है, उसी तरह राजनीतिमें राज्य-व्यवस्थाका और राज्य-संस्थाओंकी, विधानशास्त्रमें विधानों या कानूनोंको समाज रचनामें सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक संस्थाओंकी तथा नीतिशास्त्रमें सदाचार या नीतिमय व्यवहारके सिद्धान्तों और नियमोंको साधन माना गया है। इन सब शास्त्रोंका उद्देश्य एक ही है इसलिए वे एक-दूसरेके साथ अत्यंत घनिष्ठ संबंध रखते हैं। प्रत्येक शास्त्रका प्रभाव दूसरे-सारे शास्त्रों पर सदा पड़ता ही रहता है। इनमें से कोई भी एक शास्त्र दूसरे किसी शास्त्रकी उपेक्षा करे तो उसमें अनर्थ ही उत्पन्न होता है। पुराने अर्थशास्त्री इन सब शास्त्रोंका परस्पर संबंध और परस्परावलम्बन समझ ही नहीं पाय थे। और इसीलिए अर्थशास्त्र संबंधी उनका आवलन दोषपूर्ण रहा। विभिन्न देशोंमें मनुष्यने जो आर्थिक प्रगति की है उसके इतिहासकी जांच की जाय तो जान पड़ेगा कि राजनीति, नीतिशास्त्र और धार्मिक भावनाओंसे समाजकी अर्थ प्रवृत्ति पर गहरा प्रभाव डाला है। ये सारे सामाजिक शास्त्र एक-दूसरेके साथ किस तरह गय हुए हैं इसकी थोड़ी ज्ञाती ही यहाँ दी जा सकेगी।

राजनीतिशास्त्रके साथ संबंध

२ राज्य-व्यवस्था और राज्य-संस्थाओंका स्वरूप क्या है तो उस व्यवस्था और संस्थाओंके अधीन रहनवाले समाजकी सुख गति और प्रगति

माधी जा सकती है — इस प्रश्नका विवेचन करके तत्संबंधी नियम तय करना राजनीतिशास्त्रका मुख्य उद्देश्य है। सम्पत्तिके उत्पादन और वितरणकी विभिन्न पद्धतियाँ यानी समाजका अर्थ रचनाका अनुसरण करके अलग-अलग समयमें राजनीतिक विचार अलग-अलग प्रकारसे हुआ है और अमुक प्रकारकी राज्य व्यवस्था और राजनीतिक सस्याजाना उभय हुआ है। उदाहरणके लिए जिस समय गुलामीकी प्रथा अस्तित्वमें थी और उत्पादनसे सम्बंधित मेहनत मजदूरोंके सारे काम गुलामोंसे कराये जाते थे, उस समय गुलामीकी प्रथाको आवश्यक मानकर उस स्वीकार करनेमें और गुलाम अपने मास्कोंके पूरी तरह अधीन रहकर पूरा काम करे ऐसी व्यवस्था करनेमें सच्ची राजनीति मानी जाती थी। कुछ समयसे अर्थ-व्यवस्था पूँजीवादी पद्धति पर चल रही है और हर एक देशमें शासन-सत्रका उसे काफी सहारा मिला है। पर पूँजीवादी आज समाजकी मुख्य शक्ति और प्रगतिमें एक रोड़ा बन गया है। समाजकी सारी आर्थिक शक्तियाँ चारा तस्से उस पर हमला कर रही हैं। उसकी बुनियाद हिल उठी है। फिर भी पुराने विचारके राजनीतिज्ञ और उनका अमरमें चलनवाले राज्यतंत्र आज भी पूँजीवादी रक्षा करनेके प्रयत्नमें लगे हुए हैं। दूसरी तरफ देखें तो एक जैसे देशमें पूँजीवादको उखाड़ फेंकनेके उद्देश्यसे, एक विशेष दल राज्यसत्ताको हाथमें लेकर पूँजीवादका नाश करनेके लिए उसका पूरा उपयोग करनेमें लगा हुआ है। हमारे देशमें अंग्रेजोंने अपनी राज्यसत्ताका काफी उपयोग करके यहाँकी प्राचीन खेती प्रधान और ग्रामोद्योग प्रधान तथा आर्थिक दृष्टिसे लगभग स्वयंपूर्ण गाँवोंकी समाज व्यवस्था और अर्थ-व्यवस्थाको छिन्न भिन्न कर डाला है और देशके तथा विदेशके पूँजीवादियोंका सहारा दिया है। दूसरी तरफ यहाँकी ब्रिटिश सत्ताका विरोध करनेवाली राजनीतिक शक्तियाँ इस शान्त प्रयत्न कर रही हैं कि हमारे देशकी यह पुरानी अर्थ-व्यवस्था आवश्यक परिवर्तनके साथ पुनर्जीवित हो जाय।

३ इस तरह राजनीतिक आंदोलन और कायंत्रम तथा आर्थिक आंदोलन और कायंत्रम हमें एक-दूसरे पर अमर डालते ही रहते हैं। अन्वयता, समग्र इतिहासका व्यापक दृष्टिसे अवलोकन करने पर यह पाया जाता है कि जब अरसेके बाद तो राज्यतंत्रको समाजम काम कर रही आर्थिक शक्तियाँ और उनके कारण अमरमें आनेवाली अर्थ रचनाका अनुसरण करना ही पड़ता है। उदाहरणके लिए छोटे पमाने पर और म्यानीय आवश्यकतायें पूरा करनेके लिए उत्पादनकी प्रथा जब तक जारी रही तब तक राज्य भी छोटे छोटे ही थे। कभी कौर्द अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी और कीर्तिलोभी विजेता पदा होना

परिस्थितियोंमें तथा उन कारणोंके रहते हुए वहाँके जन-समाजकी प्रगति और कल्याण साधनेकी दृष्टिसे हमारी आर्थिक प्रवृत्तियाँ कसे चलाई जाय और विचार करनेके बाद इन आर्थिक प्रवृत्तियाने नियम भी बना सक्ते ह।

२

अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र

१ विविध मानव-व्यवहारों और सबधाका सारे जन-समाजकी सुख प्राप्ति प्रगति और कल्याणकी दृष्टिसे विचार और विवेचन करनेवाले शास्त्रोंके लिए सामान्यतः समाजशास्त्र शब्दका प्रयोग किया जाता है। संपत्तिके स्वरूप और उससे उत्पन्न विनिमय आदिने सबधित मनुष्यके व्यवहाराना विचार अर्थशास्त्र करता है इसलिए वह समाजशास्त्रको एक शाखा माना जाता है। राजनीति शास्त्र विधानशास्त्र समाज रचना नीतिशास्त्र—ये सब भी मानवीय व्यवहारोंसे सबध रखनेवाले शास्त्र होनेके कारण समाजशास्त्रका ही शाखाएँ ह। अर्थशास्त्रमें मानव जातिकी सुख प्राप्ति आदिके लिए संपत्ति जैसे एक साधन मानी जाती है उसी तरह राजनीतिम राय-व्यवस्थाको और राय-संस्थाओंको विधानशास्त्रमें विधानों या कानूनोंको समाज रचनामें सामाजिक व्यवस्था और सामाजिक संस्थाओंको तथा नीतिशास्त्रमें सदाचार या नीतिमय व्यवहारके सिद्धान्तों और नियमोंको साधन माना गया है। इन सब शास्त्रोंका उद्देश्य एक ही है इसलिए वे एक-दूसरेके साथ अत्यन्त घनिष्ठ सबध रखते ह। प्रत्येक शास्त्रका प्रभाव दूसरे सारे शास्त्रों पर सदा पड़ता ही रहता है। इनमें से कोई भी एक शास्त्र दूसरे किसी शास्त्रकी उपेक्षा करे तो उससे अनर्थ ही उत्पन्न होता है। पुराने अर्थशास्त्री इन सब शास्त्रोंका परस्पर सबध और परस्परबाधलम्बन समझ ही नहीं पाय थे। और इसीलिए अर्थशास्त्र सबधी उनका आकलन दोषपूर्ण रहा। विभिन्न देशोंमें मनुष्यने जो आर्थिक प्रगति की है उसके इतिहासकी जांच की जाय तो जान पड़ेगा कि राजनीतिम नीतिशास्त्रने और धार्मिक भावनाओंम समाजकी अर्थ प्रवृत्ति पर गहरा प्रभाव डाला है। य सारे सामाजिक शास्त्र एक-दूसरेके साथ विस तरह गुंथ हुए ह इसकी थोड़ी जाँच ही यहाँ दी जा सकेगी।

राजनीतिशास्त्रके साथ सबध

२ राय-व्यवस्था और राय-संस्थाओंका स्वरूप कसा हो तो उस व्यवस्था और संस्थाओंके अधीन रहनेवाले समाजकी सुख प्राप्ति और प्रगति

साधी जा सकती है — इस प्रश्नका विवेचन करके तत्संबन्धी नियम तय करना राजनीतिशास्त्रका मुख्य उद्देश्य है। सम्पत्तिक उत्पादन और वितरणकी विभिन्न पद्धतियाँ यानी समाजकी अथ रचनाका अनुसरण करके अलग-अलग समयमें राजनीतिक विचार अलग-अलग प्रकारसे हुआ है और अमुक प्रकारकी राज्य व्यवस्था और राजनीतिक समस्याएँ उत्पन्न हुआ है। उदाहरणके लिए, जिस समय गुलामोंकी प्रथा अस्तित्वमें थी और उत्पादनमें सबधित मेहनत मजदूरोंके सारे काम गुलामोंसे कराये जाते थे, उस समय गुलामोंकी प्रथाका आवश्यक मानकर उसे स्वीकार करनेमें और गुलाम अपने मालिकोंके पूरी तरह अधीन रहकर पूरा काम करें ऐसी व्यवस्था करनेमें सच्ची राजनीति मानी जाती थी। कुछ समयमें अध-व्यवस्था पूँजीवादी पद्धति पर चल रही है और हरएक देशमें शासन-तंत्रका उसे काफी सहारा मिला है। पर पूँजीवाद आज समाजकी मुख्य शक्ति और प्रगतिमें एक राधा बन गया है। समाजकी सारा आर्थिक शक्तियाँ चारों तरफसे उस पर हमला कर रही हैं। उसकी बुनियाद हिल उठी है। फिर भी पुराने विचारोंके राजनीतिज्ञ और उनमें असरमें चलनेवाले राज्याध्यक्ष आज भी पूँजीवादकी रक्षा करनेके प्रयत्न में लगे हुए हैं। दूसरी तरफ देखें तो तब जैसे देशों में पूँजीवादको उखाड़ फेंकनेके उद्देश्यसे एक विशेष दल राज्यसत्ताको हाथमें लेकर पूँजीवादका नाश करनेके लिए उसका पूरा उपयोग करनेमें लगा हुआ है। हमारे देशमें अज्ञाने अपनी राज्यसत्ताका काफी उपयोग करके यहाँकी प्राचीन खेती प्रधान और ग्रामोद्योग प्रधान तथा आर्थिक दृष्टिसे उन्नत स्वयंपूर्ण गाँवोंकी समाज व्यवस्था और अध-व्यवस्थाको छिन्न भिन्न कर डाला है और देशके तथा विदेशोंके पूँजीवादियोंका सहारा दिया है। दूसरी तरफ यहाँकी ब्रिटिश सत्ताका विरोध करनेवाली राजनीतिक शक्तियाँ इस बातका प्रयत्न कर रही हैं कि हमारे देशकी यह पुरानी अध-व्यवस्था आवश्यक परिवर्तनके साथ पुनर्जीवित हो जाय।

३ इस तरह राजनीतिक आन्दोलन और कार्यक्रम तथा आर्थिक आन्दोलन और कार्यक्रम हमेशा एक-दूसरे पर असर डालते ही रहते हैं। अलवत्ता समग्र इतिहासका व्यापक दृष्टिसे अवलोकन करने पर यह पाया जाता है कि लंबे अरसेके बाद तो राज्यतंत्रोंको समाजमें काम कर रही आर्थिक शक्तियोंका और उनके कारण अमलमें आनेवाली अथ रचनाका अनुसरण करना ही पड़ता है। उदाहरणके लिए छोटे पमाने पर और स्थानीय आवश्यकतायें पूरी करनेके लिए उत्पादनकी प्रथा जब तक जारी रखी तब तक राज्य भी लोटे छोटे ही थे। कभी कोई अत्यन्त महत्वाकांक्षी और कीर्तिलोभी विजेता पदा होना

तो वह विनाश प्रदेगाको जीत कर अपना साम्राज्य जमाता। लेकिन उमके मरते ही उसका साम्राज्य भी छिन्नभिन्न हो जाता था। और ऐसे राज्यों या साम्राज्योंके हाथमें केवल सन्नि सत्ता हो होती थी। समाजकी दूसरी सारी प्रवृत्तियाँ वे हस्तक्षेप नहीं करते थे। परन्तु आज बड़े बड़े वारसान ख हो जानका फल यह हुआ है कि उनकी रक्षाके लिए बढ़ित सत्तावाले बड़े बड़े राष्ट्रिय अस्तित्वमें आये हैं। राष्ट्रिय आर्थिक मामलों कितना प्रभाव डाल सकती है इसका एक बड़ा प्रमाण आजका बागजी नाटाके रूपमें होनवाला मुद्रा प्रसार है। इस मुद्रा प्रसारण सारे देशके आर्थिक तंत्रमें उथल पुथल मचा दी है। इसके सिवा आज कोई भा सरकार अपनी अन्तर्राष्ट्रीय नीति अपने आर्थिक प्रश्नके अनुसार ही निश्चित करती है। उसमें द्रव्य-सवधी नीतिका बहुत बड़ा हिस्सा होता है। एक राष्ट्रकी दूसरे राष्ट्रके साथ चलनेवाली प्रतिस्पर्धा केवल विजेताकी कीर्ति प्राप्त करने या ह्म्यति प्राप्त करनेके लिए नहीं होती मुख्यतः वह आर्थिक स्वरूपकी ही होती है। प्रत्येक राष्ट्रका राष्ट्रिय दुनियामें जहासे मिल सके वहीसे अपने देशके लिए कच्चा माल जटान और अपने देशमें तयार होनवाले पक्के मालको दूसरे देशोंमें खपानके लिए बाजारों पर बजा करनेका जी-तोड़ प्रयत्न कर रहा है। आजका ससारक राष्ट्रोंके बीच जो बड़ी भारी प्रतिस्पर्धा चल रही है उसका और उससे पदा हुए विश्वव्यापी युद्धका मुख्य कारण भी आजकी यह आर्थिक प्रतिस्पर्धा ही है।

विधानशास्त्रके साथ सवध

४ अर्थनीतिका राजनीतिके साथ जितना सवध दखनमें आता है उससे भा अधिक और स्पष्ट सवध अर्थ रचनाका विधानशास्त्र तथा कानूनके साथ देखा जाता है। यह सच है कि जिनके हाथमें राष्ट्रिय सत्ता होती है वे कई बार अपनी मरजीके मुताबिक कानून बनाते देख जाते हैं। परन्तु समाजमें काम करनेवाली अलग-अलग शक्तियों और समाजकी सच्ची आवश्यकताओं पर अच्छी तरह ध्यान दिय बिना जो लोग मनमाने ढंगसे कानून बनाने बठ जाते हैं वे सच्चे विधानशास्त्री नहीं कहाने और उनके बनाये हुए कानून ज्यादा दिन टिक भी नहीं सकते। चाहे जितना बखान राष्ट्रिय सत्ता भी एसे मनमाने कानून पर बहुत दिन तक प्रजासे अमल नहीं करा सकती। विधानशास्त्रियाका सच्चा काम तो यह है कि समाजकी प्रगतिमें सहायता पहुचानवाली समाजमें तबे समयसे बनी आनेवाली और आम लोग द्वारा माय की हुई परम्पराआ रुढियाँ और विवासोंको कानूनका रूप देकर उन्हें निश्चित और ठोस आकार

हैं। कभी ऐसा होता है कि काँड़ रीति रिवाज या रूढ़ि आरम्भमें तो समाजको बल देनेवाली मिट्टी होती है परन्तु परिस्थितियाँ बदल जानेके कारण वामें वह समाजको नुकसान पहुँचाने लगती है। जब बुद्धिमान और उन्नत विचारके लोग ऐसे रीति रिवाजों या रूढ़ियोंके नुकसानका समझते हैं, परन्तु जनसमाज परम्परायें चिपटे रहनेकी जड़ताके कारण ही उन रीति रिवाजों या रूढ़ियोंका न छोड़ सकता हो, तब भी विधानशास्त्र उन्नत लोकमतका सहारा लेकर कानून बनाते हैं और उसके जरिये जनसमाजकी जड़ता पर प्रहार करते हैं। इस तरह जहाँ लोकमत समझदार और निर्दिष्ट होता है वहाँ तो कानून लोकमतका अनुसरण करता ही है। परन्तु जहाँ लोकमत मूर्ख होता है वहाँ कानून उन्नत लोकमतका सहारा लेकर अज्ञान और जड़ लोकमतका सुधार देनेका काम करता है। बाल विद्याहको रोकने और विधवा विद्याहकी अनुमति देनेवाले कानून इसी तरहके हैं। ग़राब-दीन जम मामल्लोंमें कानून बुरी आदतके गिकार बन हुए लोगोंको उनकी कमजोरीसे बचाना काम करता है। परन्तु वह कानून सफ़लतासे तभी काम कर सकता है जब लोकमत उसके अनुकूल हो। लोकमतका ठुकराकर कोई कानून कभी भी सफल नहीं हो सकता। अमरीकामें ग़राब-दीन कानून बनाया गया था। परन्तु लोकमत अनुकूल न होनेके कारण वहाँका कानून मध्य निषेध करानेमें सफ़ल नहीं हुआ। दूसरी तरफ़ हमारे देशमें ग़राबके विरोधमें लोकमत हमेशा प्रबल रहा है। इसलिए कांग्रेस सरकाराने अलग अलग प्रान्तामें कानूनकी मददसे शराब बन्दगीका जो काम उठाया वह पूरी तरह सफल रहा।

५ अब हम आर्थिक विषयमें सञ्चित कानूनके कुछ उदाहरण लेकर अध्यात्म और विधानशास्त्रका संबंध स्पष्ट करेंगे। हम स्वामित्व-अधिकार और उत्तराधिकारका विचार करेंगे जो आज सर्वभाष्य बने हुए हैं। जब खना करनेके लिए जमीनकी कमी नहीं थी, लेकिन वह जमीन खेतीके उपयोगमें तभी लाई जा सकती थी जत्र उसे खूब परिश्रम करने साफ़ कर लिया जाता, उस समय जिस समूह या कुटुम्बके सावधानीय भाव बड़ा परिश्रम करके उस जमीनको साफ़ किया हाँ उसका स्वामित्वका अधिकार उस पर सुरक्षित रहे और उसके धारिताका उत्तराधिकार भी मान लिया जाय तभी उस समूह या कुटुम्बको उस जमीनका सफ़ाई करनेकी लगन रह सकती थी। अगर ऐसा हो कि आज एक कुटुम्ब बड़ा परिश्रम करे और बल दूसरा कुटुम्ब आकर उस बाँहर निकाल दे तो ऐस समाजमें स्वाभाविक ही किसीको परिश्रम करनेका उत्साह नहीं रहेगा। नतीजा यह होगा कि ऐस समाजमें आर्थिक उन्नति खूब जायगी। अतः

तो वह विनाश प्रदेगावो जीत कर अपना साम्राज्य जमाता। लेकिन उसने मरते ही उसका साम्राज्य भी छिन्नभिन्न हो जाता था। और ऐसे राज्यों या साम्राज्योंके हाथमें केवल सैनिक सत्ता ही होती थी। समाजकी दूसरी सारी प्रवृत्तियोंमें वे हस्तक्षेप नहीं करते थे। परन्तु आज बड़े बड़े कारखाने खड़े हो जानेका फल यह हुआ है कि उनकी रक्षाके लिए केन्द्रित सत्तावाले बड़े बड़े राज्यतंत्र अस्तित्वमें आय हैं। राज्यसत्ता आर्थिक मामलोंमें कितना प्रभाव डाल सकती है इसका एक बड़ा प्रमाण आजका कागजो नापाने काममें होनवाला मुद्रा प्रसार है। इस मुद्रा प्रसारन सारे देशके आर्थिक तंत्रमें उथल-पुथल मचा दी है। इसके सिवा आज कोई भी सरकार अपनी अन्तर्राष्ट्रीय नीति अपने आर्थिक प्रश्नोंके अनुसार ही निश्चित करता है। उसमें द्वन्द्व-संबन्धी नीतिका बहुत बड़ा हिस्सा होता है। एक राष्ट्रकी दूसरे राष्ट्रके साथ चलनवाली प्रतिस्पर्धा केवल विजताकी कीर्ति प्राप्त करने या स्थिति प्राप्त करनेके लिए नहीं हानी मूल्यन वह आर्थिक स्वरूपकी ही होती है। प्रत्येक राष्ट्रका राज्यतंत्र दुनियामें जहासे मिल सके वहीसे अपने देशके लिए बच्चा माल जुटान और अपने देशमें तयार हानेवाले पक्के मालको दूसरे देशोंमें खपानके लिए बाजारों पर कब्जा करनका जी-तोड़ प्रयत्न कर रहा है। आजकल ससारके राष्ट्रोंके बीच जो बड़ी भारी प्रतिस्पर्धा चल रही है उसका और उससे पैदा हुए विश्वव्यापी मुद्दका मुख्य कारण भी आजकी यह आर्थिक प्रतिस्पर्धा ही है।

विधानशास्त्रके साथ संबंध

४ अधिनीतिका राजनीतिके साथ जितना संबंध देखनमें आता है उससे भी अधिक और स्पष्ट संबंध अधि रचनाका विधानशास्त्र तथा कानूनोंके साथ देखा जाता है। यह सच है कि जिनके हाथमें राज्यसत्ता होनी है वे कई बार अपनी मर्जीके मुताबिक कानून बनाते देखे जाते हैं। परन्तु समाजमें काम करनेवाली अलग-अलग शक्तियों और समाजकी सच्ची आवश्यकताओं पर अच्छी तरह ध्यान दिए बिना जो लोग मनमाने ढंगसे कानून बनाने बैठ जाते हैं, वे सच्चे विधानशास्त्री नहीं कहलाते और उनके बनाए हुए कानून ज्यादा दिन टिक भी नहीं सकते। चाहे जितनी बखानेवाली राज्यसत्ता भी ऐसे मनमाने कानूनों पर बहुत दिन तक प्रजासे अमर नहीं करा सकती। विधानशास्त्रियोंका सच्चा काम तो यह है कि समाजकी प्रगतिमें मांगपता पहुँचानेवाली समाजमें सब समझसे चली आनेवाली और आम लोगों द्वारा मांग की हुई परम्पराओं, रूढ़ियों और विश्वासोंके कानूनी रूप देकर उन्हें निश्चित और ठोस आकार

में। क्या ऐसा होता है कि बाइबिल-रिवाज या मूल्य-आदर्शों का उपासना
 एक दिन का मित्र होता है परन्तु परिस्थितियों के बदल जाने के कारण यानि
 समाज का नुकसान पहुँचाने लगता है। जब बुद्धिमान और अज्ञान विचारक
 एक ही रिवाज या रीति-रिवाज नुकसान का समर्थक हैं परन्तु समाज
 परंपरागत विचार-धर्मको जड़ताक कारण है उन रीति-रिवाजों या धर्मोंका
 न छोड़ सकता है, तब भी विधानशास्त्र उन्नत समाजका सहायक और
 कानून बनाते हैं और उमक जस्य उन्नतमात्रका जड़ता पर प्रहार करते हैं।
 इस तरह जहाँ समाजत समर्थक और निश्चिन्त हाता न बहा तो कानून
 समाजका अनुसरण करता ही है। परन्तु जहाँ लोकमानों का हाता
 बहा कानून उन्नत समाजका सहायक और अज्ञान और अज्ञानताका मुखा
 रतका काम करता है। बाल विवाहको रोकने और विधवा विवाहको अनुमति
 देनेके कानून इसा तरहक हैं। शराबकी जम-मामलोंमें कानून बुरा आचरण
 विचार बन हुए समाजका उन्नती कामजारीके बचानका काम करता है। परन्तु
 यह कानून सफलतास तभी काम कर सकता है जब समाजत उमक अनुकूल
 है। समाजका स्वभाव कोई कानून लम्बे समय तक टिक नहीं सकता।
 अमेरिकामें शराबकी कानून बनाया गया था। परन्तु लोकमत अनुकूल
 न होनेके कारण बहाका कानून मर निषेध करानेमें सफल नहीं हुआ। दूसरी
 तरफ हमारे देशमें शराब विरोधमें लोकमत हमेशा प्रबल रहा है।
 इसलिए कानून मरकारने अलग अलग प्रान्तोंमें कानूनकी मरकार
 बनीका जो काम उठाया वह पूरी तरह सफल रहा।

५ अतः हम आर्थिक विषयोंमें संबंधित कानूनोंके कुछ उपाहरण और
 अपराध और विधानशास्त्रका संबंध स्पष्ट करेंगे। हम स्वामित्व-अधिकार और
 उत्तराधिकारका विचार करेंगे, जो आज समाज बन हुए हैं। जब होती करनेके
 लिए जमीनकी कमी नहीं थी, लेकिन वह जमान कीके उपयोगमें तभी लाई
 जा सकती थी जब उस सूख परिश्रम करने साफ कर लिया जाता, उम समय
 जिस समूह या कुटुम्ब सावधानाक साथ बड़ा परिश्रम करके उम जमीनको
 माफ किया हो उसका स्वामित्वका अधिकार उम पर सुरक्षित रहे और उसके
 वारिसका उत्तराधिकार भा मान लिया जाय तभी उस समूह या कुटुम्बका उस
 जमीनकी सफाई करनेकी लगन रह सकती थी। अगर ऐसा हो कि आज एक
 कुटुम्ब का परिश्रम कर और कर दूसरा कुटुम्ब आकर उस बाहर निकाल
 दे तो ऐसे समाजमें स्वाभाविक है किमीको परिश्रम करनेका उत्साह नहीं
 रहेगा। नतीजा यह होगा कि ऐसे समाजमें आर्थिक उन्नति रुक जायगी। अतः

समाजकी मुस्थिति और आर्थिक प्रगतिके खातिर ही प्रथम तो य अधिकार एक अलिखित कानूनके रूपमें मान लिये गये। जैसे जैसे समाज आगे बढ़ता गया वैसे वैसे इन अधिकारोंमें जमीन किसीका भेंट दे सकनेका और इसी तरहके दूसरे भी तत्त्व दाखिल हुए और अन्तमें उन्हें कानूनका रूप दे दिया गया। किन्तु आज जब कि समाजका एक बहुत छोटा परन्तु गतिशील वर्ग उन अधिकारोंके बल पर बड़ी जमीन-जायदाद और उत्पादनके लगभग सभी साधनों पर अपना अधिकार जमाकर बैठ गया है और इन साधनों पर मजदूरोंसे अपनी ही शर्तों पर काम लेता है और बहुतोंके कामके बिना बेकार रहना पड़ता है यही कानून जो पहले किसी समय समाजकी आर्थिक उन्नतिके लिए आवश्यक थे आर्थिक उन्नतिमें रुकावट बन गये हैं। जो नई आर्थिक गतिविधियाँ उत्पन्न हो गई हैं और जो अर्थ-व्यवस्था बदलती जा रही है उसका भाग ये कानून रोकते दिखाई देते हैं। इस कारण समाजकी आर्थिक प्रगतिके लिए इन कानूनोंमें बड़ा सुधार करना और आज तक माय किये हुए अधिकारोंको मर्यादित करना आवश्यक हो गया है। मनुष्य मनुष्यके बीचके अर्थ-व्यवहारसे संबंधित कितने ही करारोंके बारेमें जिन्हें मौजूदा कानून स्वीकार करता है हम देखते हैं कि हमारी आर्थिक मुब्यवस्था और आर्थिक प्रगति जिस न्यायकी मांग करती है उस न्याय तक कानूनका न्याय नहीं जा सकता। जमीन पर अपने स्वामित्वके अधिकारका दावा करके किसी भी तरहका श्रम किये बिना कितने ही जमींदार अपने किसानोंको आज चूस रहे हैं, अथवा चारों तरफसे पैसेकी तंगीसे घिरा हुआ कजदार पचास या पचहत्तर प्रतिशत ब्याज देना करार लिख दे तो इस करारके बल पर आज तक साहूकार कजदारको पूरी तरह निचोड़ सकता है। इस तरह आर्थिक न्याय और कानूनके न्यायके बीच बहुत बार विसंगति उत्पन्न होनेके कारण स्वामित्व-अधिकारके उत्तराधिकारके और लेनदेनके कानूनोंमें जड़से परिवर्तन करनकी जरूरत पदा हो गई है।

६ एक दूसरा उदाहरण देकर हम इस बातको अधिक स्पष्ट करनकी कोशिश करेंगे। हमारे मित्र-मजदूरोंकी मजदूरीकी दरों और मजदूरोंके लिए दूसरी आवश्यक सुविधाओंके प्रश्न पर विचार करें। मालिकों और मजदूरोंके बीचके आर्थिक न्यायका विचार करने पर जहाँ इस बारेमें जरा भी शंका नहीं हो सकती थी कि मजदूरोंकी मजदूरीकी दर अधिक मिलनी चाहिये वहाँ कानून मजदूरोंको अधिक दर नहीं दिला सकता था। कानून तो कहता था कि मालिकों और मजदूरोंकी मजदूरीकी दरोंके बारेमें जो करार

करना हो उसे करनेके लिए वे स्वतन्त्र ह। कानून इस बातकी परवाह नहीं करता था कि करार करनेवाले का पक्षमें से एक पक्ष कम संगठित या राजपूत पर कम असर डालनेवाला और इसलिए नियंत्रित होनेके कारण माय पानमें समय नहीं है। इससे अतिरिक्त मजदूरोंको अमुक सुविधायें और लाभ मिलने चाहिये यह बात आर्थिक या दूसरी अनेक दृष्टियामें बिलकुल ही मायपूण क्या न हो परन्तु कानून इसके बीचमें नहीं पड़ता था। आखिर जब मजदूर अपना संगठन करके न्याय पानके लिए हड़तालें करने लगे तब विधानशास्त्री जागे और उन्हें मजदूरोंका दलोंके बारेमें मजदूरोंकी सुख सुविधाओंके बारेमें और इसी तरह मजदूरों और मालिकोंके बीचके दूसरे सबंधोंके नियंत्रणमें रखनेके बारेमें कानून बनाने पड़े। दूसरी बात यह है कि जितनी तेजीसे सुधार होने चाहिये उतनी तेजीसे सुधार होते नहीं। इन दृष्टिसे इन कानूनोंमें बड़ी न्यूनता मान्य होगी। जब लोचन जाग्रत होकर जोर आता है तब कानून अमलमें आनेवाली नई अय-व्यवस्थाकी सहायताके लिए तत्पर होता है। लेकिन एक बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि कानून नये आर्थिक बल पदा नहीं कर सकता। मजदूर जब संगठित होते लग तब कानून उनकी सहायता करने आया। किसानोंका संगठन हो तभी जमींदारों पर कानूनका अंकुश रखा जा सकता है। नये आर्थिक बलको नतिक बलके सहारेकी जरूरत पड़ता है, जो कानूनसे नहीं बल्कि संगठन और स्वावलम्ब्यसे मिलता है। कानून सुधारके लिए अनुकूल परिस्थिति अवश्य निर्माण कर सकता है।

समाज रचनाके माय सम्बन्ध

७ अगर हम कुटुम्ब-संस्थाका विवाहकी अन्त-अन्त प्रथाओंका और वण-व्यवस्थाका विचार करें तो उनकी जड़में समाजकी एक विशेष अय रचना जान पड़ेगी। समाजके कुछ काम घघाने लिए समुक्त कुटुम्बकी व्यवस्था अनुकूल थी, विविध घघाने सम्बन्धमें वण व्यवस्था हुई और वण-व्यवस्थामें से विवाह सबंधोंकी अमुक परिष्कार निर्माण हुई। इस तरह समाजकी इन संस्थाओंके उत्पन्न होनेका कारण अमुक तरहकी अय रचना मालूम होती है। इन संस्थाओंके स्थिर और दृढ़ हो जानेके बाद समाजके दूसरे क्षेत्रोंमें भी इन्हीं मानव जातिक विकासमें सहायता पहुँचाई है। उदाहरणके लिए इसमें कोई शक नहीं कि अयोग्यताके माय विभागके सिद्धान्तका अनुसरण करके ही हमारे देशमें वण व्यवस्था उत्पन्न हुई और उसका विकास हुआ। परन्तु समाजके आर्थिक विकासमें सहायक होनेके अलावा हमारी वण-व्यवस्थाने, जब तक वह शुद्ध

रूपम रही तब तब राजनीति-सांसारिक नतिक और धार्मिक क्षेत्रमें भी हमारा विकास किया। कुटुम्ब-संस्था और विवाह-संस्थाके विषयमें भी यही कहा जा सकता है। अर्थ-व्यवहारके सिवा दूसरे व्यवहारोंमें भी ये संस्थाएँ मानव-जातिके लिए बहुत उपकारक सिद्ध हुईं हैं इस कारण सारी दुनियाके समस्त समाजोंमें इनकी जड़ इतनी मजबूत जम गई है कि मनुष्यके लिए ये बहुत ही स्वाभाविक बन गई हैं और अतएव ये पवित्र भी मानी गई हैं। मानवताका ऊँचीसे ऊँची भावनाजगत् और उच्चतम ऊँच गुणाका इन संस्थाओंके विकास किया है तथा और भी अधिक उनका विकास करनेकी शक्ति इन संस्थाओंमें है। यद्यपि बदली हुई अर्थ-रचनाका घोंडा-बहुत असर तो इन संस्थाओं पर पड़गा ही फिर भी यह नहीं हो सकता कि अर्थ-व्यवस्थाके बदलाव पर इन संस्थाओंके लिए अपना अस्तित्व बनाय रखनेका कोई कारण न रह जायगा और इसलिए ये मिट जायगी।

८ हमने देखा लिया कि राष्ट्रपसत्ता और कानूनके साथ होनेवाले आर्थिक शक्तियोंके सघनमें आखिर जीत आर्थिक शक्तियोंकी ही होगी है। परन्तु यह विश्वास नहीं रखा जा सकता कि ऊपर बताई हुई जो संस्थाएँ मानव-जातिके लिए स्वाभाविक हो गई हैं उनके साथके सघनमें भी आर्थिक शक्तियोंकी ही जीत होगी। इन संस्थाओंकी नींव पर खड़े किये हुए समाज-तंत्रको छिन्न भिन्न कर डालनेवाले अर्थतंत्रकी रचनाके जो प्रयत्न होंगे वे शायद घोंडा-समय तक उत्पात मचा सकें परन्तु अन्तमें उनके निष्फल सिद्ध होनेकी ही संभावना है। वर्ण-व्यवस्थाके विषयमें यह बात सही है कि दुनियाके सब देशोंमें काय विभागके सम्बन्धमें और समाजके विभिन्न वर्गोंके रहन-सहनके सम्बन्धमें वह किसी न किसी रूपमें देखनेमें आती है। परन्तु हमारे देशमें इस व्यवस्थाका अधिक विचार किया गया है और उसकी रचना जन्मके आन्तरिक अतिरिक्त गुण-कर्मके अधिक शास्त्रीय आधार पर की गयी है।* वर्ण-व्यवस्थाके सिद्धांतकी जड़में यह विचारसरणी निहित है कि एक तरहका धंधा करनेवाले कुटुम्ब एक खास वर्णके माने जाय और उसने बाद उस वर्णमें ही वह धंधा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चला रहे जिससे वर्णपरम्परागत संस्कारोंका जोर बचपनसे ही इस प्रकारकी तालीम तथा कानून-व्यवस्थाके नाम मनुष्यको उस धंधके विकासके लिए प्राप्त हो और समाजका अर्थ-व्यवहार शान्तिसे चलता रहे। परन्तु आर्थिक प्रवृत्तियोंमें

* यह ध्यानमें रखना होगा कि हमारे देशमें इस समय जो जातिप्रथा चल रही है वह यह वर्ण-व्यवस्था नहीं है।

खुली प्रतिस्पर्धा तत्त्वका जो प्रचार हुआ, उसके फलस्वरूप दूसरे देशों और हमारे यहां भी बण-व्यवस्था छिन्न भिन्न हो गई। दूसरी तरफ यह अमर्यादित प्रतिस्पर्धा समाजकी प्रगति माघनमें और सुख-शान्ति कायम करनेमें असफल सिद्ध हुई है। इतना ही नहीं इसने सारी दुनियाको लडाइका आगमें झाक दिया है। इसलिए अथशास्त्रका यदि मानव-जातिका कल्याण करनेवाला बनना है और दुनियामें सुख-शांति और प्रगति साधनी है तो बण-व्यवस्थाके मिद्धान्तको मानकर उसके अनुसार चले बिना उमका काम नहीं चल्गा।

नीतिशास्त्रके साथ संबध

० अथशास्त्रियोंके बहुत बड़े भागका यह मानना है कि अथशास्त्रका नीतिशास्त्र अथवा धर्मनीतिके साथ कोई भी संबध नहीं है। वे कहते हैं कि जिस मनुष्यको शराब पीनेकी आदत पड गई है और जिसका शराबके बिना काम हा नहीं चल सकता, उसके लिए शराब एक आवश्यकता है, और क्योंकि शराब बनानेवाले और शराब बेचनेवाले लोग यह आवश्यकता पूरी करनेका काम करते हैं इसलिए उनके काम पर अथशास्त्र कोई आपत्ति नहीं उठा सकता। नीतिशास्त्र मले ही इस बातका विचार करे कि शराब पीनेकी आदत अच्छी है या बुरी और शराबका धंधा अच्छा है या बुरा परन्तु अथशास्त्र तो इस आवश्यकताका और इस धंधेकी स्वीकार करके ही आग चल्गा।

१० पुराने विचारके कुछ अथशास्त्री तो इन दो शास्त्रोंको एक दूसरेका विरोधी मानते हैं। एडम स्मिथ अथशास्त्रके जनक माने गये हैं। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तकमें सारे अथशास्त्रका विचार एक ऐसे आधार पर किया है जिसमें से यह प्रकट विरोध फल है। मनुष्यकी स्वाधबुद्धिको जीवन-व्यवहारकी प्रेरण शक्ति मानकर उसके आधार पर एडम स्मिथने अथशास्त्रके नियम बनानेका प्रयत्न किया है। वे कहते हैं कि अथशास्त्रका आधार मनुष्यकी स्वाधबुद्धि है और नीतिशास्त्रका आधार मनुष्यमें पाई जानवाली दया और परोपकारकी वृत्ति है। इन दो वृत्तियोंमें से कभी बढ ही नहीं सकता। उन्होंने यह मान लिया है कि मनुष्य केवल अथ परगण है और यह कहा है कि मनुष्यका अथ-परायण मानकर ही जिस अथशास्त्रका विचार किया जाय वही शुद्ध अथशास्त्र है। अथशास्त्रक अपने बनाय हुए शास्त्रोंके अमलमें दया, परोपकार आदि मानवतापूर्ण वृत्तियोंकी उन्होंने विशेष डालनेवाली कहा है। इसमें उनकी गलती यह हुई है

कि वे इस बातको भूल गये कि अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र दोनोंका उद्देश्य मानव जातिकी प्रगति और कल्याण करना है इसलिए वह एक ही है। अर्थशास्त्रको सिर्फ अर्थोत्पादनका शास्त्र मानकर ही उन्होंने विचार किया है। यदि हम अर्थशास्त्रको भी मनुष्यकी प्रगति और कल्याणका विचार करनेवाला शास्त्र मानें तो मानवताकी वक्तियोंको इस शास्त्रके नियम बनानमें निर्णायक अंग समझना चाहिये और मनुष्यको स्वायत्तियोंको — जो स्वायत्तियुक्त समाजके कल्याणकी उपेक्षा करके सिर्फ अपना आर्थिक लाभ ही देखती है — विक्षेपक अंग समझना चाहिये। समाजके कल्याणकी दृष्टिसे विचार करें तब तो सच्ची अर्थ प्रवृत्ति और सच्चा अर्थशास्त्र नीतिकी विरोधी कभी हो ही नहीं सकता। इतना ही नहीं नीतिकी अनुसरण करके और नीति पर निर्भर रहकर ही ये दोनों साधे जा सकते हैं। इसे सब कोई मानने है कि ईमानदारी ही सबसे अच्छी नीति है। इस नीतिकी भंग करनेसे किसी मनुष्यको कुछ समयके लिए भले ही थोड़ा आर्थिक लाभ हो जाय परन्तु उसके भंगसे समाजकी अर्थ-व्यवस्था कभी भलीभाँति काम कर ही नहीं सकती। क्योंकि नीतिके बिना एक-दूसरेके साधके आर्थिक व्यवहारमें कोई स्थिरता नहीं रह सकती। जो व्यक्ति अथवा समाज नीति-अनीतिकी विचार किये बिना केवल स्वायत्तियोंको प्राधान्य देकर अपना काय चलाता है वह चरित्रमें और अर्थमें बुद्धिबन्धमें भी शिथिल हुए बिना नहीं रहता। इससे वह नीतिके साथ साथ अर्थको भी गवा बँडता है। हम यह प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि आज अर्थोत्पादनकी पूँजीवाणी पद्धतिन मनुष्यका विचार किये बिना मात्रके ढर लगाने शुरू किये इससे मालके खरीदार मिलनेकी कठिनाई पदा हुई और उसीमें से दुनियाको तबाह करनवाली लडाइया फूट तिवली। इसीलिए हमारे शास्त्रकाराने उसी अर्थ और कामको उचित बताया है, जो धर्मके विरुद्ध न हो।

सम्पत्तिकी परिभाषा

सब-सुलभ सम्पत्ति*

१ हवा, पानी और सूयकी गर्मी मनुष्यके जीवनके लिए बहुत आवश्यक वस्तुएँ हैं, इसलिए एक प्रकारसे तो ये अमूल्य संपत्ति मानी जायगी। लेकिन उन्हें प्राप्त करनेके लिए मनुष्यको श्रम नहीं करना पड़ता। सामान्यतः जिसे उनकी आवश्यकता होती है उस वे पर्याप्त मात्रामें मिल जाती है। ऐसी वस्तुओंका बिना श्रम किये मिलनवाली या सब-सुलभ संपत्ति कहा जाता है। एसी वस्तुओं पर सामान्यतः किसीका स्वामित्व नहीं हो सकता। अतः ऐसी वस्तुओंकी खरीद-बिक्री यानी बदला-बदली या विनिमय भी नहीं होता। अयोग्यतामें हमें ऐसी संपत्तिका बहुत विचार नहीं करना पड़ता। एसी सब सुलभ संपत्ति आर्थिक संपत्ति नहीं कही जाती। फिर भी दुनियामें हवा पानी और सूयकी किरणें सबन एकसी नहीं हाता। उनमें अच्छे-बुरेका भेद होता है। जो स्थान हवा पानी वगैरहकी दृष्टिसे अच्छा मान जाते हैं वे आर्थिक दृष्टिसे महत्त्व प्राप्त करते हैं, और वहाँकी जमीन घरा आदिकी कीमत अधिक आती है। इस प्रकार परोक्ष रूपमें ये वस्तुएँ भी आर्थिक व्यवहारका विषय बन जाती हैं।

आर्थिक संपत्ति

२ आर्थिक संपत्ति उसे कहा जाता है जिसमें हमारी आवश्यकतायें पूरी करनेका गुण या शक्ति हो तथा जिसे आवश्यक मात्रामें और जहाँ हमें उसकी जरूरत है वहाँ जुटानेके लिए श्रम करना पड़े अथवा हमारी भागकी तुलनामें वह इतनी कम या दुर्लभ हो कि उसके स्वामित्वके लिए प्रतिस्पर्धा पदा हो जाय। हम पहले प्रकरणमें देख चुके हैं कि प्रकृति पर श्रम करके मनुष्य किस तरह अपने उपभोगके योग्य संपत्ति निर्माण करता है।

* संपत्तिकी सामग्री है सारी घन-दीप्तन। उसके सदुपयोगका अर्थ है सम्पत्ति उसका उद्भययोग है विपत्ति — धनय, और उसका निरुपयोग दरिद्रता है।

है
 उनमें उन आवाज
 करता था।
 उनमें उन पड़न लगा।
 उनमें आधिक
 है जो या तो

कि एक जगह जा वस्तु
 मानी जाता वह दूसरी
 जाती है। नदीके किनारे रेत
 मोच भरने या चूनमें मिलानके लिए
 लगा पड़ता है। इस कारण वह श्रमप्राप्त
 देती पड़ती है। बिल्कुल थोड़ी आवादीवाले
 भित्री है लेकिन शहरमें उसे लानेमें श्रम
 भारके दाम देने पड़ते ह। हवा जसी चीज भी
 हो जाती है। सुले मदानमें हवा सब-सुलभ है परन्तु
 वनत लोग हवाके लिए पखे लगाने पड़ते ह
 उसके लिए धम करता पड़ता है और इसलिए उसकी कीमत आकी
 है। वही बात पानीकी है। नदीके किनारे पानी मुफ्त मिलता है परन्तु
 हमारे घर एक-दो पड़ पानी लानके दाम देने पड़ते ह। इस तरह जो
 पानी नदीके किनारे सब-सुलभ कहलाता है वह हमारे घर पर श्रमप्राप्त
 हो जाता है और इस कारण वह वन जाता है।

बिना परिश्रमके मिलनव
 भीही भागमें ही मिल सकती हो
 लिए होष पैदा हो । ऊपर
 है। इसी म्यायसे और
 जाते है। कुछ आ
 बाढ़ उतर जानेके
 है वह मर्यादित
 वार बहुत होते है।
 है और उसे जोतना
 इसी तरह जगलकी

मर्यादित परिमाण
 तो उसके
 तो दिया ही
 एक सम्पत्ति
 नदीके
 हो
 उम्मीत

वस्तुएँ ऐसी ह जिनके लिए किसानोंको परिश्रम नही करना पडता। फिर भी कानूनके जरिये सरकार इनका ठका द रखती है, इसलिए ये वस्तुएँ दुर्गम हो जाती ह और उनके लिए पसा खच करना पडता है। इनके सिवा उल्का यानी टूटनेवाले तागके पत्थर जब गिरते हैं तो वे बिना श्रमके मिलते ह। परन्तु वे बचचित ही गिरते ह और बगानिक खोजके लिए बहुत उपयोगी माने जाते ह इसलिए उनके दाम बहुत अधिक मिलते ह। ऐसी सभ चीजें आर्थिक संपत्तिके अन्तगत मानी जाती ह।

५ हमारे आजकलके शहरोंमें पानीका बड़ी-बड़ी टकिया होनी ह। उनमें पानी इकट्ठा करके बड़े बड़े नगा द्वारा सारे शहरमें घर घर पानी पहुंचाया जाता है। बच्चाको ऐसा लगता है कि हमने नल खोला कि हमें तुरत मुफ्त पाना मिल जाता है। परन्तु यह पानी मुफ्त नही मिलना। म्युनिमिपल्टीको घर घर पाना पहुंचानके लिए बडा खच करना पडता है और उसके बन्नेमें वह पानी लेनेवालेसे प्रतिवप करके रूपमें पानीके दाम गती है। इसलिए यह पानी आर्थिक संपत्ति कहा जाया।

सावजनिक संपत्ति

६ परन्तु रास्तेके बडे नलसे पानी पीनेवाला, या सावजनिक बागका घूमन फिरतके लिए उपायोग करनवाला, या नदी पर बंधे हुए पुल परसे आने-जानमालाका कोई कर रहा देना पडता। यह कहा जा सकता है कि उन्हें ये चीजें मुफ्त मिलती ह। फिर भा हम उन्हें बिना श्रमके मिलने वाली सब-मुल्म वस्तुआमें नही गिन सकते। किमी न किमीका ता उनको लिए श्रम करना हा पना है। अत इस अर्थमें वे श्रमप्राप्य ही ह। इसके सिवा उनके लिए कर चुकानवालाका तो पसा देना ही पडा है। परन्तु उनका उपभाग कोई भी मनुष्य कर सकता है। उनके लिए किमी भी प्रकारका श्रम न करनवाले अथवा करके रूपमें एक पाई भी न चुकानेवाले भी उनका उपभोग कर सकते ह। ऐसी वस्तुआको सावजनिक संपत्तिका नाम दिया जाता है।

७ करकी छानबीनमें इस तरहके प्रश्नाका विचार करना हाता है किन किन वस्तुआको सावजनिक रखा जाय उनकी व्यवस्थाके लिए बौन खच करे उस खचकी रकम किस तरह प्राप्त वा जाय और यदि वह रकम लोग पर कर लगाकर प्राप्त करना हो तो वह कर उनका उपभाग करनेवाले प्रत्येक मनुष्य पर डाला जाय या नजदीकन प्रदेशोंमें रहनेवाले लोग पर डाला जाय या उनमें न भी खास वर्गों पर ही डाला जाय।

कुदरती साधन-संपत्ति

८. सब-भुलभ संपत्तिका विचार अर्थशास्त्रमें कम किया जाता है। परन्तु इस सबधमें भी इतना तो ध्यानम रखना ही चाहिये कि जिन प्रदेशोंमें श्रमके बिना मिट्टनवाली या सब-भुलभ वस्तुआकी मात्रा जितनी ज्यादा होती है उतना ही वह प्रदेश अधिक संपत्तिवाला माना जाता है। परन्तु यह हमारा समझ नही होता कि इस प्रदेशोंमें रहनेवाले लोगोंको बिना श्रमके मिट्टनवाली वस्तुएँ पर्याप्त मात्रामें मिल जाती ह इसकीएँ व गग ज्यादा वैभव या खुशहाली भागते ह। अभीवाक कितन ही प्रदेशोंमें जहा आज भी प्राथमिक अवस्थामें जीवन बितानवाले लोग रहने हैं कुदरती अपार साधन-सम्पत्ति बिखरी पडी है तो भी वहाके लोग उसे अपने उपभागके लियेक नही बना सकत और इसलिये वे लोग सम्पत्तिवाली या धनी नही मान जा सकते। प्रकृतिकी दो हुई सम्पत्तिका दृष्टिसे हमारा दग बहुत सम्पन्न माना जायगा। हमारे यहा खती करन गायक पर्याप्त जमीन है एमे बिगाड जग हैं जिनमें से विविध वस्तुएँ मिल सकती ह माति भातिका खानें ह सुन्दर नदिया ह और एस वड वन जग प्रपात ह जिनसे बिजली जसा भौतिक शक्ति पना की जा सकती है। इन सबके लिये हमें किसी भी तरहका श्रम नही करना पना है। कुदरतने खुटे हाया यह सम्पत्ति हमें भेंट का है। फिर भी हमारा दग आज दुनियाक बहुत गरीब देशोंमें से एक है। इसका कारण हमारी राजनातिक पराधीनताके अलावा हमारी अपनी कुछ कमिया भी ह। और राजनातिक पराधीनता भी हमारी ऐसी कमियो और कमजोरियके कारण ही ता आई ह न? कुदरती साधन-सम्पत्तिके साथ मानव-बुद्धि और मानव-श्रमका योग ही तमी उपभोगमें आन लायक सम्पत्ति समाजको मिटती है। इसके अनिरिकन इस सम्पत्तिका रक्षण करके उसका अच्छेस अच्छा उपयोग करनकी शक्ति भी इस समानमें होनी चाहिये। एसा समाज ही सम्पत्तिवाली या धनी बनता है।

द्रव्य और सम्पत्ति

९. प्रचलित लोकमान्यताके अनुसार द्रव्य या पसेको ही सम्पत्ति या धन माना जाता है। साधारण व्यवहारमें यह बात सचो मानूम होती है। क्यकि जिसक पास द्रव्य होना है वह उसके द्वारा अपनी आवश्यकताकी हर वस्तु प्राप्त कर सकता है। धूकि प्रत्येक समाजने द्रव्य या पसेका वस्तुआकी अदला-बदली या विनिमय करनका एक साधन या माप मान

लिमा है इसीलिए एसा हो सकता है। यदि चादी-सोनेके सिक्काको या उनक बदले काममें आनवाले कागजी नोटको विनिमयके साधन मानना बन्द हो जाय तो चादी-सोनेके सिक्केमें रही धातुकी धातुके रूपमें मनुष्यके लिए जितनी उपयोगिता हो—जैसे गहनाके लिए—उतनी ही हट तक वह सम्पत्ति माना जायगा। नोट तो निरे कागज ही बन कर रह जायगे। विनिमयके माधनक तौर पर चादी-सोनेके सिक्केमें जो गुण है उसे यदि निराल दिया जाय तो फिर उसमें मनुष्यकी आवश्यकताएँ पूर्ण करन या मनुष्यके लिए उपयोगी बननका गुण बहुत थोडा रह जाता है। नोटमें तो वह गुण मिश्रुल नही रहता। किसी गहरम कितना ही सोना चादी या सोने चादीके सिक्के ह। लेकिन यदि बाहरसे वहा पानी अनाज और जरूरतकी दूसरी वस्तुएँ आना बन्द हो जाय, तो वह चादा-साना या उसके सिक्के खाने-पान या पहनन-ओढनेके किसी काममें नही आ सकते।

अमृत सम्पत्ति

१० अब तक हमने सम्पत्तिके रूपमें केवल भौतिक या मृत वस्तुआका विचार किया है। परन्तु बड़े महत्त्वकी कुछ सम्पत्ति अमृत भी होती है। सपत्तिका एक बडा लक्षण मनुष्यकी आवश्यकताआली पूर्ण माना जाय तो शिक्षक धारुवाको पताता है मिपाहो दगाकी रक्षाके लिए लडता है, डाक्टर रोगीका इलाज करता है वकील कानूनकी सलाह देता है और नीवर काम करता है—य सब काम और सेवाएँ भी एक तरहकी सपत्ति ह। क्याकि इन कामा और सेवाआसे समाजकी जरूरतें पूर्ण होती ह और समाजकी आर्थिक प्रगति भी होती है। उद्योग धर्मोंकी योजना बानेवाले लोग इजीनियर बनानिरु गोपक, विभिन्न विषयाके विशेषज्ञ—इन सबके काम तथा सेवामें समाजकी आर्थिक प्रगतिमें बहुत बडी सहायता पहुँचाती ह।

११ समाजके राति रिवाजासे या राज्यके कानूनसे मनुष्यको जो अधिकार प्राप्त हाने ह वे भी ऐसी ही एक तरहकी अमृत सपत्ति ह। किसी मनुष्यको अपना घर या जमीन बेचनी हो, तो दूसरा चाहक जा बीमन देनेको तयार हो उस कीमत पर पडोसीका उसे खरीदनेका पहला अधिकार मिलता है। इस अग्रक्रम अधिनार कहा जाता है। यह भी एक तरहकी सपत्ति ही है। पुस्तकके लेखक और प्रकाशकका प्रकाशनका अधिकार मिलता है किसी दवा या यंत्रके गोपकको पेटेंट (एकाधिकार) मिलता है और व्यापारीको अपन मालका ट्रेड मार्क मिलता है। य सब अधिकार आर्थिक सपत्ति ह क्याकि समाजकी आर्थिक व्यवस्थाकी रणामें महायन होनेके कारण ये

समाजकी कुछ खास आवश्यकतायें पूरी करते ह। लोग इह कीमता समझ कर इनके स्वामी बनते ह और आवश्यकता पडने पर इनका श्रेय विप्रय भी करते ह।

१२ इतनी चर्चवि निष्कर्षके रूपमें सम्पत्तिके मुख्य लक्षण नीचे दिये जाते ह

(क) उपयोगिता

किसी वस्तुमें कायमें या सेवामें मनुष्यके लिए उपयोगी होनेका अर्थात् उसकी आवश्यकता पूरी करनका गुण हाना चाहिये।

(ख) श्रमप्राप्यता

वस्तु ऐसी हानी चाहिये जिसे पानमें मनुष्यको कुछ श्रम करना पड। बिना कीमत चर्चा मिलनवाली वस्तु हो तो भी वह इतनी कम मात्रामें होनी चाहिये कि सब-मुल्म न हो सके। य वस्तुण भी अधिक संपत्ति मानी जाती ह।

(ग) अधोनता

वस्तु ऐसी हानी चाहिय जिस पर मनुष्य अपना अधिकार रख सके। बादलामें खूब विजली पदा होती है और हवा तेज चलनी है तब उमका शक्ति बहुत होनी है परन्तु मनुष्य उस वामें करके काममें ल तभी वह सम्पत्ति बन सकती है।

(घ) विनिमय-योग्यता

संपत्तिमें गिन जानके लिए वस्तु ऐसी होनी चाहिय जिसका विनिमय हो सके यानी जिसे देकर बदलेमें दूसरी वस्तु ली जा सके। मनुष्यमें स्वास्थ्य हो तो वह अधिक काम कर सकता है और अधिक सम्पत्ति पदा कर सकता है। परन्तु स्वास्थ्यकी अर्थशास्त्रमें सम्पत्ति नहीं माना जाता क्यकि अपना स्वास्थ्य वह दूसरेको नही दे सकता और उसका विनिमय भी नही हा सकता। इसा तरह मनुष्यकी दूसरी शक्तिया — गानकी नाचनकी अथवा दूसरी कुशलतायें जैसे बर्डी कामकी और लुहार कामकी — भी सम्पत्ति नहीं मानी जाती क्यकि मनुष्यसे अलग करके इनका विनिमय नही हो सकता। हा ये लोग समाजकी जो सेवा करते ह वह तो सम्पत्ति है ही। गानेवाले तथा नाचनवाले जमा होकर जलसा करे तथा देखन और सुननवाला मनोरजन करे ता उनकी यह सेवा — यह जलसा — सम्पत्ति कहायगा। बर्डी भेज बनाये और लुहार

लोहा पीटकर लोहेका चाजें बनाये ता ये सम्पत्ति ही कही जायेंगी। लेकिन बल्डकी या लुहारकी कुत्तना सम्पत्ति नहा कहलाती। शिक्षक शिक्षा देनका काम या सेवा करता है। उसकी यह सेवा सम्पत्ति मानी जायगी परन्तु शिक्षक खुद सम्पत्ति नहीं मानी जायगा। यह भेद जरा सूक्ष्म है परन्तु ध्यानमें रखने लायक है। जिस प्रकार किसी प्रदेशमें अपार कुदरती साधन-सम्पत्ति होने पर भी जब मनुष्य उस पर श्रम करके उस साधन सम्पत्तिको उपभोगके लायक बनाता है तभी वह अयत्नात्ममें सम्पत्ति मानी जाती है, उसी प्रकार मनुष्यमें कितनी ही शक्तिशाली बला न हो तो भी जब वह उन शक्तियोंको अपने कर्मा या अपनी सेवाके जरिये अपने या दूसरोंके उपभोगके लायक बनाता है तभी व सम्पत्ति मानी जाती है। मानी मनुष्य खुद सम्पत्ति नहीं है किन्तु सम्पत्तिको पैदा करनेवाला है। फिर भी यह मही है कि जब मनुष्यको गुलाम या कुत्तम जसा बनाकर उसकी सारी शक्तिया और कुशलता पर उसका मालिक अधिकार रख सकता है और उन शक्तिया और कुशलतासे पैदा होनेवाली सब चीजोंमें वह मालिक फायदा उठा सकता है, तब वह गुलाम सम्पत्ति जमा बन जाता है।

१३ इस तरह जिस वस्तुमें मनुष्यकी आवश्यकतायें पूरी करनेका गुण हो, जो श्रमप्राप्य हो या जो मांगके प्रमाणमें दुर्लभ या विरल हो, जिस पर मनुष्य अपना अधिकार रख सकता हो और जिसका विनिमय हो सकता हो, यह वस्तु सम्पत्ति मानी जाती है।

आर्थिक जीवनका विकास

१ दुनियामें उत्पन्न होकर बाट बहुत समय तक मनुष्यने जगली वनस्पति तथा कन्दमूल और फल पर अपना निर्वाह किया है। आहारकी खोजमें वह पचीस पचासकी टोलियामें घूमता रहता था और ऋतु तथा जल वायुको अनुकूलता और प्रतिकूलताके अनुसार आहारकी विपुलता या कमीका अनुभव करता था। तैकिन मनुष्य अपन जीवनके आरम्भ-कालमें भी कवल वनस्पति खानवाला नहीं था बल्कि मासाहारी भी था। जहा मिल जाते वहा अपन खानमें वह मास और मछलीका भी उपयोग कर लेता था। कभी कभी वह मनुष्यका मास भी खा लेता था।

मगया-वृत्ति

२ जमीनमें से कन्दमूल खादकर और जगलके फल चुनकर खानके साथ साथ जहा पशु-पक्षी मिल सकते थे वहा मनुष्य उनका गिकार भी कर लेता था। पासमें कोई साधन हथियार या औजार हो तो गिकार करनेमें अधिक सफलता मिल सकती है इस विचारसे मनुष्यकी बुद्धि इन साधनोकी खोजके पीछ पड़ी। जबस मनुष्यने हथियार और औजारोकी खोज की और उन्हें वह काममें लान लगा तबसे मनुष्य दूसरे प्राणियासे अलग पड गया। इन हथियारो और औजारोके निर्माणका विकास ही अधिकांश आर्थिक प्रगतिका इतिहास है। पहले हथियारो और औजारोमें कोई भेद न था। जो चीजें जमीन खोदनमें और कन्दमूल खोदकर निकालनेमें काम आती थी वे ही चीजें आश्रमण और रक्षा करनेमें भी काम आती थी। लकड़ी पत्थर जानवराकी हड्डिया दात और हाथीके दात आरम्भ-कालमें हथियार भी थे और औजार भी थे। जताआ या जडोसे लकड़ीको पत्थर बाधकर मनुष्यन गदा जसा हथियार बनाया। उसका वह हाथमें पकडकर और फेंककर मारनेके काममें उपयोग करने लगा। लडाईके सिवा दूसरे कामोम भी इस हथियारका उपयोग करनेसे थोडी मेहनतमें अधिक काम होन लगा। फिर चमडकी रस्सिया या अतडियामि बडी लकडियोके साथ नुकीले पत्थर या बडे पत्थरको बाधकर मानवने बडा हथियार बनाया। इस तरह हथियारो और औजारोमें

सुधार करनेमें मनुष्य अपनी बुद्धि चगाने लगा। परन्तु जब उसे आगका उपयोग करनेकी सूझी, तब तो उसने प्रगतिके मागमें एक बहुत बड़ा काम आग बनाया। जो वस्तु दूसरे जानवरका भय और डरसे दनेवाली लगती थी, उसको मनुष्यने काममें करके अपनी सेवामें ला दिया। पहल-पहल आग उसे अचानक भस्मक उठनेवाले दावानलसे ही मिली। अग्नि प्रकट करना मनुष्यको बहुत देरसे मालूम हुआ। इसलिए हर दोगीने इस तरह मिली हुई आगकी बहुत सावधानीसे रक्षा करनेका प्रयत्न किया। उन्होंने इसमें दियता और पवित्रताका आरोपण किया। आगका सभालकर हमेशा सुलगती रखना धार्मिक काय माना जाने लगा। आगे चलकर दाँडियाको या दूसरी चाजाको आपसमें रगड़नेसे आग उत्पन्न करनेकी बला मनुष्यके हाथ लगी। ठठ आदिकालके जसा प्राथमिक दगामें रहनेवाली वाजकलनी कितनी ही जगली जातिवाका घषणसे आग उत्पन्न करनेका रीति मालूम है तो भी सुरक्षित रखी हुई निरतर जलना आगसे तिनका सुगानर उसके द्वारा आगमें से आग सुगानेकी सरल रीति हा सब जातिया काम लेती ह। यदि अग्निहोत्रियोंके महा, पागसी अगिवारियाम और कथोलिज ईसाई गिर्जोमें आगका हमेशा जाती रखनकी जो धार्मिक प्रथा आज भी प्रचलित है, उसकी जड पुराने जमानेम आगकी दुःश्रमता और सावनिक उपयोगितामें है।

३ आगका उपयोग केवल गरमीके लिए ही नहीं बल्कि खाना पनानेके लिए और ग्राह्य पदार्थोंको सेंक कर लम्बे समय तक टिकने योग्य बनानेके लिए भी हुआ। सामान्यत यह कहा जा सकता है कि आसपामकी दुःखती परिस्थितिक अनुसार ही मनुष्यका जीवन चलता है फिर भी आगके तरह तरहके उपयोगकी खोजके बाद मनुष्य बुदरत पर अधिकाधिक अधिनार प्राप्त करने लगा है। आगका बड़े बड़ा उपयोग औजारामें सुधार करनेके लिए हुआ है। मनुष्यने जवने धातुओंका उपयोग गूट किया तत्रमे आगका महत्त्व बहुत ही बढ़ गया है।

४ महा इतना ध्यानमें रखना चाहिय कि ये सब सुधार करनेमें मनुष्यको हजारा बष लग गये। हमें प्राप्त हुए पुरानसे पुराने चक्करके हयियार एक लाख बष पुरान ह। इतने बषामें मनुष्यन हड्डिया और पत्थरका घिसनर, छीलकर और सुडोल बनाकर उनमे तार, छुरी, भांजे हथौडे चक्की और करवत बनाये ह। यह सब बनानमें मनुष्यने अधिकतर अपने गरीरके बाहरी थमाकी ही नकल की है। करवत बनाना उसे दाता परसे सूझा है, मुट्ठी परसे उस हथौडा सूझा है, मुडा हुई अगुली परमे उसे आकडेका खयाल आया है,

लम्बाये हुए हाथ परसे उस भाग सूचा है और तीख नखसे छुरीनी कपना सूझी है। वरतनोके वारेमें भी एसा ही हुआ है। जानवरके सींगो परसे मानवको लम्ब प्याल बनाना अन्दरसे छोटली लकड़ी परसे टोकरिया बनाना और तूमडा परसे लाट बनाना सूचा है। आरममें ता कुन्ती तौर पर मिलनेवात्री इन चीजाको ही मनुष्य काममें लेता था, पर धीरे धीरे वह मिट्टीके और आगे चलकर धातुके वरतन बनाने लगा। कुम्हारकी विद्याकी खोज इतन बड महत्त्वकी मानी जाती है कि इतिहासकार मानव-संस्कृतिम उसे एक बडी प्रातिकारी खोज मानते ह। पत्थरके उपयोगके बहुत समय बाद मनुष्य धातुआरा उपयोग करन लगा। और इसमें आगने बहुत बडा काम किया।

५ यहा इस बातका उल्लेख करना चाहिये कि नये नये औजारो नय नय साधनो और नई नई वस्तुआकी खोज और उनके विकासमें मानवकी अय वृत्तिके अलावा धर्मवृत्तिन भी काफी काम किया है। मनुष्य केवठ अपनी आर्थिक आवश्यकताए पूरी करके बठा नही रहा। अपन आसपासकी प्रकृतिको देखकर वह ऐसे विचार भी करन लगा कि यह सब किसने बनाया हागा किसलिण बनाया होगा और मरनेके बाद हमारा क्या होता हागा। इसी सिद्धिसिलेमें वह सूर्य भेष और हवा आदि बलवान और उपकारी विभूतियोको देवता समझकर उनकी पूजा करन लगा। फिर इन सब विभूतियोंकी जड और सब जीवाका पालन-भोषण करनवाले सबगक्तिमान और दयाके भंडार देवताओके देवता अथवा परमात्माकी कल्पना करके उसकी उपासना भी मानव करने लगा। इसीके साथ वह कई धार्मिक क्रियाए और यज्ञ-यागादि करने लगा। इन सबकी विधिया और उन्हें करनके गुम मुत्त निदिचत करते करते उसन प्रकृति विज्ञानकी कितनी ही खोजों की और अनेक नई नई वस्तुए बनाइ।

६ इतिहासके इस बहुत लम्ब समयको जिसमें मनुष्य खास तौर पर गिकार करके अपना निर्वाह करता था और समुद्रके किनारे रहनवाला मनुष्य मडली पकडकर अपना निर्वाह करता था मृगया-वृत्ति का काठ करते ह। यह ध्यानमें रखना चाहिय कि उस समय मनुष्य सिफ गिकार पर हा गुजर नही करता था मल्लि जगती फत्रा और क्षदमूलका भी उसके आहारमें काफी हिस्सा हाता था। हो सकता है कि जब ताकतवर पुष्य गिकारके पीछे भटकते हाग तब बूडे स्त्रिया और बच्चे फल चुनन और कम्बूल खोदकर निकालने और जमा करनेका काम करते रह हागे।

गोपवृत्ति

७ जैसे जमे गिकारमें कठिनाई पडने लगी होगी वैसे वैसे, अलवत्ता पहुँचे तो अचानक ही, मनुष्यको सूझा हागा कि गिकार करने भोजन पानेके अनिश्चित और खतरनाक उपायके प्रजाप तथा जानवरोंको मारकर खा जानक बजाय उन्हें पाया-पासा जाय, तो अधिक आसानीसे अधिक निश्चित रूपमें और अधिक मात्रामें आहार मित्र सकता है। फिर पशुसे आहार पानेके सिवा बोझा ढोने और सवारीका काम भी लिया जा सकता है। उसे मारे बिना उसके बाल और ऊन लेकर उनके कपडे बनाये जा सकने ह और कुत्त जम जान वरसे पहल देनेका काम भी लिया जा सकता है। इस तरह मृगया-वृत्तिको छोडकर मनुष्य जानवरको पालने लगा। इस हम पशु-पालनका या गोप वृत्तिका काठ कहेंगे।

८ पशुजाको पालनेसे आहार और दूसरी आवश्यकताकी वस्तुएँ ज्यादा आसानीसे मिलने लगी इसलिए पशुजा पर स्थायी अधिकार रखनेकी वृत्ति मनुष्यमें जगी और उसमें से उसके हृत्तयमें यकिनगत स्वामित्वकी भावना पदा हुई। इसका नतीजा यह हुआ कि ज्यादा जानवरोंवाला मनुष्य ज्यादा धनवान और कम जानवरोंवाला कम धनवान इस तरहके वगभद समाजमें उत्पन्न होन लग।

९ उकिन हर प्रदेशमें मृगया-वृत्तिके बाल गोपवृत्ति ही आरभ नहीं हुई। सभी प्रदेशोंमें पालने लायक जानवर नहीं मिल सकते थे और सभी स्थाना पर जानवरोंके चरनेके लिए लम्ब-चौ चरागाह भी नहीं थे। इसलिए जहा भौगोलिक परिस्थितियाँ और जलवायु अनुकूल था वही गोपवृत्ति आरभ हुई।

कृषिवृत्ति

१० गोपवृत्तिके बाद कृषिवृत्तिका युग आता है। उकिन हर प्रदेशमें पशु पालनवाला मनुष्य किसान नहीं बन सका। मृगया-वृत्ति या मच्छरीमारीके यगमें ही खेतीका थोडी मात्रामें आरभ हुआ पाया जाता है। इसलिए यह भी कहा कट सकने कि गोपवृत्तिमें से ही कृषिवृत्तिका जम हुआ है। जगनी फल और कल्पूल चुनाकी प्रवृत्तिमें भी ही स्वभावतः खेतीका उदय हुआ है। जब मनुष्यन पता कि वह जो फल खाता है उसका बाज जमीनमें गिरकर उग निकलता है और जब उसने यह भी देखा कि जमीन सोनेके काममें अगुनीस लबडी अधिक काम देती है तबसे खेतीका आरभ हुआ माना जा सकता है। जगली जानवरोंका गिकार करनेके बजाय उन्हें

पालनसे ही जैसे गोपवृत्ति आरम्भ हुई वैसे ही जगली पेड़ों का विकास करने से कृषिवृत्तिका आरम्भ हुआ। कुछ इतिहासकार ऐसा भी मानते हैं कि गोपवृत्तिका विकास गिकारियाके हाथसे नहीं हुआ, बल्कि प्राथमिक दगाध किसानोंके हाथसे ही हुआ।

११. यहाँ एक बात खास ध्यान देनेकी है कि कृषिविद्याका आरम्भ गिकारियाकी स्त्रिया और उटकियान टोली या कुटुम्बके निर्वाहमें मदद पहुँचाने वाले साधनके तौर पर किया था। इतना ही नहीं मृत पशुओंके चमड़ेको साफ करना उसे सीकर ओटने-पहनने लायक बनाना चमड़ेकी रस्सिया बनाना अथ डिपोंसे तात तयार करना और आग चलकर पेड़ोंकी रेशवाली छालको कूट कूटकर उसके कपड़े बनाना पशुओंके बाल और ऊँके कपड़े बनाना पशुओंकी देखभाल करना उन्हें दुहना और राना पकाना—ये सब काम स्त्रिया ही करती थी। थाइमें कह सकते हैं कि जीवनको अधिक सुविधापूर्ण बनानेवाले अधिकतर गृह उद्योगोंका विकास स्त्रियान ही किया है। पुरुष तो गिकारकी तलागमें निकल जाते थे और गोपवृत्ति आरम्भ हुई तब पशुओंको चरान ले जाते थे पशुओंको चरानका एक चरागाह खतम हो जाता तो दूसरे चरागाहकी तलागमें फिरते थे और कभी कभी चरागाह पर अधिकार करनेके लिए लड़ाइया भी लड़ते थे।

१२. इस तरह मनुष्यके इतिहासकी एक बड़ी लम्बी अवधि विन्कुल सादी और प्राथमिक स्वरूपकी अथ प्रवृत्तिमें ही बीती है। ऐसा कह सकते हैं कि विशेष आर्थिक प्रगति तो बिल्कुल आधुनिक युगमें ही हुई है। अब तककी अर्थ-व्यवस्था स्वयंपूर्ण अथवा स्वावलम्बी स्वरूपकी थी। प्रत्येक समूह या कुटुम्ब अपनी जरूरतोंकी चीजें स्वयं ही पदा कर लेता और स्वयं ही उपयोगमें लेता था। गोपवृत्ति और कृषिवृत्तिके आरम्भके जमानमें तो प्रत्येक समूह और कुटुम्ब पूरी तरह स्वावलम्बी रहा है। परन्तु आग चलकर देखनेमें आता है कि समूहों और कुटुम्बोंमें गुलाम भी दाखिल हो गये। गृहआतमें गुलाम भी कुटुम्बके लोगोंके साथ ही काम करते और खाते-पीते थे। आगे चलकर दोनोंमें भेदभाव पदा होने लगा। कुटुम्बके लोग कम काम करते या कम श्रमके ही काम करते थे और गुलाम लोग ज्यादा और कठिन श्रमके काम करते थे। खाने-पीनेमें भी कुछ भेदभाव आने लगा। परन्तु इस अर्थ व्यवस्थामें एक बात निश्चित थी कि सारा उत्पादन और उपभोग समूह या कुटुम्बके अंदर ही सीमित था।

१३. समय पाकर जिस समूह या कुटुम्बके पास जो वस्तुएँ पदा करनेकी जरूरत थी या दूसरी तरह प्राप्त की हुई सुविधा अधिक होती उसके पास वे

वस्तुएँ जल्दतरसे ज्यादा पदा हाने लगी और दूसरे समूह या कुटुम्बक साथ उनका लेन देन करनेकी प्रथा आरम्भ हुई। आरम्भमें ता महँगे लेन देन एक-दूसरेकी प्रसन्न करने और आपसमें सदभाव बढ़ानके लिए भेंटके रूपमें होने लगा। आगे चलकर एक एगूर या कुटुम्ब दूसरे समूह या कुटुम्बकी कुछ देने पर उनके बदलेमें कुछ पानेकी आशा रखने लगा। जय तक इस तरहके लेन-देन अवसर छोड़ जाते और हरएक समूह या कुटुम्ब अपनी आवश्यकताकी अधिक्तर वस्तुएँ स्वयं हाँ पदा कर लेता था, तब तब यह अर्थ-व्यवस्था जारी रही मानी जायगी। लेकिन जवमे लेन-देनका व्यवहार चलने लगा और समूह व्यवस्था बिल्कुल मिट गई तथा कुटुम्ब गाव बनाकर रहने लगे तबसे इस कुटुम्ब तब ही सीमित (कुटुम्ब पयाप्त) अर्थ व्यवस्थाका अन्त हुआ माना जायगा।

वाणिज्य-वृत्ति

१४ प्रत्येक कुटुम्बका अपनी आवश्यकताकी सत्र या अधिकतर वस्तुएँ पैदा कर केना बंद हुआ, तबसे वाणिज्य-वृत्तिका आरम्भ हुआ माना जायगा। अब कुटुम्ब अमुक वस्तुएँ अपनी आवश्यकतासे अधिक उत्पन्न करने लगा और ये अतिरिक्त वस्तुएँ दूसरोंको देकर अपना आवश्यकताकी दूसरी वस्तुएँ उनसे लेने लगा। इन प्रथासे आरम्भमें समूह या कुटुम्बके स्थान पर गाव आर्थिक इकाई बनता है। गावमें मुख्य धंधा तो खतीका ही रहता है, पर उसके साथ खेताको मदद पहुँचानवाले बढई लुहार और कुम्हार आदिके अलग अलग धंधे करनेवाले स्वतंत्र कुटुम्ब अस्तित्वमें आते ह और गाव स्वयंपूर्ण अर्थ व्यवस्थाकी इकाई बनता है। लेकिन हरएक गावमें अपनी आवश्यकताकी सभी वस्तुएँ पैदा कर लेनेकी कुदरती सुविधाएँ नहा हानी। उदाहरणके लिए किसी गावमें गेहूँ हाँ अधिक पैदा हो सकते ह तो किसीमें चावल ही अधिक पैदा हो सकते ह। इसलिए धीरे धीरे एक गाव द्वारा दूसरे गावके साथ वस्तुजाका लेन-देन करनेके अवसर भी आन लाते ह। इस तरहका लेन देन करनेके लिए खास खास ग्राम समूहाने बाँच भेजे, हाट या बाजार लगानका रिवाज पन्ता है। ऋतुके पीहरा और धार्मिक त्यौहारोंके अवसर पर खास तौर पर तीर्थोंकी जगहमें मंचे लगते ह और हरएककी अपनी अपनी आवश्यकताकी वस्तुआका लेन-देन वहा होना है। इनमें सुविधा मुख्य कारण मालूम हाना है। सामान्यत आन ता यह समझा जाता है कि वाणिज्याका वग अर्थ और व्यापारियाना वग अलग रचना है। उभय ह व्यापार। नए उन स्थानको साथ साथ न भी मानता हो। ऐसे अवसर बहुत लम्बी अवधिके बाद आनेके कारण लेन-देनकी मा अ-३

जल्दताके लिए कम पत्ता लगत है तब पागल सीपम्यान पर सप्ताहमें एक बार हाट या फुजरी लगाया रिवाज शुरू हुआ है। वाममें एसा जगहा पर स्थायी बाजार खडे हो जाते है और बाजार लगानवाके व्यापारिकके आसपास कारीगरा और दूसर गगाका बस्ती बढा बना नहा छोटे मोटे गहर बन जाते है।

१५ आरम्भमें बर्फ लुहार जुगाह आदि कारीगर लोग विमान पर अवलम्बित रहते थे। कुछ तो चोमागमें शुरू होती भा करत थे। हर गावम ये कारागर लग १५मानकी दरिगन पार गांमें कमप तानक कारण उसवाया क जाने थे और ये लोग जमीन मास्त्रि विमानासे कम प्रतिष्ठावाले मान जाते थे। विमानाका जल्दतने गारे काम करनके बां जो समय बचता उसीम ये लोग दूसरी चीजें बना सवने थे और इस तरह बनाई हुई चीजें मठ या हाटमें बचन जाते थे। परंतु स्थायी बाजारवाले गहराके बन जान पर इनम से जा कारीगर-वग गहरामें जा बसा वह अपेक्षाकृत अधिक श्वतत्र हो गया और दूसराने साथ बराबरीका दरजा भागनकी इच्छा भी उसमें जागी। कारण कच्चा माठ पसल करके खरीदनसे लेकर उसस अपन बंध हुए ग्राहकां लिए या बाजारके लिए तयार माल बनाकर बचन तककी सारी क्रियाए वह स्वय करता था और इस तरह सब बातामें स्वतत्र होता था। लेकिन एसे कारीगरके पास बहुत पूजी न होनके कारण वह अपनी जरूरतका सारा कच्चा माल उसके पैंग होनके मौसममें खरीद कर रख नही सक्ता था। इसलिए मौसमके समय कच्चा माल थोकबद खरीद कर रखनवाला और जसे जसे जरूरत पड वसे वसे कारीगरको वह माल देनवाला एक व्यापारी वग खडा हुआ। फिर ता यह व्यापारी वग कारीगरको माल जसे जस बनता जाता वस वसे उसे खरीदन उगा। इसलिए कच्चे मालकी खरादके लिए जोर तयार माठकी बिक्रीके लिए कारीगरको व्यापारिया पर आधार रखना पडा। जिस तरह गावमें रहते हुए उन्हें किसानो पर अवलंबित रहना पडता था वसे ही गहराम जनका बडा भाग व्यापारियो पर अवलंबित रहन उगा।

१६ इस तरह धारे धीरे खताक सिवा दूसर उद्योग अस्तित्वम आय और उन उद्योगामें कुगठ कारीगरो द्वारा बनाई हुई वस्तुए सिफ स्थानीय जोर सीमित प्रदेशमें ही नही बलिक दूर दूरके प्रदेशाम ले जाकर बेचनका काम व्यापारी करन लग। पहले जिस बुटुम्बके पास लम्बी चौडी जमीन हो या बहुतसे पंगु हां वही धनवान माना जाता था। परंतु अब व्यापार

करक घन कमानवाले घनी व्यापारियोंका वग अस्तित्वमें आया। अग्रता, बड़े जमींदारोंकी तुलनामें यह व्यापारी वग बहुत छोटा था और दूरक प्रदेशोंमें बचनेकी चीजें बनानेवाला कारीगर वग भी छोटा था। अधिकतर कारीगर तो गावामें और गहरामें इन चीजाका उत्पादन करनेवाले ग्राहकाक लिए आडरके अनुसार ही चीजें तयार करनेवाले थे।

१७ दुनियाके सभी सम्य देशोंमें यह स्थिति थी। उसमें बहुत बड़ा परिवर्तन तो तब हुआ जब यूरोपक समुद्री वाणिज्य व्यापार करनेवालोंके अमरीकाकी खोज की और पूवके देशोंके साथ व्यापार करनेके समुद्री मार्ग दूढ निकाले। पूवके देशोंके साथ व्यापार करनेके लिए जो व्यापारिक कंपनिया खडा हुई, उनका उन उन देशोंकी राज्यसत्ताने पट्टे दफर सम्पदन किया। इन व्यापारिक कंपनियोंकी प्रवृत्ति गुढ व्यापारके बजाय लूट मचानका ही अधिक थी। अमरीकासे बहुत बडी मात्रामें सोना केवल इकट्ठा करनेके श्रमके बलम ही यूरोप पहुंचा और भारत तथा पूवके दूसरे देशोंके साथ व्यापार करने भी यूरोपके लोगोंके — विनापत इंग्लंडने — अपार धन जमा किया। अब तक जो उद्योग हाथकी कारीगरोंसे चरते थे और जिनके चलानेमें मनुष्य-बल अथवा पशु-बलका ही उपयोग किया जाता था उनमें भापकी शक्तिका उपयोग करनेकी शोत्र हुई और उसके लिए बड बडे कारखाने खड करनेकी जरूरत पडी, तब ये कारखाने कायम करनेके लिए आवश्यक पूजा अमरीकासे खीचकर लामे हुए तथा पूवके देशोंके व्यापारके नाम पर लूटे हुए धनसे यूरोपके राष्ट्रोंको, और खास तौर पर इंग्लंडको मिल गई। और उसीसे आजका औद्योगिक युग आरभ हुआ।

औद्योगिक वृत्ति

१८ हम ऊपर देव चुके ह कि आरभमें पूजावाले व्यापारियोंका बच्चा माल खरीदकर उमके तयार माल बनानेके लिए कारीगरोंको देना शुरू किया, और फिर तयार हुआ माल कारीगरोंसे लेकर उमके बेचनेका काम भी वे ही करत गे। इस तरह पूजावाले व्यापारियोंका काम उत्पादनक आरभमें और उत्पादनके अंतमें रहता था। परंतु धीरे धीरे उन्होंने कारीगरोंको काम करनेके लिए अपने मकानों पर बुलाना शुरू किया। कारीगर अपने अपने औजार लेकर पूजापतिके यहां काम करने जात थे। यादम उत्पादनके लिए जिन औजारोंकी जरूरत हाता, वे औजार भी पूजापति ही देन लगा। इन औजारोंकी जगह पर अब भौतिक शक्तिस चलनवाणी मशीनें लगाई गई, तब पूजापतिमके मकान, जो छोटे कारखाना जैसे थे बडी मिलाके रूपमें

बदल गया। उत्पादनके सभी आवश्यक साधन—कच्चा माल, मशीनें जोजार और मकान—पूजीपतियोंके अपन खर्च किये। कारीगर मिलके मजदूर बन गये। अब उनका काम सिर्फ यह रह गया कि मिलकी सीटी बजते ही हाथ हिलाते कारखानमें चले जाय और सीपा हुआ काम करने सिटी बजते ही हाथ हिलाते वहासे बाहर निकल आयें। कच्चा माल खरीदने और तयार माल बचने आदिकी सारी जिम्मेदारी पूजीपति पर ही थी इसलिए मजदूरका कच्चे मालके साथ मशीना या औजारके साथ तयार मालके साथ या उसकी विशीके साथ कोई संबंध नहीं रहा। इस तरह कारीगर मजदूर बना और केवल अपनी मजदूरीका ही मालिक रह गया।

१९ जैसे जैसे मित्रें बढी होती गई वैसे वैसे इन मिलोंके संबंधित अलग अलग जरूरी कामकाज करनेवाले—कच्चा माल खरीदकर मिलाको देनेका काम करनेवाले मशीनें मुहैया करानेवाले और तयार हुआ माल मित्रोंके खरीदकर छोटे खुर्दा व्यापारियोंको और ग्राहकोंको पहुंचानेवाले विभिन्न वग खड़े हुए। ये सारे वग काफी पूजी रखनेवाले होते थे। फिर जैसे जैसे पूजीका जोर बढने लगा वैसे वैसे ये सारे ही काम एक एक पूजीपति कंपनी करने लगी। आज ऐसी भी कंपनियां हैं जो अपनी जरूरतका सारा कच्चा माल उत्पन्न करनेसे लेकर तयार माल प्रत्येक ग्राहकके पास पहुंचाने तकके सारे काम स्वयं ही करती हैं। वे अपने ही खेत जंगल और खानें रखती हैं अपनी ही रेलें चलाती हैं अपनी मिलोंके लिए आवश्यक मशीनें भा स्वयं ही बनाती हैं और अपनी मिलोंका तयार माल बचनेके लिए अपनी ही दुकानें भी रखती हैं। फोड मोटर कंपनी अपनी ही तैले और कोयलेकी खानें रखती है अपनी जरूरतका खर अपने ही जंगलोंमें उत्पन्न कर लेती है अपनी जरूरतका चमड़ा अपने ही कारखानोंमें तयार कर लेती है अपनी जरूरतकी मशीनें स्वयं ही बना लेती है और छोटी छोटी रेलें भी स्वयं ही रखती है। अमरीकाके कितने ही गहरोंमें रोटी पहुंचानेवाली ऐसी कंपनियां हैं जो गेहू पदा धरनसे लेकर उसके आठकी रोटी ग्राहकके घर पहुंचाने तकका काम स्वयं करती हैं।

२ इस प्रयामें स्वाभाविक रूपमें ही उत्पादन बहुत बड़े पमाने पर होता है। बाजार भाव अनुकूल हो तब कच्चा माल थोकावद खरीद लिया जाता है और अच्छा भाव मिले तब बचनेके लिए तयार माल बढी मात्रामें संप्रह करके रखा जाता है। बढी मिलें बाहरा महीने चलती रहती हैं और उनमें ढेरा माल बनता ही रहता है इसलिए बहुत बर लोगोंकी मागसे

अधिक माल भी तयार हो जाता है। उस वचनेक लिए नई आवरणताएँ उत्पन्न करनेवा प्रचार अखबारोंमें लेखों और ललचानवाले विज्ञापना द्वारा किया जाता है। ग्राहकोंके आडर मित्रता का माल तयार करनेकी पुराने जमानेका शास और आपसी मेलजो-बाजी प्रयाग धजाय उत्पादन बढाने और तयार हुए मात्रा उचेसे ऊचे भाव पर वेंचनेकी घाघली और तीव्र प्रतिस्पर्धावाली प्रथा आज दुनियाक कोन कानमें फल गई है।

२१ बडे उद्योगसे लिए विपुल मात्रामें कच्चा माल खरीनेके लिए कारखानोंके मकानाके लिए मात्र पदा करनेवागी मशीनके लिए मजदूरोंको मजदूरों चुकानेके लिए और कारखानेका तयार मात्र विव तब तक उसे सुरक्षित रखनेके लिए काफी द्रव्य लगाया जाता है। यह द्रव्य देनेका काम सराफ और बक करते ह। ऐसे जैसे उत्पादन बडे पमारे पर हाता है वसे वसे गारखानेगाराका बनी ह तब पसवाला पर आधार रखना पडता है। इस तरह कारखाने चलानवाले उद्योगपतिपाकी तरह रकाका कारखार चलानेवाले पूजीपतिपाका वग पदा होता है। बडी बडी पूजीपति कपनियाक और बड बड बकाके दुनियाके विभिन्न देशामें आर्थिक स्वाय कयम हो जाते ह। अतएव उनकी रक्षाके लिए अधिक विगाल और अत्यंत बलशाली राज्य सत्ताजोकी जरूरत होनी है। अपन अपने देश उद्योगपतियो और पूजीपतिपाक आर्थिक स्वार्थोंकी रक्षा करनेवाली इन राज्यसत्ताओंके बीच भी आपसमें ताव्र प्रतिस्पर्धा चलती है और इसीमें से भमानक मुद्ध उत्पन्न होत ह।

२२ हम पहले कह चुके ह कि सम्पत्तिका मूल उत्पन्न-स्थान ता कुदरत — सास तौर पर जमीन ही है। फिर भी जा वस्तुएँ आज हम काममें लेते ह उनमें से बहुतरी वस्तुआकी अंतिम रचना और कुदरत या जमीनक बीच बहुत बडा अंतर हा गया है। फिर आज खेती या व्यापारसे भी इतना भारा नफा नहो कमाया जा सकता जितना उद्योगसे कमाया जा सकता है। हमारे आर्थिक विकासके आरम्भ-कालमें जिसके पाम ज्याला जमीन हाती, वह मनुष्य धनवान गिना जाता था। दूरर युगम लक्ष्मी व्यापारियाके घर रही। और आज बडे बडे उद्योगपति ही लक्ष्मीपति हो सक्ते ह। अतएव इस युगको औद्योगिक युग कहा जाता है। जो देश उद्योगमें आग बड हुए ह व और सब प्रकारस भी आगे बने हुए माने जाते ह और दुनियामें सबसे अधिक सत्ता भी व ही भोगते ह।

२३ अब हाथ-उद्योगोंका स्थान मशीनवाय लन ह। हम पहले देख चुके ह कि इस पद्धतिमें कारीगरकी स्वतंत्रता पूरी तरह छतम हा गई। कच्चा

मूल व्यापारीसे लेकर अपन घरमें ही बठ-बठ उसका पक्का भाल बनाने के दिनवाले कारीगर तो गया ही साथ ही अपने औजार व्यापारीके यहा ल जाकर कारीगरका काम करनेवाले कारीगर भा गायब हो गये । मगोंने इतनी महंगा होती थी कि कोई कारीगर अपने बूत पर उन्हें घरम नहीं लगा सकता था । साथ ही उन्हें चलानके लिए जरूरी भौतिक शक्ति भी वह नहीं जुटा सकता था । मगोनोके भौतिक शक्तिसे चलानके कारण भारे कारखान एक स्थान पर केन्द्रित होन लगे और कारखानामें काम करनेवाल मजदूरोको अपना घरदार छोडकर इन कारखानोके पास रहने जाना पडा । गावोमें जिन्हें खतीमें पूरा काम नहा मिल सकता था व भी कारखानामें काम करनेके लिए जान लग । कारीगर जब पूरा तरह व्यापारी-मजदुरीपर निर्भर हो गया था तब भी उसका अपना घर तो रहा ही था । परन्तु अब तो कारखानोके कारण नये गहर खडे हो गये या पुरान गहराका विस्तार बढ गया । बहा उसे हवा रोगनी पानी और पाखान बगराकी मुबिधाआवाले घरके बजाय भठे-कुचठे क्षापडामें भाडसे रहना पडा । कारखानामें शक्तिसे बाहर काम करना और किसी भा तरहकी सुविधाके बिना गदगी और भीडभाडमें रहना — यही यन्त्रोद्योगके आरम्भके समय मजदूरोकी हालत थी । उस समयकी तुलनामें आजके मजदूराकी हालत बहुत अच्छी मानी जायगी । परन्तु हमें गा बकारीका डर और बहुत बार प्रत्यक्ष बकारी आज मजदूराका बडसे बडा दुःख है ।

भर्यादित जिम्मेदारीवाली कपनिया

२४ यह ध्यान देनेकी बात है कि इस पद्धतिका अधिक विकास एक बन्त बड परिवर्तनके कारण हुआ । व्यापार जब बड पमान पर होने लगा और उसमें बनी पूजा लगन लगी तब उसे चाना एक ही कुटम्बकी शक्तिसे बाहर हा गया । इसलिए दो-चार या इससे भी अधिक कुटम्ब साक्षरारीमें मिश्रकर बडी बडी व्यापारी कपनिया चलान लगे । ये कपनिया दूर दूरके देगासे व्यापार करती । व्यापारके अलावा ऐसी बडी कपनिया सराफीका काम भी करती और व्यापारके सिलसिलेमें होनेवाला द्रव्यका लेन-देन भी इनके द्वारा होता । एक देगकी प्रसिद्ध कपनी अपनी साख पर बहुत दूरके देगकी दूसरी प्रसिद्ध कपनी पर हुडिया लिखती और वे आपसमें स्वीकार की जाता ।

२५ फिर भी इस पद्धतिमें एक कमी रहती थी । कपनीके हर साक्षरारकी सारी जायगाद पूरी कपनीक कुठ कजके लिए जिम्मेदार मानी जाती थी । इसके कारण कपनीका काम बहुत बड पमाने पर बगानेमें हर

साझेदारको सकोच रहा करता था। उन्नीसवीं शताब्दीमें जब मर्यादित जिम्मेदारीवाली कपनिया — लिमिटेड कपनिया — स्थापित करनेकी कानूनी व्यवस्था हुई, तबसे बहुतसे साझेदारकी छोटी छोटी रकमें जमा करके उनसे व्यापार उद्योग चालानमें बड़ी सुविधा हा गई। लिमिटेड कपनीमें जितने साझेदार होते वे जितनी रकमके हिस्से जयवा गेयर खरीलते कपनीके कज या नुकसानमें उनकी उतनी ही जिम्मेदारी मानी जाती। उदाहरणके लिए एक लाख रुपयेकी कानामें किसीने एक हजार रुपयेके गेयर खरीद हा तो उन कपनीके कज या नुकसानमें उन आदमीकी जिम्मेदारी एक हजार रुपये तक ही मर्यादित समझी जाती थी। कपनीको कितना ही नुकसान क्या न हुआ हो, तो भी उस एक हजारका रकमके अलावा उस साझेदारकी बाकी संपत्ति पर कपनीके लेनदारका कोई दावा नहा चल सकता था। कानूनकी इस सुविधाके कारण कपनी कितनी ही बड़ी क्यों न हो तो भी उसमें साझेदार बननकी मनुष्यकी हिम्मत होता थी और बहुतसे लोगोकी थोडा थोडी पूजी जमा करके उससे बहुत बनी भागामें पूजी एकत्र करके बड़े बड़े उद्योग चालानकी बहुत बड़ी सुविधा हा गई।

प्रश्न-वृ

२६ अब तककी प्रथम कारागर या मजदूर और पूजापति व्यापारी अथवा पूजीवाले उद्योगपति — य दो ही बग थे। किन्तु अब एक तीसरा बग उत्पन्न हुआ। अब तक एसा होता था कि व्यापार घडा करनेके लिए जा पान बुशलता दूरदर्शिता साहय और व्यवस्था शक्ति चाहिये वह किमी मनुष्यमें हो, तो भी बड़ी पूजीके अभाबमें वह कोई बग व्यापार या उद्योग नहीं चला सकता था। परन्तु अब उसके पास बहुत बग पूजी न हो और उपर श्रिय मव गुण हा। ता वह बहुतसे छोटे साझेदारकी पूजी इकट्ठी करके व्यापारकी या उद्योगकी बड़ी कपनी बना कर उसे चला सकता है। इस तीसरे बाको हम प्रश्न-वृ नाम देंगे। यह प्रश्न-वृ सारी कपनीके कर्ता कर्ता और लगभग मालिककी तरह व्यवहार कर्ता ह, यद्यपि कानूनन अनुसार अपन व्यवस्था-कायके लिए वह कपनीके साझेदारके सामन जिम्मेदार माना जाता है। परन्तु आजकलके तदाकथित लोकतन्त्रमें राजकाजके बारेमें जितना नाममात्रका हिस्सा मतलबताका हाता है और जितना नाममात्रका असर वह राजकाज पर डाल सकता है, उतना ही नाममात्रका हिस्सा और उनना ही नाममात्रका असर अपन हिस्सेक अनपालमें साझेदारका कपनीके कामकाजमें हा सकता है।

२७ पहलकी साखवागी कपनियामें प्रत्येक गाझेदारकी अमर्यादित जिम्म दाराके सिवा यह भी होना था कि कोई साझदार मर जाता या बन्त जाता तो कपनी बंद हो जाता थी। परन्तु इन नई मर्यादा जिम्मदारीवाला या लिमिटेड कपनियोमें हिस्सेदार अपना हिस्सा (शयर) दूसर किसीको बच सकता है। पुरस्वारके रूपमें दे सकता है और मरनेक बाद उसका हिस्सा उसक उत्तराधिकारीका मिल सकता है या वसीयतनामा लिखनर वह जिमे देना चाह उसे दे सकता है। इन सब सुविधाआब कारण अन्धी कपनियामें साखदार बननके लिए बहुत लोग तयार हो जाते ह और मान दारामें तिनना ही परिवतन हुआ कर तो भी कपनिया स्थिरतासे अपना काम कर सकती ह। लोगामें भी इन लिमिटेड कपनियाकी साख अच्छी रहती है क्यकि उनके हिमार निताब और दूसरे कामकाज पर सरकारका अकुग रहता है।

२८ यह सब हात हुए भी मर्यादित जिम्मदारीवाली कपनियोका एक दोष यहा बताना हा चाहिये। अग्रजीम एक क्हावत है कि कानूनस स्थापित सस्यामें आत्मा नहा हाती। व्यापारी या सराफ अपनी प्रतिष्ठा साख या बचनके त्रिए मर मिटनको भी तयार हा जाता है परन्तु इन कपनियसि एसा आगा नही रहता। कोई व्यापारी अपन व्यक्तिगत व्यवहारमें नितनी प्रामाणिकता रखनकी चिन्ता करना है उतनी चिन्ता वही व्यापारी किसान लिमिटेड कपनीका एजण्ट या डाइरेक्टर बनन पर कपनीके व्यवहारमें रखनकी आवश्यकता नही मानता। बहुतसी कम्पनियसि डाइरेक्टर तो पूरी हकीवतें भी नही जानते। एस त्रोगेसे ठोठे छोट साझदारा (शयरहाल्डरा) की भगवका ध्यान रखनकी आगा भा क्या की जाय? इससे इनकार नही किया जा सकता कि पुरान नमानमें जमादार अपन किसाना और कारीगराको तथा व्यापारी अपन कारीगराको किसी न किसी रूपमें चूसते थ फिर भा चूकि थ एक दूसरेके साथ सीध सम्पकमें रहत थ इसलिए उनके बीच एक तरहका व्यन्तितगत सम्बन्ध मानवतारुा सम्बन्ध होता था। जमीदार और व्यापारी अपन किसाना और कारीगराके दुख-सुखमें भाग लेते थ और उनकी कर्निनाईमें सहायता देते थ। उन किसाना और कारीगराको आजके जसी स्वतंत्रता और दूसर अधिकार नही थे। परन्तु एक बातका उह वडा सुख था। आजकी तरह बकारीका भय उनमें स किसीको भी सताता नहा था। कल क्या खायग इसका भी किमाको चिन्ता नही रहती थी। त्सलिए उनका भोजन और काम दानो निश्चित थ। परन्तु आजकल्की मर्यादित जिम्मदारीवागी

वनी मित्र और कम्पनियोंमें उनके साथदाराका कारीगर या मजदूरके साथ कुछ भी सम्बन्ध नहीं होता इतना ही नहीं उनका प्रबंधक जो आम तौर पर मित्र-मार्तिक कहलाता है भी अपन हजारों कारीगरों या मजदूरोंको नहीं जानता और न उनमें कोई व्यक्तिगत सम्बन्ध रखता है। मालिकका कतव्य इनका ही जानना और इतनी ही चिन्ता करना माना जाता है कि उसका कंपनीमें काम करनेवाले सब मजदूर भलीभांति काम करते हूँ या नहीं और उन्हें निश्चित मजदूरी चुकाई जाती है या नहीं। इसके सिवा वे कहा रहते हैं क्या खाने पीने हूँ उनके बाल-बच्चाको क्या दशा है, वे सब क्या जाया वितान हूँ रोग गाँवमें कैसे गुजर करते हूँ — ये सब बातें ऐतना तो व्यक्तिगत सम्बन्धमें ही समझ होता है — यह जानना अथवा इसमें सहायता करना मालिकका कतव्य नहीं माना जाता। हाँ एस कुछ कतव्य अत्र मार्तिकों पर बानन द्वारा डाले जाने लगे हूँ।

पुराने जमानेमें विमान और कारीगरका टटा पूरा ज्ञापडा तो भी उसका लिए सुरक्षित रहता था। आजकी तरह कोई बजदार आकर उम्र थोपडस बाहर निकाल नहीं सकता था। विमान या कारीगर जब बूढा या काम करनेके लिए अक्षम हो जाता अथवा अथ प्रकारसे निराधार हो जाता तो उसका पालन-पोषण करनेकी जिम्मेदारी उसने जमींदार या व्यापारीकी मानी जाती थी। और गाँवद हाँ कोई जमादार या व्यापारी एसा दुष्ट निकलता जो यह जिम्मेदारी पूरी न करता हाँ।

२९ इस प्रकरणमें हम आर्थिक जीवनको मृगया-वृत्ति, गाँववृत्ति कृषि वृत्ति, वाणिज्य-वृत्ति और उद्योग वृत्तिके क्रममें — बहुत निश्चिन्त रूपमें नहा पर माने रूपमें — विकसित करते देख चुके हूँ। कुछ अर्थशास्त्री यह भी कहते हैं कि हमारा आर्थिक जीवन पहले पशुधारा पर फिर खेती पर और बादमें खाने पर आधार रखकर बढ़ा है। कुछ श्रेय वस्तु विनिमय पर आधार रखनेवाली अर्थ-व्यवस्था द्रव्य पर आधार रखनेवाली अर्थ-व्यवस्था और साध पर आधार रखनेवाली अर्थ-व्यवस्था इस तरहके तीन क्रम बनाते हूँ। आजकलकी अर्थ-व्यवस्थाका साथ पर आधार रखनेवाली इसलिए कहा जाता है कि आजकल दण विन्नेगले बीच माँवका जो बच्चा न देना होता है उसका कीमत चुकानेके लिए एक देगमें दूसरे देगका सचमुच पसा गही मना जाता, बरिक्त एक देगम आय हुए मालकी कीमत चुकानेके लिए दूसरे देगम भेज हुए मालकी कामनके हवाले दिये जाते हैं। देग विदेगके बीच व्यापार करनेवाली कम्पनियोंमें आपसा विश्वास हो और वे एक-दूसरेकी

सावका स्वीकार करती हो तभी हम तरहका व्यवहार सम्भव हो सकता है। कुछ अध्यात्मी यह कहते हैं कि सभ्यता पर सामुदायिक स्वामित्वका रूप बलवत्-बदलत व्यक्तिगत स्वामित्वका अथ-व्यवस्थाका जन्म हुआ अथवा अति और रीति रिवाजसे बंधी हुई अथ व्यवस्थामें स मुक्त और गुणी प्रतिस्पर्धात्मक अथ-व्यवस्थाका जन्म हुआ है। इन दोनों कुछ न कुछ तथ्य तो हैं ही। पर हमन जिस क्रममें आर्थिक जीवनका विकासका ध्यान किया है वह क्रम विकासके इतिहासको अधिक स्पष्ट करता है।

१०. यहाँ एक बात ध्यानमें रखनी है कि जब एक वस्ति या एक क्रममें स दूसरी वस्ति या दूसरे क्रमका आरम्भ होता है तब पहली वस्ति सबका भिन्न नहीं जाती। आज भी दुनियाके लगभग सभी सम्य माने जानवाँ देशों में य पांचा वस्तिया घनी-बहुत पाई जाती हैं। हमारे देशमें तो व ह ही। इसके सिवा मसालके प्रत्येक देशमें यथासाय आरम्भ हो गया है और गहर मह्यतामें और विस्तारमें बलवत् गगन छू फिर भी गाँव विलुप्त नहीं नहीं हुए हैं और इन गाँवोंमें अर्थोत्पादनकी पुरानी पद्धतिया भी जारी हैं।

५

आर्थिक प्रगतिको बुनियादें

१. आज तकमें मानव-जातिन जो आर्थिक प्रगति सिद्ध की है उसके बारेमें प्रचलित अध्यात्मिकियोंका यह मानना है कि वह प्रगति अमुक्त तत्त्वाको आवश्यक अथवा अनिवार्य गतोंके रूपमें स्वीकार कर लेना ही हुई है। इनमें मुख्य तत्त्व वे अध्यात्मिक हैं। इस प्रकार गिनाने हैं (१) आवश्यकताओंकी वृद्धि (२) व्यक्तिगत स्वामित्वका अधिकार (३) खली प्रतिस्पर्धा और (४) आर्थिक स्वतंत्रता। इन चारों तत्त्वाका विवेचन करके हम इस बातका विचार करेंगे कि इन तत्त्वाके कारण सचो आर्थिक प्रगति अथवा मनुष्य-जातिका कल्याण करनेवाली प्रगति किस हद तक सिद्ध हुई है और किस हद तक य तत्त्व इस प्रगतिमें बाधक सिद्ध हुए हैं।

आवश्यकताओंकी वृद्धि

२. हम पहले यह चुके हैं कि आवश्यकताओंकी बढ़ती सम्पत्ता और प्रगतिकी निर्माण माना जाता है। जब मनुष्यका किसी भी वस्तुकी आवश्यकता मान्य होनी लगती है तभी वह यह सोचता है कि उस वस्तु

प्राप्त किया जाय फिर वह उसे प्राप्त करनेकी रीति ठडकर उसके लिए श्रम करना है। हमारे यहां इस आणवकी बहावत है कि पेट ही कडी मेहनत कराता है। मनुष्यके साथ पेट न लगा होता ता वह कुछ भी नहीं करता। यह बात मनुष्यकी प्राथमिक आवश्यकताओंके विषयमें विलकुल सच है यद्यपि वह अपनी प्राथमिक आवश्यकताओंके अलावा अपन भीतर रहा कला जीर श्रृंगारकी स्वाभाविक वृत्तिको सतुष्ट करनेके लिए भी परिश्रम करता है। साथ ही जीवनकी कुछ छोटी मोटी सुख सुविधायें भी सस्कारी और समाजोपयोगी जीवनके लिए जरूरी ह। इसलिए मनुष्यको सिर्फ प्राथमिक आवश्यकतायें पूरी कर लेनेसे ही संतोष नहीं होता। परन्तु इस परस यह कहना ठीक नहीं कि मनुष्य अपना आवश्यकतायें निरन्तर बढ़ाता ही रहे उपभोगके नये नये साधन प्रतिदिन पैदा करता ही जाय और उह जुटानके लिए परिश्रम करता ही रह। केवल आर्थिक सुख-सुविधाएं बढ़ाते रहना ही मानव-जीवनका ध्यय नहीं है। अगर हम आर्थिक और सामाजिक ायक तौर पर इतना स्वीकार कर लें कि मनुष्य जितनी वस्तुआ या सेवाआरा उपभाग करता है उमके बदलेमें उन वस्तुआ और सेवाओंका पूरा बदला चुकाने जितना समाजोपयोगी श्रम उसे स्वयं करना ही चाहिये तब तो मनुष्य अपनी आवश्यकताओंकी और उनके उपभोगकी मर्यादा बाधे बिना रह ही नहीं सकता। हमारे चार पुनर्पायोंकी परिभाषाके अनुसार काम अथ और धमका विचार कर तो जान पडता है कि जब तब मनुष्य अपन काम पुरुषाय अर्थात् उपभागके पुरुषाय पर कुछ न कुछ अकुन न रख तब तब वह अथ-पुनर्पाय — आजकी नद भाषामें अर्थोत्पादनकी प्रवृत्ति — सिद्ध कर ही नहीं सकता। और इस प्रवृत्तिको ऊपर बताये हुए सामाजिक और आर्थिक ाय अर्थात् नीतिधमके अनुसार चंगना हो, ता अर्थोत्पादनको भी नियंत्रित और मर्यादित किये बिना काम नहीं चल सकता। अर्थात् मनुष्यको यदि धम सिद्ध करना हो जीवनका पूरी तरह विकास करना हो और समाजके लिए उस भरसक उपयोगी और हितकारी बनाना हो तो काम और अथकी अपना प्रवृत्तियाको उसे एक हू तरु रोकना ही पंगी। परन्तु आजकल तो एक विचित्र काय विभाग चल रहा है एक बग (जो बहुत छोटा लेकिन सत्ताधारी है) ता वस्तुआका उपभाग अथवा व्यव किया करता है और दूसरा बग (जो बहुत बडा है लेकिन दमाया जीर कुचका हुआ है) उत्पादनके लिए सारा श्रम किया करता है। इस काय विभागमें भोक्तावगका भोग-सामग्री और विलासका विविधताकी कोई हद ही नहीं रहनी। फिर ये

परोपजीवी निठल्ले लोग अपनी स्थितिको टिकाय रखनके लिए मेहनत मजदूरी करनेवाले उत्पाक वगको दबा हुआ रखकर उसका गोपण करनकी अनक तरकीबें निकालते ह और उसके लिए सुन्दर सिद्धान्ताका निर्माण कर लेते ह ।

३ सम्यता और प्रगति मुठ्ठीभर लोगके लिए ही नही बल्कि सारे मानव-समाजके लिए हो तभी वह सच्चा सुधार सच्चा सम्यता और सच्ची प्रगति कहला सकती है। य सब बातें आवश्यकतायें बताते जानस सिद्ध नही हागी परन्तु उन पर विचार करन और स्वेच्छास उनका नियमन करनेसे ही सिद्ध हो सकेंगी। दुनियाके प्रत्यक समाजमें प्रत्यक मनुष्यका यह अधिकार है कि उसे जीवित रहनके लिए पर्याप्त पौष्टिक और शद्ध भोजन मिठे शरीर ढकन और उसकी रक्षा करनके लिए जरूरी साफ सुथरे और सादे कपड मिलें तथा ठण धप और बरसातसे बचनके लिए अच्छी ढूवा और रोगनीवाठे सुघड मकान मिलें। अथशास्त्रका कतय है कि वह एसी अथ-व्यवस्था ढू निकाले जिससे य चीजें प्रत्यक मनुष्यको मिल सकें। उसके अलावा प्रत्यक समाजमें सारे बच्चोको एक सास उम्र तक शिक्षा पानकी पूरी पूरी सुविधा होनी चाहिय साथ ही इस अथ व्यवस्थाम इस बातकी भी गुजाइश होनी चाहिय कि प्रत्यक मनुष्यको शरीर और मनकी शातिके लिए तथा मनबहुलावके लिए नित्य और नमित्तिक विथाति मिले।

४ आवश्यकताए विभिन्न प्रकारकी होता ह

(१) सामान्य — अनाज कपड ।

(२) आराम देनवाली (सुविधाए बानवाली) — गादी बूला आराम कुर्सी ।

(३) रिवासे सम्बंध रखनवाली — पगडी टोपी चूडी बिदी ।

(४) मौजगोबवाली — इय सिडीन कल्गी ।

इनमें से सामान्य आवश्यकताओको कुछ अथशास्त्रा आवश्यक या अनिवाय आवश्यकतायें कहते ह। य आवश्यकतायें किसी बग बिगप भाति बिगप अथवा समाज बिगपके प्रचलित स्तरके अनुसार आवश्यक या अनिवाय हो सकता ह परन्तु जीवनकी दष्टिसे आवश्यक या अनिवाय नही हाता। अथात उनका रिना मनुष्य जा ही न सके एसी बात नहा है। कपडकि बिना जिया जा सकता है। परन्तु कुछ कपड समाजकी दष्टिसे आवश्यक ह सामान्यत जरूरी ह। इसलिए ऐसी आवश्यकताओको सामान्य कहना हा उचित ह और य आवश्यकतायें पहले पूरा होना चाहिय। उनके बाद आराम देनवाली और सुविधाय बानवाली

आवश्यकताओं के स्थान मित्रता चाहिये। रिवाजों में मन्वैषित आवश्यकताओं के उपयोग का बचाना जरूरी नहीं है। अगर मौजगोरी के आवश्यकताओं के उपयोग के बारे में भा प्रियता का नाम लेना जरूरी है।

कुछ मौजगार गान्धारिक बात है जब कि दूसरे कुछ गान्धारिक स्वास्थ्यमय अथवा निर्दोष बात है। गान्धारिक और एतिहासिक विषयों के बीच का गौरव हानिकारक नहीं है जब कि चारा-ट-व्यभिचार और स्वच्छता का पापन करनेवाला विषय हानिकारक होता है। अच्छी पुस्तकें पढ़ने का गौरव हानिकारक नहीं है जब कि हठक प्रकारके उपयोग या हठक प्रकारका कहानियाँ पढ़ने का गौरव हानिकारक है। इसी प्रकार मंगल और विषमलासा गौरव भी हानिकारक अथवा निर्दोष हो सकता है।

इनमें से निर्दोष मौजगोरी को प्रोत्साहन दिया जा सकता है — यदि स्वयं मंगल उसके उम्र के साथ साथ और किमीका पापन न किया जाय। परन्तु सामान्यतः मौजगोरी का पापन दूसरे का नुकसान पहुँचा कर किया जाता है। इसलिए उम्र के बचाने में प्रत्येक सावधान रहने का जरूरत है। उन पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। ऐसा न किया जाय तो समाज में भ्रष्टाचार फैलता है और उसका पतन होता है। प्राचीन काल में महागायक पतन में उनका प्रजाओं के भाग विनासका बहुत बड़ा हाथ रहा था।

किस प्रकार मौजगोरी पर नियंत्रण रखा जाय और परिश्रम करना प्रत्येक मानव का कर्तव्य माना जाय तो जीवन शुभक नहीं हो जायगा? उस स्थिति में बुद्धि और हृदय का विकास किस तरह होगा? अर्थोत्पादन के बत व्यस्य मुक्त होने के कारण मिलनेवाली पर्याप्त फुरसत के फलस्वरूप ही जिन साहित्य, मंगल आदि उत्पन्न कलाओं का सृजन संभव है उनका क्या होगा? इन प्रश्नों का उत्तर देने का यह स्थान नहीं है। यहाँ हम सिर्फ इतना ही बताने कि ऊपर बत अनुमान मारे जन-समाज की आवश्यकताओं पूरी हो जाय, तो उसमें से सुख शांति, सन्तोष और आरोग्य का जो स्रोत बहगा उसीसे साहित्य, मंगल और तत्त्वचर्चा और बौद्धिक समीक्षण सब आज़से बड़ी बटी और अधिक अच्छी मात्रा में अपने-आप प्रगट होंगे। आज भी मन्वी बचाना और प्रगति के माग पर न जानना साहित्य का सृजन प्रतिदिन अपनी आवश्यकताओं बचानेवाले लोग नहीं करते। गरीर, बुद्धि और हृदय सबके विकास के लिए गरीर-श्रम किसी हद तक जरूरी है। गरीर-श्रम के अवकाश न मिले इस सीमा तक सुख-शुविधा के साधन बनाकर उनका उपयोग करते करते मनुष्य बहुत बुरा और मन्दबुद्धि बन जाता है। जीवन की

सस्वारिताको यदि हम सच्चे अर्थमें समझ ता मान्य होगा कि उसकी जड़ आर्थिक और सामाजिक जायासे पंगु होना ठाठ-वाट एग-आराम और भोग विलासमें नहीं है बल्कि जाय और भाईचारेको बतानेवाला सच श्रममें है।

व्यक्तिगत स्वामित्वका अधिकार

५ अलग अलग प्रकारकी सम्पत्ति पर व्यक्ति अपना स्वामित्व-अधिकार रख सकता है यह विचार और मान्यता हमारे खूनमें इतनी गहरी पठ गई है कि स्वामित्वके अधिकारको हम एक बुदरती अधिकार ही समझन लग गये हैं। परन्तु स्वामित्वका अधिकार मनुष्यके साथ ही पदा हुई चीज नहीं है। समाजमें चलनवाले आर्थिक व्यवहारका बहुत लम्बे श्रममें से धीरे धीरे इस अधिकारका विकास हुआ है। जब ठाठ प्राथमिक दंगामें रहनेवाले मनुष्य दूसरे प्राणियोंकी तरह गानकी चीज मिठते ही उस खा डालते थे और सग्रह करके रखनेके लिए उनसे पास कुछ होता ही नहीं था उस समय स्वामित्वके अधिकारका प्रश्न सड़ा नहीं हुआ था। हम यह भी देख चुके हैं कि मनुष्य कभी एकाकी जीवन बितानेवाला न था बल्कि वह समूह बनाकर रहता था। अतः जो आहार उसे मिठ जाता था उसको सारा समूह मिलकर खाता था। आगे चलकर जब मनुष्यन ऐसा खाज कर ली जिससे खानकी सामग्री अधिक समय तक सुरक्षित रखी जा सके तब उस पर व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामुदायिक स्वामित्व रखनेकी प्रथा गुरु हुई। पहले पहल व्यक्तिगत स्वामित्व शरीरके श्रृंगारकी चीजों—जैसे पत्थर पल्ल वगैरा—पर स्थापित हुआ। फिर पहनने-ओढ़नेकी जो षोडीसी चीजें मनुष्यके पास था उन पर हुआ। उसके बाद मनुष्यके अपन बनाये हुए हथियारों-जीजारों पर और वस्त्रों भाडों पर हुआ। परन्तु ये सब मनुष्यके निजी उपयोगकी चीजें कहलायेंगी। आज हम जायदादका जो अर्थ करते हैं उस अर्थमें ये चीजें जायदाद नहीं कही जा सकती। जबसे हमने पंगु पालाया शुरू किया तभीसे जायदादकी कल्पना गुरु हुई और यह माना जाना लगा कि स्वामित्वका अधिकार कोई महत्त्वकी चीज है। जब तक लोग अपना निवास स्थान एक जगहसे दूसरी जगह बदलते रहे तब तक स्वामित्वका अधिकार जगम वस्तुआ पर ही रहा। फिर मनुष्य जैसे जैसे खती करनेकी श्रममें आगे बढ़ा और जमीनको खतीके लायक बनाने लगा वैसे वैसे वह एक जगह स्थिर होकर रहने लगा। किसान-कुटुम्बाने साफ करके खतीके लायक बनाई हुई अपनी जमीन पर और अपन रहनेके घर पर स्वामित्वका अधिकार जमाना शुरू किया।

६ यदि यह मान लें कि भविष्यम उपयोग करने के लिए वस्तुओं का संग्रह करने की वृत्ति में से जायदाद का जन्म हुआ तो भी मनुष्य के रखने की इस वृत्ति को अधिक उत्तजन तो तभी मिला कहा जाना चाहिए जब समाज स्वामित्व अधिकारका स्वीकार करने लगा। जैसे जन समाजमें स्वामित्व का अधिकार स्वीकार किया जाना लगा वैसे वैसे अपनी आवश्यकताओं के अधिक उत्पन्न करनी वृत्ति अपनी पदावस्था विषयगतसे उपयोग करने की वृत्ति और भविष्यके लिए उसका संग्रह करके रखने की वृत्ति — य गुण और धर्म मनुष्यमें बतन लगी। जत्र तत्र मनुष्य प्रतिदिन जितना उत्पन्न करे उतना ही तुरन्त खर्च कर डाल, तत्र तत्र न तो उत्पन्न जीवनमें स्थिरता आती है और न किमी तरहकी आर्थिक प्रगति ही हो सकती है। दुर्भाग्य बीमारी या सबट जैसे मोक्षके लिए भी संग्रह होना चाहिये और भविष्यमें अधिक उत्पादनके लिए उपयोगी हो सब इसके लिए भी संग्रह होना चाहिये। हम आगे देखेंगे कि व्यवस्थित और अधिक उत्पादनके लिए पूजा जरूरी है। इस पूजाका सचय मनुष्य-जाति अपने उत्पादनमें से बाट-बंसार करके पुण्य जो बचत करती आई है उसीसे हुआ है। आज हम उत्पादनका विपुल माधन-मासप्रिया — जिनका दूसरा नाम पूजा है — का उपयोग कर रहे हैं उमका कारण यही है कि हमारे पूजाने अपने श्रममें जो उत्पादन किया उसमें से बचाव हुए भागका व संग्रह करत रहे। हमारी आजका पूजा हमारे पूजाने सचित थम ही है।

७ अपनी पूजा की हुई और संग्रह करके रखी हुई वस्तुओं पर मनुष्यका स्वामित्व अधिकार कायम रहे, तभी मनुष्यकी अधिक उत्पन्न करने की और उसमें से बचाकर अपने लिए या समाजके लिए संग्रह करने रखने की वृत्ति प्रोत्साहन मिलता है। इस प्रकार स्वामित्वके अधिकारका उदय समाजके लिए इष्ट मानी गई आवश्यकताओं अर्थात् सामाजिक कल्याणके विचारमें से हुआ है। इसीलिए आज दुनियाके हर जगहमें कहाकी दुनिया और कानून स्वामित्वके अधिकारका मानत हैं और उस सुरक्षित धनाधिकी चिन्ता रखत हैं। किन्तु समाजके कल्याणके लिए गुरु होतवाली धनाधिकी भी समय-समय अनिष्ट तत्त्व घुम जाते हैं और पूजा जो आज समाजके लिए हितकारी होती है वही परिस्थिति बदलने पर समाजके लिए हानिकारक हो जाती है। इसलिए हमें सावधानी चाहिये कि स्वामित्व अधिकारकी प्रथा आज समाजके लिए किस हद तक हितकारक है।

८ आभमें जमीन संग्रह किए मुक्त था। उस समय जिनने पहल उस पर अधिकार करके उसे अपने उपयोगमें लेना शुरू किया वह उसका

स्वामी माना गया। और जो चीजें श्रमप्राप्य थीं उन्हें जिसने अपन श्रममें उपभोगके योग्य बना लिया वही उन सबका स्वामी माना गया। दूसरे लोग उससे जबरदस्ती यह चीज छीन न सकें इसके लिए उसमें इनकी रक्षा करनेकी शक्ति होना आवश्यक था। इस बातसे काफी उदाहरण मिलते हैं कि कुछ विजेताआन इन स्वामियोंको हराकर उनसे अधिकारका जायदाद पर अपना स्वामित्व-अधिकार जबरदस्ती कायम कर लिया। इस तरह स्वामित्वका अधिकार आरम्भमें भले ही समाज हितके विचारसे पना हुआ हो परन्तु उसकी स्थिरताका आधार तो उसके रक्षणकी शक्ति पर ही रहा है। आज एक समाज या एक राष्ट्रके भीतर उस समाज या राष्ट्रके कानून नागरिकोंके स्वामित्व-अधिकारकी रक्षा करते हैं लेकिन राष्ट्र-राष्ट्रके बीच स्वामित्वके अधिकारका झगडा खडा हो तो उसका अंतिम निवटारा जबरदस्तीकी कसौटी पर ही होता है। साथ ही राष्ट्रके भीतर भी जिस वगवे हाथमें सत्ता होती है या जिस वगका सत्ताधारी वग पर प्रभाव होता है वह वग परोक्ष रूपसे उस सत्ताका लाभ उठाकर काफी जायदाद इकट्ठी कर सकता है और बड़ी बड़ी जायदादा पर स्वामित्वका अधिकार जमा लेता है। आज दुनियामें स्थावर और जगम किसी भी तरहकी जितनी सम्पत्ति है उसका बहुत बड़ा भाग—विशेषतः उत्पादनके साधन तो लगभग सारे ही—हर देशके बहुत छोटे वगवे हाथमें हैं और उन पर अपना अधिकार वह उस देशकी सभ्यशक्तिके बल पर कायम रखता है। हर देशमें मालिक-वग या पूजीपति वगका सत्ताधारी सनिक वगवे साथ गठबधन हो गया है। हर देशमें गरीब मजदूर वगकी सरया बहुत बड़ी होने पर भी उसकी कुछ नहीं चरती और इस वगकी मेहनत पर पूजीपति भारी नफा कमाते हैं। हमारे देशमें बड़ेसे बड़ा उद्योग खतीबा है। लेकिन खतीके लिए उपयोगी बहुतसी जमीन ऐसे थोड़ेसे जमीनारों और साहूकारोंके हाथमें है जो बिल्कुल खती नहीं करते। जहां जमीन खती करनेवाले किसानोंके हाथमें है वहां भी इस जमीन पर अनदार साहूकारोंका इतना बड़ा बोध है कि किसानोंके हाथमें अपनी मेहनतका पत्र नहीं रहता। इस तरह आज स्वामित्व-अधिकारके जोर पर चारों जोर शोषण चल रहा है। इसलिए जो अधिकार एक समय आर्थिक उन्नतिके लिए जरूरी था वही आज सच्चा आर्थिक उन्नतिमें बाधक बन गया है।

९. आजके कानूनके अनुसार व्यक्तिगत स्वामित्वके अधिकारमें मुख्यतः नीचेकी पांच बातें आती हैं (१) मनुष्य चाहे उतनी यानी अमर्यादित मात्रामें

व्यक्तिक जायदाद रख सकता है (२) अपनी जायदादका वह चाहे जमा उपयोग कर सकता है (३) अपनी इच्छाके अनुसार वह किसीको अपना जायदाद भटमें दे सकता है (४) किसीके अथवा और किसी भी तरहके करारसे अपनी जायदादकी मनचाही व्यवस्था कर सकता है, (५) अपनी मृत्युके बाद जायदादको विरासतमें दे सकता है।

१०. दृष्टियाकी सारी आधुनिक सरकार थोड़े-बहुत भदके माथ इन अधिकारोको स्वीकार करती ह। फिर भी समाजके हितके लिए इन अधिकारो पर अकुश रखनकी आवश्यकताके वारेमें लोकमत बहुत प्रबल हो गया है। और सरकारे इस लोकमतका आन्तर करनेके लिए मजबूर होने लगी ह। सम्पत्ति-कर आय-कर और उत्तराधिकार-कर — ये सब कर स्वामित्वके अधिकार पर अकुश रखनके कानूनी प्रयत्न ह। इंग्लण्ड जैसे देशमें हमारे महायुद्धसे पहले भी बड़ी जायदादा पर उत्तराधिकार-कर लगभग ७० प्रतिशत तक पहुच गया था। और दूसरे महायुद्धमें आय-कर लगभग सभी देशोंमें ८० प्रतिशतसे ऊपर चला गया था। लडाइका कारण न हो तो ऐसे अकुश पूजीपतियोसे मनवाना बठिन ही, परन्तु लडाइके कारण वे इहें स्वीकार कर लेते ह। एक वार ये अकुश मान लनकी आदत पड गई है इसलिए लडाइके बाद भा वे जारी रहें तो स्वामित्व-अधिकारका कष्ट एक हद तक जरूर कम हो जायेगा।

११. परन्तु बहुतसे अर्थशास्त्रियोंको इतने अकुशासे सतोष नहा होता। वे निश्चित रूपसे यह मानते ह कि जब तक उत्पादनके सब साधना पर व्यक्तिक स्वामित्वका अधिकार मिटकर समाजका स्वामित्व स्थापित नहीं होता तब तक समाजमें याम्य अर्थ-व्यवस्था स्थापित नहीं हो सकती। जरूरता यह बात कानूनकी मदद यानी राजनीतिक सत्ताके बिना पार नहीं पड सकती। इसलिए इस तरहके परिवर्तनमें विश्वास रखनेवाला वग राजकीय सत्ता अपने हाथमें ले सके तभी ये सुधार हो सक्ते ह।

१२. गांधीजी अपनेका अर्थशास्त्री नहा मानते थ। फिर भी उन्हाने सारी दृष्टियाका अर्थशास्त्र बदल डानेवाला शान्तिकारी आर्थिक कार्यक्रम तो हमारे देशक सामने रखे ही ह। व इस प्रश्न पर दूसरी ही दृष्टिसे सोचते थे। वे कहते थ कि आप उत्पादनके साधना परसे व्यक्तिक स्वामित्वका अधिकार मिटा दें ता भा समाजके लिए इन साधनाका प्रबंध करके उन्हें उत्पादनके काममें लगानेवाला प्रबंधक ता आवश्यक हागे ही। तो फिर ऐसा क्या न किया जाय कि आजके स्वामी ही जिहें प्रबंधका अनुभव है यह

काम करने लगे? वे भले ही स्वामी कहलायें परन्तु वे अपन अधिकारका दुरुपयोग न कर सक इसके लिए उन पर प्रभावशाली अकुशा लगानका व्यवस्था होनी चाहिये। इन अकुशाके द्वारा गांधीजी इस अधिकारमें जड़ मूलसे परिवर्तन करना चाहते थे। वे कहते थे कि सम्पत्तिवाले और पूजीपति भले ही स्वामी बन रहें परन्तु अपन अधिकार भागनके बजाय उन पर अपन फज अदा करनकी जिम्मेदारी अधिक डाली जानी चाहिये। अब तक ता इसीकी चर्चा बहुत हुई है कि स्वामीके अधिकार क्या क्या ह। और उन अधिकारोकी रक्षाके लिए कानून भी बनाये गये ह। परन्तु स्वामीके कानूनोके दारमें लोकमत आरदार नहीं बना और इसलिए इस विषयमें कानूनने भी कोई महत्त्वका काम नहीं किया। गांधीजी स्वामियामें कहते थे कि वे अपनी जायदादके निरकुशा स्वामी न रहकर समाजके प्रति अपना जिम्मेदारी और फज अदा करनवाले ट्रस्टी बन जायें। उनका कहना था कि ट्रस्टीके नाते वे जायदादकी व्यवस्था समाजके हितके विचारसे करे। आन तो उनकी दृष्टि इस बातकी ओर उगी रहती है कि जायदादकी व्यवस्थामें स वे अपन लिए अधिकसे अधिक नफा किस तरह पदा करे। परन्तु ट्रस्टीके नाते ता उन्हें यह विचार रखना पडगा कि उनकी जायदाद समाजके लिए अधिकसे अधिक हितकारी कैसे हो सकती है। साथ ही जायदादसे होनवाले सारे नफके वे अकेले ही अधिकारी नहा हो सकत बलि प्रयत्नके नाते उचित पारिथमिक लेनके ही अधिकारी हो सकते ह। स्वामी — मालिकको इस तरह ट्रस्टी बनानमें कानून अर्थात् राज्यसत्ता लोकमतके सहारे जिस ह तक सहायता करनको तयार हो उस ह तक उसकी सहायता जेना गांधीजी इष्ट मानते थे। परन्तु यह सहायता काफी न हो तो मजदूरको जो पूजीके सच्चे उत्पादन ह — आज दुनियाके पास जो पूजी है वह भी पहलेके मजदूरोंके संचित श्रमका ही फल है — चाहिये कि वे गातिमय उपायासे मालिकोका विरोध करके उन्हें अपना कतव्य पूरा करनके लिए मजदूर करे। मजदूर-वर्ग मालिकोके साथ गातिपूर्ण असहयोग करे ता यह हा सकता है। क्योंकि दूसरोके स्वेच्छासे या मजबूरीसे दिय हुए सहयोगके बिना धन इकट्ठा नहीं किया जा सकता इतना ही नहीं जिसके पास धन है वह इस सहयोगके बिना उसका उपभोग भा नहीं कर सकता।

१३ व्यक्तिके स्वामित्वके अधिकारके विषयमें सबसे बड़ी बुराई यह पदा हो गई है कि मालिक समाजकी भलाईका कुछ भा काम किय बिना उससे होनेवाली आयका उपभोग कर सकते ह। जो जादमी जमीन

जानता हो वह उन पर स्वामित्वका अधिकार रखे यह ता उचित और जल्द समझा जा सकता है परन्तु जिहाज जमानकी शकल तक न देखी हा एम लोग आज लम्बी-चौड़ी जमीनके मास्त्रिक बन गये ह और दूमगको खती कजे दनर बदलेमें उनस भारी खान वसूल करत ह। यह समझमें वा मक्ता है कि जिन औजारसे मनुष्य काम लेता है उन पर उसका स्वामित्वका अधिकार हा। परन्तु आज तो जिन मशीना और औजारो पर मनुष्य अपना एता अधिकार रखता है उन मशीना और औजारोके चालना या उनका उपयोग करना उस नही आता और फिर भी उन मशीना और औजारो पर काम करतवाजे मजदूरको मजदूरीमें स उसे भारी नफा मिलता है। अपने और अपने कुटुम्बके रहनेके लिए तथा अपना काम घटा करनर लिए जा घर चान्दिये उस पर मनुष्यका स्वामित्व अधिकार हा यन् समझा जा मक्ता है लेकिन आज तो जिन घरका उमक लिए काद भी उपयोग नही उम पर वह स्वामित्वका अधिकार रखकर दूसराका उसमें रहने लेनेके बलमें उनसे भाग वसूल करता है। इसलिए इन अधिकारका जल्दना या काम घटके साथ काई भी सम्बन्ध नहा रहा। आज यह अधिकार नफा कमान और मत्ता प्राप्त करनेका एक साधन बन गया है। इमर निवा ऐमा भी नही कि यह नफा समाजके लिए उपयोगी किसी कामके अनुपानमें मिलता हा। मनुष्य कुछ भी काम न करता हा ता भी उस नफा मिलता है। इसके सिवा मास्त्रिको जा अधिकार और सत्ता मिलती है उमक साथ उसका कुछ जिम्मेदारी भी हानी चान्दिय परन्तु आजकालके मालिको पर तो किसी भी जिम्मेदारीका बधन नहा होता।

१४ स्वामित्वके मुख्य मुख्य प्रकार नीचे दिमे जाते ह। इनस यह कल्पना आवेगी कि कौनसे स्वामित्व अधिकार उचित ह और कौनसे अनुचित।

(२) गारोक्ति आवश्यकताआ और मुधिधावाक लिए व्यक्तिगत उपयोगका वस्तुआना स्वामित्व।

(ब) जा जमीन मास्त्रिक स्वय जातते हा और जा औजार तथा साधन उनर मास्त्रिक अपन घचके लिए स्वय काममें लेते हा उनका स्वामित्व।

(ग) लेषकके प्रमाणन अधिकारो और गोधर्के 'पेटेंट' अधिकारका स्वामित्व।

(घ) जिन सम्पत्तिसे व्याज, डिविडेण्ड भादा कमीशन यादिका आय श्रम क्रिय जिना मिलती रहे उस सम्पत्तिको स्वामित्व।

(८) अपन किमी थमके कारण नहीं बल्कि सामाजिक या आर्थिक उपलब्धियोंके कारण होनेवाले और सदृशवाजीसे होनेवाले वन नफेका स्वामित्व।

(च) एकाधिकारसे होनेवाले मुनाफा स्वामित्व।

(छ) गहरोमें बड़ी हुई कीमतावाली जमीनाका स्वामित्व।

(ज) इनामों और जमीन जागीराका स्वामित्व।

अमरका वर्गीकरण बहुत स्पष्ट जसा है फिर भी उममें अधिकतर संपत्ति या जायदादें आ जाती हैं। इस परसे जान पड़ता है कि पहली तान प्रकारकी सम्पत्तियाँ उसके मालिककी किमी न किसी तरहकी सीधी आवश्यकताओं और थमके साथ संबन्ध है। दूसरी सब सम्पत्तियाँ ऐसी हैं जिनमें मालिक किसी भी तरहकी सामाजिक जिम्मेदारी लिये बिना आलसी बन रहकर बटे-बठ उनमें होनेवाली आय का सकते हैं। पहल तो मालिककी अपनी सम्पत्तिका रक्षा और व्यवस्था करनेकी भी चिन्ता रहती थी परन्तु आज कुछ सम्पत्तियाँ ऐसी हो गई हैं जिनके लिए मालिकका कुछ भी नहीं करना पड़ता। उदाहरणके लिए जाइण्ट स्टॉक कंपनीके गभर हाइड्रोको सिना इसके कि उनका व्याज कितना आता है और कुछ नहीं देवना पड़ता। इनामदार या जागीरदार अपनी जमीन या जागीर दूसरेको अमुक समयके लिए पट्टे पर दे दे तो उसे कुछ भी किय बिना जाय मिना करती है।

१५ आज स्वामित्वके अधिकारके साथ कोई भी जिम्मेदारियाँ लगी हुई नहीं हैं इसलिए वह बड़ अनर्थका और समाजके लिए भारी विपत्ति सिद्ध होनेवाले आर्थिक भ्रमभावका कारण बन गया है। मनुष्य सम्पत्ति तब ही रख सकता है जब वह अपने लिए मेहनत मजदूरीके साधनके तौर पर उसे काममें लावे या अपने लिए मेहनत मजदूरी करनेके लिए आवश्यक संपत्तिसे अधिक हो तो उसकी भलीभांति रक्षा करके समाजके हितके लिए उसकी व्यवस्था करे। इस व्यवस्थाके बदलेमें वह उचित पारिश्रमिक ले सकता है। लेकिन बेकार पड़ रहकर बिना थम किय उसकी आय खानना या उससे बना नफा कमानका अधिकार तो मिटना ही चाहिये। आज यह अधिकार समाजकी आर्थिक प्रगतिको रोक रहा है।

प्रतिस्पर्धा

१६ यह मनी है कि जब तक मनुष्य अपना खाना जटानके लिए केवल प्रकृतिसे साथ ही जूझता रहा तब तक उसने एक तरहका जीवन

सभ्राम जखर लगी। परन्तु हम जिने आर्थिक प्रतिस्पर्धा कहते हैं वह ता पहले-पहल उसा समय शुरू हुई जब आहारकी कमी मालूम होने लगी और एक समूहको दूसरे समूहस साथ आहारके साधनाके लिए लड़ाईम उतरना पडा। ऐसि मानव-समाजमें प्रतिस्पर्धाका यह तत्व तन्त्रिः नुआ उससे पहल अपने अपने समूहके भीतर ही भीतर परम्पर सहपाग और सहायताका बर्तिका विनास हो चुका था। इन द्य तत्वोके कारण ही एक समूह सगठित हो सका और दूसरे समूहस साथ प्रतिस्पर्धा करनेमें सफल हुआ। इगलिए प्रतिस्पर्धाकी अपेक्षा सहयोग और सहायताकी बर्तिका अधिक पुरानी है। हमके बिना प्रतिस्पर्धा ही भी नही सकती।

१७ दूसर प्राणिया और मनुष्यामें यह भेद है कि अथ प्राणी कुत्तनेम जिस रूपमें चीजें मिश्रती ह उसी रूपमें उनका उपयोग करत ह और मनुष्य उन पर धर्म बरके उन्हें विनोप रूपमें उपभाग्य बनाता है। मनुष्य नद नद सम्पत्ति निर्माण करता जा रहा है और अनेक मनुष्यके मह्यागस निमाग की हुई सम्पत्तिमें से अधिकसे अधिक हिस्सा अनेक उसीका मिले इसके लिए प्रतिस्पर्धा भी करता है। यह आसानास समझमें आनवागी बान है कि मनुष्यका अधिक मिठे उमम पहुँचे अधिक उत्पन्न हाना चाहिये। हम त्रेक चुक ह कि हर मनुष्य या हर कुटुम्ब या हर गाव या हर त्रेक अपनी जखनकी सभी चीजें उत्पन्न नहा कर सकता। अपनी आवश्यकताम अधिक वनी हुई चीजाका विनिमय उसे दूसरे कुटुम्ब गाव या दगाके साथ करना ही पन्ता है। इस विनिमयका क्रियामें भी अधिक गाम उठानेक लिए एक-दूसरेके साथ प्रतिस्पर्धा होती है।

१८ प्रतिस्पर्धाके तत्वकी आर्थिक प्रगतिका आगार मानेवाले अथ गान्धा उसका पूवपक्ष इस प्रकार प्रस्तुत करते ह

प्रतिस्पर्धामें अधिक गाम उठानेक लिए पन्ले तो हर पन् अपना उत्पान्न बढानना प्रयत्न करता है। इसलिये ब्यक्तिक स्वामित्वके अधिकारकी प्रधाकी तरह प्रतिस्पर्धाकी यह प्रया भा सम्पत्तिके अधिक उत्पान्न और मन्वषकी प्रोत्साहन दती है। जय तज किमी भी चीजका उत्पात्क एक ही होता है तब तज बाई प्रतिस्पर्धा नही पदा होनी। उसकी बनाइ हुई चीजकी जिम जरूरत हो उसस वह मनमानी बामत के सकता है और चाह जितना बन्ना मुनाफा कर सकता है। परन्तु उमका नफा देवकर उसी चीजस जब कई उत्पात्क सटे हा जाने हैं तब हर उत्पात्क अपनी चीजका म्पानेक लिए उम ब्याग अचठी और ज्याग सस्ती बनानेका प्रयत्न करता है। चीजको

सस्ती और अच्छी बनाने के लिए उत्पादन बच्चे मात्रवी पदावार और उमक खचमें बहुत साबधानीसे साथ विफायत करते ह थम बचानक रास्त दूगते ह अपनी कुशलता और वारीगरीक। उत्तरोत्तर बनानेका प्रयत्न करत हैं अपने औजाराम समय समय पर सुधार करते ह और हर तरहम अपन ग्राहकाका रिआनवा अधिसे अधि प्रयत्न करत ह। फिर किसा उन्ना दकको वाइ खास चीज बनानकी कुदरती मुविधायें अधिन हा और वह चीज बगनम उम उत्पादककी प्रतिस्पर्धामें उतरना कठिन हो तत्र उस चीजके बजाय उमीके जमी और उतना ही काम देनवाली दूसरा चीज खोजनका प्रयत्न भी होना है। इसर फन्स्वल्प गेगाक पाम तरह तरहकी चीज उत्तरात्तर जाती किस्मकी और सस्ते दामाकी पहुच जानी ह। इस तरह व अपनी आवयवताआका स्तर ऊचा कर मरते ह। इसीलिए प्रति स्पर्धाक तत्त्वको आर्थिक प्रगतिसा आधार माना गया है।

१९ आजकल आर्थिक प्रतिस्पर्धा वस्तु जीर वस्तुके बीच यकिन जीर व्यक्तिके बीच बाजार जीर बाजारके बीच जीर देग व देगके बीच चल रही है। टीनके बरतनो घासटेटेके डिब्बा जीर टीनके पीपान मिट्टाक घडा और काठियाको निकाठ बाहर किया छप्पराक पतराने सपरका ट्टा दिया दीयावतीके लिए कामम थानवाके तन्के दीयाका घासटकी लाठ टनान विना कर दिया और अब घासलटकी लाठटनाका बिजलीकी यत्तियान निकालना शुरू कर दिया है। य वस्तु जीर वस्तुके बीचकी प्रतिस्पर्धाक उदाहरण ह। मजदूरों कारकूनो और शिक्षकोके बीच एक ही काम कम वनन पर करनकी जो प्रतिस्पर्धा चल रही है वह यक्ति जीर यकिनके बीचकी प्रतिस्पर्धाका उदाहरण है। बम्बईका बन्दरगाह जब बडा हा गया त। वहा बडी मडी खनी हो गई। इस कारणसे सूरतका बन्दरगाह और दूसरे कई छोटे छोटे बन्दरगाह टूट गय। यह बाजार जीर बाजारके बीचकी प्रतिस्पर्धाका उदाहरण है। दूसरा विश्वयुद्ध शुरू हानक पहल दुनियामें बडसे बडा द्रव्य-बाजार बन था। यूयाकन उसकी प्रतिस्पर्धा आरम कर दा था। आज दुनियाका मुख्य द्रव्य-बाजार यूयाक बन गया है। यह भी बाजार और बाजारके बीचकी प्रतिस्पर्धाका उदाहरण है। अपने देगके उद्योग धंधाक लिए दूसरे देगके बाजारा पर अधिकार करनका हर देग जो प्रयत्न करता है वह देग और देगके बीचकी प्रतिस्पर्धा है। पूजीपतिया और मजदूरोंके बीचकी प्रतिस्पर्धा और पूजीपतियामें भी जमीदारो व्यापारिया और उद्योगपतियाके बीचकी प्रतिस्पर्धा वग और वगके बीचकी प्रतिस्पर्धा

है। इन सब प्रतिस्पर्धाओं इन जमानोंमें भयकर रूप धारण कर लिया है। आर्थिक प्रतिस्पर्धा अर्थात् व्यापार व्यवसायकी और उद्योग घघाकी प्रतिस्पर्धा होनी तो चाहिये गान्धिमय स्वम्पकी, परन्तु उसने सारी दुनियामें तलवारें खड़ा की हैं और निहत्थे तथा निर्दोष आगा पर अग्निकी वर्षा आरम्भ करवा दी है।

२० प्रतिस्पर्धा इन भयकर परिणामोंका विचार कर तो आर्थिक प्रगतिका आधार होना उसका दावा टिक नहा सकता। जहाँ दो पक्षोंके बीच स्पर्धा अथवा मकाबला हो वहाँ एक पक्ष हारगा और दूसरा जीतेगा हा। दो उत्पादकों या दो व्यापारियोंमें जब प्रतिस्पर्धा हानी है तब जा हारता है वह बरबाद हो जाता है। उसका कारखाना या उसकी कंपनी नष्ट हो जाती है। इसका धक्का उम कारखाना या कंपनीमें हित-संबंध रखनेवाले कई आगाको पहुँचता है और ऐसा होने पर जो बिगाड और बरबादी होती है उसका बोझ अनम मारे समाज पर पडता है। कभी कभी तो एक प्रतिस्पर्धी दूसरेकी नष्ट करके जेबेला ही सडा रहकर लाभ उठाने गहनक लिए यहाँ तक प्रतिस्पर्धामें उतरता है कि लागत कामसे भी सस्ती कामत पर माल बेचनेको तयार हो जाता है। अगर वह बहुत ही साधन सम्पन्न होता है तो लंब समय तक टिक उठाकर भी दूसरे पक्षका हराता है और फिर मनमाना मुनाफा कमाता है। लेकिन दोनों पक्ष एकस बलवान या एकसे निबूठ हों तो दोनों हा बरबाद हो जाते ह। मजदूर और दूसरे कारीगर जब एसी प्रतिस्पर्धा करते लगते ह तब उन्हें सख्तस सख्त काम और कमस काम मजदूरी स्वीकार करनी पडनी है। देश और देशके बीचकी प्रतिस्पर्धा तो दुनियाका बचमर ही निजालना शुरू कर लिया है।

२१ इसका सिवा यह दावा भी नहीं टिक सकता कि प्रतिस्पर्धामें मात्र अच्छा और सस्ता मिलता है। जैसे जैसे प्रतिस्पर्धा बढती जाती है वैसे वैसे अच्छा मात्र घटता ही जाता है। बाजार सस्ते परन्तु कमजोर और नकली मालसे भर जाने ह। अच्छा माल इतना मन्ता बनाया ही नहा जा सकता इसलिए उसका दाना बढ हा जाता है। मालको सस्ता बनानेके लिए हल्की बनावटका, मिलावटवाग और नकली माल बनाया जाता है। सब जगह यही माना जाता है कि प्रतिस्पर्धामें उतराका अर्थ है इमानदारी और याय जसा मव बनानाको नाकमें रख देना। इसलिए माल अच्छा तो नहीं परन्तु सस्ता जरूर मिलता है। और ऐसे अयायके फलस्वरूप मात्र यदि सस्ता भी मिल तो क्या? मन्थ्य जस ग्राहक ह, उपमोड करनेवाला है वैसे ही वह उत्पादक भी है।

प्राहकको माल सस्ता देनेके लिए मजदूरको मजदूरी कम दी जाती है तब उसे उपभोग करनेवाली हस्तिमतसे जो लाभ होता है उसके बदलमें उत्पादककी हस्तिमतसे नुकसान सहना पड़ता है। इनके सिवा उत्पादक मजदूर समाजका बहुत बड़ा अंग है। उसके हितकी उपेक्षा करके उत्पादनकी जो भी पद्धति काममें ली जाय उसे हानिकारक ही मानना चाहिये। उत्पादक मजदूरका नुकसान पहुँचाकर माल सस्ता बनानसे समाजको लाभके बजाय हानि ही अधिक होती है।

२२ प्रतिस्पर्धाके पूर्वपक्षमें उसके जितन लाभ बताय गया है वे सब वास्तविक हैं। क्योंकि आजके समाजमें जहाँ आर्थिक और राजनीतिक असमानता है अलग अलग वर्गोंकी शिक्षा और शक्तिमें असमानता है और बाले-भोरेका भेद मौजूद है शुद्ध प्रतिस्पर्धा ही नहीं चलती। हम इस पुस्तकमें जगह जगह यह देखेंगे कि एक-दूसरेके साथ सौम्य करनेवाले एक-दूसरेके साथ करार करनेवाले दो पक्षाकी स्थिति अनन्त प्रचारासे असमान होनेके कारण उनका सौदे या करार ज्यादातर एक ही पक्षका लाभ पहुँचानेवाले होते हैं। इस तरह प्रतिस्पर्धाके आर्थिक प्रगतिका आधार माननेमें बड़ी भूल होती है। आर्थिक प्रगतिका सच्चा आधार तो सहयोग और उसके साथ लग हुए एक्य और त्यागके तत्त्व हैं।

आर्थिक स्वतंत्रता

२३ हम देख चुके हैं कि इतिहासके आरम्भ-कालसे ही मनुष्य आर्थिक मामलोंमें किसी न किसी तरहकी पराधीनता भोगता आया है। जब त्रिलकुल आदि वनवासी पर मनुष्यक लगाये हुए दूसरे कोई बंधन नहीं था तब भी वह कुदरतके अधीन तो था ही। साथ ही जा वनवासी उससे अधिक बड़वान होता उससे उसे डर कर रहना पड़ता था। अपन समूहकी रूढ़ियों और रिवाजोंके बंधनमें भी उसे रहना पड़ता था। जब गुलामीकी प्रथा शुरू हुई तब गुलाम पर ज्यादा बंधन लादे गये। कुटुम्बकी और आग चलकर ग्राम-समाजकी सम्पत्तिके सारे उत्पादनमें बड़ा भाग गुलामका होता था तो भी संपत्तिके बटवारेमें उसे बहुत थोड़ा भाग मिलता था। गुलाम पर लादा गया बंधन शरीर-बलका बंधन था। जब गुलामीकी प्रथासे खत मजदूरकी प्रथा और जमीन देकर बसाय हुए कारीगरका प्रथा निरन्तर तब सीधे शरीर-बलका बंधन तो ढीठा हुआ लेकिन रूढ़ियों और रिवाजोंका अमल बहुत सख्तीसे होता था। शहरोंमें व्यापारी और कारीगर इन पुरानी रूढ़ियोंसे कुछ स्वतंत्रता जरूर भोगते थे। लेकिन वहाँ भी आग चलकर नये रिवाज और नये बंधन पना हो

गये। उन रिवाजाका अमल गहराम गावाकी जसी सत्तास नहा होता था। परन्तु कारीगरका जस जसे पूजाका जरूरत होन गी वसे वसे बे व्यापारियाने बजब फदमें फमत गय। व्यापारी कारीगरको बच्चे मालके रूपम रूपया उधार देता और अपनी पूजा तथा व्याजकी बमूलीवे लिए कारीगरका तयार मात्र मनचाहे भावसे परी लेता था। इसलिए जिसे आज आर्थिक स्वतंत्रता कहा जाता है उस तरहकी आर्थिक स्वतंत्रता पुराने समयमें बहुत थानी थी। आजकी आर्थिक स्वतंत्रता भी नाममात्रकी ही है। धर्म करनेवाले विंगाल जन-समुदायके लिए तो यह बकारी भोगने और भूषा मरनेकी ही स्वतंत्रता है। तुलनाम पुगने जमानकी परतंत्रता इतनी बठार नहा थी बपकि उस समय अथसत्ता और राज्यसत्ता आजकी तरह केन्द्रित और मबब्राही नही थी।

२४ बहुतसे एतिहासिक कारणोंने फलस्वरूप, जिनकी तफसीलमें जानेकी यन जगह नही है सालहकी गतानीमें दुनियाके प्रत्येक आगे बने हुए देगमें राजा निरकुश सत्ता धारण करत पाये जाते ह। हर देगमें प्रजा भी राजाका इस निरकुश सत्ताका स्वागत करती है। हिंदू राजनीतिके अनुसार राजाकी सत्ता पर ब्राह्मणा और धर्मात्माका अबुश होते हुए भी राजाकी विष्णुका अवतार माना गया है। मुसलमानी हुबूमत आई तब मुसलमान तुलताना और बान्शाहोंके प्रति भी हिंदू प्रजाकी यह भावना बनी रही। एसा नहा जान पडता कि यूरोपम इसके पहले ऐसी कोई बान थी लेकिन वहा भा सोचवा गता दोसे राजाके श्वरदत्त अधिकारा (डिवाइन राइटम आफ किंग) का बान जन्म लेता है और उसका वूब प्रचार हाता है। सारी सत्ता एक ही हाथमें करनी हो तो अपने राज्यके भीतर ग्राम-बचायता और व्यापारिक मघाके जरिय अनेक मण्डल जो सत्ता और स्वराज्य भागत ह उस राजा बरदाशत नही कर सकता इसलिए वह स्वराज्य भोगनवाणी सब सत्त्याजाकी तोड डालता है। अपने राज्य भीतर हर क्षेत्रमें राजाकी सत्ता सर्वोपरि मानी जाती है। उसकी इच्छाके विरुद्ध और उमकी स्वाहृति लिये बिना कोई भी बडा काम, फिर वह सामाजिक हो धार्मिक हा या आर्थिक हो प्रजा नही कर सकती। हमारा देगमें यह जमाना मुगल साम्राज्यका जमाना था। मुगल बान्शाने भी सत्ताका जहा तक बन पडा केन्द्रित और एकत्रयी बना दिया था। पर हमारा देग बहुत विस्तृत होनम ज्याना आवादा गावाम हानसे और खास कर हमारी सत्ताकी भावना यूरोपस भिन्न होनक कारण उहोने प्रजाके सामाजिक और धार्मिक व्यवहारमें हस्तक्षेप नही किया। इसी तरह उहोने ग्राम-बचायता और व्यापारिया तथा कारीगरका मघाकी

स्वराज्य भोगनेवाली सस्याआका भी नहीं तोड़ा। हमारे देना या स्वराज्य भोगनेवाली सस्याए तो ब्रिटीश शासनमें यूरोपीय पद्धतिकी बेजिस्त राज्यसत्ता का कारण ही टूटी।

२५ अठारहवीं शताब्दीके उत्तरार्धमें राजाकी निरकुश सत्ताके खिलाफ समाजहितपी तत्त्वचानियो और लेखकान प्रजाकी स्वातन्त्र्य भावनाको जगाया। उसका परिणाम यह हुआ कि अठारहवीं शताब्दीके अन्तमें फ्रांसमें महान राज्यश्रान्ति हुई। इस श्रान्तिकी आगम फ्रांसका राजा जमींदार सामन्त और बड़ी बड़ी जागीरावाले महत और धर्माचार्य सब भस्म हो गये। इतना ही नहीं, यरोपके सारे देगावे राज्य सिंहासन हिल गये। श्रान्तिके बाद फ्रांसके सिवा दूसरे दशामें राजाआका अस्तित्व तो बना रहा परन्तु उनकी सत्ता पर अकुशल लग गया और हर देशमें ऐसी व्यवस्था होन लगी जिससे वहाके राज्यतन्त्रमें प्रजाकी आवाज सुनाई दे। राजाआकी निरकुश सत्ताके समयमें राजाकी इच्छाके विरुद्ध और स्वीकृतिके बिना प्रजा कोई भी काम नहीं कर सकती थी। इसकी प्रतिश्रियाके रूपमें अब एसा बाद अस्तित्वमें आया कि प्रजाके किसा आर्थिक सामाजिक और धार्मिक काममें राज्यतन्त्रका कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये प्रत्येक मनुष्यको अपन विश्वासके अनुसार चलने और जो काम उचित लग और पसन्द हो वह काम करनेकी स्वतन्त्रता होनी चाहिये। हर मनुष्यका अपनी पसन्दका धर्म पालनकी अपनी पसन्दका व्यापार धंधा या व्यवसाय करनेकी और अपनी इच्छाके अनुसार अपनी जायदादका उपयोग करनेकी स्वतन्त्रता होनी चाहिये। हर मनुष्यमें स्वयं अपना हित समझन और अपना स्वायत्त किसम है यह देखनकी शक्ति होती है। इसलिये जो अवसर मिलेगा उसका फायदा उठानमें कोई भी मनुष्य तहां चूकगा और अपन स्वायत्तको समझकर उसका सिद्धिमें वह अपनी सारी शक्तिया लगा देगा। हर मनुष्य अपनी शक्तियाका ज्यादा उपयोग करेगा और इस तरह अपन-आप सारे समाजका हित सध जायगा। इस बादमें यह मान लिया गया है कि वयक्तिक स्वायत्त और समाज हितके बीच कोई भेद ही नहीं है। इसलिये वयक्तिक स्वायत्तको पूरी स्वतन्त्रता मिल गई।

२६ यही काठ यूरोपम भौतिक शक्तिकी शोधका काल था। पूजी पतियोन भौतिक शक्तिसे चलनवाले बड़ बड़ कारखान खड किय और मजदूर चूस और पीसे जान लग। प्राचीन तथा मध्यकालमें किसान वग जमादारके अधीन था और कारीगर-वग व्यापारियाके अधीन था। फिर भी समाजमें एसी भावना फली हुई थी कि जमींदारों और व्यापारियाको किसानों और

कारीगरांके साथ मानवताका व्यवहार रचना चाहिये। उमके त्रिण समाजके रीति रिवाज और रूढियाक अदुग ना थ। परनु व्यक्तिगत स्वतन्त्रताक नाम पर निरदुग रीतिमे वयक्तिव स्वाय साधनेका भिन्नसफीवाले इस युगमें पूजा पतियोंको काई कुछ क नहा सजता था। मजदूरीकी तरके बारेमें कामके घटके वारमें और कामर चुनावके वारमें मजदूर पूजापतिपाके साथ स्वतन्त्रता पूवक करार करते ह और वे अपना स्वाय मगयकर स्वेच्छापूवक उस स्वाकार करते ह — इस नस्वतन्त्रताका प्रचार अथगान्त्री गभीरताम करते थ। यह माना जाता था कि मजदूर अगर कारखानामें चूम आर पीस जात ह ता वे अपना इच्छास एसा हान ते ह। रायसत्ता ता सिद्धान्तक अनुमार बीचमें प नहा नही सजती थी। साथ ही गेजमा भी सारा पूजीपतिव पणमें हाना था क्याकि इस तयावयित प्रजासत्ताके जमानमें राष्ट्र भावनाका योगामें सब जोर था। हर दगाका भौगोलिक चतु सीमाजन भीतर वमन वाल हर मनुष्यक हृदयमें यह आकाक्षा उत्पन्न और पोषित वा जाता था कि हमारा राष्ट्र दूसरे राष्ट्राके साथ युद्धमें जीत हमारे राष्ट्रका विस्तार बढे, हमारा राष्ट्र दूसरे राष्ट्राकी तुगनाम बला-बौगलमें ऊचा माना जाय हमारा राष्ट्र व्यापारिक प्रतिस्पर्धामें दूसराका हराकर दूसर देगोम धन खीचकर लाव और हमारे राष्ट्रकी वार्ति दग विराम गाइ जाय। इन सारी वार्ति समद्धि, मत्ता या धनमे दाने क हिस्मेक गगाका तो कुछ भी काम न मिगता ग और उनक दनिक जीवनमें भी कोई मुधार न हाना था। फिर भी यह मानकर कि हमारे राष्ट्रका जो कुछ मिगता है क हमीको मिलना है दगाका सामाय जनता राष्ट्रकी विजय और धन दीग्नका दगकर खग होनी थी और उममें गौरव मानती थी। जहा प्रजामें एसी भावनाका हो बालगान हा बहा इस बातका विगध कौन कर सक्ता ग कि हमारे देगमें दूसर दगामे अपार धन आय और उमकी वीति सज गगह क? व्यक्तिवकी तयावयित आर्थिक स्वतन्त्रताका बा इम सीमा तक पटुच गया कि वणि आठ दम मजदूर मिगकर मजदूरीका दर कवाने या दूसरी मुविधाए प्राप्त करनके त्रिण काइ मप बनात ता उमे भी व्यक्तिव-स्वतन्त्रतामें स्वाकट समवा जाता था। इसके सिवा तयावयित प्रजासत्ताम प्रताके नाम पर पूजीपति हा मपूण सत्ता भोग थ। अभा निवाचन-प्रवाती रचना इतनी अधिक दायपृथ ग कि इन बातकी काई व्यवस्था ही नहा थी कि प्रजाकी तरफस चुनी हुई बहा जानवागी प्रजासभामें प्रजाका प्रतिनिधिय भगेभाति हा। इसलिण पूजीपतिपा पर गज्यसत्ता या गेजमनता गान भी अदुग नहा था।

वादक रूपमें तो यह कहा जाता था कि हर मनुष्य आर्थिक विषयाम पूरा तरह स्वतंत्र है लेकिन इन बातोंके कारण व्यवहारमें तो 'जिसकी लाठी उसकी भंस का ही चाय चलता था।

२७ इसी आर्थिक स्वतंत्रताके नाम पर यह बात भी प्रचलित हुआ कि देग और देगके बीच मुक्त व्यापारकी नीति होनी चाहिये। किसी भी देगका राज्यतंत्र मालके आयात निर्यातके व्यापार पर जरात लगाता या दूसरी तरहका कोई प्रतिबंध लगाता तो यह अर्थशास्त्रके सिद्धान्तके खिलाफ माना जाता था। यह मनवाया जान लगा कि मुक्त व्यापारकी नीतिसे ही अच्छे अच्छे और सस्तेसे सस्ता माठ हर देगकी जनताका मिल सकता है इसलिए एक देगके दूसरे देगके साथ होनवाठ व्यापारमें कितना भा तरहकी फ़ावट न डालना चाहिये। इसका फल भी यह निकला कि जो देग उद्योग धधामें — चास करके मन्नाद्योगमें — आग बना हुआ था वह दूसरे देगका चूसन लगा। इस तरह इसमें भा जिसकी लाठी उसकी भंस का चाय ही चरन लगा।

२८ किसी राक्षम और दोनके आपसका व्यवहार निश्चित करनकी पूरा स्वतंत्रता हो ता यह दीय जसी स्पष्ट बात है कि उसमें दोनके साथ आयाय ही हागा। दोनकी स्वतंत्रता उसके किम काम आयगी? स्वतंत्रता भी समाजकी प्रगतिमें और समाजक हितम तभी उपयोगी सिद्ध हो सकती है जब समाजमें समानता मौजूद हाती है। समान गकिनवाले दो पक्षामें लेन-देनके या दूसरे करार बिल्कुठ स्वतंत्रताके साथ हा तो उममें दोनो ही पक्ष अपने अपने हितकारी रक्षा कर सकते ह। परन्तु जहा एक पक्ष बहुत बलवान हो और दूसरा बिल्कुठ निबल हो वहा इन दोनके बीचकी स्वतंत्रताका पूरा लाभ बलवान पक्षको ही मिलता है। इसलिए अगर चायकी रक्षा करनी हो ता बलवान पक्ष पर सामाजिक जिम्मेदारीके उचित अकुण होने हा चाहिये।

२९ इसक सिवा अगर दोना पक्ष समान बलवाले हा परन्तु एक दूसरेसे द्वेष रखते हो मौका मिलते ही एक-दूसरेको नीचे गिरानकी वृत्ति दोना पक्षाम हो तो भी समाजकी सुख गति और प्रगतिमें रुकावट पडती है। दो समान पक्षाम भी समाजक बल्याणकी वृत्ति हो दोनामें भाईचारेकी भावना हो तो ही इन समान पक्षोकी स्वतंत्रता समाजके उत्कषमें सहायक हो सकती है नहीं ता यह कहावत चरिताय हाती है कि साड साड लडें और चागडका नाग हो। दो बलवानोकी उगाईमें जनता बिना कारण परेशान होती है। इस विचारधाराको ध्यानमें रखकर हा फासकी क्रान्तिकी प्रेरणा देनवाले तत्त्वना नियान नान्तिक घोषणा-सूत्रक रूपमें स्वतंत्रता समानता और बहुत्वकी भावनाए

लोगोंकी जवान पर चला दा थी। उनमें से स्वतंत्रताकी भावना बुनियादें पली और आज भी आदर्श रूपमें स्वीकार की जाता है। परन्तु जब तक समानता और बहुत्वकी भावनायें सिद्ध न हो जाय तब तक समाजके मलेके लिए स्वतंत्रता पर अक्रिया रखना ही पड़ेगा। कारण बचवान परकी जिम्मेदारीके भावसे रहित निरी स्वायत्तपरायण स्वतंत्रता और निराल परकी अपात हित रक्षण न कर सनेवाली निरी पशु स्वतंत्रता—दाना ही समाजका हानि पहचानवाली है। यह स्वतंत्रता गन्दना दुष्प्रयोग और कबल विडम्बना ही है।

३० यह बात दूसरे सामाजिक व्यवहाराना तरह अय-व्यवहारमें भी स्वीकार की जान गयी है। प्रत्येक देशमें मिल मालिकों और मजदूरोंके बीचके व्यवहारमें मजदूरोंके हितकी रक्षाके लिए और जमादारों साहूकारों तथा किसानोंके आपसी संबंधोंके हितोंकी रक्षाके लिए सरकारोंके बीचमें पट्टेका बान बनती है। कुछ उद्योग क्षेत्रों में सरकार अपने हाथमें लेकर स्वयं ही चलाती है। बयानिक पूँजीपतियोंकी नफाखोरी और मूल्यवोरीका राजनिक लिए सरकारें प्रयत्न करने लगी हैं। गरीबोंके विशेष लाभके लिए म्युनिमिपलिटिया अस्पताल खोलने और अच्छे घर बनवाने जम काम करता है। लोगोंकी औरसे भी दया और परापूर्वोंके कामके रूपमें अनायालय आदि चलत है। परन्तु यह सब उपरी नियावा है। देशके राजकाजमें अभी तक कताघता बग पूँजीपतियोंका ही है। या पूँजीपतियान अपने पनेके बल पर अथवा दूसरे प्रभावोंके कताघता बगका अपने बगमें कर रखा है। इसलिए ऐसे प्रयत्नोंसे मजदूरों किसानों और दूसरे गरीबों तथा दलित बगके हितोंकी रक्षा भंगीभाति नहीं हो सकती।

३१ मालिकों और पूँजीपतियोंके बगके साथ बराबरी करनेके लिए मजदूरोंके अपने सभ बनानेके मालिकोंके टक्कर लेना शुरू किया है। इसमें म समानताकी स्थापना होनेकी आशा अधिक दिखाई गयी है। हर तरहके गोपित बग अब अपने अपने दम तरहके सभ बनाने लगे हैं। परन्तु जिस हद तक इन सभाना मगटन प्रतिस्पर्धा और द्वेषके सिद्धान्त पर होगा उम हद तक इन प्रयत्नोंमें भी समाजका कुल नही है। इन सभाना मगटन काय और मानवता अथवा बहुत्वके सिद्धान्त पर करनेका प्रयत्न हाना चाहिये।

३२ सभामें, मनुष्य जब तक समाजमें रहता है तब तक मनुष्यका शुद्ध स्वतंत्रता संभव ही नहीं है। किसी भी तरहका जिम्मेदारिता अक्रिया स्वीकार किए बिना दूसरोंका नुकसान पहचानकर जो अपना स्वायत्तता

कुदरत

१ हम संपत्तिकी व्याख्या कर चुके हैं। यह सम्पत्ति जिसे क्रियाओंसे निर्माण हो उन सब क्रियाओं और प्रवृत्तियोंको हम उत्पादन कह सकते हैं। उत्पादनके काय द्वारा मनुष्यकी आवश्यकताएँ पूरी करनेके लिए मूल पदार्थमें से हम उपभोगके योग्य नई नई चीजें बनाते हैं या जो चीजें मौजूद होती हैं उनकी उपयोगिताको बढ़ाकर उन्हें अधिक उपभोग्य बनाते हैं। मनुष्यके कुछ कार्यों और सेवाओंके द्वारा भी समाजकी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं। इन कार्यों और सेवाओंको भी संपत्ति माना जाता है। मनुष्यके उपयोगमें आनवाली और विनिमयम जिसका मूल्य आका जा सके ऐसी भौतिक तथा अभौतिक अथवा जशरारी सम्पत्ति उत्पन्न करनेका नाम उत्पादन है।

२ भौतिक सम्पत्तिके उत्पादनमें हम कोई नई वस्तु निर्माण नहीं करते। यह मानव शक्तके बाहरकी बात है। परन्तु कुदरत हमें जो कुछ मिलता है उस पर श्रम करके हम उसे उपभोगके योग्य बनाते हैं।

३ अशरीरी सम्पत्तिमें मनुष्यके काय और सेवाएँ आ जाती हैं। इस सम्पत्तिकी बुनियाद कुदरत पर नहीं बल्कि मानव शक्ति और मानव-कुशलता पर होती है। यह शक्ति और कुशलता शिक्षामें प्रती है।

४ अश्वत्ता भौतिक वस्तुओंके उत्पादनमें भी शिक्षा का महत्त्वपूर्ण हाथ होता है। यह शिक्षाका ही प्रताप है कि नई नई चीजोंके कारण भौतिक परिस्थितियोंमें तथा भौतिक वस्तुओंके उत्पादनमें बहुत सुधार हुए हैं। इस तरह कुदरत भी मनुष्यकी शक्ति कुशलता और स्वभावको तालाब देनेमें बहुत सहायक होती है।

५ किसी भी देश या समाजका आर्थिक स्थितिका अनुमान लगानेमें साम तौर पर भौतिक सम्पत्तिके उत्पादनका ही हिसाब रखा जाता है। इस उत्पादनके मुख्य जग अथवा कारण चार हैं १ कुदरत २ श्रम ३ पूँजी और ४ प्रवचक।*

* गीताके अनुसार पाँच कारण हैं अधिष्ठात (कुदरत) वर्तक (श्रम), वरण (साधन—पूँजामें प्राप्त करने योग्य वस्तुएँ), क्रिया और देव।

६ अर्थशास्त्रकी जगजी पुस्तकामें बुद्धरतने वजाय जमीन का उपाय उपयुक्त करनेकी प्रथा है। जब उत्पादन एक अगले रूपमें प्रयत्नको मानाकी प्रथा शुरू नहा हुआ था तब जमान श्रम और पका य तीन हा उत्पादन अग मा जाते थ। इन जगावा तान जगारवा का श्रममें रचना हो ता पुरानी कहावतको धाडा बदलर हम जमीन जार तीर जर— इन तानका उत्पादन अग कट सकते ह।

७ हम प्रकरणम हम बुद्धरतवा विचार करेंग। जिय देगा जसी बुद्धरती परिस्थितिया मिती ह बना ही उत देगा आधिक जावन बनता है। परिस्थितिया अनुकूल हा ता बुद्धरतको चाजारा आसानसे उत्पादन मिया जा सनता है और लोग सुख-सुविधा भाग सकते ह। परिस्थितिया प्रतिकूल हा ता बुद्धरतकी चीजाके उत्पादनमें बहुत कठिनाइया आनी ह और लोगको कष्टमय जीवन मिताना पडता है। बुद्धरती परिस्थितिया नीचकी पाच वाता पर निर्भर होता ह

१ जन्माय २ भूपृष्ठकी रचना ३ भूस्तरका रचना ४ भौगोलिक स्थिति ५ वनस्पति तथा पशुपक्षी।

(१) जन्माय मनुष्य अभी तक पृथ्वीके बहुत धाड हिस्सको आबा कर सका है। दोना ध्रुव प्रदेशके आसपासके बहुत ठंडा भागमें तथा विपु वत रणम आसपासके बहुत गरम प्रदेशके बहुत बडा भागमें आबादी बहुत ही कम है— नहाके बराबर है। दुनियाकी आबादीका बडा भाग समशीतोष्ण प्रदेशम बसता है। हमार देशक और चीनक कुछ हिस्से और यूरोप महादीपक कुछ देग बसत हा घनी आबादीवाळ ह। ठंडा गरमी बरसात सूखी या भीगी हवा ऋतुआरे परिवर्तन और पानीकी सुविधा— ये सब जहा अनुकूल हा वहा सस्कृतिया फती पूगी ह। जहा इन सब बातोंकी प्रतिकूलता है वहा मनुष्य बसा हुआ दीख तो भी वह नितान्त प्राथमिक और जगली देगमें ही होता है।

(२) भूपृष्ठकी रचना पहला नदिया रेगिस्तान जगळ ऊंची-नीची या समतल जमान समुद्रका विचार— ये सब मनुष्यके आर्थिक जीवन पर बहुत बडा प्रभाव डालते ह। पहला प्रदेशम रहनवालाका जीवन समतल प्रदेशम रहनवालाका जीवन और समुद्रक विचार रहनवालाका जीवन तीना एक दूसरेसे विपुल भिन्न होत ह। एमा तरह नदीके आसपासके खतीवाले प्रदेशमें रहनवालाका जीवन उच्च-नीच और गोचरभूमिवाळ प्रदेशम रहनवालाका जीवन और रेगिस्तानमें रहनवालाका जीवन भी एक-दूसरेसे बिलकुळ भिन्न हाता

है। उनके खान-पानकी चीज पोशाक परकी रचना और सामाजिक रीति रिवाज अलग अलग होते हैं। नदियाँ वर्षाऋतुमें पूर आती हैं और फिर वार-वार अपने साथ मिट्टी ले आती हैं। इससे जमीन उपजाऊ बनती है। कभी कभी वे जमानको बगावत भी ले जाती हैं मद्यपि अधिकतर वे मदद ही करती हैं। जिन नदियाँ नारें चल सकती हैं वे यातायातमें मदद करती हैं। सभी नदियाँ सामान्यतः आसपासके प्रदेशको समतल उपजाऊ और अधिक आवादीय लायक बगानेमें मदद करती हैं। समुद्र-तट भी जहाँ खाडियावाला होता है वहाँ जहाजरानीके लिए और मच्छीमाराके घषक शिप प्रहृत उपयोगी मिद्ध होता है। हमारे देशकी संस्कृतिके विकासमें उत्तर भारतमें हिमालय पर्वतने और सिंधु सतलज, गंगा-यमुनाके नदी परिवारोंन तथा दक्षिण भारतमें सह्याद्रि पर्वत और बीचके ऊँचे प्रदेशन और गोदावरी वृष्णा कावेरीके नदी परिवारोंने बहुत हाथ बटाया है। मध्यप्रदेशको उपजाऊ बनानेमें इसी तरहका काम नमदा, ताप्ती चबठ, सोन आदि नदियाँने किया है।

(३) भूस्तरकी रचना जमीनकी ऊपरी सतहमें जमीनका प्रकार— वागी गाल पीली, रेतीली जादि— और उसका उपजाऊपन अर्थात्पादनमें बहुत बडा काम करते हैं। इसके सिवा, जमीनके अंदरकी सतहमें तरह तरहकी धातुआकी तथा कायल और लोहकी खान और तेलके कुएँ जहा होने हैं उस प्रदेशका आर्थिक महत्त्व बहुत बड जाना है।

(४) भौगोलिक स्थिति पृथ्वीके गोलके पर बौनमा प्रदेश किस जगह पर है उसका भी आर्थिक महत्त्व होता है। कार प्रश जिस अक्षांश पर हो, समुद्रका सतहसे जितना ऊँचा हो समुद्रसे जितना दूर या पास हो और पर्वत भागके किस आर हो उसके अनुसार उम प्रदेशकी आरोग्यतामें और उसके कारण अर्थव्यवस्थाके गुणमें तथा मनुष्यके जीवनमें फल पडता है। हमारे देशका उत्तरी भाग समशीतोष्ण षट्त्रयमें होते हुए भी समुद्रसे दूर होने और उसके सतहसे बहुत ऊँचा न होनेके कारण उसके भीतर अत्यंत ठडी हवासे लक्ष अत्यन्त गरम हवा तककी विविधता पाई जाता है। उमके निर्माणमें हिमालय पर्वतका बहुत बडा हाथ है। अरबी समुद्रसे और बंगालक उपसागरसे उत्तरकी तरफ जानेवाले बरसानी वायुका रोककर वह उम प्रदेशको बरसात देता है तथा उत्तरमें तिब्बतकी ओरसे आनवाली अत्यन्त ठडी और सूखी हवाको रोकता है और सिंधु-सतलज, गंगा-यमुना और ब्रह्मपुत्रा जादि नदियोंका सारे प्रदेशमें बहाकर उमे उपजाऊ बनाता है। दक्षिण भारत उष्ण षट्त्रयमें हाते

हुए भी सारा प्रदेश समुद्रकी सतहसे ऊंचा होन और समुद्रके समीप हानक कारण वहा बहुत गरमी नही पडती । इसवे सिवा सह्याद्रि पर्वत अरबी समुद्रके दरसाती बादलोको रोक्कर काकण और मलाबारके सारे पश्चिमी किनारेके प्रदेशको विपुल मात्रामें वर्षा देनर उपजाऊ बनाता है और दूसरी ओरके यानी पूवके प्रदेशमें गोगावरी वृष्णा और कावेरी आदि नदियोको बहाकर उसे उपजाऊ बनाता है ।

(५) वनस्पति और पशु-पक्षी जगल जीर दूसरी वनस्पतिया तथा पाऊन लायक पशु और पक्षी भी देशकी आर्थिक स्थितिमें अपना योग दत ह । हमारा देश जगलकी पदावारमें काफी समृद्ध है । और गाय भस हाथी ऊँ घोडे गधे बकरी और भड जादि पशुधन भी देशमें बडी सख्यामें है ।

८ प्राकृतिक परिस्थिति या बुदरतकी प्रादेशिक रचना मनुष्यक रहन सहन स्वभाव आर्थिक जीवन आदि पर जो प्रभाव डालती है उसमें अन्य सारी वस्तुओकी अपेक्षा नदी जीर समुद्र अधिक हाथ बटाते ह । इसी कारणसे हम दुनियाम जन्म लेनवाली आज तककी सारी सस्कृतियाका नदी या समद्रके आसपासके प्रदेशमें विकसित हुई पाते ह । प्राचीन भारतीय सस्कृति सप्तसिंधु और गंगा-यमुनाके प्रदेशमें फली फूली है । प्राचीन द्राविड सस्कृति गादावरी वृष्णा तथा कावेरीके प्रदेशमें तथा अरबी समुद्र और बगालके उपसागरके तटवर्ती प्रदेशमें फूली फली होनी चाहिय । चीनकी सस्कृति ह्वांगहो और यांगसक्यांग नदियोके प्रदेशमें बविलोन और खालिडयाकी सस्कृति युफ्रटीज और टाइपीस नदियोके प्रदेशम और मित्तकी सस्कृति नील नदीके प्रदेशम समद्ध हुई है । यूनान रोम कायेंज जीर फिनिगियाकी सस्कृतिया भूमध्य समुद्रके आसपास फली फली ह । डेन्मार्क हांगण्ड बल्जियम इंग्लण्ड फ्रांस और जर्मनीकी सस्कृतिका उन्नय और विकास उत्तरी समुद्रके आसपास हुआ माना जायगा । जापानका हम जापानी समद्र और प्रशांत महासागरके साथ जायग । केबिन अमरीकाको हम किस समुद्र अथवा नदीके साथ जाडग ? परन्तु अब किसी भी देशका इस तरह नदी या समद्रके साथ जोडनकी जरूरत नही । ऊपर बताई हुई बात पुरानी सस्कृतियोंके बारेमें ही ठीक है । क्योकि यातायात और सदेश व्यवहारके साधनामें नई नई खोज करके मनुष्यन इतना अधिक सुधार कर लिया है कि अब एक-दूसरेके साथ व्यवहार करनेमें देश और काउके बंधन कोई खास रुकावट नही डालते ।

९ मनुष्य अपन भौगोत्रिक परिवेष्टनाके अधीन होकर कभी बडा नही रहा । इन परिवेष्टना पर उत्तरोत्तर विजय पानका पुरुषार्थ ही मनुष्य

जातिकी आर्थिक प्रगतिका इतिहास है। जलवायुम परिवर्तन करना बहुत कठिन होने हुए भी बीरान प्रदेशोंमें वर्ष लगावर और सूखे प्रयोगाम दूरकी नदियोंमें नहर बहावर मनुष्यने उन प्रयोगामे जलवायुमें काफी परिवर्तन किये ह। हमारे गुजरातमें चरोनरका प्रदेश जा वाग जसा दिखार्ई देता है वह मनुष्यने श्रमका ही फल है। इसके सिवा कुछ प्रदेशाम नदियोंमें बड़ बड़ बाध बाधकर उनस बारहा महीन खताके लिए पानी लेनकी मनुष्यने व्यवस्था की है। नील नदीके कुछ बड़ बाध और सिंधु नदीका सक्कर बाध इनक प्रसिद्ध उदाहरण ह। पजाबम बहुत वग्सान नहा होनी लेकिन उसमें बहनवाती पाच नालियामे नहरें निवाल्कर हा मनुष्यन उसे उपजाऊ बनाया है। बीकानरके राजाने सतलज नदीसे बड़ी नहर निवाल्कर अपने राज्यक कुछ रेतीले प्रदेशको हराभरा बना लिया है। हमेगा पानासे भरी रहनवाती और दलदलवाली जमीनोसे नालिया द्वारा पानी निवाल्कर और सुपाकर मनुष्यन उन्हें खेतीक उपयोगमें लिया है। खारी ऊसर जमीनम समुद्रके ज्वारका पानी आ सके ऐसी व्यवस्था करके और बड़ा बर सातका मीठा पानी भरा रखकर मनुष्यने ऐसी धरताको भी खतीके लिए उपयोगी बनाया है। इसके सिवा खुरा और टेकरावाती जमीनके ऊचे भागका खाल्कर और निचाईवाल हिस्सकी ओर बड़ी बड़ी पाल बाधकर जमीनको सपाट बनाकर खेतीक काममें लिया गया है। जमीनमें याद देकर तथा फसलामें शास्त्रीय पद्धतिस परिवर्तन करके भी जमीनका ज्यादा उपजाऊ बना लिया जाता है। नालिया और चरनाक तेजीसे दौडते हुए प्रवाहम पहाडके दोनों ओरन भागोको बटावम बचानक लिए बहा पैल लगाकर जगल उगाय जाते ह। इसके कारण पानीके बहावका जोर पटना है और भयकर बाँले नहा आ पाता। आज हम नदियामें जो भयकर बाँले आनी सुनते ह उसका कारण जगलकी रक्षा करने और उनका लगानेकी पद्धतिमें कोई दोष मालूम हाना है।

१० जगली वनस्पति पर मेहत्त करक मनुष्यने नये नय अनाज और नय नय फल उपजाय ह। दुनियाके अलग अलग देगोमें आज जा अनेक प्रकारक फलके पेड और अनाक पोने पाय जाते ह व सब उसी देगकी पदावार हा ऐसा नहीं है। मनुष्यने जस स्वय देग और स्थान चल्ता है वस ही उसने फलके पटा और अनाजके पोषामे भी देग और स्थान बदलवाया है। साथ ही जगली देगामें रहनवाके पशुआकी नसल सुधारकर उन्हें मनुष्यने अधिक दूधवाले, अधिक मासवाले, बोल बोलनेकी अधिक शक्ति रखनेवाले और

दोड़नेमें अधिक गतिवाले पशु बनाया है। हाथी ऊट और घोड़का ता मनुष्यने लड़ाईकी भी तालीम दी है। फौजका सामान वाचनेने त्रिए घाट और गधेकी नसतके मिथणसे मनुष्यने लच्छर पदा किया है। टीपू सुल्तानन अपनी तोपें वाचनेके लिए बंगाली एन खास नसत तयार का था। सन्तान वाहकके रूपमें मनुष्यन कवूतरका उपयोग किया है। पहरा देनमें मदद करनेके लिए कुत्तको तालीम दवर मनुष्यने उसे अपना साथी बनाया है और गिनारमें मदद करनेक लिए कुत्त और बाजको तालीम दी है।

११ कुछ उद्योगाने त्रिए यह जरूरी है कि हवामें एक खास मात्रामें गरमी और नमी हर समय बनी रह। एसी यकितया खोजी गई ह जिनसे वाहरकी हवामें कितनी ही गरमी या ठंडी क्या न हो और उसमें दिनके अन्त अन्त हिस्सामें कितन ही परिवतन क्या न हो फिर भी कारखानामें कृत्रिम ढंगसे निश्चित की हुई मात्रामें ही गरमी या नमी हर समय रह सकती है। इसी तरह सभागृहाम घरे कमरामें और रेलके डिब्बामें जसी हवा चाहिय बसी रखी जा सकता है। दूसरे महायुद्धमें तो आगकी तरह घघकते रंगिस्तानमें भी अन्तर बठ हुए उद्योगाने त्रिए ठीकी हवा बनाय रखनवाले टकावा उपयाग हुआ था।

१२ इस तरह प्रकृति पर कई तरहसे अधिकार जमाकर मनुष्यन आसपासकी प्रकृतिको अपन अनुकूल बनानेके लिए भगीरथ प्रयत्न निय ह और एसा करके अपनी खुशाहाली और प्रगति साधी है। फिर भी हम यह न भूठना चाहिय कि जतमें ता कुदरतके सामन मनुष्यकी शक्तिकी रोई बिसात नहीं है। कुदरत जब रुठती है या काप करती है—यानी जत्र बड बड भूकप हाते ह बडी बडी बाँ आती ह पानीकी जगह जमीन और जमीनकी जगह पानी हा जाता है और भयकर अकाठ पटते ह तत्र मनुष्य उनके सामन अचार हो जाता है। इस तरह अयब क्षनमें भी जतमें तो कुदरत ही स्वामिनी होती है।

१३ यहा हम सक्षममें यह बतायेंगे कि मनुष्य कुदरतके विभिन्न अगाका क्या क्या उपयोग करता है और उससे उसे क्या क्या मिलता है।

(१) जमीन खती करके अनाज फल सागभाजी घासचारा और दूसरी चीजें। साथ ही ढोराकी चराईके लिए चरागाहोका उपयोग।

(२) जल इमारती और जलाऊ लकड़ी तथा गाल गाल राल रत्तर वास बगरा दूसरी पदावार।

(३) पाने द्वारा बायला तल लाहा तथा तरह तरहकी दूमरी धानुए ।

(४) नदी जीर नहर प्रतिदिनके उपयोगका पाना येतीने लिए पानी सोवा जीर नहरके द्वारा तथा जहा सुविधा ही वहा यापार या यात्रा लिए नावा द्वारा यातायात ।

(५) शरन जीर जल प्रपात विजगी ।

(६) समुद्रका किनारा अनुकूलता हो वहा बन्दरगाह मच्छीमारी नारियल वाराकी पत्तावार ।

(७) समुद्र समुद्री यात्रा और यापारके लिए । कुछ स्थानाने माती जीर मूग निकाठ पान ह । उन मगरमच्छ भा पकड़ जाते ।

(८) पहाड कुदरती तीर पर ही मनुष्यका अमर सुविधाय और रक्षण देता है । वहा मनुष्यन तीयस्थान हुआपानके स्थान और पीजा छावनिया भी बनाई ह ।

(९) वायु प्रवाह उनका लिंगा जीर समय जानकर मनुष्य उनका समुद्री व्यापार या यात्राके उपयोग करता है ।

(१०) पान पानी इनके मान चमटा चर्ची ऊन वायु पल दूध अडे आदि वस्तुए मनुष्यको मिलती ह । इसके मिवा भाग इन मसारा चाकी द्वारा लडा जीर निवारण भी मनुष्य इनका उपयोग करता है । गहलकी मक्खी जस बीडाम भी मनुष्य गहल जीर मान लीग रता है । गहलका मनिपमा पाणी भा जाती ह ।

१४ इस तरह प्रकृतिन तो जयत उन हायाने अपना भडार हमारे लिए खाए लिया है । खिन यह मूर नाचने जना प्रश्न है कि मनुष्य उसमें मरितगा लता रह और किस तरह नेता रह । कुत्तरतम हम अधिकसे अधिक कम के सरत ह इसकी आधुनिक विज्ञानने कई रोनिया खाज निराला ह और आज भी नई नई रीतिया सोजनेन पीछे बह पना हुआ है । खिन अपन भण्डारमें स गद हूइ वस्तुकी पूर्ति करनेकी कुत्तरतम जितनी गकिन हो उमम अधिक उसका पानने के रता कुत्तरतका उपयोग नहा कटा जा सकता, खिन उमकी लूट बना जायी । और गाजतम म जिन तरह बिना साचे विचार कुत्तरतका लूट रह ह उमस कुत्तरतका भडार भी खानी हो जाय ता बाई आदचकका बात नही । उदाहरणन लिए जमीनमें विन्कुक साद न गैर हम फल पदा विभा हा कर तो जमीनका कम विन्कुक

दौड़नाम अधिक गतिवाले पशु बनाया है। हाथी ऊँ और घाड़को ता मनुष्यने लडाईकी भी तालीम दी है। फौजका सामान खीचने के लिए घाँ और गधकी नसलके मिश्रणसे मनुष्यने सच्चर पदा लिया है। टीपू मुस्तानन अपनी तोपें खीचनेके लिए बगकी एक खास नसल तयार की था। सन्गे वाहकके रूपम मनुष्यन बसूतरका उपयोग किया है। पहरा देनेमें मद करनके लिए कुत्तको तालीम देकर मनुष्यने उस अपना साथी बनाया है और गिनारमें मद करनके लिए कुत्त और बाजको तालीम दी है।

११ कुछ उद्योगोंने त्रिए यह जरूरी है कि हवाम एक खास मात्रामें गरमी और नमी हर समय बनी रह। ऐसी युक्तिया खोजी गई ह तिनस वाहरकी हवामें तितनी ही गरमी या ठन्दी क्या न हो और उनमें दिनके अलग अलग हिस्साम कितन ही परिवतन क्या न हा फिर भी कारखानामें श्रुनिम ढगसे निश्चित की हुई मात्राम ही गरमी या नमी हर समय रह सकती है। इसी तरह सभागृहामें घरके कमरामें और रलके त्रिब्वामें जसी हवा चाहिय बसी रखी जा सकती है। दूमरे महायुद्धमें तो आगकी तरह घघकत रेगिस्तानमें भी अन्तर बठे हुए लोगोंने लिए ठडी हवा बनाये रखनवाले टकावा उपयोग हुआ था।

१२ इस तरह प्रकृति पर कई तरहस अधिकार जमाकर मनुष्यन आसपासका प्रकृतिको अपन अनुकूल बनाने के लिए भगीरथ प्रयत्न किया ह और एसा करके अपनी खाहाशी और प्रगति साधा है। फिर भी हम यह न भूठना चाहिय कि जतमें ता कुदरतके सामन मनुष्यकी गक्तिवा कोई विसात नहा है। कुदरत जब रुठती है या कोप करती है — याना जब बड बड भूकण हाते ह बडी बडी बाड आती ह पानीकी जगह जमान और जमीनकी जगह पानी हो जाता है और भयबर जकाल पडते ह तब मनुष्य उनके सामन लाचार हो जाता है। इस तरह जयके क्षनमें भी जतम तो कुदरत ही स्वामिनी होती है।

१३ यहा हम सक्षपमें यह बनावेंग कि मनष्य कुदरतके विभिन्न अगोका क्या क्या उपयोग करता है और उससे उसे क्या क्या मिता है।

(१) जमीन खती करके अनाज फल सागभाजी घासचारा और दूसरी चीजें। साथ ही डोराकी चराईके लिए चरागाहोका उपयोग।

(२) जगल इमारती और जलाऊ लकडी तथा गाल गज राल रजर वास वगरा दूसरी पदावार।

निचल जायगा और वह फल देना बन्द कर देगी। इसमें उलटे रासायनिक खादके द्वारा जमीनको बहुत अधिक उत्तमित करके उसकी स्वाभाविक शक्तिसे अधिक फसल ली जाय तो भा जमीन थक जायगा और उसकी फसल देनेकी शक्ति घट जायगी। जगत्में जितने पड़ फिरने उग सकें उसमें अधिक यदि काट लिया जाय तो जगत् साफ हो जायगा। पृथ्वीके पेटमें तलके कुए ह और कोयले ग्राहे तथा दूसरे अनक पत्थराकी गानें ह। व कइ पपकी कुदरती प्रक्रियाओसे बनी हागी। व चीज हम अत्यधिक मात्राम सानासे के लें तो जल्दी या दरसे व खतम हो जायगी। तेर और कोयलेके बारेम ता थह डर पत्थ भी हो गया है। प्रकृतिसे ये चीजें लेनेकी हमारी रीतें भी इतनी दापयुक्त ह कि हमारे हाथम जितना जाता है उससे कई गुना ज्यादा बिगाड होता है। साथ ही कुदरतसे हम जितना लते ह उसका सदुपयोग ही करते हा सो बात भी नहीं। उसका बडा हिस्सा तो हम व्यथके और गलत कामाम नष्ट कर डाते ह। कुदरती साधन संपत्तिका उपयोग सारी मानव-जातिके लिए सुख-सुविधाकी वःए बनानमें करनक बजाय बहुत छोटे बगक भोग विलासकी और थारामकी चीजें बनानमें होता है। द्वितीय महायुद्धमें कुदरती साधन-सम्पत्तिका हमन जो बिगाड किया है वह कुदरत पर मनुष्यकी तरफस होनेवाके भयकर अत्याचारका एक स्पष्ट और सचोट उदाहरण है। इसलिए कुदरतका उचित आवयक और समझदारी भरा उपयोग करनम ही सच्चा अध्यात्म समाया हुआ है।

निष्कृत जायगा और वह फसल देना बन्द कर देगी। इसमें उल्टे रासायनिक खादके द्वारा जमीनको बहुत अधिक उर्वर करके उसकी स्वाभाविक गन्धिम अधिक फसल मिले जाय ता भी जमीन थक जायगी और उसकी फसल देनेकी शक्ति घट जायगी। जगलमें जितने पड़ फिरम उग सकें उससे अधिक यदि काट लिये जाय ता जगल साफ हो जायगा। पृथ्वीके पेटमें नेल्के कुए ह और कोयल गेहे तथा दूसरे अनन्य पदार्थोंकी गानें ह। व कई वर्षकी कुदरती प्रश्रियाआने बनी हागा। य चीजें हम अत्यधिक मात्रामें खानासे ले ल तो जल्दी या देरसे व खतम हो जायगी। तेर और कोयलेके धारम ता यह डर पदा भा हो गया है। प्रकृतिसे य चीजें बनकी हमारी रीतें भी इतनी दोषयुक्त ह कि हमारे हाथमें जितना आता है उससे कई गुना ज्यादा बिगाड होता है। साथ ही कुदरतसे हम जितना लत ह उसका सदुपयोग ही करत हा सा बात भी नहीं। उसका बडा हिस्सा तो हम खर्चके और गन्त कामामें नष्ट कर डालते ह। कुदरती साधन-संपत्तिका उपयोग सारी मानव-जातिके लिए सुख-शुविधाकी वस्तुए बनानमें करनेका बनाय बहुत छोटे बगके भोग विलासकी और आरामकी चार्जे बनानमें होता है। त्तीय महायुद्धमें कुदरती साधन-सम्पत्तिका हमन जो बिगाड किया ह वह कुदरत पर मनुष्यकी तरफसे होनवाके भयकर अत्याचारका एक रूप और सचोट उदाहरण है। इसलिए कुदरतका उचित आवश्यक और समझदार उपयोग करनेमें ही सच्चा अर्थशास्त्र समाया हुआ है।

दुनियामें लगभग सब जगह देवी जाना है। कुछ लोग मानते हैं उम प्रकार मनुष्यकी कामनाओका कारण उनकी तपस्विके लिए किये जानवाले श्रमका विकास एक विषय तकनिर्णयित श्रम नही हुआ है — अर्थात् पहले अपनी मुख्य आवश्यकताओकी चीजे जुटाकर लिए उद्योग करना फिर सुविधाए और जागमकी बाज प्राप्त करनेके लिए उद्योग करना और फिर शृंगार मोज गीव और सुख-चनकी चीजारे लिए उद्योग करना — इस प्रकार नही हुआ है। य सब बात साथ साथ होनी चगी जा रही है।

५ इस प्रकार श्रम या उद्योग मूलत कोइ एसी चीज नही जो बनाकरक या अच्छी न लगनवाली हो। फिर भी आजके समाजमें ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है जिसके कारण लोगोमे मेहनत मजदूरीके बारेमें काम करनेके बारेमें अरुचि पाई जाती है। मनुष्य जब कोइ काम अपनी इच्छासे औरसे या उत्साहसे करना है तब उससे करनेमे बल उत्पन्न नही। परन्तु जब वही काम उसे इच्छा न होना पर भी मजदूरीसे करना पडना है तब वह उद्योग जाता है। मजदूरीका अर्थ इतना ही नही कि कोइ डडा लगर हमारे पास खडा रह और जबरदस्ती हमसे काम करावे। हम कोइ काम पसन्द न हो और दूसरा काम करनेको हम तयार हा परन्तु परिस्थितिया ऐसी हो कि हम अच्छा न गनवाला काम यदि न कर तो हम या हमारे आश्रितोका भोजन न मिले तो उस स्थितिमे भी काम करनेमें मजबूरी ही माना जायगी। इसके सिवा मनुष्यको अपने श्रमका पूरा फल न मिलता हो और उसे दूसरा कोई का जाता हा और परिस्थितिमा ऐसी हा कि दूसरको पालने वह राक भी न सकता हो तब भी उस कामके करनेमें मनुष्यका मन या आनन्द नही जाना। कामका हेतु अथवा उद्देश्य जान या समझे बिना काम करनेमें भी आनन्द नही आता। पानपूर्वक कोइ काम करनेमें अधिक मन आता है। इसके सिवा जब मनुष्यको बतेमे बाहर काम करना पडता है तब भी वह कामन चट ऊब जाता है। आजकल किसान और मजदूर वर्गोमे लोगोको ठडा बाहें भरत हुए मजदूरन काम करत जा देता जाता है उनके कारण बड़े पाप तो उनमे मजदूरी बूनेमे बाहर काम और मेहनतका फल दुमरा द्वारा भागा जाना ये तीना कारण मिलगे। यदि प्रत्येक मनुष्यको अपनी शक्ति या बूतेके अनुसार हा स्वच्छास काम करनेका मिले और घर काम करने हुए शरीरका जितनी हानि होती हो उस पूरा करनेके लिए कामके बन्नेमें पयाप्त बमाइ हो जाय तो आग कामके लिए जो अरुचि देगनमें आती है वह न रह। कुछ

३ मानव उद्योगके मूलमें रह गरीर-व्यापारानी जात करें ता एक बहुत बड़ी महत्वकी बात हमारे ध्यानमें एकत्र आ जाती है। जीवनके धारण-पोषणके लिए जो गरीर-व्यापार जरूरी ह उन सबके साथ प्रवृत्तिन गरीरिक या शारीरिक और मानसिक दोनों तरहका विषय मानव अय्यासमें स्पष्ट रूपमें जान लिया है। स्वता करना पशु पाठना रहनवा मनान बनाना खाना पीना पहनना ओठना सतान पना करना सताननी रना करना और उसका पाठन-पोषण करना तथा इन कामामें जाया पहुचानवाले आनमणाका सामना करना — य सब प्रवृत्तिया जीवनके लिए आवश्यक ह। इनके बिना व्यक्ति गरीरका और ममाज गरीरका धारण-पोषण हा ही नहीं सकता। इन सब कामामें इतना रस या आनंद भरा है मानो उह करनके लिए कुत्तरतन उनमें प्रयत्न रख दिया हा। साथ हा इन सब प्रवृत्तियामें श्रम या उद्योगके तत्त्वका साथ मत्तारान जोर कानन तत्त्व जैसे नाच गान और शृंगार आदि भी जुट हूँ ह। य प्रवृत्तिया प्राणामात्रमें पाई जाती ह। मनुष्यके सिवा दूसरे प्राणी य प्रवृत्तिया जानपूवक नहा करते। चाणी गह्वकी भक्ती या लीमत्रना जावन दरें ता अपनी समस्त जानिके धारण-पोषण और विकासके लिए उस जातिवा प्रत्यक जीव जो कुठ करता है और जरूरत पन्न पर भरण तत्कू लिए तयार रहता है वह आवश्यक जनक है। उसमें बड़ी दूरलेनी भी भरी होती है। फिर भी इन सबम जानका तत्त्व बहुत थोटा होनक कारण उनकी सारी प्रवृत्तिया और काय विभाजन एक निश्चित प्रकारका ही होता है। उनम यक्तिगत विपता बहुत कम पाई जाता है। मनुष्यकी प्रवृत्तियोमें जैसे जैसे जान और बुद्धि अधिन भाग लते ह वसे वसे उसमें अपन यकितत्वका भान अधिकाधिक जागृत होता है। इसमें से विपत्त और विविध प्रकारकी कामनायें या आवश्यकताय उत्पन्न हाती ह। इन विपत्त कामनाजान ही मनुष्यको नए नए उद्योग खोजन और करनकी प्रेरणा दी है। हमके सिवा दूसरे उद्देश्यको सिद्ध करनके लिए अपन वतमान सुखोपभोग पर जानपूवक नियंत्रण रखनकी तयारीम मनष्यकी आर्थिक प्रगतिका बीज निहित है। यदि मनुष्य जितना उत्पन्न करता गया उतना ही तुरंत खर्च भी करता गया हाता तो आज उसन अब अथवा सम्पत्तिके विषयमें कितनी प्रगति की है उतनी वह न कर सका हाता।

४ अग्य जग तरहके काम या श्रमके साथ साथ रसदायक तथा मनोरंजक प्रवृत्ति करनकी प्रथा बहुत प्राचीन समयसे पायी जाती ह। जकके या मित्रकर काम करत समय गानकी या ताठक साथ काम करनका प्रथा

दुनियामें लगभग सब जगह दबी जाती है। कुछ लोग मानते हैं उम्र प्रकार मनुष्यका कामताजारा और उनकी तन्त्रिने लिए किये जानवाले श्रमका विकास एक विनाश तकनिर्णयित श्रमम नहीं हुआ है—अथवा पहले अपनी मुख्य आवश्यकताओंका चीजें जुटानके लिए उद्योग करना फिर सुविधाएँ और आरामका चीज प्राप्त करके लिए उद्योग करना और फिर श्रमकार मौज गोक और सुख-वनकी चांजाने लिए उद्योग करना—इस प्रकार नहा हुआ है। ये सब बात साथ साथ हानी चका आ रही हैं।

५ इस प्रकार श्रम या उद्योग मूलतः कोई ऐसा चान नहीं ता बनाकपक या अच्छी न लगनवाला हा। फिर भी आने समाजम एसी स्थिति उत्पन्न हा गई = जिसक कारण योगाम महला मजदूरीके शरमें काम करनक शरमें अरुचि पाई जाती है। मनुष्य जब बाई काम अपनी इच्छास गौकसे या उत्साहमे करता है तब उमरे करनमे वह ऊनता नहा। परन्तु जब वही काम उसे इच्छा न हान पर भी मजदूरीस करन पडता है तब वह ऊन जाता है। मजदूरीका अर्थ इतना ही नहा कि बाइ डडा लकर टमार पास खगा रहे और जबरान्ती हममे काम करावें। हम कोई काम पसन्द न हो और दूसरा काम करनका हम तयार हा परन्तु परिस्थितिया ऐसी हो कि हम अच्छा न लगनवाला काम यदि न करें तो हमें या हमार आधिताको भाजन न मिठ ता उस स्थितिमें भी काम करनमें मजदूरी ही माना जायगी। इसके सिवा मनुष्यको अपने श्रमका पूरा फल न मिलता हो और उमे दूसरा कोई का जाता हो और परिस्थितिया एमी हा कि दूसरको खानेस वह रोस भी न सकता हा तब भा उम कामके करनमें मनुष्यका रम या आनन्द नहा आता। कामका हेतु अथवा उद्देश्य जाने या समने विना काम करनमें भा आनन्द नहा आता। पानपूर्वक बाइ काम करनमें अधिक रम आता है। दूसरे सिवा, जब मनुष्यको वृत्तम बाहर काम करन पडता है तब भी वह कामस शकत ऊन जाता है। आजकल किसान और मजदूर वर्गोंम योगाको ठनी बाहें भरते हुए मजदूरम काम करत जो देखा जाता है उमरे कारण लूडे जाय ता उनम मजदूरी वृत्तम बाहर काम और मेहनतका फल दूसरा द्वारा भागा जाना, य तीना कारण मिठेगे। यदि प्रत्येक मनुष्यको अपनी शक्ति या श्रुति अनुसार ही स्वच्छाम काम करनका मिठे और वह काम करते हुए शरीरका जिननी हानि होती हा उस पूरा करनके लिए कामके बन्धनमें पर्याप्त कमाइ हा जाय ता आज कामके लिए जा जरुचि दायनमें जाती है वह न रह। कुछ

३ मानव उद्योगक मूलमें रह गरीर-व्यापारकी जाव करें ता एक बहुत बड़ा महत्वकी बात हमारे ध्यानमें एकत्र आ जाती है। जीवनक धारण-पोषणक लिए जा गरीर-व्यापार जरूरी ह जा सत्र साय प्रवृत्तिन गरीरक या गरीरक जीर मानसिक दाता तरहका सिंग पान जयवा रस स्पष्ट रूपमें जा लिया है। खता करना पशु पाउना रहनवा मकान बनाना खाना पीना पहनना-ओटना सतान पदा करना सतानका रखा करना और उसका पान पापण करना तथा इन कामाम प्राधा पञ्चानवाल आनमणका सामना करना—य सब प्रवृत्तिया जीवनके लिए आवश्यक ह। इनके बिना व्यक्ति गरीरका और समाज गरीरका धारण-पोषण हा ही नहीं सकता। इन सब कामामें इतना रस या आनन्द भरा है मानो उन्हें करनेके लिए कृत्रतन उनमें प्रयत्न रग लिया हा। साथ ही इन सब प्रवृत्तियाम श्रम या उद्योगके तत्त्वके साथ मीरता जीर कान तत्त्व जस नाच गान और शृंगार जाति भी जट्ट ह। य प्रवृत्तिया प्राणीमागम पाई जाती ह। मनुष्यके सिवा दूसरे प्राणी ये प्रवृत्तिया पानपूवक नहीं करते। चाणी गहकी मक्खी या दीमकका जीवन देखें तो अपनी समस्त जानिके धारण पोषण और विकासके लिए उम जातिवा प्रत्यक जीव जा कुठ करता है और जरत पान पर मरन तत्रर लिए तयार रहता है वह जाचय जनक है। उसमें बड़ी दरदेगी भी भरी होती है। फिर भी इत सबमें पानका तत्त्व बहुत थोटा होनेके कारण उनकी सारी प्रवृत्तिया जीर काय विभाजन एक निश्चिन प्रकारका ही होता है। उनमें यक्तिगत विषयता बहुत कम पाई जाती है। मनुष्यकी प्रवृत्तियाम जसे जस पान जीर वद्धि अधिक भाग पते ह वसे वसे उसमें अपन यकितत्वका भाव अधिकाधिक जागत होता है। इसमें से विषय जीर विविध प्रकारकी कामनायें या आवश्यकतायें उत्पन्न हाती ह। इन विषय कामनाया ही मनुष्यका नए नए उद्योग खोजन जीर करनेकी प्ररणा दी है। उसके सिवा दूरके उद्देश्यको सिद्ध करनेके लिए अपन वतमान सुखापभोग पर पानपूवक नियंत्रण रखनकी तयारीम मनष्यकी आर्थिक प्रगतिका बीज निहित है। यति मनुष्य नितना उत्पन्न करता गया उतना हा तुरत खच भी करता गया हाता तो जाज उसन अथ अथवा सम्पत्तिके विषयमें जिननी प्रगति की है उतनी वह न कर सका हाता।

४ अलग अलग तरहके काम या क्रमके साथ साथ रसदायक तथा मनारजक प्रवृत्ति करनेकी प्रथा बहुत प्राचान समयस पायी जाती ह। जकल या निरकर काम करते समय गानका या ताठके साथ काम करनेकी प्रथा

दुनियामें लगनग सब जगह देखा जाती है। कुछ लोग मानते हैं उस प्रकार मनुष्यकी कामनाआका और उनकी तत्त्विक लिए किये जानकार श्रमका विकास एक विधि तक निर्णीत श्रम नही हुआ है—जबान पहले अपनी मुख्य आवश्यकताआकी चीज जुटानके लिए उद्योग करना फिर सुविधाए और आरामकी चीजें प्राप्त करनेके लिए उद्योग करना और फिर शृंगार मौज शौर और सुख-चमकी चाजाने लिए उद्योग करना—इस प्रकार रही हुआ है। ये सब बात साथ साथ हानी चंग आ रही ह।

५ इस प्रकार श्रम या उद्योग मूर्त का एसी चाप नही जा अनारूपक या अश्लील न लगनवागी हो। फिर भी आगे समाजमें एसी स्थिति उत्पन्न हो गई है जिसके कारण लोगाम मजदूरकी वारम काम करनेके वारमें अरुचि पाई जाता है। मनुष्य जब बाड काम अपना इच्छास गीकमे या उत्साहसे करता है तब उमर करनेमें वह उग्रता नही। परन्तु जब वही काम उम इच्छा न हाने पर भा मजदूरीसे करना पडता है तब वह ऊत्र जाना है। मजदूरका अयचना ही नही कि कोई डडा लर हमारे पास खडा रह और जवरदम्ती हमसे काम कराव। हमें कोई काम पसंद न हा और दूसरा काम करनेका हम तयार हा परन्तु परिस्थितिया एसी हा कि हम अछा न लगनवाला काम यदि न करें तो हमें या हमारे आश्रिताका भाजन न मिल, तो उम स्थितिमें भा काम करनेमें मजदूरी ही मानी जायगी। उसके सिवा, मनुष्यका अपन श्रमका पूरा न मिलता हो और उम दूसरा कोई खा जाना हो और परिस्थितिया एसी हा कि दूसरा खानस वह रोज भी न मरता हो तब भी उस कामके करनेमें मनुष्यका रम या आनद नही आता। कामका हनु अथवा उद्दय जाने या समये विना काम करनेमें भी आन नही आता। जानपुत्रक कोई काम करनेमें अधिन रम आता है। इनके सिवा जब मनुष्यको बतम बाहर काम करना पडता है तब भी वह काममें झट ऊत्र जाना है। आजकल किसान और मजदूर वर्गोंम श्रमकी ठडी आट भग्ने हुए मजदूरन काम करते जा देता जाता है उनके कारण रहे जाय तो उनमें मजदूरी बूतम बाहर काम और मेहनतका पूरा दूसरा द्वारा भागा जाना य तीन कारण मिलेंग। यदि प्रत्येक मनुष्यका अपनी शक्ति या बूतेन अनुसार ही स्वेटाय काम करनेका मिल और वह काम करते हुए शरीरका जितनी शक्ति होनी हा उमे पूरा करनेके लिए कामके वारमें पयाप्त कमाई हा पाय तो आज कामके लिए जा अरुचि करनेमें आता है वह न र। कुछ

काम समाजके लिए अत्यंत उपयोगी और समाजके सुख स्वास्थ्यके लिए अनिवाय होने हुए भी कम प्रतिष्ठित मान जाते हैं। इतना ही नहीं मगो जसोने काम तो घृणाके लायक भी समझ जाते हैं। और समाजने इन कामोंके करनेवालोंका सत्ता अपमान और तिरस्कार किया है। ऐसे कामोंका पारिश्रमिक भी बहुत योग्य मित्रता है। लेकिन कुछ काम ऐसे हैं जो समाजके लिए बहुत कम उपयोगी होते हुए भी प्रतिष्ठित माने जाते हैं और उनमें पारिश्रमिक भी बहुत भारी मिलता है। इस कारणसे भी समाजमें कामके प्रति और सास तौर पर मेहनत मजदूरीके कामके प्रति अस्वच्छिन्नता पैदा हो गई है। श्रमके फलका भोगता तब श्रम करनेवाले पर केवल निगरानी रखनेका अथवा भाग-सूचनका काम करता है तब उसके इस काममें किसी प्रकारकी कटारता न हो तो भी वह श्रमके विषयमें उद्युता या हीनताकी भावना उत्पन्न करता है। यदि भावना श्रम करनेवालेके साथ ही उद्योगी काम करे तो श्रम करनेवालेमें ऐसा भावना उत्पन्न न हो। यदि हम बुद्धिकी प्रतिष्ठा बनायेंगे तो श्रमकी अप्रतिष्ठाका संस्कार जरूर उत्पन्न होगा।

६ किसी भी तरहके परिवर्तनके बिना लंबे समय तक एक ही काम करने रहनेसे भी मनुष्य उस काममें ऊब जाता है और उसके स्वास्थ्य पर ज्यादा बुरा असर पड़ता है। चीजके उत्पादनमें मशीनोंका उपयोग जैसे जैसे बढ़ता जाता है वैसे वैसे अधिकांश मजदूरोंका एक ही तरहका काम लगातार और लम्बे समय तक करना पड़ता है। कारखानोंमें मशीन पर काम करनेवालेको सारे दिन अमुक ढंगसे मशीन चलाते ही रहना पड़ता है या चलती मशीनमें बड़ा कुछ गड़बड़ पैदा न हो जाय इसकी सावधानी रखते हुए खड़े रहना पड़ता है। इसमें उसे कोई विराम कुशलता काममें नहीं लेनी पड़ती विचार नहीं करना होता और न काममें कोई परिवर्तन कराया जाता है। इसके विपरीत हाथके औजारोंसे काम करनेवाले कारीगरको अपनी कुशलताका उपयोग करनेकी काफी गुंजाइश रहती है। इसके सिवा चीजकी बनावटमें आरंभसे अंत तककी सारी क्रियाएँ उसीको करनी होती हैं इसलिए उसकी सारी योजना उसीको बनानी पड़ती है। अलग अलग क्रियाएँ करनेमें उसके काममें परिवर्तन भी होता रहता है और अंतमें तैयार हुई चीजके रूपमें उसे अपना श्रम और कुशलताका फल देखनेका सतोप और आनंद भी मिलता है।

७ कारखाने या मशीनरीके काममें भी एककी एक बातकी नोंध करते रहना और काम होने पर उसके आय-व्ययका हिसाब मिला देना पड़ता है।

इसमें मनुष्य ऊँच जाता है और उसके स्वास्थ्य पर ज्यादा बुरा असर होना है। काम जब एक ही प्रकारका होता है तब मनुष्यके एक ही अंगका या एक ही प्रकारकी शक्तियों अर्थात् काम मिळता है और दूसरे अंगको तथा दूसरी शक्तियोंको निष्क्रिय रहना पड़ता है। एक आर जिस अंग या शक्ति पर अधिक श्रम पड़ता है उसकी अधिक घिसाई होनेसे उसे हानि पहुँचती है तो दूसरी ओर दूसरे अंग और शक्तियोंके निष्क्रिय रहनेसे उन्हें हानि पहुँचती है। इस तरह किसी भी मनुष्यके सार दिन लगातार एक ही काम करना पड़े तो उसमें हानि पहुँचती है और उसमें बुरा असर भी जाता है।

८ मनुष्यके सब अंगों और शक्तियोंको पूरा काम मिले — अर्थात् तितना आवश्यक है उसमें न तो कम और न ज्यादा — तो मनुष्यके स्वास्थ्यको कमसे कम हानि पहुँच और कुछ मिलाकर काम भी अधिक हो। एक श्रमका काम भी जब तब थकावट न आ जाय तब तब ठीक समय करना अच्छा लगता है। इसलिए ठीके समयमें बड़े परिश्रमका काम हो फिर हल्का परन्तु धरके बाहर सुनेमें करनेका काम हो फिर छायामें बैठकर करनेका काम हो अथवा समय अपन शक्ति ही कोई विशेष काम हो, अथवा समय समाजके अंगके साथ रहकर बिनाना हो एक समय नया ज्ञान प्राप्त करनेके लिए हो दूसरा समय खलकू या बाना बिनाका हो — इस तरह सार दिनके कामका ऐसा विभाजन हो कि उनमें थकान और बुद्धिको तितना चाहिये उतना ही श्रम करना पड़े और जरूरी आराम भी मिल जाय तो अधिकसे अधिक काम से अधिकसे अधिक सुविधा मिले मनुष्यका अधिकसे अधिक विकास हो और व्यक्ति तथा समाज दोनोंका सुख-संतोष भी अधिकसे अधिक मिले।

इसका अर्थ यह हुआ कि मनुष्यका सारा श्रम-योग्य समय उसी शक्ति आवश्यकतायें पूरी करनेमें नहीं बीतना चाहिये। उसे पुरमत्त मिलनी चाहिये और आवश्यकतासे अधिक उत्पादन होना चाहिये — अर्थात् उसका परिश्रम शक्ति बचना चाहिये।

उत्पादक और अनुत्पादक श्रम

१ अथाश्रम उत्पादक श्रम और अनुत्पादक श्रम ऐसे श्रमके दो भेद किये जाते हैं। जिस श्रमके फलस्वरूप किसी भी नई वस्तुका उत्पादन हो वही उत्पादक श्रम है ऐसा मान कर प्राचीन अथाश्रम केवल खेतीको ही उत्पादक श्रम मानते थे। किसान जमीनको साफ करके और जोतकर उसमें एक दाना बोता है और जनक दान उत्पन्न करता है इसलिए उसका ही श्रम सच्चा उत्पादक श्रम है। आगे चलकर किसानके साथ पशुपालकका श्रम भी उत्पादक माना जाना लगा। परन्तु जलाहे मुतार गृहार आदि लोग यद्यपि अन्न अलग वस्तुएँ तयार करते हैं फिर भी वे मूल वस्तुका जनक बनलानका ही काम करते हैं किसान या पशुपालककी तरह वे एक वस्तुसे अनेक वस्तुएँ नहीं बना सकते इसलिए उन लोगका श्रम उत्पादक नहीं माना जाता था। परन्तु इस वारमें ज्या ज्या गहरा विचार होता गया त्या त्या समयमें आता गया कि मूत्र वस्तु जिस कच्चे रूपमें होती है उस पर श्रम करके ये लोग मनुष्यके उपयोगमें आन लायक विभिन्न रूप उभे न दें तो मूत्र वस्तु अधिकतर बकार ही पडी रहे। इन लोगके श्रमसे ही मनुष्यकी अमुक आवश्यकतायें पूरी होनी हैं और उसे सुख मुविधा मिलती है इसलिए उनका श्रम भी उत्पादक श्रम माना जाना चाहिये। वस तो हम यह मानते हैं कि किसान एक दानमें से अनेक दान उत्पन्न करता है लेकिन उसे भी बीज बो देनेके बाद तो धूप और बरसात पर ही आधार रखना पडता है। इसके सिवा वैज्ञानिक दृष्टिस दृष्टि से एक कणमें से जो अनेक कण उत्पन्न होते हैं वे हवा पानी धूप जमीनका कस आदि पदार्थोंके भीतर रहे अनेक तत्वोंका ही रूपांतर होकर अनेक कण बनते हैं। इस तरह विचार करते करते अथाश्रमी यहां तक पहुंचे कि जिस श्रमके परिणामस्वरूप कोई भी स्थल या द्रव्य पदार्थ उत्पन्न हो और वह मनुष्यके लिए उपयोगी हो उस श्रमको उत्पादक श्रम मानना चाहिये। इस तरह किसानके साथ कपास जाटमवाक हई पीजनवाके पूनिया कातनवाक सूतका कपडा बननवाके पेक काटनवाले लकडी चीरनवाके मुतार गृहार आदि सब लोग उत्पादक श्रम करनेवाले मान गये। फिर यह विचार उत्पन्न हुआ कि खेतमें पक हुए जनाजको सिर पर रखकर गाडीमें भरकर

या दूसरे साधना द्वारा जिन्हें उमका जरूरत हो उन लोगोंके घर तक पहुंचानवाला श्रमको क्या समझा जाय? वेड कर्मके बाद उसका लंबी सुतारक यहा पहुंचे तभी ता वह उस टाल कर चीर कर और काटकर उससे अलग चीजें बनाता है। और तयार हुई चीजको स्वयं बनाने वाला या दूसरा जल्दी उमका उपयोग करनेवाला घर पहुंचाना है तभी ता वे उपयोगमें आती है। इस तरह जैसे अधिभक्त कच्चा माल उसका रूपांतर होने पर उपयोगमें आन गायन बनता है वस हा कच्चे या तयार मालको एक गहने दूसरी जगह जहा उसकी आवश्यकता हो वहा ल जाने पर अर्थात् उसका स्थानान्तर हान पर ही वह उपयोगमें आता है। इस तरह आजका स्थानान्तर न किया जाय ता अनागतनमें पडा पडा सड जाय। मान लीजिय कि कुछ वस्तुआका उपयोग वही होता है जहा व पकती है तो भी आवश्यकतामें अधिक वस्तुएं तो बनार ही पडी रहगी न? इसी तरह जो वस्तुएं जिस स्थान पर न बनती हा उन स्थान पर व दूसरे स्थानस लाई न जाय तो वहाके लागोरो वे उपयोगके लिए मित्रे ही नहीं। इस तरह यह बात आसानीस समयमें आ सकती है कि स्थानान्तर करनेवालोंका श्रम भी आवश्यक और उपयोगी है। इसलिए अथॉगस्त्रियान उसे भी उत्पादक श्रमम स्थान लिया। भाष विज्ञानी आदि भौतिक शक्तियाको मनुष्यके उपयोगमें लानेकी सोच हुई और उनके कारण माल बनानेके व बड कारखान खडे हुए। इसम दुनियाकी अर्थ-व्यवस्थाभ भारी घाति हुई। परन्तु उस शक्तिके उपयोगसे रेज जहाज माटर आदि वाहनाका जो व्यवस्था हुई उसन और सत्तै भजनके लिए तार टलाकान और बतारके तारकी जो सोज हुई उमा इन कारखानामे भी शक्ति बडी घाति का है। आज दुनियाम देश और कालका अंतर कोई घराबट नहीं डालता और हर किमी लंगे लोग अलग अलग देशाम तयार हुआ माल उपयोगमें लत पाय पाते है तथा अलग अलग देशाके लागने साथ धान करते दख गाने है। परन्तु इन साधनाका लाभ थो ही गण उठा सकने है। और देगके कोने कोनेसे धन-मपति गिच कर व गहरोम इन थोडस लोगाके हाथमें इकट्ठी होने लगी है। कुछ चीज ता एक स्थानमे दूसरे स्थान पर व्यय ही नै जाइ जाना है। इसलिए यह एक माघने जमा प्रश्न है कि कुल मिलाकर सारी मनुष्य जाति इन सुविधाओंमें मुची हुई है या नहा।

२. स्थानान्तर करनेका यानी यातायातकी व्यवस्था करनेवाला काम उत्पादन श्रमम मान लिया जाय, ता उसके साथ ही व्यापार और दुकानदारी

करनवालाक कामका प्रश्न पदा होता है। ठेठ प्राथमिक अवस्थामें छाट छोटे समाज अपनी आवश्यकताकी सारी वस्तुएँ स्वयं ही तयार कर लेंगे थ स्वयं ही दुबानगरा जोर व्यापारियाकी जरूरत नहीं पड़ती थी। किन्तु आज ता गायद ही कोई ऐसा समाज हागा जहा दुबानदार या व्यापारीक बिना काम चल सके। किता गात्र या किसी प्रान्तमें कौन कौनसा मात्र कितनी मात्रामें चाहिये इसका जमाज लगाकर उतना माल व्यापारी वहा मगानकी व्यवस्था करता है। यात्र मात्र मगानवात्र व्यापारी फुटकर दुबानगरको वह मात्र बचता है और उसके यहास मात्रा उपयोग करावाक ब्राह्म जत्र जरूरत हो तब और जितना जरूरा हो उतना मात्र खरीद लेंगे ह। यानापातके कामम बनी बडी तहाजी और रेठके कपनियासे केवर छोट समुद्री व्यापारा मोटरवाले गाडीवाक और उत्रा गघा तथा उत्रा पर मात्र गात्र जानवात्र बजारे वगरा बटुन गात्र उत्रा होने ह। इसा तरह व्यापारके काममें भी यात्र व्यापारी खुला दुबानगर मात्रकी खराद और बिना करनवाल बान्धिय दगात्र मालका रूपमा एक जगहस दूसरी जगह पहुचानकी व्यवस्था करनवात्री सराफी पेलिया और बक तथा मात्रका बीमा करनवाला बीमा कपनिया—सभी आ जाते ह। दुनियाके आजकलके अर्थ व्यवहारमें ये सब साधन और इत्र सब साधनाके सवालक बहुत बडा काम करत ह। इसलिए इनका थम भी उत्पादक थम माना गया है।

२ फिर यह प्रश्न उठा कि शिक्षक प्रोफेसरक व्यायाधीन वकात्र और डाक्टर जादि लोग जो थम करतें ह उत्रे उत्पादक थम माना जाय या नहीं? वे अपन धधाको सस्कार-पोषण धध (Liberal Profession) कहत ह। और उनका यह दावा है कि अपन काय तथा कुशलतासे वे समाजके लिए इतन उपयोगी बन जाते ह कि उनक बिना समाजका सस्कारोका पोषण नहीं मित्र सकना और समाजका तन भी अच्छी तरह नहीं चल सकता। यद्यपि ये लोग कोई माल नहा बनाते और न प्राहकक घर मात्रा पहुचानका काम ही करतें ह किन्तु उनका यह दावा है कि उनका सवाआने समाजके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्यकी रक्षा होनी है। शिक्षक कहते ह कि हम लगाकी शिक्षा देकर नीति परायण सम्कारी और काय कुशल बनात ह। न्सी कारणम आपका अर्थ-व्यवहार सरलता और कुशलताके साथ चलता है। इसके सिवा विद्या पढकर होगियार बन हुए लोग उत्पादनके माधनामें मुत्रार कर सकते ह और नये नये साधन भी बना सकते ह। इसलिए यद्यपि हम मात्र पदा करनका सीधा काम नहीं करतें तो भी हमारी सेवासे समाजकी

संपत्तिम वद्धि हानी है। वकील और यायाधीन कहने है कि मनुष्य मनुष्यके बीचके व्यवहारमें पदा होनवाले जगत् नियमानेका काम हम करते हैं इसीलिए समाजम लड़ाई और टटा फसाट रखते हैं। धर्मापदेशक कहते हैं कि हम उपदेश देकर लोगको नीतिसे माग पर निकाये रखते हैं इसीलिए समाजका व्यवहार गतिमें चलता है। डाक्टर कहते हैं कि लागाक स्वास्थ्यकी रक्षामें हम मत्त करते हैं इससे गंग अपना काम क्या अच्छा तरहम कर सकत है और मुखी रहत है। इसी प्रकार साहित्य मगात और कथाकी सामग्री देनका प्रति साहित्यकार साहित्य नतक नट चित्रकार और गिल्पो सब कोई कहत है कि हमारा श्रम भी उत्पादक माना जाना चाहिये। कारण हृद्यमें ऊचे भावाके उदीपनस जो गुड और सम्बारी जाद मिश्रता है उसस मानव जीवन समृद्ध हाना है और समाजम सुखकी माया बन्ता है। इसी तरह पुलिस फौज और दूसरे विभागम काम करनवाले सरकारी नौकर यह दावा करते हैं कि हमारे श्रमसे बिना लागाक जान भाटकी गन्गमनी नहा रहे सकता किसी प्रकारकी सुखवस्था नहा रहे सकता और समाजमें अशांति फट जायगी। जिस हद तक इन सब धंधागरे गंगाका और सरकारी नौकराग दावा सच्चा है और जिस हद तक वे सच्चाईके साथ अपना काम रखते हैं उस हद तक उनके श्रमका अवश्य उत्पादक श्रम मानना चाहिये। क्योंकि समाजकी मुख्यवस्था गंगाका आरोम्य और समृद्धि नीति नियमोका पानन यायका व्यवस्था साहित्य और गिष्ठाके द्वारा ज्ञान और सम्कारिताकी अभिवद्धि तथा मनुष्यकी समूची गतिविका विकास — य मर वानें खात-पीत और पहनत ओपनके साधना जितनी ही समाजके लिए जरूरी है। और जम मनुष्यके लिए उपयोगी स्वरूप पदार्थोंको हम जय या संपत्ति मानते हैं वस ही मनुष्यके लिए उपयोगी इन संवाओंका भी जय या संपत्ति मानना चाहिये।

४ अत्र रहा धर्या काम करनेवाके नौकरोका का। इन गोगाने श्रमको उत्पादक श्रम माननेके विषयमें जग मन्तव्य है। यह ता मयझमें था सक्ता है कि का मनुष्य अपना ही बीमार हा और कमजोर हो तब उसका यत्नियत और धरका काम दूसरा काद करे। या कोई मनुष्य दूसरे कामामें लतना अतिर फसा रहना हा कि उसके पास धरके काम करनका समय ही न बचना हा और वह अपना माग नमय अधिक महत्त्वक और लाकापयोगी धार्योंम लगाता हा तब उसके यत्नियत काय उमरु माया प्रमने कर दें य भी समया जा सक्ता है। एम मनुष्याका

काम कर देनवाये मनुष्योंके कामके लिए समाजका श्रम-व्यवस्थामें स्थान है। परन्तु जो लोग अमीरीका बडप्पन दिखानके लिए या अपन आलस्यको बढानके लिए ही अपन कामका भार दूसरा पर डालत ह वे ता समाजकी अथ-यवस्थाका जीर समानताका भागनाको हानि हा पहुचाने ह। एस दृष्टिस-यक्तिगत और घर-काम करनवाए नौकराक श्रमकी जाच करें तो एसे नौकर बहुत थोड निकलग जिनका श्रम उत्पादकका प्रेणामें आ सके। इसलिए समाजम एसे नौकर घाकराकी सख्या जितनी कम हो उतना ही अच्छा है।

५ ऊपरव विवचनसे उत्पादनका सारी त्रियाजाका वर्गीकरण एस तरह किया जा सकता ह

(१) कृषि कृष = साचना। जमीनमें स सपत्ति खीच कर बाहर आनवाए घघ। इनमें खतीने अलावा जग-ज और खानाम से सत्र तरहका कच्चा माल उत्पन्न करनके काय आ जाते ह।

(२) पशु-पालन दूध मास ऊन वाल चमडा चर्बी बाहन जीर सवारी वगैरक लिए पशु पालनका काय। मच्छीमारीको भी हम इन्मीमें शामिल करग।

(३) उद्योग घघे कच्चे मात्रा रूप बदलकर उसम से तरह तरहका तयार माल बनानके काय।

(४) यातायात कच्चे जीर तयार मात्रा एक जगहसे दूसरी जगह पहुचानका काय।

(५) यापार थोक जीर फुटकर माल बचनकी दुकान आगत दलानी सराफी बक बीमा कंपनी आदि बधासे सबध रखनवाठे काय।

(६) सस्कार पोषक घघे धर्मोपदेशकके शिक्षकक यायकी व्यवस्था करनवाएके जीर रोगाको नीरोग रखनेवालाके काय। साहित्य मगीन चित्र कला मूर्ति निर्माण-कला और गिल्प आदि रचनात्मक कलासे सबध रखन वाले कार्योंको भी एसी विभागम रखना चाहिय।

(७) राज्य-व्यवस्था सरकारी नौकराक और म्यनिसिपलिटिया तथा लावल बोर्डोंके नौकराके तथा पुलिस जीर फीजके काय।

(८) घरका काम नौकर चाकराक काय।

६ व्यायाम या कसरत खान्कूई पहानाम घूमना समुद्रका सफर करना वगैर कार्योंको किस ढरमें गिनग? एस काय करनवालाका शरीर नीरोग रहता है दल बनता ह जीर उन्ह जानद भा मिलना है। परन्तु

ये काम केवल उम्र व्यक्तिको ही मिलते हैं। इन कामको सामाजिक नहीं कह सकते। इसलिए व्यक्ति विशेषका लाभ पहुंचानेवाला होने पर भी ये काम उत्पादक कार्योंमें नहीं गिने जा सकते। फिर भी उस कामके उद्देश्यके बारेमें विवेक तो करना ही पड़ता है। अगर कोई मनुष्य भूगोल अथवा इतिहासके बारेमें खोज करनेके लिए पहाड़ोंमें भटकता हो सम्पदको खोज करता हो अथवा जल्य बल्य दगाके रास्ते रिजाज बगरा जानकर उनसे जगाका पान बढ़ास तरह यात्रा बणन लिबनेके लिए यात्रा करता हो तो उसका काम उत्पादक ही समझा है। जो मनुष्य नाययात्राके लिए शौकर लिए या स्वास्थ्य गुधारनके लिए पहाड़ोंमें घमता हो उसका काम अनुत्पादक ही समझा है परन्तु जो मजदूर उसका सामान उठाकर चलाता हो उसका काम ऐसे मनुष्यकी आवश्यकताय पूरी करता है, इसलिए वह उत्पादक माना जाना चाहिये।

७ एक ही वस्तु अपन हनु और उपयोगका दृष्टिसे अथ या अनथकारी बनती है। यही बात श्रमकी भी है। आजकल सब वस्तुओं और कार्योंका मूल्य पथक गजसे मापा जाता है इसलिए यह खपाल फला हुआ है कि जिससे अथप्राप्ति हो वही श्रम उत्पादक है। परन्तु आजकल जो काम आर्थिक या उत्पादक कहलाते हैं उनका मूल्य मनुष्य जातिका सुख-सुविधा और उन्नतिके गजसे मापा जाय तो एमे बहुतम काम जिनसे धनप्राप्ति होता है और इसीलिए जा उत्पादक माने जाते हैं विस्तुल निरथक ही नहीं बल्कि सचमुच अनथ बननेवाले मालूम हंगे।

८ खेतीके धधमें तबाकू या अफीमका खनी करनेका या तानी निकालनके लिए मजूरके पेड लगानेका श्रम जरूर अनथकारा है। पणु-पालनमें साटमारीके लिए या गतों बदननेके लिए हाथी बाघ सिंह साड और घोडे पालनमें जो श्रम किया जाता है वह भा बेगव अनथकारी है।

९ आजके बने बडे कारखाना और यातायातके साधना तथा व्यापारके विपाल तथाका बहुत धडा भाग जनताका सुख नहा बगाना बन्कि दुःख पना करता है। जय बहतेरे गोग कपडेके मिना ठासे ठिठुरते हा तब चारोन और बन्डूटेनार कपडे तयार करनेम बहुतम लोगाका श्रम बच हा तो उममें निश्चिन रूपमें श्रमता बुरुपयाग है। कई दिना तब आलसी और बेकार पने रहना कारण ऊर जानबाले लोग अपनी उकताहट दूर करनेके लिए ऐग आराम और भाग बिश्रमकी सुविधाआवानी रलपाडिया जहाजा मा विमानामें यात्रा करन निकले और इन लोगाकी यात्राकी सुविधाके लिए

सकड़ा हज़ारों आदमियों का श्रम खर्च हो तो वह लास मनुष्यों की जीवनकी आवश्यकताओंकी पूर्तानी करके ही खर्च होता है। उद्योग धंधा और व्यापारकी कितनी ही व्यवस्था आज ऐसी हो रही है जिसमें अपार श्रम व्यर्थ खर्च होता है। उदाहरणके लिए हमारे देशमें जितनी चाहिये उतनी रईय पत्नी होती है और हमारे देशको जितना चाहिये उतना कपड़ा बना पनका कुशाग्रता भी हमारे श्रमोंमें है फिर भी हमारे देशसे जापान और विदेशोंको रईय भजा जाती थी और वहाँ कारखानोंमें उसका कपड़ा बनकर यहाँ आता था। इसमें रईयों गाँवों बाधन उह रेल और जहाजसे विदेश ल जान रहा फिर गाँवों लोलेन और ल जाते समय उसमें जो कचरा भर जाता है उसे साफ करन और उसका कपड़ा बननन बाँध फिर उसकी गाँवों बाधकर रेल और जहाजके जरिये हमारे देशमें वह कपड़ा लान आन्विका सारा श्रम व्यर्थ होता था। इसने सिवा ग्राहकोंकी जरूरतका माल मुहैया करनके लिए जो व्यापार जरूरी हो वह तो ठीक है लेकिन जिन सदृशमें माँका कोई ऐन ऐन न होता हो और जनक युक्तियाँ द्वारा कृत्रिम ढंगसे भावकी घटा-बनी पदा करके उसके फक्का ही ऐन पन होता हा ऐसी सदृशवाजी निक्कमी ही है। इतना ही नहा बल्कि इमानदारीमें हानवाले व्यापारमें वह हस्तक्षेप करती है। झूठ और लज्जानवाले विनापना द्वारा लोगोंके लिए लगभग अनावश्यक या हानिकारक वस्तुओंका प्रचार किया जाता है। यह काम भी समाजको नुकसान पहुँचानवाला होनके कारण अनर्थकारी है।

१० इसी तरह धर्मके नाम पर जनतामें अधविश्वास और दुराचार फैलानवाले साधु संन्यासी और भगत जातिके आलस्यम जीवन वितानवाठ और अपनको योगी, यती या बरागी कहनवाले बाबा फकीर आदिके तथा भविष्य वतानवा डोग रचनवाले ज्योतिषा धर्मशास्त्रके नाम पर लोगोस रुपया लेकर उडानवाले महन्त तथा अपनको धर्मगुरु या धर्मोपदेष्टाक कहनवाठ बहुतस ढागी मनुष्योंके काम न केवल निरर्थक ह बल्कि समाजके लिए हानिकारक भी ह। 'यायकी व्यवस्था' काममें भी घुसे हुए खर्च करानेवाले दंगल खटपटी और विघ्नसतोपी लाग समाजका हानि हा पहुँचात ह। डाक्टरोंमें भी नीमहकामो और लोगोंके शरीरोंका नि सत्व बना दनवाणी मादक दवायें खिलानवालाका काम समाजके लिए हानिकारक ही है।

११ सरकारी महकमोंके नौकरो और पुलिस तथा फौजके आदमियोंके कामके बारेमें भी हमें विवेक करना ही चाहिये। जिस हद तक इनके कामसे

मारी जनताकी मच्चा भगाइ होती हो उस हद तक हाँ वे काम समाजके लिए उपयोगी ह। उनमें भी जब सत्ताकी हाँट चलनी ह पभावका दुर प्रयोग हाता है और रक्षणके बजाय शोषण भक्षण होता है तब उनके वे काय जनयकारी ही बन जाते ह।

१० जो सजनात्मक रखाए बहुराती ह उनमें भी अपार दम और अनय चल रहा है। सच्चे साहित्यकार और कलाकार थोड़े ही होते ह और नामधारा बहुत होते ह। मनुष्यकी हीन बर्तियाका उभाड़नेवाली पुस्तक, गीत धिन मूर्तिया आदि रचनेवालाका काम तो समाजको उलटे और अनीतिके भाग पर ही ले जाता है। घरका काम करनेवाले नीकराके बारेमें तो हम विचार कर ही चुके ह। उस बारेमें दो मत ह ही नहीं कि चार डाकू प्रन्माण गुडे भिखारी, इन सबके काम हानिकारक ह। लेकिन ऐसे अथगास्त्री भी मौजूद ह जो गराबकी दुकानों बेदखलाया और जुआधरोकी जिहें अपना धधा करनेके लिए सरकारकी तरफस परवाने मिलत ह चलानेके कामका भी उत्पादक श्रम मानते ह। इन लोगका तब एक हाँ है कि यह विचार कराया अथगास्त्रका काम नहा कि मनुष्यकी आवश्यकतायें जयवा कामकाय उचित ह या अनुचित। जिन चीजोंकी योगामें भाग हो वे चाज मुहैया करनेवालाका श्रम उत्पादक माना जायगा। परन्तु यह विचार गलत है क्याकि ऐसे लोगका काम समाजको नुकसान ही पहुंचाता है और जिस समाजमें ऐसे लोगको अपना काम करनेके परवाने मिलत ह वह समाज नीतिकी दृष्टिसे ही नहीं बल्कि आर्थिक दृष्टिमें भी नाचे गिरता है।

११ शुद्ध आर्थिक दृष्टिसे विचार करने पर जिनक श्रमसे मानवका सुख सनाप और प्रगति सिद्ध हो उहीके श्रमको उत्पादक श्रम मानना चाहिये और उन्हींको अपन श्रमके अनुपातमें उचित पारिश्रमिक मिलना चाहिये। उनके सिवा दूसरे लोगकी कमाई गलत रास्तेस की हुई कमाई ही बहुरायेगी। फिर भी इस कमीटीमें जा उत्पादक श्रम करनेवालाकी गिनतीमें नहीं आ सकने ऐसे अनेक लोग बहुत बड़ी कमाई करत पाये जाते ह। इसी कारणस समाजमें आर्थिक असमानता दुःख और लरिपना पदा हाती है।

१४ मनुष्यको उत्पादन शक्ति नीचेकी बातों पर आधार रगत है

(१) श्रमका काय श्रम प्रदानेमें बग परम्परागत कुशलताका महत्वपूर्ण भाग गना है। भिन्न भिन्न प्रकारकी कुशलता और गण मनुष्यको उत्तम धिकारमें मिलते ह। इनका अनुकूल काम मनुष्यका करनेके लिए मिलें तो उसकी शक्ति अधिक मिलती है और वह अधिक अच्छा काम कर

सकता है। एक हा वगमें पानवाग का विद्यार्थियों में स पहल कोई तानीम न भिन्न हा ता भी गुत्तरका लम्बा अधिक सरतास वसूग रदा या फरसा चाना सोस लेता है। यह सरका सामाय अतभव है। पतुक धधा वरनका महत्व भा इगा वारणस ह। और एसा उगता है कि इसीमें स वर्णाश्रमका कल्पनाका जम हुआ हागा। यही नियम सारे धये करनेवाग पर लागू हाता ह।

(२) मनुष्यके पान-पान आर आहार विहार पर भी उसका कुशलताका आधार रहता है। नि सत्व जयवा पापणहीन आहार खाकर मनुष्य अच्छा काम नही कर सकता। इसी तरह रातमें जागरण करनेवाले और गरमा लाग भा अच्छा काम नहा कर सगते। जिनका रहन-सहन अच्छा हाता है जो लोग स्वास्थ्यके नियमाका पालन करके जीवन विताते ह और जिह उचित खान-पान और निवास स्थानका सुविधा भित्तो है उनस अच्छ कामकी आगा रवा जा सकती है।

(३) भिन्न ऋतुए और भिन्न जन्वायु भा मनुष्यकी कायगक्ति पर असर डालते ह। हम सरदीकी ऋतुमें जितना काम कर सकते ह उतना गरमीकी ऋतुमें नही कर सकत। ठड देगके लोग जितना सतत गीर वडा काम कर सकते ह उतना गरम देगके लोग नही कर सकते। इसा प्रकार पहागमें रहनवाला जगगमें रहनेवाला रोगस्तानामें रहनवाला और मदानामें रहनवागकी कायगक्ति अलग अलग हीनो है। य ही लोग यदि एक दो पीडिया तक भिन्न भिन्न प्रकारके जलवायुवाले प्रदेशामें रहन जाय तो उनका कायगक्तिमें थोडा फर पड़ेगा उम्बे अरसे तज रह ता उनका कायगक्तिमें बहुत वडा फर हो जायगा।

(४) यत्रस्थित शिक्षण और तानीम भी मनुष्यकी कायगक्तिको बहुत बग देनी है। दुहारके उम्बेकी यत्रविद्याका व्यवस्थित पान मिले तो वह इस नानके जभावमें जितना काम कर सगता है उसस अधिक अच्छा इजोनियरी-काम अवश्य कर सकता है। प्रत्येक मनुष्यमें जातवगिक और अय प्रच्छन्न गक्तिया होती ह। उह उचित तानीम देकर विकसित क्रिया जाय तो वह अधिक अच्छा काम करने लगगा। इस दष्टिम गिणाका बहुत वडा महत्व है।

(५) मनुष्यकी नतिक भावना और उसकी आदता पर भा उसको कायक्षमताका आधार रहता है। मनुष्य अनियमित आल्सा और सुस्त हो तो वह जरूर अपना काम बिगाडगा। इमो प्रकार जो मनुष्य नेवरेवक विना

अच्छा काम नहीं करते पसंदा चीजों का हिसाब नहीं रखने वाला व्यक्ति विगड करन है तथा अपने लाभके लिए दूसरों का काम कराने करते हैं व भी कामका जरूर विगाडेंगे। इसलिए स्पष्ट और सुप्रसिद्ध आदत बिना यत्नारा और निश्चितता विनिश्चयता जोर प्रामाणिकता सामाजिक उत्तरदायित्वका भाव और सहयोगस काम करनेका कुशाहलता—य सत्र गुण और आदतें मनुष्यका वायक्ष्यताको बताते हैं।

(६) कामका वातावरण जयात बेतनका स्तर कामक धरे छुट्टीके नियम खानपीनका सुविधायें तथा साथी मजदूरों का जरूर करके अधिकारियाका व्यवहार भी मनुष्यक काम पर असर डालता है। साथियाके साथ मन न मित्रता हो ऊरों अधिकारी हलका और अपमानपूर्ण व्यवहार करते हैं कामके घट ज्यादा हो बहुत ठाड गदे और बिना हवा उजेंडे बाडे घरोमें रहना पता हो जान रोनेके लिए पूरा समय और सुविधायें न मिलना हों बोमारक समय छुट्टीका सुविधा न रना हा और पर्याप्त बतन न मिलता हो ता आदमी उमाहसे काम नहा कर सतना और उसका काम विगडगा।

(७) वायक्ष्यताका अतिम महत्त्वपूर्ण आधार मायनाको सुविधा पर रहता है। कामक मायन पर्याप्त न हा या व पुराने अथवा विगड हुए हा तो अथ सब प्रकारके गुणगुन और गविन-सम्पत्त होन पर भी मनुष्य अच्छी तरह काम नहीं कर सकता। सामान्य अनुभव यह है कि एक हा मजदूर पुराने लगे कारखानके बनिस्वत जयतन यदा और व्यवस्थावाडे कारखानेमें अधिक काम कर सकता है। ऐन विविध कारणोसे अलग अलग दगक लागाकी और एक ही देके अलग अलग मनुष्याकी वायगक्तिमें फरक पता है। एसा अनुमान लगाया गया है कि बिना भागतीपका अपना इन्कण्ड या अदरीकाया आन, २० स ३० गुना अधिक उत्पादन करता है।

पूजा

१ जमीन आदि कुत्तरती साधन-संपत्तिवे सिजा एसी गारी सम्पत्ति जिसका उपयोग दूसरी अधिक् संपत्ति उत्पन्न करनेमें होता है पूजा कहलाती है। आजका हम एसी उत्पन्न विगाठ सम्पत्तिका पूजाके रूपमें उपयोग करते हैं। जिस अनानका धीमर रूपमें दूसरा अनाज उत्पन्न करनेमें उपयोग किया जाय वह पूजा है। खतीका धधा करनेके लिए किसानने पास हट छाहा-लकडीने औजार गाडी बठ आदि जा साधन हाते ह व पूजा ह। सुतारके औजार और जगहेरा करधा उसवी पूजा ह। वर बारखानमें बारखानका मकान मगानें स्तस नयार मात्र बनानके लिए गरान हुआ बच्चा मात्र य सब पूजा ह। हमारे अधिक् सिजासने लान आदिबन्ध ही पूजाका अस्तित्व चला आ रहा है। उन समय उसका स्वरूप बिल्कुल सादा था और उसकी मात्रा भी बहुत थोड़ी थी। जादि बनवासी मनुष्यन लकाम पत्तर या चरुमक बाधकर गिकारके लिए जा कुहाण बनाय वह सब प्रथम पूजा थी। उस बनवासीन आहारके लिए जानवरोके पीठ दौंते रहनके बजाय अपना समय और शक्ति एसा चीजके निमाणमें लगाय जिन्हें वह स्वयं भीष काममें नहा सक्ता था परन्तु जिनके द्वारा वह अपन सीधे उपयोगकी दूसरी चीज प्राप्त करनेवाला था। अपन समय और शक्तिका उपयोग उसन पूजाका निर्माण करनेमें किया। यह काम उसन अपन फुरसतके समयमें किया हागा और इस कामके करनेमें जितन दिन लग हाग उतन दिनका भाजन उसन बकठ करव रख लिया होगा। आज जिन बहुतसी चीजाका हम पूजाके रूपमें उपयोग करते हैं वे भी इसी तरह पदा हुई हैं। उत्पन्न हुई चीजाका उसी समय उपयोग कर डालनके बजाय हम उनमें स जरूरतके शायक चीज खच करके बाकाको भविष्यके लिए बचाकर रख ल और फिर अपना समय और शक्ति हमारी सीधी आवश्यकतायें पूरी करनेवाली चीजाके उत्पादनमें लगानके बजाय वे चीजें अधिक मात्रामें उत्पन्न कर सकनवाय औजार मगान स्तस उहें रखनके मगान जादि बनानमें ग्याय तभी पूजाका निर्माण हाता है।

मान गीजिय हमें नदीके उस पार जाना है। हम कुछ वास इकठ करके बडा बनाते हैं और एक बडा रकण नदीमें तरता छाड कर उसे

पकड़ लते ह जोर बादमें उन बेडका पक् नहीं बन । क्या यह बहुत समय जबका उपभागमें विफायत करके उपन की हुई पूजा कहा जायगी ? इसी तरह काइ गिलाल बनाना है अबड़ीका लीवरक रूपम या कावक रूपम उपयोग करता है । ये सब औजार पूजा बना ह । परन्तु उनका उत्पादन क्या उसी उपयोगके लिए है ? क्या वह उपभागम त्वायो हुइ पूजासे गहा हुअ ह ? भले उस बनानका काम घुस्नके समयमें नहीं बिल्लु खाल समय बजर जोर एक समयका माना छाकर भी किया गया हो ।

२ पूजा गीरपसे (द्रव्य) के बीचना मद हमगा ध्यानम रबना चाहिय । जैसे सपत्ति और पसेको गलतीम एक समझ लिया जाता ह उस ही पूजा और पसको भी गलतीस एक मान लिया जाता है । सामान्य परिस्थितिधामें पसेसे जावश्यकताकी चीज खरीनी जा सकती है इसलिए जमे पसेको सम्पत्ति कहा जाना है बसे ही पसा हो तो बड कारखाने कचे किय गा सक्त ह इसलिए पसको पूजा कहा जाता है । घनी आत्मोको पूजापति भी करा जाता है । परन्तु वास्तवम जैसे सम्पत्ति और पसा गलत चीज है वसे ही पूजा गीर पसा ना अग्य चीज है । पसा ता सम्पत्ति और पूजाका केवल प्रतीक मान ह । हमरे महायुद्धके कारण जो असाधारण परिस्थितिया पदा हुई ह उनमें यह भेद स्पष्ट दिखाइ देता है । यह बात सब समझ गय ह कि बगात्ममें जनाजकी तगोवे जो भुषमरी फल रही था वह बवल पसेमे ही मिटनवागी नही थी वह तो जनाजसे ही मिट सकती थी । इस प्रकार मनुष्यके पास कितना ही पसा क्यो न हो फिर भी यदि नया कारखाना खन करनक लिए जा चीज चाहिय वे बाजारम न मिल सपनी हा तो नया कारखाना खन हो ही नही सक्ता । इस प्रकार पसा गरी बन्नि नये कारखानाके लिए जरूर चीजें ही वास्तवमें पूजा ह । फिर पमसे जब आप रोजक उपयोगकी चीजें खरीदते ह तब उसका उपयोग पूजाके रूपम नही होना परन्तु तब यह पसा उपयोगके साधन खरीदनम सब हाना है तभी उसका पूजाक रूपम उपयोग हाना है ।

३ काइ बस्तु पूजा है या नहा इसका आधार इन बात पर है कि बट किस उपयोगमें आती है और उस उपयोगन पीछ हनु क्या है । कोई मनुष्य भविष्य उपयोगके लिए पानेकी चीजें या पसा या साना बचाय परन्तु उन गान कर ही सन और फिर आवश्यकता खडी होन पर बेवल अपन ध्यनिगत उपयोगके लिए ही उसे खच करे ता बट पूजा नहा हो सक्ता । किना मकानका यदि बट अपन रहनग लिए उपयोग करे ता वह पूजा नही है परन्तु वह भवान

कारखानके उपयोगमें आये पुस्तकालयक उपयोगमें आय या प्रयोगशालाक उपयोगमें आय ता वह पूजी हो जाता है। अपनी सवारीका उपयोग गीकक लिए घूमनमें किया जाय तो वह पूजी नहा होनी अकिन उमे किराय-पर चगाया नाय या उत्पादनके काममें उगना उपयोग किया जाय ता वह पूजा हा जाती है।

पूजीकी वद्धि

४ अब हम यह देखेंगे कि पूजी कमे वत्ती है। 'यय और आयक फकसे होनवाली वचत पूजीका मूल कारण है। व्ययसे आय अधिक हो तो ही वचत हो सकती है। आधिक दृष्टिसे जो पैग आग बड हुए समन जाते ह जसे इंग्लण्ड और अमरीका वहा 'यय और आयक बीच बहुत बडा फक है। इसलिए वहा पूजी वत्ती ही जानी है। लेकिन हमारे देगमें जहा हर मनुष्यकी वार्षिक औसत आय पहले ६० से ६५ रुपय मानी जाती थी और आज करीब ३०० मानी जानी है इतनी गायम जावन निर्वाह ही बडी कठिनाईस हाना है अयवा नही हो पाता। तब वचनकी तो बात ही क्या की जाय? इसके अलावा इस औमत आयमें तो एम धनी भी आ जाते ह जिनकी आय हजारो और लासा रुपय होती है। इसलिए ये थोडसे धनी गग और ऊपरी मध्यम बगके लोग ही वचत कर सकने ह। लेकिन वह वचत आम जनताका हानि पढुचाकर होती है। बहुत बड जनसमुदायके लिए तो वचन करनका प्रश्न ही पदा नही हाता। वे तो उलट दिनान्ति कजमें डूवते जाते ह। सच्चा नियम तो यह है कि जिस देगमें कुम्हता साधन सपत्ति अधिक हा और जहाके लागाको उसका अच्छी तरह उपयोग करना आता हो उस देगमें पूजी वत्ती है। अमरीकाम यह नियम भलीभाति काम करता दिखाई देता है। वह देग विगाल है और साधन-सपत्तिवाला है। इसकी तुलनामें जनसख्या वहा कम है।^१ और यह थोडी जनसख्या कुदरती साधन-सपत्तिकी पूरा-पूरा उपयोग करनम कुगाल है। इसलिए वह सवने बडी आयवाला देग बन गया ^२। परतु इंग्लण्ड कोई विमुल कुम्हती साधन सपत्तिवाला देग नहा है फिर भी वह बडी आयका मालिक है। यह हमारे और हमारे जसे दूसरे देगाके गोपणसे ही सभव हुआ है। हमारे देगमें कुदरती साधन-सपत्ति विपुत्र मात्रामें होते हुए भी और लोगाके बुद्धिमान

१ यूनाइटेड स्टेट्सका विस्तार हमारे देगम लगभग अगई गुना है और जनसख्या हमारे देगकी जनसख्याकी एक तिहाई है।

और कुशल होते हुए भी ंड सी वषसे अधिक समयमे होने आये शोषणक कारण हमारा दश आज गरीब है और उसके पास आवश्यक पूजा नहा है।

५ आय और षयके पक्के सिवा पूजा बढ़ाके जो दूसर सामान्य कारण अयोग्यता बनाते ह ंनका हम यहा उल्लेख करण

(१) जनतामें भविष्यता विचार करके भविष्यके लिए वचाकर रखनेकी आज्ञा हानी चाहिये। कुटुम्ब प्रमके कारण मनुष्य अपने बालबच्चाके लिए किरायात करके बचत करनेका प्रयत्न करता ह। इसक सिवा जिसे बडा व्यापार घडा चलानेकी महत्त्वाकांक्षा होती है वह भा उसके लिए जरुरा पूजा इकठ्ठी करनका प्रयत्न करता है।

(२) इस प्रकार बचत करके रखनेकी वृत्तिवा भी प्रोत्साहन तभी मिलता है जब देगम गोगोक जान मात्की सलामती हाती है और राज्यतथ गोगाकी मलाइक लिए सुव्यवस्थित रूपम चलता है।

(३) इसके अतिरिक्त जो बचत की जाय उन इस तरह धधमें लगानकी मुविधा हा नि उस पर किसी तरहकी आच न आय तो हा वह बचत पूजाके रूपमें काम आती है। बहुत हा उची सागवाली प्रतिष्ठित सराफा पदिया बका बीमा कपनियो लिमिटेड कपनियो, सहकारी समितिया और प्राविडण्ट फण्डोंमें बचत लगाई जाय तो उसका उपयोग पूजाके रूपमें हा सकता है। वचा बचाकर लाग भविष्यके उपयोगक लिए बवल गाडकर ही रखें तो वह बचत पूजाके रूपम निती समकी नही रहती।

(४) बचतका इस तरह लगानके लिए याजकी दर काफी उलचानवाली होनी चाहिये। कुछ लोग ऐसी दलील दत ह कि याजकी दर नीचा हानी है तब लोगोका अधिक बचत करनी पडता है क्यकि बहुत गोगाकी यह इच्छा हानी है कि अमुक बचन करक उमके याजकी आय निश्चित कर लनी चाहिये जिसस ब्यापम बठ वठे निर्वाह हा सके या पीछे रहनेवालाको

१ यह सारा विचार बर्षा तक पूजाका दृष्टिसे ही किया गया है। साव जनिक पूजाकी दष्टिम पूजाका अथ हागा कुदरतना भडार और षक्तिया तथा प्रजाकी प्रामाणिकता परिश्रमशीलता चान और सयम विषयक साव। ंनकी वृद्धि ही पूजाका बद्धि मानी जायगी। व्याज केवल द्रषस सप्रध रखनवाली पूजाका अग है। सच कहा जाय तो याज सच्ची पूजा पर ंव बोध ह। इसीलिए व्याजकी दर जितनी अधिक हागे उतना ही द्राष्टिय और विषम बढवारा अधिक होगा।

कोई कठिनाई न हो। यदि याजकी दर नीची हो तो एग लोगको अधिन वचन करनी पडती है कयाकि एग करनम ही ता उनकी सानी हुई आय निश्चित हो सकती है। इस तरह याजकी गिरी रर पूती बगानका कारण बनती है। परन्तु सा बानाको दगन हए यह दली टिक नहा गती। अधिकतर तो याजकी दर अधिन हान पर ही बाजारम पमा खिचनर जा सस्ता है। याजका दरके सिवा ग्याय हए पमकी गुरगितता भी पमके बाजारमें खिचनर बानका एक कारण बनती है।

६ अब पूजीके विविध स्वरूपा और उसके नियोजनके आधार पर हम उसका वर्गीकरण करग।

स्वरूपके आधार पर

(१) कुदरती पूजी जमान जगल सान गउ प्रपात आनि।

(२) मनष्य द्वारा उत्पन्न को हुई पूजी कारखानक मकान मगोन रल्लव लाने जहाज आदि।

स्वामित्वके आधार पर

(३) बयपिताक स्वामित्वकी पूजी िम पर कुछ चकियोका स्वामित्व अधिकार हो यह पूजा। हमार दगमें सनाम मिगामें कारखानामें बकामें और वाणिज्य यापारमें गगी हुई पूजी इस प्रकारकी है।

(४) सावानिक या सामाजिक स्वामित्वकी पूजी जिस पर एक या अधिक ब्यक्तियाका स्वामित्व अधिकार न हो परन्तु जो सामाजिक सस्याओ या सरकारके अधिकारम हो और जिसका उपयोग सारे समाजकी भलाई लिए किया जाता हो वह पूजी। लोकल बोडकी धमगालाए कुए सडकें म्युनिसिपलिटिके बानर बम विजगी घर बाग वगीके सरकारी रेलें सडक सार डाक विभाग नहर आदि सावजनिक पूजीके उगाहरण ह।

नियोजनके आधार पर

(५) घउ पूजी उत्पादने काममें एक बार ग्यान पर सतम हो जाय एसी पूजी। उदाहरणक लिए कपडका बनावटम रू खतीमें बीज और ग्याद। इसके सिवा कोयग सेक और पेटो भी एसी ही पूजी ह। मजदूरका मजदूरी चवानमें काम जानवान पसा भी इसी तरहकी पूजी है। इन चउ पूजीका नाम इसलिये दिया गया है कि कच्चे माल पर मजदूर मेहनत करक सयार माल बनात ह वह माल जब बिकता है ता यह पूजी वापस लौटती है और फिरस ऊपर बताया ग सब काममें उसका उपयोग

पूजा

बिया जाता है। प्रत्येक उद्योग या धना चलानेके लिए थोड़ी या अधिक मात्रामें इस तरहकी चल पूजीकी जरूरत पडती है। किमान जय खेती गुरु करता है तब उस खाद चाखिये बोनने लिए मीज चाहिये और निराइ कटाइ बगराव काम करनवागे मजदूरका राजा चुकानेके लिए पसा चाहिये। इन सब कामाम उस कुछ पूजी लगानी ही पडती है। यह पसा खतमें पदा हुए मात्रके मिक्ने पर फिर उमके हाथमें जाता है। व्यापारीको दुकानका भाग देनेके लिए गुमास्ताका वनन चुकानेके लिए और दुकानमें विक्रीका मात्र मग्न करके रखनके लिए जो पूजा चाहिय वह जसे जम मात्र मिश्रता जाता है वम वम वापम आनी जाता है।

(६) अचल पूजी जो जे समय तर टिक सके वह अचल अववा स्थिर पूजी कहलाती है। इसमें बार बार द्रव्य नहा लगाना पडता बल्कि एक बार इच्छा ही लगाना पडता है। कारखानके मकान और मीनीं अचल पूजा कह जायग। विमानका हल गेहे-लकडोके दूसर बीजार और एक हद तक बल भी अचल पूजी ह। रेलों नहरों मोटर-ट्रक भी अचल पूजाके उदाहरण ह। जम तरहकी पूजाके लिए जो अचल गद काममें लिया गया ह वह चल पूजाके साथके सापक्ष मत्रम ही है। अचल अथ स्वाया नहा है परंतु तुम्हामें अधिक समय तर टिकनवाग पूजी है। वसे मीनीनाकी घिसाई हानी है मकान पुरान पट जाने ह और बर बढ हाकर मर जाते ह। इम तरह यह अचल पूजी काइ पाच बप टिकनेवागी कोई दस-बाम बप टिकनवागी और बल सौ-बचास बप टिकनवाली हानी है। इस बाच भा उसका मरम्मत करने ओर उसे अचली हाथनमें रखनका खच तो करना ही पडना है। अचल पूजीम बल जोर ओर गगर हा ता उह विगाना नी पडता है। इसलिये अचल पूजी पर भी कुछ खच तो करत ही रहना पना है।

अचल पूजीके दो उप प्रकार वतान जम ह। एन पूजा ऐसी होती है जिसका उपयोग एक ही काममें हाना है। उदाहरणन लिए रेखके लिए बनाया गया पुत्र या मुरग और जिना कामम नहा आ मकन। रलका गडन बल दी जाय ता वह मुरग जेकार पनी रहती है। एमी पूजीका हम डवा हुई पूजाका नाम दग। जमम उल्टे प्रकारकी पूजाका हम तरता पूजी कहग। कपडेकी मिन्के लिए मकान बनाया गया हो और वन कपकी मिन्के बजाय दूसरी मित्र चलाना हा ता मकानका उपयोग दूसरी मित्रके लिए भा हा सवना है। कुड मगात भी घाट परिवननमे दूसरे काममें ग

जा सकता है। यद्यपि एतदपरिचयमें धार्मिक-व्यवस्था नुसलान जन्म होता है परन्तु गारा पूजा बनार महा जाती । कुछ पूजा ता जिमा तरहके नुवमानके बिना भी दूसरे नाममें गणाई जा सकता है। कायका तल और विनीता उपवाग आप कह कामानें कर सकत ह। इमक गिवा भौतिक और विनिमय हो घरे एसी तवा जिमका विनिमय न हा गरे एसी अभौतिक अथवा यक्तिगत—य भद ना पूजीक किय जात ह। मनुष्यकी कुशला और कला-कौशल अभौतिक या यक्तिगत पूजा है। गवयेका कठ चित्रकारका हस्त-कौशल इजीपियरकी कुशला आदि सब इमी प्रकारकी पूजाके उदाहरण ह।

पूजाकी सीमाता

७ पूजाके बारेमें सामान्यतः जानन योग्य बातका हम उल्लेख कर चुके। अब पूजाका सच्ची आधिक्य प्रगतिकी दृष्टिसे अथवा सामाजिक हितकी दृष्टिसे विचार करना रह जाता है। हम कह चुके ह कि समाजके तात्कालिक उपभोगके लिए जितना उत्पादन आवश्यक है उससे अधिक जितना उत्पादन होगा उतनी ही अधिक पूजा बनगी। आज जितनी पूजा है वह हजारों वर्षसे होनवाला इसा तरहके अतिरिक्त उत्पादनका परिणाम है। किन्तु यदि हम गहरे जाकर देखें तो मातृम होगा कि यह सारी पूजा चायसे शक्य नहीं है। सम्पत्तिके उत्पादनमें जिन्होंने मूल दी है उनकी सारी उचित आनन्दनतायें उस सम्पत्तिके पूरी हो जाय उसने बाजार जो कुछ बच बास्त्रवमें उसीका पूजाके रूपमें रखना चाहिये। किन्तु हम देखत ह कि सम्पत्तिके उत्पादनमें कीमती सहायता करनेवाले बहुत बड़े जनसमुदायका उचित ता क्या परन्तु जीवनको टिकाय रखनेके लिए जरूरी विकसुल प्राथमिक आनन्दनतायें भी पूरी नहीं होती। और एसी स्थितिमें भा उत्पादनकी व्यवस्था करनेवाला छोटासा बग सम्पत्तिके वास्तविक उत्पादनमें स काफी हिस्सा पूजाका मूलमें ल जाता है। इस प्रकार पूजाका निर्माण देनवाला बहुत बड़ा संग्रह उचित या सच्ची बचतत नहीं हुआ है बल्कि सम्पत्तिके सच्चे उत्पादनका यानी मजदूर-वर्गके पट पर पट्टी बचना कर उनका संग्रह किया गया है। हमारी वर्तमान पूजा शरीर-धर्म द्वारा सम्पत्तिके उत्पादन करनेवाले बहुत बड़े वर्गके युवाके सचित धर्मका फल है। फिर भी दुनियाकी लगभग सारा हा वर्तमान पूजा पर एक छोटासा बग व्यक्तित्व स्वामित्वका अधिकार भाग रहा है। पूजा पर स्वामित्वका अधिकार हानने कारण समग्र उत्पादनका बहुत बड़ा भाग यह छोटासा

पूजापति वगैरे हुए लता है और मेहनत मजदूरी करनेवाले लोगका गणना लगातार जारी रहता है। नतीजा यह होता है कि गणना सभी दशामें— घनवान कहलानवाले दशाम भी— बढावा और कमायी पाइ जाती है।

८ दुनियाकी पूजाका समग्र दृष्टिसे विचार कर ता एक और बात हमारा ध्यान आकर्षित करती है। जम जस पूजाका मन्त्र बढता जाता है वस वस उत्पादनके अगम श्रमकी अपना पूजाका प्राबल्य बढता जाता है। नई नई मशीना और नये नये प्रकारका मशीन शक्तिका उपयोग ज्या ज्या बढता जाता है त्या त्या मजदूरका जहरन अपक्षाहन घटना जाता है। यत्रो धोगाके सामन हाय उद्योग मित्रते जात ह। इमके सिवा यत्रोद्यागामें भी पन्नी अपक्षा कम आदमियसे अधिक उत्पादन हाता जाता है। उत्पन्न हुई सम्पत्तिना तुलनामें बहुत बडा भाग पूजाके मास्त्रिकारो मित्रता है और श्रमके मास्त्रिकारा भाग श्रिताश्रित घटता जाता है। यह सही है कि मारी पूजा पर समाजका अन्वितार स्थापित कर लिया जाय तो यह बुराइ दूर हो जाय लकिन बन्नी जानबाग पूजाके कारण मानवश्रम निकम्मा हो जाय ता लागोको पूरा काम नहा मित्र नरता। लकिन इमके बावजूद उनकी आवश्यकतायें तो पूरी होनी ही चाहिये। समाजवादी अर्थ रचनामें भा यह प्रश्न किसे न किसे समय खर्च हुए रिना नहा रह सरता। किसे न किसे समय खर्चिए कहा है कि इस जम दशम सामन आज यदि यह प्रश्न खडा न हुआ हा ता इसका कारण बबन् यही है कि उमन अपने महाके अतिरिक्त मनुष्याको काफी बनी मन्थामें युद्ध सामग्रा प्रदानबाके कारणानोंमें जहर ग्याया होगा और आज उह वह मीमा युद्धमें ग्या रहा है। ऐदिन युद्ध-भामश्रीका उत्पादन ता बरा है जीए उसे अच्छा भी मान लिया जाय तो उमकी कोई सीमा अवश्य हाती चाहिये। मास्त्रिक आत्रक अर्थशास्त्रियके सामने यह बन् प्रश्न खडा है कि ता पूजा मनुष्याको बेकार बना द उम किस ह् नर बनाया जाय। इमका एक गमनाय उपाय यह है कि जहा जहा हा सक वन् वहा ग्रामोद्यागाका जिनमें बहुत थोडा पूजाकी जरूरत पन्ता है पुनरुद्धार लिया जाय।

९ इसन अलावा आजका सारा जय-व्यवहार द्रव्य (पस) के मारफ्त होना है और मत्र तर्हकी पूजाकी व्यवस्था भा द्रव्य मारफ्त हा हाती है। एक बढा ही छान वगन म द्रव्य पर अधिकार करके थी इमकी व्यवस्था अपन हायमें कर बना विषम स्थिति पन्ता कर ता है। आज धनिकारा दुनियाके सार उद्योगों पर नियन्त्रण है। यन् नियन्त्रण इतनी चाग्वाजी और

चतुराईस किया जाता है कि लागानी आसामें घल झाकर रहत व पमान पर धोखवानी चलाइ ता सनती है। लून जीर यूयाकरे द्रय वाजारके मुखिया सारी दुनियाका अपना हथकी पर नचा सबत ह।

१० इसलिये सानाय जनताकी भलाइक लिये और सच्ची आर्थिक प्रगतिके खातिर— अर्थात् इसलिये कि सबको काम मिलता रह जीर काम करनवाले अपन कामना पत्र स्वय भोग सब यह जरूरी है कि जिन छोटसे बग पूजी पर अधिकार जमा रखा है उसके हाथमें या उमक पनस पूजीको छाना जाय। साथ ही पूजीका धनपतियाकि चतुःस छानाके लिये द्रव्यका सारा व्यवस्थामें भी जडमूठस परिवतन हाना चाहिय।

११ दूसरा प्रश्न पूजाके उपयोगके बारेमें है। आज ऐसा नहा हाता कि जिन उद्योग धंधाकी जनताको बहुत जरूरत हा उनमें ही पूजा उग। इनके विपरीत जिन उद्योग धंधामें बर्तन नफा होता है उहीमें पूजा ग्यायी जाता है। अथ प्रवृत्तिका ध्य नफा कमाना नहा बल्कि समाजकी आवश्यकतायें पूरी करना है। हर देशमें समाजकी जनिवाय और प्राथमिक आवश्यकतायें पूरा करनवाल उद्योग अथ जरूरी सख्याम जठी तरह चलन उग उमक वा हा काम मत्त्वकी आवश्यकताआम सम्पद्य रखनवाले उद्योग धंधे खालनका तरफ ध्यान दिया जाना चाहिय। लकिन आम तौर पर प्राथमिक जीर जनि वाय आवश्यकताआम उद्योग धंधाके बजाय मौज गौकके उद्योग धंधामे नफा ज्यादा हाना है इसलिए एम ही धंधामें पूजा गमाना पूजीपति पसन्द करत ह। इसका फलस्वरूप प्राथमिक आवश्यकताआकी चीज यानी खाद्य पदार्थ आवश्यक मात्रामें जीर अठी जानिक नहा मिलने और मौज गौकका चानें जरूरतसे ज्यादा मिलती ह। हमारे देशके उन्हाटरणमे यह बात अधिक स्पष्ट होगी। जानकउ हमारे देशमें खताका धंधा लाभगयी नही माना जाता। यहां तक कि किसान अपना नामदनी जीर खचके दोन सिरे भी नहा मिग सकता जीर बज करके ही जाता है। किसान पर कजका बाधा गगानार बरना जाता है। इसका अर्थ हा यह होता है कि किसान अपन गवनके लिये जिन चीजको आवश्यक समसता है उन जटान गयके आम दनी बत्तीक धंधसे नहा हानी। खतीका धंधा किसानको नही पुसाता और खतीका पन्वार धन रू - इनके कई कारणामें से एक बन्त बन्त कारण यह ह कि खतीमें जिनकी चाहिय उनको पूजी नहा लगाइ जानी। जमानमें अठी तरह धन रूना चाहिय अठी जताइ करनके लिये अउ मल हान चाहिय अउ दोन चानिय ठीक समय पर मजदूर लगकर

उनसे निराई आदिक काम करा इनके लिए मजदूरोंको चुकानेका रपया चाहिये । यह सब पूजा किमानाके पान नहा होता । जब गात्राम माह कारोस सामा अपन पामता पमा लगानक दूसर रास्ते खुड न थ तय व किसानोको उचित यात्र पर पमा उधार देते थ । परन्तु लिमिटेड कर्पानया और बरु मुल् जानके वाद गावाका सारा पसा खिचकर गहरामें चत्रा गया क्याकि वहा यात्र जोर डिबिडड अछा मिन्ता था जोर गावाम किसानोको उधार त्तमें कुड मिलकर थाग नफा मिलता था । इमकिण सतीके उद्योग पूजाकी तगो हाने लगे । पूजाकी तगा हुई इनलिए सती विगडी । इस तरह त्तमें नफा न होनम पूजा नही गाई जानी जोर पूजा न लानसे खती अधिक विगडनी है — एसा उदचत्र जाग्य हा गया है । इसक सिवा आज बजर मानी जानवाणी परन्तु सतीक काममें जा सबनराग जमीनको सुधार कर उपयोगम लान जोर नहरो तथा मुआरे जरिय सतीके लिए पानीकी यत्रम्या करनको अितना अत्रर पूजा लगनी चाहिय उननी हमारे देगमें नही गती । यहां स्थिति हमारे पणु पानम मा दूसर धधकी है । उममें पूजा लगानकी कारे परवाह ही नहा करता । दुसा जानवराकी सव्या भारतम बहुत बडी — दुनियाभरके दुघारु डाराकी एक निहाइ होन पर भी हमारे देगमें दूध धीकी बमी पन्ती है । हमारे भोजनम भा अछ अनाज और पौष्टिक तत्वावाक दूसर साधनपगथ कम हान ह । ताग भाजी और फल ता बहुत प्रडी मत्याके लागोके चषनक णि भी नही मिलते । यह मत्र हमारे पास जो थोनी-बहुत पूजा है उमक गलन उपयोगका परिणाम है । त्रिन समाजकी आवश्यकताजारा उका उपयोगिताक त्रममें विचार करके उमी त्रममें पूजा तभी लगाई जा सती है जब पूजाका उपयोग किमाका त्रफाकोरीके णि नही, परन्तु समाजकी अस्तरकी चीजाका महारके अनगार वर्गीकरण करक उनके उत्पादनमें किया जाय ।

१२ उपरके विवचनका यह अथ नहा समनना चाहिये कि हमार देगमें सताक मित्रा दूसरे उत्राग धधाका विकास करनकी आवश्यकता नहा है । हमार ग्रामोद्यागाको जो भूतप्राय देगाम त्र मजाव करनेका बडा जम्रत है । ये उद्योग जा उत्र ता उनस खतीका भा महायता मिन्त सती है । इन उद्यागाके लिए बहुत बडा पूजाकी जम्रत नहा । पूजाके लिए गीचानानी ग्रामाद्योगा और सताके बीच नहा बनि सनी और गहरके यत्राद्यागाके बीच है । यत्रोद्योग ग्रामाद्यागाको मार कर गीनीक उद्यागा भी हानि पहुचा र ह ।

प्रबन्धक

१ हम पहले दब चके ह कि जवसे बटुनमे लागाकी पूजी एकत्र करके लिभिन्ड कपनिया द्वारा उद्योग धर चलानकी पद्धति अस्तित्वम आइ है तबस उत्पादनर अगक रूपमें मुदरत श्रम और पूजान अनिश्चित प्रबन्धन भी अस्तित्वम आया है। यो ता जयोल्यादनकी सानी पद्धतियामें भी उद्योगरके ठिए एक किसान-परिवार अपनी रता कर या एक जलाहा-परिवार करपा चलावे या कार् दुकानदार दुका करे या सराफ अपनी पत्नी चलावे तो उसम भी योजना व्यवस्था और विवेकका उपयोग करब निणय करन पदन ह। परन्तु जिन उद्योगामें उत्पादनके अलग अलग अगा पर अलग अलग मनष्याका स्वामित्व हा उनम सम्पूर्ण व्यवस्था करनर लिए बद्धिगामी और विवेक गतिवाल स्वतन्त्र व्यक्तिकी आवश्यकता होती है। यद्यपि विवेकके साथ सारी व्यवस्था करना भी एक तरहका श्रम ही माना जायगा फिर भी प्रबन्धकका यह श्रम एक विंगप प्रकारका और ब महत्त्वका हानके कारण हमन उसका अलग विचार किया है। प्रबन्धकके श्रमको दूसरे प्रकारक श्रमसे अलग माननका एक कारण यह भी है कि अय सब प्रकारके श्रम करनवागका एक निश्चित किया हुआ पारिश्रमिक मिलता है जब कि प्रबन्धक एक विंगप साहस करता है जिसमें कभी उसे अच्छा नफा मिलता है और कभा नुकसान भा उठाना पडता है।* यद्यपि किसान जुगहा कारीगर दुकानदार सराफ वगराको भी इस तरहका साहस करना पडता है और नफ-नुकसानकी जिम्मेदारी उठाना पडती है लेकिन उनका श्रम पूजी अति सब अपना हा हाता न जब कि प्रबन्धक तो अलग अलग आत्मियाका श्रम और पूजा इकट्ठी करके उद्योगकी योजना करता है और उसकी सारी छोटी मोटी बानाकी व्यवस्था करता है। तात्त्विक दृष्टिस देखें तब तो प्रबन्धकका श्रमको भी उच्च बौद्धिक श्रमका एक प्रकार ही मानना चाहिय। लेकिन जसा ऊपर कहा गया है उसके विशय महत्त्वके कारण हमन उसका अलग विचार किया है। उसका मुख्य काय कई लोगाकी पूजी इकट्ठी करके उससे कोई उद्योग खान करनका साहस लिखाना और उम उद्योगम तरह तरहका श्रम करनवाग — महाबद्धिगामी मनजरो

* वह अपनी पूजी न खगाय तब ?

इंजीनियरों और वनानिकास लेजर मामूली मजदूरी करनवाला तबको काममें आगाकर उत्पादन-कार्यका संचालन करना है।

० सामान्यतः प्रबंधकको नीचे लिखे काम करने होते हैं

(१) पहले वह यह कल्पना करता है कि किस जगह कौनसा औद्योगिक साहस अच्छा और लाभदायक ढंग पर चल सकता है। फिर वह उसकी पूरी योजना और रचनाका विचार करता है और उसके लिए अनुकूल स्थान पसंद करता है।

(२) इस साहसके लिए वह आवश्यक पूंजी खोजी करता है।

(३) एक ओर जा मात्र तयार करना ही उनस सम्प्रचित उद्योगके निष्ठात रखकर उनकी मलाहने अनुसार मवान बनानवा काम वह शुरू करता है और दूसरी ओर उसके लिए जरूरी मशाना औजारों वगैरोंके आडम देना है।

(४) उद्योगके लिए निष्ठातो मनेजरा कारकुना वैज्ञानिका और मजदूरों वगैरोंकी पसंदगा करके उन्हें रखता है।

(५) वह अपने कारखानमें कामका बटवारा और दूसरी व्यवस्था ऐसे शास्त्रीय ढंगस करता है जिसस मपूर्ण उद्योगक संचालनमें आत्मियाके धमका, मनीनाका दूसरे सामानना और कच्चे माल आदिका किमी भी तरहका निगाह न हो और अधिकसे अधिक उत्पादन हो।

(६) उद्योगक आरंभ होनास पूर्व और चालू हो जान पर भी बाजारका हाल देखकर वह हर प्रकारका माल खरालता है। उस बाजार भावके चलाव उतारका खतरा उठाना पता है, इसलिये बाजार भावका उस सदा ध्यान रखना पडता है और बाजारक मूलका अच्छा अध्ययन करना पडता है।

(७) मालका उपयोग करनवाणोंकी अभिरुचि और उनके आगुमार समाजक पगनाम जा परिवर्तन होने रहन ह उनका उस मदा ध्यान रखना पडता है।

(८) साथ ही विनापनों और दूसर कद तरहक प्रचारके द्वारा गगामें नई नई जातिक माल लिये अभिरुचि उत्पन्न करके नय नय पगनाका जम देन और नई आवश्यकतायें उत्पन्न करके वह अपने मालक कि नई माग खडा करता है।

सम्पमें उस इस बातकी हमगा चिन्ता रहता है कि अपने साहसमें अधिकसे अधिक नफा वह किस तरह कमाय।

३ प्रबंधकके आवश्यक गुण ऊपरके सब काम सफरताके साथ कर सकेनेके लिए उसमें दूरदेगी विवेक धंधा-सम्बन्धी कुशलता मनुष्याको पहचानने उनका विश्वास सम्पादन करने और उनसे काम लेनेकी शक्ति आदि गुण होने चाहिये। आजकलके उद्योग धंधामें भारी खतरा बना ही रहता है। क्योंकि लोगोंकी आवश्यकतायें जानकर लोगोंकी मांगके अनुसार मात्र तयार नहीं होता बल्कि मांग पदा होनेकी आशासे लोगोंका चाहिये उससे बचने पहले मात्र तयार किया जाता है। इसलिए लोगोंकी रुचियामें परिवर्तन होनेसे मात्रकी मांग एकाएक बदल जाय मरान मशीन आदि जो बड़ा खर्च करके तैयार किया गया है वह नई गोदने कारण पुरान पड़ जाय कच्चा मात्र और दूसरा सामान युद्धके या दूसरे कारणसे मिटना बंद हो जाय या पूरी मात्रा न मिल सके—एसा तो चंग ही करता है। द्रव्य बाजारमें उथल-पुथल होनेसे साखने व्यवहारमें बाधा पहुंचनेकी भी सम्भावना रहती है। ऐसे बहुतसे कारणसे बिना ही होशियारीके साथ उगाया हुआ हिसाब भी उल्टा पड़ जाता है। इसके सिवा जलग जलग उद्योग धंधे एक-दूसरेके साथ जुड़ हुए होनेके कारण एक बड़े उद्योगको धक्का पहुंचा कर दूसरे उद्योगको भी नुकसान पहुंचता है। इसलिए प्रबंधकमें इन सब प्रतिकूल परिस्थितियाँ सामना करनेकी हिम्मत हाशियारी और दूरदेगी होना आवश्यक है। इसके सिवा आजकलके सारे उद्योग धंधे प्रतिस्पर्धाके सिद्धांत पर चलते हैं और यह प्रतिस्पर्धा बहुत बार युद्ध जसा रूप पकड़ती है। इसलिए जैसे सेनाके सेनापतिमें अनुशासनसे काम लेनेकी कुशलताके साथ साथ ब्यूट रचनाका कौशल भी आवश्यक होता है वैसे ही प्रबंधकमें भी जागरूकता और कुशलता आवश्यक है। प्रबंधकके लिए जो उद्योगपति मात्रका उपयोग किया जाता है वह सेनापति की मात्र रचनाका अनुसरण करनेवाला होनेके कारण बहुत उपयुक्त प्रयोग है।

४ प्रबंधकके ऊपर बनाये हुए काम और गुण आर्थिक प्रगतिके लिए आवश्यक जरूर हैं लेकिन यह विवादास्पद है कि आजकलके प्रबंधक अपनी शक्ति और कार्योत्तम उपयोग समाजकी सच्ची आर्थिक प्रगतिके लिए करते हैं। यह मान इस पुस्तकमें बार बार कही जा चुकी है कि केवल उत्पादन बढानसे समाजका हित नहीं हो सकता सच्ची आर्थिक प्रगति सिद्ध नहीं हो सकती। अर्थशास्त्रसे सम्बन्धित किसी भी प्रश्न पर विचार करते समय यह वस्तु हमें आँखोंके सामने रखनी चाहिये। आजकल तो वही प्रबंधक बहुत कुशल और सफर माना जाता है जो सारी परिस्थितियोंसे अर्थात् द्रव्य

बाजारसे खरीद मशीनें और मजदूरोमें अधिकमें अधिक लाभ उठा सक और अपने सम्पत्तियों आनेवाले मारे तत्वाका अधिकमें अधिक शापण करके अधिकमें अधिक नफा कमा सके । उसकी एकमात्र दृष्टि यही होती है कि नई नई मशीनें मोजूरा और मजदूरोंके बाय विभागकी नई नई रचना करके बिय तरह कमसे कम मजदूरोंसे अधिक उत्पादन किया जाय कच्चे मालका खरादम कैसे कमसे कम भाव पर माल मिल और तयार मालकी बिक्रीमें किस प्रकार ऊंचे ऊंचे भाव मिलें । इससे मजदूरोंका गोपण होता है तथा बकारी फलती है कच्चा माल पदा करनेवालाको भरपट खाना भी नही मिलता और ग्राहका अर्थात् तयार माल काममें लेनेवाले बहुसंख्यक लोगोंने जो माल ब खरीदते हैं उसका जीवनकी आवश्यकताओंकी दृष्टिसे पूरा माल नही मिलता । इसका कारण जसा कि हम पिछले प्रकरणमें पूजाके सम्बन्धमें देख चुके हैं यह है कि प्रबंधकाना शक्ति भी प्राथमिक आवश्यकताओंकी वस्तुएँ उत्पन्न करनेके बजाय जीवनके लिए कम महत्त्वका वस्तुएँ उत्पन्न करनेमें अधिक लक्ष्य होती है । हमारे देशकी गरीबीका कारण विन्ही गोपणके अलावा हमारी खनी और ग्रामाद्यागाकी दुर्दशा भी रही है । हमारे प्रबंधक लोग हमारी खनी और ग्रामाद्यागाके विकासमें अपनी शक्ति लगाय ता मार देशकी आर्थिक स्थिति बहुत जल्दा सुधर जाय । लेकिन आजका तो ये यत्राद्यागाके विकासके पीछे ही लगे हुए हैं । हमें विदंगी गोपणके अलावा इनके यत्रोद्योगोंके शापणका शिकार भी गावाका बनना पडना है । इनका हाने पर भी हमारे प्रबंधकाना यह दावा है कि यत्राद्यागाका विकास करके ब देशकी आर्थिक उन्नतिमें सहायता करत हैं और इस देशमें पनी हुई राष्ट्रीय भावना और स्वदेशीकी भावनाका काम उठाना चाहते हैं यद्यपि उन्हें राष्ट्रीयता या स्वदेशीकी भावनाका वस्तु परमाह नही हानती । क्यकि जब इन भावनाओं और उनके नफे और स्वायत्ते बीच लक्ष्य छडा हागा ता वस्तु थाते अपवात्तोंको उत्पन्न कर गाकीन सत्र प्रबंधक दानाओं से किस पमन्द करग इस त्रिपथमें कोई गका नही है ।

५ जैसे अर्थ-व्यवहारमें प्रबंधकाना बाय बहुत आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है, वगे ही समाजक दूरर सत्र व्यवहारोंमें भी है । सार सामाजिक कार्योंकी धामडार हायमें लत्र समाजका संगठन करनेवाला समाजकी शक्ति वृद्धिकार और समाजका सही शिगामें मात्तर प्रगतिव भा पर लपानवाले भी प्रबंधक ही होते हैं । म्युनिमिपलिटि और गवर्नल बाडोंके बाय राज नीतिक बाय सामाजिक व्यवहार शान-संगठन आदि सत्र बाय कुत्ता प्रबंधकके बिना नही चल सकते । इस प्रबंधकाने पाम अपने बुद्धिमानोंके सिवा द्रव्यबल

और मनुष्योका सहायक भा हाता है। इसलिए उनकी सत्ता असाधारण मानी जाती है। परन्तु प्रबल रोमरत चाहता है कि इन प्रबधकाका अपनी शक्ति और सत्ताका उपयोग व्यक्तिगत स्वाय या लाभके लिए नहै बल्कि समाजके हितके लिए ही करना चाहिये। सिर्फ अथके अत्रमें ही प्रबधका पर इस तरहका बतव्य नही डाला जाता। जब तब दूसरे प्रबधकाका तरह आर्थिक क्षेत्रके प्रबधके भी केवल व्यक्तिगत स्वाय और नफर लिए नही, बल्कि सारे समाजके आर्थिक कल्याणके लिए काम नही करने गेगे तब तक सच्ची आर्थिक प्रगति सिद्ध नही हो सकेगी।

६

काय विभाग

१ हम देख चुके ह कि एसी स्थिति कभी नही थी जब अलग आदमी अपनी जरूरतकी सब चीजें खुद जुटा लेता हो। मनुष्य अपने उत्पत्ति कालसे ही सामाजिक प्राणीके रूपमें समूह-जीवन बितानवाला पाया जाता है। ठठ प्राथमिक दशामें जीवन बितानवाले समूह और आग चलकर जब कुटुम्ब अस्तित्वमें आय तब कुटुम्ब अपनी जरूरतकी सब चीजें सद ही उत्पन्न करते थ। अर्थात् किसी समूह अथवा कुटुम्बके लिए आवश्यक सभी धन उस समूह या कुटुम्बम चरते थ। समाज जैसे जैसे आगे बढ़ता गया वैसे वैसे जरूरतकी अलग अलग चीज उत्पन्न करनेवाले अलग अलग धर्म चरानवाले कुटुम्ब अस्तित्वमें आते गय। काम या धधके इस बदवारेके लिए श्रम विभाग गल काममें आता है। लेकिन अधिक मरुवा गल तो काय विभाग है क्योंकि श्रमके विभाग नही किये जाते किन्तु कामके विभाग किये जाने ह। श्रम विभाग गल अधिक प्रचलित होन पर भी वह गलत है इसलिए हम काय विभाग गलका ही प्रयोग करेग।

२ काय विभागके मुख्य चार स्वरूप ह

(१) नसर्गिक काय विभाग (२) सामाजिक काय विभाग (३) औद्योगिक काय विभाग और (४) प्रादेशिक या भौगोलिक काय विभाग।

नसर्गिक काय विभाग

३ स्वयंपर्याप्त और स्वावलम्बी समूह तथा कुटुम्ब जब अपनी जरूरतकी सब स्वय ही उत्पन्न कर लेते थ तब भी समूह या कुटुम्बके भीतर पुरुषो

और स्त्रियोंकी शरीर रचनाके मेदक कारण अमुक काय विभाग देखा जाता है। पुष्प गिकार करनेवा बोर चरानका या एसा कोई काम करते थे जिसमें वह अपने गहनकी जगहमे बहुत दूर जाना पन्ता था। स्त्रियोंको बालकाके पालन-पोषण और रक्षणके लिए घर पर ही रहना पडता था। इसलिए वे घर वठ जो काम हो सकता था वहा करती था। यह पहले कहा जा चुका है कि ग उत्रागाका और गहन-लाओका विनाम स्त्रियां हा किया है। पुनाक लिए सस्कृतमे दुहिनु ग् है। इससे जान पन्ता है कि पुनाका काम दुहनका माना जाता था। अग्नेजीम कुवारी कयाके लिए स्पिन्डर (spinder) शब् है। स्पिन का अर्थ है कानना। इस परमे कुवारी उडकीका काम काननका था। अग्नेजीमें पत्नीके लिए वाइफ (wife) शब् है और वाइफ शब् वीव (weave) याना बुना' परस बना है। इस तरह बुननेका काम पत्नीका माना जाता था। आज भा दुनियाके प्रत्येक समाजमें इस तरहका काय विभाग देखा जाता है। पुष्प बाहरका काम बधा करता है और कमाता है तथा स्त्री गाल्वाका पागती और गालीम देता है और घरके भीतरका सारा कामकाज सभालती है। हा मजदूर-वर्गमें स्त्रियां भा मजदूरी करन जाता है और कयाई करती है। दुनियाकी आबादीमा बहुत बरा भाग ता मजदूर वर्गका ही है। इसलिए समाजके बहुत बडे भागमा स्था और पुष्पके बीच ऊपर बताया हुआ स्वाभाविक जावरयक और वाछनीय काय विभाग अच्छी तरह हो ननी पाता। नतीजा यह होता है कि स्त्री पर कामका दुगुना बास पडता है। उसे मनदूरी करन तो जाना हा पडता है नके सिवा उसे बच्चाको पालना होता है और घरका काम भा सभालना पडता है। इस कारण घरका तरफ और उच्चाकी गिक्षा और पालन पोषणका तरफ जिनमा चाहिय उगा ध्यान बह ने नही पाती। जब तक बच्चा माका दूध पीना है तब तक ता वह पूरी तरह माका ही जाशित रहता है और दूध छादनक वा भी लवे समय तक वह माका आशय और माकी सहायता छो नही सगता। बच्चाकी इस कोमल बयमें जसी गिक्षा और गालीम उसे माम मि सक्ती है बसी और किमीमे नही मिल सकता। कयाकि इस बयम जो प्रभाव और सस्कार उसक मन पर पन्त है व कभी मिन्त नही। अच्छा बालकें डालनके लिए भी यही बय उत्तम है। गिगुसा और बाल्यावस्याका यह गिक्षा भविष्यरी सारा गिक्षा और जीवननी बुनिया हाता है। इसीलिए गाल्वाका अच्छी तरह पालने-पोमन और अच्छी आदत तथा सच्चे सस्कार डालनर उम गिक्षा नने कामस

माताका अर्थोत्पादनके बानव कारण जिस हट तक बचिन रहना पडता है उस हट तक समाजकी बनी हानि हाती है। बानवके प्रति अपना बननय पूरा तरह पालनके बान यदि पतिय धधम सहायन बनकर स्त्री अर्थोत्पादनम सहायता दे सक तो ठाक ह परन्तु यह उसका मुख्य काय कभी नहीं बनना चाहिय। आज अधिकतर स्त्रिया एसा नहीं कर पता तो इसे बनमान अथ-व्यवस्थाका बडा दाप मानना चाहिये। परन्तु कुछ नमाता स्त्रियाका यह मानना है कि जब तक स्त्रिया अर्थोत्पादनके कार्योंमें पूरा भाग लेकर आर्थिक दृष्टिस स्वावाम्भी नहीं हाता तब तक आज जो ब पुरषाम नीची गिना जाती ह और उह पुरषाने अधीन रहना पन्ता है वह दन्ति स्थिति नका दूर नहा हा सकता। स्त्रिया जर्थोत्पादनके कामम भतीभानि भाग ले सकें इसके लिए उह बच्चोके पालन-पोषण और शिक्षणके बोधमे जहा तक हा सन मुक्त किया जाय यह काम समाज यानी सरकार अपन हानम ल - और दूध छाते ही अथवा समब हा तो बसस पहल भी बच्चाको उनके लिए बनाय गय खास गिगुगुहाम रखा जाय। इस योजनाके पक्षम समाजस्त्रियाका एक दलील यह भी है कि बच्चकी इस कोमठ वयम उसे अच्छी तरह पालन और अच्छा शिक्षा देनके लिए जिस शास्त्राय नानकी आवश्यकता है उसकी आगा मा बननवानी सभी स्त्रियास नहीं रखी ना सकती। बसलिए जो थोडी स्त्रिया एसा योग्यतावानी हा उन्हीको बान मगोपन और बाल शिक्षणके कामकी विनय तालीम देकर समाजके सार बच्चे साप लिय पाय ता ही अच्छी नानवान प्रजाका निर्माण हा सकता है। बसक विरायमें यह कहा जा सकता है कि शास्त्रीय नानके बिना भा माके प्रमम जो गकिन होती ह वह शास्त्रीय नानम नहीं होती। बच्चोको पहनी आवश्यकता प्रमकी है बानम शास्त्रीय नानकी है। इसक सिवा अभा यह बान मानव-स्वभावमें जाई नहा है कि शास्त्रीय नानकी तागम पाह दुई सभी स्त्रिया सोपे हुए बच्चाका भाव ममका अनुभव करा सकें। यह दूसरा बात है कि दूसरोके बच्चाके लिए माका स्थान नेववाली सकनेम काइ बिरली स्त्री निकट आय परन्तु यह निश्चित होन पर भी कि एसी स्त्रिया बडी सरयाम नहा मिठ सकती यदि हम बच्चाको माता-जास जल्दीम जनी छडाकर गिगुगुहका साँप दग तो बहा प्रमक विना बच्चे तरसें और कुम्हला जायग। इसलिए अपन अपन बानकाके पालन पोषणकी और प्राथमिक शिक्षणकी जिम्मदारी माताआ पर ही रहन दी जानी चाहिय और वे यह काम अधिक अच्छी तरह कर सक इसक लिए उहे तालीम

देनेका व्यवस्था करना चाहिय तथा जयोंत्पादनकी जिम्मेदारीमें से वे आवश्यक तानुसार मुक्त रह ऐसी समाज रचना जोर जय रचना करनी चाहिय। यही अधिक स्वाभाविक जोर मुक्त देनवाला सिद्ध होगा।

४ मध्यम वय और उच्च वयकी स्त्रियोंका विचार करन पर मालूम हाता है कि उन पर जयोंत्पादनकी जिम्मेदारी रहा होता। वे घरका और बच्चाके पालन पोषणका काम ही करती ह यद्यपि उच्च वयकी कुछ स्त्रियान तो यह काम भी जयन क्षिरमे उतार फरता है। अर ता एसा जानौदन गुल् हुआ है जिनमे य स्त्रिया आर्थिक स्वतन्त्रता भोग सक और घरका धन ठाडकर या जिस रमोइघर और वायुच्छोमें फने रहना कहा गाता ह उसे छोडकर गहरके कामाम भाग ल सकें। हम ऊपर कह चुक ह कि बाल-मगापन जोर वायु शिक्षणके लिए माताका श्या से सजनवागी कुछ योगिनो जोर जयमाध्यम स्त्रिया ही निकरगो। इसा तरह घरका क्षेत्र छोडनकी इच्छा रखनवाली स्त्रिया भी अरवाइने रूपम और विरगी ही विरगो कयाकि स्त्रिया स्वाभाविक बत्तिसे ही ममज्ञनी ह कि उनका सच्चा काम क्या ह। बडसे बडा और मानव प्रगतिके लिए सजस महत्व पूण वायु सगोपन जोर बाल शिक्षणका काम स्त्रियोंको जयन घरके अन्दर हा मित्र ज्ञाता है। यह सब है कि उचित शिक्षा जोर तागीइने अभावम यह काम अच्छी तरह कर सजनवागी स्त्रिया आज धाडी ही ह परन्तु स्त्रियाम स्वभावत रस कामके लिए प्रेम हाता है। रसर्णिए प्रवृत्ति द्वारा निर्मित अगता यह स्वाभाविक काम छाडकर स्त्रिया आर्थिक स्वातन्त्र्य प्राप्त करनके पीठ दीपती रहें जोर अपने बच्चाके पालन पोषण और शिक्षणका काम गान्धीय ढगसे करनेका दावा करनेवागी रस्याआको साप दें इस स्वय स्त्रिया ही स्वाकार नही करगा। समाजक र्णिए यह सवया हितबह भी नहा है। र्णलिए स्त्रियाका जनक इस प्रवृत्ति निर्मित कामके र्णिए पास तीर पर तालीम देकर विगप वाग्य जनानेमें हा मानव-मुक्त और मान प्रगति समार्ई हुई ह। फिर यह तक भी ठीक नही कि आर्थिक स्वाव रम्जन प्राप्त र्णलमे ही स्त्रियाका परतत्र दगा सुगर सरती है कयाकि मजदूर-वगका स्त्रिया आर्थिक स्वाव रम्जन भागती ही ह फिर भी उनमे से बाइ स्वतन्त्रता भोगती नन दीखता। स्त्रियाका पराधीनताका वनेम र्णन कारण तो यह है कि मानादे रूपमें उनका जा पवित्र और गौरवपूण काम है उमके र्णिए उह उचित शिक्षा नहा मिन्ती। अच्छी शिक्षाके अभावम व यह काम अच्छा तरह रहा कर पाता। इसके अगता आज

बल्की कुण्डला कारण कुछ स्त्रियां ता पत्नीत्वका स्वीकार करके भी माता बनना नहीं चाहती। यह भी उनकी पराधीनता और लघुता का एक बड़ा कारण है। वस यदि स्त्रियां अपना मातृत्वका काम आवश्यक कुण्डला और ऊंची भावनासे करने लग जाय तो उसके सामने आर्थिक स्वतंत्रता तुच्छ चीज है। परिवारके भरण-पोषण के अर्थोत्पादनका काम पुरुष करता है इसलिए स्त्रीको पुष्पक अधीन ही रहना चाहिये यह बात गलत है। समयान्तर और सस्कारा परिवाराम जहां पुरुष और स्त्री अपना अपना सच्चा पत्र अत्र करते हैं एक-दूसरेके अधीन हानका प्रश्न ही खण्ड नही होता। पुरुष और स्त्री न तो एक-दूसरेसे ऊंचे हैं न एक-दूसरेसे नीचे। व न स्वावलम्बी हैं और न परावलम्बी हैं। व ता परस्परावलम्बी हैं एक दूसरेके पूरक हैं। ऐसे सब प्रश्न तो तभी गड़ होने हैं जब स्त्री और पुरुष अपने अपने स्वभाव निमित्त कायभ्रमको छोड़कर आपसमें प्रतिस्पर्धा करने लगते हैं।

५ जीरे पुरुषके साथ अनवरत ही जान पर या विधवा हो जान पर स्त्रीको अपना और अपने बच्चाका निर्वाह करनेके लिए अर्थोत्पादनका काम करना पड़ तो स्त्रीके लिए यह काई बहुत कठिन बात नहीं है। जो जातमी मेहनत करनेके लिए तयार हो उसे निर्वाहकी कठिनाई न पडनी चाहिये। लेकिन आजकी प्रचलित अर्थ-व्यवस्थामें बहुत अधिक विपत्तियां और अयाय हानके कारण सामान्य जनताके लिए जीवन-संप्राम बहुत कठिन हो गया है। इसलिए संभव है कि किसी स्त्रीके सामने अर्थोत्पादनका प्रश्न एकाएक आ खड़ा होन पर वह घबरा जाय। अत आवश्यकता पडन पर स्त्री अर्थोत्पादन भी कर सके ऐसा शिक्षा उसे मिलना चाहिये। परन्तु अधिक आवश्यक तो आजकी विपत्तियां और अयायपूर्ण अर्थ-व्यवस्थाका बदलना है। हम ग्राममें कहावत है कि बापके राजमें बच नहीं समाते पर माके चरखमें समा जाते हैं। इस कहावतमें समाज-जीवनकी बहुतसी बात आ जाती है। परन्तु प्रस्तुत प्रश्नके लिए एक बात निश्चित है कि यह कहावत जब गुरु हुई होगी तब ऐसी अर्थ-व्यवस्था रही होगी जिसमें सज्ज जा पडन पर स्त्रियां आसानीसे अर्थोत्पादन करके तथा अपने बच्चाका अच्छी तरह पालन-पोषण करके उन्हें बच कर सकती थीं। *

६ सार यह है कि सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थामें जो जो दोष हैं उन्हें हम जरूर दूर करे लेकिन स्त्री और पुरुषके बीच जो प्रकृति निमित्त और स्वाभाविक काय विभाग है उसमें हस्तक्षेप करना आवश्यक नहीं है।

* सूतना यानी खादीका बाजार सज्ज होन पर ही यह संभव हो सकता था।

७ तब क्या स्त्रियां सावजनिक कार्योंमें मिलकुल भाग न लें ? हमारे कहनेका यह आशय नहीं है। जिन स्त्रियां पर उच्चांक पालन-बोधनका काम न हो अर्थात् जो स्त्रियां कुंवारा ही रहना चाहती हैं या विधवा हैं या बच्चे बड़े हैं जानेबे कारण जो वानप्रस्थ जीवन बिनाती हैं वे जरूर सावजनिक कार्योंमें भाग उठ सकना है। कुंवारा रहना चाहनेवाली स्त्रियां मर्यादोंमें हटके हो सकती हैं परन्तु विधवा और वानप्रस्थ स्त्रियां समाजमें उठ सकना चाहेंगी। उन्हें जरूर शिक्षाके और दूसरे सावजनिक कार्योंमें भाग देना चाहिये। यह कोई महत्त्वकी बात नहीं है कि वे अपने इस कामके बदलेमें पारिश्रमिक लें या न लें। और परिवारकी जिम्मेदारीके कारण एसी स्त्रियां सावजनिक कार्योंमें भाग न ले सकें तो भी कोई स्त्री समाजके लिए उपयोगी हो सकनेवाले दो-तीन सप्ताहोंकी और गिनतीवाली बाटकाका शिक्षा दानर तयार करे, तो यह भी उमका काफी महत्त्वपूर्ण काम माना जायगा।

सामाजिक काय विभाग

८ काय विभागका दूसरा प्रकार समाजकी मुख्यवस्थाके लिए आवश्यक विभिन्न धंधोंके सम्बन्ध रखता है। सती दुनाई सुतारी लुहारी राजका काम चमारका काम माचीना काम—य सब धंधे करनेवाले अलग अलग जग जग अस्तित्वमें आते गए वैसे वैसे समाजकी आर्थिक प्रगति और दूसरी तरहका विकास भी होता ही गया है। ये धंधे करनेवाले वग प्रत्यक्ष अर्थोत्पादन करनेवाले हैं। लेकिन प्रत्यक्ष अर्थोत्पादनके माध्यम सम्बन्ध न रखनेवाले वग, जैसे कि तत्व चिन्तन और अध्ययन-अध्यापनका काम करके समाजके माध्यम जीवनके ऊँचे आदर्शोंकी तथा धर्म और नातिके जाग्रत रखनेवाला ब्राह्मण-वर्ग उत्पन्न हुआ तथा अन्धाय जुलम आक्रमण चारी लूट-पाट वगैरे अत्याचारोंसे प्राणाका चरम डरकर समाजका रक्षण करनेवाला क्षत्रिय-वर्ग अस्तित्वमें आया तब समाजकी आर्थिक प्रगति के साथ साथ दूसरी श्रेणियोंके विकासमें भी बहुत बड़ा कदम आगे बढ़ाया। अर्थोत्पादनका धर्म करनेवाला भी अपनी गोपालन आदि धंधे और व्यापार वाणिज्य करनेवाला बन्धु-वर्ग और सिर्फ बताई हुई महान मजदूरीके और व्यक्तिगत सेवाक काम करनेवाला शूद्र-वर्ग इन तरह से बने अलग अलग माने जाने लगे। हमारा यह अर्थ नहीं कि ब्राह्मण और क्षत्रिय-वर्ग जिन प्रकारका काम करने लगें उस प्रकारका काम इनके अलग वर्ग उत्पन्न हुए उनका काम ही समाजमें होना लगा। मनुष्य द्वारा अन्ध-धरायण अपनी गारान्धि आवश्यकतायें पूरा करके बंटा रहनेवाला तो कभी था ही नहीं। समूह-जीवनका पुष्पमें जब अन्ध

अलग कामा अर धधाक आधार पर अग्य अग्य वग नही बन थ तव भी मनुष्य अपन दूमर कामाक गाय तव चिन्तन करने थ धार्मिक त्रियाण करते थ अयपन-अध्यापन भी करते थ और समाजकी रक्षाके लिए जन्त्री धात्रमृत्तिक काम भी करते थ।

९ ऊपर बताय हुए अग्य अलग वग दुनियाक हर समाजमें मौजूद ह। समाजकी आवश्यकतायें जस जस बन्ती जाती ह वसे वसे धधोके प्रकार भी बढ़ते जाते ह और उनके करनेवाले जग्य अग्य समूह भी अस्तित्वमें आते जाते ह। उनका वर्गीकरण ऊपर बताय हुए चार मुख्य वर्गोंमें प्रत्या समाजने थोडा बहुत किया ही है। प्राचीन यूनानी तत्त्ववेत्ता प्लेटो समाजके इस तरहक वर्गीकरणका गाम्भीर्य रूप रचना प्रयत्न अपनी पुस्तक रिपब्लिक में किया है। लैटिन जिसे गाम्भीर्य कहा जा सके एसा निश्चित वर्गीकरण और स्पष्ट व्यवस्था यूरोपक समाजमें नहा हई। हिंदू स्मृतिनारान यह वर्गीकरण गाम्भीर्य पद्धतिस करके हर वगक कतव्य या बतिया निश्चित कर दी ह और उस वण-व्यवस्था का नाम दिया है तथा वण व्यवस्थाका समाजके अस्तित्व और व्यवस्थित प्रगतिके लिए एक आवश्यक सिद्धान्तके रूपमें माना ह।

औद्योगिक काय विभाग

१० जग्य जग्य कामके लिए अग्य अग्य वग बन पानके वास्तविक उत्पादनकी मात्रा काफी बन्ता। उकिन इस उत्पादनकी मात्राम बहुत तजीस बढ़ि करनेवाला तत्त्व औद्योगिक काय विभागका है। इसमें एक ही धधसे सम्यध रखनवागी विविध क्रियाजोना पृथक्करण करके अग्य अग्य क्रियाए अग्य अलग मनुष्यामे कराई जाती ह। अथगास्त्रकी पुस्तकाम इसका प्रसिद्ध उदाहरण एडम स्मिथ द्वारा वर्णित पिनकी बनावटका है। एक ही मनुष्य यदि पिन बनान थठ और उससे सम्बंधित सारी क्रियाए वह खुद ही करता रह तो दिनभरमें वह मुश्किलसे १०-१५ पिन बना सकता है। परन्तु एक मनुष्य धातुके मोट तारको पाचकर बारीक तार बनाय दूसरा उस सीधा करे तीसरा उस काट चौथा पिसकर उसे नुकीला बनाय पाचवा उसकी गुन्नी प्रनाय छठा गडी बिठाय और सातवा फिर उस पर मुठ्ठमा चाये — इस तरह एक पिन बनानके कामका उसन अठारह अग्य अग्य क्रियाओंमें बांटनका वणन क्रिया है। इनमें से प्रत्येक क्रिया जग्य अग्य मनुष्य करता है। यदि यह मान लें कि एक मनुष्य अकेला ही सब क्रियाए करे तो एक दिनमें वह १५ पिन बना सकता है तो १८ मनुष्य दिनभरमें

२७० पिन बना सकते हैं। लेकिन जब प्रत्येक त्रिया अलग अलग मनुष्य करता है तो इन अठारह मनुष्यों कामसे तिनभरमें २७०० पिन तयार हो सकती हैं। आज तो कामका मन तरहका बटवारा बहुत आग बढ़ गया है। फोड़के माटरके कारखानेमें माटरके सारे हिस्से तयार हो जानेके बाद सिर्फ उन हिस्सोंको जोड़कर गाना मटा करनेके कामका पनागीस अलग अलग त्रियाओंमें बांट दिया गया है। य सब त्रियाएँ एक मशीन बनाकरके रूपमें का जाती हैं। इस बनारमें छह फुट प्रति मिनटका गतिसे काम होता है। मोटरके चौलटका मडगाड के ट्रक लगानेका कामका आरम्भ होता है। जो मनुष्य वाल्ट कमता है उसे छला नहा विठाना पन्ता। और जो मनुष्य छला विठाना है उसे पंच घुमाकर बसना नहा पन्ता। य त्रियाएँ अलग अलग मनुष्य करते हैं। एक मनुष्य वोट ही लगाया करता है दूसरा मनुष्य उसे पर छान ही त्रियाया करता है और तामरा मनुष्य पंच घुमाकर बसा ही करता है। इस तरह दसवें बट्ट पर मोटर बन कर खाना होता है। फिर उसमें दूसरा सामान लगाया जाता है। चानामन बट्ट पर माटरमें पनाल भरा जाता है। चवालीसवें बट्ट पर रेडियटरमें पानी भरा जाता है और पतागीसवें बट्ट पर पूरा माटर चालू होनामें रास्ते पर आकर खड़ी हो जाता है। अब यदि एक या दो चार मनुष्य सारी माटर जाननेकी सभी त्रियाएँ करने लगे तो तिनभरमें वे मुश्किलसे एक या दो मोटरों जोड़कर चालू कर सकते हैं। इसके बजाय इस तरहकी व्यवस्था में सार्व मनुष्य सफटा मोटरों जानकर चालू कर सकते हैं।

११ ये उदाहरण तो मशीनकी मन्थने काम करनेके हुए। लेकिन बुनाईके हाथ उद्योगका उदाहरण लें तो उसमें भी स्त्री नाना बनाना है फिर स्त्री और पुरुष मिलकर उस पर माड बनाते हैं। बादमें यह ताना करके पर बनाया जाता है। जुगहा बपटा बुनता हो तो उसका लम्बा नरी भरकर देता है। और बुनते समय तार यदि टूट जाय तो जगहा करके पर ही पठा रहता है और उसकी स्त्री या लम्बा उस जोर देता है। अब यदि य सब काम एक ही मनुष्य करने योग्य तो तान मनुष्याने महभागमें त्रिया जागले कामका तीसरा भाग नहा बलि पापण छे या दसवें भागका काम ही वह कर सकता है। कामका मशीन लगानेका उदाहरण लीजिये। कोई मनुष्य जरेण ही मजा लगाने लग तो वह त्रिकुण थाडा काम कर सकता है। लेकिन अब कई मनुष्य एक एक हाथका दूराम तिमरी पर पतार बनाते और एकके हाथमें दूसरेके हाथमें और दूसरेके हाथमें

तीसरेके हाथमें घासकी पूलिया ऊपर पहचान जायें, तो गजा तेज गतिस लड़ी हो जाती है। इन सब उदाहरणोंमें कामके विभागके साथ कामके समयका सिद्धांत भी पाया जाता है। मोटर जोडन या गजी उगानके काममें जैसे कामका विभाग हाता है वैसे ही कामका समय भी हाता है।

१२ यह बात ध्यानमें रखनकी जरूरत है कि काय विभाग और काय-सयोग एक ही चीजके या एक ही सिक्केके दो पहलू ह। कोई भी चीज बनानके लिए अनक अलग अलग क्रियाए करनी पडती ह। उन क्रियाओंका पृथक्करण करके अलग अलग मनुष्योंमें अलग अलग क्रियाए बांटना हा काय विभाग है। परन्तु इन अनक क्रियाओंका उद्देश्य एक वस्तु या एक तरहका माल तयार करना होनके कारण इन क्रियाओंका सम्बन्ध एक दूसरेके साथ जानना पडता है और क्रियाओंको एकत्र करना पडता है। इस प्रकार अलग अलग क्रियाओंके परिणामोंका एकीकरण करना काय सयोग है। काइ माल तयार करनके लिए जितनी क्रियाए करनी पडती ह उनका विचार करके काय विभागमें कामके टुकड किय जाने ह। काय-सयोगमें प्रत्यक मनुष्यके भ्रमका स्वतंत्र विचार करके इस बात पर नजर रखी जाती है कि एमी जितनी क्रियाओंको एकत्र करनका वस्तु तयार हा सकती है। काय विभाग जैसे जैसे बढता जाता है वैसे वैसे और उतनी ही मात्रामें काय-सयोग भी बढता जाता है। काय सयोग दो प्रकारका होता है। एक सादा और दूसरा मिश्र। एक काम करनके लिए जब एक ही प्रकारका बहुतसा काम एकत्र करना पडता है तब वह मात्रा काय-सयोग कहलाता है। उदाहरणके लिए एक बडा ऋठा उठाना हो तो बहुतसे आदमी मिश्र कर उसे उठाते ह। घर बनानके लिए काइ राज काई सुतार और काई मजदूरोंके कामका सयोग करना पडता है। यह मिश्र काय-सयोग कहलाता है। काय-सयोग या सहयोगका यह तत्त्व सारे समाजमें सबत्र दिखाई देता है। और समाज जस जैसे प्रगति करता जाता है वैसे वैसे एस तत्त्वका विकास होता जाता है।

१ यह इस बातका उल्लेख करन जसा है कि हर घधमें काय विभागके सिद्धांतका एकसा प्रयोग नही हो सकता। घधके स्वरूपके आधार पर काय विभागका प्रयोग कम-अधिक हो सकता है। उदाहरणके लिए कच्चे मात्रा तयार माल बनानके घधामें काय विभागका जितना विस्तार किया जा सकता है उतना विस्तार खतीके घधमें नही किया जा सकता। कारण यह है कि खती-सम्बन्धी अलग अलग क्रियाए एक ही साथ या एक ही

समय करनेकी तहा होती । चप्पल बनानेके धधेम एक मनुष्य तने बनाता हो ता उसी समय दूसरा मनुष्य ऊपरका पट्टिया तयार कर सकता है । परन्तु जब जमीमें जुताई चल रही हा तब कटाई नहीं हो सकती । वम तरह खेतीके धधेमें तो एक ही मनुष्य एकन बाद एक सारी क्रियाए कर सकता है ।

१४ अब हम औद्योगिक काय विभायक लाभ-हानिवाी चर्चा करेंग ।

औद्योगिक काय विभायके लाभ इस काय विभायका सबसे बडा लाभ यह है कि उतने ही धम और पजोमे उत्पादनकी मात्रा बहुत बलाई जा सकता है और इसके फलस्वरूप मात्र सम्ना बनता है । क्याकि

(१) एक त्रिया पूरा करके दूसरी त्रिया आरभ करनम मजदूरको जो समय बगता ह वह इसम बच जाता ह । जब एक ही मजदूर एक वस्तुके उत्पादनके लिए आवश्यक सारा त्रियाए स्वय अकेला करता है तब एक औजार रख देनेके बाद दूसरे औजारका उपयोग गुरु करनमें और एक जगहसे दूसरी जगह उसे ले जानमें उसका कुछ समय चला जाता है । फिर एक कामम लग हुए मनको उसम स हटाकर दूसरे कामम लगानेमें भी समय जाता है । मनुष्यको यदि एक ही काम करना हा तो उसका मन एकाय वा मवता है और इससे वह काम जरत हाता है ।

(२) मनुष्यको एक हा प्रकारका काम करना होता है इसलिए अभ्यासे कारण वह काम करनेकी उसकी कुशलता और गति बढता है । टाइपिस्टकी कुशलता और गति तथा सराफकी दुनानके गुमास्ताकी रूपसे गिनतकी गति और खरा-छाटा रूपया परखनेकी कुशलता इसके उदाहरण ह । एक ही काम करते रहनेके कारण मनुष्य उसमें निष्णात बन सकता है ।

(३) किसी भी वस्तुके उत्पादनके लिए आवश्यक अलग अलग त्रियात्राम एक ही तरहके धमकी या एक ही तरहकी कुशलताकी जरत नहा होती । इसलिए मजदूरका उनकी गारौरिक और मानसिक शक्तिके अनुसार प्रगाकरण करके उन्हें योग्यताके अनुसार अलग अलग काम सौप जा सकते ह । जिस काममें अधिक कुशलताकी जरत है वह काम कुशल मनुष्याको सौपा जा सकता है और जिमम बहुत बुद्धि न लगानी पड वह काम कम कुशल मनुष्यका सौपा जा सकता ह । इसा तरह ज्यादा धमका काम बतवान मनुष्यको सौप सकते ह और कम धमका काम निचल मनुष्यको त्रिया जा सकता है । वम तरहकी व्यवस्थास गारौरिक दोषवाके मनुष्यको भी उसस लायक काम सौपा जा सकता है ।

(४) धधकी जो श्रिया एन मनुष्यको करनी हो उस श्रियाको यदि वह सीख ले तो उसे काममें लगाया जा सकता है। इसलिए नव मनुष्यको धधा मित्रनस पहुँच बोझ काम सीख एनमें अधिक समय नहीं लगाया पन्ता और अधिक दिन तर उम्मीदवारी भी नहीं करनी पडती।

(५) पूजी उमानम बचत हानी है। एक धधका सारी श्रियाए एक ही मनुष्यका करनी हा ता प्रत्यक मनुष्यके पीछ उस धधके लिए आवश्यक हर तरफने औजाररका रीट रखना पन्ता है। लेकिन काय विभागक कारण प्रत्यक मनुष्यका उतन हा औजारसे काम चल जाना है जितने उसका श्रियाक लिए आवश्यक होने ह।

(६) जैसे जैसे एक धधसे सम्बन्धित श्रियाके विभाग और उप विभाग होने जाते ह वैसे वैसे प्रत्यक श्रिया बहुत आसान और आस मीचकर करन जमी सरल हो जाती है। इसलिए उस श्रियाक लिए महीनका उपयोग करना बहुत आसान हा जाना है। मनुष्यकी अपेक्षा महीनसे ही यह काम ज्यादा अच्छा और अधिक मात्रामें हा सकता है। इसलिए नय नय यंत्राकी खोज करनकी तरफ मन जाना ह और जस जैसे नय यंत्राकी खोज होती गाता हे वैसे वैसे कामके उप विभाग वन्ते जान ह।

ज्योतिषक काय विभागकी हानिया (१) काय विभागका बडीस बडी हानि यह है कि उसम मनुष्यक मनप्य न रकर महीन जैसे बन गात ह। किन्ता मनुष्यका अपन जोवनके जतम कन्ता पन्ता ह कि मन सारा जीवन पिनकी गणी बनानमें ही बिनाया। यह मनप्यके लिए कोई शीरवकी वान नहीं मानी जा सकती। उसन जीवनम क्या सीखा या जीवनका क्या ज्ञान मोगा ?

(२) मनप्यका जब एक पूरी वस्तु बनानी हाती है तब अपन कामका परिणाम प्रत्यक्ष देखकर उस अपन कामम आन आता है। एक सुतारको सारी मज खुद बनानी हो तब अपन काममें उसे जो आन आता है वह ज्ञान उसे उस स्थितिमें नहा जाता जब वन्तसी मेजाके एक खास भागके टक्को पर ही उस रत्न धमाना होता है। जन्म जन्म प्रकारके अपन ज्ञान और कुशाहताका एकीकरण करनमें जिस विचार शक्ति और याजना शक्तिका प्रयोग मनुष्यको करना पन्ता है उसके प्रयोगका ऐसा उपश्रिया करनवाकका भोज ही नहा मिन्ता। इसलिए उसका वस प्रकारकी शक्तियाका विकास नहा होता।

(३) मनप्यन यदि एक ही धधकी या धधके एक ही उप विभागकी कुशाहता बढाई हा और किसी कारणसे वह धधा टट जाय तो वह बकार

घन जाता है। और दूसरे कामकी कुशलता न होनेके कारण तथा दूसरी तरहस उसका विनास न हुआ होनेके कारण यह प्रश्न हट करना बहुत कठिन हो जाता है कि एस प्रकारका क्या काम लिया जाय।

(४) कामके इस तरहके उप विभागीय कारण मनुष्यको प्राय गतिमत्त दाहर काम करना पड़ता है। मान लीजिये कि चप्पल बनानेका काम पाच छह विभागमें घटा हुआ है। एसी हात्तमें पट्टिया बनानेवाला इस तरह काम करना हा चाहिय कि तले और दूसरी क्रियाए करनवागने साथ उसके कामका मेल बठ। दूसर लोग ज्याल गतिस काम करने हा तो उस भी उनके साथ तिचना पड़ता है। इसस भी अधिक ज्वरुन उपाहरण तो हम फाइ बपनीमें मोटरे जोडनेके कामका ऊपर दे चुके ह। वह काम एक बतारमें हाना है और उस बतारमें प्रति मिनट छह फुटकी गतिमे काम होता है। एर केद्रस दूसरे बद्र तक तेजीस काम होता रग आ रहा हा तब बीचम कोई मनुष्य दम लनको खडा रनना चाहे तो वह खडा नहा रह सकना। क्याकि आल बरसे काम ही उमे धकेरता आता है। जय हायके बजाय यत्रसे काम करना होता है तब इम तरलका तनाव अधिक पड़ता है। यत्र जिस तरह बर उसी तरह मनुष्यको चलना पड़ता है। हायकी कारागरीकी जम्हा यथाद्यागम मनुष्य पर कामक उप विभागका ज्याल बुरा असर होता है।

(५) कहा जाता है कि काय विभागके तत्त्वके कारण मनुष्य एक क्रियामें या एक विषयम निष्णात हो जाता है। ऐतिन यह साबनका बात है कि मनुष्य वधकी एक विज्ञाप उपनियाम या नानका एक ही गाम्भामें कुशल हा गाय तो वह जीवनके विकासने लिए इष्ट है या नहा। सच्चे कुशल मनुष्यका एक रगने इस तरह बणन किया है, वह हर वस्तुक मूल तत्वका जानता है और साथ साथ एकाध वस्तुके बारेमें निम्तारग सड-कुछ जानता है। एसा कुशल यक्ति अवश्य ही दुनियाक नान मण्णरम कुछ बद्धि बर सपना है। परन्तु आजकलने कुशल यक्ति एक उपनिया या उप विषयक बारेमें तो सय-कुछ जानत ह परन्तु बानी त्रियाआ और विषयान बारेमें धार अनान रखने ह। एसी कुशलता मनुष्यका रकुचित और बपमडूक जमा बनाकर दुनियाके लिए प्राय खतरलाव साबिन हानी है।

१५ सार यह है कि काय विभागक जा बहूनसे गम गिनाय जात ह उनका मवध केवल अपने उत्पादनकी बद्धिमे ही है। और उसमे हानिया ये ह कि उसके कारण मनुष्य पर अधिन तनाव पन्ता है उसकी गतिनया

कुटित हो जाती है उसकी विचार शक्ति और योजना शक्ति मर जाती है और बरारीकी स्थिति में वह लाचार बन जाता है। मनुष्यका हाथ पट्टा बना कर ता हम कोई शोधोत्पादन करना ही नहीं चाहिये क्योंकि अब आगिर मनुष्यके लिए है मनुष्य अपने लिए नहीं। अब साम्राज्य है मनुष्य-मुक्त साध्य है। इसलिए भाषन प्राप्त करनेकी नयी पद्धति ता हमें कभी अपनाती ही नहीं चाहिये जो साध्यक हिनम ही बाधक हो जाय। यह एक बात फिर ध्यानमें रखनी चाहिये कि किसी भी उद्योगका योनीसी बड़ी बड़ा त्रियाशामें ग्राह लिया जाय ता ऐसे काय विभागके हाथ नहीं हाती बहुत बार वह आवश्यक और वाञ्छनीय भा होता है। क्योंकि एक उद्योगम भी मनुष्यका दूसराकी मन्त्रका शरत पन्ती ही है। लेकिन आजकल त्रियाशामें जो बहुत ही छान छोट उप विभाग कर लिए जात है व हानिकारक है। यत्राकी जमे जसे तोज हाता जाती है वस वसे यह उप विभागकी सहाय्य बन्ती जाती है और यह मनुष्यके लिए अवश्य हानिकारक है।

प्रादेशिक अथवा भौगोलिक काय विभाग

१६ मनुष्योकी तरह अमक प्रदेश किसी विाप उत्पादन तथा धधके लिए विाप अनुकूल या योग्य हाते है। उष्ण प्रदेशमें जा वस्तुएं उत्पन्न हो सकती है व ठंड प्रदेशमें उतनी जासानीस उत्पन्न नहीं हो सकती। इमने सिवा पहाडी प्रदेशकी पदावार अलग होती है और समतल किनारेकी पन्वार जलग होती है। समतल प्रदेशमें भी जहा बरसात अधिक होती है वहा एक पदावार हाती है और जहा पानी कम बरसता है वहा दूसरी पन्वार होती है।

१७ विभिन्न प्रदेशाने आधार पर हानवात्रा यह बुद्धरती काय विभाग हमें स्वीकार करके हा चलना पडता है। पजायमें गहू और दालाकू के लिए अधिक सुविधा है और बगायम चावने के लिए अधिक सुविधा है। जन बहाक किसान इस बातका ध्यान रखकर ही सता करे है। मन्वारमें नारियलकी पदावार और उससे सबध रखनवात्रा धव ही मुख्य है। उन प्रदेशामें रहनवात्रा लोग अपना जीवन भी उसीके अनुकूल बना केते है। पजावियाका मुख्य भोजन गहू और दालका हाता है और बगालियाका मुख्य भोजन चावल और मच्छरीरा हाता है क्योंकि मछली वहा अधिक मिठ सकती है। मन्वारके गगारे भोजनमें नारियलकी विविध वानगियाका बहुत बडा हिस्सा रहता है।

१८ सतीने धधमें मनुष्योको कुशरत पर नितना आधार रखना पडता है उनना दूसरे उद्योग धधाम नहीं रखना पन्ता। अलन्ता यह सही है कि

दूमर उद्योग धंधामें भी जहा उनके लिए कच्चा माल यात्रवत् मित्र सक्ता हा कायकी लाहकी या दूसरी गानें नजदीक हा जन्वायु अनुपू हा और मजदूराकी बहुतायत हा उसी प्रयोग उस धंधेके बन्की अधिक मुविधा होती है। आजकल बहुत उद्योग ता बड पमाने पर यानी गहरामें बडे बड कारखानामें चलत ह। ये कारखाने जिस गहरके नजदीक कुम्हरी मुविधाए हाती ह वही सड हाने ह।

१९ हमारे गामें मूता कपडा उद्योग अहमदाबाद और बम्बईमें केन्द्रित हुआ है क्याकि पासके प्रदेशामि रुई बहुतायतस मिल सकती है। सनका उद्योग कलकत्तमें केन्द्रित हुआ है क्याकि मनकी पदावार बगालमें बहुत अधिक होती है। और लाहेका बहुत रजा कारखाना जमशेदपुरमें है क्याकि रोय और गेहकी पानें उमके पास ह। इस तरह अमृत उद्योगका विसा एक गहरमें केन्द्रित करनेके दूमरे भी कुछ लाभ ह। ये इस प्रकार ह

(१) कोइ उद्योग जिस गहरमें केन्द्रित हा जाता है उन गहरमें उन उद्योगने सवध रखलवा दूमरे उद्योग धंधे — जैसे उस उद्योगके लिए जरूरी मशीनें बनानके मगाना पुरज बनानके तथा मगानाकी मरम्मतके उद्योग — बाने ह। साथ हा कच्चे मात्की खरीद और पके मात्का बिक्रीका व्यापार तथा कारखानोंके लिए जरूरी स्टोर और दूसर सामानका व्यापार भी चलता है। अगर गहरमें एनाथ ही कारखाना हा ता इन दूमर उद्योग धंधा और व्यापारका बानेकी मुविधा बहा नही हा सक्ता।

(२) बहुतसे कारखानाक होनेस उनक लिए जरूरी रेल और डाक सारका काम व्यवस्थाए खडी करना मुविधापूण हाना है।

(३) एमे केन्द्रमें उड बन् बक खर जाने ह। उनके सिवा बहा गमर बाजार रू-बाजार जमे काम बाजार भा चल सकत ह।

(४) उस धंधसे सवधित विप कुलनावाल कारीगर और निष्णात बन बननर लिए आत ह और हर कारखानेका अच्छम अच्छ आम्मी पसल बनना अत्रार मित्रता है।

(५) उस धंधेसे सवध रखलवा विभिन्न यात्रिक और बजानिक कामका तालाम देनेकी व्यवस्था एमे केन्द्रमें का जा सकती है और तथा तथा यात्राको प्रोत्साहन मित्रता है।

२० यह तो एक प्रयोगे भीतरक प्राणिक बाय विभागकी बात ह। केवल इस तरहका बाय विभाग एक ह तत्र अत्र अत्र दगाकि बीचमें भा होता है। जिस दगाका जो मात् उत्पन्न करनेकी अधिक मुविधा हो रह

देग वही माल उत्पन्न करे और अपनी जरूरतका दूसरा माल दूसर दशासे जहा वह माल उत्पन्न करनेकी विधि सुविधाए हा मगाव। इस तरहकी व्यवस्था स्वीकार करनेमें ही सारी दुनियाका अधिनासे अधिक लाभ है इस तकको सिद्धातके रूपमें मानकर मुक्त व्यापारकी नीतिकी हिमायत की जाती है। इस नीतिकी सहारा लेकर इंग्लण्डन एतीको लगभग छाड दिया है और वह केवल औद्योगिक देग बन गया है। ऐसा करना इंग्लण्डक लिए हानिकारक सिद्ध नहीं हुआ क्यकि इंग्लण्डके अधिकारमें अनक उपनिवेश तथा खास करके भारत देश था। अपन किए आवश्यक मुरान और अपन कारखानोके लिए आवश्यक कच्चा माल वह अपन लिए लाभप्रद गतों पर इन उपनिवेशोसे और भारतसे ले सकता था और अपना तयार मात्र भा अपन अधीनस्थ देशाने बाजारोमें बच सकता था। विनापत भारतकी व्यापारिक लूटके बउ पर ही इंग्लण्ड अपनी यह नीति चला सका है। सब देगाको एसी सुविधा नहीं मिलती। यद्यपि यूरोपके दूसरे देगान भी इस तरहकी स्थिति प्राप्त करनेकी भरसक कोशिश की है परंतु इसमें उन्हें इंग्लण्ड जितनी सफलता नहीं मिली। इन सब देगाके बीच चलनवाली यह प्रतिस्पर्धा ही बार बार होनवाले युद्धोका कारण बनी है। पिछडे दो विश्व युद्धाने तो ह ह ही कर दी है। सत्य यह है कि कोई भी देग इस तरहका काय विभाग ईमानदारीसे और निस्वार्थ वृत्तिसे माननेको तयार ही नहीं। जहा किसी भी तरहका अनुचित लाभ उठानकी वृत्तिसे दूर रहनवाला और एक-दूसरेकी शक्तिको बढानवाला शुद्ध सहयोग चलता हो वही इस तरहका काय विभाग लाभदायी माना जा सकता है। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक यही रास्ता अच्छा है कि हर देग खास तौर पर अपनी प्राथमिक आवश्यकताओके बारेमें स्वयंपर्याप्त और स्वावशुबी बन।

२१ प्रादेशिक काय विभागके और अलग-अलग प्रकारके कारखाने अलग अलग शहरोमें केन्द्रित करनेके जो लाभ बताय जाते ह और जिनका उल्लेख हम ऊपर कर चुके ह उन पर भी यही नियम लागू होता है। इस बातकी भी जाच करनी चाहिय कि जब एक शहरमें एक उद्योगके बहुतसे कारखाने केन्द्रित हो जाते ह तब आसपासके प्रदेश पर उनका क्या असर पडता है। हमारे देशका इतिहास तो ऐसा है कि पहले इंग्लण्डन हम पर व्यापारिक आक्रमण करके हमारे गावोंके उद्योग धध नष्ट कर दिय। इस आक्रमणमें उसने हमारे शहराको और वहाके व्यापारियो और पूजीपतियोको बीचके दगल बनाकर रखा। ये ही व्यापारी और पूजीपति अब जरा अपन परा पर छड

होकर विदेशी व्यापार और उद्योगके साथ प्रतिस्पर्धा करके स्वयं वे उद्योग धर्म चलाने लगे ह। लेकिन हमारे गावोंको बगाल और तवाह करनेकी क्रिया जरा भी नहीं रुकी है। जैसे इंग्लैण्डके साथ हमारे देशका राय विभाग हमारे लिए हानिकारक था वैसे ही हमारे गावों और शहरोंके बीचका प्रादेशिक काय विभाग भी हानिकारक है। इसमें गावोंका भक्षण हो रहा है और केवल शहरोंका ही पोषण हो रहा है।

२२ हर प्रकारका काय विभाग — फिर वह समाजके अलग अलग वर्गोंके बीच हो, किसी उद्योगकी अलग अलग क्रियाएँ करनेवालोंके बीच हो एक देशके अलग अलग प्रदेशोंके बीच हो, शहरों और गावोंके बीच हो या एक देश और दूसरे देशोंके बीच हो — सभी लाभदायक होता है जब वह काय विभाग जिन जिनके बीच हो उन मनको बुरा पहुँचाय और सब प्यारा उससे ग्राम हो। वैसे हमारे परिवारोंमें सास-बहूना काय विभाग तो सबको मारूम है। सास-बहूना कहती है तेर घरमें आनेस अब ठम दो जन हो गये। अब हम कामका बटवारा कर लें। खाना तू बनाना और मैं खाऊंगा। विस्तर तू कर देना और मैं सो जाऊगी। जाज उद्योग अधामें आा बड हुए दशों और पिउडे हुए देशोंके बीच शहरों और गावोंके बीच पूजीपतिया और मजदूरोंके बीच मजदूरोंमें भी मुकादम और मजदूरोंके बीच, जमानार और किसानोंके बीच तथा समाजमें ऊँचे मान जानेवाले और नीचे मान जानेवाले वर्गोंके बीच इसी तरहका काय विभाग है। इस सारे काय विभागकी रचना शोषण पर कनी है। काय विभागकी बसौटी इन मापदंडों पर करनी चाहिये कि उससे किसीका शोषण न हो परन्तु सबका पोषण हो। इसी मापदंडसे काय विभागकी सीमा निर्धारित करनी चाहिये।

यंत्रोकी मर्यादा

१ यह यग यंत्राका माना जाना है। वस्तु तो मनुष्यन पहल पहल कुल्हाडी बनाई और अपने हाथकी शक्ति कई गुनी बढ़ा ली तभीस वह एक तरहके यंत्रका उपयोग करन लगा था। परन्तु ऐसे जितन साधना हथियारा या औजारकी मनुष्यन खोज की उन सबको गति देनक लिए मानव बल्का अथवा मनुष्यके पात्रे हुए कुछ जानवराके यंत्रवा ही उपयोग होता था। इन सब साधना या औजारकी गति देनके लिए भौतिक शक्तिकी — भाप और विजलीकी खोज हुई उसके बाद उत्पादनकी पद्धतिमें और मनुष्यकी आर्थिक तथा सामाजिक स्थितिमें बहुत बनी प्रगति हुई है। मानव जातिके आर्थिक जीवनमें जितन परिवर्तन तीन चार हजार वर्षके इतिहासमें हो सके ह उनमें वही अधिक परिवर्तन इन खोजके कारण पिछले डेढ़ सौ वर्षोंमें हुए ह।

२ सन् १७६९ में जम्स वाट नामके अग्रजन अपने खोज हुए भापस चक्कनवाक एजिनका पेटेंट कराया और सन् १७७५ में अपना एजिन अच्छी तरह चलाकर समाजके सामन रखा सन १७८५ में वाटन और बुननकी मशीन वाटके एजिनसे चकन गयी। सन १८०२ में फोथ और ब्रगाइड मशीनकी नहरोंमें पहली स्टीमबोट चली। सन् १८२४ में रेलका प्रथम एजिन चालू हुआ और सन् १८३७ में पहला स्टीमर या जहाज एटलाटिक महा सागरके पार हुआ। इस तरह इस आधी शताब्दीमें भौतिक शक्तिने विविध उपयोगके कारण यंत्रयग आरम्भ हुआ। तरह-तरहकी भौतिक शक्तियाको अधीन करके उपयोगमें लानकी विद्याको यंत्रविद्या कहा जाता है। इस विद्यामें इस यगन खूब प्रगति की है। किसी भी देशकी सम्य कहलाना हो ता उसे अपने उद्योग धंधोंमें यातायातके साधनोंमें और जीवनके दूसरे व्यवहारोंमें यंत्राका उपयोग ब्यासभव बगते जाना चाहिये। इसे आवश्यक और वाछनीय माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि किसी भी समाजकी अपना जीवन स्तर ऊंचा उठाना हो तो यंत्रका जोसरा लनसे ही यह संभव हो सकता है। यदि आम जनताके सुख और कल्याणके गजसे ही इन सब परिवर्तना और मायताआके अभिमानका माप निकाला जाय तो यह मान केना कठिन होगा कि दुनियाको उनस बिनाप लाभ ही

हुआ है। यंत्रमें ग्राभ अद्वय हुए हैं लेकिन कुछ मिलाकर हाथ अधिक हुई है। इसका विचार करके हमें यह निष्कर्ष करनेकी आवश्यकता है कि हमारे लिए जहा जहा मभव हां बहा बहा यंत्र जारी करना अच्छा है या यंत्रकी कोई मर्यादा निश्चित कर लेना जरूरी है।

३ यंत्रका व्यवस्था इस प्रकार है

(१) यंत्रके उपयोगमें मनुष्यकी उत्पादन शक्तिमें बहुत बड़ी वृद्धि हुई है। खेतीके लिए मनुष्य सिर्फ टुट्टागोले चोकर ही जमान तयार कर इसके बजाय यदि वह यंत्रकी मददमें हल चलाकर जमीन जाने ता बहुत ज्यादा काम कर सकता है। लेकिन यदि वह सादे हलके बजाय ट्रैक्टर काममें ले, तो वही अधिक जमीन जल ही समयमें जान सकता है। मनुष्य हाथ-करघ पर जितना कपड़ा बुन सकता है उसकी अपेक्षा भीतिक शक्तिसे चलनेवाला तरघा (पावर लूम) चलाकर बहुत अधिक कपड़ा बुन सकता है। यंत्रकी इस तरहकी सहायतामें दुनियाके उत्पादनकी मात्रामें आज बहुत बड़ी वृद्धि हो गई है, और पहले जमानमें जो चीजें राजा महाराजा और जमींदार लोगका भी दुर्लभ था उन्हें आज साधारण मनुष्य भी काममें लाने लगे हैं।

(२) यंत्राने मनुष्यको जोर पगुआका जी-नोड महलनमें मुक्त कर दिया है। गहरामें ऊंची इमारतें बनानेके लिए बनी बड़ी बजनदार चीजें ऊपर चढाने समय या मालके भरे हुए जहाज खाली कराने समय मजदूरका पहल लगाता जा बनी मेहनत करनी पन्ती थी वह अब नहीं करना पन्ती। चाकस वष पहल बरईका ट्रामामें जो छोटे जोने जाने थे तब बहुत बरवान घोड भी एक वषमें बकार हो जाते थे यह बात अब नहीं रही।

(३) कितना ही मानव-बल या पगुआ एकत्र करने पर ना जो भारा काम उससे कभी नहीं हो सकते थे वे काम आज यंत्र कर सकते हैं। उदाहरणके लिए भीतिक शक्तिसे चलनेवाला फीलान्नी या तीन फुट मोट गान्को इस तरह बुचल डागता है तब वह बार्द मुलायम मिट्टी हा। इसी तरह मनुष्यन कभी नहीं हानवाये अत्यंत शारीक काम भी यथस हो सकते हैं उदाहरणके लिए एक इत्रक बगोडवें हिस्सकी माटाइ भी यंत्रमें नापी जा सकती है।

(४) यंत्राने एक ही माप और एक ही तरहका धातुका मात्र तेज गतिमें बनाया जा सकता है।

(५) मालकी जाति और माग एकसे हानक कारण एक बारके लिये हुए नमून परसे दर दूरक व्यापारियाको तार या डाक द्वारा भाव ठहरान और सौदा करनेमें सुविधा होती है। इस सुविधाक कारण बड़ व्यापारको बहुत प्रास्ताहक मित्रता है। साथ ही एकसे निश्चित मापका मात्र उत्पन्न किया जा सकता है इसलिए मनीनके पुर्जे पहलेसे तयार रख जा सनत ह और जब जरूरत हो तब मिल भी सकते ह। उदाहरणके लिए साइबिर, मोटर पथ या टूरिस्टक पुर्जे।

(६) यातायात और सभ्य भजनक साधनामें जो अद्भुत प्रगति हो गई है उसके कारण देग और कालका अन्तर बहुत घट गया है। मानो हमारी पृथ्वाका गोला वस्तु छाटा हो गया है। अहमदाबादसे मूरत घान गाडीम जाना हो ता ४-५ दिन लगेंगे। आज रलसे लोग ५-६ घन्में मूरत पहुच जाते ह और हवाई जहाजमें जाना हागा तो आध पौन घटमें ही पहुच सकते ह। इण्डसे हिन्दुस्तान आनम नावम ४-५ महीन लगते थ स्टीमरमें १५ दिन उगन ग्य और विमानमे १-२ दिनमें चले जाते ह। इसक अगवा तार व टेलीफोनसे ससारके किमी भी भागमें एक दो घटक भातर सारे समाचार घूम जाते ह। इस कारण यात्राकी जोर उसक जरिय पान और अनुभव प्राप्त करनेकी एक जगहसे दूसरी जगह मात्र ले जान लानकी और व्यापार रोजगार करनेकी सुविधाए बहुत बं गई ह।

(७) यत्रासे अखबारा मासिक पत्रों और पुस्तकामें जो शिक्षा और प्रचारक बहुत बड़ साधन ह अपार बढि हुई है। इसके अलावा रेडियो ब्रॉडकास्ट और सिनमा भी लोक शिक्षणमें बड़ बड़ी मदद देते ह और जाज यदि पूरी तरह मदद न दे सकते हो तो भी बे साधन ऐसे बनाय जा सकते ह जिससे इनका अच्छा उपयोग करके अच्छी मदद ली जा सके।

(८) यत्राकी मददसे हुई बानिक शोधके कारण रोगका निदान और उनका इलाज करनेमें बहुत सुधार हो सके ह और इसीलिए पहले असाध्य माने जानेवाले रोगका इलाज भी जाज अच्छी तरहसे हा सकता है।

(९) हमार रोजके व्यवहारमें पानीकी, गटरकी बिजलीकी रोगनीकी बिजली और गसके चल्हकी ट्राम और बस आदिकी सवारीकी जोर टेलीफोनकी सुविधाए यत्राक कारण ही उपलब्ध हुई ह। ऐसी सुविधाए पहले बड़ गहराम ही मिलती थी परन्तु अब छोट गहरोम भी मिलन उगी ह।

पिजगावा रागनी और पानीके नल गावामें भा पहुंचने गे ह। रेल और मोटर ठेठ दूर दूरक बानाक गावा तरु पहुंच गइ ह।

(१०) कुठ ऐम मनुष्य भी जिनमें विचार करनेकी या बुद्धिका उपयोग करनेकी शक्ति ही नही हानी यत्र पर काम करके जाविका कामा सकते ह।

४ अत्र हम यशोवा उत्तरपथ प्रस्तुत करग

(१) यशोवा मन्दस जर्घोपादन वरु मरता है इसमें कोई गका नहा। अत्रिन एक नये यशकी राज हानक कारण पढ़के जिन काममें १० मनुष्य गत थे वह अत्र एक मनुष्यम हो सकता है। अत ० मनुष्य बेकार हा जान ह। इस सामाज्य कथनका हमारे दगमें कपडेके उद्योगमें जो स्थिति पया हूर है उसमें पूरा समथन हाता है। यह हिमाक गगाया गया है कि जत्र नमारा देग कपडेके वारमें पूरा स्वावग्या या तत्र बीम लाख हाय करध करते थ। हमारा यशोकी कपडेकी मिगामें आज गभग ८ लाख मजदूर काम करत ह और उनस हमारे मार देगका आवश्यकताका लगभग पूरा कपडा उत्पन्न हा जाता है। इन ८ लाख मजदूरामें पाजना कानना बुनना, रगना छापना और धाना—सत्र प्रकारक काम करनवाले आ जात ह। नमारे कपडेकी आवश्यकतायें आज बढ गइ ह। इसलिए इन आवश्यकताका हाय-करधम पूरा करना हो ता नीम लाख हाय-करधे चरने चाहिय। कपडेका मिलाने ८ लाख मजदूर हमारे ताम गग जुगहने अगसा बुनाइक काममें लिनक अमुक हिम्ममें सहायता करनवाली उनकी श्रियाका इतने करधके लिए मूल कातनवाल बहुत बड बगका और पिजार धाना रगरेच तथा चरने बनानवाल मुतारा आदिको प्रकार बनाने ह।

हमारा देग उद्योग धधाके वारमें पिठडा हुआ माना जाता है। और यह भा माना जाता है कि नमारे दगकी आवाजी बहुत अविन हानक कारण उनम प्रसारीके लिए अजराग रहेगा ही। परन्तु इगण्ड जसे उद्योग धधामें आगे बढे हुए तथा एज ही समयम मारे जगतवा कारखाना बन जानवा और गूठ कष आग्रादीवाले दगमें भी आवालाक श्रियाक बहुत बग प्रसारी परम पठ हुए रागकी तरह एक गमस्या बन गई थी। थी नमारे लिए लिखा है कि यत्र सारा तक दूसरे महापुढक पढ़की स्थितिको ध्यानमें रखकर रिया गया है।

(२) यत्रस उत्पादन वग जरूर है अत्रिन यह साचनकी धान है कि कमी कामा चीजाका उत्पादन वग है। जाउनकी बडीते वग आगमयता

अन्न है ऐकिया उनका उत्पादन बहुत नहीं बना है। उत्पादन बना है फमी कपडना दूसरी मौज गौकवी चीजाया गराम और दवाआका तथा यद्धक गस्त्रास्त्राका । और य उपादन ह्मसे ज्याग बडा है । आज किसी भा अखबारकी तोलकर देखें तो उसमें कस विनापन पाय जाने ह? हर कपडकी मित्र अपन फमा कपडका विनापन छपवाता है। दवावाग गभिनकी दवाआके और गरीरकी गुन्टर उनानभ सचिन विनापन देने ह । अग्रजी अखबार गर गोरस गराम जीर मिगरेग्न विनापन देते ह । मुगधित तेउ पामग रूयपस्ट सानुन आन्विके विनापन भी बनी सख्यामें देगनमें जात ह । इतन अधिक विनापन ही यह बना देते ह कि य चीजें स्वाभाविक आवश्यकताकी नहीं ह । इसागिए शूठ प्रग्नेभन दकर आवश्यकतायें उत्पन्न करनका प्रयत्न करना पन्ता है । सारे यथाद्यागी देश अपन अतिरिक्त उत्पादनको दूसरे दगामें बचनने गिए जापमम प्रतिस्पर्धा करते ह । इसका परिणाम यद्धके रूपमें आता है । इसने जलावा युद्धके गस्त्रास्त्र बनानवाके कारमानगार भी यद्धकी राह देखते रहत ह । एग तरह यह अधिक उत्पादन युद्ध और विनागवा कारण बन जाता है ।

यथासे होनवाके अधिक उत्पादनक कारण घनवान बगम जो अपन साधियाके साथ पुरान जमानके राजा महाराजाआ जीर अमीरसि कुछ बना है मौज गौक और भोग विनासनी चीज बनी ह । परन्तु आम गगाकी दरिद्रता एस अधिक उत्पादनसे कम नहा हुई है ।

(३) इम गरुत तरीकसे होनवाके आवश्यकतासे अधिक उत्पादनके कारण आजका जमाना पागगकी तरह कुन्रती साधन-सपत्तिना तेजीसे विगाग कर रहा है । इसने विरद्ध कुछ बज्जानिका जीर अकगास्त्रियोन बहुत गभीर चेताबना देना गरू कर दिया है । वे ब्हते ह कि मानव इतिहासके आरभस गकर १९ वी गताग्विके जन तक जितन खनिज पन्थोंका हमन उपयोग किया होगा उसस बहुत अधिक खनिज पन्थोंका हमन पिछके चाग्रीस बर्योंम उपयोग कर डाग है । कायग तेउ गौहा तावा आदि खनिज पन्थ एसे ह जिह जमीनके नीतर तयार होनमें हजारों बल्कि गला बप लगते ह । य चीजें हम जितनी तेते ह उतनी हजार दो हजार बपक हिसाबसे गिनें तब तो सदाके लिए कम हो गई कही जायगी । पिताकी पूजी उग दनवाके अपब्ययी पुनकी तरह हम इन चीजाया उपयोग करने लग ह ।

मिनरल रिस्सोर्सेज फार फ्यूचर पापुगान (भावी सतानके गिए खनिज सपत्ति) नामक पुस्तकमें कहा गया है कि खनिजो सम्बन्धी जानवारीसे

मालूम होता है कि थोड़े ही समयमें खनिजाती मात्रा घट जायेगी अथवा जमीनमें से उह निकालनेकी कीमत बेहद बढ़ जायगा। आज जिस मात्रामें हम खनिज पदार्थोंका उपयोग करते लगे ह उसी मात्रामें उनका उपयोग यदि होता रहा ता वतमान जनसंख्याके लिए आवश्यक मात्राम खनिज पदार्थ मिलना थोड़े समयमें बहुत कठिन हो जायगा।

और यह ध्यानमें रखनेकी बात है कि इतना बड़ा उपयोग इन पदार्थोंका मारे मनुष्य-समाजके सुख या हितके लिए नहा होना बल्कि थासे मनुष्यके भोग विलासके लिए और एक-दूसरेके सहारके लिए हाता है।

दूसरी कुछ कुदरता संपत्ति ऐसी है, जो हमारे काममें ठावे पाइ वप बाल फिर उत्पन्न हो सकता है। जमे लकड़ी बाम बगरा। इनका भी बिना विचारे विगाट करनेमें यन्त्राका बहुत बड़ा हाथ है। अमरीकाम प्रतिवष जितने पेड़ उगाये जा सकते ह उनसे चार गुन अधिक पेठ कागज बनानेके लिए ठकड़ी और बास प्राप्त करनेमें काट डाले जाते ह। इस हिसाबसे तीस वषमें वहाके सभी जंगल साफ हो जायगे। और छापनकी कला जैसे जैसे प्रगति करनी जाता है वैसे वस हम कागजका अधिक विगाट करते जात ह। युनाइटेड स्टेटसमें जो कुछ छपना है उसका आधा भाग विजापनासे सम्बन्ध रखता है। सामान्यत अखबारामें ४० से ७५ प्रतिगत म्यान विजापन ले लेते ह। न्यूयार्कके एक अखबारके कागजके लिए लकड़ीका जितना भावा चाहिये उसके लिए प्रतिवष दो हजार एकड़ जंगल साफ हो जाता है। यह हिसाब लगाया गया है कि डाकूम जितना चीन पडनी ह उनका ८० प्रतिगत भाग विजापना और प्रचार-साहित्यका हाता है। उसमें से बड़ा हिस्सा तो पत्ते बिना ही रट्टीकी टाकरीमें फेंक दिया जाता होगा। अमरीकामें खती मशीनासे होती है। इम वारम ३० रसम स्मिथ कहते ह हम दुनियाके दूसर देशोंकी अपेक्षा जमीनका कम बहुत ज्यादा रूट रहे ह। और ऐसा करके हम अधिक सबनामको योन रहे ह। खानिक अथवास्त्रमें मि० प्रग कहते ह "किसी भी ऐसा मन्वृत्तिवा जा लय समय तक टिकना चाहती हो, अपना पजा और गकिनक जमा-खचन पढे समान रखना सीखना चाहिये अर्थात् पानी हवा और मूयके अटूट गकिन भंडारमें न प्रतिवष जितनी मित्र सक उतनी हा गकिन उम खच करनी चाहिये।

(४) अधिक उत्पादन और उमकी वियोकी पातक प्रतिस्पर्धाना एर बहुत बुरा परिणाम यह आ है कि मालनी जाति जिनादिन ज्यादा हल्की

होती जाती है। इसका एक कारण यह भी है कि अनजान ग्राहकोंके और अनजान बाजारके लिए मात्र तयार करनेवाले कारखानदारकी वृत्तिमें और जान हुए तथा प्रतिदिनके ग्राहकोंके आदरके अनुसार अथवा स्थानीय और जान हुए बाजारके लिए माल तयार करनेवाले कारीगरकी वृत्तिमें बड़ा भ्रम होता है। एक कारखानदारने एक सभामें कहा था कि हमारी नीति पहले मालको आवश्यक बनानकी जाती है बादमें सस्ता बनानकी और अन्तमें उसकी जाति और टिकाऊपनका विचार करनेकी होती है। इस एक वाक्यमें आजकलकी सारा व्यापार दुनियाका मनाभाव प्रकट होता है। और जहां उत्पादनका सारा स्तर ही इस तरहका हा बहा अच्छा, टिकाऊ विनाय मुविधावाग और खरा माल बाजारसे मायब हो जाय और उसकी जगह पर कमजोर हलका नकली और हानिकारक माल बाजारमें भर जाय तो इसमें आश्चर्यकी कोई बात नही। हानिकारक इसलिये बढ़ा गया है कि आज कल खानकी चीजमें धाखवाजी और मिलावट बहुत बढ़ गई है। गहरा और गाबोम गुद्द और अच्छा घी-दूध किसी भाग्यवानको ही मिल सकता है। घीमें वनस्पति घीकी जो तेलका बना हुआ हाना है मिलावट होती है तिलके तेरुम मूगफलीका तेरु मिला लिया जाता है। और गहूके बने बाजारसे आटा लायें तो हूके अनाजके आटकी मिलावटवाला आटा मिलता है।

इस सार जरूरतसे ज्यादा और नकली मात्रको बचनेके लिए आखोंमें धूल धाकनवाले विनायन मोहक पविंग और सेक्समनीके अनक प्रकारकी यकिनयावाक झूठ प्रचार—इन सबमें जो गलत खच और विगाड होता है सो तो जल्ग ही है।

(५) अब हम इस बातका विचार करें कि यत्र पर काम करने वाले मजदूरोंके शरीर और मन पर कसा असर होता है। बने कारखानामें बने और गरम हवामें तथा मशीनोंकी भयकर आवाजोंके बाव घणों तक लगातार काम करनेके कारण मजदूरोंके शानतनुआ पर बहुत जोरका तनाव पडता है उनके शरीर निबल हो जाते हैं और इसके फलस्वरूप उनका आयु घट जाती है। इसके सिवा यत्र पर काम करनेसे मनुष्य अधिकतर यत्र जैसे बन जाते हैं। जैसे जैसे यत्रविद्यामें प्रगति होती जाती है वैसे वैसे एक एक उद्योगकी अलग अलग क्रियाओंके अधिकाधिक उप विभाग होने जाते हैं और हर क्रियाको ज्यादासे ज्यादा सादी सरल और एकसी बनानकी तरफ झकाव बढ़ता जाता है। हर क्रियाको पूर प्रूफ यानी जिसमें मूल मनुष्य

भी भूल न कर सके इसी वनानकी कोशिल की जा रही है। यदि इस तरह एक ही क्रिया सारे दिन और जमनर करनेवाला मनुष्य बुद्धिमान हान पर भी मूय बन जाय तो इसम आश्चर्य क्या है ?

इस तरह जगानार एक ही काम प्रतिदिन करत रहनसे मनुष्यमें जडता आती है। इसका एक प्रमाण यह भी है कि कारखानके शीरगुलमें काम करनेके बाद मन बहलानके लिए कोइ शात या सौम्य मनोरजन उसे अच्छा नहा लगता। उसकी भावनाए इतनी जड हो जाती ह कि जारलार नाच मछपान सिनेमाके सनसनी और कपकपी पदा करनेवाले दश्य — इस तरहकी अत्यंत उत्तेजित करनेवाली चीजमें ही उसे आनंद आता है। इसक सिवा उमका सामाजिक बलिया भी मर हा जाती ह। उसवे जीवनम से यह विचार चला जाता है कि हमरेकी भावनाओ और मुख सुविधाआकी हमें परवाह करनी चाहिये। और इस तरह वह समाजक लिए अमुविधाजनक और भाररूप बन जाता है।

(६) यन्त्राजागावाले दगाक मजदूराम रोगाकी — खास तौर पर मानसिय रोगाकी — मात्रा बडी है। बहुतसे मानसिय रोग तो बेकारीके कारण होते ह और बेकारी इन यन्त्रोका सीधा और बडा परिणाम है। बेकार मनुष्य घर बठा बठा ही मित्तास इतना मूख जाता है कि उसका मिमाग कमजोर पड जाता है। कुछ काम — जमे टीन या बौयलेकी खानाके भातरका काम, गटरोके अदरका काम और गराव बनानवाले कारखानामें किया जानेवाला काम — गरीरको नुकसान पहुंचानवाले हाने ह। और एम घषामें मृत्युकी सख्या अधिक हाती है। सबसे अधिक प्राणघातर चाज दा ह — (१) गराव (२) घल और धुआ। ये दोना चीजें मानो बने कारखानामें काम करनेवाले मजदूरके जीवनके साथ मदाके त्रिण जुड जाता ह। घूल और धुआ यत्रके साथ जाते ह और गराव यत्रके कारण आती है।

(७) और इस गारीरिक हानिमे भा बडी हानि तो यह है कि मनुष्य म्दय जो काम क्या करता है, उममें जो तापीम उमे मिलनी चाहिये तथा जो आनंद और सन्तोष उमे अनुभव होना चाहिय वह इस यत्र पर किय जानवाल कामसे उही हाता। मर सवपत्री राधाकृष्णन कहत ह बडी मित्रो और बडे कारखानामें काम करनेवाल हमार आगाम स बहुताका कलाका मजन करत और उमका आनन्द उनकी शक्ति और स्फूर्ति नष्ट हो गद है। पुरान जमानक सुनार और राजका आञ्जकलकेमे राजनीतिक अधिकार कम होने थ बेगन और मुल-मुविधाए भी पायद

कम भिन्ती हागी फिर भी वे आजके गुनार और राजस अधिक गुनी य क्याकि उह अपन काम धधमें आन मिलता था। उह मतपेगीके पास जाकर मन नही देना होता था इसलिए हमारे आजके कारीगर— जिहें मत देना अधिकार है— कह सकने ह कि व तो गुलाम थ। त्रेकिन उनर काममें उनके जीवनका आन प्रग होता था। प्रत्यक सिगावट या राज गुहार या गुतार एक ब सहयागी समूहका सन्स्य होता था और उस छोटी आयुस ही अपन धधकी कुजियोका पान कराया जाना था। सौत्यरा सजन करनकी तीव्र इच्छा उमके मनमें सर्वोपरि होनी थी। आजकल एक धधके कई विभाग हो गय ह और एक एक मनुष्य एक पूरे धधके वजाय उसकी किसी रास श्रियामें ही निष्पान होता है। इस कारण कारीगराको अपन धध और कर्ग-कौशलका जो अभिमान था वह जाता रग। अब धधा एक बाजार चीज बन गया है।' (हिंदू जीवन-गान पृष्ठ ११६-११७)

(८) इस यत्रयुगमें हमारे उपयोगकी चीजें जस जसे हमें अधिकाधिक मात्रामें तयार भिन्ती जाता ह वसे वसे अपन आसपासकी परिस्थितिमें से साधन और सुविधाए पग करके अपनी आवश्यकतायें पूरी कर ेनकी हमारी शक्ति कम हाती जाती है। गहरामें विपुत्र साधन-सामग्री और सुविधाअके बीच रहनवालेको गावमें कुटरनके नजरीक और कुटरती ढगने रहनका मौना पान पर उसके वसे बुरे हाठ होते ह यह बहुतान दखा होगा। इस तरहके बुरे हाठ र हा इसके लिए स्काउटकी ताश्रीममें हमें इस तरहक कगस चलान पडते ह। पड़े जो कुटरती तीर पर भि सक्ता था उस जुटानके लिए थव बडी योजनाए बनाना पडती ह। एक बहुत ही छाटा उदाहरण लें। गस या विजलीका चूल्हा जगानवालेको अगाठीमें आग जलाना नही जाना था वटन दबाकर रोगनी करनवालेको त्रियाम-गसे दिया जगाना नही जाना यहा तक स्थिति पडुच जाती है। यत्राक कारण हम अपन हाथामे काम नकी कला और बनावटी साधनोकी मन्थ विना कुटरती परिस्थितिम रहनकी शक्ति खो बठ ह और अधि काधिक अपग बनने जा रह ह।

(९) इस यत्रयुगमें गहर विस्तारमें और सख्यामें दिनान्ति बन्त जात ह। एगा कहा जाता है कि गहरामें सुख और आरामके साधन खूब ब गये ह। परन्तु उनका गम गहरव ऊपरी बगके श्रामाको ही मिलता है। बाकीके अधिकाग श्रामाक भाग्यमें तो गहरकी कगाली और गनी भोगना हा लिखा

होता है। और सुख-सुविधाओंमें भी तरह तरहकी पेटण्ट न्वाए साबुन लॉगन टूथपेस्ट हजामतना मामान गामोफोन रेडियो मिनमा टाम मोटर वन, विजलीकी रोगनी आदि ही बन् ह। परन्तु क्या उन ऊपरी वगवा भी ताजी पौष्टिक और गुद्ध पुराक अधिक मिलता है? और क्या उन सारी सुख सुविधाओंके साथ साथ मजदूराक गदे बापड गरावकी लुकान गदा और बीमारी फलानवाला खाना देनवाले होटल वैश्याघर डाक्टर अस्पताल दुघटनाए—ये सब भी नहीं बन् ह? और गहराम गोरगल और कान फोन्तवाला जावाज कितनी ज्यादा बढा ह? इनके कारण जानतनुआकी कमजोरीसे दुन्य भोगनेवाले मनप्योकी सट्या बन्ती ही जाती है। घुएकी तकलीफने मार गहरोमें न्वासोच्छ्वासके राग भा बन्ते जाते ह।

(१०) विनागरकी खोज और तरह-तरहके यत्राक उपयोगस आक्लका युद्ध-पद्धतिम क्रांतिकारी परिणत हो गय ह। युद्धनी गन्त-सामग्रीम आक्रमण और विनागर माननाकी जितनी यो और प्रगति हुइ है उसके हिसानमे बचावके साधनाकी खोज और प्रगति कुछ भी नहा हो सकी है। पहलेने युद्धाम साधा हिम्मा लेनवाके सनिक ही घायल हाने या मरत व। लेकिन आजरके युद्धमें रणभूमिस दूर रहनवाक सनिक लोग—बच्चे बूटे बीमार और स्त्रिया कोइ भी सुरक्षित ननी ह। जिम सम्पत्तिके निर्माणम बरसा ग्य ह। उसका पर भ्रम नाग किया जा गयता है।

उपसंहार

५ लखिन यत्रकी इन सब वुतागके कारण बढा जाता है कि ये सत्र यत्राके दुस्प्रयोगके परिणाम न। आज यत्र पूजीपति वगके हाथम होनस य मत्र बुराइया पदा होनी ह। परन्तु यत्रा पर समाजवा अधिकार म्यापित कर लिया जाय और उनका उपयोग समाजके कल्याणके लिए ही किया जाय तबके लिए नहा बतिक लागाना जिन बाजाका वास्तवम जम्न हो उनके उत्पादनके लिए ही यत्र उगाये जाय ता ऊपर बनाई हुइ बन्तमी बुग्या टानी जा सकनी ह। उत्पादनके लिए उत्पादनस नियमा करके निजामी नुरसान पबानबानी भयवा इतिरिक्त बीजाना उत्पादन और उसके निर्मितमे हानयान विगाड गयता जा सकता है। जनताकी आक्परताआका अन्तज लगान उमक अतुमार उत्पादन किया जाय ता विनागनाका मघ

क्या यत्र गहा जा सकता है कि यत्रयुगस पहेलेक समानम रास्ते और मानन अधिा स्वच्छ और हवा प्रवाणवाले थे?

आप्तिया और दंगलासा नफा तथा उत्पादका और व्यापारियाने बीचकी प्रतिस्पर्धा भी राकी जा सकती है। मजदूराने कामके घण्टे घटाय जा सकते ह जेह र नका अच्छे मान लिये जा सकते ह और अय अनक तरहसे उनकी स्थिति सुधारी जा सकती है। यह बात मान लता भा कुछ बुराया तो यत्रकी जडमें हा भरो ह और वे मिटाइ नहा जा सकता। उदाहरणके लिए मनुष्यन जीवनमें जहा तहा यत्र धुम गय ह एसलिए सारे जन समाजका यत्राने निष्णात-यग पर ही निर्भर राना पता है। हर चीज तयार मित्र जानम मनुष्यकी बुदरती गक्तिपाय विनासक लिए गजाइ नहा रहती — बुदरतके पास रहनवाल मनुष्यन का थम सहन करनकी जा गक्ति और किसी भी नइ स्थितिका सामना करनकी जा सूझ-बूझ हाता ह वह यत्र-संस्थितिमें नष्ट हा जाती है। फिर यत्रा पर जा योग काम करत ह उनमें स अधिकतरको अपने कामसे जा गिशा और आनन्द मिठना चाहिये वह नहा मिल पाता। इससे भी उनकी गक्तिया कुठिन हो जानी ह और उनका जीवन नीरस बन जाता है। जब तक यत्राका कायलेवे बिना चलानकी युक्ति हम खोज नही लेते तब तक धुएके कष्टसे नही बच सकते। फिर बड यत्रा रेखा और हवाई जहाजके साथ गारगुलकी तकलीफ ता अनिवाय रूपमें लगी ही हुई है। यत्र-संस्थितिका एक अपरिहाय ळक्षण यह है कि उसमें जीवन उतावलीवाला किसी भी तरहकी निश्चितता तथा गतिसे रहित और धाधली भरा हो जाता है। उसका कारण दुषटनाआ और मानसिक रोगाकी मात्रा बन्ती जानी है। यत्राके साथ जुडी हुई एक अनिवाय बुराइ यह भा है कि उनके कारण कुन्तरी साधन-संपत्तिका बहुत अधिक बिगाड होता है और यद्धम यत्राके उपयोगसे बहुत बड पमान पर बरवाने होना भी अनिवाय है।

६ हम यत्राके लाभ और बुराइयाका विचार कर चने ह। उनके जो लाभ बताय जात ह उनमें समाजका शुद्ध लाभ ही हो सो बात नहा। इसी तरह उनकी बुराइयामें से कुछ एसी ह जो टाठी जा सकती ह और कुछ एसी ह जो टाठी नही जा सकती। इसलिये एसे चर्चा परसे एतना तो निश्चिन हो ही जाता है कि हर कही यत्राको दाखिल कर दना अच्छी बात नही। एसी तरह यनमात्रका बहिष्कार कर देना भी अच्छा नही। ऊत इस बातका विवेक करना चाहिये कि कहा यत्राको दाखिल किया जाय और कहा नही। किसी भी धधमें यत्र दाखिल किये जायें उमम पहलू यह विचार करना चाहिये कि यत्राके उपयोगसे उम धधमें गे हुए मजदूराने

पर क्या अमर हागा ? और उमके सामाजिक और आर्थिक परिणाम क्या आयेंगे ? यदि यत्र दायित्व करनेमें मजदूर रेकार हा जात हा ता उनकी बकारी दूमरी तरह दूर की जा सकती है या नहा ? मान ल कि बकारी था समयमें दूर का जा सकता है ता बकारीक समयमें इन मादूरके निर्वाहकी जिम्मेदारा जितके गम्भक लिए यत्र लगाये गय हा उन पर डागै जा सकता है। क्विन बकारी स्थायी बनता हो ता इस बनी हानिकी तुम्नामें यत्र दायित्व करनेसे हानवाला ठाटा गम्भ छा देना चाहिये। फिर यह विचार भी करना चाहिये कि यत्र दायित्व करनेसे हायकी बारागरी और क्या पर तथा उन यत्रका चलानका मनुष्यके मन और शरीर पर क्या असर हागा। अगर हमकाके लिए खराब असर हाता हो तो ऐस उदाहरणमें हम यत्रका माह टाट देना चाहिये। सक्षपमें किसी भी घघमें यत्र शक्ति करनेसे पहल यह जान कर नी चाहिये कि उमसे मनुष्यके जीवा पर क्क मित्राकर बुरा असर हागा या अच्छा।

७ आज दुनियामें यह स्थिति हो ग है कि प्रचलित आर्थिक विचार प्रशास्त्रियामें मित्रु मित्र जीर नजान लगनवाठ उपायान काम रेकर भा यदि हम था समयमें मय-व्यापक बनी हुइ उकारीका बुराईका दूर न करेगे तो यह यत्रयुग नका ही काशिया जीर युद्धाना जम कर हमारा सवनाग कर डागा। जित ह तत्र यत्र समाजक सभी उर्गोना जित साधनेका साजन बनने ह उय हद तक वे स्वागत करत गयक ह। परतु यत्राने कारण यत्राद्योगामें जाने ब हण देगामें तथा इन देगान यत्राद्योग गायणके गिनार बन हण नय उपनिवेशा जीर यत्रोयोगामें पिउउ हण गेगामें य यत्र गला गही बरिक् करागका बेकारी और शरीरान कारण बन जात ह और क्कलिए मयतर अभिगापना मय क गत ह। अतमें हम यह सूत्र या रचना चाहिये कि यत्र मनुष्यक गिण म मनुष्य यत्रक लिए नहा । इसलिए यत्रका स्थान जन-समाजक मयना है। उम मालिक बनकर नहा बटन दता चाहिये।

८ अत्र हम म बाल पर विचार करें कि हमारा दगामें यत्राका क्या स्थान है। हम देख चुने ह कि यत्रमें मुख्य प्रान नीतिक गकितने उपयागता है। क्विन हमार दगामें सभी उत्रागाना भौतिक गकित चलानका जमरत गहा क्याकि आच हमार यहा अपार मानव गकित और पशुगकित रेकार पनी रहती है। यत्राके जानेन था मत्रोचागाने जिय ह तत्र यत्रायागका ताग बिया उमी हद तक मट बेकारी बढी है। इसलिए क्कमें का लाभ नही कि मनुष्याका और मनुष्या द्वारा कामक लिए पा हण जानराना रेकार और

इस कारण भूरा रखकर हम भौतिक गतिना उपयोग करते रहें। हमारे देशमें यत्र याना भौतिक गतिन क्षासिठ करते समय पहला विचार हम यही करना चाहिय कि इस कामके लिए मानव गतिन या पशुगतिन पयाप्त मात्रामें हा ता हम इस कामके लिए यत्र नही चाहिय। परन्तु जा काम समाजके लिए अत्यत उपयोगी हा और जा मानव गतिन और पशुगतिनम न हा मरना हा या जिसमें मनुष्या और पशुजा पर बहुत ज्यादा बाध पडता हा ऐसे कामके लिए भौतिक गतिनका त्तर उपयोग किया जाना चाहिय। इस तरह दब तो खतामें कपडके धधम और लतीक महायत्र तथा पोषक बहुतरे ग्रामाद्योगाम यत्र याना भौतिक गतिनके उपयोगकी गुजाइर नहा है। यत्र कितन आत्मियाका काम कर डालत ह इसका हिसाब रगावर एक रखक बताते ह कि अमरीकाको यनाके जरिय प्रति मनुष्य ३६ गुणम मिठ जात ह। अब यदि अमरीकामें बहुत ज्यादा थावालीवाला और कम कुन्तरी साधा-सपत्तिवाग हमारा दग अमरीकाका नरठ करन रग और प्रति मनुष्य ३६ यत्र-गुणम रख ता ४० कराडम स सवा कराड मनुष्याके लिए हा काम करना जरूरी रह और इसलिये त्तन हा मनुष्याको जीनका अधिकार रहे।

८

बड़े पमाने पर उत्पादन

१ सब प्रथम यूरोपमें और फिर दुनियाके दूसरे हिस्सामें यत्रोद्योग आरभ हण उक्तक पट्ट सारा उत्पादन उेट पमान पर होना था। कारा गराको एक जगह एकत्र करके उनसे काम लनवाल कारखान तो थ परन्तु वे सख्याम थाड और आजकठके कारखानाकी तुठनामें बहुत छान थ। भौतिक गतिनका उपयोग करनकी लोज होनेके वाग यह स्थिति बदर गइ है और पिछड हुए मान जानवाल देशोंमें भी बड बड कारखान खड हान रग ह। पूनी और रम ऐसे कारखानामें केन्तित होते ह।

२ बहुतम आदमियाकी थोली थोली पूजी गवरके त्पमें इकटठी करके मर्यादित जिम्मगरीवाली कपनिया स्थापित करनकी सुविधा कानून द्वारा हो जानके बाद बडी बनी कपनिया बनी। एक बनी कपनीके गुल् होन पर बहुतसे छान छान कारखाना और छोटी छोटी पेडियाका काम बड हा जाता या वे बडी कपनीमें मिल जाती। इस तरह छोटी छोटी प्रतिस्पर्धायें कम होन रगी। गकिन बडी बडी कपनियाक बीच तो प्रतिस्पर्धा जारी ही रही।

उस गकनेक लिए इन वनी वना कपनियाके भी मयुक्त मण्डल बनानेकी प्रया अव अस्तित्वमें आर् है। वना वनी कपनिया मयुक्त मण्डलमें मात्रके उत्पादन और भाव पर अक्रम रण ना सकता व व्यवस्थामें बहुत विफायत हा मजती है और समस्त मयुक्त मण्डलका तरफम अपने उद्योगक लिए नये नय प्रयाग करन और वनातिक सगाधनना काम तारा रखनका मुविधा पना वा जा सकती है। यानायानका और तार टगीपान बतारका तार आदि मदाग भजनकी वनमान मुविधाअके कारण न तरहक मयुक्त मण्डल वगतनका अनुकूलतायें नम पमानमें बहुत ब गद ह।

३ एम मयुक्त मण्डल वा प्रकारक हान ह। एक हा तरहका माल उत्पन्न करनवाग और रेचनवाग क कपनिया मण्डली हाकर अपना मयुक्त मण्डल बनायें वा एक प्रकार हुआ। इस प्रकारमें सभी कपनिया अपना खडी सी हुइ एक कद्रीय व्यवस्थाक मानहत आ जाता ह। यह निश्चित किया जाता ह कि हर कपनी नितना मात्र उत्पन्न कर और बाजारमें उमना क्या भाव रख। इस उद्योगमें मुपार करनन वामें आवश्यक सगाधन इस मयुक्त मण्डलकी तरफम किया जाना है। अमरीकामें ऐम अन्व मयुक्त मण्डल स्थापित हुए ह। यूयाकका मण्डल आद मपनी एसा ही एक मयुक्त मण्डल है जा युनाइटेड स्टेट्सकी पेटाग्रियम रिफा वनरियामें म ज्यागानर पर अपना नियमन और अधिकार रखता है। हमार दगमें सब सीमण कपनियाका एसा मण्डल बना हुआ है। इसत अग अलग सामेष्ट कपनियाका प्रतिस्पर्धा मि गद है और दगमें सब जगह सामेष्ट एन ही भाव विरगा है। इस तरहक मयुक्त मण्डलका अग्रजीमें हारिजाण्ट कांमिनेशन (समानाद्यगा एकीकरण) कहा जाता है। हारिजाण्टका अय है एक मतह पर या एन आग लकार पर स्थित। इसलिए एक ही तरहक उद्योग या व्यवसाय करनवा मण्डलका हारिजाण्ट कहा जाना है और उनके मगठन माना मयुक्त मण्डलका हारिजाण्ट कांमिनेशन कहा जाना है।

४ दूसरा तरहक मयुक्त मण्डलका वटिक कांमिनेशन (सम्बद्धा दायी एकीकरण) कहा जाता है। वटिक माना अडा लकारन स्थित, नाचन उपर तवने। न मगठनमें उद्योग अग अलग प्रकारक हान ह। अन्तिम पर प्रस्तु तयार करनक लिए कच्चा माल पना करनन तयार अतका तयार मात्र बन जान तन वाचमें जा जा क्रियाए वा जाय उनम सम्बन्धित उद्योगका मगठन वटिक कांमिनेशन क्तगना है। उम राडी, बनानेवा मटियाराका कपनी हा और वह अगन हा गतामें गेहू पना कर अपनी ही

आपकी मिलामें आटा पिसवाये फिर उसकी रोगी पनवाये और अपनी ही दुकाना पर वह रोटी बिनवाये तो यह एक वर्टिकल काम्पनिगन होगा। हमारे देशमें जमशदपुरकी टाटा आपन एण्ड स्टील कम्पनी एसा ही 'वर्टिकल काम्पनिगन' है। उसकी अपनी लोहे और कोयलेकी खानें ह लोहा गौठनकी भट्टिया भी उसीकी ह और गह तथा फौगदकी तरह तरहकी चीजें और मशीनें भी वही बनानी है।

५ अमरीकामें ऐसे हारिजाण्टल और वर्टिकल दोना तरहके सगठन करनवाये कुछ समय मण्डल भी खड हा गये ह। अलग अलग कपनिया अपनी भीतरी व्यवस्थाके बारेमें स्वतन्त्र रहकर सिफ प्रतिस्पर्धाके टालनके लिए कुछ शर्तों पर अपना सगठन मयादित रूपमें भी करती ह। कपनिया मिलकर अपना निश्चित की हुई जातिका माल एक निश्चित भावसे ही बचनका निणय करती ह। इसमें यदि कोई कपनी बईमानी करके निश्चित की हुई जातिसे हटकी जातिका माल बनाये तो सगठन टूट जाता है। कभी कभी अलग अलग कपनिया भीतर ही भीतर निश्चय करके अलग अलग प्रान्तके बाजार आपसमें बाट लेती ह जिसस एक ही बाजारमें वे एक दूसरेके साथ प्रतिस्पर्धामें न उतर सकें। हमारे देशमें एक ही रास्ते पर अलग अलग मालिकाकी मोटर-बसें चलती हा और वे अपना कोई भी सगठन न करें तो वे प्रतिस्पर्धामें बरबाद हो जाते ह। सामान्यत वे यह निश्चित करते ह कि अमुक समय पर अमुक मात्रिककी माटर रवाना हो। सभी मोटरामें टिकट उनसे सगठनकी तरफसे दिय जाते ह। और शामको भाडकी जितनी आय हुई हो वह अलग अलग मात्रिकाकी मोटरो द्वारा लगाय हुए चक्करोके हिसाबसे बाट ली जाती है। इसका हिमाब नही रखा जाता कि किसकी मोटरम कितने यात्री बठ। एसा करनसे यात्री लेनकी सीचातानी मिट जाती है और गान्तिसे काम चलता है।

६ अमरीकामें इन सब प्रकारके सगठनोको ट्रस्ट कहते ह। अलग अलग कारखाने एक व्यवस्थाके नीचे एकत्र हो जात ह। अपनी अपनी लगाई हुई पूजी आदिके हिसाबसे उन्हे ट्रस्टके सर्टिफिकेट मिल जाते ह। वे अपना सारा प्रबन्ध और सारी सत्ता ट्रस्टियोंके केन्द्रीय मण्डलको सौंप देते ह। अपन अपन ट्रस्ट-सर्टिफिकेटोके अनुसार वे नफा-नुकसानमें सामदार होते ह। जमनीमें इस तरहके सगठनोको कार्गेल कहते ह। जमनीमें कोयलेकी खानोका उद्योग ऐसे कार्टेलके हाथमें है। सारे कोयलेकी नित्री एक केन्द्रीय मण्डल द्वारा होती है और कार्टेलके सब सदस्यमें नफा

घाट लिया जाता है। कुछ कार्टों जपन मन्थ्यामें प्रतिस्पर्धा न होने देनेके लिए उन्हें विनाशके प्रदान यानी बाजार बाट न ह। केन्द्रीय मण्डल आन्दन कर नेता है भाव तय करना है और वित्रीकी व्यवस्था कर दना है। टस्टकी अक्षय कार्टोंमें व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य कुछ अधिक होता है।

७ उड मानके उत्पादनमें प्रथम महायुद्ध (१९१४-१८) के बाद जा एक नई विचारसरणी चल पड़ी ह उसका भा यहा उल्लेख कर दना चाहिये। ऐसा कहा जाता है कि किसी भी उद्योगका अच्छा तरह विकास करना हा ता उसके प्रयत्नका सिर्फ इतन ही विचारस सनाप करके बटे न रहना चाहिये कि इस उद्योग मुझे अमुक नफा मिल जाता है और कारखाना चलाना पुमाता है। कारखानस अमुक नफा मिन्ता रहता है यह तो एन व्यक्तिगत दृष्टि हूइ परन्तु इतन नफसे सनाप मानकर उठे रहनेके बजाय प्रयत्नका सामाजिक कनय यह है कि वह सुधरी हुई या आगे बनी हुई पद्धतिया जारी करके जहा जहा सम्भव हा वहा वहा रिगानको रोकर और बचन करके उत्पादनके लक्षमें भर सक कमा कर। एमा करनके लिए प्रबंधकको नीचेकी बात पर ध्यान रखना चाहिये

(१) यत्राम सुधार करके मजदूरका मन्थ्यामें यथामन्त्र कमी की जाय।

(२) यत्रा और औजारकी दम तरह व्यवस्था की जाय जिनमे मजदूरका एक स्थानस दूसरे स्थान पर जाने-जाकी जरूरत कम पडे और उनका समय तथा श्रम अधिकसे अधिक बचे।

(३) कारखानस कामके घण सात या आठ भा रवे गये हा किन मजदूर गुल्क घटामें स्फूर्ति और सावधानीस जितना काम कर सक्ता है उतना वादने घणमें नहीं कर सकता। मनुष्य थक जानके बाद अववा उबनाहट मात्तम पन्तक बस जितना काम करता है उसम उसम शरीरका भी नुकसान हाता है। इसलिए थकावट या उबनाहट मात्तम होनकी हण आय उा समय मजदूरका योग आराम लिया जाय और चाय, पाना या योग पो नकी छूट दी जाय ता वह फिरम ताजा हाकर अधिक काम कर सकता है और कुछ मिलानर अधिक काम हाता है। इसलिए कारखानेमें आरामकी और ताशन वगैरका सुविधावें दकर हर मजदूरमे दिनभरमें अधिकम अधिक काम ल सक्नकी व्यवस्था की जाये।

(४) प्रयत्न कारखाना जहा तरु हा मत्र एन ही जातिका मात्त वनाय जिनमे कम लक्ष और पाठे धमसे अधिक उत्पादन हा सके।

(५) भाल वनानकी श्रियाआका अधिनस अभिन पृथक्करण करवे हर श्रियाका थयागभव सरत वना श्रिया जाय जिनमे आत्मीक वजाय यत्रसे वह श्रिया कराई जा सके।

(६) खरीद विक्री और यतायानके काममें अलग अलग कारखानामें सहयोग स्थापित करवे और हारिजाटत तथा बटिखत सगणन खड करके प्रतिस्पर्धाका अन्त कर श्रिया जाय।

८ इस तरह उद्योगको यथासमय अधिकस अधिक नय ढग पर और विधायतके साथ चलानका उद्योगका रोगनलाइजान करना कहते ह। इस प्रकारका रोगनलाइजान गत महायुद्धक बाद पहल पहल जमनामें आरभ हुआ। क्याकि वहा भारी मुन प्रसार हो गया था और दूसरी तरहसे भी देग बडा आर्थिक दुग्गामें पस गया था। इसलिए कच्चे मालका तथा मजदूरका समय और श्रमकी अधिकस अधिक बचत करे तथा नयी वनानिक राजा द्वारा निरम्मी और रनी मानो जानवाली चीजाका भी उपयोग करके उसे अपनी आर्थिक स्थिति सुधारनी थी। उसके बाद यन् हलचल अमरीकामें खूब चली। वाटाने जूताके कारखानमें और फोडके कारखानम इस रोगन लाइजानका अमरु बहुत अधिक श्रिया गया है। अब तो हमार देगके भी औद्योगिक मन्लामें रोगनलाइजानकी बात होन लगी है।

९ इसमें गका नही कि यदि उत्पादन क पमाने पर श्रिया जाये उद्योगका सगठन श्रिया जाय और रोगनलाइजान श्रिलिल श्रिया जाय तो उसम केवत उत्पादनकी दृष्टिस बडा अभ होता है और यवस्था-खच बहुत क उत्पादन पर बट जानसे बहुत कम हो जाता है। कीमती और विरकुल नय ढगका मनीनरी कामम गी जा सकती ह। भौतिक शक्ति भी बट पमाने पर उत्पन्न की जाती है और एक जगह बड पमान पर खच की जाती है इसलिए उसका खच भी कम आता है। वनी मात्रामें खरीद विक्री करनेसे उसमें भी बहुत अभ होता है। ऐसे कारखाना या सगठनोके पास पसकी शक्ति अधिक होती है और व स्वय ही बड खरीदार और विक्रेता होते ह इसलिए बाजारमें सौगा करते समय इह अपन सोचे हुए भाव मिल सकते ह। विनापना द्वारा और दूसरी तरहसे अपन मालका प्रचार तथा प्रसार करनका खच भी बड पमाने पर उत्पन्न श्रिय जानवाल मात्र पर बट जानक कारण कम आता है। और इन सबसे क लाभ तो यह होता है कि बड पमान पर उत्पादन करनवाले कारखानामें निवलनवाल कचरेका तथा टूटी फूटी चीजाका पूरा उपयोग श्रिया जा सकता है। वनानिक प्रयोग करके उत्पादनका

सब किस तरह घटाया जाय और कोई माल बनाने में जा चीजें निक्कली हो जाती ह और जस्य किसी भी उपयोग में न जा सकने के कारण जो प्रकार ममता की जाती ह उनका कसा उपयोग किया जाय इन बातों का गाय की जा सकती है। उदाहरणके लिए हमारे यहां तेरकी बटी मिलें अपन कचरे में तरह तरह के बर्तिया साधुन बनाता ह। जहा ठाटे पमान पर उत्पादन हाता ह। वहा इस तरह कचर या टूट फूट सामानका उपयोग करना पुमाता नही।

१० बड़ पमानके उत्पादनके एस बहुतस लाभ बताय गते ह लेकिन उसका नुकसान भी छोटे मोटे नही ह। छोट पमाने पर स्वतंत्र रानिमें काम करनेवाले उत्पादकाका बड़ पमानेवाले कारखानेपर प्रतिस्पर्धा में कुछ डारते ह और एसा काम वे नल-बुर चाह जसे उपायाका वासरा काम भी नहा हिचकिचाते। वे काम एसी तरीके जकर करते ह कि उत्पादनका खर्च घटाकर हम ग्राहकाका समता मात्र मुहैया कर सक्ते ह। परन्तु एक बार अपनी भीतरा प्रतिस्पर्धाकी मित्यार उडा साठन खडा कर गने बाद वे उम उद्योगक एकाधिकारी बन बठते ह और मनमाने भाव बने ह। इनके गिवा अपन छोट प्रतिस्पर्धियोंको ब खतम कर डारते ह तब अथवा अधिक काम लेनके लिए जब वे उत्पादनका मर्यादित कर दत ह या रानलाइजिंगा करत ह तब जन्मसे मजदूर फारतू हो जात ह। इससे भयकर बकारी पदा हानी है। ये उड सगठन जवरलस्त सट्टा खरत ह बाजारमें आनेवाले मालको सट्टा खेतर केवल अपन ही हाथमें कर ला ह और अपन छोट प्रतिस्पर्धियोंका अपनमें मिला लेनके लिए और न मिला ता उन्हें कुछ डालने लिए न-बुर हर तरहके उपाय काममें लत ह। अमरीकाम तो जब कार्ड सगठन कोई सास माल अपने हाथमें कर लाता ह तब उनके मनमान भाव उपजानके लिए पदा होनगला दूसरा कसा माल वह तराद गता है और उस मट तक कर डारता ह। फिर जब एसी स्थिति पया हो जाय कि वह मात्र बाजारमें और बहाम नहा मित तो अपने जमा किये हुए मालका ममाने भावसे बेचकर ब भारी नफा गमाने ह। अमरीका और इंग्लैंडमें जहा एस सगठन बहुत बडे और मानूत ह वे अपन घनत्वक प्रभावक रायकी मारा अर्थीतिका भी अपनी इच्छानुसार चला सकत ह। वे पार्लियामेंट या सिनटम अपन वह अनुसार चनेवाले मन्म्याका बहुमत बना गत ह और फिर मारे रायतत्र पर अधिकार जमात हैं। ये लैग बहान ता ह प्रानतवाके जिन जनताके बहुत बडे भागकी वश बुठ भा नही गन्ना। पूजीवादी सगठन ही मारे रायतत्र और प्रजातत्र पर अधिकार किय बडे ह।

११ यह सही है कि उनका विराधमें मजदूरों का संगठन करना ही है। लेकिन पूजोपति और 'गामक एक-दूसरों' मित्र बनकर जा सगठन बना चुके हैं उसने विरुद्ध जतिम लाने लड़ानेकी स्थितिमें वे अभी नहीं पहुँचे हैं। आज तो जाग बने हुए और स्वतंत्र मान जानवा देगाम भा पूजोपतिया और सत्ताधारियों का नामाका देना रखा है।

१२ बात यह है कि इन सारी योजनाओं में देकर इसी बात का विचार किया जाता है कि उत्पादन का वह कस घट और अर्थोत्पादन ज्यादा कैसे हो। इनमें उत्पादन करनेवाले मजदूरों को जात-जागते मनुष्य नहीं बल्कि जड़ वस्तु मानकर ही उनका विचार किया जाता है। इसने मिला उत्पादनमें लग हुए मजदूरों का अच्छा हालतमें रखा जाय तब भी यह विचार नहीं किया जाता कि उत्पादनकी पद्धतिमें क्या जानवा प्रत्येक सुधारके साथ जा अनक मजदूर बकाय बनत है उनका क्या होगा। यथाका विचार करते समय उनका जा थोड़ा अनिवाय परिणाम — गोरगुँ धुआँ मजदूरोंके शरीर और मन पर पड़नेवाला हानिकारक असर निष्पाना पर समाजका अव्यवस्था आदि — गिनाय गया है वे विराट उत्पादनमें आ ही जाते हैं। विराट उत्पादनको सावधिक बनानेके विरुद्ध क्या जानवा तबमें इतनी बुराईया गिनाना पयाप्त होगा। परन्तु व्यापक और स्थायी बेकारी एक ऐसी बुराई है जिसे तत्काय मिटाना जरूरी है। जाकर कारखान पूजोपतियोंके हाथमें है और वे लोग जनताके हितके लिए नहीं बल्कि अपन नफाके लिए ही उन्हें चलाते हैं इसके बजाय यदि कारखान सामाजिक संपत्ति बना दिया जाय और मजदूरोंके कामके घट कम कर दिया जाय तो बेकारी दूर हो सकेगी एमी दलील दी जाती है। यह बात सही मानी जाय ता भी वह थोड़ी आबादीवाला देगाम ही संभव हो सकती है। इंग्लैंड और जर्मनी जस देगोम यह संभव हो तो भी हमारे जैसे बने बड़ी आबादीवाला देगामें जहा करोडा मनुष्योंकी बेकारी मिटानेका प्रश्न हमारे सामने है यह बात संभव नहीं है। इन करोडा मनुष्योंका आज पटभर खाना नहीं मिलता। पटभर खाना देना ही तो उन्हें पूरा काम देना ही चाहिए। यदि हम यंत्रोंके जरिये बने पमान पर उत्पादनका काय करग ता उन्हें कभी काम नहीं दे सकेंगे। इसलिए भले ही बने पमानके उत्पादनकी इस सुधरी हुई पद्धतिम थोड़ा खर्चसे अधिक मात्रा पदा होता हो और मात्रा सस्ता भी बन सकता है परन्तु आखिर सस्ता माल भी बनाना तो मनुष्यके लिए ही है। यदि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो कि इस सस्ते मात्राको खरीदनेके लिए मनुष्य जिदा ही न रहे

सक तो सस्ता माल किस कामका ? इसलिए आम लोगोंकी भलाईका दृष्टिस देखें ता साग उत्पादन बड़ पमान पर करना अच्छा नहा है।

१३ लेकिन कुछ उद्योग और कुछ सेवाएँ एसी ह जा बड़े पमान पर ही चगयी जा सकती ह । जम लोहना उद्योग खानाका उद्याग मोटर वनाजना मारगाना विजली प्ला कानका बारखाना तथा रग तार और ढाक जसा सेवाएँ बड़ पमान पर ही चल सकती ह । इसके सिवा सीनकी मशीनें मादरनें और मात्र आदि समाजक लिए आवश्यक हा मानी जाय तो ये चीज भी बड़े कारखानोंमें ही तयार हो सकनी ह । इस तरह हर राष्ट्रको जा उद्याग बड़ पमाने पर चगाने ही पनें उनम नफापारी और मजदूर-कर्मक मापणका गुजाइग न रहने पाये इम दृष्टिस ये कारखाने राष्ट्र या समाजकी सम्पत्ति हान चाहिय । एकिन जा उद्याग आसागास मनुष्यका या मनुष्यक पाये हुए पशु-जाकी शक्तिस हाय-उद्योगक रूपमें चलाय जा सकत ह और जिहें भौतिक शक्तिस यत्रोद्यागक रूपमें चलानसे गला ही नहा बतिक कराडा आत्मियाकी अनिवाय वकारीना प्रान यडा होना है व उद्योग बड़ पमाने पर यत्रोद्यागक रूपमें नहा चगये जान चाहिय । उदाहरणक लिए हमार गाने बपडा उद्यागका लीजिये । पहले यह हाय-उद्योगके रूपमें चलता था परन्तु यत्रोद्यागाने इम पर भयकर आक्रमण किया । अत्र गाधीजी और वाग्रजकी तरफसे इस हाय उद्योगक रूपमें फिरसे जारी करानेके भगीरथ प्रयत्न हा रह ह । यह धना हाय उद्यागक रूपमें चल इसीमें सामाजिक और आर्थिक सुख गानि ममायी हुइ है । इमक सिवा तग निकालनकी मिलें बहुतमी घानिया और बाल्लुजाका प्रकार कर देता ह । पीमने-कूटनकी मिग चक्किया और ऊबगियाकी प्रकार बनाना ह । माथा टानवाग मोटर-कारिया बग्गाडियाका प्रकार करती ह । कारखानमें तयार जानवाग टानकी चदरे टोनक पाप और घामगक शिब्रे कुम्हारके खपरेका बाठिया और मटकाका ग्यान कर कुम्हारक घघका ताड देत ह । जूते बनानवाने कारखाने मोविदाका प्रकार बनात ह । इन मत्रका विचार ऊपर बनाई हुई दृष्टिसे करना चाहिय । आज बड़े पमानके उद्याग निरकृग प्रतिस्पर्धाके सिद्धान्त पर या एसाधिशारक मिद्वान्त पर जगत ह । इमक वजाय राष्ट्रका सारा उत्पादन एक निश्चित याननाक अनुमान और नियमित ढगमे इम यानना विचार करक चगना चाणिये कि राष्ट्रक लिए बौनस उद्याग किनन आवश्यक ह और किन उद्यागका यत्रोद्यागाने रूपमें अवका गय उद्यागक रूपमें चगानमें राष्ट्रका अपान राष्ट्रक सारे वर्गोंका हित है ।

बढ़ते-घटते उत्पादनका नियम

बढ़ते उत्पादनका नियम

१ किसी कामका एक मनप्य बजाय दो मनप्य मिलकर कर, तो दुगुना ही नहीं बल्कि दुगुना कुछ अधिक काम होता है। इसके सिवा काम करनेके साधनामें हम जैसे जम सुधार करते जाते ह या बढि करते जाते ह वैसे बस सुधार और बढि करनेम जितना खच होता है उसस अधिक मात्रामें उत्पादन होता है। इस परमे एक ऐसा नियम या कानून निर्दाल किया गया है कि किसी भी कामम हम श्रम और पूजी बन्ते जायें तो श्रम और पूजी बन्तसे जितना खच बन्ता है उसकी अपेक्षा उत्पादन अधिक बढ़ता है। उदाहरणके लिए एक सौ करघाके कारखानके बजाय दो सौ करघाका कारखाना चगानके लिए दुगुना श्रम और पूजी नहीं चगानी पडती। क्योंकि अधिक पावर या गबिनके लिए एजिन बायलर बड चाहिय परन्तु दो सौ करघ चगानके लिए दुगुनी गबिनकी जरूरत हाते हुए भी दुगुना पावर या गबिन पन्त करनेके लिए दुगुना कोयला खच नहा हाता। इसके सिवा इजीनियर दफ्तरके कमचारी खरीद बिनी करन बाड़े आन्तियो जाटिका और मकानका खच भी दुगुना नहीं करना पडता। थोना-बन्त खच बन्त देनस ही काम चल जाता है। और इसमें तो कोई गका ही नहीं कि दो सौ करघे चलाय जायें तो कपडा दुगुना उत्पन्न हागा। इसलिये कुल मिलाकर पूजा और श्रम सवामा या डचीग कर दनस दुगुना उत्पादन हाता है। कई भी उद्योग जितन बड पमान पर चगया जाता है उतना ही मात्रक उत्पादनका खच कम आता है। यह नियम व्यापार और खती पर भा एक हद तक लागू हाता है। जो व्यापारी दुकान चलानके लिए दम हजार रुपयका माल स्टोकम रखता है वह जितनी बिक्री और मुनाफा कर सकता है उसस बीस हजार रुपयका स्टोक रखनवाला अधिक बिक्री और नफा कर सकता है। कयाकि वह अपनी दुकानमें मात्रकी विविधता अधिक रख सकगा इसलिए उसके महा ग्राहक ज्यादा आयेंग। उसे दुकान दुगुनी बनी भा दुगुन किरायकी नहीं रखनी पडगी। वसी तरह माल बचनबाठ गुमाने भी दुगुन नहीं रखन पन्ग। एक ही हिसाबनबीसस काम चूठ जायगा। दुकानके लिए माल खरीदन

जानवाला यकिन था कि माल खरीद या अधिक ता भा खरीदका खच तो उतना ही होगा। खतीका विचार कर ता एव विमान जितनी खा दना हा उसस ज्यादा दे, ज्यादा अच्छ उल रख ज्यादा अच्छी जुताई करे ज्यादा अच्छ बीज बोये ज्यादा मजदूर लगाकर निराइ ज्यादा अच्छी करामे और जमीन व फसलका अच्छी तरह माफ रख ता उगका खच जिस अनुपातमें बनेगा उसकी अपक्षा फसलके अनुपातमें बहुत बडी वद्धि हागी। खा सवायी डानी हागा तो फसल डोली या दुगुना हागी बीज अच्छा लानक लिए अधिग भाव दना पना हा ता भी फसल अच्छी जानिकी और अधिक मात्रामें होनेस उमका कीमत बहुत ज्यादा आयगी। व अच्छ हाग ता काम दुगुना करेग लेकिन खराब और कमजार बलामे व दुगुना नहा पायग।

इस तरह प्रत्येक उद्योग बधमें ग देखा जाता है कि पूजी और श्रमका मात्रा जितनी बढाई जानी है उमम उत्पादन अधिक मात्रामें होता है। इसे बढत उत्पादनका नियम या श्रमागत उत्पत्ति-वद्धि नियम कहते ह।

घटते उत्पादनका नियम

२ लेकिन उपरका नियम एन ह तब हा सही साबित हाता है। अगर हम श्रम और पूजाकी मात्रा अमर्यान्त रूपमें बढात जायें ता उत्पादनकी मात्रा भी अमर्यान्त रूपमें बनेगी ही एम कोई नियम नहा है। उत्पादनकी मात्रा बढनकी एक सीमा हाता है। उस सीमाक आ जानक था यनि श्रम और पूजी बढाई जाय ता उस वद्धिके अनुपातमें अधिक उत्पादन नहा होगा परन्तु कम उत्पादन हागा। हम एताकर उदाहरण लें। यह सच ह कि खाद ज्यादा देनेसे फसल ज्यादा अच्छी हाती है लेकिन एम कारण जमीनमें चाह जितनी खा तही दी जा सकता। इसीलिए खेताम अमुक हद तक जुताई खा पाना बगराकी सुविधा बढायें यानी श्रम और पूजा बढायें ता अधिक उत्पादन होगा परन्तु उमका ह आनेके बाद भा उस बढात जायें ता अधिक उत्पादन न होकर अनुपातमें कम होगा। एन उत्पादनका अय नुक्मान नहा, किन्तु अनुपातमें कम उत्पादन समझना चाहिय। दुगुन काममे यनि ढाद गुना उत्पाद हा ता बढता उत्पादन आ कहा जायगा यकिन टपीन हा ता घटता उत्पादन आ कहा जायगा। यनि एमा हा ता नुक्मान नहा हुआ। बुरा मिगकर उत्पादन ता बढा परन्तु अनुपातमें कम उत्पादन आ इमिगि घटना उत्पादन हुआ कहा जायगा।

३ व्यापारकी दुमानमें नी एता ही हाता है। दुमानमें मायकी विविधता अधिक हा ता ग्राहकका चुनाव करनेका ज्यादा गुजादग रना है

और इससे विप्री ज्वाला होती है। परन्तु उसकी भी सीमा तो हाती ही है। इस सीमासे अधिक मात्र रखें यानी अधिक पूजी गायें ता फिर उस अनुपातमें विप्री नहीं बढेगी और ज्वाला नफा भी नहीं हागा। जिस मालकी माग हो वही माल विकता है। दूसरा मात्र पडा रहता है। उद्योगका कारखाना भा बहुत बडा बना लिया जाय तो उसमें पूरी दररेग नटा रह सकती अथवस्था पग हो जाती है और बिगाड भी होता है। इस तरह प्रत्येक धधेमें बढते उत्पादनके नियमकी सीमा आ जाती है और उसने बा पूजी और थम बढाते जायें उद्योगको बडा बाते जायें ता उत्पादन अनुपातम बढना बजाय घटन लगता है। अने घटते उत्पादनका नियम या क्रमागत उत्पत्ति हास नियम कहते ह। एक खास सीमा तक बढने उत्पादनका नियम लागू होता है और उस सीमा पर पहुच जानके बा घटते उत्पादनके नियमका अमल गुह हो जाता है।

४ इस तरहकी सीमा सब उद्योग धधामें एवमी नहीं बाधी जा सकती। खतीमें बढते उत्पादनकी सामा बहुत जल्दी आ जाती है और घटते उत्पादनका नियम बहुत जल्दा लागू होता है। यह सामा व्यापार और हाय-उद्योगमें खतीकी अपेक्षा दरमें परन्तु बड पमानके उद्योगकी अपेक्षा जल्दी आती है। बड कारखानाम यह सीमा बहुत देरस आती है। फिर भी उनमें आती तो है ही। इसीलिए हम पिछल प्रकरणमें दख चुक ह कि प्रतिस्पर्धा मिटानके लिए बड बड कारखानाको इकटठा नहीं किया जाता परन्तु कारखानाकी भीतरी अथवस्थाका अलग और स्वतंत्र रख कर उनका संगठन किया जाता है।

स्थिर उत्पादनका नियम

५ किसी उद्योगमें पूजी थम जादि जितना बनाया जाय उतन ही अनुपातमें उत्पादन बढता हो तो कहा जायगा कि उस पर स्थिर उत्पादनका नियम या क्रमागत उत्पत्ति ममता नियम लागू होता है। यो तो किसी भी उद्योग धध पर आरभसे ही स्थिर उत्पादनका नियम लागू नहीं होता। आरभमें एक हद तक बढते उत्पादनका नियम लागू होता है। बादम एक खास हद तक कभी कभी स्थिर उत्पादनका नियम लागू होता है और फिर घटते उत्पादनका नियम लागू होन लगता है।

६ किस उद्योग पर कव कौनसा नियम लागू हो सकता है इस जानकारीका यह निश्चित करनमें बडा हाय होता है कि उत्पादनका खच कितना आयगा और किस कीमत पर मात्र बचना लाभदायक होगा। बाजार-कीमत आदिसे सम्बंध रखनवाते प्रकरणामें हमें इन नियमका बार बार उल्लेख करना पडगा।

मानव अर्थशास्त्र

तीसरा भाग

विनिमय

प्रास्ताविक

१ जब तक प्रत्येक कुटुम्ब या समूह अपनी आवश्यकता राकी चीजें स्वयं ही उत्पन्न कर लेता था तब तक किसी भी चीजका एक-दूसरेके साथ विनिमय करनेका अवसर नहीं आता था। कुटुम्ब और समूह जब एक-दूसरेके साथ अधिक मित्र-जुलने लगे तब अपने पासकी आवश्यकतासे अधिक चीजें आरम्भ करने कुटुम्बा या समूहाकी उनकी ज्याम आवश्यकता हाता उह भूमें देने लग। भेंट करनेवाले कुटुम्बाको स्वभावतः यह विचार आता था कि अपनी उत्पन्न की हुई चीजामें से कुछ चीजें भेंट देनेवाले कुटुम्बको देकर उमका बदला चुकाना चाहिये। इसमें म आग देने पर अपनी आवश्यकतासे अधिक चीजका विनिमय एसा चीजसे व्यवस्थित रूपमें होने लगा जो दूसराके पास आवश्यकतासे अधिक हा और अपन लिए आवश्यक हा।

२ एकके लिए आवश्यकतासे अधिक और दूसरेके लिए आवश्यक चीजका अला-वली विनिमयना गढ़ और पाम्य स्वल्प कहलाता है।

विनिमयमें हमेंगा कमसे कम दो पक्ष हाते ह। इसलिए ऊपरके वाक्यको ध्यानर या कहना चाहिय कि एक पक्षका आवश्यकतासे अधिक चीजका — जा दूसर पक्षके लिए आवश्यक हा — दूसर पक्षकी एसी अनिश्चित चीजसे जा पहल पक्षके लिए आवश्यक हा बदला बदली करना विनिमय है। तहा नीचेकी गती पर अमल हो बहा विनिमय गढ़ और पाम्यपूरा हाता है

(१) एकका दूसरेके पासकी चीजका आवश्यकता हानी चाहिये और दूसरेके पास वह चीज आवश्यकतासे अधिक होनी चाहिये।

(२) जिन दो चीजका विनिमय किया जाय वे एकसी कीमतकी होनी चाहिये।

(३) विनिमय करनेकी चीजका कामका ठाक ठीक अलग लेना करनेका सुविधा होनी चाहिये।

(४) विनिमय करनेवाल सभा पक्षका वस्तुनासे विनिमयमें एकना लाभ और एकना सन्ताप मिलना चाहिये।

(५) अपनी उचित आवश्यकतायें पूरा हानक गान तो अधिक चीजें रहें उहाका विनिमय हाना चाहिये। साथ ही इन अनिश्चित चीजका वस्तुमें वे ही चीजें मिलनी चाहिये जिनका हमें मरुकी जरूरत हो।

३ यद्यपि आजकल विनिमयता का व्यवहार दुनियामें बढ पमान पर चल रहा है वह यसा साग नही रहा तमा उपर यताया गया है फिर भी विनिमयकी सारी क्रियाजाना पयकरण बरख देयें ता उगकी जन्में य वान दिताई त्रिय बिना नहा रहगा। आज बरल बुटम्ब और समूह जस छाट समाजाके बीच नहा परतु बट बर दगाव बीच विनिमय होना है। किसी दगमें अपनी आवश्यकतास बाई चीज अधिक मात्रामें उपग्र हाती हा और उम चाजकी दूसरे देगाको आवश्यकता हा और इसलिया दूसरे देगाको यह चाज देकर उसके बन्धेम अपनी आवश्यकताकी तथा दूसर दगाने त्रिए अतिरिक्त चीज वह देगा ता यह गुद्ध विनिमय कहलायगा और इस तरहका विनिमय जरुरा भी माना गायगा। इस तरहका विनिमय अतिरिक्त चीजावाक जीर आवश्यकतावाल दा देगाव बीच सीधा होना सभव नती भी होना क्याकि यह जरुरी नही कि एग देगाकी अतिरिक्त चीज जिस देगाको चाहिय उसकी अनिरिक्त चाजकी सामनवाले देगाका आवश्यकता हा ही। इसलिए एक देग दूसरको द दूसरा तीसरेको दे और तीसरा चौथको द और अतमें अन्तिम देग पहेले देगाके दे — इस तरह विनिमयका चक्र चरता है और इसक परिणामस्वरूप हर देगाका अपनी जरुरतकी चीज मित्र जाती है। विनिमय करनेवाले मानी बचनवाक और खरीदनवाक सभी देगाक धावक सोये स्वेच्छासे और साफ नीयतस हा तो उन सब देगाको आर्थिक गभ हो पूरा सन्तोष मिल और उनकी प्रगति भी हो। केविन इस विभागमें हम देखेंग कि आजकल विनिमयके व्यवहारमें निसकी लाठी उसकी भस का याय चल रहा है। यनोद्यागामें आग बर हुए और एडीस चोटी तक गस्त्रसज्ज होकर बठ हुए देग पिछड हुए मान जानवाल देगास बच्चा माल खाच कर ले जाते ह और अपन कारखानामें तयार किया हुआ माल भले ही इस मालकी पिछड हुए मान जानवाके देशको सचमूच आवश्यकता हा या न हा इन देगाके बाजारामें भर देत ह।

४ इस व्यवहारकी तहम पराक्ष रूपमें जवरलस्ती रहती है क्योंकि इस तरहका व्यवहार करने और टिकाय रखनके त्रिए राजनीतिक सत्ताका काफी उपयोग किया जाता है। अन्वत्ता आनकके विनिमयक पीछ जो गायण और टूट चलती है उसके हेतु कोई भी देग सीधी तरह प्रकट नही करता और स्वीकार भा नही करता। विनिमयके नामसे चरनवाली रम टूट और गोपणको प्रकट रूपमें तो पिछड हुए देगाकी शिक्षा और सुधारका तथा उनकी

आर्थिक आवश्यकतायें पूरी करनेका काय ही बताया जाता है। अपन शोषण अथवा लूटको इतनी चालाकीसे छिपाया जाता है और शिक्षा मम्पता और आर्थिक प्रगति आदि आवश्यक नामाका मुलुम्मा उस पर ऐसी छटाये चढाया जाता है कि शोषण अथवा लूटके शिकार बने हुए देग पतयाकी तरह चौंधियाकर इस विनिमयके व्यवहारम कू पडने ह और नष्ट हो जाते ह।

५ मनुष्यक जय व्यवहारमें जवमे काय विभागका मिद्वान्त अस्तित्वमें आग और हरएक मनुष्य या समाज प्रत्यक्ष रूपमें अपनी आवश्यकतायें पूरी करनक लिए नही बकि दूसरोका बेचनेके लिए उत्पादनका काम करने ग्या और उसके बन्लमें अपनी आवश्यकताकी चीजें प्राप्त करने लगा तवमे विनिमय उत्पादनका एक आवश्यक अग बन गया है। सारे उत्पादनका हेतु समाजकी किसी न किसी आवश्यकताकी पूर्ति हानके कारण उत्पन्न की हुई चीजें जि हें उनकी जरूरत हो उनके पास पहुंच जायें तभी उत्पादनका हेतु सिद्ध होता है और उसका काय पूरा हाना है। लेकिन जवमे उत्पादन आवश्यकतायें पूरी करनके मुख्य उद्देश्यसे होने लगा है तवसे उत्पादनमें समाजकी आवश्यकताआवा हिमाव मुख्य नही माना जाता बकि अपने नफेका हिमाव मुख्य माना जाने लगा है और उत्पादन तथा विनिमयमें जवस हानिकारक और अनियमित प्रतिस्पर्धा घुस गई है तवमे यह सारा व्यवहार समाजमें अनेक दुखोका कारण हो गया है।

६ विनिमयका क्षेत्र बाजार ह — स्थानीय बाजारसे केवर दुनिया भरके बाजार। वहा बचनवाले और खरादनवाले इकठ हान ह। भागकी माग और पूर्तिके हिसाबस उनम परस्पर एक-दूसरेके साथ प्रतिस्पर्धा हाती है और उनके फरवर्प बाजारे भाव-भाव तय हात ह तथा सगेत्र वित्रीके सौदे होने ह। य सौदे या चीजारा विनिमय नकद प्लोक करिय होता है या एक-दूसरेकी प्रतिष्ठा और सास पर उधारके व्यवहार भी होता है। यह सब काम व्यापारिया दलाग आढनिया सगफो और प्रकाज द्वारा हाता है। इस बगमें स्थानाय दुकानदारमे लकर दुनिया भरके देगामें आयात निर्यातका काम करनवाली बडी बनी व्यापारिक कपनिया तथा स्थानीय मराफा और साहूकारमे लकर दुनियाके हर व्यापारिक बन्लमें अपनी गाव्वाए रखनेवाल बड बड बाना समावग होता है।

७ विनिमयक क्षेत्र मागके एक जगहगे दूमरी जगह पहुंचानवाले बजारे भी — जिनमें गधा और बैलीकी लदीवाग और गाडोवालमे कर मोटर-लारी और रग्गाडी लक तथा छोट मोटे नाववालमे लेकर बडी बडी

जहाजी कम्पनियों तक आ जाती है — मत्त्वपूर्ण काम करते हैं। इन सबों द्वारा देश-भीतर और देशों-बाहर एक-दूसरे देशों-विनिमय-का काम चलता है। उस-सब-उपान-अधिनाधिक-बड़े-पमान-पर-विराम-स्वरूप-धारण-करता-जाना-है-यह-यह-विनिमय-का-क्षेत्र-विना-बनना-जाना-है। यत्राकी-नई-नई-खोज-और-यातायात-के-साधनाकी-तेज-गति-तथा-सस्ते-पन-के-कारण-विनिमय-का-काम-का-ध्यान-में-बहुत-बड़ी-सुविधा-ए-हो-गई-है।

८ विनिमय-क्षेत्र-में-काम-करने-वाले-छोट-बड़-सभी-का-यह-उद्देश्य-होना-चाहिये-कि-उत्पन्न-हुआ-मात्र-उसका-उपयोग-करने-वाले-पास-पहुँचाये-माल-के-उत्पादक-और-उपभोग-वाले-बीच-आवश्यक-कड़ी-का-काम-करके-समाज-के-लिए-उपयोगी-बन-और-इसके-ध्यान-में-उचित-पारिश्रमिक-ले। आज-ये-सब-लाग-काम-तो-बही-करते-हैं-उनके-काम-में-कोई-फर्क-नहीं-पता-है-परन्तु-उनके-उद्देश्य-में-बहुत-बड़ा-फर्क-पता-गया-दोखता-है। आज-उनका-उद्देश्य-समाज-के-लिए-उपयोगी-होना-नहीं-रहा,-बल्कि-भारी-नफा-कमाना-हो-गया-है। उत्पादक-या-ग्राहक-दोनों-से-किसी-का-भी-हित-उनके-दिश-में-नहीं-हाना। उनके-सारे-काय-का-ध्यान-और-सारे-व्यवहार-का-सार-यह-होता-है-कि-उत्पादक-को-कम-से-कम-कसे-दिया-जाय-और-ग्राहक-से-अधिक-से-अधिक-कसे-लिया-जाये। इसके-सिवा-विनिमय-के-काम-का-जो-सिद्धि-में-अलग-अलग-चाहने-सट्टा-बाजार-चलते-हैं-और-उनमें-बड़-बड़-सट्टे-खले-जाते-हैं। वास्तव-में-य-सट्टे-जुएकी-तरह-होते-हैं-और-उत्पादक-तथा-ग्राहक-दोनों-का-हानि-पहुँचाने-वाले-होते-हैं। फिर-भी-य-सट्टे-खलने-वाले-योगी-और-सट्टे-का-समर्थन-करने-वाले-अर्थशास्त्री-योगी-को-यह-सम-झाते-हैं-कि-उत्पादक-का-मात्र-लिए-बाजार-खड़ा-करने-और-बाजार-में-भावा-का-नियमन-करने-के-लिए-य-सट्टे-आवश्यक-हैं।

९ आगकी-उत्पादन-पद्धति-और-विनिमय-के-व्यवहार-में-द्रव्य-का-बहुत-बड़ा-हाथ-होता-है। द्रव्य-धातु-मुद्रा-का-और-उसके-प्रतिनिधि-स्वरूप-काम-की-मुद्रा-ही-समावेश-नहीं-होता। उस-सरकारी-मुद्रा-को-काम-में-क्रिय-विना-भी-सराफा-और-बकाकी-हुडियो-और-चको-द्वारा-बहुत-सा-काम-होना-है। व्यापारियों-सराफा-और-बकाकी-साख-पर-इस-तरह-जो-द्रव्य-खड़ा-किया-जाता-है-उसे-हम-सराफी-द्रव्य-कहेंगे। इस-विभाग-में-हम-देखेंगे-कि-सराफी-द्रव्य-के-कारण-बाजार-में-द्रव्यकी-मात्रा-किसी-भी-समय-बढ़ाई-घटाई-जा-सकती-है। उसका-असर-चीज-के-भाव-ताव-पर-बहुत-पड़ता-है। यह-सारा-तब-बड़-सराफा-और-बकरा-के-हाथ-में-होता-है-जिन्हें-हम

द्रव्यपनि कहा है। व समाजके इस तरहके अथ व्यवहार पर नियंत्रण रखत ह और निसे चाह उम हमा या रग मरुते ह।

१० आन्तर राष्ट्रीय व्यापारन ता अलग अलग देगोके बीच व्यवस्थित आर्थिक यद्धका ही रूप धारण कर लिखा ह। इस व्यापारमें द्रव्यका लन देन करनवाल शक्तिगामी प्रकावा यहुन महत्त्वपूर्ण हाय हाना है। प्रत्यक देगका चलनी द्रव्य (सिक्का) भिन्न प्रकारका हाना है। जिन देगस माल खरीदा जाता है उस देगके द्रव्यमें माग्की कीमन चुकानी पडती है। यह वाम एकसचन्ज वकाक मारफन किया जाता है। ये वक एक देगक रगनी सिक्काको दूसरे देशन चलनी सिक्कोमें बदल लेते ह। इह हम विनिमय वक कहेंगे। ये वक एक देगके चन्नके साथ दूसरे देगके चलनके विनिमयकी दर माग और पुक्ति आधार पर निश्चित करत ह। चलन विनिमयकी इस दरको हुडावन कहते ह। यह दर प्रतिदिन या प्रति घट बालती है। उमकी करामात इन लोगने एसी अटपटी कर डाली है कि साधारण बचनेवाले और तरी दनेवालेके तो वह समयमें ही नहा आनी। हुडावनके समय समय पर होनवाल इस परिवतनके कारण बड बार बचन या पराननवालाको हगारा बलिग गक्षा रपयोका घाटा हो जाता है। इस विभागमें हम लवेंगे कि हुडावनकी करामानमे ब्रिटिश सरकारने हमारे देगको बहद नुरमान पट्टचाया है।

११ विनिमयक इस तनका और उसके सारे व्यवहाराना विनचन हम इस विभागम करग। पिटल प्रकरणमें हम दप चुके ह कि उत्पादनकी पद्धतिमें जडमूरस परिवतन किया जाये और समाजकी उचित आवश्यकतायाका — आवश्यक चीने पूरी मात्रामें मिग्ता रह तम तरह — भगीभाति अगाज लगाकर हर देग अपन उत्पादनकी यवस्थित याजना करे और उमका बटवारा सारे समाजका भलाइको ध्यामें रखर उचित रग पर किया जाये, तो बहुत मभव है कि विनिमयक लिए सडे किय गये तनका बडा हिम्सा आवाश्यक हो जाये। वन्त मम्भव है कि नई गथ रचनामें विनिमयका महत्त्व घट जाये। फिर भा विनिमयका तन आज निस तरह चन्ता है यह जाननी जरूरत इगलिए है कि इसमे समाजका होनवाले हानि-लाभकी कल्पना हमें हो जायगी।

बाजार

हाट अथवा गुजरी

१ जसे जसे अपनी उत्पन्न की हुई चीजें दूसराको देकर उनके बदलेमें अपनी आवश्यकताकी चीजें लेनकी जरूरत मनुष्योंको ज्याग मालूम होन लगी वसे वसे इस तरहकी अदला-बदली करनके लिए किसी निश्चित समय और निश्चित स्थानकी जरूरत भी उह मालूम होन लगी। गुरू गुरूमें तो धार्मिक त्यौहार या सामाजिक उत्सवके अवसरों पर प्राकृतिक सौंदर्यवाले जिस देवस्थान पर बहुतस लोग इकट्ठे होते वही इस तरहकी अदला-बदली होन लगी। फिर हर हफ्ते एक खास दिन और एक खास जगह पर हाट या गुजरी लगानका रिवाज पडा। वहा लोग अपनी आवश्यकतासे अधिक चीजें लेकर आते और उनके बदलेमें अपनी आवश्यकताकी चीजें लेकर चले जाते। अब भी जहा हाट या गुजरी लगती है वहा कारीगर अपनी बनाई हुई चीजें लेकर जाते ह। दुकानदार गहरोंसे नमक मिच-मसाले गुड गक्कर चाय तेल वगरा चीजें खरीद कर लाते ह और वहा बचनके लिए बठते ह किसान अनाज या बपास लेकर वहा जाते ह और इनके बदलेमें कारीगरों और दुकानदारोंसे अपनी आवश्यकताकी चीजें लेते ह। चौधरी भील वगरा आदिवासियोंके प्रदेशमें खास खास स्थानों पर निश्चित दिनोंमें ऐसे हाट लगते ह। अहमदाबाद गहरमें रविवारको जब गुजरी लगती है तो दुकानदार और कारीगर अपना माल खुग बिछाकर बठते ह। आसपासके गावोंके लोग खास तौर पर खरीदीके लिए ही उस दिन गहरमें आते ह। सूरतमें गोकुल-अष्टमीके मेलेके समय दूर दूरके कारीगर अपनी बनाई हुई चीजें बचनेके लिए जाते ह और अपनी कामचलाऊ दुकान लगाकर बठते ह। अहमदाबादमें ताव-पीतलके बरतन खरीदना दीवालीके बादके पाच दिनामें शुभ माना जाता है। उन दिना दुकानदार अपन बरतन दुकानके बाहर सजाते ह और गकुनके रूपमें त्रोग एक दो ताव-पीतलके बरतन उनमें से खरीदते ह।

२ पुराने जमाने की चीजके बदले चीजकी अदला-बदली होती थी। उसमें चीजोंकी कीमत निश्चित करने और अदला-बदली करनमें बहुत कठिनाइया

आती थी। इसलिए अलग-बदलीके एक साधनके रूपमें द्रव्यकी राज हुई। द्रव्यका उपयोग आरम्भमें ता विनिमयके साधनके रूपमें हुआ, लेकिन आज हमारे व्यवहारमें वह एक प्रबल शक्ति बन गया है। द्रव्यकी राज उसके स्वरूप उसके प्रकार आदिका विचार हम आगे करेंगे।

स्थायी बाजार

३ अब तो गहरा और बड़े बस्त्राम स्थायी बाजार बन गया है और वहाँ सामान्य आवश्यकताकी सभी वस्तुएँ मिलती हैं। हाँ दोराके बाजार अभी तक स्थायी नहीं बने हैं। अहमदाबादमें गन्धारकी ही दोराका बाजार लगता है। कुछ प्रान्तोंमें दोराकी परान्त विक्रीके सुभातिके लिए दोराके पास भले भलेका रिवाज है। साधारण तौर पर एक बाजारमें सभी चीजोंकी दुकानें होती हैं। हाँ बड़े गहराम हर चीजका अलग अलग बाजार भा होता है जैसे अनाजका बाजार मज्जी बाजार गेहूँका बाजार कपड़ेका बाजार, शकर बाजार जौहरी बाजार वगैर। इसके अलावा चीजें धोकर बचन और फुटकर बचनके बाजार भी अलग अलग होते हैं।

बाजारका विधेय अर्थ

४ अन्ततः बाजारका ऐसा मन्त्रित्व अब नहीं आया जाता कि वह चीजें खरीदने-बेचनेका एक निश्चित स्थान है। बाजारका विनिष्ट अर्थ उसकी नीचे लिखी दो मन्त्रित्वोंमें ध्यानमें आयेगा

(१) खरीद विक्रीके मामलेमें बेचावाउ और खरीदनेवाले आपसमें और एक-दूसरेके साथ सीधा और खरीद प्रतिस्पर्धा कर सकें।

(२) इस प्रतिस्पर्धाका नतीजा यह है कि एक प्रकारका और एक मूल्यांकन काजाका भाव एक समयमें एक ही है।

बाजारमें माल बेचनेवाले हमारा अपना चीजका अधिक भाव पानेका और खरीदनेवाले हमारा कम भाव देनेका प्रयत्न करते हैं। यदि दुकानदार किसी चीजका कम भावमें बचने लगता है तो सारे खरीदार उमीक गये दौड़ पाते हैं। उस समय दूसरे दुकानदार वस्तुस्थितिकी अच्छी तरह जाच करत हैं। और यदि उन्हें यह पता चले कि बाजारकी संख्या बड़ी है और उस दुकानदारके पास जितना माल है उससे मांग ज्यादा है तो वे अपना भाव नहीं घटाने बल्कि उस दुकानदारका माल बिक जानकी राह देखते हैं। इस बीच वह कम भावमें बचनेवाला दुकानदार भी देखता है कि बाजार तो ज्यादा है ही और दूसरे दुकानदार अपना भाव नहीं घटा

रहे ह वस, वह भी अपना भाव घटा देता है क्योंकि उसका हतु दूसरसे कम भावम अपना माल बचना तो होना ही नहीं। उसका हतु तो यही होता है कि उसका सारा माल अच्छे भावसे बिक जाय। यही हाल खरीदारका हाता है। कोई खरीदार अपनी गराने कारण या किसी रास चीजकी अधिक उपयोगिता मात्र पडनेके कारण अपन दिलसे तो अधिक भाव देकर भी उसे खरीदनेका तयार हा सजता है परंतु वह यो ही दूसरे ग्राहकसे ज्यादा भाव देनेका राजी नहीं हाता। दूसरे खरीदारको जिस भाव वह चीज मिलती हो उससे ज्यादा भाव देना वह पसंद नहीं करता। एसा तरह कोई दुकानदार दूसरे दुकानदारसे कम भाव लेनेको तयार नहीं होता। बाजारमें किसी भी हिस्सेम भावाकी घटा-बनी होते ही थोडा समयमें सारे बेचनवाला और खरीदनेवालाका उसका पता चल जाता है और उनमें ऊपर बताई हुई प्रतिस्पर्धा चलती है। इस प्रतिस्पर्धाके कारण हा भाव एक्से रहत ह। फिर भी यह हो सकता है कि प्रतिस्पर्धाके गुरु होने और उसका निश्चित परिणाम निकलनेके बीच भावमें थोडा बहुत फरक बढ़त हो। जो बाजार बहुत व्यवस्थित हो गय हो उनमें भी एक ही समयमें एक ही चीजके सौते अलग अलग भावामे होना सम्भव है। जो खरीदार अधीर और उतावले हाते ह वे भाव स्थिर होन या भाव निश्चित होनसे पहले ही ज्यादा भाव देकर खरीदने लग जाते ह। एसी तरह घबराहटमें बेचनवाले भाव कम भाव पर बेच डालनेको तयार हो जाते ह। एसा भी होता है कि गात प्रकृतिवादी और हांगियार आदमी एक ही दिनमें जल्दबाज बेचनवालासे कम भावमें मात्र खरीद कर और उतावले खरीदारको अधिक भावमें माल बेचकर नफा कमा लेते ह। भाव स्थिर ता गात प्रकृतिक जानकार और कुशात्र चेतन करनेवालेके सौदेश ही होते ह। इस तरह यह कहनेके बजाय कि किसी एक समयमें एक बाजारमें समान गणावाली चीजके भाव एक्से रहते ह यह कहना चाहिय कि भावका एक्से एकसा रहनेकी तरफ होना है।

स्थानीय बाजार और बिन्दव्यापी बाजार

५ इस कसौटी पर परखनेसे हमें पता चरेगा कि कुछ चीजके बाजार स्थानीय होते ह अर्थात् अलग अलग जगहो पर उन चीजके अलग अलग भाव रहते ह। हमारे देशमें दूध साग भाजी फलफल आदि जल्दी बिकनेवाली चीजके भाव स्थानके अनुसार अलग अलग हाते हैं। बड गहरोम इन चीजके भाव बहुत अधिक होने ह छोटे गहरोमें उनसे कुछ कम और

गावामें बहुत कम पाये जाते हैं। दूध अधिक समय तक अच्छा नहीं रह सकता इसलिए किमी भा गहरकी दूधकी आवश्यकता आमपासके कुछ मोटके धनमे ही पूरा का जा सकता है। इस क्षत्रक बाहर दूध कितना ही उपन हाता हो और वहा घाम चारकी खासी अच्छी सुविधा हानम दूध कितना ही सस्ता पडता हो ता भी वन दूध उस गहरम समय पर अच्छी हात्मम नही पहुचाया जा सकता। इसलिए गहरमें बरनवाली दूधका माग और पूनिकी प्रतिस्पर्धामें उस मर्पादिन प्रणैके गहरका दूध कोई हात्र नही उटा सकता। हा पश्चिमके देगाम दूधको रम्व समय नफ अच्छी हात्ममें रचनके लिए एकम ठा तापमानमें रखनकी बनाविक पद्धतिका मदमे और यानायातके माधनाकी यवम्याव कारण दूध बहुत दूर दूर तक ग्राहकोंक पास समय पर और अच्छी हात्ममें पहुचाया जा सकता है। ऐसे देगामें दूधक बाजारका क्षत्र काफी बटा है। यही घान माग भाजा और फर फूटकी है। य चीजें जितनी ताजी होती ह उननी ही उनकी उपयायिता ज्यादा हाता ह और इसीलिए उनकी माग जोर कामन भी ज्यादा हाथी ह। अभा हमारे देगामें एन चीजाक बाजार बहुत मर्पादित ह यानी बरग अलग गगहाम अलग अलग हात ह। जिस प्रणैमें साग भाजा और फल फूट बहुत उत्पन हाते ह वहा य बडी मात्राम जोर नस्त मिन्ते ह। वहा य उत्पन नहा हात वहा बहुत महंग और कम मात्रामें मिन्ते ह। किन हाण्ड फ्रास बन्जियम जोर दमाक जस छाट देगामें यानायातके तज साधनाका व्यवस्था कारण और इन चीजाका ताजी जयी ही रखनकी बनाविक सुविधाआके कारण, जा चारें जल्दी बिगड जानेवाली माना जानी ह उनक लिए भी मारे देगाम एक बाजार बन गया है अर्थात् सार देगामें मय जगहा पर य चारें लगभग एक हा भावस बिस्ता ह यद्यपि वहा भा यानायातका रम्व अपना काम क्रिय बिना नही रहता। मौसममें साग भाजी और फर फूट मय पदा हात ह इसलिए उननी पदावारक रगानामें उनर भाव मम्न रहन ह, यवाकि बहुत उता मात्राम मात्र गटर भजनका रम्व उठानका अपेक्षा उन म्यान पर ही सस्त भावसे बक गैरम उत्पादनकी अधिक सुविधा रगना है।

६ मरुपन और माम जयी यात्र समयमें बिगड जानवाला बाजारके बाजार भी इन बाजारके रक्षणकी बनाविक पद्धतियाके कारण जम बिगाड होन लगे ह। इन बाजारको एम प्ररार रित्रामें रन्द बरन ह वि बाहरम हवा रित्रगुल भीतर न जा सके। फिर य हूँ रेर और जहाजमें रम्वने ठड तापमानवाक टिवा या कमरामें रम्वकर हातरा माल दूर भजा जा

समता है। इनके भावमें यातायात-खर्च जितना बहुत घोग पर ही पड़ता है।

७ जो चीज कीमतमें बहुत हल्की परन्तु वस्त्रमें बड़ी जोर धजनमें भारी हानी है जने रेश फरर चूना मिट्टी इट और पत्थर उनका यात्रा हमें बिल्कुल स्थानीय ही रहते हैं। ये चीजें जहां होती हैं या बनाई जाती हैं वहां उनकी जो कीमत होती है उसमें जैसे जैसे उन्हें दूर ले जाया जाता है वैसे वैसे वृद्धि होती जाती है। एक-दो मीलके अन्तरमें भी उनके भावमें बहुत फरक पड़ जाता है क्योंकि इन चीजांकी मूल कीमत पर यातायातका खर्च बहुत ज्यादा पड़ता है। दूसरी ओर सोना चादी और हीरा मोती वगैरा जिनकी जोर बहुत कीमती चीजांका यातायात-खर्च उनकी भारी कीमतकी तुलनामें बहुत घाटा होता है। इसलिए उनके बाजार विश्वव्यापी होते हैं। साना चादा और जवाहरातका कीमत दुनियाके सारे देशोंमें लगभग एकही होती है।

८ जिन चीजांकी सब जगह जरूरत रहती है जो बहुत बनी मात्रामें उत्पन्न होती हैं जो जल्दी विग्नवादी नहीं होती जिनका निश्चित बणन किया जा सकता है और जिनका जानि और गुणके अनुसार निश्चित वर्गीकरण किया जा सकता है उन चीजांके बाजार बहुत बड़े होते हैं। जो चीजें जमुन देशोंमें ही उत्पन्न होती हैं। लेकिन जिनकी आवश्यकता सब देशोंमें हो — जम गहूँ रुई तिठहन घामट्टे वगैरा — उनके बाजार विश्वव्यापी होते हैं। बेचनवाले और खरीदनेवाले प्रत्यक्ष मित्रे बिना और चीजका आलामे देय त्रिना भी उसकी जातिन वगैर परसे या उसके नमून परसे उसका सोच कर सकते हैं।

९ अध्यासत्रिगोन श्रमको भी बाजारकी चीज माना है। मजदूरकी जरूरत सब देशोंमें होती है परन्तु उनके बाजार हमें स्थानीय रहने हैं। इसका कारण यह है कि मजदूर कोई जड़ या निर्जीव चीज नहीं है। उनकी अपनी रुचि अरुचि भावनामें जोर स्वतंत्र इच्छा होती है। इसलिए उन्हें एक जगहमें दूसरी जगह जल्दी जाती नहीं भजा जा सकता। (यूरोप और अमरीकाके गुगामोके व्यापारको इसका अपवाद समझा जाना चाहिए। लेकिन उसमें ता जवरस्ती थी।) वे अपना बतन छोड़कर जानको तयार न हो, उन्हें दूसरे प्रयोगका हवा-पानी अनुकूल न आय नय रहन-सहन और रीत रिवाजोंमें रहना उन्हें पसन्द हो या न हो कोई बलवान और बहुत काम करनवाला है और कोई कमजोर है। कोई होगियार है और कोई

मूल हा कोई आगामी हा और काइ अडिपल हों—इन सब कारणाने एक दशासे दूसर दामों ही नहीं बल्कि एक हो देगके अलग अलग भागामें भी मजदूगारी अदला-बदल नह्य हा मचना। और मजदूगारी प्रहृतायत और कमाक कारण विभिन्न प्रन्धाम मजदूगैका दर अलग अलग हाती ह।

१० उपरोक्त विवचन परसं हमने देखा कि बेचनवाला और खरीदनवालाके बीच परस्पर और एक-दूसरेके साथ चन्नेवागे गुणे प्रतिस्पर्धाके कारण जहा एक जातिकी और समान गुणवागे चीजाके भाव एक्स रह सकत हा वहा यह कहा जाता है कि उस चीजका बाजार एक है। काश्मीरमें सर दो पन्का एक मिठता हा और अहमदाबादमें ग आनका एक मिठ तो कहा जायगा कि सरका बाजार अहमदाबाद और काश्मीरमें अलग अलग है। काठियावाडके गोर प्रन्धामें अठ्ठी गाय ५० रु० में मिलता हा लेकिन बम्बईमें बसी हा गायक २०० रु० दन पर ता कहा जायगा कि गायका बाजार काठियावाड और बम्बईमें अलग अलग है। किन रई गहू और घासलट वगैरा चीजाके भाव उाकी अलग अलग जातिके अनुसार मारा दुनियामें लगभग एकसे हात ह। बम्बई त्रिपरपूल और न्यूयाबमें एक जातिकी रईने भावमें ज्यादा फरक नहा पटना। यातायात-सुबके कारण थाडाना फरक पटना है लेकिन एमी चीजा पर यातायात-सुब बहुत भारी नहा आता। इसलिए तीना स्थानाका बाजार एक ही ह एसा कहा जायगा।

विनाल बाजारकी आवश्यक गनें

११ बाजारके विनाल हानक त्रिए नाचकी गनें जरूरा मानी जानी ह

(१) समाचार भेजन और माग लान—ल जानने सामानाकी व्यवस्था सस्ती और तेज हानो चाहिये। सराफा और बचनवाला एक-दूसरेके साथ जदी सम्पर्क स्थापित कर सकें ऐसी तार-टगीफोनकी व्यवस्था हो तो बाजारका विस्तार बढ सकता है। अलग अलग देगामें पन्ग होनवागे मालकी फरक या उत्पादनमें फरक पहनका सम्भावनाके समाचार जोर उन परसं बडे अनुमकी व्यापारी भावके जो अलग अलग ह व अलग मारा दुनियामें तर्कीम फरकये जा सकने ह और जहा मालकी माग हो वहा जर्दीमे और माग पर ज्यादा अनर न हो एसी विफायती दराम माल पहुचानेकी सुविधापूर्ण व्यवस्था भी हुइ है। इमी कारणसे बाजार बहुत व्यापक हा मने है।

(२) गणह अथवा पूनि और माग अथवा खपनकी मात्रा बहुत बडी होनी चाहिय याती माल एसा हाना चाहिय जितरा उत्पादन बहुत बनी मात्रामें होना हो और उसकी माग भा बहुत ही बनी मात्रामें हा। जम,

रुई या गहूकी माग दुनियाके बहुतेरे देशमें बनी मात्रामें होनी है इसी तरह अलग अलग देशोंमें उनका उत्पादन भी बनी मात्रामें होता है। इस लिए इन चीजोंके बाजार बहुत विंगड ह। लेकिन राएण्टर चमडकी जरूरत ठड देशोंमें ही होती है और वहा भी उसकी माग जायमें ही होती है इसलिए उसके बाजार छोटे होने ह। कुछ चीजें ऐसी होती ह जो मर्यादित मात्रामें ही मिल सकती ह। उगाहरणके लिए प्राचीन कालकी उपकरण विरल वस्तुआ अथवा उत्तम कलाकी वस्तुआके बाजार सदा मर्यादित ही रहते ह।

(३) मालकी जाति और गुणक अनुसार उसका वर्गीकरण करनेकी तथा उसके निश्चित वर्णन और नमूनकी पहचान परस सारा माल एक ही वर्णनके अनुसार अथवा निश्चित वर्गीकरणके अनुसार है ऐसा नियम करनेकी सभावना होनी चाहिये। अगर ऐसी सुविधा हो कि मालकी जाति आदिके बारेमें गलतफहमी भ्रम या गवा न रहने पाय तो ही दूर बठकर और मालको आखासे देख बिना तार या टेलीफोनसे उमने सौते हो सकते ह। रई गहू और सोन चादीके सौते इस तरह हो सकते ह। परन्तु साफ है कि ताय भस खरीदनी हो तो उन्हें प्रत्यक्ष देख बिना नहा खरीदना ना सकन।। कारखानमें तयार किये हुए मालकी निश्चित पहचानके लिए कारखानदार और व्यापारी अपन अलग अलग जातिके मालके लिए अपन व्यापार चिह्न (टडमाक) रखते ह। नससे बाहरक व्यापारीको उस मालका जाडर देनेमें सुविधा रहती है।

(४) माल ऐसा होना चाहिये कि एक जगहसे दूसरी जगह पहचानमें उसकी मूल कीमतके अनुपातमें यातायात खच बहुत ज्यादा न आय। ऊपर कहा जा चुका है कि इट पत्थर चूना रेत बगराके बाजार भावमें याता यात खचका बहुत बडा भाग होता है। एसी चीजोंके बाजार व्यापक नहीं हो सकते।

(५) माल ऐसा नहीं होना चाहिये जो जल्दी विंगड जाय। यह चर्चा हम कर चके ह कि दूध साग भाजी फल फूल आदिके बाजार स्थानीय होने ह। लेकिन दूधके पाउण्डरका गाण करके जमावे हुए (कण्डेड) और नम्रमें हवा न रखे इस तरह बने किये हुए दूधका और पक करके बनानिक पद्धतिसे सुरक्षित रखे हुए मसखन मास फल बगरा चीजोंका बाजार बहुत व्यापक हो गया है।

द्रव्य और पूंजीके बाजार

१२ दूसरी चीजारी तरह द्रव्य और पूंजीके भी बाजार होत ह। यह काम सराफी पहिया जीर बक करते ह। वे अलग बला मनुष्याकी छोटी छोटी रकमाका अपन यहा चातू खानेम या निश्चित अवधिने लिए जमा रखते ह जीर इस तरह एकत्र हुआ द्रव्य बडी 'सापारिक' औद्योगिक कप नियामो जमानत पर उधार देने ह तथा ऐमा करके पंजीका प्रवाह उद्योग प्रवाकी आर माइतका काम करने ह। साथ ही वे मात्रवा उपयो करके इजिम रूपम द्रव्य खडा भी कर सकते ह। इस सम्बन्धम विशय विवचन अगरे प्रकरणोमें किया जायगा।

३

मूल्य आर कीमत

१ ज्तारी भागाम सामान्यत हम मूल्य और कीमत इन दो शब्दोका एक ही अर्थम उपयोग करत ह। किसी पुस्तक पर मूल्य २ रुपय या कीमत २ रुपय छपा रहता है। हम समज लत ह कि यह पुस्तक बरीदनी हो ता हम २ रुपय लेन पयग। परन्तु जयगारत्रके प्रथाम इन दो शब्दोका विशय अर्थमें उपयोग होता है। जो चीज बहुत उपयोगी हो उसक बाजारम भल कुछ भी दाम न लगे तो भा एसा कहा जाता है कि वह बहुत मूल्यवान है। उदाहरणने लिए हवा और पानी। गू वाजरा या चाकर हमारे भाजनकी आवश्यकताकी दृष्टिसे बहुत मूल्यवान ह फिर भी बाजारम ये चाजे सोा चादी जसा कीमता नही मानी जाता। हवा और पानीकी तो कोइ कीमत भी नहा होता। य चीज बाजारमें कीमती न मानी जान पर भी हमारे भावनका टिजाम रखाण लिए बहुत आवश्यक होनेके कारण बडी मूल्यवान ह। य चीज मनष्यक लिए बहुत ही उपयोगी ह। उनके बिना उसका काम ही नहीं चल मनना। इन चीजाम उपयोगिताका बहुत बडा गुण है किन जन बालमें हम ताइ दूसरी चीज लेने जाय ता यह नही मिगो यानी विनिमयका दृष्टि उनका बाइ कीमत नही। इगणिए हम कह मनते ह कि इन चीजोका उपयोग-मूल्य नो बहुत है परन्तु विनिमय मूल्य या बाजार-मूल्य कुछ भा नही है। गेह बाजरा या चाकरका तुलनाम सान चाकीका उपयोग मूल्य बहुत कम है फिर भी इन धानुभाका विनिमय मूल्य बहुत अधिक है।

२ यह जरूरी नहीं कि जिम जिस चीजमें उपयोग मूल्य हो उसमें विनिमय मूल्य भी होना ही चाहिए। इससे उगटे किसी भी चीजमें विनिमय मूल्य तभी हो सकता है या तो बाजारमें उसकी कीमत तभी मिल सकती है जब उसमें लोगान कम या अधिक उपयोगिता मान रखी हो। इसमें ऐसा जरूर हो सकता है कि मनुष्यने किसी चीजमें उपयोगिता अनुचित रूपमें मान ली हो जैसे गराबी गराबका उपयोगा वस्तु मान लेता है। गराबी गराबकी कामत इसीलिए देनका तयार हाता है कि उस गराबमें उपयोगिता मालूम होती है गराबस उसे अपना माना हुआ आनन्द मिलता है और इसलिए गराबमें सचमुच उपयोग मूल्य न होना पर भी उसका विनिमय-मूल्य बाकी होता है।

३ अथर्वब्यवहारमें हमें विनापत विनिमय-मूल्यका ही विचार करना होता है। एक चीजके बदलेमें दूसरी कौन कौनसी चीजें मिल सकती हैं इसके आधार पर उस चीजका विनिमय मूल्य आका जाता है। किसी भी चीजके बदलेमें पहले जितनी चीजें मिल सकती थी उनसे अब कम मिलें तो यह कहा जायगा कि उस चीजका विनिमय मूल्य घट गया और उस चीजकी तुलनाम रखी जानवाली उन दूसरी चीजाका विनिमय मूल्य बढ़ गया। उदाहरणके लिए पहले एक मन बाजरेके बदलेमें जूताकी एक जोड़ मिलता हो और अब एक जोड़ जूताके लिए दो मन बाजरा देना पड तो ऐसा कहना चाहिए कि जूताका मूल्य बढ़ गया परन्तु साथ साथ यह भी कहना चाहिए कि बाजरेका मूल्य घट गया। सभी चीजाका विनिमय मूल्य एकसाथ घट या बढ़ नहीं सकता क्योंकि कुछ चीजाका विनिमय मूल्य बढ़ता है तो उनके बदलेमें आनवाली चीजाका विनिमय मूल्य घटता है। अध्यात्ममें किसी चीजके हम तरहके विनिमय मूल्यने लिए बदलेमें दूसरी चीजें पानकी उस चीजकी शक्ति यानी खरीद शक्तिके लिए अकेला मूल्य प्राप्त काममें लाया जाता है। लेकिन आजकल तो सामान्यतः सारी चीजाका मूल्य समाजमें जो द्रव्य चिन्तन हो उस द्रव्यके रूपमें ही आका जाता है। किसी चीजके मूल्यका द्रव्यके रूपमें जो जवन होता है उसके लिए हम कीमत या भाव शब्दका उपयोग करग।

४ चीजाके विनिमय मूल्यके लिए मूल्य और कीमत ये दो अलग अलग शब्द काममें लानका कारण यह है कि जसा ऊपर कहा गया है सब चीजाका मूल्य एकसाथ नहीं बढ़ सकता। एक चीजका मूल्य घटता है तो दूसरी चीजका मूल्य बढ़ता है लेकिन सभी चीजाकी कीमत एकसाथ घट

या बढ सकती है। जब महगार्द होता है तब सभी चीजाकी कीमत या भाव बढने ह और सस्ताई होता है तब सभी चीजाकी कीमत या भाव घटते ह। इसका अर्थ यह हुआ कि द्रव्यका हा, जिनके जरिये सारी चीजाका मूल्य मापा जाता है मूल्य बढता घटता है। दूसरे महायुद्धमे पहलेके समयमे आज हर चीज महंगी मिलती है। आज रुपयेका मूल्य या उसकी खरीद शक्ति घट गद है, जब कि सस्ताईमें रुपयका मूल्य या खरीद शक्ति बढती है। रुपया केबर हम बाजारमें जायें तो सस्ताईके समय उसके बदलेमें हर चीज हमें ज्यादा मायामें मिलगी। द्रव्यके मूल्यमें परिवर्तन होनेके कारण और उसके फलस्वरूप उत्पन्न होनवाली महगार्द या सस्ताईका धोरेवार चर्चा करनेका यह म्दान नहीं है। यह चर्चा हम आगे करेंगे।

यहां ता हमन इतनी चर्चा केवल यह स्पष्ट करनेके लिए का है कि विनिमय मूल्यका दो रूप—मूल्य और कीमत इन दो शब्दोंका—इस पुस्तकमें हम भिन्न अर्थोंमें उपयोग करेंगे।

५ अब हम यह देखें कि किसी चीजके मूल्यका मुख्य आधार किस बात पर होना है। यह ता हम देख चुके कि किसी चीजका उपयोगिता पर उसने मूल्यका आधार रहता है। मूल्यका दूसरा आधार श्रम पर भी रहता है, जो उस चीजको पैदा करनेमें या उस उपयोगका माध्य बनानमें मनुष्यको करना पडता है।

हवा और पानी जसी भारी उपयोगिता मूल्यवाली परन्तु अनामान मिल जानवाली चीजके लिए कोई श्रम नहा करना पडना। इसलिये उनका श्रम मूल्य कुछ नहीं होता और इसीलिए उन चीजाका विनिमय मूल्य भी कुछ नहा होता। इन चीजाका सत्य-मुक्त संपत्ति मानकर अब शास्त्रके विवेचनमें हमने उह स्थान नहीं दिया। अर्थशास्त्रमें तो श्रमप्राप्त अथवा कष्टमाध्य सम्पत्तिका हा विचार करता होता है। एरिन्जिन जिन चीजाके लिए श्रम किया गया हो एसा सभी चीजाका विनिमय-मूल्य नहीं होगा। किन्तीने मूल्यपूर्ण और व्ययका श्रम करके प्राप्तिकर वा हानिकारक चीज बनाई हो ता उसका विनिमय-मूल्य नहा हाता। बाजारमें उसकी कुछ भी कीमत नहीं मिलती। परन्तु एक बात निश्चित है कि विसा चीजका विनिमय मूल्य सभी हो करता है जत्र उा चीजके लिए कुछ श्रम हुआ हा, यानी वह चीज श्रम-मूल्यवाला हा। अन्वत्ता यह श्रम मूल्यपूर्ण

जीर निवम्मा न होकर एसा होना चाहिये, जिस समाजम मायता प्रदान की हो जीर जा समाजम उपयोगी समझा जाता है।

६ किसी चीजके विनिमय मूल्यका प्रश्न तभी पण होता है जब मनुष्यन अपने उपयोगके लिए नही वह दूसरेको बचाने लिए वह चीज बनाई हो। जो चीज वह स्वय बनाता है जीर स्वय हा काममें लेता है उसने विनिमय मूल्यका प्रश्न हा खडा नग हाता। इसलिये ऐसी चीजके मूल्यका अज्ञात गगाता नही पडता। फिर भी उस चीजने उपयोगिता और श्रमका तत्व तो होता ही ह। उसके विनिमय मूल्यके प्रश्न पर भग विचार करना जरूरा न हा फिर भी उस चीजमें उपयोग-मूल्य और श्रम मूल्य तो रहते ही ह। उपयोग मूल्यका चीजके उपयोगके साथ संबध है। श्रम मूल्यका चाजके उत्पादनके साथ सम्बध है। किसी चीजके उपयोग मूल्य पर उस चीजकी मागका आधार रहता है। चीजके श्रम मूल्य पर उस चीजकी पूर्तिका आधार रहता है। मनुष्य कोई चीज तयार करके स्वय ही उसका उपयोग करे तो भी उस चीजके उपयोगसे जो लाभ मिलता है या उस चीजके द्वारा अपनी आवश्यकता पूरा होनेसे जो तृप्ति हाती ह उसके साथ उस चीजके उत्पादनमें लग श्रम या उठाय गय कष्टका मेरु बठ ता ही मनुष्य उस चीजके लिए श्रम करनेको तयार होगा। किसी चीजको तयार करनेमें बहुत श्रम करना पडता हो जीर उसके उपयोगसे उस श्रमकी तुलनामें बहुत कम सतोप या लाभ मिलना हो तो मनुष्य उसने लिए श्रम करनेको तयार नही होना। यह बात तो हुई उस चीजकी जा मनुष्य अपने उपयोगके लिए ही तयार करता है। दूसरेके लिए अगर वह कोई चीज बनाता हो तो वह यह देखगा कि जा परिश्रम वह करता है उसका पूरा बदला उसे मिलता है या नही। अगर उसे इतना बन्ला न मिले जिससे उसे सतोप हो तो वह उस चीजकी बनानका श्रम करनेको तयार नग होगा। यह बन्ला मिलनका आधार इस बात पर रहता है कि वह चीज दूसरेके लिए कितनी उपयोगी होगी। बनानवाला आदमी अपने उत्पादन श्रमका जो मूल्य कूते उसका मूल्य उस मूल्यके साथ बठना चाहिये जो उसे काममें लेनवाला अपने उपयोगका लगाता है। अर्थात् किसी भी चीजके श्रम मूल्यका अवन और उपयोग मूल्यका जकन एक हा तभी उसके बनानवाले जीर उपयोग करनेवालेके बीचका विनिमय-व्यवहार बिलकुल न्यायपूर्ण माना जायेगा उस चीजका विनिमय मूल्य बिलकुल उचित आवा गया समझा जायगा। यह चीज अगर पसेमे बेची जाय ता उसकी बिक्री

ठीक कीमतसे हुई मानी जायगी। जदग बदली या विनिमयके यायमगत और उचित व्यवहारके लिए यह जरूरी है कि चीजके विनिमय मूल्यका उपयोग मूल्यका और धम मूल्यका एक-दूसरेके नाय अच्छी तरह भेग बडे।

७ आज इन ताना मूल्यका हिसाब द्रपसे गनाया जाता है और समाजमे आर्थिक अममानता फली हानेके कारण हम हिमायत सच्चे यायकी रक्षा नहीं हाती। उदाहरणके लिए अमीर आदमाने लिए किसी चीजका उपयोग मूल्य बहुत योग्य हो, ता भी वह उनके लिए ज्यादा द्रव्य देनेका तयार हा जाता है, क्पाकि उसे द्रपका काई कमी नहा। द्रव्यका मूल्य उयग मामें बहुत कम होता है। सामाजिक दृष्टिसे देयें तो हीरा, माणिक मोती बगरा चीजोका उपयोग मूल्य बहुत कम माना जायगा परंतु अमीर लोग अपने शौकके लिए तथा जसनी अमीरी और ठाटवाटका प्रदशन करनेके लिए ऐसी चीजें भारी मूल्य दकर खरीन्त ह। इसा तरह फगने लिए या फनी चीजोंके लिए नाग अधिक द्रव्य खच करनको तयार हो जाते ह। ऐसी चीजें बनानेवालाको उनके धमके बदलेमें अधिक द्रव्य मिलता है। दूसरा तरफ साग भाजा और घी दूध बगरा मानकी चीजें पदा करनवालाको उनके धमका पूरा बन्ला नहीं मिलता। जीवनक लिए आवश्यक इन आद्य-प्राथमिक भाव इतने कम होते ह कि उनके उत्पादकाको पेट भर लाना भी नहीं मिलता। इसी कारण इन अयायकी दूर करनेके लिए काठ माक्सन एसा सिद्धान्त प्रतिपादित किया * कि किसी चीजक मूल्यका अवन उसे तयार करनेमें लगे हुए धमसे हा किया जाना चाहिये। माधोजीन इस सिद्धान्तका दूसरी भाषामें जनताके मामने रखा है। वे कहते ह कि समाजक लिए जो चीज आवश्यक और उपयोगी हो उसकी कीमन इतना उचित होनी चाहिय कि उसमे बनानेवालेका निर्वाह अच्छी तरह हा जाये। इन विषयकी चर्चा हम उचित कीमनक प्रकरणमें करेगे।

मांग और पूर्ति

मांग और पूर्ति का विषय अथ *

१ किसी चीजके लिए मांग हा जोगाको उसकी आवश्यकता अनुभव होती हो तभी मनुष्य उसका उत्पादन करनेके लिए प्रेरित होता है। लेकिन आजकल उत्पादन करनेमें समाजकी आवश्यकतायें पूरी करनेका विचार उत्पादकके मनमें मर्याद नहीं होता। किसी आत्मीको कपडकी कितनी ही आवश्यकता क्या न हो परन्तु उसके पास कपडा खरीदनेके लिए यदि इच्छा न हो तो कहा जायगा कि उसके लिए कपडका उत्पादन होता ही नहीं। दूसरी ओर किसी अमीरको बहुत कीमती सिगरेटकी जरूरत हो और उस सिगरेटके मुहमांग दाम देनेको वह तयार हो तो उसके लिए एनी सिगरेटका उत्पादन किया जायेगा। कोई उत्पादक इस बातका विचार करने नहीं बैठता कि सिगरेटस ज्यादा आवश्यक चीजके बिना समाजमें अनरु लोग रह जाते ह।

२ बाजारमें ख़ाद्य-पदार्थों या कपडका सग्रह कितना भी क्यों न हो लेकिन जिस मनुष्यके पास यह खुराक या कपडा खरीदनेको पसा नहीं होता उसकी आवश्यकतायें उस खुराक या कपडसे पूरी नहीं हो सकती। बाजारमें खुराक या कपडकी कितनी मांग है इसका अंदाजा लगाते समय उस बिना पैसेवाले आदमीकी आवश्यकता या खपतका हिसाब नहीं लगाया जाता। बाजारमें तो किसी भी चीजकी आवश्यकताका अंदाज इसी परसे लगाया जाता है कि उस चीजको खरीदनेकी शक्ति कितना मनुष्याके पास है और कितना मनुष्य उसे खरीदनेको तयार ह। बाजारकी दृष्टिसे तो जिन लोगोंके पास उस चीजके खरीदनेकी शक्ति हा उन्हीकी मांगका हिसाब लगाया जाता है। इस परसे इतना ध्यानमें रखना चाहिये कि समाजकी आवश्यकता और बाजारकी मांग — ये दो चीजें एक नहीं होती।

* मांगका अर्थ है समाजके साधनयुक्त उपभोगरु मनुष्याकी आवश्यकताओंका अन्वय। इस तरह कहा जा सकता है कि मांग यानी साधनरुचा जोर उपभोगरुचा।

पूर्तिका अर्थ है समाजके विनिमयकी अभिलाषा रखनेवाले मनुष्याके पास रहनेवाला आवश्यकताओंका सग्रह।

३ हमी प्रकार चीजकी पूर्तिका हिसाब मालकी रागिब कबल अस्मित्वसे ही रही लगाया जाता। मालकी रागि यदि बाजारसे बतनी दूर हो कि बाजार तक अच्छा स्थितिमें न पहुंचाई जा सके तो वह बितनी ही बच गया न हो बाजारकी कीमत तब करनेमें मालकी पूर्तिका जो हाथ होता है उसमें इस रागिका जोड़ विना नही लगाया जाता। जब सिवा, किसी व्यापारिक पास मालकी रागि बचत हो, तबिन यदि वह इस मालको बाजारमें बचनके लिए न रखे तो उसको यह रागि भी पूर्तिमें नही गिती जा सकती। अपने पासका माल व्यापारी तथा बचनको निवालता है जब उसकी पूरा कीमत उम मित्र। अतः जम किसी चीजकी मनुष्यकी आवश्यकता और उम चीजकी बाजार भाग एक बात नही हाती वन मालकी रागि और चीजकी बाजारमें पूर्ति भा एक बात नही होती। परन्तु काल माल तुरन्त गिण्ट जानेवाला हो जिस भाग भाजी तो उसका पूरा भाग मित्रे या न मित्रे फिर भी वह बिकुल पराव हो जाय और उस फेंक देता हो इससे बजाय माली उसे थोड़े समयमें बच ही डालता है। अतः ऐसे मालके बारेमें बाजारमें मालकी रागि और चीजकी पूर्ति एकसी हाती है। लेकिन एसा माल जो लंबे समय तक टिक सकता है व्यापारी यदि अच्छा भाव आते तक न बचता उनसे पासका माल बानागना पूर्तिमें जोड़ हाथ नही बढाना। यह जानी हुई बात है कि गादाममें माल भरत हात पर भी ज्यादा भाव तक लिए व्यापारी उस बचनके लिए नही निराशते और हम तरह बाजारमें तभी पदा करते ह।

४ किसी भी चीजकी बाजारमें भाग और पूर्ति बितनी ही सजा अमर उस चीजकी कीमत पर पडता है। हमी तरह कीमतका अनर भा भाग और पूर्ति पर पडता है। यह किस प्रकार हाता है हम समझाने लिए भाग और पूर्ति-सम्बन्धका कुछ विस्तृत तथा आवश्यक है।

उपयोगिताकी सामा और भाग

५ एसा पट्टा जाता है कि मनुष्यका इच्छाया या आवश्यकताप्राप्तता का सामा नही जाता। अपना आवश्यकतायें बताने से जाना मनुष्यका स्वभाव है। एतः आवश्यकता पूरी हुई कि वह दूसरी चीज करे तथा है और दूसरी पूरा हुई कि तीसरी करे तथा है। इस तरह सामापन वह अपना आवश्यकताप्राप्तकी आई सामा नही पायता। तबिन मनुष्यकी एतः एक आवश्यकताया जल्द अन्य विचार करे ता पता चरता है कि प्रत्येक आवश्यकताया मौसा तब ही हाता है। आतः मनुष्यका जानना एतः यकी आवश्यकता चात्र है जो इमकिल उमका मनुष्यके लिए बचत बचता मा ५-११

उपयोगिता है। जिन मनुष्य के लिए उमकी मांगी सीमा हानी है। मनुष्यका पेट आहारकी अमुक मात्रा भर जाय और न अघा जाय ता फिर कुछ समयके लिए — यानी उस दुनारा भूख न लग तब तक — उसे आहारकी अधिक जरूरत नहीं रहेगी और अधिक आहारका माग भा वह नहीं करेगा। पेट भर जानसे बाद अधिक आहारका उम समय ता उमके लिए कोई उपयोग नही रहेगा। उस समय अधिक आहार उमके लिए उपयोग ही नही बल्कि नुससान करनेवाला भा मिद्ध हो सकता है। भव भिन्नता मनुष्यकी इसी वडा आवश्यकता है कि साथ साथ वन मह्य हो और उसके पास पस बम हा तो दूसरी चीजके लिए पच करना छोडकर वह पहले अपन लिए आवश्यक साधनसाधन करीगा। जावयन बाहार परात्मके बाद पमा बचगा ता ही वह दूसरी राज करीदनका विचार करेगा। दूसरी जा भव भिन्न जानसे बाद उम समयके लिए उम आहारका बार् जावयनता नही रहेगा। अतः उसके लिए आहारका उपयोगिताकी सीमा जा जायगा और आहार किता ही मस्ता हा ता भी वन उस खरीदना नही चागा और न करेगा। किसे भा चानसे बारमें हम प्रकारकी तर्क — बम बम नही चाहिए की वक्ति अमुक मात्रासे अधिक प्राप्त करने तथा खरीदनेकी अनत्परता या अनिच्छा उपयोगिताकी सामा कहती है। मनुष्यकी उपयोगिताकी सीमा आ जानके बाद उस समयके लिए ता उस चीजके लिए उमकी माग नही रहेगा। कइ बार एसा होना है कि वास्तवमें चीजकी उपयोगिता ता हो लेकिन उसे खरीदनेकी शक्ति नही हो तब मनुष्यको मजदूर होकर अपना उपयोगिताका सीमा बाधनी पत्नी है। बाजारमें इम चीजकी माग वह नही कर सता। प्रचलित अर्थशास्त्र कहता है कि यह देखना हमारा काम नही है कि मनुष्यन अपनी उपयोगिताकी सीमा स्वेच्छासे बाधी है या अनिच्छासे। और बाजारमें तो कोई एस प्रश्न पर विचार करता ही नही। उसके पन्स्वरूप बाजारमें तो उपयोगिताकी सामा और माग एक ही बात हो जाती है। आहारके मामलमें उपयोगिताका सीमा जल्दी आती है परन्तु धाने बहुत मात्राम उपयोगिताकी सीमा जा जानका यह नियम लगभग सभी चीजों पर लागू होता है।

उपरोक्त बातें मन इसलिए काममें लिया है कि उनमें कुछ अपवाद होने ह। जस कोई जातमी डाकके पुराने टिकट इकठ्ठ करता है। वह यथा सभव अधिकसे अधिक टिकट जमा करना चाहता है। कुछ टिकट जमा

६ माधारण नियम यह है कि किसी चाजकी मात्रा जम जम मनुष्यर पास बन्ती जाना है बसे वम उमकी बढ़ती हुई मात्राका उपयोगिता घटती जानी है। मनुष्यका कुछ दा जानी कपडाकी जल्गन हाती ह। इनमें भा पहनी जानीका उपयोग मूल्य जिनना हाता है उतना दूराग जानीका नहा होना जोर उमरे प्राकी चाखियाका उपयोग मय ना और भी कम हाता २। यद्यपि रपड रून्त दिन तक टिन्तवाक हानर कारण रपडाका तीसरी जानीकी तुन्त आरयनना न हाने प भा मनष्य य समय कर तीसरी जाना रखनका भी तयार हा जायगा कि बकन बकन बह नाम थायगी। जिाक पास पमकी बनुनामत हानी है वे ता कद जानी कपड रखत ह। लेकिन एम गग भा जिन कपडे आरमारीमें भत्रीभाति रख जा सकत ह तीर सभाक चा मरत २ उमम ज्याका कपडे रखनका तयार नही शन। एम तरत एम पमका जाकमियाकी भा कपडाकी मागका मामा तो थायगी ही। बाई मनष्य अपन बटनर लिए एक कुरमी रखे तो उसकी उपयोगिता उतरर लिए बहुत हागी। अगर उमा कमरमें चार जाक कुरमिया रखनकी सुविधा २ तो मुन्तानियाक लिए कुछ और कुरमिया भी बह रख ग्या। परन्तु मान गीजिय कि कमरेमें कुछ चार कुरमिया ही रखनगे सुविधा हा जोर मय ज्याका कुरमिया रखनग गगकी तगी हाती हा ता चाग्ने ज्यादा कुरमिया उन मनुष्यर लिए निरपयोगा हा नग बरि बटिनाक पदा बरनवाक भा हा थायेंगा। इस परम सामाय नियमक रूपम यह बन्त जा सकना है कि का भी चान जम जम मनुष्यका अधिक मात्रामें मिन्ता जाना है बसे वम उस चाजका उपयोगिता उमके लिए घटती जानी है। किसी चीजका अमूा मात्रा मिन्त जानर बा उमका उपयोगिताका मामा आ जाना है। उतर बा मनुष्य बह चाज सरासराक लिए तयार नहा हाता अर्थात् उन चीजेक लिए उमकी मात्रा नग रह जात।

७ किसी मनष्यर लिए किसी भा चीजका उपयोगिताका सीमाका माप रूब्यर रूपम लगाना हा ता ब एम परम ग्याया ता सकता है कि अपनी आरयननाका चाखिरी चाजका — निमग ग्याक वह चाा रितती ही बरनग शक व मनुष्य नग हा जाना रल्वि अपना मश्व बगता २ा जाना है। दूसरा उगागण ३। कजम जाखीका घन इकट्ठा करनका गन हाता है। उमर लाभरी भा बाद मामा नहा होना। इस गमग ब टुया भड हो परन्तु उमर मश्वका बाद सीमा नही आती।

रास्ती मित्रे तो भी बच न लगा— यह किन्ना कीमत देनेको तयार है। इसका कारण यह है कि बाजारम ता एक जातिवा त्रिती भी चीजों दाम एकसे हान = भल ही उत मनुष्यका आवश्यकताका वह पहली चीज हा या आखिरी। इसलिए हम यह कह सकते ह कि किमी चीजकी उपयोगिताकी सीमासा माप उन कीमतसे लगता है जा मनुष्य बाजारम उसक त्रिए दता ह। सामान्य भाषाम हम यह नहीं कहत कि अमक चीजकी उपयोगिताका सीमा कहा आ जाती है परन्तु यह कहत ह कि अमुक मनुष्यक त्रिए अमुक चीजकी कितनी कीमत है। किसा भा चीजकी हमार त्रिए जितनी कीमत हाती है उममें अधिक कीमत देनेवा हम तयार नहा हाने।

द्रव्यकी उपयोगिताकी तुलना

८ हमन देव त्रिया है कि अलग अलग व्यक्तियोंकी भाजन कपडा आदि चीजकी आवश्यकता अलग अलग हाती है। उनके मिया अपनी श्रयणविशेष अनसार व उन चीजकी उपयोगिताकी सामा भा जल्दी या दरसे बाधते ह। जिस मनुष्यके पास द्रव्य ज्यादा होता है उसकी नजरम द्रव्यकी कीमत कम होती है। इसलिए कम उपयोगी या कम आवश्यक चीजके त्रिए भी वह ज्यादा द्रव्य खच करनको तयार हो जाता ह। धना आदमाका एक रुपया उमके पासक बहुतस रुपयामें ग एर होता = इसलिए किसा निबन्धी-सा चीजक त्रिए उम रुपयको खच कर डालनम उम उस रुपयकी कमा नहा मात्म होना। केकिन बिबुद्ध गराव जान्मीके त्रिए तो एक रुपया बडा उपयोगी— बहुत कीमती है। क्याकि एक रुपयस वह अपन कुटुम्बके त्रिए दो-तीन त्रिनका भाजन जुटा सकता =। ऐसे गराव जान्मीको भा जस जसे अधिक रुपय मित्त जाने ह वसे बसे उन अधिक रुपयाका उपयोगिता या कामत उसके त्रिए घटता जाती है। हा वन्त धनवान मनुष्यका दष्टिमें अधिक रुपयाकी कीमत जितनी कम होना है उतनी कम कामत गरीब आदमीकी दष्टिम अधिक रुपयाकी नहीं हाना।

उपयोगिताकी सीमा निश्चित करनमें अयाम

९ यबहारम हम देखत ह कि गरीब आदमीके त्रिए अलग अलग चीजकी उपयोगिताकी सीमा जल्दी आ जाती है और धना आदमाके त्रिए दरम आती है। यद्यपि अनाज जती चीजके बारमें गरीब और धनी दोनाका उपयोगिताकी सीमामें कोई फक नहा पन्ता। दोनाको एकसी मात्रामें अनाज

चाहिये। गायक गरीबके लिए ज्यादा अनाज चाहिये जोर धनीके लिए कम चाहिये। जनान महंगा हाता ता गरीब जातकी दूसरी चागाको छाडकर भी अपना जरूरतका अनाज जरूर खरीदेगा। अल्पवत्ता आहारम या दूध घी माग भाजी और फल जसी चीजाकी उपयोगिताका सामान्य पत्र पडता है। दूध महंगा हाता ता गरीब आरमी गरी खरी मकगा। इसलिये वास्तवम दूधका आवश्यकता जोर उपयोगिता भी उमर लिए कितनी हो क्यो न हा ता भी अपनी मागकी सीमा उस बाध गनी पडता है क्यकि अपना मागके अनुसार दूध प्राप्त करनकी त्रयकिन उसम नहा है। इसी प्रकार गरीब आमाका कपकी मागका सीमा भी जतदा आता है। उपयोगिताके प्रमाणम मनुष्यकी त्रयकिन न हा तो मजबूत हाकर उम अपनी उपयोगिताकी सामा बाधना पडता है।*

१० अत्र हम किन्म बाजारक व्यवहारका शार गैर। उपयोगिताका सीमा जोर मागका स्वल्प समझनेके लिए अत्र तत्र हमन व्यक्तिपरक उदाहरणा पर विचार किया। बाजारमें ता सारे परास्नेवाकाकी किमी चाजस सम्प्रचित समग्र उपयोगिताकी सामा या मागका अमर कीमत पर हाता है। यद्यपि हर खरीदारका किसा चाजम सम्बन्ध रखनवागे उपयोगिताका सीमा अलग अलग हाती है फिर भा जिम खरीदारका उम चीजस सम्बन्धित उपयोगिताकी सीमा अधिक हाता है वह मनन उसका अधिक कामत देका तयार हा ता भा जो कीमत दूसर खरीदार न्त है उसम अधिक कीमत वह नहा गेता। बाजारमें ता एक जातिकी चाजक भाव एकम ही हात है। चाजकी पूतिकी तुलनामें उसका कुछ भाग कम हा जोर भावादात्मक स अनरनी उपयोगिताकी सामा थाता हा ता जिनम परास्नेवाका जा कामत देना पणी या जिम कीमत पर वह चाज मिग्गा उगी कामत पर अधिक उपयोगितावालाका भी वर चाज मिग्गा। हम प्रकार उपभोगिता स्वयं जितनी कामत देका तयार हा उसका अपक्षा जितनी कम कामतमें वह वस्तु उम मिग्गी है उनका उपभोगिताका लाभ हाता है। इसलिये जत्र तत्र अपा मनमें सानी हु^६ गुणतम कामत उम न चुनाता पर तत्र तत्र कम पगाव वह अधिक गन्नाप प्राप्त कर सकना है।

* कभी परास्नेवा शीचका प्रतिस्पर्धा कभी उचनमालाक वाचना प्रतिस्पर्धा कभी परास्नेवाका उनावर कभी उनका धारज गानि अन्क कारणम धन्नुका कामत निश्चिन हाता है। फिर भा कुछ मिग्गा पर भावादात्मक बाध कामत सानी रहती है।

एसा सन्तोष जीवनकी आवश्यक वस्तुओंमें जितना प्राप्त होता है और धनवान् आगारा जितना प्राप्त होता है। क्योंकि आवश्यक चीजें मंगी हा ता भा पड़े उह ही खरीना पडता है और धनवान् आभी चीज मंगी हो पाय तो भी उह खरीना है।

उच्चकोट मांग और लचकदार भाग

११ किमी चीजकी कीमतमें हानवानी घटा-बगोना अमर जत्र उमका भाग पर हाता है ता यह कहा जाता है कि उम चीजकी भाग उच्चतर है और जब कामना अतर भाग पर अधिक गटा पता तत्र यह कहा जाता है कि उम चीजका भाग उच्चतर है। कामना सम्बन्ध रखनवा भागक इस उच्चतर और अलचकदार कुउ उग्रहरण नीच दिय जाने है

(१) प्राथमिक आवश्यकताओंकी खोजकी भाग सामान्य उच्च हीन होती है और भोजनक या भाग विनासकी चीजका भाग उच्चतर हाता है। खाद्य बिना मनपका काम नहा चना। खानेकी जरूरा चीजें मंगी गे जाय ता भा दूसरी मत्र चीजोंमें बाट बसर करन व चीजें तो मनुष्यकी खरीना ही पनी है। दूसरी आग मानका चीजें अगर उडुन मन्ता हा पाय ता इस कारणमे मनुष्य उह अधिक मात्रामें खरीनका तयार गहा होता। क्योंकि पाय पनाथ मस्त हानस अधिक नही खाय ता सकन। मनुष्य दूसरेक यहा गाकर बीमार पता है ता हम कहन है कि भाग विचार ता करण था न? खाना दूसरेका या परतु पट तो पराया नहा था? खिन जो चीज मीन गीन या भोग विनासकी होनी है वह भहगा हा जाय ता धना आभी ही उसे खरीन सकन है। दूसरे गेग उमके बिना ही काम चन गे है। ग्रामोफोन जसा चीज मन्ती हो जानके गण साधारण गेग भा अपन घरामें उह रखन गे है। पड़े बहुत धनवान् लोग हा उहे रखने थ। मिनमाकी दर बहुत घट जाय ता पडक अड आग मिनमा दमन जाने है परतु रर बहुत व जाय तो थिपटर खानी भी पडा रह सन्ता है। मके विपरात खानकी चीजें कितनी ही महगी या मन्ता क्या न हा जाय तो भी उनकी भागम फर नही पडगा क्योंकि मनुष्य न ता खाद्य बिना रह सन्ता है और न पट भरनके बाद ज्याग खा सन्ता है।

(२) जिस चीजकी खरीद मुठतवा रगी जा सवनी है उसका भाग उच्चतर रहती है। उग्रहरणक लिए कपना धन्त भहगा हा जाय ता

लोग पुरान कपणरा मरम्मत करके काम चला लत ह और कपण नहा करादत । इमण एमा चीजें मटगी हा जय तो उनकी माग एकदम बर जाती है ।

(३) ये चीज सगद कब क्वा जा मरता है उनको माग लचकदार रानी है । एमी चीज मस्ती हा ताथ ता उसकी माग बर ताता है । गग नविपके उपयागके णिण उस मगेद कर उमका सगद बर लत है ।

(४) जहा एर चीजके बरकम दूसरी चीज काममें नो जा सकता हा वहा माग लचकदार रानी है । गग और गकर एमी चीजें ह रि हम एर बानगाम भये गग और दूसरामें गकर गलत न ता भी एर-दुमरका गगह उनका उपयाग णिण जा मरता है । डानाम म एर चीज यदि बहुत महगा हा ताथ ता उन छाकर मय लाग दुमरी चीज काममें लेन लगग और उसका माग उड जायेगा । चाय और काफीम तथा रंगमा और सूता कपण भी एमा ही मरता है ।

(५) जिम चीजका कामन साधारणत बहुत ज्यादा होनी है या बहुत कम हाना है उसका माग सामान्यत लचकहीन रहनी है । हीरा मोती जादि चीज सामान्यत मगी हानी ह । इनकी कीमतमें थाना बहुत कमी बनी होना इनकी मागम फक नहीं पता क्यार्कि ये चीजें बरा गग ही कराद मरते ह । डूमगी जार, मानुन, णियासगई बगरा चीज तुलनाम इतनी मरता मिरनी ह और उनका उपयाग इतना नाबनिक हाता है कि उनकी कोमतम सहज घटा-बनी हानस उनका मागम फक उहा पटना ।

(६) जिम चीजके विभिन्न उपयाग हो मरत ह उस चीजके कूट उपयागके वारम माग लचकदार रानी है और कूट उपयागके वारम लचकहीन रहनी है । कापणके उपयोग है । खाना बनानके कामम ठे प्रणाम या मार उम पणाम ताजा खुनुम तापनके काममें रागाना और लखेमें एजिन ताजा कामम पथरा कापण और कम बनानके णिण लचक मानके रूपम — एम प्रदाए अग अलग काममें कापणका उपयाग जाना है । अर कापण मिला हा मरता या मगा कपा न हा एजिन जाना पवानके णिण ता उसका माग लचकहीन न रगी । गरनु वह महगा हा ता गरीय लाग तापना कामम उसका उपयाग करना छोड देंग और एजिन चानके काममें णिण भा कापणकार यह मानके लाग रि कीमती गगद दूसरा चीज मरता पणा या नता ।

लचकहीन पूर्ति और उचकण्टर पूर्ति

१२ किसी चीजकी भीमतमें हानवाली घटा प्रतीका अस्तर जब उमका पूर्ति पर नहा हाता अथवा बीमनन घटन या बन्दनक हिसाबस पूर्ति घटाई बगई नहा जा सकती तत्र यह बत जाना है कि पूर्ति उचकणीन है और कामतमें हानवाली घटती-बन्तीके हिसाबस पूर्तिमें भा घटनी प्रत्या वा जा सकती हा तो पूर्ति लचकण्टर कहगती है। जत्र निया चाका मात्रा बन्द हो या थोड समयमें चीजका उत्पादन बनावर बन्द बाजागम गई जा सकती हो तत्र पूर्ति उचकण्टर कहगता है और जब चाज मात्राम अमर्याप्ति न हा या थोड समयम उस चाजका उत्पादन बनावर न जा सकता हा तत्र पूर्ति उचकण्टर कहगती है। इसने कुछ उदाहरण नीच दिय जाते ह

(१) स्वयंवासी चित्रकारक अपन हाथस बनाय हण मूठ चित्र पुरान साधु-मन्ताकी प्रसादीरूप यकिनगत उपयामकी चाज पुरान जमानकी मिनी हुई मूर्तिया या अय वस्तुए — एसी वस्तुआका पूर्ति लचकहीन रहनी है। उनका माग कितना ही क्या न बत जाय और कलाप्रमा तथा प्राचान वस्तुआके संग्राहक लोग कितन ही दाम दनका तयार क्या न हो जाय ता भी एसी चीजकी पूर्ति बनाव नहा जा सकता।

(२) त्तर महायुद्ध समय हमारे दगम मनाक लिए माम और दधका माग बहुत बत गत थी। लेकिन मागके अनुसार नय टार ता जल्दी जदी पदा नही हा सकत। इसक सिवा मासके लिए तो गायन अच्छ डोर यानी खताम काम आनवाले बल और यान हुन जवान गाय भी काटकर मासकी मात्रा बटाई जा सरती है। त्रिन दूधका मरना एकाएक नहा बटाई जा सकना। साग भाजी और अनाककी मात्रा भा एकाएक नही बटाई जा सकती क्याकि नय रत और नद बाडिया एकत्र पदा नहा हा सकता। अत एसी चीजकी पूर्ति सामायत लचकहीन रहनी है।

(३) इसा तरह जिस चीजको उत्पन्न करनक लिए मकाना और मनीनाके रूपमें बहुत बडी स्थावर पूजीकी जरूरत पन्ता हा — और एसा स्थावर पूजी एकत्र खडा नहा की जा सकती — उमकी माग और भीमन बन्दन पर भा पूर्ति उम्र समय तक उचकहीन बना रहती है।

समुक्त माग

१३ कुछ चाजाकी माग एक-दूसरेक साथ जग हुन हाती है। जम फाउटन पन और म्याही सेपनी रेजर और त्रन टनिमना बलन और

रबरकी गू चाय गरम तथा दूध या घर पनाता न तो घट
 चना सीमेंट लकड़ा बगर। एसी चीजमें एक्का मागमें का घरा घरा
 हा तो उसका बसर उमका साथ जडी हई दूमरी चीजाकी माग पर भी
 हाता है। पन मट्टी हा जाय और कम गग पनाता उपयोग करन ग
 ता अमेरे लिए जा खाम स्थानी गनी है वह जितना हा मला क्या न
 मिता भी उमका माग घट जायगी। गग ज्यादा चाय पान ग
 जायें तो चायन साथ दूध और गरकरका माग भा बढ जायगी। मन
 एसा हाता है कि जिस चाजका उत्पादन तुगल न प्र सपना हा अयात
 गिसकी पूति अचरानी परतु आवश्यकता अनिवाय हा उस चाजन
 भाव एकदम बढ जात है। जिस गावमें चाय ग्याता पा गानी है वग
 चाय और गरकरक भाव नहा प्रत परतु दूधका भाव बढ जाना है।
 क्याकि चाय और गरकर ता बाहरस जितनी चाहिय गइ जा सकता है
 परतु दूधका गजार स्थानाय हाता है और उमकी पूति अचरान होना
 है। उमका उत्पादन एकदम नहा ग्याता जा सकता। किसी गरकरका
 गिवास हा और गग गी सरयाम मकान बनान गी ता उनर गि
 जरका चाजामें न जितना पूति लकरहान या मयान्ति हाती है उन चीजाक
 भाव एकदम प्र जात है और जिनकी पूति अचरान या जितनी चाहें
 उनी बढ मकावाग हाता है उनके भाव उनर नहा वता। जस इका
 भाव बढ गारगा परतु सामेंका भाव नहा वगा क्याकि इट तुरत
 तयार नहा हा सकता और न बाहरस ही गइ जा सकता है परतु
 सामेंट गरकर गइ जा सकती है।

घरलिपक माग

१८ जे मनप्यरा एव आपनका जेव साधनमि पूरा हा सगा
 हा तर उपयोग करनवाक गिण यन विनय गता है कि बढ किम
 साधनन काम है किम साधनकी माग कर। जस प्रकारका करन तलक
 गिपस धासलटका गग नम अदवा गत या विजगाका बनान पूरी हा
 सकता है। ऐसा स्थितिम गग उम चाजका कामम गन है जा ग्याता
 सुभीतेका या मन्ती हाता है। वर गरगाम मवाराका मुविजा घागगा
 वमा टाम घम या गार गगगिवाक जरिय प्राप्त हाता है। गग
 जा मवारा जिम समय ज्यादा सुभीतगा और मन्ना हाता है ग्याता गग
 उमका बढत है। एव गारम दूमरे गार गनक गिण रकी प्रतिगर्गम मात्र
 यमका मुविजा भी हाता है या एक गारम दूमर गाव अरग अरग ररव

कपनियाकी गाण्डियासे लाग गाने ह। जहा परागगात्र लिए एसा गुणाएन हा वहा मनुष्य अधिक जल्नीना अधिक गुभानमाला और अधिक सस्ता रास्ता चनता है।

इसा प्रकार अनेक चाजें खरीदती हा तत्र मनुष्यका प्रयत्न और खरीदनेका इच्छान अनुसार वह एसी चाज खरीदनेका नियम बनना है जिससे उम अधिकसे अधिक सताप प्राप्त हा। अर्थात् अपन पावने लव्यसे वह एसी आवश्यक वस्तुए खरीदना पना करता है जिसमें कम गव मिश्रण विणप सताप प्राप्त हा। उदाहरणके लिए धरके उपयोगके लिए आम केले मोसबी जमूर और चीनू खरादनेका उसकी इच्छा हा परन्तु तत्र पत्र खरीदनेमें वह असमय हा ता यन् इनमें से चुनकर कम या अधिक मात्राम एसे फल ही खरीदना जिनसे उसे अधिकसे अधिक सताप प्राप्त हा। इसमें मिठा धरके लिए यदि सायकल रेडिया परता और आत्मारी खरादने जसी लग तो इनमें से भा वह एसी चाजें पसंद करके खरीदेगा जिनसे उसे अधिकसे अधिक सताप हा। स्वभावतः प्रधान मनुष्यका चुनाव एकसा नया हागा। परन्तु इतना निश्चित है कि एसा चाज प्रत्येक मनुष्यका बनना है और उसका असर वस्तुकी माग पर हाता है।

समयत पूर्ति

१. जस एक चीजका माग दूसरी चीजके साथ जना होना है वम ही एक चीजकी पूर्ति भी दूसरी चीजके साथ जना हाती है। उदाहरणके लिए घा और भसा जवार राजरा और उसके पूर रई और विनीत तैठ और लता। इनमें से हम एक चीजकी पूर्ति बना दे ता दूसरीकी पूर्ति अपन-आप वड जाती है। एसे मामलाम उत्पादनका सच दाना चाजाकी बिक्री पर बाट दिया जाता है। दानामें से जिन चीजका माग अधिक हागो उसकी कीमत अधिक जायगी। उदाहरणार्थ विनीतमें रईका और सलीस तैठकी माग अधिक होती है कम कारणसे एक रतठ रई या एक रतठ तैठका कीमत एक रतठ विनीत या एक रतठ खरीसे अधिक मिश्रता है। रई और तैठ प्रधान चीज मानी जाता है और विनीत तथा खरी गौण उपज (by product) माना जाता है। र्नायनविज्ञानमें हुई प्रगतिके कारण एसी गौण उपजके बहुतेसे उपयोग हान कम है। उदाहरणके लिए खाना उपयोग। होराका खिचानमें या खानक तीर पर हानक बजाय अर कितना ही चाजाका खाना उपयोग विम्कुट बनानमें हान लगा है। तैठकी मिश्रदार तैठका साफ करनेके बाद जा भठ रह जाता है उसका

साधु प्रदानम उपयोग करते ह। जमीनमे जा मिट्टीका तल निकलता है उसमे पटा करामिन बेसरीन वगैरा चाज बनता ह। जहा ऐसा हो सकता है वहा गीण उपजस हानवाले नफेके कारण उत्पादको यदि जरूरी मात्रा हा ना बह मुख्य वस्तु बहुत मस्ती बच सकता है।

५

बाजार कीमत

१ बाजारमे किमा चीका भाव या कामत उस चीजके बचनवाले और खरीदनेवाले बीच परस्पर या एक दूसरे भाव होनेवाली प्रतिस्पर्धा निर्मित होता ह। इस प्रतिस्पर्धामे किमा चाजका पूर्ति और माग बहुत बड़ा काम करता ह। इस यह भी दख चुन ह कि बाजारका मुख्य कारण यह है कि किसी एक मात्रामे एक ही जानिकी समान गणवाली चाजका एक समयमे एक ही भाव होता है। बाजारमे किमी चीकी कामत निश्चित होनेकी सारा प्रक्रिया उदा अटपी हानी है। मुख्य रूपमे वस्तुकी पूर्ति और माग उसके निष्पादन के तत्व हीं हुए भा अलग अलग मनुष्याकी अलग अलग बतिया बलग अलग परिस्थितिया और अलग अलग सामाजिक और आर्थिक बल उसमे बम हाथ नगी पटाते। इन दूसरे कारणका अभी अलग खतर एक बहुत साद बाल्पनिच उत्पाहरणमे हय यह स्पष्ट करेग कि पूर्ति और मागका बाजार कामत तय करनेमे किना हाथ होता ह।

२ मान लिये कि पट्टा गजबाला मालिका यान पाच रुपयमें मिलता है और बाजारमे उसकी एक मात्रा यानकी माग है। अर्थात् इस कीमत पर इतना मात्र खरीदनेवाले माग तयार ह। अब यदि यान तीन रुपयमें मिलता हो तो बाजार यानका माग है। लेकिन अगर यान सात रुपयमें मिलता हो तो माग घट जाता है और लट्ट तो यान हा खरीदनेवाले मिल सकते ह। दूसरी जाग यानकी कीमत तात रुपय ही मिलती हो ना यान खान और खचनेवाले कि यह कीमत बहुत कम हानके कारण खान बनाना या बचाना यह पुमाना तब और बच पात्र मो यान ही खचनेवाले निर्मित ह। अगर एक यानके पात्र रुपय मिलता हो तो एक मात्रा यान खचनेवाले तयार हात ह और सात रुपय मिलता हो तो अठारह मो यान खचनेवाले निर्मित करने ह।

३ इस उदाहरणमें यदि धानकी कीमत पाच रुपये निश्चित हो तो एक हजार बचनवाला और एक हजार खरीदारोंका मूल घटता है अर्थात् इस कीमत पर पूर्ति और माग समी हो जाती है। तीन रुपये भावम खरीदारोंका हजार है परन्तु बचनवाला बस पाच सौ ही है अतः इस कामतम पाच सौ धान ही बिक्रि करेंगे। मूल रुपये कीमत हो ता बचनवाले अगारह सौ दिवाल आने ह परन्तु खरीदारों उह गौ ही रहने ह अतः छह सौ धान ही बिक्रि करन ह। पाच रुपया कामत एमी है जितने साथ अधिकम अधिक पूर्ति और अधिकस अधिक मागना मर घटना है। इस लिए धानकी बाजार-कामत ५ रुपये निश्चित हागा। जिस बचनवालोंको इससे अधिक कीमत लनी हागी वर अपना मार बाजारमें नहा रखा और जिन खरीदारोंका असस कम कीमतम धान रना हागा उमकी माग पूरी नगा हा सकगो। इस परमे यह कहा जा सकता ह कि जम जस वस्तुकी कीमत घटनी है वसे वसे बचनवालाकी सस्या घटती व अथात मागकी पूर्ति घटता है लेकिन खरीदारोंका घटत ह अथात मागका माग घटना है। जम जमे वस्तुकी कामत घटना व वसे वस मका पूर्ति घटना है और माग घटनी है। यह बात नीचक कार्यक्रम स्पष्ट हो जाता ह

कीमत	खरीदारोंकी माग	बचनवालोंकी पूर्ति
१	३५०	८०
२	८	३००
८	५०	२३०
७	६००	१८०
६	८००	१५०
५	१०००	१००
४	१५०	७०
५	२०	५०
२	३	२

उपरक काष्ठकस स्पष्ट दावता है कि बाजार कीमत माग और पूर्ति तीनाका मर धानका कीमत ५ रुपये हान पर बठता है अतः बाजार कामत ५ रुपये रहेगी।

४ मूल्य और कीमतवाला प्रकरणम उपयोग किय गय पारिभाषिक शब्दोंके अनुसार कहें ता बाजार-कीमत विनिमय मूल्य ह। मागका आधार कम बात पर रहता है कि खरीदारोंके लिए किसी चीजकी कितना उपयोगिता

है। इस तरह माग चीजका उद्योग मूल्य बनानी है। जोर पूर्णिका आधार इस बात पर है कि वह जोर बनानेवालों बिना थम पडता है द्रव्य रूपम गितने पर उसका किना उपादन-वच हाता है। इस तरह पूर्ति किमी चीजका थम मूल्य या उपादन मूल्य बनाती है। परन्तु इनके सिवा दूसरे वद तत्व नी माग और पूर्ति पर असर ता टाउन ही ह। ऊपरके उपा हरणम हमन पूर्ति जोर माग विषयमें एसा माना है कि व मनचाहे रणमे घटाइ प्रदा जा सकती ह परन्तु गिठले प्रकरणमें हमन दगा है कि पूर्ति जोर मागका हम जसा सह घटा उडा नहीं सकते। कभी माग लचरहीन हाता ह जोर कभी पूर्ति उचरहात हानी ह। एही स्थितिम गहा मागका जाग हागा वहा माग पर कीमतका आजार रहेगा और गहा पूर्तिका जोर हागा उपा पूर्ति पर कामना आजार हागा।

५ मागक जोषा उदाहरण त्रीण। किमी गहरमें बडा समारोह या उत्सव हा जोर उम प्रमग पर वहा थड दिनके लिए बाहरमें बहुत माग जा पहब ता उम समय गहा चीजकी माग बर जानम उनके भाव एकदम बर जायग। यापारियाका उा समारभवा पना हाता है इसलिए व बाहरसे बनुसा माग मगाकर भी रखत ह। फिर भी दूध और साग भागी जो प्रतिदिनकी आवश्यकताकी चाजें बाहरसे मगाकर ली नहीं जा म । फिर कुछ माग हायम माना पकाकी इक्षटम पन्नव वजाय हागलमें पाना चाहत ह। इसलिए हागलमें गानवात्राका भाग बर जाती है। रणमे सिवा उत्सवम पय हुए रोग चल-बू और मौज गौरम भी पमे रख करते ह। व कुछ जनाभा चाजें भी तरीदना चाहते ह। रणमें एम मौज पर मनुष्याम राजत अगि पसा तव करनकी बति पना हा जानी ह। अब एर तो रण कारणमें कि मागक अनसार मालका मरह नहा गता जोर दूसर इस कारणम कि गगाम एा मौका पर ज्याग रच करनकी बति हाती ह—ज्याा इमलिए भा कि रणम समयके लिए पमकी कामत या पमकी परपात उह कम होता है—मागका जाग उा जाता ह रौर मागक कारण महगा पना हा जाता ह।

६ अर दूसरा उदाहरण उपादन । मौसममें साग भागी बरन पदा हाती है। वर न ता बरन दूरक बाजारमें भर्जा जा सकना ह जोर न उपा समय ता मगा करन गयी ता सरता ह। रणलिए एर माग मर्या तिन प्रदामें उसका पूर्ति—उमरा परिमाण—बहुत बर जाता है। उपा माग करनगा ता रणम उनम नी रखत ह इणलिए माग भाजारा माग

पूर्तिकी तुलनामें बढ़ती नहीं। इस कारण वह बन्त सम्राट् ही जाना है। पूर्तिका जोर कीमत निश्चित करनेमें जो काम करना है उसका यह उदाहरण है। सामान्यतः यह दया जाता है कि जन्म जिनके जानवाला चीजाकी मांग और पूर्तिमा मन्त नहीं घटाया जा सकता। इसलिए उनके भावमें बार बार परिवर्तन हुआ करते हैं। जन्म गमय तत्र टिकनवाणी चीजाकी पूर्ति जोर मागक तापातका एक-दूगरक माथ मन्त बग्या जा सकता है। इसलिए एमी चाजाना भाव अपक्षान्त अधिन स्थिर रहता है।

७ ऊपरक उदाहरणा परम जम सामान्यत यह कह सकते हैं कि

(१) किसी चीजकी मांगसे उसकी पूर्ति बाजारम अधिक है तो उस चीजकी कीमत घटती है।

(२) किसी चीजकी मांगम उसका पूर्ति बाजारम कम है तो उस चीजकी कीमत बढ़ती है।

(३) जो चीज जन्म गमय तत्र टिक सकती है और जिसकी पूर्ति बाजारमें हानम राखी जा सकती है उस चाजाना भाव स्थिर रहता है।

(४) तात्कालिक पूर्तिने अभावमें जो चाज मन्गी हो सकती हो परन्तु जिसकी मांग स्थगित रखी जा सकता हो उस चीजके भाव बढ़त नहीं और स्थिर रहत है।

प्रचलित बाजार-कीमत और सामान्य कीमत

८ चीजाकी बाजार कीमत मांग और पूर्तिम समय समय पर होनाकाले परिवर्तनाने कारण बार बार बदलती रहती है। लेकिन हम जन्म लम्बी अवधिमा निरीक्षण कर ता देखत कि अधिकतर चीजाकी कीमतान बहुत हल्क तत्र स्थिरना-सी हानती है। धीमा उत्पाहरण कीनिय। बाजारमें रोज देखन पाय ता धीमे भाव रोज जन्म जन्म पाय जाते हैं। लेकिन आजक अमाधारण और अपवात्तरूप भावानो छौटें और जसने विश्वयुद्धके पहलकेकी लगभग बीस बरसकी अवधिमा धाके भाव दब ता व ५० ६० पक्के मनके आसपास जान पन्म। एमी तरह मद्धसे पहलेके लगभग दस बपके समयम अहमनावात्तमें गद्ध भरोमे जयक दूधका भाव डल आना की रतउ ज्यनम आना है। प्रतिनिज भाव या प्रचलित बाजार भाव इन सामान्य भावा या लम्बी अवधिके भावाने जागपास घूमते रहत है।

९ एन सामान्य या लम्बी अवधिके भावाना आधार अधिकतर उस चाजक उत्पादन-खच पर रहता है। किसी चीजक सामान्य भाव उत्पादन

वचन अधिक रह ता बहुतस उत्पादन उस धधकी आर गिचग और पुरान उत्पादक भी अपना उत्पादन बढ़ाने लग जायेंगे । इससे उम चाजका पूति बढ़ जायगी और उससे कारण सामाय भाव नीचे गिर जायग । दूसरी तरफ किसी चीजके सामाय भाव उत्पादन वचन कम ही रह ता कुछ उत्पादन कम काम करके अपना उत्पादन घटा देंगे और कुछ अपना धधा बढ़ कर दग । इसम मात्रकी पूति कम हो गायगी और सामाय भाव बढ़ जायग ।

१० ऊपर बताया अन्तमारे चीजके उत्पादनम बढ़ती घटना करना तभी सम्भव होगा जब वह चीज ऐसी हो जिसका उत्पादन आवश्यकता पडने पर आवश्यक मात्राम घटाया जा सक अथवा उत्पादकका इच्छानुसार उस चीजका उत्पादन आवश्यक मात्रामें घटाया जा सक या बिल्कुल बन्द किया जा सके । ऐसी चीजके भाव उत्पादन उससे बहुत अधिक या बहुत नीचे नहीं रहग । यदि बनी हुई मात्रा अनुसार वस्तुका मात्रा बन्दानमें बहुत देर लग तो उतने समय तक उम प्रस्तुके भाव उत्पादन-वचन बहुत अधिक रहेंग । खतीकी पलावारका पूति सामायगत चककहीन रहती है । क्योंकि मौसममें जिनकी फसल पका उतनी ही बढ़ रहती है उसका माग कितनी ही अधिक लचकहान क्या न हो ता भी उम मौसममें तो नई फसल — नया उत्पादन हो ही नहीं सकता । घुराकका चाजामें ता माग भी चककहीन रहती है* परन्तु कई नम्यातू वगैरा ऐसी चीज हैं जिनकी माग घटती-बन्दता रहती है । दूसरी कारण कारणानम उत्पन्न होनेसे मात्रा उत्पादनमें बढ़ती घटती करना अताकी पदावारकी तुलनाम आसान है । उत्पादन बन्दना हो ता कारणानमें रात-पानी गरू वी जा सकती है और उत्पादन घटाना हो तो थानी मशीन बन्द रखी जा सकती है — यद्यपि इनमें भी तरट तरहका बढिना-बन्धा ता सदा होती हो है । वास्तवम गायद हा बार्ई एती चीज हाना है जिनका उत्पादन मागके अनुसार जमुव समयके लिए घटाया अथवा बढ़ाया जा सके, जब कि माग एत ऐसी वस्तु है जो थोनी थोनी गरम बन्द या घट जाती है । इसलिए धाडे जमों लिए ता बाजार भावना आजार मागके ऊपर ही रहता है । मात्रकी पूति कम हो या अधिक परन्तु उसकी माग अथवा ग्राहकी मितती घटाना बड़ा एत उसका बीमत बनना तयार है इसी परम उमका बाजार भाव निश्चिा शाना है । परन्तु वस्तु जब समय तक

* हा चातारा मागका विरोध क्रानुण भी होना हैं । जन दोमात्री ईद होनी इत्यादि ।

रिमा चाजना राजार भाव उपादन-नवध गुरुन कम या गुरुन आरक नहा रह गयता ।

बिकता जीर सरानारक बोधरी असमानता

११ अरिन जवहारमें गभा उपाहरणाम एमा नहा पाया जाता । उपाहरणक र्णिए हमार विगाताया अरने पना बिय हए माअना ता कामन मिअनी ३ वर उगा उपादन-नवध बगरर नग बने गा सयता । उनका बगाग ओर रिनारिन यअना हुआ बज अग प्रयथ प्रमाण ह । फिर भी य गग यतारा धधा चाओ रवत ह अरना सयम बग कारण यह है रि वनाह मिवा द्वारा बाइ धधा उनर पाम नहा २ । तर तक विमान यता बगना रयता २ तर तक उम चुमनक अअरने काई न काई पमा उधार दनवाग मिअता रयता ३ । अरने मिमा पना हुआ माअ जय तर विर नहा अना या माहूवार उम २ नगू जाता तर तर रिमानका उममें म बुउ न कुछ गानका भी मिअता रयता ३ । अरिन यर ममअरर वि यनान उपादन अरने बराअर भी आमअना नग हानी जगर विमान सताका धधा ठाअ २ ना दूमर अरिन ही अरना सब कारवार बर हा जाय और उमर मामन यर बहत बग प्रग यग हा जाय रि गानका कहाम मिअगा । अरिणि उपादन-नवध न निरअन पर भी किसान यतारा धधा तारी रयता २ । यनाक धधमें उपादन नवध जिनता भा क्या नग मिअता अक बर कारण ह । एक राण ता यह है रि अरन माअरी अजी कामन मिअन पर भी माअ धवनकी और अगी मरजीर मुताबिन माअ वचन या न वचनकी अर स्वतयता नग हाना । माअ गअिहानमें पना हाना ३ तभा लगान चुधानता समय आ जाता ३ और लगान चकानर र्णिए रिमानर पाम पमा नहा हाना । अयर मरवारी कारकुनक तयता पर तराज आने रयता २ । एग समय रिमानरा माअ यराअनवाअ ब्यापार रिमानका अम समयकी गरजका ताअ अर ह और उगर माअका वअत कम भाव यनाने ह । गरवत कारण किसानका अपना माअ कम भावमें अब डाअना पयता ३ । अगानरा बिस्व जमा तरावक वाअ जा माअ अब रयता २ अम पर माअररका बरु अरि पयता है अपन वज पेट बह माअ उग २ जाता है और अपन बगवातम कम भावम जमा करता ३ । अममें रिमानर अताग भा ज्याअ उमका गरत जार मजगरीता हाअ रयता ह । उम अपन माअका बिनाका मोअ लाभकी दरि रवकर अपना क्छाक अनमार करनरा स्वतयता नहा रयती । फिर तिनर साथ यह मोअ यरना

हाना है उसका और किसानकी स्थिति एक्सा नहीं होती। किसान दवा हुआ गरजका मारा और साधनहीन होता है और साहूकार या व्यापारी बचवान साधन-सम्पन्न और प्रभाववाला होता है।

१२ यही तब तब होता है जब खरीदनेवाले लाग गरजमद और तबहार हात है। खरीदनेवालेको जब उधार मात्र देना पड़ता है तब उस बहुत ज्यादा दाम देना ही पड़ता है। साथ ही वह गरजमद हा तब तो उच्च अतिरिक्त उच्च भाव पर माल लेना पड़ता है जत धत जुतकर अच्छी तरह तयार हो गया हा जानवा ठीक समय जा गया हा और उसी समय व्यापारीक यहाँम राज खरादता हा तो व्यापारी किसानकी गरजका लाभ उठाकर पीजके बहुत हा जच भाव देना है। सामान्यत बोने बीजका भाव सदा ऊचा ही रहता है। इसलिए यह कन्नर साथ कि चीजाके मामूली बाजार भाव उत्पादन-सचम बहुत ऊंचे या बहुत नाच नहा रह सकत य गने रखी चाहिय कि उत्पादन या बचनवाला अपना व्यवहार अपना मरजीके मतादिक चलाने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र होना चाहिय और बचनवाला तथा खरीदनेवाले के बीच हर प्रकारम समानताकी स्थिति हानी चाहिय। परन्तु हम साथ यह भी कहना चाहिय कि आजक समाजम बचनवाला और खरीदनेवाला के बीच इस तरहका समानता और स्वतंत्रता बहुत ही कम पाई जाता है इसलिए उत्पादन-सचम यह नियम भलीभांति काम लनी कर लेना। यह कन्नर प्रजाय कि हम समय तब किंगी चाजक बाजार भाव उत्पादन-सचम बचन कम या बहुत अधिक नहीं रह सत हम यह कहना चाहिय कि वह बचन कम या बहुत अधिक लनी रहन चाहिय।

उत्पादन षच द्रव्य-सच तथा मान्य-सच

१३ अब उत्पादन-सचम विषयम हम अत्रिक विम्वारग विचार करग। उत्पादन-सचका तब विचार लगाया जाता है तब सामान्यत यही विचार किया जाता है कि क्या बाजार उत्पादनम उत्पादनका मितना द्रव्य-सच करना पडा है। जा बीज तयार करनी हा उगने के लिए कच्चा मात्र खरीदनेम कितना द्रव्य लगा उसर के लिए मजदूर खरनवालेका कितनी मजदूरी चुराना पना उम राजके बनानके लिए औजार, मगाने वगैर खरीदनेम लगाइ हुई पजा पर कितना ध्याज लना पना इन मर साधनाका कितना विचार हुई बाग्यानकी जमीनका विराया क्या दना पना मरानामें लगा हुई पजीना मा ५-१०

कितना ध्याज हुआ और मदानकी कितनी धिमाई हुई— इन सब बातोंका गिनती उत्पादन-खर्चम होती है। साथ ही दफ्तर परन्तु जीव व्यवस्थाक काममें यह हुए आत्मियके बतनना और उत्पादक या प्रयत्नके पारिश्रमिकका, याजना गिनती और साहसक बतना भी हिसाब लगाया जाता है। लेकिन हम कितना ही बारीक गिनताम जाय और उनकी कामन व्यवस्था रूपमें रखें तो भी सब उत्पादन-खर्चम अज्ञान नहीं लगाया जा सकता। क्याकि द्रव्यसं गजस गभा चाजका गच्छी कीमत नही मापी जा सकता। उत्पादनक काममें यह हुए मजदूराको याजार भागम मजदूरी चुना दा जाय ता हमें एसा लगता है कि उन्हें उनकी मजदूराक पूरा नाम मिल गय। मजदूराका कारणानामें जो त्विकत उठानी पडती है काम करने करत उनके गरीर और मनका जा हानि होता है बाच बीचमें बकारीक समय गृह जा गारीरक और मानसिक मानना भुगतनी पडती है उसको कीमत हम मजदूरीमें बहा गिनी जाती है? इसक अगवा प्रयत्नक या उत्पादकका भा उमका मात विवन या न विवन पर जा गतर उठान पत्त ह और एक-दूसरेके साथकी होत्तमें बभा बभा बगना हा जाना पत्ता है उसका गिनता भी द्रव्यक रूपमें कम लगाइ जा सकता है? गहर उतरकर विचार करें ता इन सब चाजका वाजा अतमें समाज पर न पत्ता है। याजारमें काइ चाज गायक मस्ती मित्र जाय परन्तु उय चीजके उत्पादनम मनष्यका जा त्विकतें उठाना पनी हा या बाचमें कुछ कारणान बत हानस जा आधिक सक्ट आय हा उनके कारण समाजका आर्थिक कष्ट ता भागन ही पत्ते हैं। यह भा एक तरहका खच हा माना जायगा। मनुष्यका इस तरह तो बत भागन पत्त ह उन्हें हम मानव-खचका नाम देंग। उत्पादनक उचित अथवा यायमगत खचमें इस सारे मानव-खचकी भी गिनती हानी चाहिये। परन्तु आजका अर्थ-व्यवस्थामें द्रव्यक रूपमें हानवाला उत्पादन-खच ही गिता जाता है उत्पादनमें हानवाक एस मानव-खचका हिसाब नग लगाया जाता। किसी भी चाजका उत्पन्न करनेके लिए किसी न किसीका कुछ न कुछ ता मुनीवन उठाना नी पत्ता है त्याग करना पडता है चिन्ता करनी पत्ती है और साहस करना पत्ता है। परन्तु इन सबका माप व्यवस्था रूपमें निकालना बडा कठिन है लगभग असम्भव है। इसलिए प्रयत्नके नफकी गजाइग रखकर यह कहा जाता है कि उसकी जिम्मेदारी और साहसना बतना ता त्विक रूपमें उस मित्र ही जाता है। यद्यपि मजदूराकी बतनाया और माननाआने लिए, जिसका मानव-खच प्रयत्नका जिम्मेदारी और साहसक कही गया है

कोई गुजाइश अभी तक उत्पादन-स्तरमें नहीं रखी गई है और एक बड़ी यूनता मानना चाहिये। यह यूनता तथा दूर हा सन्तो है जब किमा भी उत्पादनका विचार करते समय उमर सबसेमें हुए समूचे मानव-स्तरका विचार किया जाय और उत्पादनक कामका प्रबन्ध इस तरह किया जाय कि य मानव-स्तर मिट जाय।

आवतक खच और पूजा-खच

१४ उत्पादनके द्रव्य-स्तरके ल मुख्य विभाग किये जा सकत ह (१) आवतक खच और (२) पूजा-खच। आवतक खचम कच्चे मालकी कामत मातायान-खच मजदूरी और मुवात्माक बतन और बारपाना यन्त्रि भौतिक शक्तिस चन्ता हा ता उसका खच—य काम बाते आनी ह। यह खच तयार हानवागे हर चाज पर सीधा चन्पा जाता है। माल कितना ज्यादा बनाया जाना है उतना ही यह खच अधिक बन्ता है। बपत्क धानका उदाहरण लीजिये। जितन पाना धान बनामे जायेंग उनना हा र्क ज्यादा रगमा पाजनवागे कातनवागे बननवागे और मुकादमी करनवागेको मजदूरी ज्यादा हागी और भौतिक शक्तिका उपयोग किया जाता हा ता उसका खच भा ज्यादा हागा। इस तरह जितन ज्यादा धान नयार किय जायेंग उतना ही यह खच बन्गा। दूसरी ओर पूजा खचमें बारपानक मकान मगाना स्फर रागनी और काम आदिके खच आत ह। यह खच एसा है कि बारपाना पूरे समय तर चन् या धान समय तर चन् उममें माल ज्यादा पन् हा या कम पन् हो यह खच ता रहगा हा। र्कमें बहुत फक नहीं पडगा।

१५ यह निश्चित करना कठिन होना है कि किसी चीजकी विक्री कामत पर उमरे आवतक खचक मिला पूजा-खच कितना नन्पा जाय। र्कन कार उद्याग लम्बे समय तक चन् हा ता उमरे अनुभव और आवडा परस यह ज्ञान उगाया जा सकत है कि कितना प्रनिपत पूजा-खच लगाय उद्योगका हानि नही हागी। ली अशिक्षा हिमात्र र्गात समय तयार मालकी रिशत कीमतमें म य नना खच—आवाक खच और पूजा-खच—पूरा तरह निक्क आन चाहिये यद्यपि कभी कभी पन् करनका र्ग उम समय तर उत्पादन जारा रखनेका तयार हा तात ह जब ता उह आवतक खच मिलना रह। व्यापारम बन् मनी आ र्क हा और बाजारमें किमा चीजकी माग कम हा तो बाजार भाव गिर जाते ह और ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है कि कुछ उत्पादन-खच न

निष्काम सब । इस समय घर कारखाना बन्द करके और मजदूरोंका छुट्टा देकर उत्पादक यदि मजदूरोंकी बचत करने का एक उपाय बहुत नुस्खान उठाना पड़ता है । इसके बजाय यह अच्छा अवसरकी राह देखते हुए जब तक आवश्यक सब निश्चिन्ता रहे तब तक माल बनाना जारी रखता है । इसी मन्ती बहुत अल्प समय तक नहीं रहती जिनमें उत्पादकका मालका उत्पादन-संचय भाग न मिल सके । इसलिए एक उपाय नुस्खान उठाकर बरबाद होनेके बजाय उत्पादक थोड़े समय तक पंजी-संचय नुस्खान सहित होता है । जल्दता अनिश्चित समयों लिए बार्ड भाग उत्पादक घाटा नहीं सह सकता । इसलिए अल्प समय तक रहनेके बाद भाग यदि स्थिति न सुधरे तो उस कारखाना बन्द ही कर देना पड़ता है । इस समय बमजार कारखाना जिनमें व्यवस्थाके दापके कारण मजदूरोंका खराबीने कारण या जोर विमी दोषके कारण दूसरामें ज्यादा उत्पादन संचय जाता है बन्द हो जाना है । नतीजा यह होता है कि उत्पादनकी मात्रा या मात्राकी पूर्ति बाजारमें घटती है और भाव फिर चढ़ने लगते हैं ।

१६ जिस कारखानेमें स्थावर पूजाके सब विधि प्रकारका होता है उसमें यदि बन्द करना पड़े तो माल पंजी संचय नुस्खान खाली जाता है । जहाँ कारखानेके मकानों मजदूरोंका आदि उपयोग दूसरे काममें हो सकता है वहाँ उनको खरादार मिल जाता है । इसलिए ऐसा कारखाना बचत करने पर उसमें कुछ न कुछ पसा तो मिल ही जाता है । लेकिन जिस कामकी स्थावर पूजाके और कोई उपयोग ही नहीं सकता है उसमें उगी हुई माली पूजा बरबाद हो जाती है । उत्पादनके लिए पनामाकी नहर खानेकी पहली कंपनी जम टट गई तब उसका बनाया हुआ मकान जोर जमा किया हुआ सब मामला उस समयके लिए तो निश्चिन्ता बन्द ही हो गया । जबवा कोई रस्ते खाने बनानेके लिए पुत्र बनाने पड़ते हैं या सुरंगें खानेकी पड़ती हैं लेकिन वहाँ रेल यदि जारी न हो या जारी होनेके बाद बन्द हो जाय तो यह सब सब पूरी तरह खारब हो जाता है । जहाँ ऐसी स्थिति हो वहाँ काम बन्द करनेसे पहले प्रबंधक बहुत मोचता है ।

१७ एक जोर स्थितिमें भी उत्पादक कुल उत्पादन संचय कम भावमें अपना माल बचनको तयार हो जाता है । जिस धर्म पूजाके सब अधिक होता है उसमें अधिक मात्रामें माल तयार करनेमें उत्पादकको अभि होता है । क्योंकि माल अधिक मात्रामें तयार करनेके लिए पूजा-संचय बनाना नहीं पड़ता । अल्पकाल स्थिर रहनेवाला पूजा-संचय जस जस अधिक मात्रा

पर बटता जाता है वैसे वसं मात्र मस्ता पडता है। जिन इनकी बड़ी मात्राम मालका माण अपन काम न ही, ता उत्पादन लाग एक और तरकात्र करत ह। अपन दगमें जिनना मात्र खप उमी पर माण म्यावा पजा-खच वाट त्त ह और अतिरिक्त तयार किया हुआ मात्र सिफ जावतक खच चला कर अर्थात् अपन दगम सम्त भावा पर खचाक सिफ विदगी बाजार पर लाद देत ह। एमा करक व विन्गा उद्योगका प्रतिरपधामें मात्र दत ह। फिर जब विदगा बाजार पर अच्छी तरह उनका अधिदार हा जाता है अर्थात् उम बाजारमें हमरा कार् त्तका प्रतिरपधी नहा रहता तब वहा वे अपन मालके भाव चदान लगते ह। एमा हाने पर जिन काम मात्र उत्पन्न हाना है वहा बट मात्र महंगा हा जाता ह परतु हमरे काममें वहा मात्र मन्ता हा जाना है। इस तराकवा मालका मात्रना (डम्पिंग) कहा जाता है।

१८ इसान मिन्ता-जुतना एक और तरीका इसन चित्र परिस्थितिम पना हाता ह। पहल महायुद्ध (सन १०१४-१८) व बाद जमनाम युद्धन वमूत्र करनक लिए इरलण्डी सरकारन जमनाम त्तना हुआ मात्र बहून समन भाव पर त्तना शुरू किया और इरलण्ड बाजारमें त्रिगीके लिए रखा। इरलण्ड उत्पादन वन मस्त मात्रका प्रतिरपधाम टिन न सके और उह अपन कारखान बंद कर देन पन।

बढ़ते, घटते या स्थिर उत्पादनक नियमका बाजार-कीमत पर असर

१० जो माल उत्पन्न करता हा उस पर बन्त स्थिर अथवा घटन उत्पादनक नियमामें स कीनमा नियम* लाग हाता है यह दतना चार्टिय। कप्रति एम पर उम मात्रक उत्पादन-खचरा और उमका बाजार-कामतना आधार रत्ता है। मान त्रिजिय कि कार्डी चीन एमा त्रिजिक उत्पादन पर बन्त उत्पादनका नियम लाग हाता ह। एम मात्रका माण वन और उत्पादन अतिर मात्र बनाव ता जिनना मात्र बह ज्यादा बनाना जायगा त्तना हा उम मात्र पर उत्पादन-खच वम होता जायगा। मालका माण बन्त पर उमका भाव भी त्तना है और माण घटन पर त्तना भाव ना घटता ह इस मामाय मायताम यन उरगा बान हाता है। मालकी माण बन्त पर कीमत घटाइ जा सगती है और मात्रका माण घटने पर कामत यताना पन्नी है।

* इस नियमक सिग दक्षिण पुस्तकका भाग-२ प्रकरण ० पान १८-८०।

२० जिस मात्र पर स्थिर उत्पादनका नियम लागू होता है उस मालकी भाग घटती-बढ़ती हान पर उसका जबरन उसका उत्पादन-स्वच पर और इस कारण उसकी कीमत पर कुछ भा नहीं होता।

२१ जिस मात्र पर घटते उत्पादनका नियम लागू है उसकी भाग घटने पर बड़ी हृद मागका पूरा करनेके लिए उत्पादन स्वच बढ़ जाता है। इसलिए भाग घटने पर बाजार-कीमत बढ़ती है। यदि भाग कम हो जाय तो उत्पादन कम करना पड़ता है और अमक हूँ तब उत्पादन स्वचका माशा घटती है। जब भाग कम हान पर बाजार कीमत कम होती है।

उत्पादन-स्वचकी भर्थादा

२२ अब प्रश्न यह पता होता है कि उत्पादक तो बचते होते हैं और प्रत्येक उत्पादकका उत्पादन-स्वच एवसा नहीं होता। तब बाजार-कीमत किस उत्पादकके उत्पादन-स्वचका अनुसरण करेगी? जिस उत्पादकन अपना धधा पहल आरम्भ किया हो उस कुछ कुरती सुविधाय मित्र जाती है धधाका अनुभव उस अच्छा हो जाता है कारीगर भी पुरान अनुभवी और विगप कुशल मित्र जात है पडी जम जानसे कच्चे मात्रकी खरीद और तयार मालकी विक्रीके लिए ग्राहक बध जाते हैं विनापना आठिवा खच नहीं करना पडता या बहुत कम खच करना पडता है तथा बाजारमें साख अच्छी काम जानके कारण व्याज बट्टमें भी लाभ मिलता है। इस उत्पादकको स्वाभाविक है उत्पादन स्वच अपेक्षाकृत बहुत कम जाता है। साथ ही कोई उत्पादक नया हो परन्तु उसन नयसे नय तगकी भगीन लगाई हो और नयीसे नया शास्त्रीय पद्धतिस काम करता हो तो उस भी उत्पादन स्वच कम आता है। इसके विपरीत कोई उत्पादक काफी हाणियार न हो उस आवश्यक कुरती सुविधाएं न मित्र सकी हा और उसके पास आवश्यक पूजी भी न हो तो उसे उत्पादन-स्वच तुलनामें अधिक आता है। इस तरह उत्पादन-स्वच किसीको अधिक आता है और किसीको कम जाता है। क्विन बाजारके नियमक अनुसार तो सबकी अपन मालकी कीमत एकमो ही मिलेगी। यह बाजार-कीमत किस उत्पादकके उत्पादन-स्वचके अनुसार होगी?

२३ इसका उत्तर यह किया जाता है कि भागको पूरा करनेके लिए जितन उत्पादकको काम करना पड उन सबमें जिस उत्पादकका उत्पादन स्वच अधिकसे अधिक हो उस उत्पादकके उत्पादन-स्वचक अनुसार बाजार कीमत रहगी। मान लीजिय कि कपडेके ५ लाख थानाकी भाग है। और एक एक लाख थान तयार करनेवाके पाच उत्पादक इतना मात्र मुठैया कर

सकत ह। इनम न पहल उत्पादनको प्रति थान ४ रुपया उत्पादन-खच आता है दूसरेको ४-४-० तिसरेका ४-८-० चौथेको ८-१२-० और पाचवेंको १-०-० रुपय आता है। कम स्थितिमें कपडेके थानकी वाजार-कीमत पाच रुपया रहेगी क्योंकि आखिरी उत्पादकके प्रयत्नके बिना कपडेकी माग पूरा नहो हो सकती और वह अपना माल ५ रुपयम कममें बच नहो सकता। एसी स्थितिमें पहले चार उत्पादकका अधिक नफा मिलेगा। परंतु आखिरी उत्पादक शान्त नफा मिल तब तक ता वह काम करनेका तयार हागा ही। इस उत्पादनका सामान्त उत्पादन पता जाता है।

२४ यदि कपडेके थानकी माग घटकर चार लाखकी हो जाय तो पहल चार उत्पादक अपना सारा माल मर्यादेनक लिए थानका कीमतम कमी करेग। एसा न कर तो पाचवें उत्पादकका माग भी खपना रहेगा और पहले चार उत्पादकका शान्त-बहुत माल पना रहेगा। लेकिन ये चार उत्पादक आवश्यकतासे अधिक कीमत नभी नही घटावग। इसलिए थानकी कीमत उतर कर ४।।। रुपय पर आयेगी। इस कीमत पर अंतिम अर्थात् पाचवें उत्पादकका कपडा बचना पुसावग नही। जत वह अपना काम बन्द कर देगा। उस स्थितिमें वह चौथा उत्पादक सामान्त उत्पादक बनगा।

२५ अब मान लीजिये कि कपडेकी माग बनी और छह लाख थानाकी हो गई। तो ये पाच उत्पादक अधिक उत्पादन खच उठाकर भी अपना उत्पादन बनावग। ब न बना सकेंगे तो छठा उत्पादक मदानम आवेगा। उसे एक थानका उत्पादन-खच ५। २० आता हागा ता छहो लाख थानाकी कीमत ५। २० हागी। यह छठा उत्पादक सीमान्त उत्पादक बनेगा और उसका उत्पादन-खच इस उत्पादन-खचकी अंतिम सीमा हागी। उमस ज्यादा उत्पादन खच जिसे जायगा वह कपडेके उत्पादनमें खरा नहो रह सकगा।

२६ कम उपाहरणकी केवल इतना ही समथनक जिण बल्पना की गई है कि उत्पादन-खचकी माग बहा बधता है और कीमत उत्पादककी सीमा पर रहना पता है। कम साधारण व्यवहारमें तो एसा हाता अधिक सम्भव है कि माग इतनेके साथ प्रत्येक उत्पादक अपना उत्पादन बसानका प्रयत्न करगा। लेकिन हमारे नियममें बाधा नहो आनी। मागको पूरा करनेके जिण बहुतम उत्पादक काम करते हा ता अंतिम उत्पादकको अर्थात् जियेका माग जिण बिना माग पूरा नहो हो सकती उम उत्पादकका जो उत्पादन-खच जायगा उन पर मागका वाजार-कीमतका आधार रहेगा। इस उत्पादन-खचका हम उत्पादन-खचकी अंतिम सीमा कह सकते ह। यहा एक

वात ध्यानम रखनी चाहिये। वह यह कि उत्पादन-सचवा यह सीमा स्थिर नहीं होती। मागमें जिस तरह घटता बढ़ता जाता है उसीके अनुसार उत्पादन सचकी सीमाम भी घटती बढ़ती जाती रहती है।

सार

२७ हम यह चुन ह कि माग और पूर्ति के मध्य अंतर के फलस्वरूप बाजार-कीमत निर्दिष्ट होता है। माग का बस्तु का उपयोगिता के साथ सम्बन्ध है और पूर्ति का उत्पादन-सच के साथ सम्बन्ध है। हम यह भी देखें कि व्यक्ति और समाज के हर चीज में सम्बन्ध रखनेवाली उपयोगिता का एक सीमा होना है। जाजक-हमारे अर्थ-व्यवहार में तो व्यक्ति का और समुदाय का अपनी-वरीय-व्यक्ति के अनुसार जल्ग अलग-अलग बाजार का उपयोगिता की सामा-वाधनी पड़ता है। हम तरह-बधो हुई उपयोगिता का माग उत्पादन पर अंतर करती है। उपयोगिता की सीमा का व्यव-माप जितना होगा उग-मापक-जदर जब तब उत्पादन-सच आयागा तब तब उत्पादन-अपना उत्पादन-काय करना पुमायगा। हम हमने उत्पादन-सच का माग क्या है। इस पर हम यह कह सकते हैं कि

जब उपयोगिता की सामा-के द्रव्य-मापक और उत्पादन सचकी सीमा-के द्रव्य-मापक एक-दूसरे के साथ मेल-बठ जाता है तब उस द्रव्य-मापके आधार पर बाजार कीमत निर्दिष्ट होती है।

२८ इसमें एक बात ध्यानम रखनी है जो पहल-रही जा चुका है। यह यह कि अधिकतर चीजों के कारण माग या उपयोगिता की सीमा का आधार कीमत पर रहता है। कीमत का अमर जितना माना जा और जितनी जल्ग माग पर हा सकता है उतनी मात्राम और उतना जल्ग पूर्ति पर नहीं हा सकता। कामतमें घटा-बढ़ती हात पर मागम एक-दम घटा-बढ़ा हो जाता है परन्तु पूर्तिम घटा-बढ़ी होनमें-र उगती है यह बात हम पहल-देस चुक ह। दूसरी बात यह है कि माग का सम्बन्ध मन-प्यकी आदतों की रीति-रिवाजों-रचिया और अरुचिया फल-आदि-जगरीरों-जववा-मनागत-वातास हाता है तब कि पूर्ति का सम्बन्ध स्थूल-पदार्थोंम हाता है। अब समाज-ता-परिवर्तन-गाठ है। माग की आदतों-रचि-अरुचिया-जान्तिमें-ममय-समय-पर भारी-परबल-रजा-हा-करने-ह। इसा-तरह-पूर्ति-माग-उमें-भी-उत्पादन-की-पद्धतिया-के-कारण-फरबदल-हात-रत-ह। फिर-भी-यह-स्पष्ट-है-कि-जितनी-ता-माग-जान्ति-और-पाने-बढ़ती-ह-उतना-त-जाम-उत्पादन-का

पद्धतियोंमें और उसके फर्स्वरूप मात्रकी मापना बनावणी नही की जा सकती । इसलिए वाजार-कामतक लिए एक नियम ताल्कालिक कीमतका और दूसरा गम्भी अवधि तक बनी रहनवाला सामान्य कीमतना — इस तरह दो नियम बनाने पय ।

(१) किसी भा चीजका ताल्कालिक वाजार-कीमत उस चीजका पूर्णतः अनपानम उस वानम निश्चित हाणी नि गमना माग कितना है अथवा परीदनवाला मापन पडा उड मात्राकी उपयोगिता तथा स्थिति कितनी ।

(२) जो मात्रा जसरा मात्राम नया बनाया जा सकता है उस मात्राका सामान्य वाजार-कामत गम्भी अवधिमें उमर सामान्य जयवा जतिम उत्पादनक उत्पादन-वचक आमपाम रणा । अथवा उत्पादन-वचकी सामान्य व वृत्त जयवा या वृत्त कम नहा रण सकती ।

२ परन्तु ये दोनों नियम तभी काम कर सका है जब राजागम एक चक्रवर्ती और दूसर चक्रवर्तीके बीच तथा एक स्वराज और दूसर उरीराके बीच मात्रा हा अथवा तथा परादारार वाच परम्पर सुनी और यापयुण स्वभा हो सकती है और मापन पूर्णतः कारणे किसी तरहका हानय न हा । आजका जब रचनामें एसा वरा और यापयुण स्पधा उहतमी चाजार बरग नया जाता । कुछ चाजार बरामे उत्पादन गग राज्यका मन्त्र या अपन उद्योगारो समरन करव एकाधिकार जम उन वरत ह । व अपन मात्राक मनमान भाव न करत ह । दूसरी तरा कुछ उत्पादन — जम गमारे गम कितना और गता कारीगर — एसा गचार हागतम न कि उह अपना मात्रा वरत मस्त दामा अपना हागत कामतग भी कम नामा व रना पयता है । इाके सिवा आजका भयकर आधिक अममानतक जमानम स्वराज भी एक तरफ गय आर दूसरी तरफ छान गीन — इस तरहके ग वर्गोंमें बट गये ह । उन गनति गचरी प्रतिस्पधा किसी भा तरह सुग गीर यापयुण नया गता ।

३० गमीलिंग आजका वाजार-कामतमा यय अवरा जीविय उहुत कम पाया जाता है । इयें गमा विचार रला चायिय कि विन कामत किम बह और वर किम मिदालन पर निर्भर की जा सकता है । परन्तु उमवा चचा दरमम गड उपर जित एकाधिकार बना स्थिति गगन किया गया न उम एकाधिकारका तथा एकाधिकार-कीमतना गीर वाजारमें चक्रवर्ती महुन कारण चीजारे भावामे जा अनुचित उरक-गुमर हाती रहनी न उमरा इस विचार करग ।

एकाधिकार कीमत

१ जब समानक गिण उपयोगी विली चीज या मन्दाकी मात्रा पर किसी व्यक्ति या मण्डल पर नियंत्रण होता है तब कहा जाता है कि उसका पाम उस चीज या उस मन्दाका एकाधिकार है। जब व्यापारी या उत्पादक अपना संगठन करके चीजा या सेवाआरे उत्पादन और बिक्री पर नियंत्रण करके उसकी कीमत पर अधिकार कर लेता है तब भी एकाधिकार जैसी स्थिति उत्पन्न होती है। एकाधिकारका अर्थ है प्रतिस्पर्धाका अभाव। जब किसी चीजका उत्पादन एक ही आत्मान हाथमें है और उस चीजका बिना योगाका पाम न कर सकता हो तब उत्पादक उस चीजके मनमाना भाव ले सकता है। उसी तरह मन्दाकी सारी मात्रा या बहुत बड़ा हिस्सा एक ही व्यापारी कंपनीके पास आ जाय तो भी वह मनमाना भाव ले सकती है। जब एक चीजका बहुतसा उत्पादक या व्यापारी हात है तब हर उत्पादक या व्यापारीका यह चिन्ता रखना पन्ती है कि मेरा प्रतिस्पर्धी उत्पादक या व्यापारी यदि कम भाव रखना तो मेरा माल नहीं खपेगा।

२ खाम तौर पर नीचे बताई हुई स्थितियोंमें एकाधिकार उत्पन्न होता है

(१) कुदरती एकाधिकार कोई माल पृथ्वीक किसी विंगप देशमें ही मिल सकता हो तो वह देश उस चीजका एकाधिकार भोगता है। जैसे हीरे दक्षिण अफ्रीकामें मिलते हैं। हमारे देशमें गोखुण्डके पाम हीरेकी खान है परन्तु उसमें से बहुत थोड़ा हीरे निकलते हैं। इसलिए दक्षिण अफ्रीकाकी हीरेकी खानकी मालिक कंपनी हीरेका एकाधिकार भोगती है। वह इतनी हीरे खानमें से निकालती है जो बहुत ऊँचे भावसे बचे जा सकें। अगर ज्यादा हीरे निकाले तो उन्हें खपानके लिए उस भाव घटाना पड़े। यही वान गोखुण्डकी खाना और तेलके कुआकी है। जिस जिस देशमें ये खानें हैं वे तेल लाह और तेलके बारेमें दूसरे देशों पर प्रभुत्व भोग सकते हैं। इसलिए ऐसे देशों पर अधिकार करनेके लिए वे देशों के बीच प्रतिस्पर्धा चलनी है।

(२) सावजनिक सेवाआका एकाधिकार कितना ही उद्योग या सेवाने काम एसे हाने है कि एक खास क्षेत्रमें व उद्योग चलानवाले या वे सेवाएँ करनेवाले एकसे ज्यादा व्यक्ति अथवा मण्डल हैं तो बहुत कठिनाई पन्ती

है और आर्थिक दृष्टि से भी बड़ा युवसान ही सबका है। किसी गहरवा गम, पानी मित्रता जीर ऐसी अथ चीजें मुहैया करानेवाले मस्या एक ही हो तभी मुविधा रानी है। मित्रता पञ्चानक लिए तारकी रम्मिया रगानी पन्ती ह और पानी पञ्चानक रिए जमानक अन्तर बने नर डारन पन्त ह। एम काम एकम अविन सरथार्थे करन रगे ता क्विन तार और क्विन पानार नर रगान पन्त उमम भार कश्चिनाद ही पन्त रग सन्ता ३। बड गन्तराम द्राम और माग्ग-रग एक ही मण्णकी तरफम चन्ता ह। तभा मुविधा रानी ३। एव ह। रान्तर लिए एमम अधिक रलम कपनिया ह। ना उमम विना कारण भारी सच होना है। रभा तरह बन्दरगाहक धम्ककी जान है। प्रनिस्पधामे जा नुकमान अनिवाय हाता है उह एम तरहके काम एक ही मण्णके हाथमें हानमे सहन ही रग जाना है और रगाको भी य मण्ण मन्ता और मुविगाम मित्र गवती ह। अकिन यह रभा हा सन्ता है जब रनका हनु नफा बमानेवा न हा बल्कि रगाको मुविधाण नेनरा ह। एम कामरि एकाधिकार खानगी आदमिया कपनिया या मण्णक पाम ह। ता बहत समब है कि उनका ध्यान नफा बमानकी तरफ हा रहे। रमलिए यह वाठनीय है कि एम काम रगवा वाडों और म्मुनिमिपलिरिया रगा बानूनक नियन्त्रणरगा सावजनिक मस्याअरि हाथमें हा या उनक नियन्त्रणमें हा।

(३) कानूनसे मिलनेवाला एकाधिकार किमान नय यदवी या नद र्वाकी राज का हा ता वह उमका पटण (मिगप अमिभारपत्र) र सन्ता ३। इमके पन्स्वरूप दूसरा कार् व्यक्ति उगी तरन्का यथ या रभा हा दना नहा रना सन्ता। पुस्तकक र्खर और प्ररागववा भी कानूनके प्रवागन-अधिकार (काषा राण्ट) मित्रता ३। रभा हनु यह र्खना हाता है कि रगाका और रगकाका अपन परिश्रमका पन् भागनमें कार् रगावन् न आपे और माग्गी सूटा नरन् न हा सव। किसी गोषवन बहत समय रगाकर और बन् परिश्रम बरव का नइ खान का हा और वह रम पात्रका मग्गारा र्पनरमें बानूनक अनुमा र्ज करानर उमरा पण्ण र र ता रभा री चीज दूसरा कार् नहा बना सन्ता। अपना राजी इइ चीजका मित्रीमें स अपन रगाप ह्ण ममयना अथवा निय ह्ण परिश्रमका बन्त उम मित्रता र्हेगा। यदि पण्ण नेनकी यदरवा न हो ता दूसर री उगी पात्रना रनार मन्ता कामनम बचन रगे। रभा तरन् कासा राण्टक र्खर और प्ररागनका अपन परिश्रम या माग्गका रन्त मित्रता र्खता है।

इसके सिवा सरकार आयक साधनके रूपम भी कितनी ही चीजाका एकाधिकार अपन हाथमें रखता है। हमार दाम अफाम गाजा भाग तथा गराब ताडी बगरा बचावा काम सरकारकी तरफम परवाना लेकर ही लिया जा सकता है। सरकार एक परवाना भारी कीमत लेकर बचती है। गराब बनानवा काम ता हमारे देगक कुछ भागाम सरकारन अपन ही हाथम रखा है। एसा तरह नमर भी सरकार स्वय हा बनानी है और अपन निश्चित किय हुए भावा पर बचती है।

बानूनी एकाधिकार सामान्यत उहा चीजा या सवाजाने होन चाहिय जो बहुत ही उपयोग हा और जिनम प्रतिस्पर्धा हान दनम क चाज या सवा समाजका अच्छा तरह मित्र न मर। उपरक उदाहरणमें सरकार अपना हतु तो दुन्यसना पर जुग रखना बनाती है परन्तु प्रत्येक व्यवहारम वह आयक गच्छमें ही पड जाती है।

(४) उद्योग धधाक संगठन द्वारा एकाधिकार कुछ उद्योग धधावाक अपनी भीतरी प्रतिस्पर्धाका मिटा कर अपन मात्रक वारेम एकाधिकार जसा स्थिति पना कर दत ह। एसासंगठना मिश्रिकेग टस्टा और कार्तेला आन्विक द्वारा कारखानदार या उद्योगपति जा संगठन करते ह उसके वारेम पट्ट कहा जा चुका है। हमार दाम अग-जग मीमण्ट कपनियान अपना एसोसिएशन बनाया है और मारी कपनिया म एसासंगठनका मारफन सार देगमें एक निश्चित भावम मीमेण्ट बचनी ह।

एकाधिकार-कीमत और बाजार कीमतकी तुलना

चूकि एकाधिकारका कार् प्रतिस्पर्धी नहा हाना एगिण वह अपन मालका कीमत अपनी इच्छानुसार रख सकता ह। एकिन सावजनिक सेवाओ जस गस पानी बिजली टाम और वमकी यवम्याक एकाधिकारक सम्बन्धम म्यनिसिपल्टी या सरकार उन सवाजाने एकाधिकार देनस पण भाव निश्चित करती है या भाव पर नियंत्रण गानका सना अपन हाथमें रखती है। वह इसकी भी देखरेख रखता है कि व अविन भाव न हैं सबसे एक ही भाव हैं और एक ग्राहकम एक तथा दूसरस दूसरा भाव न ह। एकिन मानगी उपायक या चापारा जब अपना संगठन करक एकाधिकारका स्थिति प्राप्त कर लेते ह तब वे अपनी इच्छाने अनुसार भाव रख सकत ह। वे कह सकते ह कि हमारे निश्चित किय हुए भावसे जिस माल केना

हो वह ल। फिर भा व इतना बिना ता खने ही ह कि अपन निश्चित किये हुए भावस उनक पासका माग मात्र खप जाय। यदि ऊच भाव रखनक कारण माग घट जाय और माल बिने बिना पड़ा रह ता अधिक भाव रखनम लाभ नहा। दूसर उत्पादका और व्यापारियाकी तरह एकाधिकारग य दष्टि ना रखता ही ह कि अपन घघम उस अधिकम अधिक लाभ मिग। यह हम दय चुन न कि साधारण उत्पादका और व्यापारियाकी अपन प्रतिस्पर्धियाम नियन्त्रता हाता न मिलिए कुग मिगकर बाजार कीमतका रूप उत्पादन मचक आगपास रहनकी तरह ही हाता है। परंतु एकाधिकारोका अपन उत्पादन मचक अधिक कीमत रखनस काइ राक नहा सकता। उम एसा उर रखनका काइ कारण नही हाता कि दूसरे योग भाव नीचा रखकर गहकाना अपन यहा खाच ला। जहा खरी और मच्ची प्रतिस्पर्धा होती हा वना सीमात उत्पादकक उत्पादन मचक अधिक नीचे या ऊच भाव रखर समय तक नहा रह सकत। ऐकिन एकाधिकारकी स्थितिम उत्पादन मचक भावका नियंत्रणम रखनवाला तत्त्व नही रहता।

एकाधिकार-कीमतकी मर्यादाए

४ ता भा एव बात याद रखनी चाहिय कि मात्र वृत्त ऊच चरानमें एकाधिकारोका कुग मिगकर रहन लाभ हानकी संभावना नही रहता। ऊचे भावना असर माग पर हुए बिना रहता हा नहा। एकाधिकारोका ऊचे भावना लाभ रखना हा ता उम बिप्राय लाभ उठाना पक्ता है। वह या ता भाव हा अधिक नै ल या बित्री ही अधिक कर न। वह दाना घाडा पर मवाग नही कर सनता।

५ एव बात निश्चिन ह कि किमा भा बाजारोता—भर हा वह एकाधिकारो हा या सामान्य व्यापारो ना—धय कुग मिगकर ज्यादा ज्या ग नहा कमाना हाता ह। ऐकिन प्रस्तुत बाजका माग और पूर्तिना अच्चा तरह बिचार निय बिना य नही बहा जा सनता कि एकाधिकारोका ऊच भाव रखनम ज्यादा नहा हाता या ताच भाव रखनम ज्यादा नहा नागा। कुछ स्थितियामें ऊच भाव रखनम अतिव नहा हाता है और वृत्त स्थितियामें ताच भाव रखनम अतिव नहा हाता ह। प्रत्येक स्थितिका हमें स्वतंत्र रूपस जाच करनी चाहिय।

(१) जिन चीजोका माग रखनहान हा उग बाजक भाव बाधा बाये जा सारते ह क्यकि भाव निरत हा व ता भी उम कारणम उम बाजका मागमें कमा नहा हा सनती। जग नभव।

(२) जिस चीजके उत्पादनका घटत उत्पादनका नियम लागू होता हो उसके भाव ऊंच रखनमें एकाधिकारीको लाभ होगा क्योंकि ऊंच भाव रखनके कारण माग घटगी मात्र कम बनाना पडगा और उस पर उत्पादन खर्च एक हूँ तक अपेक्षाकृत कम आयगा। इसलिए उम हानि नही हागा।

(३) जिस चीजकी माग लचकदार हा उसमें भाव नीच रखनमें एकाधिकारीको अधिक लाभ हाता सम्भव है। नीच भावके कारण माग बढ़ जायगी। उस नफकी दर या नफका प्रतिशत कम मिलगा परन्तु माल बहुत बडी मात्राम विवेगा। इसलिए नफा पुत्र मिलानर अधिक होगा।

(४) जिस चीजके उत्पादनका घटते उत्पादनका नियम लागू हाता हो उसमें भी कम भाव रखनमें नफकी मात्रा बन्गी। क्योंकि माग बढनके साथ साथ वह उत्पादन बढायगा और कम जस उत्पादन बनाया जायगा वसे वसे उत्पादन-खर्च घटता जायगा इसलिए लाभ बढता जायगा।

(५) जिस चीजके उत्पादनका स्थिर उत्पादनका नियम लागू होता हा उस चीजके दारमें एकाधिकारका एक ही बात साचनी पडती है कि मागकी माग लचकहीन है या लचकदार। मागके प्रकारके हिसाबसे भाव ऊंच या नाचे रखनमें उस अधिक लाभ हागा।

६ सम्पत्तमें अपन मालके भाव निम्नित करते समय एकाधिकारी विनापत दा वानाका विचार करता है

(१) वस्तुकी माग किस प्रकारकी है? माग लचकहीन है या लचकदार?

(२) वस्तुके उत्पादनको घटते घटते या स्थिरमें से कौनसे उत्पादनका नियम लागू होता है?

एकाधिकारके हानि लाभ

७ सामान्यत यह माना जाता है कि एकाधिकारसे ग्राहकाको हमेगा हानि होनी है क्योंकि एकाधिकारके भाव रानी प्रतिस्पर्धावालाके भावसे ऊंचे रहना अधिक सम्भव है। उकिन मदा एसा नही हाता। एक-दूसरेके साथ प्रतिस्पर्धा करनेवाले छोट छोट उत्पादकाको जा उत्पादन खर्च पडता है उसकी अपेक्षा प्रतिस्पर्धा मिटाकर एक तत्रके नाचे बड पमान पर उत्पादन किया जाय या ब पमान पर उत्पादन करनेवाले बहुतसे कारखान भी अधिक नही ता अपन मात्रके उत्पादन और बिक्रीके लिए एक खास नियमन स्वीकार कर लें तो उसमें उत्पादन खर्च और बिक्रीसे सम्बन्ध रखनवाले दूसरे खर्च कम पत ह। प्रतिस्पर्धा न हो ता मनीना वगरामें वस तरहके गुधार करनेकी गुजायत रहती है जिससे अच्छेसे अच्छा उत्पादन हा। माल या

काम एक ही तरहका रखा जा सकता है। क्याकि एकाधिकारीका यह विश्वास होता है कि दूज सारे सुधारका काम उसीकी मिंगा। उत्पन्न-मन्त्र यथामन्त्र घटा करने वाए एकाधिकारी माचना है कि भाव नाच रक्का तो आहवा और बिना बन्गी जिनमे फरी र कम हान पर भा पुन नपा तो पाना हा हागा। यह मर हिमाए एकाधिकार निश्चिन्ताक साथ कर सकता है क्याकि उस दूसरेका प्रतिस्पर्धाका डर नहा रता उसका आहवाका कई हिम्मा बटानवाका नही रता। पन्तु मान गजिय कि प्रतिस्पर्धाका डर न हानमे एकाधिकारी अपन तात्कालिक नफ पर हा नजर रखकर उच्च भाव रख ता उस एका करनमे राखनका कुछ अकुण भी है

(१) एकाधिकारी अपन माका बहुत ऊचा भाव रख तो प्राक् थक्कर उसका मालका उपयोग करता छा दये और उमक वामें एका दूसरा माक हान लगग जिनसे उनका काम चल सनता हो, और आज काक बनानिक प्रगतिज जमानमे एका करनमे व सफर भा हा सकता है।

(२) एकाधिकारी बहुत ही बपरवाह बन जाये तो आविरमें आहवा उसने विच्छेद मगठन करके उसका धक्क मिगाप जिहाद छा सनत है।

(३) और एकाधिकारीके विच्छेद कारणमे घात बरवा हा ता सरकार बीचमें पक्कर एकाधिकारी पर अकुण लगा सकती है या उसका घात अपने हाथमें न सपनी है।

८ परन्तु दन अकुणके काममें आनमें बहुत दर रानी है। इसके सिवा वस्तु बर एका हाता है कि कम कामत रखनमे अधिक जाग म्याया नपा गारकी गभावना हो ता भा एकाधिकारी इतना दूर गे नही माचना और अपने माका कामत ऊचा रखना है और प्राक्काका नरफ लागवाही मिंगाता है। कभी-कभी ता एकाधिकारी इनमे ज्यादा बपरवाह बन जात है कि उद्योगके विक्रामके लिए जा सुधार हमारा करत रहना चाणिय उह करनका भी व कोई परवाह नहा करत। समस्त उद्योग पुरान और पाना रचीके दग पर ही चरता रता है। मर सिवा एकाधिकारी माकी बीमन्त्रमें फरक कर सकता है। व गरनका प्राक्का पाना और दूसराने कम बीमन्त्र न सकता है। याम तगाव समय भा व अधिक कामत ल सकता है। एक प्रणामें कामा ज्यादा रख नरते है और दूसरे प्रणामें कम।

९ लकिन आजकलके उद्योगपतिया और पूजाकाया अध्यात्मिकियाकी दलील ता यह है कि एकाधिकारमें इन तरहका जा बुराया बनाई जाती है

व व्यापक नहीं है और जिसा यह था मात्रामें यहि पात्र भा जायें ता व जासानास दूर का ता साना है। व कहत है कि व्यापार उद्योगके व सगठन कारण प्रतिस्पर्धा मित्र मानव जागाका गोज जात्र मुविधाए पहल अधिक सस्ती अच्छा और बहुत बड़ा मात्राम गिन्न ग्यो है। यह जा वता साना है कि पूजीवाता प्रथामें उत्पादन घरमें अराजकता या गन्ध पन्ना रहै है उसका एक वता राज एम एकाधिकारकी स्थिति भागनवाले व सगठन है। एमे सगठन कारण उत्पादन नियंत्रित और प्रशस्यित रहता है और जागाका उपयोगका चाज अधिक मात्रामें तथा गद और मन्मा मित्रनम उनका सुल मुविधाआमें वद्धि हाता है। अन्तिन यह दलील वन्त टिकन ग्या नहा है। यह कहनम बहुत सार नहा है कि व्यापार उद्योगके सगठन कारण प्रतिस्पर्धा मित्र गन् है या मित्र सकना है। पहल छान व्यापार और उत्पादन एक दूसरेके साथ प्रतिस्पर्धा करत थ उसर वजाय आत्र व सगठन एक-दूसरेके साथ प्रतिस्पर्धा करत है। उनके सग ठनम यहि भा व्यापारी गामिठ न हो ता सगठनवाणे उन बुवठ टानका वागिग वन्त है। रायाकी एक दूसरेके साथका प्रतिस्पर्धा और ग्याग्याक साथ एम चाजकी तुन्ना कर ता पहल छान छान रजवाड एक-दूसरेके साथ रहत व उमके वजाय ए व व गन् आर साम्राय आपनम गन्त है। फिर जस व राष्ट्रान गीच युद्ध तक मयान्ति मित्रता और सगठन होत है पर तु स्थिामें व एक-दूसरेका जरा भी विश्वास नही करत वगा हा व्यापार उद्योगके गन् सगठनका हात्र हाता है। आजके विश्वव्यापी और सब सहारेके यद्धानी तरह व वड सगठनकी एन दूसरेके साथ चन्तवात्रा जाधिक प्रतिस्पर्धा भा अधिक विश्वव्यापक और अधिक सवनायक हा जाता है।

१० व्यापार उद्योगके व सगठन राजनीतिक क्षणामें भी घस गय है और अपन अपन ग्याक रायननम प्रभाव जयवा सता जमान ग्य है। अपना स्वाथ साधनके लिए व सरकारी नीतरा और पार्लियामेंट या सानटमें वठनवात्र जनताके चन हुए सन्स्थाको भा रिश्कत दकर या अय प्रकारम अपन हाथके खिगान बना सकत है और सरकारका परेगानीम डाल सकत है। वन्तम लन्कान पुकार पुकार कर यह कहा है कि दूसरे विश्वयुद्धकी जन्में उत्पादका और व्यापारियोंके एकाधिकार भागनवाले एम व सगठन व।

११ हम यह देख चुक है कि सारी जनताकी भगार्थके खयालस विचार किया जाय ता वड पमानका उत्पादन अनक प्रकारस हानिकारक है।

उसमें भी खानगी उत्पात्तका और व्यापारियाँके एत बहुत बर सगठन ता वाछनीय ह ही नहा । जब वे एकाधिकार भागनकी स्थिति आ जाने ह तब जनताके लिए उनके भारी बान और खतरा बन जानकी बनी समा यना रहती है । एसा नही मानूम होना कि उत्पात्तनका विस्तारित किये बिना दुनियाकी उलझा हृद समस्या हूँ हाँ सकेगी । फिर भी समाजके लिए जरूर कुछ एम उद्योग ह जा बट पमान पर ही चलाय जा सकने ह । ये उद्योग यदि एसे हा कि व एव ही व्यक्ति या मण्डल द्वारा चलाये जा सके याना वा एकाधिकारकी स्थितिमें हाँ चलाय जा सकत हाँ और तभी उनस समाजको लाभ हाँ तो एसे उद्योग में सरकार म्पुनिसिपलिटिया एवम बोर्डों या जनताका म्पलाँके लिए चलनवाली दूसरी सस्थाभाके जरिय चलाय जान चाहिये । खानगी एकाधिकार नर ही यह व्यक्तिवा हाँ कपनीका हाँ या कपनियाँक म्पणलता हाँ जनताकी भाँइके खयाँस अच्छा नहाँ है ।

व्यापार चिह्न छाप और विज्ञापन

१२ मालकी बिक्रीय मन्वच रखनेवाली कुछ गार्ते एमी ह जा एकाधिकार और प्रतिस्पर्धा दानाकी सीमा पर रहती ह । इनका विचार यही कर रना ठीक है । व्यापारियाँके मार्कों (ट्रडमार्क) माल पर लगाई जान वाग तरह तरहकी छाप और मार्के विज्ञापनाके कारण उन उन मार्के वारमें जय-एकाधिकार जमी स्थिति पदा हाँ जानी है क्वाकि बर प्रतिस्पर्धाका रोक्ता है या मुक्ति एना दनी है । ग्राहकों पसन्दा भाँ विनाय एगाम हाँ ल जाती है । उनकी पसन्द बिनाकुँ म्पन्न नहाँ रह सक्ता । बाजार कीमतका म्ब उत्पादन-मन्वच जामपास रहना जा सामान्य विषय है उससे अमन्म ये बाने छावट डालना ह । प्राय एसा होना है कि विज्ञापनाके और म्ब हाँ दूसरे प्रकारके कारण प्रसिद्ध हाँ चुरी छापवाके मार्की कीमत उत्पादन-मन्वच बहुत याना हानी है । और दूसर उत्पात्तक गुणमें उमक जना हाँ माल एनाकर बाजारमें रर ता भाँ प्रसिद्ध हाँ चुरी छापवाके मार्क सामन उमका रिधा नहाँ हो पाता ।

१३ कई एकी गान और जगज जगर वन्के मार्क बानेमें एसा नहाँ हाना । यन् मार्क ताँ आर्यमि एकर नमूना आधार पर या उसक वजन परस परस कर सीदा जाता है । परन्तु वन्के मार्क पर कई तरहकी प्रियाण होनेके बान जो खान बनावना माल तयार हाना है उसके वारेमें एसा खास तौर पर हाना है । साबुन धुगडूगार तेल, मिठाइयाँ मुरके

विस्तृत पत्नी कपड़ा झूठ नरती गने, मुँर दावतने तरह तरह मान नरह तरहकी दवाए बगरा मात्रे वारमें एमा अधिक हाता है। एमा मात्र बानवाए अपन मात्रका घन धानपत्र दगस पत्र वरने उम पर अपनी खास छाप लगावर और उगवा खूब जागरास विनापन वरने बाजारम उस धरते ह। एमा मात्र किस तस्तुसे बनता है किस तरह बनता है किस परिस्थितियामें उत्तमा उत्पादन हाता है आदि बातें और मात्रा गुण दापावे वारेमें ग्राहकको कुछ भी जानवारा नही हाता। मालका उचनाक गण मानवाए तरह या छाप दगवर हा ग्राहक मात्रा पसन्द करता है। एक-दूसरके देखावकी कोई खास छापवाला माल समाजमें प्रसिद्ध हा जाता ह वगलिए सर उसी छापमा मात्र खरीते ह। और उमके बनानवाकेका एकाधिवाए या अध एकाधिवारकी स्थिति प्राप्त हा जाती है।

१४ ऊपर हमने ब्यवगत जोर सीध उपयोगकी चीजाकी बात की। एकिन दूसरा माल बनानके काममें जानवाकी चीजामें भी विनापना एका एकास मात्र या छापवा मात्र अधिक प्रसिद्ध हो जाता है। जस मुतार और गुनारक औजार और तरह तरहका मीन भी लोग एक खास छापकी ही अधिक पसन्द करते ह। एकिन एन चाजाम सीध उपयोगकी चीजा जितना ढाग या धोखा होनकी गुजाइग नही हाती। लोग यदि एक खास मकर का ही मीनरी या खास छापके ही औजार ज्यादा कामम लते ह ता इसका कारण वरत उसकी छाप या विनापन नही हाता वलिक उसकी अछाईके वारेम लम्ब समयका जोर वरत आगाका अनभव होता है। इसमें तो छाप या विनापनका इतना ही जसर हाता है कि कोई नया उत्पादक उस प्रासद्ध छापके औजार या मीनसे अच्छा औजार या मीन बनाये ता भी उसे बाजारम प्रवण पान जोर अपनी जगह बनानम बहुत देर लगती है। यह नया उत्पादक अधिक साधन-सम्पन्न न हो तो उसका माल अच्छा होते हुए भी पुरान प्रसिद्ध मात्रको हटाकर वह अपन मालको बाजारम नही रख सकता। कभी कभी एमा भी होता है कि प्रसिद्ध मालकी जाति हल्की हो जान पर भा वह कुछ समय तक बाजारम टिका रहता है यद्यपि मालकी जाति विगाडन या हकी वरनमें उत्पादक आग पीछ अपन नामको हा निमनण दता है। बोइ भी समझतार उत्पादक अपन प्रसिद्ध हा चुके मालको इस तरह हरगिज हानि नही पहचायगा। लेकिन जब उत्पादक पसकी लगाम आ जाता है तब जरूर एमा हाता है। मान गीजिय उमन बक्स पसा लिया हो और वह पसा समय पर न लौटा सके तो उस स्थितिमें बक उसके कारखानका वजा

अपन न्ययम न्यय जयना समा जनी वसू करलन गिण उम बारखानमात्रवा मात्रवा प्रतावत हल्की करक मन्ता मात्र बनानन गिण मजबूर करता है। ववसा न अपना परा जय उन वन कला वसू ररना शेता है। गकिन नम वमरी परमा न्ना हाता रि न्य मात्रवी प्रतिष्ठा या मात्र जाती रजनम बारखानका मन्ता गिण नवमान हा नायगा। हा प्रयय उत्पात्क ता यह ममजना ही न रि यह दूर्गन्तिकाकी नीति नया ह। कमगिण एसा घटनाए वन्त कम हा पानी ह। एम प्रमिद्ध मात्रवा ह्यानका ता एन महा न्याय नै वि मित्रु नय लगता और नम प्रमिद्ध मात्रम भा अच्छा काम रनवाला मात्र कुउ मन्ता कामन पर या उतनी न वीमन पर बाजारमें रखा जाय।

१ यत् साधका जाल न रि न्याजके मन्की दृष्टिम हमार अथ व्यवहारम विनापनाका विनाया स्याता नै। विनायागै हिमापना कहते ह कि लागाका उनका आनयनकाका चाजें कहा मित्रेणो यह बनानक मित्रा मात्रके गिण कौनयो राज पम करन जमी है यत् जाल भी विनापनागै जरिय उम यनार्त जाता ह। साथ हा गणारा कसा कसा चाजें और मुविधाय मित्र मरता ह यह बनानवा अथान न आनयनगै पना करनका या आवश्य कनार्थ बनानका काम विनापन करन ह। परन्तु यह नय मात्रवा यान न। जा मात्र चत् निरन न उमरा विनापन विमगिण हाता चाहिये? इमक गिण यत् कहा जाता है रि मात्र प्रमिद्ध न गया हा और लाग उम सरीरन ह। ता भी विनापनक द्वारा उमका स्मरण लागाका मन्ता करत रनम हा उम मात्रवा बाजार पर कानु ररता ह। यह बनानन गिण रि विनाया न वयोंगे लाग हमार हा मात्र कामम लत ह कुउ विनापनामें बारखानका स्वापनाका न्य भा लिया जाता न। एम विनापनाका रणणा मन् विनापन कहा जाता है। यत् न्याय दो जाता ह रि ह्यना और नयना मात्र बनानवा आशामक बलिद लागाका बाजारम पमनग रननन गिण एम विनापन न्ये जान ह। व्यापार उद्योगमें विनापनाका मन्त्य रन माना जाता नै। उत्पात्क नई तद चाजें और त् त् मुविधाय पना करक लागाका उनका नम उगनवा ननामें इनमें आशिय उन्नति माना जाता न। इमगिण मात्रवा मन् रनानमा और न चाजें मगन्का प्रणा रनना गिण विनापन नारी पद्धति एक विपयत रूपमें न्याय विद्यार कौन्जामें पनार्त जाता नै। कुछ नम ता आरयन भाषामें विनापन गिण रनका और विनापनागै गिण आर यक चिद बना ननरा थया हा करत ह। और यह भा कगवा एक क्षय माना जाता है। एकिन पन् मन् विनापन न्ये जान हा तव ता हमें

उनसे स्थानका विचार करना चाहिये । यदि हम इस सिद्धान्तका मान लें ह—और उसे मान सिवा कोई चारा ही नग—कि समाजको अपनी आर्थिक आवश्यकताओं पर अमन मर्यादा रखना ही पड़गा तब तो सब विनापनाकी भी बहुत जरूरत नही रहती । परन्तु आजकल अधिकतर विनापन तो झूठ ही होने हैं । हमने जोर कमजोर भागों के ऊपर गुणाका बड़ा चंग कर आकर सब गणों में बगल करनेवाले झूठे विनापनाका क्या है ? आजकल जलवार सस्ते हो गए हैं और उनका उगम पौना भाग विनापनसे भरा हुआ है । और ये विनापन क्या हैं ? इन विनापनाकी अच्छी तरह छांटनी करके देखें तो अधिकतर विनापन सिनमानो नटियां सुन्दर दाखनक गिण लगाय जानवाले पाउडरा और श्रीमाने बाट बतानका दावा करनेवाले मुर्गाधन सेनेके चमडीको मुलायम बनानका दावा करनेवाले सामुनाके सफा वालाको बाण करनेवाले और निक्कम बागका उडानवाले गरहमाक सतति नियमनकी दयाइया और साधनाके बने हुए मासिक धमको खोलनक नाम पर परोक्ष रूपमें गभपातके उपाय बतानवाले दवाआक खोया हुआ पुरपत्व फिर प्राप्त करान और गक्ति बतानका दावा करनेवाले दवाआक झूठ नकली गहनाक फमी कपडाके और स्त्री तरहको भोग विलासकी दूसरा चीजाके हाते हैं । इन विनापनाम जो दाव किय जाते हैं वे गायन हा सच्चे होते हैं । परन्तु अध्यासना कहते हैं कि विनापन अन्नील हा नीच बतिया और अनौनिका नक्कानवाल हा और धोखवाजी करनेवाले हो तो उनका विन्दु धारवाई करनेका काम कानूनका है और उनके विरुद्ध प्रचार करनेका काम धम और नीति उपदेशका है । ग्रन्थवाले अन्नी तरह सावधान रहना चाहिये । वे जब बतकर क्या एमी चीज तरादन जाने ह ? केविन अध्यासनोंके लिए ऐसा कहकर अपनी जिम्मेदारीमें छटक जाना ठीक नही । समाजकी भगाइ करनेकी इच्छा रखनवाले प्रत्येक शास्त्राणे एसी वाताका विचार करना ही चाहिये और जो प्रया समाजका अहित करनेवाले हा उसका विरोध करना ही चाहिये । अध्यासत्र म विषयमें तस्य या उदामीन नही रह सकता ।

१६ आजकल विनापनो पर कितना अधिक खच हाता है जिसके फलस्वरूप माणकी कीमत बढ़ती है और वह बाजा ग्राहकाको उठाना पडता है इसके कुछ आक टण्ड आफ इकानामिकम (सपाक आर० जी० टवेल) नामकी पुस्तकमें प्रकाशित दि जार्गेनिगान एण्ड कण्ट्राल आफ इकानामिक एक्टिविटी नामक एस० एच० स्लिश्टरके लेखमें स नीचे किय जाते हैं

फिलाडेल्फिया रिजर्व बंकेने अपन दि विजनेस रिब्य नामक बुलेटिनमें इस बानके गारंटे रिय हू नि सन् १९२० में ३६ मुख्य अखबारोंमें छप २५ प्रकारक मालक विनापना पर कितने डांर सच क्रिय गय।

मान-पानकी चागा पर १ करोड ४४ लाख गरीर श्रृंगारके साधना पर ९१ लाख विजनेसे साधना पर ८४ लाख घग्गे साज-सामान पर ८० लाख मोटरा तथा मोटरके सामान टायर गपरा पर २ करोड इमारता कामके सामान पर ६० लाख संगीतक बाद्या पर ४५ लाख दफतरकी चीजा पर २९ लाख सामन पर २८ लाख जूना पर २७ लाख रग रोगन पर २५ लाख मशीना और पट्टा पर २३ लाख मोटर द्रवा पर २२ लाख जवाहरात पर २२ लाख बनियान कपरा पर २१ लाख फर्नीचर पर १९५ लाख पुस्तकके कपरा पर १७५ लाख स्त्रियाके कपरा पर १६ लाख ताजगी लानेवाल पंथा पर १४ लाख खेतीके सामान पर १२५ लाख खट्टी मीनी चीजा पर १२ लाख चापक और स्टेशनरी पर १२ लाख और टुकटरी पर १२ लाख।

सन १९१५ में १९२० क बीचके समयमें विनापनका सच कितना बन्ता गया है य बानके रिप कुल ७२ अखबारोंमें छे विनापना पर सच कई रकम इस प्रकार का गई ह

१९१५	३८७	लाख	डांर
१९१६	५१८		
१९१७	५७७		
१९१८	६१३		
१९१९	९७२		
१९२०	१३२४		

इतना सच ता ७० अखबारोंमें हो हुआ ह। अमरिकास ता हजारों अखबार चलने ह और उनमें विनापन सचने ह। इसका यह साचनकी बात है नि विनापनी पर कुल कितना अधिक सच हुआ होगा। फिर ये आस १९२० क ह। उसका बाद ना यह सच बहुत बढत बढत गया है। विनापनमें इतना अधिक सच घरना करतक मिया उनमें जा धावनाजा और सठ रखा है क् अल्प। जब तक सागा नफर लिए और न्क पैमान पर उ सचन हाता रोगा तब तक इस भयकर बढवाणीका समाज पर बोज पडता हा सगा।

सट्टा

१ सट्टा बाजारवा बहुत महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। सट्टा अनेक तरहके होते हैं और उनके अलग अलग अर्थ होते हैं। उसका मुख्य अर्थ यह किया जा सकता है भावकी भविष्यमें हानिवाण तजी या मन्दाये अथमान पर वनमान और भविष्यमें भावने बीचका एक ग्यानक लिए किया हुआ वायदेका मौना। अमुक मुद्दत वाद भावका तजी हानिवा अन्तर्ज हो तब उस मुद्दत वायदेकी खरीदना सौना आजमे भाव पर बन्नेका या अमुक मुद्दतके वाद भावम मनी आतका अन्तर्ज हो तब उस मुद्दतके वायदेकी बिक्रीका सौना आजमे भावस कर डालना और वायदेका तारीख पर भावम जो घटावनी है ही उसके जनमार फन्की खम देना या लना—इसीका नाम सट्टा है। मान गजिय कि रईना भाव जनवरी महीनमें २५ ६० खडी है। उस समय सौना करनवायेका अनुमान यदि यह हो कि इस वष रईकी फसल अच्छी नहीं होगी और इसलिए उसके भाव बन्वर २० ६० तक पहुँचेंगे तो आज तय की हुई कीमत यानी २५ ६ के आसपासके भावस तान या चार महीनके वायदे पर रई खरीदनका सौना दूसरे जसामी या सट्टवालेके साथ वह कर उगा। फिर अगर पहले सट्टवालेकी धारणाके अनुसार रईकी फसल अच्छी न हुई हो और वायदेकी मुद्दत पर भाव बन् कर ३०० ६ खडी या उसके आसपास हो गया हो तो जिसके साथ २५ ६० या उसके आसपास रई खरीदनका सौना कर रखा हो उससे रईकी डिलीवरा कर बाजारके चन् हुए भावम यानी ३० ६० के आसपासके भावसे वह मात्र बच डालगा और दोनों भावाके बीचके एक जितना नफा उसे मित्र जायगा। यदि पहले सट्टवालेका अदाज गलत निकल और फसल अन्तर्जसे बन्त अच्छी हो तो रईके भाव बढ जायगा। उस समय उसे तय किए हुए ऊँचे भाव पर रईकी डिलीवरी कर वायदेकी तारीख पर बाजारम चन्नवाले नीचे भाव पर रई बच डालनी पन्गी और दोनों भावाके बीच रहे एक जितना नुबसान उसे होगा। केकिन सट्टके सौनामें उस तरह माल्ना जिरीवरी कर फिर उसे बचनकी नीवत गायद ही कभी जाती है। जिसके साथ

१ वगाणी मनरी एक खनी होती है।

वायुनेना सौग किया हा उम आत्मिक माय वायुकी लागीव पर कवल भाव फक्का गनन कर किया जाता है।

२ हमारे कल्पित उपाकरणमें यद्युतम मयोग्य इस तरह वायुकी सरावके लिए तमार मातूम हा ता रूइका भाव फौगन वन लगाता है याना कपामकी फमल कम हानके वाक भाव गकम व जायें कम बजाय फमल निकलन पहले ही भाव धोर धीरे वन गगत ह। कम भावमें अचानक वन वन फ गग नही हान पाता। इमके सिवा भाव वने जानके कारण गोग रुई कम खरीन = इसलिए फमल कम हानमें रुकी जा तथा मातूम हानी चालिये व भा नडा मातूम हाती। कम तरह चन्ते हुए भावका हियाव गगावर खराक वरनवालाका सट्टा बाजारम तजीवाक या तेगी खनवाके (अग्रजामें युल्ल वहत ह कयाकि सा हमगा ऊचा मिर करक चन्ता है) कहा जाता है।

२ इसके विपरीत या भाव लीजिये कि सट्टावाकेना एमा गग कि फमल बहुत अच्छा होगी और इमके रदक भाव गिर जायेंग ता वह अभाके चातू भावके यानी २५० रु० खडी या उमक आमपामक भावके तीन चार महानके वाये पर रुइ वचनका मोग दूसर अमामीके साथ कर जग्गा। अगर पहले सट्टावाकेकी धारणाके अनुसार कपामकी फमल गूब हो और तीन या चार महानक वाक रुके भाव गिर कर २०० रु० खडा पर आ जायें ता जिसके साथ २५० रु० खडी या उमक आमपाम रुई वचनका मोग किया हो उम वह उनका कामन पर रुके डिगवरी केनका वग्गा। परन्तु दूसरा आमी डिगवरी लिय बिना उम दाना भावके जीउना फर ही चका देगा। पहले सट्टावाका अन्तज गगत निकर ता उम इस वायुने मोग घाटा होगा। बहुतम सट्टावाक कम तरह वायुनेकी बिभाव लिए तपर मातूम हा ता भाव फौरन ही उतरन गगत है। कमलि फमल अच्छा होनेक वाक भाव गकम गिरें इमके बजाय इन सट्टावाका प्रयत्तिके कारण भाव पहलेत ही धोर धार उतरन गगत ह। कमके सिवा कम अग्र भाव उतरन जान ह उमे कम गग रुकी खरीन ज्याग करते जान ह और इमके अधिक उतरन हुइ दया माय फलम ही पन हा जाता है। कम तरह उतरन हुए भावके नियाम वायुनेका किया कनमागना गहन बाजारमें मनीवाक या मने गगने वाके (अग्रजामें बीअम वन है कयाकि गेउ हमगा नाना मिर रपन चन्ता है) कहा जाता है। कम प्रकारक गट्ट सामायन उन चाकके निय जान ह, जिनक बाजार समारख्यापा हान ह। तार और देगीकानके कारण न सट्टाव

लिए बहुत बड़ी मुविधा हो गयी है। लन्दन 'यूयॉक' बवई कम्पत्ता आनि बन् वेन्द्राम हानवाग् भावनि उतार चन्ववे समाचार प्रनिश्चिन् या प्रनिष्चन् इन सारे बाजारामें घूम ताते ह जोर उअ आधार पर सट्ट सन् जाते ह।

सट्टका पूर्वपक्ष

४ सट्टे बघावमें यन् कन् ताता है कि उसने कारण मालका पूर्नि और खपनवे बीच मल बठाया जा गयता है और भावनि उतार चन्व धाम या प्रमिव बनाय ता सन्त ह। इसक् कारण बाजारमें अचानक भारी उयत्त पुयल नही होती और किसान व्यापाराका एन्तम बडा घाटा नहा हाता। इसके सिवा ग्राहका और उत्पान्का दानारो सट्टवाग्की प्रवत्तिस अभ होता है। सट्टका व्यवस्थित और नियमित घधा करनन्त बढिगाग्नी व्यापारी दुनियावे अन्ग अन्ग हिस्सामें हानवाग् माग्की पन्वार और मालके उत्पान्क धारेमें पक्का जानकारा रपन ह् और एस अनुभवी तथा निष्णात व्यापारा जा त्रिवाली या लवाग्ी करत ह उस परसे बाजारका स्य और बाजारके भाव निश्चिन् हात है। इन सट्टवाग्का प्रवत्तिस कारणान्गाराका यह सूचना मिग्ती है कि उन्हें अपनी जम्हनका कच्चा माल कब खरीन्ना चाहिय और अपना तयार माठ कब बचना चानिय। एमक् सिवा उनकी प्रवृत्तिवे कारण भावमें एक्न्त उतार चन्व नही हो पाता एमसे ग्राहकाको भा लाभ होता है।

५ आजकलके बड पमानवे उत्पान्की स्थिति यह है कि तयार मालकी माग हान और उस मालके बिकनमे बहुत पहले ही उत्पान्का काम आरभ हो जाता है। इसलिये उत्पादकाके सिर पर भावके उतार चन्वका खनरा तो स्वभावत रहता हा है। सट्टवाग्की दलीन् यह है कि य खनर हम उठा ल्त ह और उत्पान्काको अपना काम निश्चित होकर करनरा मौका देते ह। कपडकी मिन्धाग्का बन्ी मात्रामें ह् खरान्नी ता पन्नी ही है। र्ई खरीन् लेनवे वात् कपडा तयार हान और बाजारमें बिकनने लिये रने जानने बीच अमुक् समय अवन्य जाता है। इनन समयम अगर र्इक् भाव चन् जायें तब ता मिन्धाग्का बहुत फायन् हो कयाकि उनवे कपडके भाव र्इवे चन् हुण भावके हिन्वावे निर्धारित हान ह जोर एन् ता उनकी नीच भावा पर खरीन्नी हुई होना है। परन्तु व्तन समयमें र्इवे भाव यन्ि बठ जाय तो मिन्धाग्को भारी हानि हा। कयाकि र्ईक् गिरे हुए भावा पर हा कपडके भाव निर्धारित हाग। सट्टवाग् कहते ह कि यह खनरा मिन्धाग्के सिरम उतार कर हम अपन सिर न्नका तयार हात ह कयाकि आजक नियत किय हुए भाव पर आगके वायदका सौन्

करके उस समय उह रुई दनके लिए हम बघत ह। इस तरह भविष्यमें रुद्रता भाव कितना हा चढ या उतरे तो भी यदि मित्रवाला अपनी जन्मका रुईकी भविष्यकी खराद भी आज हा भाव निश्चित करके कर ली हो तो इस भावक आधार पर वे कपडक रिमी नी यात व्यापारीके साथ अपना कपडा बचनका मीला रिमी तरहके खतरेके विना अभीसे कर सक्त ह। क्याकि भविष्यमें बचे जानवाके कपडक कच्चे मात्के रूपमें काम आनवाली रुईका भविष्यका भाव भी उन्हान अभीम निश्चित कर लिया होता है। इसलिए इस कच्चे मात्के भावमें आपे होनाके फरकदरता अमर उनक तयार माल पर अपना उनके कपड पर कुठ भी नही होता।

‘हेजिंग काष्ठेक’

६ मिलवाले अपने कच्चे मात्के लिए हम तरहमे जा बायत्का सीला कर लेते ह उसे हेजिंग काष्ठेक कहते ह। हेजिंग का अर्थ है बाट लगाना। गतकी सुरक्षितताके लिए उसे बाड लगाइ जाती है बसे ही अपन घबेकी सुरक्षितताके खानिर हम तरहम बायत्का सीलेसे उत्पात्क बाट उगा रत ह। मिलवाला जम अपन कपडक लिए रुईकी खराद करता है तथा कपडके तयार हाकर बाजारमें विकन जानम जितना समय लगनवाला हा उनत समयक बायत्के रुईकी विक्रीका सीला भा बह कर रखता है। मान लीजिय कि यह मुद्दत चार महीनेकी हा और चार महीनेके बाद रुईक भाव बढ जायें ता उसकी मग्न भावम खरीदी हुई रुईस बन टुए कपडम उस हानि होगी। परतु इस हानिका बन्ना उसक द्वारा निय रुईकी विक्रीके मोत्तेम उसे मिल जाता ह। दूसरी ओर यदि रुईके भाव चट जायें तो रुईकी विक्रीके मोत्तेमें तो उस हानि हागी परन्तु इस हानिका बन्ना उसक कपडक उच भावा द्वारा मित्र जाना है। इस तरह तयार मात्के उत्पात्नके लिए आवश्यक कच्चे मालक भावमें हानिवाला उपात्-मुपात्स मिलवात्के कायमें बार् बाधा नग पत्ती।

७ एर छान्ने काल्पनिक उदाहरण द्वारा यह बात अरिक् स्पष्ट हा जायगी। मान लीजिय कि कपडका एक छाटा कारखानाला उत्पादक १२००० रतल रुई ४ आन रतत्क नाम खरीत्कर कपडा बनाना गफ करता है। इस १२००० रतत्क काम यह ४८००० बग गज कपड तयार करता ह। एता करनम उसे चार महीन लागे ह और अपन कपडकी गगन बीमन उस ४ आन गज पत्ता है। कपडका इस लागत कामनक १२००० रु में ग ५००० रु ता रुईकी गगत कामनक ही ह। अब रुईक भावका समाय्य उपत्-मुपत्स बचाव गिग इस उत्पात्कका यदि हेजिंग करना हो ता उस

१२००० रतल रू० चार मनीने वायदेगे बच रपता चाहिये। मान लीजिय रू०का वायदेका भाव ५ आता रतत है और इम भावग वह सौग कर रपता है। अब तपडा तयार हातर राजारमें त्रिन आय उस समय मान लीजिय रू०का भाव गिरकर ३ आने हो जाता है तो इमका जतर बपडन भाव पर होगा। मान लीजिय रू० अगरके कारण बपडेका भाव ३॥ आने गज हो जाता है। वारतानवायेका ४८००० गज बपडेकी तगत पीमत १२००० रु व बजाय ३॥ जानन भावमे कुत १०५०० रु बीमत मिलगी — यानी बपडेकी त्रियोमें १५० रु का घटा होगा। इस घाटके बिरुद्ध उसन जो रू० ५ आन रतलरू० भावमे बच रपी है उम पर उस २ आन रतलरू०का नफा होगा। यानी १२००० रतत रू० पर उसे १५०० रु नफा हागा। इस तरह उसका नफा और नुबसान बराबर हो जायगा।

८ अब इमस उल्टा परिस्थितिकी बल्पना करें। मान लीजिय कि रू०का भाव चत्बर ६ आने रतत हो गया। तब उसन रू०का वायदेका जो सौग ५ जानम कर रपा है उसमें उसे ७५० रु का नुरुमान होगा। त्रेकिन रू०का भाव वर जानन कारण बपडेका भाव चत्बर ४॥ आन या ४॥ आन गज होगा तो अपन बपड पर उस ७५० रु का या १५०० रु का नफा होगा। रू० तरह उत्पात्क सिफ कच्चे मात्रके बाजार भावाकी उथल-पुथलके कारण नफ नकसानम ताय त्रिता अपना धधा अजी तरह चत्र सकेगा। बाजारम सट्टकी अर्थात् वायदका सौग करनकी प्रया हो तभी इस तरहके हेजिंग का लाभ उत्पात्कको मिल सकता है।

सट्टवागेकी एक दगी यह भी है कि हम शयरो जीर दूसरी तरह तरहका जमानता या सक्चुरिटियाका सट्टा करते ह इसीलिए नय नय उद्योग घधामें पूजी तगानके लिए गेग गाय आते ह। शयरा और सेक्चुरिटियाके सट्टा होनसे ही बाजारम उनकी खरीद और बिक्री होती है जीर प्रतिदिन उनके भाव भी निकलत ह। इससे किसी शयर या सेक्चुरिटि रखनवागके जब पसकी जरूरत हा तब उस शयर या सेक्चुरिटिको बच कर वह अपनी रकी हुई पूजी निवाल सकता है। इस तरहकी सुविधा न हो तो एक बार शयर या सेक्चुरिटिमें पूजी रोकनके बाद पूजीको निकालना बहुत कठिन हा जाय और पसा हमगाके लिए फस जाय या जब जरूरत पड तब न मिल सके। उस हाकतमें इस तरहके शयर जादिम सामाथन गेग पसा रोकना पसन्द नहीं करग। तगाने पास जो छाटी छोटी बचत होनी ह उनका प्रवाह भी आज जो उद्योगाकी जीर मुडना है वह न मडगा।

सदृशकी बुराडिया

९ ऊपरकी मर दगी नीचेमें तो बड़ा सुन्दर मारूम हाना ह लेकिन दुनियाके किसी भी मट्टा-बाजारमें जाकर देखें तो बड़ा भाव नियमनने द्वारा या गपन तो पूर्णिक मर बढाकर जनताका भलाइ करनेका वातावरण जरा भा नहीं पाया जायगा। वग बोधराजो और जुएका ही वातावरण निचाइ लगा। यह कानम काई सार तदा कि रलय जयग बोधराज मट्ट उन उन चात्राके वारमें और पूर्ण व गपनने वारमें सपूण जानकारो रखनसाक तथा बाजार पर उमम होनवाक असरतो पहचाननेका निष्णाना द्वारा होन ह क्वाकि सदृशाल अधिकतर इन बातसे अनान हात हं। बिना विचारे माहम पर वठनकी वृत्ति उनका मरग वग गुण या दुगुण कहा जायेगा। उनम का होगियार और जानकार हाते ह तो व भा अधिकतर मही गलन या अच्छ-बुरेकी जाच करनसाले और समाजक प्रति जिम्मनारीका सपाक रखन वाते नहा हात। बाजारकी स्थिरता वनी रण भावा पर नियमन ही और उत्पादका तथा प्राटकाकी सुविधा मिले इन मर विचारामें और उन गणा वार्याम जमीन-आगमानका जतर रहता है। उनकी उडाम वनी लालमा गरीमे जलनी अधिमम अधिम धन समा गकी होती है और उनके सार सौलामें दगा वक्तिना प्रग्णा होती है। इन मोलमे पीछ जानकारी या परिपक्व विचार जमी बाइ गान नग हानी कल्कि पूरा तरह जुआरीकी वक्ति ही हानी है। उनके सौलाम बाजारमें भावका किसी भा तरहका नियमन नलने वाले प्रिना वारण भावम उथल-पुथल हानी है। अपना अनुबूताके अनुसार भावमें तजा या मनी जनने लिए वे तरह तरहका अपवाजें वग सिपनने माय फलने ह।

गात्रीजीन जक्रम उपनाम गुरु किया है। 'सरकार उनके साथ समन्वित करणी। जमनी और रुग्में या जमनी और रिटनमें मधि हा जानेकी आगा है।' जमनाकी बडी हार हई है। युद्ध वग हानवाला है।

जापानका हमरा हाने ही वाला है — ऐमा ऐमी अनर अपवाजें इन मट्ट बाजारके अपवाक निमागा निरन्ता रहता ह। फिर एन आत्मी गभार मुह बना तर वग कह द कि उगने समाचार मच ६ ना सारे बाजारमें यह गग फठ जानी है और इसने फास्वरूप भाव च जाने ह या गिर जान ह। इन अपवाहामें भी कदा बने बुराई ता यह है कि गगा या बराग मनुष्याको जिन बाजाला तगी ग एमा मुख्य शाब-पनारी चार्जे तयार हातर बाजारमें आनम फले हा गरीक वग नाक पर दा जानी ह। ऐमा घननाम अमरारामें सारी घन्ना ह। गात गीजिव कि विना वग सदृशजने गहना वग मोल

कर लिया है बाजारमें जितना गहूँ हा वह मय सराज लिया है इका
जगवा बायतेवा खरी भा बडी मात्रामें कर रगा है। तो एस सट्टवालेका
स्वाध रसीमें है कि गहूँ भाव तेजी पर रहें। परन्तु उम पता चले कि
गहूँका फसल बहुत अछा हानकी समावता है और अछा फगउने कारण
बहुत बडी मात्रामें गहूँ बाजारमें आ जानस उसका भाव बठ जायगा। तो
एसे मौके पर यह सट्टवाज गहूँकी पुछ खनी फगउ खरी कर उस नष्ट कर
देता है जिसमे अधिक गहूँ बाजारमें न आ सक और उम अछा भाव मिल
जाय। दूयव वारेमें मेवव वारेमें और शक वारेमें एमा होनर कई उगाहरण
मामन आ गय ह। क्मलिए सट्टवा और उनका पग उनवाके अर्थशास्त्री
सट्टवे किनन ही गुण गावें और समझावें कि उसस समाजकी लाभ ही होना
है फिर भी एसम कोई गवा नहा कि मट्टा किनी भी तरण समाजके लिए
उपयोगा और आन्यव घधा नहा है। वह निरा जुआ ह।

१० गट्टव बचावमें उमर जिस स्वरूपका वणन रिया गया है वसे शब्द
रूपमें सट्टा चन्ता हा और उसस उत्पादकाके हेजिम करनका सुविधा मिलना
हो तथा भावा पर नियन्त्रण आदि भा रहता हा ता भी सट्टकी प्रथम
भारी विगाण या नुकसान है। क्योकि भावका नियमन आदि हाना हा ता भी
वह वस्तु लम्बी मन्तमें गायन हा सकता हा। परन्तु सट्टकी प्रवृत्तिमें हा—
बायतक सौतेम ही चाम या आकस्मिकताका तत्व बहुत अधिक होता है।
फिर उसम एक-दूसरके अज्ञानका अमायधानीका अविचारीपनका और कठि
नार्कका गम उठाकर अपना स्थाय साधनका ही ध्यय रन्ता है। इसकिए
लम्बी अवधिमें गायद कोई अछा परिणाम निक आय ता भी उमके
पग बाधक काम कई आत्मी पिम जात ह और बरवा हो जाते ह।
सट्टका सारा कामकाज घानक प्रतिस्पर्धाके आधार पर चलता ह और उसस
समाजका उचिन तथा आवश्यक अर्थ प्रवृत्तिका तरा भी गम नही पट्टवा
बल्कि उमम रकाव ही आनी है।

उचित कीमत

१. एकाधिकार-कीमतवाले प्रकरणमें हमने देखा कि वही उत्पादक अपने मगठन खड करके अपने मालक विषयमें एकाधिकार जसी स्थिति पैदा कर लेता है। वह अपने मालका उत्पादन-पक्षमें वही अधिकार कामत पर बच सरते हैं। इसमें अगला मगठन छाप और मालिकोंके मालकी कामत भी उत्पादन-पक्षमें बहुत अधिक मिलती है। इसी तरह सूठे-मच्छे मिलापनमें मालिकोंको जहरी बताये जानवाले मालकी कामत भी उत्पादन-पक्षमें बहुत अधिक मिलती है। इसमें तो ऐसा चाजें ना चुन सपती है जा नबमव जायने लिए जहरी न हो सकि हानि पहुँचानवागे हा। सामान्य यथाशोकाका वस्तुजामें जोर मालिक मोज मोजकी चाजाम ग्यास गोर पर ऐसा होता है। दूसरी जार मालिका प्रायमिद आवश्यक्ताकी चीजके बाजार भाग बहुत बगर इनन जगान नाउ रहने = कि उनका उत्पादकाका यानी बहुत बर जन सम्पुण्यसरा परभर गानका भी नहा मिलता। इन दाना उत्पादनमें खुदा अयाय है। हर चीजकी उचित कीमत आकी जाय—याना उसके उत्पादका अधिक नफा तो न मिल सक सकिन इतना जरूर मिल जाये कि वह अपने मिय एक परिश्रमक वस्तुमें अपना जावत अच्छी तरह मिया सके—ता हा आजका अधिक अममानता अयाय और गोपण दूर हा मरता है। कौनसी कीमत उचित वही नाय और वह कामत बने आना जाय इसका बचा नम दम प्रकरणमें करेंगे।

२. हमने देखा कि चाजकी कीमत निश्चित होनमें चाजकी उपयोगिता या आवश्यकता चाजका माग मालिका मरीद मरिन और चीजके ममानमें मालिका उत्पादन-पक्ष—ये मर तत्त काम करत है। मरने हम माग और उपयोगिता या आवश्यकताक मत्कारा =। मनुष्यका मर मिसा चाजकी आवश्यकता या उपयोगिता हाता है तभा वह उम चीजकी माग करता है। परन्तु मर दम चुन है कि बाजारम मागता भय कुछ दूसरा हा मिया जाता है। मनुष्यको मिसा चाजकी आवश्यकता चाह मिलनी हा और उम चीजकी माग करनकी मरती इच्छा भी चाह मिलनी हा सकिन वह चीज खरीदनेकी अपनी मागका अमलमें जानकी मक्ति उममें हो तभा बाजारम व्यवहारमें वह माग बढ़गती है। पुराने अयोगास्त्रिपान मान मिया

या कि जोगीने आर्थिक व्यवहारमें मरजारकी या समाजकी आरने सिमा तरहका हस्तगत न किया जाय ता अपनी आवश्यकताके अनुसार माग करनेकी शक्ति गगाम अपन जाय आ जायगा। समाजम त्रिना सिमी राह टाबक आर्थिक प्रतिस्पर्धा होन दी जाय ता गगामका सच्चा आवश्यकताभावा और उनकी माग करनेकी शक्तिता — जिस आर्थिक माग कहा जाता है — मग अपन आप बठ जायगा। यह तो जय हागा तन हागा यद्यपि खुश प्रति स्पर्धसे या जसा चल रहा है उस बरोन-जोक चरन इनकी नीनिम एसा कुठ न होगा। फिर भी इन अध्यात्मियान अपना इमारत म मायना पर खन की है कि जिस चीजकी बाजारम माग नहा होती उसकी गगामा माना आवश्यकता ही नही हाता यह बाज लागवा चाहिय ही नही।

३ जसे यह कहना या मानना भठ है कि जो आत्मी किमी चीजकी आर्थिक माग नही कर सकता उस वह चीज नहा चाहिय उसी तरह म मानना भी ठीक नही कि जो आत्मी आर्थिक माग अधिक जास कर सकता है उसे उस चीजका बत तीत्र आवश्यकता हानी है। कमजोर खरीद शक्तिवालेका आर्थिक माग जोरदार नही हाता और किसी मनष्यकी आवश्यकता बिन्दुल मामगी हान पर भी यदि उसकी खरीद शक्ति अधिक हा ता बाजारमें उसकी मागका जोर अधिक होता है। गरीब जोर धनवान दोना बाजारमें दम दम रपय सच करे तो चीजाकी मिस्री और उत्पादन पर तो उसका एक्सा ही असर पडगा परन्तु उन रूपयोसे गरीब मनुष्य अपन सारे मनीकी और सूब महत्त्वकी आवश्यक चीजें खरीदेगा जब कि धनी मनुष्य उनसे दसवें हिस्सकी भी आवश्यक चीजें नही खगदेगा। हा दोना तो जो चीजें खरीदेग उनके दाम उठ एक्से ही देन पडगा। गरीब मनुष्य अपन बच्चेके लिए दूध खरीदना चाहता हो जोर धनी मनष्य अपन कुत्तेके लिए दूध खरीदना चाहता हो तो भी दोनागी मागका असर दूधकी बाजारकीमत पर तो एक्सा ही होगा। एसा भी हो मकना है कि धनवान मनष्यकी बिना खरीद शक्तिके कारण दूधकी मागकी प्रतिस्पर्धामें कुत्तेके लिए का जानवागी दूधकी माग बच्चेके लिए की जानवाली दूधकी मागको पीछ डकेल दे। गरीब मनुष्य अपन बच्चेके लिए दूध खरीदे बिना रू जाय जोर धनी अपन कुत्तेके लिए दूध के जाय। जहा खरीद शक्तिम इतनी असमानता हा वग अमुक मनुष्याकी अत्यन्त मन्त्वपूण आवश्यकताभाको यानी उनकी सच्ची और अधिक तीत्र मागको दूसरे मनुष्याकी फालतू आवश्यकताभा और अनावश्यक मागोसे साथ समान स्तर पर मुकाबला करना पडता है।

इसलिए मनुष्य किसी चीजकी कितना कीमत देनेको तयार है इसका जाणना पर उसकी मांग या आवश्यकताका ताज़ताका माप रखाया जाय ता बन्ना भूँ होगी। केवल बाज़ारमें यह भूलभरी पद्धति ही प्रचलित है और उसका असर उत्पादन पर भी हाना है। समाजकी सच्ची और महत्त्वपूर्ण आवश्यकताका उत्पादन काफी मानास करके बनाय एसी चीज जानना तथा ही उत्पादक झुंते हैं जिनका मांग बाज़ारमें अधिन हाती है जिनको कामत अधिन मिल सरती है और जिनसे अधिन नषा हा सबना है। इससे समाजके बहुत लागाको जीवनकी आधारभूत चीजाको भी लता सुतनी पडता है और समाजके योशने लागाक त्रिण एण-आराम और भोग विनासका चीजसे बाज़ार भर हुए दख जाते हैं।

४ अब हम दूसरे तत्वका यानी उत्पादन खचका विचार करें। ऊपर कहा जा चुका है कि हमारा देश किसानका अपनी पसन्दे बाज़ार भाव उनके उत्पादन खचके बराबर भी नहीं मित्र पाने। जो-तो-थम करके पर भी किसानका कगाली और कजदारका जीवन बिताना पन्ता है। यका स्थिति हमारे देशमें पशुपालकाकी है। हमारा देश दोरानी और उह पायनवाण गवाकाकी स्थितिको देख ता स्पष्ट पता चलता है कि जिस भावसे बाज़ारमें घा बिकना है उस भावमें घी बनानवाण पशुपालकाकी और उनके दोराना अच्छा तरह निर्वाह नहा होता। खाली उद्योगमें रातनवाणको बरखा-सधन कमस कम आना राज भजदूरा देना निश्चित किया। उसत पहल खादा मिरव बपणम मट्टी हान पर श्री रातनवाणको मुक्किलसे १॥ आना रोज मिलता था। बाज़ार कीमतवाण प्रकरणमें हमन कहा है कि किसी भी चीजका बाजार-कामत तब समय तब उसका उत्पादन-खचसे बहुत अधिन या बहुत कम नहीं रह सकती। तम नियमको मित्र माणिक और बड बारखानदार अपन सगठनम सुठगत हैं और उत्पादन-खचग बहुत अधिन भाव लने हैं। दूसरा तरफ किसाना पण पाणन। और प्रामाद्योग करनवाणके बाणमें यह नियम दूसरा तरहन थूठा सिद्ध होता है। उह अपने थमसे पटभर पानेका भा नण मित्रता। अथगाम्यो तो बहण कि इन लागाके लिए यह घषा अधिन दष्टिम लाभप्रण सिद्ध नहीं होना हा इसमें से उहें पण भर पानका त मित्रता हो ता व इस घषका छोण द और दूसरा घषा करें। पर सच बात ता यण है कि व लाग अपना घषा छोड दें, तो उहें कोई दूसरा घषा मिल भा नहा सरना। घषा घाहन पर अगत ही तिनग उण भूरा मरनकी नीयन वा जाय। यगलिण निर्वाह न होन पर भी उहें बरी घषा जारी रखना पन्ता है।

५ फिर भी एगो नहीं लगता कि आजकी बाजार कीमतमें रह इस अन्यायक वारेम समाजकी आत्मा जाग उठी हो। गहरमें बहुत अच्छी स्थितिमें रहनवाले लोग जिहें रुपय-पसका बाइ परवाह नहीं होती जब दूरक गावामें जाते हैं ता वहा दूध सागभाजी या बहीक पाग टुए फर बहुत सस्त मिलने देखकर खुश हो जाते ह। या गहरमें भी जब घी-दूधक या अनाजके भाव उतर जात ह सागभाजी बहुत सस्ता हो जाती है तो व प्रमद्व हान ह। लेकिन उन्हें यह विचार नहीं आता कि एगो नीच भावमें इन बाजारके उत्पादकाका क्या मिलना होगा? उन्हें अपना माल इस भावमें बचकर क्या फायदा होता हागा? क्या सामय इस भावमें उन्हें उत्पादन-मच जितना भा—किय हुए धन जितना भी मिल जाता हागा? जा लाग चाह जसी निम्मी चीजामें केवल कौतुकक खातिर गपराहास रुपय उडात दम जाते ह व भा गचारामें फर टुए गरात गेगाते घी दूध सागभाजी या अनाज सस्त भावमें इनकी बागिना करते ह और सस्ता देखकर खुश होने ह। एम गेगाते पास गाना या ग्रामाद्यागकी बाई बाज ल जायी जाती है तब वे कहत ह कि यह ता मित या मगीनम बनी हुई चीजक महगी है। परन्तु जिस दूसरा बाई काम नपा मिलना उसत यह चीज बनबाई है इसस उसे मुक्तिम खान भरको मितता है—बस मितना इनता चाहिय कि उसरा जीवन निर्वाह अच्छी तरह ना सत—तब फिर उन्हें एसा क्या लगना चाहिय कि एम बाजका कामत ज्यादा है यह चीज महगी है? आज दुनियाके सभी देगामें यति कार बक्स बच जाधिन प्रान हा सक्ता है तो वर यह है कि प्रत्यक मनुष्यका काफी काम लिया जाय समाजक लिए उपयोग सिद्ध हा एसा काम लिया जाय। यह यायकी बात है कि काम करक समाजक उपयोगमें आनवाली बाज जनानवाल्को निर्वाहक लिए पूरा पारिश्रमिक मितना चाहिय। किसी चीजके बाजारमें सस्ती मिलनसे खुश न होना चाहिय बल्कि यह खबना चाहिय कि इस चीजक बनानवाल्को पूरा पारिश्रमिक मित जाना है या नहा। चीजकी कीमत निश्चित करनमें यह विचार मुख्य हाना चाहिय। लगना यह नहा है कि चीज महगी है या सस्ता बल्कि यह दखना है कि उसकी कामत उचित है या नहा। खादी और ग्रामाद्यागकी हिमायत करत हुए गाधीजीन उचित कामतका और जीवन निर्वाह हा सक् इतन पारिश्रमिकका मिद्वान्त समाजक मामत रखा था। हमारे देगके कराडा मनुष्या पर जबरन लगाना हुई बकागी मिदानक उपाय साबने हुए गाधीजी इम सिद्धान्त पर पहुच य। किसी भी उपयोगी चीजका

कीमत इतनी तो हानी ही चाहिये जिसमें बनानेवालोंको इतना पारिधमिक मित्र जाये कि उमका निर्वाह अच्छी तरह हो सके।

पाल मावसका धम-मूल्यका सिद्धान्त

६ वनानिक समाजवादका प्रणता काल मावस पूजीपति मजदूरका कसे सापण करत ह इसकी छानवान करत हुए इसा सिद्धान्त पर मी वष पहल पढ़ा था। उसन इस सिद्धान्तको दूसरी तरहम रखा है। वह कहता है कि जिसो भी चीजकी कीमत उस चीजके बनानम लग हुए धम परमे आकी जाना चाहिये। इस धम मूल्यका सिद्धान्त (उपर थियरा आफ वल्यु) कहा जाता है। इस सिद्धान्तका काण मावसने जो लम्बा विवचन किया है उसमें मे मुख्य और मूल बात ही थोडम पता दी जाती है। उदाहरण काल मावसक लिय हुए ही लिये गये ह।

७ मान लीजिये कि गहूका विनिमय गहूके माय करना है। गहूका एक पाम मात्राको गहूका एक साम मात्रा समान मूल्यका माना जाय तो इस आधार पर गानाका विनिमय हो सकता है। एसा करनेके लिए इन दो चीजामें कोई समान तत्व होना चाहिये, त्रिमम हम इन दोनों चीजामें विनिमय मूल्य निर्दिष्ट कर सकें। एक समान तत्व तो इन दो चीजोंमें भीतर नो है। वन तत्व है इनकी उपयोगिताका। परंतु इन दो चीजोंकी उपयोगिता भिन्न प्रकारकी है। इसलिए इस तत्वका आधार पर दो चीजामें मूल्य नहीं आया जा सकता। इन दो चीजामें दूसरा एक समान तत्व है इनके उत्पादनमें लगे हुए धमका। एक इन गेहू पता करनेमें जितना धम लगे उतन ही धममें त्रिमने इन लाहा पता किया जा सकता हो उतन इन गहूका एक इन गहन साथ विनिमय हाना चाहिये। मान लीजिये कि एक इन गहू पता करनेमें मनुष्यका जितना धम लगता है उतन धममें दो इन गहू पदा हो सकता है ता एक इन गहूका मूल्य दो इन लाहेके बराबर हुआ और इस त्रिमम इन दो चीजामें विनिमय किया जाय ता वह गवका सापगत होगी।

८ विन्डुका माण और टाण प्राथमिक त्रिमिमामें समाजमें ऊपर बताया हुई स्थिति ही होगी आर विन्डुका सापण नग पर विनिमय होगा। आज भी गण उद्योग या सामोद्याकी उत्पादन-पद्धतिवाक समाजमें एक ध्यमि या कुम्भ अपना नयाव ना हूइ वन्डुका दूसरा मनुष्य या कुम्भकी बनाई हई वस्तुव साथ नमी आधार पर माना चीजव बनानमें लग हुए धमके मा ५-१४

आधार पर विनिमय करता है। ऐसे समाजमें किमा चीजका उत्पादन करनेमें लगा हुआ श्रम उस चीजका मूल्य ठहरानेके साधारण माप या गजका काम दे सकता है। परन्तु कारखानाकी उत्पादन-मदति और व्यापारिक पद्धति पर चम्नपाले समाजमें मजदूरकी बनाई हुई चीज उसके पास होनी ही नहीं। उसके विनिमयका काम इस मजदूरको करना ही नहीं पड़ता। उत्पादनका काम करनेवाले और विनिमयका काम करनेवाले व्यक्ति या मद्दल भिन्न हान ह। इसका सिवा चीजें पदा करनेमें अलग अलग प्रकारका काम करनेवाले अलग नौकरा सहयोग होता है। बहुतस मनष्योंने समुक्त श्रमका जा चीज बनती है उसमें जा कुछ विनिमय मूल्य होता है उम विनिमय मूल्यमें स विमान किना विनिमय मूल्य उत्पन्न किया यानी किमान श्रमका किना हिस्सा दिया यह तय करना कठिन होता है। क्योंकि श्रम भी अलग अलग प्रकारका होता है। कुछ अकुशल श्रम होता है कुछ कुशल श्रम होता है कुछ खेतरक रणका श्रम होता है और कुछ याजना बनानेका श्रम होता है।

९ इस समस्याका जो हल पुराणपयी अर्थशास्त्री बताते ह उसका उल्लेख ही ह का माक्स बनता है और सिद्ध करता है कि पुराणपयी अर्थशास्त्रिया द्वारा बताया हुआ ह मजदूरका शोषण करनेवाला है। पुराणपयी अर्थशास्त्री चीजके उत्पादनमें ग हुए श्रमका महत्त्व कच्चे माल और मशीना औजार मकाना वगैरा साधनाएँ बराबर ही गिनते ह। जस कच्चे मालकी कीमत और साधनाकी घिसाई उत्पादन-सचमें गिनी जानी है वस ही श्रमकी कामत भी व उत्पादन-सचमें गिनते ह। व कहते ह कि श्रमको भी दूसरी चीजकी तरह बाजारका बाज मानना चाहिय और उसका कामत उसके उत्पादन-सच परसे आवी जानी चाहिय। इसलिए मजदूरका टिके रहन और काम कर सनकी स्थितिमें जीनेके लिए जो खच होता है उतना पारिश्रमिक मजदूरका लेना चाहिये। उत्पादनक काममें कुशल बानीगर और विधान लग हा ता चूकि उहान कुशलता और बान प्राप्त करनेमें अधिक समय गगाया है और उसके लिए उहान अधिक परा खच किया है इसलिए उनका कामकी कामत ज्यादा मानी जानी चाहिय। और इस तरह कच्चा माल साधन श्रम आदिना सारा सच लगा कर चीजकी कीमत यदि इस सचसे ज्यादा भिडे ता उस प्ररधनकी याजना गिकत दूरलेगी चाजनी माग कितना हगी इसका जगल लगानका कुशलता, माग बाफी न हा ता माग पदा करनेके लिए बा जानवाली सटपट

और चीजक उत्पादनमें किया गया माहस इन सबके बदलेके रूपमें उसका नफा मानना चाहिये।

१० माकम इस नफेका उचित या 'यावपूर्ण' नहीं मानता परन्तु अनायास मिला हुआ मानता है और इस पूजापति प्रबंधका द्वारा किया हुआ मजदूराका गायण कहता है। उसकी विचारसरणाके अनुसार नफे जसी काइ चीज ही नहीं होनी चाहिये। वह कहता है कि उत्पादनके क्षणमें प्रबंधकने सबकुछ कोई हिस्सा लिखा हो तो अथ लागानी तरह उसे भी पारिश्रमिक मिलना चाहिये। वह बताता है कि इस नफेका कारण तो दूसरा ही है।

११ माकसकी दलील यह है कि श्रम बच्च माल या दूसरे साधनाकी तरह काई 'ब्रट' वस्तु नहीं है। अच्छे माक और साधनामें तो आप एक निश्चित परिणाम ही प्राप्त कर सकते हैं जब कि मजदूरका श्रम खरीदनेके बाद आप उसका अधिक उपयोग भी कर सकते हैं और बाड़ा उपयोग भी कर सकते हैं। पूजापति प्रबंधक श्रमकी जो वामत चुकाना है उसमें अधिक काम मजदूरके बराबर उसका श्रमसे अधिक उत्पादन कर ले तो उस उतना नफा होगा और कम काम लें तो उस उतना नुकसान रहेगा। परन्तु प्रबंधक मजदूरके उन्हें लिये गये पारिश्रमिकसे ज्यादा काम करा लेनेकी चिन्ता रखना ही है। उत्पादनमें सब साधन उसका हाथमें होते हैं और मजदूरकी सख्या अधिक होनेके कारण उन्हें काम पानकी बड़ा शक्ति है। इसलिए प्रबंधक मजदूरके अपना शत पर काम करा सकता है। मजदूरको वह जितना पारिश्रमिक देता है उससे अधिक मजदूरके काममें वह उत्पन्न कर ही नहीं सकता है। मजदूरके श्रमकी सच्चा कीमत इस बात परस नहीं आनी जा सकती कि उस मुसिलस अपना जीवन निर्वाह करनेके लिए कितना चाहिये यह कीमत इस बात परस आना चाहिये कि उसका श्रमसे उत्पन्न हद वस्तुकी बाजारमें क्या काममें आता है। परन्तु पूजापति तो मजदूरके श्रमका मुसिलसे बननेवाला जीवन निर्वाहकी कीमत पर ध्यान देना है और उसे बाजारकी वामत तो बाजारमें हमसे अधिक मिलती है। यह अधिक कीमत उस निम्न अधिमात्रक मिलता है। माकसके अनुसार कहा जायगा कि पूजापतिने उतना मजदूरका गायण किया है।

१२ पूजापति यह गायण किस तरह करता है श्रमके लिए माकसका लिया हुआ उदाहरण ही यहाँ देंगे। मान लीजिये कि १० रतन रत्नी मूल बात घाना है। रत्नीकी कीमत २५ डालर पर डेढ़ और बाजारकी बाजारमें घानाका बगवानी का पिसाई हो उसका वामत पचास सण घानी ५ डालर मानें।

इस तरह बच्चे मालकी कीमत का जोर मंगीना वगैराका पिसाईने मिश्रावर कुल ५ डालर हागे। मान लीजिय कि मंगीन पर १३ रतल मूत प्रतिघण्टा बतता है। इस तरह दस रतल मूत धाननमें $(६ \times १३ = १०)$ ६ घण्टा गत ह।

१३ मावसन दूसरा अनुगाय यह उगाया है कि कातनवाठ मजदूरका निवाह ७५ सेण्टम चल जाता है। इसलिए उसका श्रमका उत्पादन-खच ७५ सेण्ट मानकर उसे इतना पारिश्रमिा दिया जाना है। २३ डालर रुईकी कीमत ५० सेण्ट तबुए वगैराकी धिगाईने और ७५ सण्ट कातनवालेके पारिश्रमिकके — इस तरह कुठ मिश्रावर १० रतल मूतका उत्पादन-खच ३७५ डाडर और एक रतल मूतका ३७३ गण्ट हाता है। अगर पूजापति इसी भाव पर मूत बच ता उमके हाथ कुछ भी न लगगा। लेकिन वह इतना भोग नहा होता कि उगावो मूत मथ्या करनकी सवावृत्तिसे अपनी पूजा इस काममें लगाय और मूत बतवान जोर बचनकी यज्ञटमें पर। इसलिए वह तो नफा कामानका प्रयत्न करता ही है। उसन ता उस कातनवाठ मजदूरके सारे तिनके श्रमको खरीद लिया है। इसलिए वह उससे जितन अधिक घण्टा काम करा सकता है करता है। मान लीजिय वह १२ घट काम करता है। तो उत्तन समयमें $१२ \times १३ = २०$ रतल मूत मंगीन पर बतवाया जा सकता है। २० रतल रुईकी कीमत ५ डालर तबुए मंगीन वगैराकी पिसाई १ डालर और चूकि २ रतल मूत वह ७५ सटके पारिश्रमिकमें ही कतवा जाता है इसलिए पारिश्रमिकक ७५ सेट मिलकर कुठ ६७५ डालरमें पूजापतिको २० रतल मूत मिलता है। जोर उसे वह ३७३ सेट प्रति रतलके भावसे यानी कुल ७५ डाडरमें बचता है। इस तरह एक मजदूरके काममे उग ७५ सट अतिरिक्त मिलते ह। २ रतल मूतका उत्पादन-खच ६७५ डाडर था। उसका बजाय पूजापतिन उसके ७५० डालर उपजाय। इस अतिरिक्त कीमतको बाल माक्स अतिरिक्त मूल्य (सप्लस वेल्थ) कहता है।

१४ या देखें तो हमन रुईकी कीमत ५ डाडर गिनी है इसमें रुईका उत्पादक यदि पूजापति हा तो इसमें उस अतिरिक्त मूल्य मिला ही हागा। मान लीजिय कि २ रतल रुई पना करनम ४० घटका श्रम गता है। तो पूजापति मजदूरका १२ घटके कामक ७५ सेटक हिसाबस $\frac{४० \times ७५}{१२} = २५०$ सट यानी २॥ डालर देगा। इसक सिवा जमीनका

भाडा और औजारो वगैराके खचके १५० सेट मान ल तो कुल खच ४ डालर होता है। उसका वह ५ डाडर पदा करता है। इस तरह इसमें भी

उसे १ डालरका अतिरिक्त मूल्य मिला ही होगा। बात यह है कि दुनियामें इस समय जितना सम्पत्ति है— उत्पादनके साधन कारखानाके तथा रहनके मकान, साज-सामान पहनने-ओढनेके कपडे कच्चा माल— वह सब किसान किमी समय किय गये श्रमका ही फल है। परन्तु मजदूरको अपने निवाहके लिए जोर धरवार चलानेके लिए प्रतिदिन जितने घटे श्रम करना चाहिये उससे अधिक घट उससे काम करवाकर या दूसरे गन्दोम जितने घट उससे काम करवाया हो उतने घटके उचित पारिश्रमिकको कम देकर और अनिश्चित आमदनी पूजीपतिने बटार कर सम्पत्ति या पूजीके रूपमें अपने अधिकारमें कर रखी है। इसीलिए जो उत्पादनके सब तरहके साधन और दूसरी अनक प्रकारकी सम्पत्ति बाडेसे पूजीपतियाके हाथमें है जोर मजदूरके काम अपने हाथ-परो और श्रम करनेका शक्तिके सिवा कुछ भी नहीं रहा है। रोज जैसे जैसे मजदूर श्रम करता जाता है वैसे वैसे उसका शोषण होता जाता है क्योंकि उसका उत्पन्न किया हुआ अतिरिक्त मूल्य पूजीपति हूटप करना जाता है।

१५ माक्सक इन सिद्धांतके बारेमें एक बात ध्यानमें रखनी चाहिये। यह इस बातका स्पष्टता नहीं करता कि इस सिद्धांतमें आजकलका अर्थ व्यवस्थाके अनुसार बाजार-कीमत कस निश्चिन हाती है। क्योंकि चीजको उत्पन्न करनेमें लग हुए श्रम परी चीजकी कीमत आकी जानी चाहिये इस सिद्धान्तके अनुसार ता उपरोक्त उदाहरणमें २० रतल मूतकी कीमत पौत्र मान डालर ही हानी चाहिये थी। परन्तु माक्स चारू बाजार-कीमतकी स्पष्टता नहीं करता। वह ता उचित कीमतका सिद्धान्त पेश करके इतना ही बतनाता है कि पूजीपति किस तरह मजदूरका शोषण करता है। उसके बट अनुसार ता मजदूरसे कम घट काम लेना चाहिये। उसके श्रमकी कीमतके जितना उत्पादन जितने घटामें हो सब उनसे नीचे घट उससे काम करना चाहिये जबवा उससे अधिक घट काम कराया जाय ता जो अतिरिक्त आय होनी है वा पूजापतिका नहीं मिलनी चाहिये या ता वह मजदूरका मिशनी चाहिये अथवा पूजीके रूपमें या कच्चे रूपमें मावजनिक शक्तिके लिए उसका उपयोग हाता चाहिये।

१६ माक्सको एक सिद्धान्तके विचारके कुछ आपत्तिया उगाता जाता है। अब हम उन पर विचार करे। एक तो यह कहा जाता है कि इसमें श्रमका कोई निश्चित अर्थ नहीं किया गया है। मानसिक अथवा बौद्धिक श्रम और शारीरिक श्रम इन दोनोंकी तुलना किस तरह का जाय? बौद्धिक श्रममें नी

बढिया घटिया जैसे कई प्रकार होते हैं। शरीर-श्रम भी अनुगत मनुष्यता ही सक्ता है तुगत मनुष्यता हो सक्ता है शरीरग बलवान मनुष्यता ही सक्ता है या निबल मनुष्यता हो सक्ता है। श्रमके इन भिन्न भिन्न प्रकारकी कीमत किस तरह आकी जाय ? सिर्फ कामके घटा परम कामकी कीमतका माप नहीं लगाया जा सक्ता। कोई मनुष्य कम घटे श्रम करके भी समाजके लिए बहुत उपयोगी काम कर सक्ता है और कोई मनुष्य अधिक घटे काम करके भी गायक उपयोगी काम न कर सके। दूसरी आपत्ति यह है कि इन सिद्धांतमें गलत ढंगसे काममें लिये गए श्रमका कुछ भी विचार नहीं किया गया है। मान लीजिये कि एक कारखाना खड़ा किया गया लेकिन योजना और अंजाबकी भूलसे वह कारखाना बरतार मात्रित हुआ तो इसमें खर्च हुए श्रमका क्या किया जाय ? तीसरी आपत्ति यह है कि चीज तयार होनेके बाद पणन बन्तु ज्ञानके कारण या उसने उपयोगके बारेमें लोगोंने विचार बल्लनके कारण उस चीजकी माग न रहे या बहुत घट जाय यानी उस चीजका उपयोग मूल्य कम हो जाय तो क्या किया जाय ?

१७ आज एसी कई हानि हैं ता उम पूरा करनेकी जिम्मेदारी पूजापति या प्रबन्धक जपन सिर पर ले लना है और इसीलिए वह अपनका नफका अधिकारी मागता है। उकिन पूजापतियाकी यह जिम्मेदारी समाजकी भारी पड सकती है। क्योंकि उह हानि तो कभी-कभार ही होती होगी परन्तु कुछ मित्राकर नफा ही अधिक होता है और उस अधिक नफकी कोई सामा नहा हाती। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण इस छाटस बगने पास पूजा और सपत्तिका इतनी अधिक मात्राम एकन हो जाना है।

१८ और ऊपर जो आपत्तिया बताई गई हैं वे ता आजकलके पूजापती अर्थोत्पादनमें ही पदा होती हैं। माक्सकी विचारसरणीके अनुसार अर्थोत्पादन यकिनयाके अपने लाभके लिए नहीं परन्तु समाजकी आवश्यकतायें पूरी करनेके लिए होना चाहिये। पहले तो सारे उत्पादनको योजनापूर्वक व्यवस्थित बनाकर नियंत्रित करना चाहिये। समाजकी सारी आवश्यकताआका ठीक ठीक अंदाज लगाकर उनके महत्त्वके अनुसार श्रमका उनके उत्पादनकी योजना तयार करनी चाहिये। इस तरह पहलेसे योजना बनाकर तयारी की हुई चीजोकी मागके बढन या घटनेका प्रश्न ही पदा नहीं होता। जो चीज तयार हो उस चीजके लिए और उसके मूल्यके लिए सारे समाजकी जिम्मेदारी होगी। इसलिए भन्से निक्कमी या कम उपयोगकी चीज तयार हो गई हो तो उसकी हानि सारा समाज भुगत लेगा। इन व्यवस्थायें उत्पादन अपन नफ या स्वाथके लिए

काम नही करत बल्कि समाजके विमोक्षार्थ योग्य द्वारा निर्दिष्ट की हुई याजनाके अनुसार सारे समाजके लिए काम करने ह।

१९ अलग अलग प्रकारके श्रमकी कामत आननमें पला हानेवाला कठिनायामा हल माकम यह बनाना है कि समाजकी नई रचनामें किसी चीजके उत्पादनके काममें सब लोग सब आपस आपस स्वार्थके लिए सींचतान करनेवाले अलग अलग मजदूर व्यक्ति नही होंगे परन्तु सारे समाजका मजदूरके लिए एक-दूसरेके साथ मन्थयोगम काम करनेवाला एक विराट् शरीर मजदूर-समुदाय होगा। मजदूर व्यक्ति इस विराट् मजदूर-समुदायके विभिन्न अवयवका जन्म होंगे। तयार की हुई चीजम जा मूल्य रहना है वह इस विराट् मजदूर समाजके मन्थयोगी श्रमका सामुदायिक फल होगा इसलिए इस मूल्यका या दूसरे शब्दोंमें कहें तो उत्पादनके पारिथमिकको यह मजदूर समाज अपने अगभूत मजदूरोंमें वराजरीम या उनकी आवश्यकताके अनुसार बांट देगा। दुनियामें आज तक अस्तित्वमें आई हुई सारी उत्पादन-पद्धतियाका संपूर्ण इतिहास जाच करे काल माकमन यह सार निकाला है कि अब समाज इस ध्यय पर पहुचनेवाला है कि सारे समाजके लिए आवश्यक सम्पत्तिका भण्डार उत्पन्न करनेके लिए सब अपनी अपनी शक्तिके अनुसार काम करे और सब अपनी अपनी आवश्यकताके अनुसार लें।

२० परन्तु जब तक समाज इस ध्यय तक नहीं पहुचता तब तक क्या हा? अथवा समाजको इस ध्यय तक कैसे पहुचना चाहिये? हम आगे दलेंगे कि काल माकमका उपाय हिंसक शक्तिके द्वारा राज्यसत्ताका हाथमें लाने उमके मारफत बयविके पूजीरा नाग करनेवाला है। उमके बचनका एक उपाय समाजका गांधीजीने भी बताया ह। इस पर हम आगे चलकर विचार करेंगे।

द्रव्य

यस्तु विनिमय

१ समाजमें वय विभागका सिद्धान्त जसे तम परता जाता है वसे वस एक आत्मी या कुटुम्बकी बनाई हुई चीजारा दूसराकी बनाई हुई चीजाके माय विनिमय करनेके अवसर उत्पन्न होते हैं। एत वस्तुके बदलेमें दूसरी वस्तु देकर अन्त-अन्त किया जाय ता उग वस्तु विनिमय कहते हैं। आज भी प्राथमिक वय दाममें रहनेवाले लोगोमें यस्तु विनिमयके आधार पर अपनी आवश्यकताकी वस्तुआका एव-दूगरके साथ अन्त-अन्त हाता है।

२ परन्तु एस सीध वस्तु विनिमयमें कुछ कठिनाईया होती हैं। पहली कठिनाई सौतेका मरु बटानकी हाती है। मान लीजिय कि किसी कुटुम्बके पास अनाजका सग्रह अपनी आवश्यकतासे अधिक है और उस कपडकी आवश्यकता है। इस कुटुम्बका दूसरा एसा कुटुम्ब मित्र जाना चाहिय जिसके पास कपडा अधिक है और जिसे अनाजकी ही आवश्यकता हो। किसी कुटुम्बके पास कपडा अधिक हो लकिन अनाज उतना ही हो जितना कि उसे चाहिय तो उसका मौत अधिक अनाजवाल कुटुम्बके साथ नहीं पटगा। यह भी हो सकता है कि एस अधिक कपडवाल कुटुम्बका जताक लिए चमडकी ही आवश्यकता हो। एस्तिए वस्तु विनिमयवाल समाजमें अपन पासकी अतिरिक्त वस्तुके बदलम अपनी आवश्यकताका ही वस्तु जुटानके लिए बहुत समय तक प्रतीक्षा करनी पडती है। या सीधा विनिमय न करके बीचमें दूसरे आदमियोको मित्राया जाय तभी इस तरह बदला-बदली हो सकती है कि सबकी आवश्यकतायें पूरी हो सकें। एस व्यवहारमें दूसरी कठिनाई अदक-बदक की जानवाली वस्तुओकी कीमत ठहरानकी होता है। यह निश्चय करनकी कठिनाई सत्ता बनी ही रहती है कि कितन अनाजक बदलमें कितना कपडा लिया जाय कितन कपडके बदलमें कितना चमडा लिया अथवा लिया जाय या कितन चमडके बदलेमें लकड़ीकी कौनसी वस्तुका बदला किया जाय। तासरी कठिनाई अन्त-अन्त की जानवाली वस्तुआका विभाग करनकी है। अनाज जसी वस्तुआके तो विभाग किय जा सकते हैं। लकिन धोती सात सित्र हुए कपड या जूते हा या लकड़ीकी बना हुई कोई

वस्तु हो, तो उस पूरे वस्तुका हा अदम्य-बदला हो सकता है। संभव है कि जिनमें से किसी वस्तुको तयार करनेमें अधिक श्रम करना पड़ा हो और कोई वस्तु कम श्रमसे बनी हो। धोती तयार करनेमें चार टिका लग जाते हैं और जूते बनानेमें दो दिन लगे जाते हैं। एसी वस्तुआवा एक-दूसरेके साथ बदला बदला करनेमें इस सिद्धान्तका प्रकाश करना स्वाभाविक रूपमें ही बड़ा कठिन जाना है कि दोनों पक्षाको समान लाभ मिले।

द्रव्यकी शोध

३ इन सब कठिनाय्यासे बचनेके लिए बहुत पुराने जमानसे ही विनिमयके एक सामान्य साधनके रूपमें और विनिमयकी वस्तुआकी कामत ठहरानके एक निश्चित मापके रूपमें काइ एक वस्तु निर्धारित करनेकी बात मनुष्यका सूची है। अलग अलग देशों और अलग अलग समयमें विनिमयके साधनके रूपमें और कीमत ठहरानेके एक मापके रूपमें अलग अलग वस्तुआका उपयोग हुआ पाया जाता है। विनिमयके साधनके रूपमें पसल का इस्तेमाल वस्तुको हम द्रव्य कहें तो गाय वगैरे भेड़ बकरी चमड़ा नीप कौड़ी हाथीपात घास यागाम, नारियल आदि कई वस्तुएँ अलग अलग देशोंमें और समयमें द्रव्यके रूपमें उपयोग की गईं मालूम होता है। पर इममें भी बड़ा कठिनाय्या तो बनी ही रहती थी। गाय बल या भेड़-बकरा सब एक ही प्रकारका जोर एकस ही गुणावाली नहीं हो सकती। इसलिए जिस वस्तुके जरिये दूसरा सब वस्तुआकी कामत निश्चित करनी हो उसी वस्तुकी कीमत ठहरानका प्रश्न उत्पन्न होता है। साथ ही एग मर जाता है अगल सब जाता है और नारियल जमा चीज बजानमें जतना भार होना है कि एक जगहमें दूसरी जगह उठाकर उठे जायें जाना कठिन होता है। इन सब कठिनाय्याका दूर करनेवाली वस्तुकी खोज करते करते जोर प्रयाग करते करते दुनियाँ सब जगहका मान चाँगीका द्रव्यके रूपमें उपयोग करना जतिब अनुकूल मालूम हुआ है।

अच्छे द्रव्यके विनिमय लक्षण

४ मान चाँगीका नाम बनाय हुए विनिमय गुण हैं जिनके कारण दुनियाँमें सब जगह उनका द्रव्यके रूपमें उपयोग हुआ है।

(१) ये घातुएँ अपा पाम करनेवाले सब जगह तयार होत हैं। दूसरा वस्तुआकी तुलनामें ये घातुएँ निराल होनेके कारण घात कीमती मानी जाता है। इनकी चमक और शनकारके कारण पहनानेके रूपमें भा लपारा इनकी तरफ सब आकर्षण रहता है।

(२) इन धातुओं को एक-दूसरे से जगह ले जाना बड़ा आसान है। गाड़ बजों में और छोटे कामों में सोने चालाके बहुत मूल्य समायोज्य होने के कारण एक जगह से दूसरी जगह लाना और ले जाना हो ता भी ये धातुएँ आसानी से जाई जा सकती हैं। इनका मानायात-मूल्य बहुत कम आमतौर पर अन्य अन्य जगह पर इनके भावमें बहुत फर्क पड़ता है। यह दूसरी बात है कि आज हम सोने चालाके सिक्के जवमें टाँकर धूमना या साथ रखकर यात्रा करना पसन्द नही करते। आज तो उन-दैनिकी ज्वालातर काम बागजरी नाटयों में हाना है। आज तक ता उन बागजरी नाटयों पीछे सोने चादीका बल रहता था और उन बागजरी नाटयों के दिवाने ही जव जरूरत हो सोने चादीके सिक्के मित्र जानका विश्वास किया जाता था। परन्तु प्रथम महायुद्ध (१९१४-१८) के दिनामें और उसके बाद कुछ वर्षों तक तथा दूसरे महायुद्ध के दिनामें ऐसी नीयत आ गई थी कि जिनके पास यह बागजरी द्रव्य हा वे उन चालाके से उस सोने चालाके सिक्के में नही भुना सकते थे।

(३) टिकाऊपन इन धातुओं का बहुत बड़ा गुण है। इनके सिक्के हाया हाय फिर बरसा तक पेटा में बन्द रख जायें या गाड़ कर जमीन में रख जायें ता भी जल्दी घिसन नही और बिगड़ते नही। इन्हें जग नही लगता और दूसरी धातुओं की तुलना में घिसाई भी उनकी कम होती है। दो दो हजार वर्षों के सोने चालाके सिक्के आज भी जवके तम मिल जाते हैं। सोने के पीछे के लिए यह हिसाब लगाया गया है कि बाजार में माधारणतः फिरते रहनेवाले पीछे के सिक्के को पूरी तरह घिसन में आने हजार वर्ष लगेंगे। चाली सोने से अधिक जरूर घिसती है फिर भी वह काफी समय टिकती है और किता तरहका बिगाड़ तो उममें होता हा नही।

(४) इन धातुओं की जाति और गुणों में कोई फर्क नही पडता। जिन वस्तुओं का द्रव्यके रूपमें उपयोग करना होता है वे उनका तरहकी हा तो कठिनाई पडती है। उदाहरणके लिए गहना या चावल कई तरहके होते हैं और गाय बल सब एकसा नही होते। लेकिन गहना और गहना चाली तो दुनिया में वही भी जाइय एक ही प्रकारके मिलते हैं। उनसे बस गुणके कारण अलग अलग देशके सिक्के में रहे गहना सोने या चालीकी मात्रा निर्दिष्ट रूपसे जान लनक बाद एक देशके सिक्के की कीमत की तुलना दूसरे देशके सिक्के के साथ की जा सकती है।

(५) सोने चालीके बितन ही छोटे छोटे टुकड़े किय जाय तो भी उनकी कीमत में कोई फर्क नही पडता। इसलिए अन्य अलग बजरी और आकारके

द्रव्य

छोटी बड़ी कीमतके सिक्के टांठे जा सकते हैं और इन अलग अलग कीमतके सिक्कोके द्वारा कम-अधिक मूल्यकी चीजाकी कीमत चुकाई जा सकती है। साथ ही इन धातुआके छोटे छोटे टुकडाको गलाकर आसानीसे और बिना किसी नुकसानके मिलाया जा सकता है। हीरे माती वगैरें छोटे और बज्रमें कम होने पर भी काफी कीमता हात है। परन्तु उनके छोट टुकड किये जाय तो वे बेकार हो जाते हैं।

(६) इन धातुआको बहुत आसानीसे परखा जा सकता है। द्रव्यक रूपम काम आनेवाली वस्तु ऐसी होनी चाहिये जिसके खरी या छोटी हानकी जाच आसानीसे हो सके नहीं ता जाली सिक्के चन्ने लगते हैं। सान बादीके सिक्के अपने रंग चमक और झनकारसे पौरन पहचाने जा सकते हैं कि ये खरे हैं या खोटे।

(७) दूसरी वस्तुआकी तुलनाम इन धातुआने मूल्यम अतिन स्थिरता पाई जाती है। जिस वस्तुके द्वारा दूसरी सब वस्तुआके मूल्यका माप लगाया जाता है उस वस्तुके मूल्यमें ही यत् स्थिरता न हो तो बड़ा कठिनाई पदा होती है। आज सब मनष्याकी कमाई द्रव्यके रूपमें होती है। जो काम बचत कर सकते हैं वे इसलिए द्रव्य बचाकर रखते हैं कि भविष्यमें जरूरत पडन पर वह काम आयगा। अब यदि आग चलकर द्रव्यके मूल्यम ही बड़ा फलक पड जाय तो या तो उस आग्नीको बिना महनतके बड़ा नफा हो जाये या बिना अपराधके भारी नुकसान हो जाये। अब सब वस्तुआकी कीमत स्थान और समयके अनुसार काफी बदलती हुई पाई जाती है। परन्तु सानकी कीमतमें काफी स्थिरता रहती है। इसका कारण यह है कि कितना सोना आज तक उत्पन्न हो चुका है उतना ता मौजूद है और हर साल कितना नया सोना उत्पन्न होता है उसकी मात्रा पहलेसे मौजूद संचित भण्डारकी तुलनामें इतनी कम हाती है और उस उत्पन्न करनेमें इतना अधिक खर्च लगता है कि सोनेके चार भाव पर बड़ी हुई मात्राका कोई काम अमर नहीं हो पाता। जो थोडामा असर होता है वह बहुत धार धीरे और लम्बे समयमें हाता है। चाँदीकी यात बिल्कुल सान जसी नहा है। सानका तुलनामें चाँदीके भावम ज्यादा उच्च-मुयल होता है। केवल दूसरी वस्तुआकी तुलनामें ता यह उच्च-मुयल यादी ही होती है।

द्रव्यक लाभ

५ बाजारमें सब वस्तुआ और मवाआके वगैरें द्रव्य छूट्य स्वोत्तर किया जाता है इसीलिए समाजमें कामका बटवारा बने हर तम मभव हुआ

है। हर आत्मीय ऋण केवल वस्तुएँ बताता है या दूसरे काम करता है और द्रव्य जरिये अपना आवश्यकताका वस्तुएँ तराता है। जिसका पाप द्रव्य होता है उसमें भरसका रहना है कि उसका आवश्यकताका कोई भा वस्तु द्रव्यमिल सकता है।

६ विनिमयकी प्रत्यक्ष वस्तुकी कीमत द्रव्यकी मूल्य निश्चिन् रूपमें आता जा सकता है। द्रव्यका माप या गणना हर वस्तुका मूल्यकी एक-दूसरेके साथ तुलना का जानी है। इसी कारणसे विनिमयका व्यवहार जगद्प्राणी बन सकता है। परन्तु साथ ही यह भा ध्यानमें रखना चाहिये कि द्रव्यका द्वारा वस्तुआका मूल्यांकन सदा सच्चा और वायपूण ही नहीं होता। दो वस्तुआकी कीमत द्रव्यके रूपमें एकही जानी जाती है तो भी मनुष्यके लिए उपयोगी होना और उस सूत्री करनेका शक्ति दाना वस्तुआम एकसो नही पाई जाती। यह भी नही क्या ता सकता कि दो देगाके बीच द्रव्यके रूपमें एकही कीमतका आयात निर्यात होता हो तो उससे दाना देगाके बीच सच्ची संपत्तिका एकमा अन्त-बन्त होता है। कोई दाना कच्चा माल बाहर भेज कर विदेशोंसे तयार मात्र उतनी ही कीमतका मगाता है तो भी वह देगा अधिकतर नुकसानमें ही रहता है।

७ द्रव्यका कारण लक्ष्मणका व्यवहार बहुत आसान हो गया है और बन भी गया है। अपने बचाकर रख हुए द्रव्यका उत्पादक काममें उपयोग करना किसीका न आता हो या बसा करनेकी उमे पुरस्तर न हो तो उस आत्मीके द्रव्यका उपयोग दूसरा कुशल आत्मी उत्पादक काममें कर सकता है। इसमें स्पष्ट लाभ हात हुए भी एक बनी हानि यह है कि प्रवचक या उद्योगपति ऐसे बहुतसे लोगोंने द्रव्यका उपयोग अपनी उत्पादक प्रवृत्तियोंमें करके उनके द्वारा समाजका शोषण कर सकता है।

८ अमने प्रश्न तो यह है कि मनुष्यका बचत कर करके द्रव्य इकट्ठा करना ही उचित है या नहीं? फिर भी द्रव्यके कारण बड़ी मात्रामें द्रव्यका संचय करना संभव तो हुआ ही है। द्रव्यकी खराद शक्तिम एकलम बन फलदायी नहीं होने। इसलिए उसका संग्रह करनेमें कोई हानि नहीं होती। आज हर समाजमें कुछ लोग जो बड़ी बड़ी जायतानोंके स्वामी बन रहे हैं वह द्रव्य कारण ही संभव हुआ है। द्रव्यके कारण ही समाजमें एक अनन्तम आत्मीय वग पत्ता हो सकता है। एक तरहसे कहें तो जिसका पाप द्रव्य हाता है उसका अपनी आवश्यकताकी वस्तुआ और सवाजाके लिए समाज पर अपना शक्ति का अधिकार भिन्न शक्ति है। द्रव्यका आत्मीको

जिस समय और जिस रूपमें समाजकी सेवा चाहिये उमा समय और उमा रूपमें वह समाजकी सेवाए प्राप्त कर सकता है।

• लकिन यह तहां कहा जा सकता कि द्रव्यरूप एम जो कुछ खराब अमर होते ह वे द्रव्यरूप भीतर ही रहते ह। अथ-व्यवहारके लिए द्रव्य एक प्रबल साधन है। उसके कारण अधिक उन्नति हो सकी है। परन्तु चूकि वह एक प्रबल साधन है इसलिए उसके अनिष्ट परिणाम भी होने ही प्रबल आय ह। लेकिन ये बुराइया द्रव्यका नह। उसने उपयोगकी माना जायगी। अथ-व्यवहारका सफल बनानेका उसका गुण स्वीकार करने उसने दुाणासे किस तरह बचा जाय यह खोज करना अथ-गाम्नीका काम है। अगले प्रकरणाम हम उसका विचार करेग।

नकद द्रव्य और प्रतिनिधि द्रव्य

१० जब तक हमने द्रव्यका जो बणन किया है वह नकद द्रव्यका — मान गानक मिककाका ध्यानमें रखकर ही किया है। परन्तु आजके जमानमें तो नोट टुडिया और चक ठीक मोन चादीके मिकका जसा हा काम करते ह। हमारे पास पचास रुपये नाट हा ता हम ऐसा ही कहते ह कि हमारे पास पचास रुपय ह। क्याकि हम भरामा है कि जम हमें सिक्काके जरिये आवश्यकताकी वस्तुए बाजारसे मित्र सकती ह वसे हा नाटाक जरिय भी मित्र सकती। नाट मिककाका प्रतिनिधि ह और यह निर्धारित हा चुका ह कि व्यवहारमें मिकका भार नाट पर ही कामत पर चरगा। टुडी और चकका आधार उनसे गिननागणी माय पर रहता है। उनके गिनन वाटे पर विश्वास हो ता उन-गाम उनका भी काफी उपयोग हाता है। फिर नी जितनी पन्तायलन बाजारसे नोट चरत ह उतना बहुतायतना चक और टुडी नहा चरती। एम मिककाका नकद द्रव्य कहूग और नाटा आणिका प्रतिनिधि द्रव्य कहेंग, क्याकि नाट आणि भूय या नकद द्रव्यक प्रतिनिधि ह।

सिक्के और टकसाल

११ मोने चाण्डीरा द्रव्यरूपमें उपयोग हात ग्या तब गुरूमें ता टा अगुठी और बडे जाणिक रूपमें ही हात ग्या। एम पागगाव यहा जाकर उसका कस निरखान और बजन पगकर उसे स्वीकार करत थ। लकिन एम पद्धतिमें हर समय पागगाव यहा जानका कठिनाई ता रहनी हा था। एसाके हर गाममें सरकारने टकसालमें अपन मिकक टालना शुरू किया। हम मिककाकी यह व्याख्या कर सकते ह कि घातुके जिस टुकड़ेके पृष्ठभाग पर पना

हुई छाप परस उमका वजन, फम और कीमत जाना जा सके वह सिक्का है। सिक्का ढालनकी यह कला दिन दिन प्रगतिमान जाता चली गई है। बहुत पुरान सिक्का इतनी कुशाग्रताम ले हूए गही मात्रम हाने कि जिससे उनसे वजनमें कोई फरक न कर सके। हमारे यहां पहले जो बागाणा (गायकवाणी) रुपया चाना था उसकी ठीक ठीक परस पगवर आत्मी ही कर सके थे। लेकिन हालमें सिक्का ढालनकी कलाका धुब विकास हुआ है। सिक्के ढालनमें नीके सिक्की बाजा पर बिगप ध्यान दिया जाता है

(१) इसकी बहुत सावधानी रखी जाती है कि दूसराके लिए नकली सिक्के ढालना बहुत कठिन हो जाय। सिक्केकी धातुमें थोड़ी मिलावट इसीलिए की जाती है कि उसका झनकार बिगिष्ट तरहकी ही हो और सिक्का जल्दी धिस न पाय। छापक भातर एसी गुप्त निगानिया रखी जाता है जिनका दूसराको जल्दी पता न लग। अतना होने पर भी जाली सिक्काके अपराध ता ही रहत ह। यह बताता है कि एस सिक्के बनानका काम बहुत कठिन है जिनकी नकल न हो सके।

(२) सिक्केमें से कोई आत्मी बदमाशी करके धातु न काट सक, इसके लिए सिक्का बिलकुल गोर रखा जाता है और उसकी किनारी पर खडू कर दिय जात ह।

(३) यह भी प्रयत्न किया जाता है कि सिक्का राजा और प्रजाके इतिहास और कला-कौशलका स्मारक बन। पुरान सिक्को परसे पुरातत्व वेत्ता इतिहासका साधन कर सकत ह।

१२ ऊपर सिक्केकी जो व्याख्या दी गई है उसके अनुसार तो हर खरे सिक्कमें उस पर बताई हुई कीमतका सोना या चादी होना ही चाहिय। वह सिक्का गगया जाय तो उसमें से सिक्के पर बताई गई कीमतका सोना या चादी मिलना चाहिय। फिर भी मध्यकालमें यूरोपक बहुतस राजाओन सिक्के ढालनके अपने अधिकारका दुरुपयोग करके हकी कीमतक सिक्के ढाले और अनुचित लाभ उठाया। यहां यह उल्लेखनीय है कि भारतके राजाओन कभा एसा प्रयत्न नहीं किया। लेकिन सन १८९३ के बाद हमारे देशमें अग्रज सरकारन हकी कीमतका रुपया ढालना गुरू किया और उसके जसली मूल्यमें उत्तरोत्तर कमी करके काम उठाया। जो सरकार अपन सिक्केको प्रामाणिक या खरा रखना चाहती है वह कोई भी आत्मी माना या चादी केर टकसाठमें जाय तो उसके बराबर सान चाकीके सिक्का ढाल देनी है। कुछ सरकारें सिक्के ढाल देनेके बदलमें टकसाठक खचक

अनुसार याडा महनताना लनी ह और कुठ सरकारें विलुप्त मन्तनाना नही लती । हमारे दाम सन् १८२५ म १८९३ तक बबई और मल्कतकर टकमागमें हम जितनी चादी ने जान उतनी चांगवे रुपये महनताना लकर ढाङ्ग दिय जात थे । सन् १८९३ स य दोना टकसां लामावे गिण बन् कर दी गई ह । बहा सिफ सरकारवे गिण सिक्क ढाल जात । मन्तनमें प्रथम महायद्धवे वर्षिका लाल कर सन १९२५ तक काइ भी आत्मा साना लकर जाता तो उमे उन्न सोनकी कीमतक पीछे महनताना लिय बिना ढाङ्ग लिये जाने थे । टकमागका लख सरकार उगा लता थी ।

१३ टकमागका इस तरह गुग या मुकनद्वार बक्क मुख्य सिक्कावे गिण हा रता जाता है । पुटकर सिक्के (या रजगाग) तो बाजारमें छोटे लेन दनकी मुविधाके लिए हा ढाङ्ग जात ह मल्लिण यह काम सरकार अपन ही हाथमें रखती है । मुख्य सिक्क ढाल दनक गिण टकमाग गुला रखी जाये जिस सिक्क मला ढाङ्गना हा उम मला ढालनका स्वतन्त्रता हो और चाणी साना परल्लेस मगान या परदग भवने पर सरकारका प्रौरमे काई प्रतिबन्ध न हा ता सिक्कका मच्चा मूल्य यानी उमम रह सान चाणीका मूल्य और उसका वानूनम निर्धारित हुआ मूल्य दाना एक्स रहत ह । आन्तर राष्ट्रीय भावामें फरवदङ्ग हानस घातुका मय बल्ले ता वानूना मूल्य भी बल्लना पन्ता है । एस सिक्काका दुनियाक मय दगाव लाम गुगाम स्वीकार करते हैं ।

प्रामाणिक द्रव्य, सांकेतिक द्रव्य और रजगारी

१४ हर दामें अधिकम अश्व वामनका एव सिक्का प्रामाणिक द्रव्यन रूपमें उपयागम आता है और दूसरे छाटे सिक्के रजगारीक तौर पर उपयागमें आत है । प्रामाणिक द्रव्यके रूपमें उपयागमें आनेवा मन्तनमें उस पर छपा हुइ वामनका माना या चाणा हाना चाहिय और काइ भी आत्मा साना चाणी लेजर टकमागमें जाय तो उमवे सिक्के ढाल दनन लिए टपसाल गुग हानी चाहिय । मक सिक्का, प्रामाणिक द्रव्यका मुख्य लक्षण यह है कि एक दूसरक साथ कितनी हा बडा रकमक लन-दनमें व सिक्के स्वीकारना लगा बका और मक्कारक लिए वानूनम अनियाय हाना है । हमार दाम रुपया और अठती प्रामाणिक सिक्क माने जात ह । क्विन मन्में ऊपर बनाव लण तान लक्षणामें म एव ही लक्षण हाना है । अमयाग्नि माशामें मन्तन चलन वानूनम अनियाय कर दिया गया है । मान नीत्रिय कि आपकी एम हजार रुपय या इगम भा बग रकम सिक्काकी दनी है और आप

एतन रुपय या इतनी रकमकी अठगिया लकर गत ह ता सामनवाल मनुष्यको गिननमें समय ग्य या य गय रुपय या अठगिया परतनकी तब त्रीफ उठानी पत तो भी य सिक्क लनग बह इनरार नही कर सकता । किसा समय बक पर धावा बोला जाता है तब उसक पाम नबद रुपय हा तो वह इस युक्तिका आजमा कर समय निकाठ सकता है । त्रेकिन कानूनी चलनक रूपम इस एक लक्षणवे सिवा दूसरे दो लक्षण हमारे रूपममें गहा ह । उसम पूर्ण कीमतकी चाणी नहा हाती इमलिए स्वाभाविक रूपमें ही गेगवे लिए टकसाल चुणी नही है । हमारा रुपया प्रामाणिक द्रव्य माता जान पर भा मावतिक द्रव्य जसा है । सावतिक द्रव्य उस कहा जाता है जिसम छपी हुई कीमतकी धातु गहा होती, लकिन कानून या सवेतवे द्वारा उसका उनना मूल्य निश्चित कर दिया जाता है । बाजारमें छोट लेन दनक सुभीतेवे लिए फुटकर सिक्के याना चवनी दुअत्री पसे बगरा जो रेश गारी लाली जाता ह व गत मावतिक सिक्क होने ह । इगलण्डका गिलिंग एमा ही सावतिक सिक्का है । चाणीस गिलिंग यानी दो पाँड तक ही वह कानूनी चलन माना गया है । त्रेन-दनका रकमक बन्तम कोई चालीस गिलिंगस जयाना दन ग्य ता कानूनन उग तनस इनरार किया जा सकता है । हमारी रेश गारी एक रुपयकी रकम तकवे त्रेन दनके लिए ही कानूनी चलन है । अगर कार्ट हमस पाच रुपय मागता हा और हम उसे पाच रुपयकी चवनी दुअत्री और इक्कनी बगरा रेशगारा दन ग्य तो उस अस्वीकार करनका सामनवाले आत्माको कानूना अधिकार है ।

१५ चलनी नाट या कागजी द्रव्य एक तरहका सावतिक द्रव्य कहा जायगा । उसमें उस कागजस अधिक वास्तविक मूल्य नही है जिस पर वह छपा जाता है । लेकिन बडीमे बडी रकमवे लिए वह कानूनी चलन है । सरकारके ऊपर रहे लोगके विश्वास जीर उगवे कानूनवे बत पर वह चलता है ।

१६ जिमे स्वीकार या अस्वीकार करना द्रव्य त्रेनवालकी तच्छा पर निभर हो उस द्रव्यका वकल्पिक द्रव्य कह सकते ह । हमारे देशमें पन्डे सरकार सोनकी मुहर डालती थी परन्तु वह वकल्पिक द्रव्य था कयाकि सोनकी मुहर त्रेनके लिए लोग कानूनसे बध हुए नही थ । चलनी नाट कानूनी चलन ह परन्तु सराफी हुडिया या बक्के चक — जिनका द्रव्यवे त्रेन त्रेनमें बहुत बणी मात्राम उपयोग होता है — स्वीकार करना सत्रक लिए कानूनासे अनिवाय नही है । इसलिए वह वकल्पिक द्रव्य माना जाता है ।

घटिया द्रव्य

१७ प्रामाणिक द्रव्यके रूपमें चलनेवाले सिक्केमें उस पर छपी हुई कीमतकी धातु न हो तो वह घटिया द्रव्य कह्यता है। रेजगारीके तीर पर काम आनेवाले सिक्के ता ऐसे घटिया होने ही हैं। और इसमें कोई खाम हानि भी नहीं है। लेकिन जिस देशका प्रामाणिक द्रव्य घटिया हो उस देशको दूसरे देशों के साथ होनेवाले व्यापार-सम्बन्धी लेन-देनमें बड़ी कठिनाई होती है। हमारा अपना घटिया सिक्का होनेके कारण विदेशोंके साथके लेन-देनके लिए उसे अलग रखने पड़ेगे साथ कृत्रिम रूपमें जोड़ दिया गया है। इस कारण आयात निर्यातके व्यापारमें हमारे देशको बहुत नुकसान होता है और हमारा किसानों और व्यापारियोंको बड़ी हानि उठानी पड़नी है। ऐसा क्या होता है या हम विनिमय-दरकी चर्चामें आगे बढ़ेंगे।

श्रेयसका सिद्धांत

१८ प्रत्येक देशमें जितने सिक्के बाजारमें घूमते रहते हैं वे अलग अलग समय टकसालमें बढ़ते होते हैं। सरकार अपना नीति बदलकर कम कामतकी धातु सिक्कामें डालने लगे तो बड़ी हुई नीतिके पहलके और उसके बादके, इस तरह दो प्रकारके सिक्के बाजारमें घूमते हैं। इससे सिक्का बहुत उपयोगके कारण धिमे हुए सिक्कामें भी कम कीमतकी धातु होता है। इस वास्तवमें कम ज्यादा कीमतके परन्तु कानूनी तौर पर एक ही कीमतके बहुतसे सिक्के बाजारमें चलते हैं। तब य सभा सिक्के एकस कानूनी चलानेके कारण आय किसी भी सिक्केमें लेन देन कर ता उनमें कोई अंतर नहीं पड़ता। लेकिन एक सिक्काके बीचरा एक मर्राफके ध्यानमें आय बिना नहीं रहता। अच्छे और पूरे कामवाले जितने भी सिक्के उनमें पाम आते हैं उतनाका वे संग्रह कर लेते हैं या उन्हें गलत डालते हैं और घटिया या धिमे हुए सिक्के ही बाजारमें घूमते रहते हैं। इस घटनाकी तरफ सानी एल्लिजात्रयके अध्यक्षी सर टामस श्रेयसका ध्यान गया और उन्होंने अपनी गोधके एक नियम या सिद्धान्तके रूपमें पत्र किया अच्छे अर्थात् पूरे कामवाले और सराब अर्थात् घटिया दाना तरहके सिक्के साथ साथ चलाना चलन हो तो सराब सिक्के अच्छे सिक्काके बाजारके चलनमें स खदड देंगे। इस सिद्धान्तकी अय्याम्ब्रकी पुस्तकमें प्रथमरा सिद्धांत कहा जाता है। अगर दाना तरहके सिक्कामें फरसा काम निरलता हो तो स्वाभाविक बात है कि मनुष्य अच्छे सिक्के अवन पास रख छोड़गा और सराब सिक्क वह धूमराको दगा और अच्छे मा ५-१५

सिक्कोंका उपयोग गलाकर छड़ बनान गढ़ा बनवान गाड़ कर रखन और विदेशोंके साथ लेन-देन करनेमें होगा। विदेशी व्यापारी दूगरे देगा सिक्का उस देगम मानी जानवाली उसकी कानूनी कीमतको देखकर नहा लेता बल्कि उस सिक्केकी धातुकी कीमत देखकर ही लेता है। गहन बनान और गाड़ कर रखनके लिए भी सिक्कमें रहा धातुका ही महत्व है।

१९ किसी देगमें सोन और चादा दोनोंके सिक्क अमर्यान्त मात्रामें कानूनी चलनके रूपमें प्रचलित हा और दोनोंमें न किसी एन धातुके भावमें बडा फक पड जाय ता दोना गिवक्काकी कानूनस निर्धारित की हुइ कीमत और दोना सिक्काका धातुकी कीमत — इन दोके अनुपातमें अंतर पड जायगा। ऐसे समय कानूनी कीमतकी अपेक्षा धातुकी दटिस कम कीमतवाग सिक्का अधिक कीमतवाल सिक्केको चलनमें से निकाल देता है। अधिक कीमत वाले सिक्केका गलाकर और उसकी छड़ें बनाकर लाग अधिक पसा पना कर लेते ह। नोटके चलनमें प्रसार (inflation) हो जाये जीर नोटके चलन परसे लागोका विश्वास डिंग जाये तथा एगे समय नाटाके साथ धातुके सिक्कोका चलन भी जारी हो, तो धातुके सिक्काकी तुलनामें नोट सराब या घटिया द्रय बन जाते ह। ऐसे समय नोट धातुके सिक्काको चलनमें से निकाल देते ह।

२० फिर भी ग्रामके या सिद्धान्तका अमल बिना किसी अपवादके हमेंगा ही नहा होता। नीचेके उदाहरणोंको अपवाद समझना चाहिय

(१) अच्छ और बुरे सिक्काका अंतर मात्राम पडनमें कभी कभी बहुत देर गम जाती है। उस समय तक दानो सिक्के समान रूपसे चलनमें रहते ह।

(२) बाजारमें लेन देनके लिए द्रयकी निश्चित मात्रा आवश्यक होती है। उसस कम द्रय हो तो लोगोंको अच्छ और बुरे दोनों तरहके सिक्के उपयोगके लिए बाहर निवालन ही पते ह।

(३) कमजोर या घटिया द्रयके बारेमें विश्पत नोटोंके बारेमें लोगोम बहुत अविश्वास पदा हो गया हो तो सरकारके कानूनकी भी परवाह न करके व कमजोर द्रय लेसे इनकार कर देते ह। जब लोग घटिया द्रय हाथमें लेनसे ही इनकार कर देते ह तब अच्छे द्रयके बिना लेन-दन मा व्यवहार नहा चल सकता। ऐसे समय ग्रामके सिद्धान्तसे उलटा ही नियम चलता है। अच्छा द्रय बुरे द्रयको चलनमें से निकाल देता है।

चलनी नोट और सराफ़ी द्रव्य

१ आजकल सभी सम्य देशोंमें धातुके द्रव्यके बजाय नोट और चीन्हा आदि कागज़ा द्रव्य ही उपयोगमें आता देखा जाता है। ऐसा लगता है कि अब धातुके मिक्कोटा उपयोग तो केवल रेजगारी तक ही सीमित रह गया है। स्टेशन पर प्लेटफाम टिकट लेना हो या सावजनिक टलीफोनका उपयोग करना हो तो वहा एक आने या दा आनेके रेजगारी सिक्केकी आवश्यकता पडती है। इसी तरह ट्राम और बसमें घूमनके लिए फुटकर सिक्के जरूरी हो जाते ह। बाज़ारमें छागी खरीदक लिए भी रेजगारीकी आवश्यकता पडती है। लन लनके अय सारे व्यवहारमें तो लोग नोगका धातुके सिक्का जितन विश्वाससे ही स्वीकार करते ह। अब हम यह देखें कि इन नोटोका जम कैसे हुआ।

बक-नोट

२ मान लीजिय हमने किसी सराफ़क यहा या बकमें अपना रुपया जमा कराया है। अब इस रकममें स थोडासी रकम दूसरे किसीको देनी हो तो या तो हम उतनी रकम बकम से निकाक लायें और उस आदमीको दे दें अथवा उतनी रकम देनेकी सूचना करनेवाला एक रक्का बक पर लिख द। अब यदि इस रक्का लनवालेका हमारा और बकका नाम बाज़ारमें प्रसिद्ध हो तो उस आदमीको बकमें जाकर वह रक्का भुनानकी आवश्यकता नहा पडगी। परन्तु यदि उस दूसरे किसी आदमीको पसे देने हा तो उनके बालेमें वह अपने पासका रक्का ही उस दे देगा। इस तरह यह रक्का बाज़ारमें बहुतसे हायामें घूमता रहेगा। और सचमुच नकल द्रव्यका उपयोग किय बिना बहुतसा लेन-देन इस रक्केने जरिय हो जायगा। अन्तमें जिस आदमीको नकल पसकी आवश्यकता हागी वह बकमें जाकर उसका नकल पना ले आयेगा। बकाने माचा कि उनसे यहा अमानत जमा करानवाला ध्यक्ति रक्का लिखे और वह रक्का लिखनेवालेकी और बककी साथ पर बाज़ारमें घूम, उसक बजाय क्या न लिखनवाला सय ही रक्केमें लिखी हुई रकम जिमके नाम पर रक्का हो उसके मागन पर चुकानका बचन देनेवाल अलग अलग रकमने रक्का छापकर बाज़ारमें घुमा ? आजकलका कोई भी नोट देखें ता उम पर इस अथका लिखान हाता है

एसे धारण करनेवालेक मागन पर म ६० देनया घान देता हू ।

सही

यह सही करनेवाला व्यक्ति सरकारवा या सरकारन जिम बकका नाट जारी करनेका अधिकार लिया हो उस बकका अधिकारी होता है । पहले जब बहुतम बक एस नोट जारी करते थ तब बकक मुख्य अधिकारीकी सही बकके नोटा पर होती थी । इन नोटोकी प्रतिष्ठा और बाजारमें इनकी मान्यता नोट जारी करनेवाल बककी साख पर निर्भर करता था । बक एसा सोचते थ कि वे जितन नोट जारी करेंग व सभी ता एवसाय भुनवानके लिए बकमें जायेंग नही । मान लीजिये बकको यह भासूम हो कि पच्चीस प्रतिशत लोग बकम नकट पम लन आत ह ता बक यह हिगाव लगा लेगा कि उसक जारी किय हुए नाटोमें से पच्चीस प्रतिशत नोटोका पसा तिजोरीमें नकद रखनसे काम चल जायगा । यह प्रथा बकाक लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुई । इस प्रथाके फलस्वरूप यह माना जाता था कि बकको जितनी रकम नकट रखनी जरूरी ही उसगे अधिक जितनी रकमके नाट बक बाजारमें घुमाता है उतना ही नया पसा बक खडा कर रता है ।

सरकारी चलती नोट

३ यूरोपके आग बट हुए देगोमें और अमरीकामें आरम्भमें अनक बक एसे नोट छापते थ । समय पाकर उन देगाकी सरकारोको एसा लगन आगा कि इस प्रथाका दुरुपयोग हानका डर है । इसलिए पहले तो इस तरहके नाट छापनका अधिकार अकिफ साखवाटे कुछ शक्तो तक ही उन्हांन मर्यादित कर दिया । साथ ही बकाको नोट जारी करनेका अधिकार देत समय यह भी निश्चिन कर दिया कि व कितनी रकमके नाट जारी करे और उनके लिए कितनी नकद रकम सुरक्षात रखें । फिर भी अनुभवन बताया कि बहुतम बकाको नोट जारी करनेका अधिकार देनमें सलामती नही है और मित्तययिता भी नही है । इसके अलावा बक नोट जारी करनेम एक दूसरेके साथ प्रतिस्पर्धा करने लग और इसमें वे अपनी शक्तिकी मर्यादिका पालन न कर सके । इसकी वजहसे द्रव्य बाजारमें झगडे खडे होन आग और बैंकोकी प्रगतिमें रकावट पडन लगा । इसलिए यह काम सरकारन अपने हाथमें ले लिया । आज यह स्थिति है कि प्रत्यक देगोमें या तो सरकार स्वय एसे नाट जारी करती है या सरकार द्वारा माय किय हुए देगाके किसी एक हा मुख्य बकको नोट जारी करनेकी सत्ता बह देती है ।

४ नोट जारी करनेका काम इस तरह सरकारके नियंत्रणमें रहना ही लाभ होता है। एक तो चाहे ता एक बाजारमें अपन नोट रख तब उन नोटोंको स्वीकार करनेके लिए सब लोग पर कानूनका दबाव नहीं डाला जा सकता। हमके सिवा अनेक एक नोट जारी करते हैं तब नोट जारी करने वाले प्रत्येक बच्चा अपने नोटोंके लिए नकद खम बरा मारामें जमा रखती पड़ती है। क्या कि हर एक और उसके ग्राहक दूसरे बच्चोंके नोट हाथमें आन पर उन्हें भुत्वा कर तब पैसा अपन बचमें जमा करानेका प्रयत्न करते हैं। इसलिए यह हिसाब लगाना बचोकु लिए बटिया हो जाना है कि किस समय कितना नकद खमकी माग होगी। अब यदि अलग अलग बच्चोंके नोटोंके बजाय एक ही सरकारी बक या सरकार माय बच्चे नोट करने हों, तो वे कानूनको चरमके रूपमें सबको माय होते हैं और इसलिए गैर बहुत कम मात्रामें नोट मुद्रित करने जाते हैं। इसलिए जारी किये हुए नोटोंके अनपानम बहुत कम नकद अमानत रखनेसे काम चल सकता है। इससे सरकार और समाज दानको एक और लाभ होता है। तब जब व्यापार बग बढ़ता जाता है तबसे बस द्रव्यकी आवश्यकता और माग भी बढ़ती जाती है। द्रव्यकी बढ़ती हुई मागको सोन चाँदीने सिक्के अधिन मात्रामें ढालकर पूरा करनेकी अपेक्षा यदि जनताका नोटोंके व्यवहारका आदत पड़ जाये तो थोडा खस द्रव्यकी माग बचाई जा सकता है। नोटोंके चलन से तब देखकर लगभग सभी देशोंकी सरकारें नोटोंका प्रचार करने लगा है। आज यूरोपके सारे देशोंमें धातुके सिक्कोंको अपेक्षा नोटोंका चलन अधिक है। प्रथम महायुद्धके बाद हमारे देश भी नोटोंका चलन बहुत बढ़ गया है।

चलनी नोटोंके लिए नकद अमानत

५ कानूनके अनुसार ता चलनी नोट एक 'प्रामिसरी नोट' या हाथ उधारकी बिट्ठी ही है। जो मनुष्य चाहे वह नोट लिखकर नोट निकालनेवाले बच्चे उसमें बनाय हुए द्रव्यकी माग कर सकता है। यह तरह नोट नकद द्रव्यका प्रतिनिधि है। उसका पीछे सहायके रूपमें माने-बानीका मित्रता जो तभी नोट गबल चलन माना जा सकता है। किसी भी देशकी सरकारको या सरकार माय बच्चा अपन जारी किये हुए नोटोंके लिए एक माम मात्राम सिक्के या सास बीमनका सोना चाँदी अमानतके रूपमें रखना ही पड़ना है। सिक्का या सोन चाँदीकी कितना मात्रा अमानतके रूपमें (रिजर्व) रखी जाय तबका आधार तबके गैर (रिजर्व) अमानत पर और व्यापारके स्वरूप पर रखा है। यदि देशका व्यापार बग प्रगतिशील हो कि छोट छोटे बहुतम उद्योगोंके मातृ तरीकना

पड़ तो नरक द्रव्यकी अधिक आवश्यकता पड़ती है। उसे हमारे यहाँ छोटे विज्ञान अधिक होनेसे और अब तक उन्हें नानाके व्यवहारकी विज्ञान आदत न होनेसे नकद पैसेकी अधिक जरूरत होती थी। इससे मिया छोटे-बड़े असाधारण अवसरों पर योग नोटा परसे अपना विद्वानस खा चेंगे या नहीं और नकद पैसेकी माग बरनक ठिए उग्ट पडेंग या नही इस बारेमें पहलेसे अनुभवसे भी प्रत्यक्ष देगकी सरकार यं निश्चिन करता है कि कितना द्रव्य नकद रखा जाय। इसके सिवा परम्परासे जाय इए मात्रवे लिए भी कुछ परिस्थितियोंमें नकद रुपया या साना विष्ण भजनकी आवश्यकता हाता है। इस प्रकारकी आवश्यकतायें हर देगकी अलग अलग होनी ह और उनका भी उस उस देगकी सरकारको ध्यान रखना पडता है। सामान्य व्यवस्था यह होती है कि हर देगकी सरकार या नोटा जारी करनकी सत्ता रखन चांग मस्य बक जितनी कीमतके नाट चलनमें रख गय हा उसका ५० प्रतिशत नकद द्रव्य या सोना चादी नोटाके संगरेके लिए अमानतके रूपमें रखता है।

न भुननवाले चलनी नोट

६ चलनी नोट बाजारकी आवश्यकताके अनुसार और उसके लिए पर्याप्त नकद अमानत रखकर ही जारी किय जायें तो देशको लाभ है। लेकिन इसका क्या विश्वास कि सरकार इस मर्यादाका पालन करेगी ही? अपन बन्ते हुए या बढ हुए खचको पूरा करनके लिए वह आवश्यकतासे अधिक नोटा जारी करे तो उसे कौन रोक सकता है? सरकार पर नियंत्रण तो तभी रह सकता है जब य नोटा सचमुच प्रामिसरी नोटा हो और जो आदमी चाहे उस सरकार फौरन वे नोटा भुना दे। लेकिन जब वह सकटम पड़ जाती है तब खास करके युद्धकालमें लगभग सभी सरकारें ऐसा बंधन तोड़ देती ह। प्रथम महायुद्धके समय यद्धमें गार्गिल दुर्घ पत्यक सरकारन चलनी नाटके बद्धेम नकद मागनवालाको पसा देना बढ कर लिया था। दूसरे महायुद्धमें भी यही नौबत आई थी। प्रत्यक्ष सरकारको यद्धके खचके लिए द्रव्यकी बड़ी आवश्यकता होती है। और विदेशोंसे तो सोना चादी दिय बिना मात्र बिठकु मित्र ही नहीं सकता। एसी स्थितिमें वह अपन पासका अमानतका सोना चादी और सिक्के तो खच कर ही डारती है। इसके जलावा देगमें जो सोना चादीके सिक्के चलनमें होते हैं तथा लोगोंके पास जो सोना चादी होता है वह भी अधिक नोटा छापकर उनके जरिय खीच लेती है और चांग नोटोंके बदलेमें सिक्के या सोना चादी न चलनका कानून बना देती है या आर्डिनन्स निकाल

देती है। ऐस समय भी यदि चलनी नोटाकी मात्रा बाजारकी आवश्यकताके अनुपातमें मर्यादित रखी जाये सरकार पर लोगोको विश्वास हो और देश भक्तिकी भावनासे लोग सरकारका सहायता करनको तयार हा तो ऐसे न भुननवाल नाटासे भी व्यवहार अच्छी तरह चल सकता है।

७ लेकिन सभी सरकार एसी मर्यादा नहीं पालता और उन पर प्रजाका एसा विश्वास भी नहा होता। गाय ही कोई सरकार आवश्यकतासे अधिक नोट छापनके लालचसे बच सकती है। प्रथम महायुद्धमें चलनी नोटाके प्रसारकी वुराईया जमनी आस्ट्रिया और रूसमें बहुत भयकर मात्रामें देसी गई थी। हमारे देशका उदाहरण तो दूसरे महायुद्धस पहले हमारा व्यवहार रूग्भग दो अरब रुपयाके नाटासे चरु जाता था उसक बजाय अभी (अप्रैल १९६३ में) तेईस अरबके ऊपरके नोट चरु रहे ह। रुपया तो देखनको भी नहीं मिलना और नोट अधिकाधिक संख्यामें छपकर बाहर जाते जा रहे ह। नोटाके इस भारी प्रसारके कारण देशभरमें अपूर्व महंगाई पदा हो गई है और समाजक अर्थ-व्यवहारमें बड़ी उथल-पुथल मच गई है। इंग्लंड और अमरीका तो सीधे युद्धमें पड़े हुए देश ह परन्तु वहा भी हमारे देशके जसा हाल नहीं हुआ। हमारे देशकी तुरुन्तामें वहा नोटाका प्रसार कम हुआ और महंगाई भी कम बनी। आजकी असाधारण परिस्थितियोका छाड दें ता प्रथम महायुद्धक बाद विगपत १९२८-३० की मदीके वाग सोनेका चलन छोड देन पर भी और अपने नोटाको न भुननवाले बना देन पर भी इंग्लंड और अमरीका अपना अपना अर्थ-व्यवहार भन्नीभाति चला सके थे। इस परस द्रव्यशास्त्रियान यह सवाल सथा किया है कि द्रव्यक लिए मान जसा महंगी चीजका उपयोग करना छोडकर बागजी द्रव्यसे ही क्या न काम चलाया जाय? देश भीतरका व्यवहार तो नोटासे अच्छी तरह चल ही सकता है और विदेशी व्यापारक सिरसिलेमें सोन चादीकी जो आवश्यकता पता हो उसकी व्यवस्था सरकार कर दे। हम इस सवालका विचार आग 'भविष्यके चलनका योजना नामक प्रकरणमें करेंगे। महा तो हम इस चर्चा तन पहुँचे ह कि आज दुनियाक सभी देशोंमें सोन चादीके निरने मुख्य द्रव्य नहीं रहे परन्तु चलना नोट मुख्य द्रव्य बन गय ह।

सराफी द्रव्य

८ लेकिन द्रव्यका अर्थ बचर सरकारी निवने या चलना नाट हा नहा हाता बल्कि जिन जिन साधनासे अर्थ-व्यवहार हो सके व सारे साधन

द्रव्य हूँ ऐसा अर्थ करें—और द्रव्यवा सच्चा अर्थ यही है—ता लेन-देनका व्यवहार चलनी नोटोंसे भी ज्यादा सराफोंकी हुडिया और बकाने चक तथा कूपट द्वारा होता है।

हुडियाँ

१. जस जस व्यापार घटा बढ़ता गया और देण विणेशमें फूटा गया वसे वसे व्यापारियोंको सोने चादीया द्रव्य या सिक्के साथ लेकर विणेश जाना आना बठिन और पतरसे भरा मालूम होन लगा। इगलिए विणेशमें द्रव्य ले जाना होता तत्र अपने देणके जिन सराफारा हुडी-व्यवहार विणेशक सराफाके साथ चलता हो एसे अच्छे सराफोके यहा नरन पसा जमा करा कर व्यापारी हुडी ले लेता था। विदेशके सराफने यहा जाकर व्यापारी यह हुडी भुना लेता था और उमका पसा लेकर अपना काम चलाता था। आज मालकी खरीद और विक्रीके सवधमें एक जगहसे दूसरी जगह पसा भेजना हो तो लोग नकद रुपया लेकर देनके लिए नहीं जात-आते मनी-आडरसे भी नहीं भजते परन्तु अपन गावके सराफके यहा उतनी रकम जमा करा देते हूँ और उसके बदलमें दूसरी जगहक जिस आदमीको रकम देनी हो उसके नामकी हुडी ले लेते हूँ। जिस गावको रकम भजनी हो उस गावमें यदि अपनी पेडी हो तो उस पेडाके नाम धरना अपनी पहचानके किसी दूसरे सराफके नाम—जिसके यहा उसका खाता हो—उस गावका सराफ हुडी लिखता है कि यहा हमन रुपये रख हूँ। इसलिए आप आदमीको यह हुडी दिखान पर उसका नाम-पता आदि जाच कर रुपय दे दीजिये। जो आदमी रुपय भजना चाहता है वह यह हुडी लेकर जिते रुपय चुकाने हो उसके पास भज देता है। और वह आदमी उपरोक्त सराफके यहा जाकर हुडी दिखाता है और रुपया ले आता है। रुपय लेकर हुडी लिखनवाला सराफ जिस सराफ पर हुडी लिखी गई हो उसके खातेमें रुपया जमा करता है। और हुडीका रुपया देनवाला सराफ हुडी लिखनवाले सराफके खातेमें रुपया नामे लिखता है। सराफोंमें एक-दूसरे पर हुडिया लिखनका एसा व्यवहार चलता ही रहता है। वे समय समय अपने खाते आपसमें मिला लेते हूँ। दोनो सराफोंको एक-दूसरे पर हुडिया लिखनके मोके आय हा तो दोनोंके खाते अधिकतर बराबर हो जाते हैं या लेन देनका अन्तर बहुत कम रहता है। परन्तु इस तरह नकद रुपया सराफके यहा ले जाकर हुडी लिखवानकी नौबत हमेशा नहीं आती क्यकि सराफी बाजारमें अलग अलग जगहोंकी तयार हुडिया बिकती हूँ।

बद यह तैयारी कि बाजारमें तयार हुडिया कसे मिलता है। मान लीजिये कि एक-दूसरेकी हुडिया स्वीकारनके सिलसिलेमें किसी सराफवा लेना दूसरे गावके सराफ पर बढ गया है और उमे तुम्हें रुपयेकी जरूरत है। तो वह दूसरे गावके सराफ पर अपनी जरूरतकी रकमकी हुडी लिखकर उस दूसरे सराफको द देता है और उसमे रुपया ले लेता है या उमे अपने जिस ग्राहकको रुपया देना है उस रुपयक बजाय हुडी ले लेता है और सराफका साम्ब अउ ही तो बाजारमें उस हुडीका रुपया उस ग्राहकको तुरन्त मित्र जाता है अथवा वह ग्राहक अपने लेनदारको नकद रुपया दनक बजाय यह हुडी ही द देता है। किसी सराफके पास तुरन्त नकद रुपयेकी सुविधा न हो और एक दो दिनमें नकद रुपया आनेवाला हो तो वह उस हिमावस स्वय ही अपनी पनी पर या अपनी शाखा पर हुडी लिखकर बाजारमें बेचता है अथवा जिस रुपया देना हो उसे देता है। इसके अलावा जिंक पास बाहरसे हुडी आई हो वे सभी बाजारमें सराफके यहा हुडी लिखाकर रुपया लेन नहा जान बलिक अपने लेनदारका रुपयेके बजाय हुडी ही दते ह। इस तरह अउ सराफाकी हुडिया एक हाथसे दूसरे हाथ बाजारमें बहुत समय तक घमती ह। सराफा बाजारमें हुडियाके लेन-बचनका काम बग्नवाने पलाय भा होते ह। वे अलग अलग गावाकी हुडिया अपने पास शकटटी करते ह और जिन्हें जरूरत हो उन्हें बेचते ह। इस तरहकी हुडियोके भाववा आधार बाजारमें उनका पूति और माग पर रहता है। किसी गावकी हुडीकी माग अधिक हो और पूति कम हो तो उस हुडीका भाव अधिक होता है। अथवा यह मान तो स्पष्ट है कि मनी-आडरसे या दूसरा तरह रुपया भेजनमें बस्तुत जितना खच होता है, उससे अधिक भाव किसी हुडीका हरगिज नही हो सकता। दूसरी जगह पसा भेजनके लिए जो हुडा खरीदना गहना है उमे मामायत भेजी जानवागी रकमसे कुछ अधिक ही खम हुडीकी दनी पटती है। परन्तु कभी कभी ऐसा भी होता है कि भेजनेकी रकमसे कम खममें भी हुडा मित्र जाती है। किसी गावकी हुडियाकी बाजारमें बहुतायत हो और जिके पास ऐसी हुडी हो उस तुरन्त परोकी जरूरत हो तो वह थोडा घाटा उटावर भी हुडी बचनेरो तयार हो जाता है। पर दूसरे गावसे पसा मगानमें बस्तुत जितना खच होता है उससे ज्यादा घाटा तो वह कभी नही उगायेगा। हुडीक भावकि य अन्तर बहुत कम एक प्रतिशतक भी अमुक अपूर्णाक जितन होने ह। केबिन रकम बहुत बनी होनेक हुडियाके व्यापारमें सराफाको और दलानाका भावके इतने घाट अतन्ने भी बहुत बडा नषा होना है। जब पसे लेर

सराफ हुडी लिख देता है तब तो तुरन्त पसा मित्र जानके सिवा उसकी हुडी स्वीकार हो और उसका खानेम पसा नामे लिखा जाय तब तबक बीचके दिनके याजका काम भी उसे मित्र जाता है।

१० एक स्थानसे दूसरे स्थान पर पसा भजनकी सुविधा कर देनेके लिए सराफ हुडिया लिख देता है। लेकिन हमन देय लिया कि वास्तवमें परोसा उपयोग निय बिना अलग अलग स्थानके बीच ट्रेन-ट्रेनका निपटारा हुडियाके जरिये होता है। इस तरह हुडिया द्रव्यका काम करती है। इसके सिवा अपनी साख पर पसा खडा करनेके लिए भी सराफ हुडिया लिखते हैं। एसी सब हुडिया बाजारमें काफी सख्यामें हाथा-हाथ भी घूमती है और मर्यादित स्वरूपमें बचक नोटा जसा काम करती है। इसलिए कहा जा सकता है कि हुडिया एक प्रकारस अतिरिक्त द्रव्य हा खडा करती है।

दानी हुडी और मुद्ती हुडी

११ हुडिया दो तरहकी होती है दानी और मुद्ती। दानी हुडीका पसा हुडी लिखाते ही तुरन्त देना पडता है और मुद्ती हुडीका पसा उसमें बताइ हुई अवधि बीतन पर देना होता है। दानी हुडीके भी दो प्रकार हैं धनी-जाग (Bill payable to bearer) और ग्राह-जोग (Bill payable to order)। धनी-जोग हुडीका पसा उसमें जिस आदमीका नाम लिखा हो उसीका दिया जाना है। उस पर सूचना लिखकर दूसरेको पसा चुकानके लिए वह हुडा नहीं दी जा सकता। अत बाजारमें वह हाथो-हाथ नहीं घूम सकती। ग्राह-जोग हुडाका रपया किसी भी ग्राहको अर्थात् प्रतिष्ठावाले व्यापारी अथवा मास्रवाले परिचित आदमीको दिया जाता है। उस पर सूचना लिखकर उसे दूसरे आदमीको ट्रेन-ट्रेनके सिलसिलेमें भी दिया जा सकता है। इसलिए ग्राह-जोग हुडी बाजारमें हाथा-हाथ घूम सकती है। दानी हुडियाका उपयोग अलग अलग स्थानके बीचके ट्रेन-ट्रेनके निपटारेके लिए और बाजारमें भी ट्रेन-ट्रेनके व्यवहारमें होता है। मुद्ती हुडियाका उपयोग अधिकतर सराफ लोग अपनी सुविधाके खातिर थोडी अवधिके लिए पसा खडा करनेको करते हैं। सराफको एक निश्चित समयके लिए रपयेकी जरूरत हो तो वह अपनी ही पेट्टी पर मुद्ती हुडी लिखकर उसे बाजारमें बच देता है। जिस सराफको पसेकी अधिक रूट हा या जिस आदमीको थोडी मुद्तके लिए पसा रोकना हो वह उस मुद्ती हुडीको अवधि पूरी होन तकका याज पहलेस काटकर खरीद लेता है। सराफकी मुद्ता हुडिया पर—हुडी लिखनवाळे सराफकी अकेलेकी साख पर अथवा उस पर अधिक साखवाले सराफकी सही लेकर—बच हुडीकी अवधि

पूरी हानके तिन तकके ब्याजकी रकमके बराबर कमीशन काटकर पसा उधार देते ह।

चक्र

१२ अब हम चक्का विचार करें। बकाम लाग दो प्रकारसे पसा जमा करत ह। एक निश्चित अवधिकी अमानतक तौर पर और दूसरा चालू खातेमें। जो लोग अपनी बचतके पस रखाके तिन और पाज कमातके लिए बचमें रखत ह वे निश्चित अवधिकी अमानतमें रखते ह। उस पर ब्याज भी कुछ अधिक मिलता है ब्याकि अवधि पूरा हान पर ही पसा निकाला जा सकता है इसलिए एस अवधिक भातर बक्की पमेका जा उपयोग करना ही बह कर सकता है। लेकिन ब्यापारी पाग और जिन आगाका पसेके उन-देनका व्यवहार प्रतिदिन अधिक करता पडता है व बक्का उपयोग केवल पसेकी रखा करनेवाली सस्याके रूपमें ही नहीं करत। वे बकमें अपना चालू खाता रखत ह। रोजकी रिश्रा या रोजकी आय उसमें जमा कराते ह और जस जस आवश्यकता पडती है वसे वसे बकसे रकम निकालत रहते ह। वे बक्का उपयोग एक खजानचीके रूपमें करते ह। किसीको पसा देना हो तो बकमें स पसा निकाल कर लान और उसे दोक बजाय वे उस आदमीको उतनी रकम देनकी सूचना करनवाली चिटठी बक पर लिख दते ह। स्वय उन्हें जब पसा निकालना होना ह तब व भी इस तरहका चिटठी लिखकर ही निकालत ह। इस तरहकी खुद रपया निवाउनका या और किसीको रपया देनेकी चिटठी बक बहनाती है। सामान्यत बक पर यह लिखा रहता है

पसाक

ता०

बकका नाम

स्थान

श्री _____ को अथवा दिखानेवालेका अथवा लानवालेको (गाहजोन)
उनका नामाकी - सूचित धनीका (नामजोग)
 रपये _____ दे दें।

५०

सही

१३ जिस आल्मीको रकम देनी हा उसका नाम और रपयकी रकम पाब्दोंमें और अकामें सान्नी स्थान पर चक्र लिख देनेवाला आल्मी भरता है और नीचे अपनी सही करना है। जिस चक्में दिखानवालेको नाम लिखे

होते ह उस चन्पी रयम जो आम्ही यह चक् लेजर धामें लिखावे और रुपया माग उम मिल सक्ती है। एस चक्का बजरर चक् (गाह-जोग चक्) या चक् रगनवाएका पसा दिलानवाला चक् बहत ह। जिम चक् पर उनवे बास्ते गण लिख हाते ह उस चीववे रुपये बक्ते लेनवे त्रिए चक्में जिस आम्भावा नाम लिखा ह। उमक् हस्ताभर चक् पर हाना आवश्यक् है। एसो चक्का आडर चक् या नाम-जोग चक् बहते ह। इसने सिवा जिस चक् पर दा आणी लकीरें गीच दी गइ ह। उस गाम चक् (साता जोग चक्) बहते ह। एस चक्के पस विसीको नक्द नही दिये जाते पर वक्म जिसका पाता ह। उस असाभीने नातेम जमा विच जात ह। चाहे जिस आदमीव हाथमें चक् आ जाने पर यह बक्सा रुपया निवाग्जर न के जा सक बसवे त्रिए यह व्यवस्था की गई है।

चक्का काय

१४ अब हम यह देखें कि यह चक् द्रयवा काम किस तरह करता है। मान गीण्य कि एक व्यापारान दूसरे व्यापारीको चुकानकी रकमके बदलेम बक्के नाम चक् लिख दिया। जिस व्यापारीका यह चक् मिलता है वह सीधा उस बक्का पास चक्में लिखा रकम लेन नही जाता परन्तु अपन बक्का अपन खातेमें यह चक् जमा कराता है। इन दो व्यवहारका परिणाम यह हुआ कि उन दो आदमियाका एक दूसरेके साथका लन न्न निपट गया लेकिन एक बक्को दूसरे बक्से अमुक् रकम लेनी रही है। यदि पहला बक् दूसरे बक्को नक्द पसे दे तो रुपयकी जहूरत पडगी। परन्तु मामायत जब जब बक्को परस्पर लेन-देन करना होता है तब तब बक् नक्द पसेका लन-श्न नही करते। प्रत्यक् बक् अपन महा रोग जमा होनवाले चक् इक्ठठ करवे रखता है और गामको या दूसरे नियत समय पर सब बक्को के कमचारी एक स्थान पर जमा होकर अपनी लेन और देनकी रकमाकी सूची बनाते ह तथा इन दो सूचियोंके बीच जो अन्तर होता है उतनी ही रकमका लेन देन करते ह। यह नो नही होता कि दिनके अतमें सभी बक्को देने और लेनवे चक्कोका एक-दूसरेके साथ पूरी तरह मेल घट जाय। परन्तु यदि सभी बक् एक बड या केन्द्रीय बक्में अपन खाते रखते हा— और वे रखते ही ह—तो उन खातोमें जमा-नामे करनसे सभी चक्की रकम बराबर हा जाती है और केवड मुख्य बक्का ही हर बक्के साथ देना या लेना रहता है। इस तरह चक्के उपयोगसे और इस तरहके निपटारेकी व्यवस्थासे बहुत बडी रकमका लेन-देन नक्द पसा दिये या लिये बिना ही ह।

जाता है। अपन पास आप हुए अलग अलग बकानि चक आपसमें मिलानके लिए अलग अलग प्रांके कमचारी जिस स्थान पर एकर होने ह उस स्थानको 'मिलानिया हाउस' अथवा हव ला-गृह कहत ह। व्यापार उद्योगक हक बड बेदमें जहा बहुतसे बक काम करते ह ऐसे मिलानिया हाउस होते ह।

१५ अलबत्ता यह तभी हो सकता है जब को भी आपसी बकसे नकद पसा न निकाले उम जो भी पसा देना हो वह चकमे ही दे और जिसे चक लिया जाव वह भी इस चकक पस बकम लेनके लिए जानके बजाय अपने बकमें उस चकको ही जमा करावे। पूरी तरह तो एमा नहां नहां होता। प्रत्येक व्यापारीको ऐसे छोटे-छोटे बिल चुकान पडते ह जिनमें चकमे काम नही कर सकता। अपने मादूरोको वह चकसे मजदूरा नही चुका सरता और कुछ बड बननवागवो चकस बतन दे तो भा वे तो अपने घरसबके लिए यह चक बकमें भुनाकर नकद पसा आवेग ही। इसलिए उनके उपयोगसे नकद पसेकी आवश्यकता बिलकुल तो नही मिट जाती। गावामें और छोटे गहराम भी चकका कारगर बहुत नही हाता। चकका उपयोग बड गहरामें और व्यापारियाके बडे सौदसि सबधित लेन-देममें ही होना है। लेकिन बडी बडी रकमाका लेन-देन तो बड सौदसि सिलमिगमें ही करना होता है इसलिये यह सच है कि चकके उपयोगस नकद पसेका आवश्यकता बहुत बनी भात्रामें घट जाती है।

१६ जिस व्यापारीको अपना लेनकी रकमके बकमें चक मिलना है वह इस चकको अपने बकम अपने खातमें जमा न करा कर रसन बज पेडे दूसरे व्यापारीको भी दे सकता है। इस चकका स्वीकार करना या न करना उम व्यापारीका इच्छाकी बात है। परन्तु चक लिखनवाला नाम गजारमें सुपरिचित हो तो उमका चक अपने व्यापारी गेग इनकार नहा करन। यह भी हाता है कि एमा चक बहुत हायामें घूमता रहे और बडी मात्रामें लेन-देन निपटानवा साधन बने। लेकिन मभा चक इस तरह बहुत हायामें नही घूमने।

ड्राफ्ट

१७ जिसे एक ड्राफ्ट कहा जाता है वह मराफाकी गनी हुनी तमी ही एक वस्तु है। एक सराफ दूसरे सराफ पर लिखे वह हुबो कर्तागी है और एक बक दूसरे बक पर लिख वह ड्राफ्ट कहलाता है। अन्तर गनना ही है कि सामान्यत ड्राफ्ट हुनियाकी तरह हाया-हाय नही घूमता। एक स्थानम दूसरे स्थान पर पसाकी अन्ला-बदली करनके लिए ही उमका

उपयोग हाना है। बकायी गान्वाण अग्न अन्न गहरामें होनी ह और जिन्हें पसा एक स्थानसे दूसरे स्थान पर भजना हा उनसे पसा लेकर बर ड्राफ्ट टिका दते ह और वह पसा भजनकी गुविधा कर देने ह।

आयात निर्यातके बिल

१८ विदेशके साथ हानवाठ आयात निर्यातके व्यापारके सबधमें भी एक देशसे दूसरे देशको वास्तवम नरद पसा या सोना चांदी हमेंगा नहा भजा जाता। हर देशका अपन आयात और निर्यातके अन्तर जितना ही सोना चांदी विदेशमें भाना पडता है। देश विदेशमें अपनी गान्वाण रखनवाल बडे बकाये द्वारा आयात निर्यातके बिल आपनमें मिश्रकर बराबर बिये जाने ह। एकिा इस तरहके व्यवहारमें यह प्रश्न सडा होता है कि हर देशका द्रय अग्न प्रवारका हानके कारण विभिन्न प्रकारके द्रयका मूल्य एक-दूसरेके साथ कस निश्चित बिया जाय। हम इसकी विस्तृत चर्चा आन्तर राष्ट्राय व्यापार सम्बन्धी लेन-देनके प्रकरणमें करेंगे।

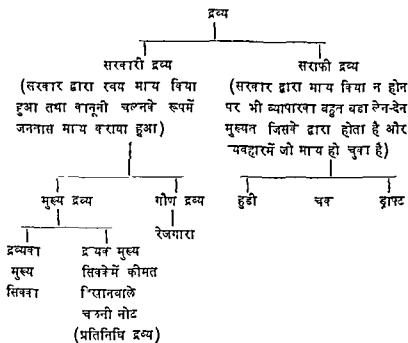
१९ इतनी चर्चा परसे मान्य होगा कि सोन चांदीके सिक्के ही मुख्य द्रय नहा ह। अग्न सभी देशोंमें इनका स्थान चन्नी नोणेन ले लिया है। एकिन सम्य मान जानवाल बिसा भी देशके लेन-देनका व्यवहार देखें, ता जान पडगा कि लेन-देनके साधनके तौर पर नोटका स्थान भी अब मुख्य नही रहा। यह स्थान अब हुडी चक और ड्राफ्टन ले लिया है। द्रय बाजारमें नोटका भा बहुत गौण स्थान है। यदि हम सोन चांदीके सिक्का और सरकारी चन्नी नोणेनका सरकारी द्रय कहें और चक हुडी तथा ड्राफ्टको गर सरकारी अथवा अधिक अच्छे गल्नेमें सराफी द्रय कहें तो इस दो प्रकारके द्रयके बायकी दृष्टिसे सराफी द्रय अधिक महत्त्वपूर्ण बाय करता है। समाजका बहुत बडा विनिमय-व्यवहार इग सराफी द्रयसे ही चरता है। अलवत्ता सरकारी द्रय उस कानूनी चरन है वसा सराफी द्रय कानूनी चलन नही है। सरकारके अथवा सरकार मान्य बकने चलनी नोट अपन लेन पैट स्वीकारनसे कोई अनकार नही कर सकता जब कि अपन पैसेके बदले हुडी या चक लेनसे इनकार करनका हर बिसीको अधिकार है। इसके सिवा जमीनके अग्न अथवा अय बिसी सरकारी कर वगराके बदले चक या हुडी नहा स्वीकार की जाती। वहा तो हमें रुपय या नोट ही देन पडने ह। इसका कारण यह है कि चक या हुडीके लेन या देनसे लेन-देनका पूरा निपटारा नहा होता। जिस बक पर चक लिखा गया हो या जिस सराफ पर हुडी लिखी गई हो वह बक या सराफ उस चक या हुडीको स्वीकारे

तभी अपना पमा बमूल करनक लिए जिमन चक या हुने स्वीकार की हा उमका पमा पूरी तरह बमूल होता है। जमे रुपय या चकनी नाट देन या लनसे ही लेन-देन निपट जाना है वसा वान चक या हुडीकी नहा हाना। उममें एक सीनी—चक या सराफक स्वाकारनेकी—बाकी रह जाती है। इसीलिए सरकार अपने लनके सवयमें चक या हुने नहा स्वाकार करता। फिर भी, जमा हम ऊपर कह चुके ह जापमके लन-नका बहुत बडा कामकाज एक दूसरेकी साल पर चलना है और इसीलिए चक और हुडा द्रव्यकी तरह काम दे सकते ह। फिर भी चक और हुडी जम ता सरकारी द्रव्यका प्रतिनिधित्व ही करते ह और इसलिए बहुत जग काम करते हुए भी उन्हें अपना मूल्य ता सरकारी द्रव्यके रूपमें ही व्यक्त करना पता है। इसलिए यह कहा जापगा कि उमकी जममें ता सरकारा द्रव्य ही है। एम दो प्रकारके द्रव्यक बीचका भेद एक अयोग्यनीन बद्धत मुन्तर रूपक द्वारा समझाया है कृपमें जमे उमका जम और तना उमके आधार ह जड और तनके बिना बक्षकी डालिया और पत्त टिक नहा सकत वसे ही सरकारी द्रव्य विनिमय-व्यवहारक वक्षका जडा और तनके समान है। सराफी द्रव्य उसकी डालिया और पत्तके समान है। इसलिए सरकारी द्रव्यके सहारेके बिना सराफी द्रव्य टिक नहा मकना। फिर भा जिम प्रकार वयमें डालिया और पत्ताका फलव अधिक होता है और समाजके लिए भी वे जडा और तनस ज्यादा उपयोगी सिद्ध होने ह उसी प्रकार सराफी द्रव्यना फलव और उसकी उपयोगिता समाजमें अधिक होती है।

२० सरकारी द्रव्य और सराफी द्रव्यक अलग अलग स्वरूपोका एक दूसरे रूपक द्वारा भी समझाया जाता है। हम द्रव्यका मुख्य उपयोग ता विनिमयके लिए ही करते ह। द्रव्यका मुख्य काय एक आत्मीक पासकी चीज दूसर आत्मीके अधिकारमें देना है। एम प्रकार द्रव्य एक पुल है जिसक जरिये नाई चाज एक आत्माके हाथमे दूसर आत्मीके हाथमें जाना है। ननाव पुन्ना हम कपना करें। लाग जिस समय ननी पार नग करत उस समय भा पुल ता बही खग रहता है। इसी तरह जिस समय सोने न होने हा और उनक मिलसिलमें द्रव्यका लेन-देन न हाना हो तत्र भा सरकारी द्रव्य तो मौजूद ही रहता है। इसलिए सरकारी द्रव्य लगभग ननीके पुलकी तरह है। एकिन ननीक बिनारे मला भरा हा और आने-जानके लिए पुठ छाटा पडे तब हजारा आत्मा अपनी नावें खाकर उनकी मन्स सामनक बिनारे पर पहुचते ह। सराफी द्रव्य इन नावक जसा है। वह आवश्यकता पडन पर

ही सडा लिया जाता है और जब आवश्यकता नहीं होती तब समेट लिया जाता है। मेरे दूमरे तिन कोई आत्मी उस पुल पर सडा होकर सोचे, तो उसे आश्चर्य हागा कि मेरे आय हुए सभी लोग इतन छोटे पुल परस कने नदी पार कर सकें ?

पिछले प्रकरण और एम प्रकरणमें द्रव्य कई प्रकारका बणन लिया गया है। उनमें से मुख्य प्रकार नीचेके तर्कमें बताया जा सकते हैं



चलनके प्रकार

द्वि धातु चलन

१ विभिन्न देशोंके चलनके इतिहासका देखा जाय तो पता चलता है कि ससारके लगभग सभी देशोंमें गाना और चांदी—दाना धातुआज सिक्काका उपयोग मुख्य द्रव्यके रूपमें हुआ है। प्रत्येक देशकी सरकार मोने और चांदीके सिक्के अपनी टकमालमें गालनी थी और दाना प्रकारके सिक्के अमर्यादित मात्रामें कानूना चलनके रूपमें बाजारमें चलते थे। मनुष्य चाहे जिस धातुक सिक्कामें अपना बज या देना चुका सकता था और कोई भी मनुष्य किसी भी धातुका सिक्का स्वीकारनमें आनाकानी नही कर सकता था।

२ जब मुख्य द्रव्यके रूपमें दोना धातुआज सिक्के चलते हैं तब इन सिक्काकी अन्त-बल्ली किस अनुपातमें हानी चाहिये यह कानूनन यदि निर्दिष्ट न किया गया हो तो गाने और चांदीके बाजार भावके आधार पर यह बात निर्दिष्ट होना है। परंतु जब तक धातुके बाजार भावके आधार पर प्रत्येक सिक्केका मूल्य निर्धारित करनेका अशक्त पड़े तब तक यह चलन वचानिक नही कहा जा सकता। द्वि धातु चलनका पद्धति अपने मूल स्वरूपमें तथा व्यवहारमें आ सकती है जब दाना धातुएँ खुल रूपमें टकमालमें स्वीकार की जायें। ऐनकारका किमा भी खम तब किसी भी धातुक सिक्का चुकानका अधिकार है और दोना धातुआज सिक्काकी कामतका अनुपात कानून द्वारा निर्दिष्ट किया जा चुका है। हमारे सिक्का कानूनन निर्धारित दाना धातुआज सिक्काका विभिन्न-अनुपात तथा दाना धातुआजके बाजार भावका अनुपात एक है। सभी द्वि चलनकी पद्धति एक मात्रता है। क्योंकि दाना प्रकारके सिक्कामें उपयोग की गई धातुआजके बाजार-व्ययनमें बाझामा भी फव है ता मरफ उमका लाभ उठानेकी धानमें है बठ रहने है। तुगल ही प्रथमता मिदालन अपना काम करने लगता है। धातुके द्विभावस अधिक कीमतवाले सिक्का बाजारन मायब होने लगने है। अधिा कीमतका धातुके सिक्का बाहर जान लगत है गठकर धातुके रूपमें चल जात है अथवा जमानत नाच दय जात है।

३ द्वि-धातु चलनका यह पद्धति इंग्लंडमें मन् १८१६ तक, हमार देशमें १८३५ तक तथा यूरोपके अन्य देशोंमें १८७४ तक काफी प्रचलित रही।

इसका कारण यह है कि इससे पहले लगभग २०० वर्षों के अरसमें सोन और चांदीका भाव १ १५ $\frac{1}{2}$ के अनुपातमें बहुत-बुछ स्थिर रहा था। सन् १८५० में आस्ट्रिया तथा बल्गारियामें सोनकी नई खानाकी खोज हुई उससे बाद चांदीकी तुलनामें सोनका भाव कुछ घट गया। फिर भी दोनों धातुओं का अनुपात १ १५ का बना रहा। सन् १८७१ के बाद दानों के अनुपातमें भारी फर्क हुआ गया। उस वर्षमें चांदीका भाव गिरने लगा। १८७१ में दाना धातुओं के भावों के बीचका अनुपात १ २० हो गया और १९ वां वर्ष में अतः तब तक यह अनुपात १ ३८ तक पहुँच गया।

लगाव चलन

४ इसलिए यूरोप के जो देश द्विधा धातु चलनका आग्रह करते थे उन्हें उम टिकाव रखनेमें बड़ा कठिनाई पड़ने लगी। उन्होंने जनताके लिए अपनी टकमालामें चांदीके सिक्के डालना बंद कर दिया। सोनके सिक्केके लिए टकमालें खुली रखा परन्तु इसके साथ साथ प्रत्येक देशकी सरकारने स्वयं चांदीके सिक्के डालना भी जारी रखा। इसके सिवा प्रत्येक देशकी सरकारने दाना धातुओं के सिक्केकी कीमतका अनुपात कानून द्वारा निर्धारित कर दिया तथा दोनों धातुओं के सिक्केका अमर्यादित मात्रामें कानूनी चलनके रूपमें चलन दिया। परन्तु कानून द्वारा निर्धारित कामतका अपेक्षा चांदीकी बाजार कीमत कम थी इसलिए चांदीके सिक्के कमजोर या बुरे थे। कमजोर सिक्केको बचाने के लिए चांदीके सिक्केके साथ चलना पड़ता है तब कमजोर सिक्केका लगाना पड़ता है। इस कारणसे इस पद्धतिका लगव चलनकी पद्धति कहा जाता है। इस पद्धतिमें जो धातु बाजार भावका दृष्टिसे सस्ती हो उसीके सिक्के चलनेमें रहते हैं। बाजार भावकी दृष्टिसे अधिक कीमती सिक्के बाजारसे लुप्त हो जाते हैं। इसके फलस्वरूप उन-दैनिक व्यवहारमें अनेक कठिनाइयाँ खड़ी हो जाती हैं।

स्वयं-चलन

५ इन कठिनाइयोंके कारण धीरे धीरे ससारके सारे ही देश सोनके चलन पर आ गये। सोनका चलन बढ़ तब कहा जायगा जब सोना लेकर टकमालामें जानवाये आदमीको उतनी कीमतका सोनके सिक्के डाल दिये जाय जिस सिक्केका गठ डालने का वह बिना किसी प्रतिबंधके अपने पासके सिक्के गला सके और गलाने पर उनमें से पूरी कीमतका सोना निश्चित रूपमें निकले। इसके सिवा प्रत्येक मनुष्यका सोनका आयात निर्यात करनेकी पूरी

स्वतंत्रता होनी चाहिये। जिस देशमें बागजी द्रव्य प्रचलित हो उस देशमें बागजी नोट रखनेवाले आदमीको भागने पर नोटके बदलेमें नोट पर छपे अनुसार सोनके सिक्के मिलनेकी व्यवस्था होनी चाहिये।

६ सन् १९१४ तक इंग्लड फ्रान्स अमेरिका जमनी आदि देशोम गुद्ध सोनका चलन प्रचलित था। परंतु प्रथम विश्वयुद्धके समयमें इन सब देशोंमें सोनके सिक्के चलने बंद हो गये। युद्धके कारण विदेशोंसे कोई भी वस्तु खरीदनी हो ता साना दिये सिवा वह मिल नहीं सकती थी। अतः विदेशोंके साथ चलनवाले व्यवहारके लिए सोना रखकर देशके भीतरका सारा आर्थिक व्यवहार इन देशोंमें केवल बागजी नोटों पर चलाना लगा। नोटके बदलेमें माग करनेवालेको सोनके सिक्के पानेका जो अधिकार था वह स्थगित कर दिया गया। लोगोंको नाटोंसे अपना आर्थिक व्यवहार चलानेकी आदत हा गई इसलिए द्रव्यशास्त्री सोचने लगे कि गुद्ध सोनके सिक्कोंसे लेन-देन चलाना बहुत खर्चीला और अनावश्यक है। अतः एसी कोई पद्धति खोज निकालनी चाहिये जिससे सोनेके सिक्कोंका उपयोग विय बिना ही स्वण चलनके सारे तत्त्व सुरक्षित रहे।

स्वण-पाट चलन

७ सन १९२५ में इंग्लण्डन अपन यहा कानूनस इस प्रकारका नया चलन आरम्भ किया। इस प्रथाको गुद्ध स्वण चलनस अलग दिखानके लिए स्वण-पाट चलनका नाम लिया गया। अंग्रजीमें इसे गोल्ड बुलियन स्ण्डड कहा जाता है। उसकी मुख्य बातें इस प्रकार ह

(१) पहलेसे समान लोगोंके लिए सोनके सिक्के टकसालमें ढाले नहीं जायग। केवल बक आफ इंग्लण्ड ही आवश्यकता होन पर सरकारा टकसालमें सिक्कोंकी कामतका सोना देकर सोनके सिक्के ढालवा सकेगा। इसके फलस्वरूप कानूनस नहीं परन्तु व्यवहारमें सोनके सिक्कोंका बाजारमें उपयोग होना लगभग बन्द हो गया।

(२) बक आफ इंग्लण्डक नाट किमी भी प्रकारकी मर्यादाके बिना कानूनी चरुनके रूपमें मुख्य द्रव्य रहेंग। परन्तु माग करने पर उनके बदलेमें सोनके सिक्के मिलना बंद हा गया।

(३) परंतु बक आफ इंग्लण्डक नाटोंकी साथ सोनके सिक्का जितनी हा है—इस बातका लागामें विश्वास बनाय रखनेके लिए नाचका दा बातें बक आफ इंग्लण्डक लिए अनिवार्य कर दी गई

स्वण-चलनके दोष

१२ अठे द्रव्यवा एव मुख्य लक्षण यह है कि बाजारकी जस्तताके अनुसार उसकी रागिमें घट-बढ़ करनकी सुविधा होनी चाहिये। परन्तु स्वण चलनका बढसे बढा दोष यह है कि व्यापारियाके सदृस बाजारके भावामें जब उथल-पुथल मच जाता है तत्र भावाको स्थिर बनानके लिए चलनकी रागिमें एकत्र आवश्यक घटती-बढती करना सरकारके लिए सम्भव नहीं होता। (चलनकी रागिका बाजारके गामाय भावाने साथ क्या सम्बन्ध है इसकी चर्चा हमने द्रव्ये मूल्य तथा महगाईनाके अध्यायमें की है।) हमारे पास सानकी जो कुठ रागि है उसकी तुलनामें सानका खानासे जो साना प्रतिवष निवृत्ता है उसकी रागि बहुत थोडी होती है। मान लीजिये कि बाजारमें मदी आ गई है और उस दूर करनके लिए स्वण चलनकी रागिमें वृद्धि करना आवश्यक हो गया है। अब खानासे सानका उत्पादन बढानका प्रयत्न किया जाय तो भी उस अधिक उत्पादनकी रागि इतनी पाडी होती है कि बाजारके गिरे हुए भावाको ऊचा चगानके लिए चक्रन रागिमें आवश्यक वृद्धि नहीं का जा सकती। इसके अतिरिक्त सानका उत्पादन इतनी मन् गतिस होता है कि चलनकी आवश्यक वृद्धि बाजारमें बहुत देरसे पहुच पाती है। कभी कभी तो ऐसा भी हाता है कि अतिरिक्त मोना बाजारमें इतनी दरसे पहुचता है कि उस समय तक उसकी आवश्यकता ही नहीं रह जाती। इस प्रकार देरसे जानवाले सोनके कारण कभीके बजाय बाजारमें आवश्यकतासे अधिक पूर्तिकी समस्या खडी हो जाती है।

१३ परन्तु बडी कठिनाई तो उस समय खडी होती है जब युद्धके समय अथवा एस दूसरे सकटक समय लोग अपन पास कागजी नोट रखनके बजाय सोना रखनके लिए अधिक प्ररित होते ह। अपन पासके नोटके बदलेमें साना पानक लिए लोग ऐसे समय सरकारी बन्के चलन विभाग पर धावा बोल देते ह। केकिन धनके पास सानकी रागि तो मर्यादित ही रहती है। ऐसे समय विन्यपत कमजोर या गरीब देशोमें नोटके बदलेमें लोगको सोना लिया ही नहीं जा सकता। बलवान और धनी देश भी सोना केनके लिए बहुत बडी सख्यामें आनवाले लोगोकी माग पूरी नहीं कर पाते। इस कारणसे सोनका चलन टूट जाता है। प्रथम महायुद्धके समयमें इंग्लंड जसे धनी देशको भी सोनका चलन छोड देना पडा था। १९२५ में वह बनी कठिनाईसे स्वण-पाट चक्रन पर आया था। परन्तु १९३१ से तो सानका चक्रन उसे पूरी तरह

छोड़ देना पड़ा। १९३९ से १९४५ के दूसरे महायुद्धके बाद कोई भी देश स्वर्ण चलनको फिरसे अपना नहीं सका।

१४ सानके वारमें दूसरी कठिनाई यह खड़ी हो गई है कि प्रथम महायुद्धके बाद एक देशसे दूसरे देशमें सोनका हर फर स्वतंत्रतासे होना बंद हो गया है। जिस किसी देशके हाथमें सोना आता है वह सोनको दबा कर बठ जाता है। अतः प्रजार भाव पर या विदेशी व्यापार पर उस सोनका जो असर पडना चाहिये वह नहीं पड सकता। दूसरा विषयद्वय आरम्भ हुआ उससे पहले ससारके स्वर्णकी कुल राशिका दो तिहाई भाग अमरिका तथा फ्रान्स का ही देश ब्वाबर बठ गया था। इस कारणसे अज्य हमारे देशको सोनके एक तिहाई भागसे ही अपना आर्थिक व्यवहार चलाना पडा।

१५ अनेक अर्थशास्त्रिषाण तो दुनिमामें फिरसे स्वर्ण चलन आरम्भ होनकी आशा ही छोड़ दी है। और बढतने अर्थशास्त्रियाका स्वर्ण चलनकी आवश्यकता भी नहीं जान पडती। बात यह है कि ससारका विनिमय-व्यवहार आजकल इतना ज्यादा बढ गया है कि यदि सबका शुद्ध स्वर्ण चलन प्रचलित करना हो, तो ससारमें उपलब्ध स्वर्णकी यतमान राशि इसके लिए पर्याप्त ही नहीं सकती।

१२

हमारे देशका चलन रूपये और नोट

१ विनिमयन साधनके रूपमें द्रव्यकी व्यवस्था अत्यन्त प्राचीन कालसे हमारे देशमें चली आइ मालूम हाती है। उस प्राचान कालमें द्रव्यके लिए दोर डगरता — विनापन गाथाका उपयोग हाता था। हमारे प्राचीन ग्रन्थामें अनेक प्रकारके वाक्य उपलब्ध हैं 'अमुक वस्तुआका मूल्य अमुक गाथे था या 'अमुक पडितको अमुक गाथे पारितापिकमें मिला। एसा लगता है कि गान या चालीने चलनका प्रचार ६० स० पूव तान सौग भी अधिक वर्षोंसे हा रहा था। इस वाक्य अनेक सिक्के प्राप्त हुए हैं। सम्राट अशोक समयमें ता साना-चादाक मिश्रकाका प्रचार काया व्यापन बन गया था।

२ हमारा देश एक महाद्वीपके समान है। उसमें अनेक स्वतंत्र राज्य थे। अतएव अनेक अनेक राज्यामें गाना और चाली दाना धानुअकि विभिन्न प्रकारके सिक्के चलते थे। एसा बना जा सरता है कि हमारे महा द्वि चलन पडति थी। चालीने सिक्का रूपके होते थे और सानके सिक्का मुख्यतः होन

दीनार तथा मुहर बहे जात थे। उत्तर भारतमें मुहरका अधिक प्रचार था और दक्षिण भारतमें हाया अधिक प्रचार था। ताम्र सिक्के दाम बह जात थे। टकसालें अधिकतर अन्धकारा लगाने हायमें हानी था, यद्यपि टकसाल चलानेके लिए सरकारका इजाजत नी पहनी थी। इस तरह सिक्काने विविध प्रकार होकर कारण एक साथ सिक्के दूगरे साथमें ती कर और धातुके कमकी परीक्षा कर ही स्वीकार किय जात थे।

कलदार रुपया १८३५ से १८९३

३ अंग्रेजी सत्ताकी स्थापनाके बाद इस्ट इंडिया कंपनीन टकसालमें रुपय ढालना आरम्भ किया। य रुपय काल कह जात थे। इससे पहलके रुपये बागाहीके नामसे पहचाने जात थे। कंपनी सरकारके रुपयको उसकी सनकार बगराव कारण पहचाननमें आसाना होती थी इसलिए वह अधिक लोकप्रिय हा गया। सन १८३५ में कंपनी सरकारन चलनकी पद्धति हटा दी और १/३ गुठ चादीका एक तोला (१८० ग्राम) वजनके रुपयको अमर्यादित मात्रामें कानूनी चलनका रूप लिया। इसके सिवा जो आदमी चादी लेकर आय उसे उतनी कीमतके रुपय दान देनेके लिए कंपनी सरकारन अपनी टकसालें खो दा। जिस व्यक्तिको जरूरत होनी उस पाच दस और तीस रुपयवाली सोनकी मुहर भी बाजार भावसे सरकार देती थी। सन् १८४१ म चादी और सोनके भावका अनुपात १५ : १ निश्चित करके उस भावसे सरकारके सारे खजानोंमें स्वण मुहर स्वीकार करनकी घोषणा की गई। परन्तु सन् १८४८-४९ में जास्ट्र लिया तथा केलिफोर्नियामें सोनकी नई खानें खोज निकाली गई जिसके फल स्वरूप चादीके अनुपातमें सोनके भाव गिर गय। इसलिए ग्रामके सिद्धान्तके अनुसार रुपय चलनसे लुप्त होन लगे। सरकारका लगान कर बगरा लोगन कम कीमतवाली मुहरामें चुवाना शुरू कर दिया। इससे सरकारको परेशानी होन लगी। और उसन १८५० में सोनकी मुहरका चलन बन्द कर दिया। कुछ वष बाद चादीके उत्पादनकी तुलनामें चादीकी माग ज्यादा बढ गई। तब टकसालमें मेहनतसे दान हुए रुपयाका लोग गगन लग। व्यापारी सोनके चलनकी माग करने लग। इसके उपायके रूपमें सरकारन प्रातीय बककी मुहरवाले स्वण पाटका चलन गुरु कर दिया। अमरिकाके गहयद्धके दिनोम अमेरिकासे रुईका नियात नही हो सका। उस समय भारतकी रुईके बहुत ऊच भाव मि और रुईके नियातके बन्देमें बहुत बडी मानामें सोना भारतम आया। इसलिए सन १८६६ में भारत-सरकारन पुन घोषणा करके इंग्लण्डके पौंड और आध पौण्डका क्रमसे ६० : १० और ६ : ५ भाव निर्धारित करके सरकारी

वजानामें उसका लन-दन गुन् कर दिया। मन १८७४ के बाद यूरोपक अधिकांश देशाने स्वयं चलन फिरस आरम्भ कर लिया। इससे पुन मानेका भाग बढ़ा और सानेक भाव चलने लग। ये भाव यहा तक बने कि रुपयेकी कामत दा गिल्लिंग (१० रुपयेका एक पौंडक हिमावस) गिरत गिरत मन १८९२ में १४ पैसे तक पटुच गइ। भारतका सरकार सन् ब्रिटिश व्यापारिया तथा अधिकारियाना हा हिन दखना थी। इसलिए भारतक रुपयेकी तुलनाम पीड इतना महंगा हा जाय यह सरकारका पुसा नहा सकता था। कारण जब पौंडका कीमत १० रु० था तब इंग्लण्डका एक पौंडका माल भारतक बाजारम १० रुपयेमें बिक सकता था। वही माल अब १४ पैसेके रुपयेक भावम भारतम १७ रुपयेमें बिकने लगा। भारतमें बन हुए तथा दूसर देशसे आनेवाले मालका तुलनामें इंग्लण्डका माल लोगका बन्तन महंगा पडता था और इस कारणम भारतमें उस वचनम बठिनार्द हानी था। इसक सिवा भागतम नौकरा करनवाले अग्रज अधिकारियाकी स्थिति भी बठिन हा गइ। अपने बतनमे वचाय हुए रुपयेके पीड बनाकर इंग्लंड भजन समय जो पौंड पण्ट उहें १० रु० में मिलता था वह अब १७ रु० में मिलने लगा। इसलिए उह भा नुकसान हान लगा। फिर कपना सरकारन जिस समय भारतक राज्यका हुक्मत ब्रिटिश सम्राट तथा पार्लमण्टका सौपी उस समय भारतको जाननमें तथा १८५७ का भारताय निपाहियाका विद्रोह गान करनमें कपनी सरकारका जा खच हुआ था वह सारा खच भारत-सरकारके नाम लिखा गया था। इसक अलावा अफगान युद्ध तथा एमे अय युद्धका खच भी भारत-सरकारके नाम लिख लिया गया था। इंग्लंडम भारत-भश्रीका ना आफिस रखा गया था उसका खच भी भारतके नाम लिखा जाना था। उसा अरसेमें भारतमें रल चालू की गई। उसका बज भा भारतक सिर आया। इसक सिवा भारतमें नौकरा करके इंग्लंड लौटे हुए अग्रज अधिकारियाका प्रतिवप पेंशन भा इंग्लण्ड भजना होती थी। भारत-भश्री इंग्लण्डमें भारत-सरकारके लिए आवश्यक फरनीचर सामान बगरा खरीदता था। एसा मद भागनेके नामम इंग्लंडमें हानवाला खच तथा इंग्लण्डमें भारत पर चले हुए कनका व्याज—यह सब पना भारतको प्रतिवप इंग्लंड भजना पना था। इन खचका होम चार्ज कहा जाता था। हम इने इंग्लण्डको दिया जानेवाला माणियाना कह सकते हैं। यह माणियाना पौंडक रुपमें दना पना था और पौंड बन्तन महंगा हो गया था इसलिए भारत-सरकारका प्रतिवप उतने हा बजब लिए अधिक रुपये देने पडन थ। इनस बजबमें भारी घाटा होना था। इन सब कारणाने

भारत-सरकारकी इच्छा किसी भी तरह रुपयकी कीमत बढ़ानकी हुई। भारत सरकारने इंग्लण्डमें भारत मन्नीका पत्र लिए जिनमें लिखा कि लोगोंने लिए रुपय ढालनवाली भारतीय टक्कालें बन्द करनकी सत्ता हमें दीजिय और किसी भी तरह स्वण चलन जारी करनकी सत्ता दीजिय। एसा परसे एक क़मटी नियुक्त की गई जिसकी सिफारिशोंने आधार पर सन् १८९३ में भारत सरकारने एक क़ानून पास करके लोगाने लिए रुपय ढालनवाली टक्कालें बन्द कर दा और यह घोषणा की कि जो लोग सोनके सिक्के या सोनके पात्र लेकर टक्काऊ पर जायेंगे उन्हें १६ पेंसका एक रुपयके भावसे रुपय लिये जायग। सरकारने क़ानूनसे रुपयकी कीमत अचिर निर्धारित कर दी इसलिये बाजारमें भी धीरे धीरे रुपयकी कीमत १६ पग मानी जान लगी। सन् १८९८ में दूसरा क़ानून बनाकर सरकारने यह तय कर दिया कि रुपयके साथ इंग्लण्डका पौंड भी १६ पेंसकी दर पर अर्थात् १५ रुपयका १ पौंडके हिसाबसे क़ानूनी चलनके रूपमें अमर्यादित राशिमें चक़ सवेगा।

काउन्सिल बिल और रिक्वैस्ट काउन्सिल बिल

४ १६ पेंसकी (विनिमय) दरको टिकाव रखनके लिए तथा इंग्लण्ड और भारतके बीच परस्पर एक दर पर पैसेका लन-देन हो सके इसके लिए जो प्रथा डाली गई उस पर हम यहां विचार करेग। इंग्लण्डका जितना माल भारतमें आयात होता था उसकी अपेक्षा सामान्यतः अधिक कीमतके मालका भारतसे इंग्लण्डके लिए निर्यात होता था। इस आयात निर्यातकी रकमें दोनों देशोंके व्यापारी बका द्वारा लदे गते उसके बाद भी इंग्लण्डके व्यापारियोंको काफी पसा भारतमें भजना पन्ता था। यह पसा भारतके व्यापारियोंको रुपयके रूपमें देना हाता था। इस प्रकार पसा लेने या भजनेका काम भी व्यापारी लोग बकाके द्वारा ही कर सतत थ। दूसरी ओर भारत-सरकारकी इंग्लण्डका सालियाना पौंडके रूपमें भजना पडना था। यह सालियाना भारत-सरकारसे वसूल करनके लिए भारत-मन्नी भारत-सरकारके नामकी रुपयाकी हुडी इंग्लण्डमें बचनके लिए निकालता था। भारत और इंग्लण्डके बीच चलनवाले आयात निर्यातके व्यापारके सम्बन्धमें जो अतिरिक्त रकम इंग्लण्डको भारत भजनी होनी उसके लिए इंग्लण्डके बक पौंड दकर य हुडिया खरीद गते थ। एसी हुडियाको काउन्सिल बिल कहते थ। भारत और इंग्लण्डके बीचका येन देन पौंड और रुपयकी हुडियो द्वारा होता था। इसलिए एसी हुडियोकी खरीद विनीके समय रुपय और पौंडके भावका जो अनपात निश्चित हाता उसे विनिमयकी दर कहते थ। काउन्सिल बिलकी विनीमें रुपय और पौंडके बीचके विनिमयका भाव

१६ पैसका एक रुपयेके आमपास रहना था। निश्चित भावके अनुसार ठाक १६ पैस न कहकर उमक आमपास इसलिए कहा गया है कि नम भावका आधार काउन्सिल विभागी भाग और पूति पर रहता था। इंग्लण्डका व्यापारी यदि पौंड अथवा सोना हा भारतमें भेज तो उसे भजनका खच लगता और उमके पहुचनमें जिनने दिन लगते उनन दिनके व्याजकी हानि भी उठानी पती। इर्माण यति बिल कम हा और उनकी माग ज्यादा हा तो पस भजनेमें वस्तुन जिनना खच लगता उतनी रकम अधिक खेर व्यापारी यह बिल सरकारके लिए तयार हा जाता। उसा तरह यति विभागी माग कम हा तो भारत-मन्त्राका भारतमें पस भगानमें जा खच हाना उतना रकम कम लेनके लिए व्यापारी तयार हा जाता। यह अतर पस भजनमें वस्तुन हानिवाल खचम अधिक या कम तो कभी हा ही नहा सक्ता था।

५ भारतका रुपय भेजना चाहनेवाग इंग्लण्डका व्यापारी भारत-सरकार पर लिखी हुई टुडिया भारत-मन्त्रासे खरीदकर टाक द्वारा अपन माहूकारका भेज ता या ताग्स उम मूचना कर दता था। भारतका व्यापारी यहाके सरकारी खजानेमें उहें लिखाना कि उसे रुपये मिल जात थ। इम प्रयाम इंग्लण्डकी सरकार भारत-सरकार पर निवन्ती रकम पौंडक रुपमें धर बटे वसूत कर सकनी थी और इंग्लण्ड व्यापाराका भारत पने भेजनकी सुविधा मिती थी। भारत-सरकारका लन-नैमका खाना भारत-मन्त्राके यहा चालू रहता था इसलिए जम्मत पन्न पर भारत-सरकार भारत मन्त्री पर पौंडकी टुडिया भी बचनक लिए निरागता। इम प्रकारकी पौंडकी टुडियाको रिक्स काउन्सिल बिल कहा जाता था। भारतक व्यापारा तथा यहा नौनरी करने वा अग्रज अखिारी जा पौंडक रुपमें अपन पने इंग्लण्ड भेजना चाहत थ, य रिक्स काउन्सिल रि' मगौले थ। इमना भाव भी रुपये १६ पैसक आमपास रहता था। भारत-मन्त्राका काउन्सिल रि' बेचनेके अवसर ता बहुत बार आत थे जस कि इंग्लण्डका सरकारक लिए रिक्स काउन्सिल रि' बचनक अवसर बहुत कम आत थ। क्वाकि सामान्यत माग्ने आपातका अगता माल्ना हमारा निर्यात अधिक रहता था। अताउ जम सक्टेने समय भारतका निर्यात घट जाता तथा 'रिक्स काउन्सिल रि' बेचनेकी आवश्यकता उत्पन्न हाना थी।

रुपयकी कीमतमें उचल-पुचल १८९३ से १९२७

६ लगाने लिए टक्काउ व् कराने वा वेर सरकार हा रुपये गलनका काम करती था। इसलिए सरकारकी नायब विाड र्'। वह पीरे

भारतकी बड़े सफटका मामला करना पन्ना भारतने किन्नी व्यापारका बहुत बड़ा नाग ता इन्डिया गाय होनवा उमने व्यापारका ही है किन्ना भी स्लिगन गाय रुपयेको जाडना आयन्यक है।

१६ इमने बिस्व भागताय गताथाना तक इग प्रकार था

(१) रुपयका स्टैक साय जोन्स स्टैलिन भावमें जो परिवतन हाग व ही परिवतन रुपयके भावम भी हाग। और स्लिगन भागमें हानवाके परिवतन तो इन्डिया आर्थिक और व्यापार-सम्बन्धी परिस्थितिक अनुसार हात है। इगलिए रुपयका भारतकी परिस्थिति पर नहा परन्तु इन्डियाकी परिस्थिति पर आधार रगना हाग। रुपयको उसक बट पर बाजारमें खडा रहने दिया जाय ता कुछ अस्थिरता अवन्य रहगी परन्तु वह भारतकी परिस्थितिका अनमार हागा उममें भारतकी परिस्थिति प्रतिबिम्बित होगी।

(२) रुपयका कामत सोनक अनुपातमें अत्यधिक घट जानके कारण मानका भाव खूब चड गया। इम कारण स्वण चरनवाले देगाके सिक्कके उदा इरणग लिए डालर और कुछ समय तक जापानके यनके भाव बहुत ज्यादा ऊच चट गय। इमन उह भारतस कच्चा माल खरीतनमें बडा लाभ हुआ। इन्डिया स्वण चरनका त्याग कर दिया उसने बाद जापानने कुछ समय तक अपन मग स्वण चलन जारी रखकर इम परिस्थितिस बडा लाभ उठाया। जापानके १० यनकी कीमत सामान्यत २० ८५ रहती थी। केविन इन्डिया स्वण चलन छोड दिया तथा जापानन चालू रगना इसस जापानी १० यनकी कामत बटकर ६ १३५ तक पहुच गई। उस समय उसन भारतसे खूब खरान कर डाली। पहले उम १०० यनके बदलमें भारतीय बाजारमें ६० ८५ का माग मिता था उसके बदल अब उसे ६० १३५ का माल मिलन ग्या। अपनी आवश्यक खरान करनके बाद जापानने स्वणका चरन छोड दिया। इसलिए पुन यनका भाव गिरकर लगभग ६० ९० हो गया। उस समय जापानको अपना तयार माल भारतके बाजारमें अन्य देगाकी तुलनाम खब सस्ता बचनकी सुविधा मिली। वह १०० यन देकर ६० १३५ का माल भारतने खानकर ल गया। बादमें उसी कच्चे मासे तयार किया हुआ १० यनका (उतरी हुई कामतवाला यन) माल वह भारतके बाजारमें ६० ९ में बचन रगा। दूसरे विश्वयुद्धसे पूव जापानी माल जो गहद मस्ता मिलता था उसके पीछ यह रहस्य था। विनिमय रमें चालवाजी करके जापान जो खड खल गया बसा खेल बार-बार नहा खला जा सकता। क्याकि उसके पन्स्वरूप दो राष्ट्राक बीच भयकर बरभाव पदा होनेकी सभावना रहती

है। दूसरा गणना भी यही प्रमाण पर राष्ट्र पर कर सकता है अथवा उम देश का माल अपने देश में आनस राक सकता है। इस तरह दोनों देशों के बीच मुद्रा स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

(३) मानक भाव यह है कि जब तक जानक कारण भारतक राष्ट्र राष्ट्रकें फसकर अपने पागल सारा सोना बचन लग। १९१३ १३ १९२६ के जून तक हमारे देश में २७६ करोड़ रुपये का माना राष्ट्र चला गया। यह माना भारत पुन खराब मरगा मम गना हा है। उन समयक महंग भावन बिरा हुआ हमारा माना आजकल भावका क्षेत्र हुए बन्त मन्ता प्रिग गया।

१७ हमारे रुपये के इतिहासका यह बहुत सूख और अल्प-मा वाली है। हम यहां उमकी मूल्य और अल्पता चर्चामें नहा उतर ह। फिर भी जिन मानी मानी वानाका चर्चा हमन की उतम इतना ता स्पष्ट मालूम जाना है कि विदेशी राष्ट्र हमारे राष्ट्र चलनका परिचयन हमारे हिनका दृष्टि नहा परन्तु विदेशी व्यापारक हिनकी दृष्टि माना था। इन महामुद्रक विनामें सरकारी मार पुगन रुपये चलन काचकर बहुत हा कम कामतक रुपये बनाय। एम ही रुपये आजकल चल रह ह। स्वराज-युगम भा कामना द्रव्य हमारे देशमें चल अधिग बत गया है जिस माना-वाणीका गनग काइ सहाग नहा है।

हमारा नोटका चलन

१८ म १८०० १८४० तथा १८४२ में क्रमग वाना वम्बई और मद्रास प्रमिडन्सीय बकाका चलन नोट छापनका मत्ता दा ग था। व नाए तीना विभागम कवल गहरामें ही चलन थ। म १८२१ में पेपर करन्सी एक पास किया गया। इन एकटने अनुमार बन्तना वम्बई और मद्रास इन तीन बन्तन नाए छापन शुरू किया। वामें रगून कराका वानपुर और गहौरन चार बन्तना उनक साथ जोकर गु सात बन्त बना दिय गय। य नाए अपने अपने विभागमें वानूना चलन मान जान थ। एसा तय किया गया था कि जिस बन्तन नाए छाप गये ह उन बन्तन करन्सा प्राप्तिस्त का व्यक्ति नोटके रुपये लना चाह तो उन रुपये मिग भरत ह। माय हा रन्ते बगतिना तथा यात्रिका विना भा सरकारी गजानन नाएद रुपये देनकी व्यवस्था की गई थी।

१९ इन नागरी सोने-चाँदीका महारा माना चान्ति। इनके लिए १८६१ के वानूनक यह निश्चित किया गया कि जिन नए छाप जाय उनके बन्तमें ४ करोड़ रुपये तरकी भारत-भारतना वनाने और वानन

नकद रूप्य अमानतों रूपमें रग जान चाहिये। सरकारी जमानतें इस क्रममें बढ़ाई गई सन १८७१ में ६ करोड़की १८९० में ८ करोड़की १८९७ में १० करोड़की और १९०५ में १२ करोड़की। इससे सिवा १९०५ में यह तय किया गया कि २ करोड़ रूप्य तककी ब्रिटिश जमानतें भी रगी जा सकती ह। भारत-सरकारकी जमानताको रपी सक्किरिटीज कहा जाता है और ब्रिटिश जमानताका स्टर्लिंग सक्किरिटीज कहा जाता है। स्टर्लिंग सक्किरिटीज में नाचकी चीजारा समावाण हाता है

(१) वर आफ इंग्लण्डके नोट छापनवाते विभागसे रपी जानवाली रकम

(२) इंग्लण्डके व्यापारिया पर लिखी हुई तथा ९० दिनमें सिक्किरनवाली हुडिया (३) पाच वषमें पकनवाठ ब्रिटिश सरकारने लोन वाण्ड आदि।

सा १९१४ में प्रथम विश्वयुद्ध छिडा उससे पूव कुल ६६२२ लाखक नाट छाप गय थ और उनक विरुद्ध नीचेकी अमानतें रगी गई थी

२०५३ लाखकी चादी भारतमें।

२२५४ लाखका सोना भारतमें।

९१५ लाखका सोना इंग्लण्डमें।

१००० लाखका रपी सक्किरिटीज।

४०० लाखका स्टर्लिंग सक्किरिटीज।

६६२२ लाखक कुल चली नोट।

२० प्रथम विश्वयुद्ध छिन्त ही लीगाके युक्त झुड नोटने रूप्य लेनके लिए करन्सा-आफिसो पर एक्त्र हान लग और युद्धके बादके पहल ८ महीनामें १० करोड़ रूपयाक नोट करन्सी-आफिसोमें बापिस आय। परन्तु कुछ ही समयमें लीगाका विश्वास सरकार पर जम गया और नाट फिरसे पहलकी तरह चलन गय। सरकारका माल खरीटना था इसलिए वह अधिक नोट छापन लगी। उनके लिए सोना-चादीकी अधिक मात्रामें अमानत रखना संभव न था। इसलिए सरकार अनक कानून पास करके जमानतोंकी रकम बगान लगा। १९१९ के सितम्बर मास तक करन्सी विभागको १२० करोड़ रूप्य तककी जमानतें रखनकी सत्ता प्राप्त हुई। चरनके नोट बढ़ते वन्ते १९१९ के अंत तक १८० करोड़के हो गय। उनके लिए दी गई जमानतोंमें १०० करोड़की स्टर्लिंग सक्किरिटीज थी।

२१ सन १९२० में पेपर करन्सी एक्टमें सुधार किया गया और यह ठहराया गया कि जितन नाट छापे जाय उनके लिए ५० प्रतिशत सोना चादी

अमानतके रूपमें रख जाय और ५० प्रतिशत जमानतें रखी जाय। द्रव्यकी तगीके मौसमम — विसानाकी फसल जब बाजारमें आती है तब बाजारम द्रव्यकी तगी खड़ी हो जाती है — इसी कानून द्वारा इपीरियल बककी जमानत पर ५ करोड रुपयेके अधिक नोट छापनेकी सत्ता करन्ती विभागको दी गई। १९२३म इस आक्टको बटाकर १२ करोड कर दिया गया।

२२ प्रथम महायुद्धके दिनमें चलनी नोटामें जो वद्धि हो गई वह उसके बाद स्थायी बन गई। १९३१म लगभग १६१ करोडक नोट चलनमें थे। अपवादके रूपम उस बपको छोडकर १९२० से १९३५ तकके वर्षोंमें कुल नोट १८० करोडके आसपास रह। १९३५में कुल १८६ करोडके नोट चलनमें थ।

२३ सन १९३५म रिजर्व बक आफ इडियाकी स्थापना हुई उसके बादसे नोट छापनेकी सत्ता रिजर्व बकको दे दी गई है।

२४ चलनी नोटोके सिद्धान्तोकी चर्चा करते हुए हमन कहा है कि जब किसी सरकार पर सकट आता है तब गायद ही कोई सरकार आवश्यकतासे अधिक नोट छापनके प्रलोभनसे मुक्त रह सकती है। आज नोटोका अति प्रसार (inflation) हा गया है और अभी वह बढता ही जा रहा है। दूसरे विश्वयुद्धसे पूब अर्थात् १ सितम्बर १९३९को चलनमें घूमनवाले नोटोका हिसाब इस प्रकार था

- ४४४१ लाखका सोना भारतमें।
- ५९५० लाखकी स्टर्लिंग सेक्युरिटीज।
- ७५८७ लाखका चाँदीका द्रव्य।
- ३७३९ गावकी रुपी सेक्युरिटीज।

२१७१७ लाखक चलना नाट।

नय स्वराय-युगम ता० ३१-५-१९६३के दिन चलनी नोटोका हिसाब इस प्रकार था

- ११७७६ लाखका सोना भारतमें।
- १०९०८ लाखकी स्टर्लिंग सेक्युरिटीज।
- ११८२२ लाखके सिक्का।
- १९७७४४ लाखकी रुपी सेक्युरिटीज।
- २२१८५० लाखक चलनी नोट छाप।
- २२८१४४ लाखक चलना नाट (चलनमें)।

२५ सन १०४५ तऱ भारती सरकार इंग्लण्डकी राजदार थी । परन्तु दूसरे महामुद्धके कारण इस स्थितिमें बहुत बढा परिवर्तन हा गया । इंग्लण्ड हमारे देशमें आनवाला मात्र लगभग बन्द जगा हा गया । हमार देशस होन वाले निर्यातको थोडा घबरा तो पहुचा परन्तु वह अधिकागमें चानू रहा । दूसरी आर, इंग्लण्डकी सरकारको इस मंगयुद्धा सिङ्गसिङ्गमें भारी खच करन पड । य खच उसने भारतस मारफत निय । इनमें मुख्य खच या अप्रीवामें इक्वटरी की गई सेनाजा तथा ईरान ईराक आदि जगामें सुरक्षित रखी हुई सेनाआके लिए सुराज और दूसरी सामग्री पहुचानका खच । इंग्लण्डकी सरकार यह सब करनेमें समथ नही थी इसलिए उगन यह सारा माल मुटैया करनकी जिम्मेदारी भारत-सरकारको सौंप दी और भारत-सरकार इंग्लण्डकी सरकारके मागजानमें हमारे देशस मात्र तरीकर जय जगामें भजन जगी । हमारे देशस माल तरीदनक लिए सरकार रिजब प्रथम चलनी नोट छपवान लगी । इा नाटाके लिए अमानतके रूपमें रिजब बकको इंग्लण्डकी सरकारकी जमानतें — जो स्टर्लिंग सम्पुरिटीज कहलाती ह — प्राप्त हुई । इस प्रकार हम इंग्लण्डके कानार मित्रवर उसके साहूकार बन गय ।

१३

द्रव्यका मूल्य और महगाई-सस्ताई

१ यह कहा जा चुका है कि द्रव्यमें विनिमयका एा समयाय सावन बननेका गण होनेस अथवा अय सब चीजाने मूल्यका माप बननका गुण भी होना चाहिय । द्रव्य इस तरहका माप या गन तभी बन सकता है जब उसके अपन ही मूल्यमें स्थिरता हो । जैसे घटीभरमें लम्बा और घनीभरम छोटा हो जानवाला गज कपड या दूसरी चीजाकी लम्बाई नापनके काम नंग आ सकता वसे ही द्रव्यके रूपमें काम आनवाली चाजकी कीमतम भी समय समय पर परिवर्तन हुआ करे तो अन्त-देनका व्यवहार करनमें बडी कठिनाइया पंग होनी रहें । यहा समय समय का जथ जल्दी जल्दी और बार बार अन्तना ही समझना चाहिय । वसे मनुष्यकी वनाद हुई किसी भा चीजमें बहुत अधिक स्थिरता तो कही भा देखनमें नहा आती । मनुष्य जातिन द्रव्यक किण साने चादीका मान इसाणिए पसन्द किया है कि जय सब चाजोंसे सोन चादीके भावमें अधिक स्थिरता पाइ जाती है । इतना ही नहा बल्कि जो आकड उपान ह उनसे माठूम हाता है कि सोन और चादीक भावका तुलनात्मक अनुपात भी

१६८१ से १८७१ तक लगभग दो सौ वर्ष समयमें—बीचके १७८१ से १८०० तकके बीच सातक असेके अपवात्को उत्तर जब सानका भाव बहुत बढ़ गया था—१ १५ क आमपाम रहा है। साने चानके तुलनात्मक भावाम बनी उयल-मुयल ता १८७१ क वात हुई है। तसस यूरोपक अधिकतर देगान अपन सानका चलन आरभ किया था।

द्रव्यका मूल्य

२ यह तो दा धातुआने भावानी तुलनाकी बात हुई। तन्वी अवधिमें सान चादीक भावानी तुलनाम जय सब चीजाने भावामें भी परिवर्तन हुआ पाया जाता है। सोन चादाको दीध बाटस हम द्रव्यक रूपमें कामम बन जाय ट। तस सान चादाक द्रव्य या स्विकाम पुरान समयम जितनी चीज खराती जा सक्तता था उतनी आज नहा परादा जा सकता। आइन-अजररी में त्रिय दृष्ट अलग जलग चीजाने भावा* और उहा चाजान आजक भावाम जमीन आसमानका अन्तर त्रिवाद दता है। इसका अय यह हुआ कि उन समय वतन ही द्रव्यमें जतिन मात्राम चाजे मित्र मक्तता थी। द्रव्यक मूल्यकी तुलनाम दूगरी चाजाना मूय कम था। द्रव्य मन्गा था और चाजे मन्तो था। आज उतन ही द्रव्यमें कम चीज मित्र सक्तता ट। एमलिए हम यह कह सक्ते ह कि द्रव्यका मूय घट गया है या कम सक्ते हा गय ट और उकी तुलनामें चाजे महगी हा गई ह। द्रव्यक मूल्यका जय है दूमरा चीने खरातनसी द्रव्यकी

* आइन-अजररी में ताके त्रिवा चीने एक रूपम त्रिनती मित्रकी था यह बनाया गया है। इन परम हमें यह कल्पना आ मरती है कि अजरख तमातमें त्रितना ज्यल मन्ता थी।

	सर (८० ताग)		सर (८० ताग)
घी	१०३	गहू	९०४
तल	१ ५	जरा	१०८५
गजर	१ २	राजग	१८०८
नमद	६७०	दा	१३५६
जो	१ ५६	चाव	५४२

आइन-अजररी'म मन्दूगका दर भा दा हुई ह। मामूगी मजदूरका प्रतिदिन ३ म ४ पने मित्र थ। रात तस वगरा कारागरतो ९ म १०। पन मिलन थ। परन्तु तस पमाता गरी तसि अधिक हानम उतने पैमामें थ अजी तरह ट मक्ता था।

चलनवा योग

७ दूगरी बात यह है कि यदि बाजारवाला जगती बाजार धरकर उता पग अपने घरमें न रखता है परन्तु उ बाजारमें घुमा जाता है तो उसका द्रव्य बहुत ही मोटा है गहन है और थोड़ा द्रव्य अधिक आधिक व्यवहार कर सकता है। यदि बाजारवाला अपने घर में जाकर रहता है तो बाजारमें हानिमात्र सीधे लिए कुछ मिश्रण अधिक द्रव्यका जरूरत होगी। एक हाथी दूधर हाथमें जिना तज्जस द्रव्य फिरला रहता है उम चलनवा योग करने में। चलनवा योग जितना अधिक होगा उतना ही कम द्रव्यही बाजारके मुल व्यवहारमें जरूरत होगी। चलनवा योग जितना कम होगा उतना ही अधिक द्रव्यका जरूरत होगा।

८ चलनवा योग आधार बाजारकी आत्मा और रानि रिवाज पर तथा उत्पादन स्वरूप पर हाता है। उदाहरणार्थ या चलन वषमें एक बार चुनना जाता है वहा अधिक द्रव्यका जरूरत पवती है। क्योंकि जब मनुष्यको वषमें एक बार चलन मिश्रण है तब वह अपने पाम उगे रख आता है और जब जब जरूरत हाता है वस कम खच करता रहता है। यदि वह अपने कामकी चीजें पूरे सालकी खटनी कराए उ तो अवश्य ही चना च्य अपभ्रष्ट जग घूमन लपगा। जहा सप्ताह या महीन भरमें चलन चुनानकी प्रथा हाती है वहा पसेक चलनवा योग अधिक रहता है और सारा व्यवहार कम द्रव्यस करता है। बाजारकी आत्मा च्य घरमें न रखकर वषमें रखनी है तो भी वह घूमना रहता है।

९ खताका उदाहरण है कि जिसमें खच तो होना रहता है परन्तु फसल सालमें एक या दो बार पवती है तभी किसानके हाथमें पसा आता है। जिस समय फसल तयार होना है उम समय किसानके नेनार साहकार और अनाजक व्यापारी विमानकी फसल खरीदनेके लिए गावामें जाते ह। वषासके मौसममें रिके दगा गाठम रपया बाधकर गाव गावमें पहुंच जाते ह। उस समय बाजारमें से पसा एकदम किसानके पास चग जाता है। उस समय बाजारमें द्रव्यकी माग अधिक रहता है और यह कहा जाता है कि बाजारमें द्रव्यकी तगा है। किसानके पासस द्रव्यका बाजारमें फिरसे चलनेमें देर लगती है। गरमाम गादी-व्याह गुरु होन पर किसान पसा खच करता है। फिर चौमासमें कामकी अधिकताके कारण और पान-आनेकी कठिनाईके कारण वह बाहर नहा जा पाता। इसलिए चौमासम उस जिन चौजाकी जरूरत होनी है वे सब चीजें चौमासा गुरु होनेके पहले ही वह खरीद लेता है। इसलिए फसलक समय

वाजारमें उत्पन्न होनेवाली श्रमकी तमी चामामक समय द्रव्यकी अधिकतामें बदल जाता है।

१० ग्रामाद्योगी पद्धतिमें उत्पादनमें भी मात्रा हरफर बहुत कम होता है। व्यापारिक मातीक उत्पादनका उदाहरण लें। पहले ता रईकी मरीचमें पसा रकता है फिर कत्तिनाका बनाईके काम चुनाय जाते हैं और मूल द्रव्यका होकर बुना जाय तब उसकी बनाई चुकानी पडती है। इस तरह वस्तु तन्मय समय तक पसा रका रहता है। वस्तु जब खादी मिलती है तब चुना होता है। इसलिए गावाम तथा ग्रामोद्योग और खेती प्रधान देशाम द्रव्यका चयन बग बहुत कम होता है। और उद्योग प्रधान देशामें द्रव्यका चलन-वग अधिक रहता है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि ग्रामोद्योग या खेती प्रधान देशाम पैसेकी अधिक जरूरत नहीं है। क्योंकि वहां जसे द्रव्यका चयन-वग कम होता है वस ही मात्रा हरफरका वेग भी कम होता है। विसातक पत्ता मिय हुए मात्रा बड़ा हिस्सा ता उसके अपन ही लक्षके लिए होता है इसलिए वह बाजारमें उस बचन नहीं जाता। इसी तरह जा लोग अपन उपयोगके लिए खादा या ग्रामोद्योगकी चीजें बनाते हैं उन्हें भी पसका जरूरत नहीं होती। द्रव्यके चयन वेगकी तरह मालका हरफरका भी वेग होता है। मात्रा हर हायस दूसरे हायमें जैसे जैसे अधिक जाता है वस वस द्रव्यका अधिक जरूरत होती है। पर गावोंमें मालका हायकर भी अधिक नया होता।

११ मनाद्यागिक उत्पादनमें और गहरामें मात्रा हरफर अधिक होता है। मात्रा उत्पादनक हायस प्रायः प्रायः मात्रा पचन ता मात्रा हाय पर अधिक बार और अधिक तन्मय होता है। अल्पता वहां भी यह ना पाया जाता है कि मात्रा हरफरके द्रव्यका चयन-वग अधिक होता है। दूसरे देशामें वहाँ ता उपलब्ध द्रव्यका कुछ मात्रामें से अधिक द्रव्य बाजारमें घूमता रहता है और मोटास निपटाराम अधिक द्रव्य उपयोगमें आता रहता है जब कि उपलब्ध मात्रा कुछ मात्रामें से अपभ्राजत कम मात्रा बिकरने के लिए बाजारमें रखा जाता है।

१२ इसमें यह स्पष्ट हो जाता है कि चयन-वग और मात्रा हरफरका बाजारका द्रव्य-मन्वन्ना स्थितिक माय बन्ना गहरा सम्बन्ध है। द्रव्यका तन्मा या निपुटताका आधार उनी पर रहता है। और तन्मा जार गभी चीजके भावा पर रहता है। परन्तु वस्तु शान्त समयके लिए नया रहता है। मात्रामें अमुक समय महगाईका और अमुक समय गम्भाईका रहा ही रहता है। परन्तु तन्मय समयमें हावाला भावका उत्तार चगवका आधार ता चयनकी कुछ मात्रा पर

ही रहता है। और यह मात्रा जम जस बढ़ना जाना है वम वम महगाई होती जाती है। युद्धक समय जस मरकार चलनी नागाका मात्राम एकत्र फुलावट कर देना है तस द्रव्यकी मात्राक भावा पर हानवाल् अमरता मिद्वान अमत्रमें आता प्रत्यक्ष त्रिवाई देना है। युद्धक समय मरकारो खजाने पर बडा जार पडना है। सरकारका बड बड तब करन ही पाने हैं और कर त्र्याकर या त्रान (कर) करर पसा बडा करनकी उमकी गक्तिकी सीमा आ जानी है। इसलिए अपन त्रिनात्रिन वत्रन जानवाल् खचका पूरा करनक त्रिए वह अधिक नाट छापनक उपायका आसरा लनी है। अब हम देखें कि हमका क्या परिणाम हाना है। जग जम नाट अधिक तेजोम चलनमें रख जाते ह वस वग उनना ही तत्राम उनकी कीमन घटना जाना है। फिर भी यदि नागाका मात्रामें बडि होता ही जाय तो मात्राकी वृद्धिके साथ साथ उनका चलन-वेग भी वत्रना है। क्वात्रि लाग देखने ह कि पसा उनके हाथमें घानो दर भी रहता है ता उनमें ही उसका मूल्य और खरीत गक्ति घट जाना है। त्रसत्रिए पैसा हाथमें आने ही वे तुरन्त उम मालमें वत्रल डालनक लिए उत्पुव रहत ह। इसलिए नागाकी मात्रा जितनी वत्रती है उससे भा अधिक उनकी कीमन पत्र जानी ह। इमके वत्र भी यदि नागाका बडना जारी रह तो एसा स्थिति आ जानी है जस कोई पक्ति नाटाको हाथमें लनके लिए भी तयार नहा हाना। चत्रनका मारा तत्र अस्त-पस्त होकर टूट जाता है। चत्रनी नागाकी कुठ भी कामत नही रह जाती। एसा इसलिए नहा होता कि उनकी मात्रा और चलन वग बहुत वत्र जाने ह वलिक त्रिए होता है कि लोगाका उम पर जरा भी विश्वास नहा रहता और कोई मात्राके बदलमें नाट लेनको तयार ही नही होते। द्रव्यकी माग बिलकुल वत्र हो जाता है अर्थात् द्रव्यक बदलम कोई अपन पासका माल देनको तयार नही होता।

१३ प्रथम महायुद्धके बाद एसी नौपत जमनी और आस्ट्रियाम जाई थी। हमारे दगम १९४१-४२ में त्राम अपन पास किसी भी रूपमें द्रव्य रखनके बदले उससे मकान जमीन और दूसरा माल खरीदनके लिए उत्रट पड थ। मद्रा प्रसार हानमे द्रव्यकी कीमन ता घट ही जाती है परन्तु जब तक लोगाका सरकार पर विश्वास रहता है तब तक त्र्यापार घधा चलना रहता है। भाव त्रर वत्र जाते ह परन्तु व्यवहार नही रक्ता।

१४ चत्रनकी मात्राम जीर वगमें होनवागै घट-वत्रके कारण जो महगाई या सस्ताई होती है उसका असर ममाजके अलग अलग वग पर

अलग अलग हाता है। उसकी चर्चामें उतरनम पहल हम यह विचार करेंग कि महगाई या सस्ताईका जन्म लगानके लिए बाजार भावकी सूचीसख्या किस पद्धतिसे निकाली जाती है।

भावाकी सूचीसख्या निकालनकी रीति

१५ भाव किस अनुपातम बढ या घट है और कितनी तेजीस बढते या घटते हैं इसका माप लगा मकनक लिए भावाका सूचीसख्या निकालनकी पद्धति खोजी गई है। किसी भी एक वपको आधार मान लिया जाता है और उस वपके भावाके साथ बाकाके दूसरे वपोंके भावाकी तुलना की जाती है। सामान्य उप योगकी कुछ महत्वपूर्ण चीज पमन करके तय किय हुए आधारभूत वपमें जो भाव है उह १०० की सूचासख्या दी जाती है और दूसरे वपोंके इहा चीजाके भाव लेकर उनकी आधारभूत वपके भावाके साथ तुलना की जाती है तथा उनकी घटनी बढताका प्रतिगत निकाला जाता है। नीचेके कोष्ठकस ऊपरकी यह बात स्पष्ट है जायगी।

भावामें घट-बढ बतानेवाला कोष्ठक

[१९१ - १९२०]

बगाली मनवा भाव

वपनक २० गजके औसन

धानका भाव सूचीसख्या

वप	चावल			गहू			जुवार			नमक			
	र	आ	पा	र	आ	पा	र	आ	पा	र	आ	पा	
१९१३	५-३-०	५-११-६	-०-	०-८-७॥	५-४-०	१००							
	(१००)	(१००)	(१००)	(१०)	(१००)								
१९१५	६-०-०	५-६-०	४-८-०	१-४-०	४-२-०	१२२							
	(११६)	(१४४)	(१०८)	(२३२)	(७९)								
१९१७	५-१-०	४-१२-	-१-२	२-४-	७-२-०	१७५							
	(९७)	(१२९)	(१०२)	(४२०)	(१३६)								
१९२०	८-६-०	७-०-०	५-८-०	१-८-२	१४-२-०	२१६							
	(१६१)	(१८८)	(१८२)	(२८०)	(२६९)								

पाच बाजाके भावका घटता-बढनाक प्रतिगतका याग १०८१ होता है। इसमें पाचका भाग नन पर १६ का मर्या आता है। १९१२ क भावकी सूचासख्या हमन १०० माना है। उसकी तुलनामें १९२० क भावकी सूचीसख्या २१६ हाता है। इसलिए यह कहा जायगा कि महगाई जतन अनुपातमें बढ़ा।

१६ भावकी सूचासख्या नितालाए लिए अधिवन्तर सामाय उपयागरा चीज चुननी चाहिये। अगर गिवा सब चीजें एग हा प्रवारका नहा होनी चाहिये। अलग अलग प्रवारकी हानी चाहिये। क्याकि हा सन्ता है कि कुछ प्रवागकी चाजान भावाम अमुक अनुपातम घटती-बढ़ती हुई हो और दूसरे प्रवारकी चाजान भावामें सबया भिन्न जीर उल्ट हा अनुपातमें घटना बन्ती हुई हा। एक हा प्रवागकी चाजान भावामा जीसन निताला जाय ता उस परस सबसामाय भावाकी सच्ची घटती-बढ़तीका स्याऊ नहा आ मरता। बहुत बड जन-समुदायक दनिर उपयागकी एमी सत्र चीजें चुनना चाहिये जिनके बिना काम न चल मरता हो। भावाक जावन निवाह पर हानवाके असरका हमें विचार करना हो ता मकान निराया काम पर जान-आनक लिए हानवाका बाहन-खच नियारतीका खच बगरा चाज भी इगम गिनता चाहिये। स्यावर सम्पत्ति आर उमकी कीमतना विचार हम करत हा ता भाजके परिवर्तनाको भा ध्यानमें रगना चाहिये। आम तीर पर भावकी सूचासख्या निवागनक लिए तीसरा एकर माठ-मत्तर ता चीज चुनी जाना ह। जिनर निश्चिन्ता गनक लिए सनडा चीजें एकर भा भावाकी सूचासख्या निवागी जाता है।

१७ दूसरा प्रश्न यह सडा हाता है कि कौन्ता भाव गिनतीमें लिया जाय? फुटकर भाव या व्यापारीका थोर भाव? फुटकर भावम अलग अलग स्थाना पर अलग अलग भाव होत ह। इतना हा नही अलग अलग ग्राहनेके आधार पर भी भावमें फक पन्ता है। कमलिए फुटकर भावमें काइ निश्चिन्ता नही रहती। व्यापारीके भाव भी जग जग बाजारमें जग अलग हाते ह। फिर भा भावकी सूचीसख्याक सामाय हिमावक लिए व्यापाराक भाव हा पसन्द किय जात ह। और दगम जितने मुख्य बाजार हाते + उन बाजारके भावका सूचीसख्याका जग अलग हिमाव रगाना जाता ह। परन्तु जहा मजदूरके वस्तनकी कमी रगीके प्रश्नके लिए भावकी सूचीसख्याका हिमाव रगाना हो बहा अलग अलग गहगेके मजदूरक लिए वहाके मजदूर मुन्ताके फुटकर भावका हिसाब लगाना ही उचित है क्याकि मजदूर त्रोग अपनी जरूरतकी चीजें फुटकर ही खरीन्ते ह जीर उनके निवाह-खचका विचार करना हो तो उह जो भाव देने पडत ह उन्तीका हिसाब करना चाहिये।

१८ जब प्रश्न यह पदा हाता ह कि गमाजमें सभी चीजें एगमी मात्रामें काममें नहा ली जाता जीर उपयोगिताक विचारस एकम मर्दवकी भा नही हानीं। कुछ चीजामें समाजका जायका बन्त छोटा भाग खच होना है आर कुछ चीजामें उसकी आयका बन्त बडा भाग खच होना है। दोनाका एकमी समर्थ

ता हमारा माप त्रिगुण गन्त निकरगा। उदाहरण के लिए मान लीनिय कि नमकका भाव दस गुना बर और अनाजका भाव दुगुना बने। इन दो परिपत्तनाका हम एकस समझ ता हमें मानना पन्गा कि नामाय भाव छह गुना बर गया है। परन्तु नमक पर हम नना कम खच करना होना है कि उमके भाव दस गुन पन्त पर भा हमें इतन ज्याया नहा गटक्ते जिनन अनाजके दुगुन भाव गटक्ते ह। यहा बात अनाज जोर कपट पर लागू हानी है जोर कपडमें भी मामूठी कपट और फन्ना कपट पर। इन सब चाजाका एकसी समवनर यति जासत निराना ताय ता यह जौगन हमें गन्त रान्न ७ जानवाय सिद्ध हागा। यह दोष दूर रग्नक लिए हमें एसा करना चाहिय कि नमरकी अशेक्षा हम अनाज पर सीगुना गच मानने हा ता नमककी सूचामख्या एर और अनाजकी सी गिनर रचना चाहिय कपटका जन ता अनाज पर हम दस गुना खच करते हा ता कपटका सूचामख्या एर जोर अनाजका दस खकर हिमाव ग्याना चाहिय। नीचके उदाहरणस यह बात स्पष्ट हा गायगा।

आधारभूत वष १९१३

वाष्का वष १९२०

अनाज (२म गुना) = १०००

अनाज (२म गुना)

वृद्धि २०५ प्रतिशत = २०५०

कपडा (एक गुना) = १००

कपटा (एक गुना)

वृद्धि २६९ प्रतिशत = २६९

११००

२२०९

कुल ११ गुनका औसत = १००

कुल ११ गुनका औसत = २०९

१९ जिम चीजकी खपत अधिक हानी है और जिम चीज पर खर अधिक हाता है उम जो बिगप सूचासख्या या प्रमाण लिया जाता है उमके लिए कहा जाता है कि उम पर इतना अधिक भार लिया गया बार इस तरह गिन दुण भावका सूचामख्याको भारवागी सूचामख्या कहा जाता है। भावका सूचामख्या गिननमें पूरा निश्चिन्ता खानक लिग और भा कुठ रीतिया भाजमाद जाती ह। खनि वे जटपटी होनी ह इसलिए हम उनर चक्करमें ना पन्गे।

२० हमार दगम गावाका कितना उवगभुवग हूद है य लिखान लिए भावका सूचामख्या कुछ उदाहरण लिये जान है।

वष	भावना सूचासङ्ख्या
१८७३	१००
१९००	११६
१९१३	१४३
१९२०	२८१
१९२१	२८१
१९२५	२३६
१९५०	१७१
१० ६	१२५

ऊपरक आकड पुर विश्वस्त नही मान जा सकत क्याकि १८७३ स १८९७ तक लगभग ५९ चाजाक जो भाव लिय गय ह उनमें उपयोग और खचके निमावस जा भार देना चाहिय वह निया नही गया है। कम सिवा खानकी चाजाके भावना हिसान गगनकी प्रथा १८९७ क बाद गुरू हुई है। फिर भी इन आकड परसे हम इतना ता कह हा सकत ह कि १९०० से १९२५ तक द्रव्यकी कीमत घटती गई है। १९३० म १९३६ के बीचका समय भावाकी भारी मनीवा अर्थात् अनिगय सस्ताइका माना जाता है। फिर भी उस समयके भाव १९०० क भावास ता ऊचे ही ह।

२१ अत्र थोडसे आकड १९२९ क वषको आधारभूत मान कर दें।

वष	भावकी सूचासङ्ख्या
१९२९	१००
१९३८	७०
१९३९	७५
१९४	८१
१९४१	९४
१९४२	१५१

ऊपरक आकड खास तौर पर जीवन निवाहकी चीजाके हैं। उन चीजाके भाव १९४२ से एकदम चढन लग और चढ़ते ही जा रह ह।

२२ नीचेके आकड दूसरा महायुद्ध आरम्भ होनस कुछ ही पहलेके अर्थात् १९३९ के अगस्तके भावको १० मानकर लिय गये ह।

वर्ष	साथ पचासवें भावका	सत्रमासाय भावका
	सूचामरका	सूचामरका
१९२०	१००	१००
१९४०	११७	१२७
१९४१	१०८	११८
१९४२	१	१४५
१९४२	७१	२२०
१९५७ (दिसम्बर)	४०६	४२९

उपरक आकृति यह बतात है कि जम जम नागर चरणमें प्रसार हाना गया वस वस चाजक भाव बतत गय ।

२३ इम सूचामरका रपदाग मजदूरा और वतनका दर निश्चित करनमें और यह ट्टगनमें लिया जाना कि अनाधारण मरगाइका म्बितिमें महगाइ भत्ता कितना लिया गाय । परन्तु जितना तजाम भाव बततत है उतनी तजीम मजदूराका दर नहा बततत जाना । इमर लिया नहा मजदूराका मगतन बतत मजबूत हाना है वरी एन परिबतन कराय ता मकत ह । जिन गरावाका आमरता तजाम नहा बत मकता उहें ता एमा महगाइमें भारा मुमीमन ही उठाना पता है । व्यापारिगामें भा भावका तजाम हानवागे उवल पुयगम कुछ व्यापारा ता वभा लन और कुछ गवा बतत ह ।

महगाई-सस्ताईका समाजक अलग अलग वर्गों पर अतर

२४ भारा महगाई या मरगाइ मार अय-अयवहारका अमन्यमन कर दती है । कुछ लागका बिना कारण और अनुचित गम राना है और कुछ लागका निर्णय हान हुए भा अनुचित नकमान उठाना पता है । अला आग वर्गों पर हानवाग म तरक अमरक कुछ उठारग यहा लवें

(१) साहूकार और बजतार जय चाजक भाव बत जान ह और महगाइ हो जानी है तब साहूकारका नुकमान राना और बजतारका फायदा हाना है । दूसर विवयुद्धक पहल मारारा तुठनामें १०४ क अतमें चीनकि भाव गमग तिगुन ही गय य । अत यति युद्धक पतक बजका रकम साहूकारका १९४२ में वापस मिठ ता गन हा रय मिठन पर भा युद्धक पहल उन रपयामे बत जितना चाजें मरार मकता या उतक नागर हिमिका चाजें ही वह १०४ में तरार मकता था । जब महगाइ हा जाना है तब बत दारका बजका वास कम ही जाना है । अनाजक भाव बतत चढ़ जानक कारण

और जमीन का नाम बढ़ जाना कारण हमारे बसुनेर जिगा तजम मुक्त हा गय ह। दूसरी तरफ तब सरस्ताइ हा जाता है तब बज्जोरना तजम भाव बट जाता है। १ के बाट जब छानान बप मा 14 चाये तब हमार बज्जोर विज्ञान की मनायतम फग गय थ। एर तरफ ता कमर भाव उह एतन बम मिगन थ दि गतारा गय भी नहा निरत गयना या और दूसरी तरफ बज्जोरी रयम गीगनर गिए पन्म बहून अधिर फगठ बचनी पन्ता थ।

भाज्जोरी उयठ-पुयन्ना अगर ग्या अवधिमें पूर हानवाठ टका पर भी बन्त हाता है। यति जिता बज्जोरन बाइ बग मजात यनानका ठरा क्रिया हा और बाचम थट चाा सीमन् गग और लन्ने आगिया भाव बट जाय ता बज्जोरका नुबसान उठाना पन्ता है। जिगा गागाशन एर साल तब मा एमी हा किनी ग्मी अवधिग गिए जिगा छात्राप्यका या अयन्ताग्या निचित भावसे थ दनका ठरा क्रिया हा और प्रीचमें गापनी खुराफ और घाम चारक भाव बट जाय और दूधवा गगत कामन महगा पन् लम ती गागागयो नबसात उठाना पडता ह।

जिन लोगान सरकारक या स्थानीय सस्थाआक ग्मी अवधिके रगेत या वाड गिय हा उह भा भावकी उयठ पुयन्से अनायाम गम या बिग कारण नबसान हो जाता है।

(२) उत्पादक और व्यापारी बग उत्पादक और व्यापारी हमेशा महगार्की पसन् करे ह। भावकी तेज उयठ पुयल होनके कारण उत्पादन खच और वागार-बीमतये बीच बडा अन्तर पड जाता है। तेजिन बाजार भाव जितनी तेजीमे बन्ते ह उतनी तेजीसे उत्पादन-खच — मजदूरीकी दर आदि — नही बन्ता। भावकी बढिके साथ एस दरका मठ बटनमें देर उगती है। बच्चे मागका भाव बडनक साथ ही उत्पादक लोग तयार मागका भाव भी बग दते ह यद्यपि उनका बच्चा माठ भावबढिके पहा गीर सस्ते भावसे खरीग हुआ होता है। इसलिए तब तक सभी प्रकारके भाव समान रूपसे बने उस बीच उत्पादकाका खच नका होता है। फिर जब भाव बन्ने जाते ह तब व्यापारियाका भी अधिकाधिक नफा मिलता जाता है। खास तौर पर पुरान व्यापारियाकी तो पाबा जगुगिया धीम होनी ह। सामायत उत्पादक और व्यापारी भावकी म दीकी पसन् नही करते। भावकी तेजी मन्नीमें मानसगास्थका एक बिगप व्यापार भी काम करता है। जब भाव बन्ते ह तब सभी व्यापारी तेजी ही तेजी देखते ह और जब भाव गिरन

लगते ह तब सभी व्यापारी मदी देखा करते ह। ऐसे समय कुशलतापूर्वक हिसाब लगानवाला और धीरज रखनवाला जादमी फायदमें रता है। बसे महगाईम खूब नफा कमानका आनन्द और सस्ताईमें नफा कम हो जानका दुःख भी एक मानसिक घटना ही है। क्याकि महगाईमें पस अधिक मिलन पर भी उनकी खरीद शक्ति घट जानके कारण तथा सस्ताईम पस कम मिलन पर भी उनकी खरीद शक्ति अधिक हानने कारण मच्चा जायिक स्थितिम बहुत बडा अंतर नही पडता।

उत्पादक और व्यापारिक कपनिया सामायत बज्जार होती ह इसलिए भी महगाईम उह लाभ हाता है। यह दूसरी बात है कि इन कपनियाके हिस्सदारामें बहुतसे व्यक्तिव रूपमें लेनदार भी हात ह।

महगाईक समय मालका आयात अधिक और निर्यात कम होता है। आयातके मात्रकी कीमत चुकानके लिए सोना चाणी देना बाहर जाता है। बागजी द्रव्य तो बिनेगामें किसी कीमतका नही होता इसलिए सोना चाणी ही बाहर भजना पडता ह। अतवत्ता यद्धके कारण हानवाणी महगाईम तो आयात निर्यात दोनों ही कम हो जात हैं। परन्तु उनका कारण महगाई या सस्ताई नही बल्कि युद्धक कारण आयात निर्यात धरनकी असुरक्षित स्थिति होता है।

(३) याजकी दरो पर असर सामायत एना माना जाता है कि महगाई भरयत तो चठनकी मात्रा बन् जानक कारण पन् हाती ह और द्रव्यका मात्रा यदि बन् गई हो तो पूति और मागक सामाय नियमक अनुसार याजकी दर घट जाना चाहिय। परन्तु दरता यह जाता ह कि तेजाके समय याजका दर उची होता है और मदाक समय याजकी दर नाची होती ह। इसका कारण यह हाता है कि तेजाके समय द्रव्यकी पूति बन् हुन हान पर भी द्रव्यका माग बन् हुई पूतिस अधिक हाता है। क्याकि तामें उत्पादका और व्यापारिका बडा नफा हाता ह जिसमें उनका सुकार अपन उद्योग मध वानका तरफ होता है और व अधिकाधिक पूता लगानका तत्पर हात ह। तामनि मीधा ता पसा मित्र उम ता बल् हा त्त ह परन्तु बका भी अधिक पसा निकालत ह। इसलिए याजका दर बन्ना ह। तब मनी हाता है और नफकी आगा घट जाती है तब उद्योग मध भा म् पड जान ह पूजाका आवश्यकता कम हाती ह और घधवाका बकन तथा निरायनका आवश्यकता न्ना हाती। इसलिए म्गाक समय याजका दर गिर जाना ह। हा म्गाक समय उत्पादक भविष्यमें अधिक नफा कमानका आगामें मात्र जमा करक भी रते ह और जमा करक रखनके लिए उह अधिक पूजाकी आवश्यकता पन्नी

है जोर उमरे लिए व्याज बनवा कर लपार भी शक है। दुर्गति सजात समय याजना दर बन्दगी जितनी सम्भावना हानी है उतना सम्भावना मनीमें याजना दर घटनवा गहा शाना।

(४) मजदूर-बग यह बग जा चरा है कि महगाई अनुपातमें मजदूरी दर बन्दमें हमगा दर लगना है। हा जय गस्ताइ हान लगनी है तव मजदूरी दरमें बमा भी तुरन्त नहीं हा मन्ती। कुछ त्रिनेप परिस्थितियाका हान में ता साधारण तीर पर यत् वहा जा मन्ता है कि महगाई मजदूरीना गभ नहा हाना क्याकि महगाई कारण मजदूरीना दर एवम् नहा बन् जाती जोर दर बन्दक बान भा मयवा परान गवित घट जानस मजदूरीका विगय गभ नग मित्ना। परन्तु सस्ताई हानग उहें जम्न गभ मिलता है क्याकि मजदूरीका दर घनमें दर गयी है और तन भरसमें व चान ता बचत कर सक्ते ह।

पर महगाई हान पर उत्पादनना प्रवति जोर यापार गता बन्दे ह। एमलिए मजदूरीको काम अधिक मित्ना है। उम समय बनारी त्रिकुल नहीं रहती। सस्ताई समय यापार घघमें मनी हानस बनारा बन् जानी है।

(५) बधी आयवाला बग पैगन पर याज पर या भाकी आय पर रनवा जोर सरकारी या दूमरी काई नौकरी करनवाके बधी हई आयवाल बगको महगाईक समय बहुत मगीबन उठानी पडनी है और सस्ताईके समय बहुत लाभ हाना है। क्याकि महगाईमें उनकी आयमें अधिक अन्तर नहा पन्ता जोर खच बन् जाता है। याज या भाकी दर हर बानी बन् जाता है या महगाई भन्ता घाडा मिन् जाता है। ऐतिन बह बनी हई महगाई जितना अधिक नहा मिलता। सस्ताईमें खच थाना हाना ए मलिए रुपये आन-पाइम आयकी रकम उननी ही रहने पर भी वास्तवमें इम रकमकी खरीद गवित बन् जानने कारण उस जायमें वडि ही कशा जायगा।

(६) सबसामाय प्रभाव महगाईस एक सामाय नुकसान यत् होना है कि उम समय उगभग सभी वर्गोंक हायमें पमा अधिक जाता है जोर पसनी कामत बहुत घट जानसे उ में खे हाथा खच बनकी आन्त हो जाता है। स तरह पनी हई आदत बनी रहती है और परिस्थिति बन्दने पर यह जान्त एवदम घट ननी सक्ता। दूसरा नुकसान यह है कि कुछ गगानी आय बनी हुइ महगाईक कारण जितना बन्ती चाहिय उससे बन्द ज्यान्त बन् जाना ह और कुछ लागवी जाय त्रिकुल नहा बन्ती अथवा जितनी बन्ती चाहिय उतना नहीं बन्ती। इसलिए समाजमें भारी आर्थिक असमानता पदा होती ह।

मन्त्र तो यह है कि मारे समाजकी दृष्टिसे मारें ता भावाकी भारी और तेज उद्योग पुनः आर्थिक प्रगति और सुख गतिन लिए त्रिलकुल अच्छी चीज नहीं है। दुनियाका अर्थ-व्यवहार गति और सरलताय साथ चले इसके लिए यह बहुत ही जरूरी है कि भावाम काफी स्थिरता रहे।

२५ प्रथम त्रिविधपद्धत माल भावामें जा बटी उथल-पुथल हानी रही है उसका कारण इस बट प्रश्न पर बहुत अयोग्यता और विचारका ध्यान गया है। इस मालप्रश्न अनवश्यकता यह मत है कि किसी भी देशके चलनेके दूसरे माल प्रश्नके साथ होनेवाले विनिमयकी दर स्थिर रहना विशेष व्यापारके लिए आवश्यक है परंतु देशके अन्तर्के भागमें स्थिरता रहना उसमें भी अधिक आवश्यक है। मुख्यतः हमारे रपयका त्रिदिग व्यापारके हितको ध्यानमें रखकर स्टाबिलिटी साथ जोड़ा गया था और विनिमयकी दर भी अत्यंत व्यापारिक हितकी दृष्टिमें ही समय समय पर बदली गई थी। इस कारणसे हमारी भावरी अर्थ व्यवस्थामें अनर कठिनाइया खरी हो गई थी और हमारे किसान तथा दूसरे उत्पादक और व्यापारियोंका बहुत नुकसान उठाना पड़ा था। ऐसे भीतर द्रव्यके मूल्यका स्थिर रहना और उसके कारण भावाका भी स्थिर रहना विशेष व्यापारमें भी देशकी आर्थिक प्रगतिके लिए अधिक आवश्यक है। इसलिए हर देशका अपने चलनकी मात्रा पर सावधानीसे अत्यंत रखकर अपनी द्रव्य-सम्बन्धी नातिके नियमन करना चाहिए। सभी देश इस प्रकार नियमन कर तो फिर एक देशका दूसरे देशके साथ होनेवाला व्यापार अपने-आपे नियंत्रणमें आ जाय।

२६ ऐसा नियमन किस तरह हो सकता है, यह एक बड़ा और ठीक प्रश्न है। इस बारेमें काफी सहायक हो मन्त्र इस हतुस अविद्यके चलनकी याचना अत्यंत प्रवर्णन दा गई है।

भविष्यके चलनकी योजना

१ द्रव्यकी रोज मूल्य ता विनिमयके एव साधनके रूपमें हुए जीर अनुभवन यह यताया कि एक अच्छा पाधा बननके त्रिए द्रव्यके मूल्यमें काफी स्थिरता रहनी चाहिये। सान चा त्र द्रव्यमें जीर उमन मगरे चलनका चलनमें आरभमें ता अजी स्थिरता रहा जिन प्रयण महायद्धन वा द्रव्यके मूल्यमें वस्तु धरी उद्यम-गुणन हा गन है। सोनके चलनके दागामें हम यन दख चुन ह कि चलनके आधार रूप सानका बढा वन हिस्सा दूसरे विनयद्धन पहा अमरीका और फ्रांस य दाना देन ही त्वाकर बठ गय व। चलनके आधारके रूपमें सान चाणीका रनता भी ता आगिर एक साधन ही न। साध्य ता भावाका स्थिर रहना है। जीर उसम भा विनैगान सायके व्यवहारमें भावाका स्थिर रहना जिनना महत्त्वपूर्ण है उसम अधिन महत्त्वपूर्ण देन भीनर भावाका स्थिर रहना है। परन्तु इम तरहका स्थिरता गनम पूरी गफनता नहा मिया।

२ दूसरे तात्त्विक दष्टिस हम दगें तो द्रव्य कोइ सम्पत्ति नहा है। कागजी नाट तो सिफ धातुके सिक्केके प्रतिनिधि ह और सिक्केकी धातु भी उपयोगकी दष्टिसे देखें तो काई बहुत महत्त्वकी या जावश्यक सम्पत्ति नहा है। जेकिन चूकि एसी अय-व्यवस्था स्थापित हा गई है कि मनष्यके पास न्य हो ता उससे जरूरतकी हर चाज कभा भी मिया सक्ती है इसतिए द्रव्यको ही सम्पत्ति मानकर गेग अपना सब व्यवहार करते ह। अपन भविष्यके उपयोगके लिए अय काई उपभाग-याम्य सम्पत्ति न रखकर गेग द्रव्यको बचाकर उसीका सग्रह करत ह। यह दूसरी बात है कि यह सग्रह मिया हुआ द्रव्य के घरमें रख छोडें वनमें तमा करें या कित्ता उद्योग धधम उगा व। हमारी चक्कि विषयसे सक्ता कोई सम्बन्ध नहीं है। प्रस्तुत प्रान यह है कि द्रव्य कही भी रखा हो परन्तु उस पर रह स्वामित्व-अधिकारना अय-व्यवस्था पर क्या असर पता है। इस समय द्रव्यकी बहुत बडी माना पर तो समाजके बहुत छोट वगका ही अधिकार है। द्रव्यमे जो चाहिये सो मिल सक्ता है इसका अय यही है कि तिनके पास द्रव्य होता है व जिन लोगोके द्रव्यकी गरज या तगी हो—जीर बहुत बड गन समदायको द्रव्यकी गरज या तगी सदा रहती ही है जयवा एसी स्थिति पना कर दी जाती है जिससे उह द्रव्यकी गरज रहे—उन लोग पर उनके पासकी

चीजें तथा मवाए लेनके लिए आना चगानकी शक्ति रखत ह। एसा परिस्थितिमें इस यायकी रक्षा नहा हाना कि कोई आत्मी यत्नि ममाजमें अलग अलग बड़ आत्मियाक सहयोगसे उत्पन्न हानवाला चीजा या लागवा सवाजामे लाभ उठाना ह ता बन्लमें उस समाजके उत्पादनमें अपना हिस्सा दना चाहिये अथवा किसी न किसी रूपमें ममाजकी सेवा करनी चाहिये। जब तक मनुष्य केवल उपभाग-याग्य सम्पत्तिका हा स्वामी रह सकता था तब तक वह उतनी ही सम्पत्ति अपन पास रख सकता था जितना वह स्वय उपभाग कर सक और यदि थाली भा अधिक संपत्ति रखन जाता तो उस ठीक तरहम ममाज कर रखनके लिए उस कुछ न कुछ धर्म करना पन्ता था। किन्तु द्रव्य तो अनाया वस्तु है। उस सभालकर रखनके लिए बाइ स्वाग धर्म नहीं करना पन्ता। इतना हा नहा बजमें अमानतर रूपमें रखनस उमरी रक्षा हानके साथ साथ उस पर याज भी मिन्ता है। इसलिये जब तर मनुष्यके पास द्रव्य है तब तब याना बरसा तब ममाजके भन्ना कोई भा काम निय बिना बन्ल स्वामित्वका अधिकार भागनर कारण वह समाज अपना जम्हनका चाजें और सजाए न सकता है। जब उत्पत्तिर माधना पर स्वामित्व अधिकार हानके दूरन अनन गगाना गायन करनका अदमर मिन्ता है बग हा पसन स्वामित्व-अधिकारर कारण मनुष्यका मना आत्मा रहकर समाज पर बाय बननका अधिकार मिन्ता है।

स्वयंपयाज अय-व्यवस्थाम द्रव्यका कतनी अधिक जम्हन हा नया पन्ता थी। मता और उमके पापर गाय उद्याना पर निर्वाह करनवाला ममाज—ग्राम या थाने ग्रामाने समहवाग प्रन्त—पगन बिना जवना बटन याद पसम अपना कामकाज चग सकता था। किन्तु आजका रिगाए पमानवाग और विंगप कद्रिन स्वरूपका अय-व्यवस्थामें गाय ही कोई आत्मा द्रव्यके जन्म बच सकता है। हरएक आत्माका आज पग पग पर पमका जम्हन पडता है। ठठ भातरके और छाए छाए गावामें भा गहुरा और विन्तानि वाग्गानामें बननवाला चाजें पन्च गई हैं। उह मराननके लिए ग्रामवासियाका द्रव्यका जम्हन हाता है। फिर जमान-महमूए भरनके लिए भा उहें द्रव्यकी आवश्यकता हानी है। यह द्रव्य जुगननके लिए उहें अपना पन्तार वाग्गन व्यापारियाका बचना पन्ता है। यह सब व्यरनर जनरके लिए पन्ता नुकसानदेह हाता ह कि आज य ग्रामवासा गाहनागन बजस पर गय है। सब बजसा व्याज चुकाननके लिए उहें पमका जम्हन हाता ह। इस मिला इन गावामें गग्गारन गरवता दुकानें मोए ग ह

और शराबकी बुरी लतमें प लाग इतन अधिक पम गय ह कि अगले जायना बरबाद किया करते ह। कई गुटुम्र या गाव रपयज जोर पर चलनगरी गावाकी रस टूटस बचारा बिचार करे आधिक बातामें अपन परा पर लण हाना चाहट बाहरकी चाजें सरागा बर कर और शराबकी लत छान द तो भी जब तक सरकारी लगा और साह्यारका वज चुगाया बाका रता है तब तक वह द्रव्यन चगस निक ही नहा सरता। द्रव्यर लिए उमे अपना पदा किया हुआ माग या अपना श्रम बचना ही पटना है और यह सोना उसके लिए पाका हाना है।

४ आजकल रव्यन व्यवहार इतना अटपटा हो गया है कि सामान्य जनका यह समझना भी कठिन होना है कि द्रव्यन व्यवहारमें निष्पान यक्ति अगोको उसका नालमें बहा पमा गेते ह। उत्पत्तिवे साधना पर स्वामित्व अधिकार रखनवाके पूजोपतियाकी अपेक्षा द्रव्यने व्यवहारमें चागाव धनपति आनकाकी अथ-व्यवस्थामें बड महत्वका स्थान रखते हं और समाजक उत्पादनका सिद्धभाग (बहुत बग हिस्सा) स्वय ह्प गते ह।

५ आजकी द्रव्य-व्यवस्थाके कारण होनवाके इन सब अपायका दूर करनके लिए इस व्यवस्थाको सुधारनवागी कई याजनाए पग की जाना ह। अबता यह ध्यानमें रखना चाहिय कि जब तक बनमान अथ-व्यवस्था बनी रहेगी तब तक सिफ द्रव्यने सम्बन्धमें इस या उस याजना पर अमल करनसे आजके आर्थिक जगाम दूर नहीं हो सकने। उसके लिए तो उत्पादनकी सम्पूर्ण पद्धतिको ही जन्मूलसे बलनकी जरूरत है। और इस नई अथ रचनाक माय द्रव्यकी नई योजनाका भी मेरु बठाना चाहिय। फिर भी यहा द्रव्य या चक्रनके बारेमें जो योजना पेश की गई है वह नई अथ रचनाके अनुकूल साबित हागी। इस योजनामें यह सुझाया गया है कि चलनके आधार या महारेके रूपमें साना चादीवा माय करनके बजाय प्राथमिक जावश्यकताकी और अधिक मात्रामें काम आनवागी अमुर चीजें इसका आधार मानी जाय। इस तरह चक्रना नोट अमुक बजन और कमवाके मोनका प्रतिनिधि माना जानके बदके प्राथमिक आवश्यकताके अमक कचे मालका प्रतिनिधि माना जाय।

६ कुछ अमरीजन अध्यात्मियान यह सूचना की है और कुछ तो समुक्त राय अमरीकाके लिए यह धान सुझाने ह कि डालरको चुनी र २४ चीजोंके एक सास मापके समूहका प्रतिनिधि माना जाय और कुछ अग डाटरको रससे अधिक चीजाके समूहका प्रतिनिधि माननकी बात सुनान ह। डालर एक निश्चित बजन और कसवाके मोनका माना जाय इसके बजाय वह

अमरु निश्चित की गई वस्तुओं का समूहका माना जाय। ये चीज जिस मात्रामें उपयोग की जाय उसी मात्राम उर्द ऊपरके समूहमें स्थान दिया जाय। उदाहरणके लिए १० डालरका नोट एनी २४ चीजोंके समूहका जिनका कुल वजन मान लीजिय २४ मन हाना हो प्रतिनिधि माना जाय तो उसमें दो मन गह एक मन रई पाव मन गकर इन प्रकार उपयोगके महत्त्वके अनुसार कम अधिक मात्रा रखकर कुल मात्रा २४ मन किया जाय।* सत्र चाज एक ही मात्रामें ली जाय ता यायकी रथा नहा हो सकगा जाग कठिनाई भी पदा हो जायगी। किन्तु इस तरह व्यवस्था की जाय ता १० डॉलरका नोट कुल २४ मन वजनवागी २४ चीजोंके समूहका प्रतिनिधि माना जायगा। सरकारका चलन विभाग एस वस्तु समूहको जमयात्रा मात्रामें निश्चित भावा पर अपन लगान या करकी अत्यावश्यक रूपम तक किए काई बचा आय तो उसस यह वस्तु-समूह तरीदनके लिए जोर कोई तरीतन आय ता इस वस्तु-समूहका बचनके लिए वसे ही बधा होगा चाहिये जम चरनेके नागरे बदलेमें साना देन या गथा वह बधा गता ह। एसम खरातन जोर रेचनना भाव एक ही रखा जाय या दानामें बाडा फर रखा जाय यह तफमालना प्रन है। फर नमलिए कि इस वस्तु समूह रपी कच्च मात्राको अपन भण्याराम के जान जोर सभाकर रखनम सरकारका सच पडगा। यह सच पाय-आय प्रति गतम जविय नहा जायगा और यदि सरकार एस उठा ल ता भी कुछ भिगार सरकारका सच बहुत नहा व जायगा। अथवा जमे टरगालम सिक्के चलनना सच किया जाता है कम जिगी भाजन खरात भाय एकाध प्रतिगत कम रखा जाय तो भा गता आपत्ति नहा कगे। चरनी नागरे वरमें उनस अमुर प्रतिगतव परावर ता सोना चापी अमानतर रूपमें रया जाता है उमर बजाय इम याजनामें जायनको आधारभूत वस्तुएं गन गीगत कीमतकी अमानतर रखन रया जाय ताकि सरकारका आवश्यकताम अधिर नोट छापनना गराच ही कभा पना न हा।*

* ऊपर दो मन गह एक मन रई जाति वस्तुओंका ता मात्रा रया गई यह यह बतताई लिए गरी रगी गई है कि वास्तविक सच वनना है बल्कि पय वपनाम गतिर ही रया गई है।

× जमराका यातनाका यह रूपरचा प्रतिपाठ ना० आर० गिनायन ता २१-४-४४ व ति स्थन इवानामिन् म छप ए कमाग्डी रिउव करमी नामा रखम ली गया है।

७. ऐसा रचना है कि हमारे देशों में ऐसी योजना बनानी हो तो चलनेके आधारके रूपमें नाव जिनकी चीजें रचना अनुकूल पड़गा

गहू	पी	हाथरना मून
चावल	निगाता क्षेत्र	राप्ती
जौ	सरसारा तल	गन
अन्ना	गवार	टाट
सरसा	चाय	पकाया हुआ चमत्ता
तिन्	गुड	बायडा
पापग	रू	नमन
मगपती	विनोद	घान

यह सूचा बनाई या घटा जा सकता है। जवार और बाजरा मुख्य उपयोगकी और बहुत जरूरी चीजें हान पर भी इस सूचीमें इसलिए नहीं गरीब की ग कि व जल्दा सट जाती ह। यदि उह रम्व समय तक अट्टी तरह मभाऊ कर रगनकी सरत पद्धति ह निकाली जाय ता रस सूचीमें उनका नम्बर बन्त ऊचा जायगा।

८. जमगकी याजामें द्रव्यके आधारभूत जमानतके रूपमें चाजके पूर समूहका रगनका सुझाव दिया गया है। उसर अनुगार सररार भले ही सभी चीजें अमानतक रूपम उचित मात्रामें जटाकर रख परन्तु गोगाने लिए तो निश्चित की हु सूचीम स किसी भी चाजके रूपमें लगान चुकानकी आजाग हानो चाहिय और सूचीमें दी हुइ कोई भी चाज नियत भाव पर बचन और सरादनके लिए सरकार बधी हानी चाहिय। इस तरहकी छूट रगनका मग्य कारण यह है कि जिस प्रणम जा चीज पदा होता हा या कर चुकानवाग सुद जा चीज पना करना हो उसी चीजके रूपमें कर भरनकी गोगाना सुविधा मिन्। रम योजनाका सबसे बग लाभ यही है। आज ता कर चुकान वागसे पसा मागा जाता है जो न ता व पदा करत ह और न उनर पास होता हा है। पसा बनानी ह सरकार और वह होता है थोडसे सट साह्वारोरे पास। रस कारणसे उत्पादक गोग कर चुकाते समय ठठिनाईमें पड जाते ह। चूकि एग रस तारीखक पहले कर चुकाके लिए उनर पास पसा होना जरूरी है रसलिए अपना माग उह सस्ते भावसे बच डारना पडता है और फिर यही माग अब गररत होती है तब उन्हें महग भावसे खरीदना पडता है। प्रस्तुत योजनाके फलस्वरूप नियत भावो

पर श्री वे अपनी पदा की हुई चीज सरकारका दग जीर जम्मत पडन पर य चीज लगभग उसी भाव पर सरकारी भण्डारम ले सकेंगे। यह साचना होगा कि सरकार य भाव किस सिद्धान्तक आधार पर नियत करे। दूसरे विन्दुद्विसे पत्रक कुछ वर्षोंके भावका औसत निकालकर उसका आधार पर हर चीजक भाव नियत किय जा सकन ह। जीर सरकार इहा भावा पर ये चीज बचन जीर खरीदने लिए बधो रहेगा अतः इन चीजक भाव स्थिर रहग।

९ इस याजनाका दूसरा बडा लाभ यह ह कि प्रायमित्र आवश्यकताकी और महत्त्वकी चीजाके भावामें स्थिरता आ जायगी। चलनका आधार मानी हुई चीजाके भाव नियत जीर स्थिर रहग ता उसका फलस्वरूप अज सभा वस्तुआके भाव स्थिर रहेंगे। आधारभूत मानी हुई कुछ चीज बच्चे मात्रक मम हाता ह। तयार मात्रके भावका आधार साम तीर पर बच्चे माल पर होनक कारण उसमे बतनबाजे तयार मात्रक भावाम भा स्थिरता आयगी। लेकिन य चीज अगर कित्ता बप कम या अधिक पकी या उत्पन्न हुई हा ता क्या उसस इनक भावम एक नहा पड जायगा? एक चरकर पन्गा। परन्तु सरकारक पास इन चीजाका बहुत बडा भण्डार हानन कारण सरकारा भाव हमगा बाजार भाव पर एक प्रबल अनुका काम करेगा। मान गीतिय कि अनर आधारभूत चीजाम स कुछका उत्पादन क्रिया बपमें रू गया जीर उसका कारण बाजार भावम मदी आ गई। कम समय बाजार भावम सरकारक नियत किया हुआ भाव अधिक हानन गेग अपना चाजें सरकारको बचने जायग। लागक पास चलना नाट अधिक आ जाया और बठका मात्रा बट जायगी। चलनकी यह बनी हुई मात्रा भावका गिरनन रायगा इतना हा नहा यह भावका उचा भी च्पायगा। इसक विवरान हम यह मानें कि आधारभूत मानी ह् चीजाम न कुछका उत्पादन प्रति बपका अरक्षा कम हुआ जीर कम भावमें तजा आ ग। एसा क्रियात्मक सरकारा भाव कम हानन कारण गग नाट लर सरकारक पास उनको खरा करन जायग। कम तरह बाजारम चीजाकी मात्रा बन्गा और चलनकी मात्रा घन्गा। पत्र यह हागा कि तजी घट जायगी और भाव एकम हा सकेंगे। टारी बात यह है कि चलनेके बन्में गत प्रतिगत जमानत ग्यनका नियम हानक कारण सरकारका मनमान गम चलनका प्रमार या गवाक करनमें कार् म्पाय नहा हाता। इसलिये चलनका प्रमार या मनाचक कारण नावमें उद्यम-मुषक हानना कम याजनामें गुनाग ही नहा रहता।

१० इस योजनाका बहुत बड़ा लाभ था यह है कि गमाजकी प्राथमिक और महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करना अमानत भंडार बढ़ते समय या दूसरी किसी आपातकालीन समय काम आता है। परन्तु समय भर कारखाने का यह महत्व व्यापारियों के हितों पर बल देना अनुचित रहता है। यह सही है कि चक्रवर्तियों के अभाव में रूप में रखा जाना दूसरे देशों की चीजों के आयात में काम आता है परन्तु युद्धकाल में विदेशों से माल आने की सुरक्षा ही बल बन जाती है। सरकारी मालूम है कि विदेशों में महायुद्ध आरंभ होने पर आयातों में अचानक सुरक्षा के लिए दी थी तब अमरीका और दूसरे देशों से सामग्री तथा चीजों के मंगान में अचानक कठिनाई उत्पन्न हुई थी। इन प्रयोजनों को तो सरकारी भंडारों ही प्रतिनिधि के उपयोग के मुख्य मध्यम चीजें निपुण मात्रा में मौजूद रहती हैं।

११ इस योजना में दो कठिनाइयाँ हैं। पहली कठिनाई तो इन सब चीजों को लान तथा लाने के लिए और उन्हें अचानक सभा के कर रखने की है। यातायात-व्यवस्था उपाय यह है कि सरकार जगह-जगह अपना भंडार रखे। अलग-अलग प्रदेशों में उन प्रदेशों से ही माल अधिखनन रहे। और सभा के रखने के बारे में तो जब व्यापारी अपना माल बाहर बाहर महीन गोठों में भरकर रखते हैं तब सरकार क्या नहीं कर सकती? लेकिन व्यापारियों को व्यक्तिगत सम्पत्ति होने के कारण वह मालका सड़क न देना या अथवा किसी तरह विगलन न देने की बहुत आवश्यकता है। क्या सरकारी विभाग इतनी चिन्ता रख सकते हैं? सरकार प्रजा की ही और सरकारी नौकर जिम्मेदारी का खयाल रखना और अपना काम कृपा ही तो सरकार भी अपनी सावधानी जरूर रख सकती है। इस योजना में गंगाका इतना बड़ा हित समाया हुआ है कि चाँदा की अच्छी नार-सभा बनने की अच्छी पद्धतियाँ हमें मिलनी ही चाहिये। हर प्रदेश की स्थानात्मक पत्रकारों को सुरक्षित रखने की पद्धतियाँ उन-उन प्रदेशों के हित जानते हैं। अगर भंडार बनाविक ढंग से बन हो और ये भंडार चीजों की रक्षा की बनाविक राशि जाननेवाले तथा सावधान भंडारियों के हाथ में हों तो जरूर उनका अच्छी सहायता हो सकती है।

१२ दूसरी कठिनाई यह है कि विदेशों से साधने के लिए एक देश के चलने के साथ दूसरे देश के चलने की तुलना कम की जाय और दोनों चलने के बीच विनिमय की दर किस तरह निर्धारित की जाय। दोनों देशों के चलने

प्रचलित है ता यह कम्पिना नहा होतो। परन्तु इम याचनामें ता अलग अलग दगा चरनना स्टण्ट बहुत भिन रगा। फिर भी विन्गाने सायन यासारकी इननी याग चिन्ता करनकी चरन नहा। एक ता जाजक अलग अलग दगान चीच जा व्यापार हाता है उमर पारमें वग प्रन यह है कि यह गाना देगाने लिए हितकारा है या नही। विन्गाना अकिन्तर व्यापार ता पिउण हुए दगान गणपका हा रूप ल लेता ह। उस तरहका व्यापार वन हा जाय ता का नकमान नहा हागा। जा चाजें हमार या किमा भी दगम दूसर देगस मगाना नितान्त आवयन हागी उनकी व्यवस्था सम्बन्धित गका सरकार अपन व्यापारी मटग ढारा करा लगी। एक दगम यापारियाता प्रतिनिधि-मडल दूमर नेगमें जाजर दूमरे गक व्यापारियाने प्रतिनिधि मरुम सगह भाविरा कर गगा कि कौनमी चीज दना ह और कौनमी रना ह और फिर चीजाक विनिमयक मोट कर गगा। अतम ता आज ना अलग अलग दगाके बाच हानवाक व्यापारम चाचाका विनिमय हा हाता ह। वन विनिमयन साधनक रूपमें माटकी कामत द्रव्यम तय का जाती ह। यह द्रय एक-दुनरका लिया या लिया नही जाता। प्रस्तुत याजना अमरमें आव ता दाना दगाकि चरनकी चीजाके समूहक रूपमें निश्चित का हुद सराग गकि परम इन दाना चरनाकी एक-दूसरके माय तुलना हा सवता है। आज ना न भुन वाला कागजी चरन लगभग मभा नेगाम चरना है और अलग अलग चरनाके बाच विनिमयका दर उन चलनाका अपन अपन दगाम ता खगण गकि हाता है उसक आधार पर ही तय हाती है। यह निम तगह तय का जाना ह हमका विवचन व्यापार-सम्बन्धा चरनना निपगारा नामक प्रकरणमें आग किया गया है।

उधार-व्यवहार और सराफी (बकिंग)

उधार-व्यवहार और पसा

१ हम दान चुन ह कि सभ्य समाजमें एक-दूसरान साथ लन-रनना व्यवहार नरन पसस नग चन्ता बलिन आपसक विन्वाम पर या एक-दूसरकी सासन कारण चन्ता है। उधार-व्यवहारक द्वारा नरन पसका उपयोग त्रिये विना मालके रन-रनका या विनिमयका बन्तता व्यवहार निरन सनता है। काई दुनानदार अपन बध हुए और भरारने ग्राहसम नरन पसा त्रिये विना उसक नामे लिखकर माड बक और अतमें त्रिवाडा पर हिसाब चुनता कर त तो उम गमय तय पससे विना उस ग्राहकका काम चड जाता है। र्मो तरह दुनानदार व व्यापारीक यहास अपनो साथ पर मा ल आव और माल विन जा पर उसका पसा चुका द तो इतन समय तक उसका काम नी पमसे त्रिना चन्ता जाता है। र्म व्यापारियास बाच आपसमें माकी विक्री और खरीद हानी हो और व अपन अपन गहोखातामें लिखकर एक-दूसरकी मा दत-रत रहें तो अन्तमें नी पसकी जरूरत पन्गा नहा और पन्गा भी ता बन्त यो पसेकी पन्गी। माकी हर विक्री और खरीदके समय नरन पसा त्रिये बजाय उधार लिख त्रिया जाता है और बपके अन्तम जमा उधारका हिसाब करने जितना जिसका बाकी निरन्ता हा उनना उसे दे दिया जाता ह। और एसा भी न किया जाय तो उतनी बानी रकम नय बपक सातेम ले जाते ह। र्स तरह व्यवहारमें लाखा रुपयकी खरीद और विक्री होनी है और नरन पसा काममें त्रिये विना जमा-नामके व्यवहारस व्यापार अपना काम चन्ताते रहत ह। इसक लिये सास जरूरी चीज है सास। अत यह कहना गन्त नटी होगा कि सास एक तरहका पसा ही है। देगके भीतर और बाहरक दूसरे देशके साथ करोने रुपयका व्यापार इस तरह सास पर उधार—नकद पसा कामम त्रिये विना—चन्ता है।

२ उधार-व्यवहारके त्रिये नामक साधनक निवा दूसरे भी बहुतमे साधन काममें त्रिये जाते ह। प्रामिसरी नोट बक नाट, इडा चक डापट आदि सब उधार-व्यवहारके साधन ह। सरकारी द्रव्य धातुका हो या नोटका उसके जरिये जितना लान-रन और मालकी खरीद विक्री हानी है उससे कहा ज्यादा

एन गजनासि पात्रा ह। आगिए हम देहें साव पर चरनवाग द्रव्य या मगना द्रव्य कहत है। बाजारमें धूमनवाल द्रव्यका मात्रा तिनका वाजार मात्र पर अमर हाना ३ तय करनमें एम सराफ़ी द्रव्यका वग हाय हाना ४।

उधार-व्यवहार और पूजा

उधार-व्यवहारका देनाकी पूजा पर जन्म पन्तक कारण कुछ गगनात्मका गगन ज्याग ताराफ कर एन ह और इहे एक अशुभ गक्ति बनान ह। परन्तु एक बात हमगा ध्यानमें रखना चाहिय कि उधार-व्यवहारम नइ पूजा पग नहा हाना। उधार-व्यवहारम गग मम्यति भा निमाण नहा हाना। परन्तु बिमाक पाम पूजी न हा जाग यति एम जागमाकी साव अच्छा हा ता दूमरका पूजा काममें लनक गिए उम मिग सगता है। इनन नमाजका वनमान पूजाकी मात्रा वगता नहा परन्तु एग आगमाक अगिकारम पूजा दूमरक अगिकारमें जाता है। पहग आगमा इम पूजाका उपयोग उत्पादनक कायमें नहा कर सकता या। अन उसक वजाय दूसरा आगमा आना कुगगना और जानक कारण उम उत्पादनक कायमें गगा सगता है। इम तरह उधार-व्यवहारम गगना पूजी नहा वगता परन्तु गगना पूजाका गगना अगिक सकत गगन हाना है। किमी उत्पादन-कायम गिए गगना रकमका गहरन हा परन्तु जिम उम उत्पादन प्रवतिकी व्यवस्था करना आना हो उसक पाम वग रकम न हो ता वह यकिन गगामि छापी-छाग रखमें लकर इकट्टा कर सकता ४ और उनका उपयोग कर सकता है। इम तरह जो पूजा गगार पग रगता वह पूण उपयोगमें आ जाती है। इतना हा नहा यह एम आगमीक गयमें आती ३ जो उमका अछने अच्छा उपयोग कर सकता है। कुछ आगमा धनवान हात ह ३किन अपन धनका उत्पादन कायमें लगानकी कुगगना या अवसाग उनक पाम नहा हाना जब कि कुछ आगमियाके पाम यह कुगगना और अवसाग होता है परन्तु पूजा नही हाना। उधारके व्यवहारम इम दोना कमियाका पूति गो सकनी है। एगव गिए गवम वग जहरन यह ३ कि दूसरेक धनरा पूनीके तार पर उपयोग करनवाल आगमाका माय अच्छी हानी चाहिय। छापी छाग खमावाक गगारा मरामा हा जाना चाहिय कि जो पमा हम देंग वग मुगति रगता और जहरनक समय या नियत समयमें हमें वापिस मिल सकता। फिर यह प्रश्न पग हाना है कि एमी याग्यता और अच्छी सागवाग आगमाका गोजा रग गाय जिमन द्वारा छापी रकमगाग हर आगमी अपने पमका उपयोग कर सग। एग आगमियारा योग मिग देनेका और बिगरी हुइ पूजाका उपयोगमें गगनरा काम सराफ़ी

उधार-व्यवहार और सराफी (बर्किंग)

उधार-व्यवहार और पग

१ हम दब चुके हैं कि गम्य समाजमें एक-दूसरे के साथ एक-दूसरे का व्यवहार नरक पसम नहीं करना बल्कि आपस में विश्वास पर या एक-दूसरे की साख के कारण चलता है। उधार-व्यवहार के द्वारा नरक पसम का उपयोग किये बिना माल के गन-गनना या विनिमय का व्यवहार निरक सनता है। कोई दुकानदार अपने बंध हुए और भरासब ग्राहक से नरक पसम किये बिना उनके नाम लिखकर माग बंधे और अंतमें विवागी पर हिसाब चुकना कर ता उग समय ता पगने दिना उस ग्राहक का काम चल जाता है। इना तरक नकानदार बड व्यापारीक महास अपनी साख पर माग उ आव जोर माग रिज जान पर उसका पसम चुका द ता इतन समय तक उसका काम नी पसक दिना चक जाता है। कई व्यापारियों के बाध आपसमें माग की विक्री जोर खरीद होना हो आर ब अपने अपने बहासतामें लिखकर एक-दूसरे को माग दते-लेते रें तो अन्तमें नी पसका जरूरत पडगी नहा जोर पग्या भी तो बहुत थोड पसकी पग्यी। माग की हर विक्री जोर खरीदके समय नरक पसम उनके बजाय उधार लिख दिया जाता है और बंधके अन्तमें जमा-उधारका निमाय करके जिनका जिसका याकी निबन्ता हा उनना उसे दे दिया गाना है। जोर एसा भा न किया जाय ता उतनी बानी खम नय बंधके सानेमें चक जात ह। इस तरह व्यवहारमें लाया रुपयकी सरीक जोर विक्री होती है जोर नकद पसम काममें किये दिना जमा-नामक व्यवहारस यापारी अपना काम चलाते रहन ह। इसक लिए खास जरूरी चीज है साख। अत यह कहना गन्त नही हागा कि साख एक तरहका पसम ही है। देगके भीतर जोर बाहरके दूसरे देगके साथ करोडा रुपयका यापार इस तरह साख पर उधार—नकद पसम काममें किये बिना—चलता है।

२ उधार-व्यवहारके लिए नामके साधनके सिवा दूसरे भी बहुतसे साधन काममें लिये जाते ह। प्रामिसरी नोट बक नोट हुडा चक डापर जाति गय उधार-व्यवहारके साधन ह। सरकारी द्रव्य धातुका हो या नाटाका उसके जरिये जितना गन-गन जोर मालकी खराद विक्री हाता है उसस कहा यादा

इन साधनासे होती है। इसीलिए हम एक साल पर चलनवाला द्रव्य या सराफी द्रव्य कहते हैं। बाजारमें धूमनेवाले द्रव्यकी मात्रा जिसका बाजार भाव पर असर होता है तब करतमें इस सराफी द्रव्यका बड़ा हाथ होता है।

उधार-व्यवहार और पूजा

३ उधार-व्यवहारका देगकी पूजा पर असर पानके कारण कुछ लोग इसकी बहन ज्यादा तारीफ कर देते हैं और इसे एक अद्भुत शक्ति बताते हैं। परन्तु एक बात हमारा ध्यानमें रखनी चाहिए कि उधार-व्यवहारमें नई पूजा पना नहीं होती। उधार-व्यवहारसे नई सम्पत्ति भी निमाण नहीं होती। परन्तु किसीने पास पूजा न हा आर यदि उस आत्मीकी साल अच्छी हो ता दूसरेकी पूजा काममें लेनके लिए उसे मिल सकती है। इससे नमाजकी बतमान पूजाकी मात्रा बढ़ता नहीं परन्तु एक आत्मीक अधिकारसे पूजा दूसरेके अधिकारमें जाती है। पहला आत्मी इस पूजाका उपयोग उत्पादनक कायमें नहीं कर सकता था। अब उसका बजाय दूसरा आत्मी अपनी कुशालता और पानके कारण उसे उत्पादनके कायमें लगा सकता है। इन तरह उधार-व्यवहारमें देगकी पूजा नहीं बन्ती परन्तु देगकी पूजाका उपयोग अधिक सफल लगस हाना है। किसी उत्पादन-कायमें लिए रानी रकमकी जरूरत हा परन्तु जिस उस उत्पादन प्रवृत्तिकी व्यवस्था करना आता हा उमका पाम बड़ा रकम न हो तो वह व्यक्तिलागसे छोटी छोटी रकमें लेकर एकट्टी कर सकता है और उनका उपयोग कर सकता है। इस तरह जो पूजा अधिक पडा राना वह पूण उपयोगमें आ जाती है। रतना ही नहा वह एस आत्मीके हाथमें आती है जो उसना अच्छेसे अच्छा उपयोग कर सकता है; कुछ आत्मा धनवान हाते हैं किन्तु अपन धनका उपयोग कायमें लगानकी कुशालता या अज्ञानता उनसे पास नहा होता जब कि कुछ आत्मियां पाम यह कुशालता और अवकाश होता है परन्तु पूजा नहा हानती। उधारके व्यवहारमें इन दोना कमियां पूर्ति हा सकती है। एक लिए मजबूत बना जरूरत यह है कि दूसरेके धनका पूनीक तौर पर उपयोग करनका आत्माका माय अच्छी हाना चाहिये। छोटी छोटी रकमावाकें रागाका भराया हा जाना चाहिय कि जो पमा हम रंग यह मुराशिन्त रहगा और जरूरतके समय या नियत समयमें हमें वापिस मिल सकेगा। फिर यह प्रश्न पना हाना है कि एगी मायना और अच्छी साखवा आत्माका राजा कय ताय निमज राख छोटी रकमवाला हर आत्मी अपने पमका उपयोग कर सके। एन आत्मियां योग मिले दनका और बितरस हुए पूजाको उपयोगमें लनका काम सजग

पेनिया जीर बन करत ह। सराफा जीर बनाने में द्रव्यता व्यापार करनेवाली पड़िया वह गनत ह। जिनका पाग पमा जखरतग अधिन हा उनका पमा व अपन पास जमा कर लत ह जीर जिह उस पतना उपमा करना हा उन्हें वह पमा उधार दे ले ह।

सराफ और धक

४ सराफा पेनिया जीर बनाने वामकाजका मूठमून सिद्धान्त एत ही होन पर भी उत वामकाजकी पद्धतिमें बाडा भन है। सराफ सामान्य अपन महा पराई पूजी जमा नहा राने और यति कुछ लोग रखते भी ह ता खाम सम्बन्धवागवा हा रखते ह। परन्तु एम गोगाका वे चक लिखनका अधिनार नहा देते। उनका मुख्य काम हुडिया लिखना जीर हुडिया लेना-बचना होना है। हुडियाके बारेमें कुछ सराफ एत बहुत महत्वका काम करत ह। हुडी लिखनवाले सब सराफ पूरी साखवाले और दून आर्थिक स्थितिवाले नही हाते। ऐसे सराफकी हुडी पर दूमरे किमी प्रसिद्ध सराफका नाम आ जाय तो वह हुडी आसानीस हायाहाय धूम सकती है। कुछ सराफ अपनी साखरा उपधान करनेके वनेमें थोडी फास जिसे मिक्लाई कहते ह कर उस पर स्वीकारी लिख देते ह। इस तरहकी हुडिया दूमरे सराफ और धक त्रिा सबोच तरीन लेते ह।

५ हमारे देशके व्यापार उद्योगमें हमार सराफाका स्थान बहुत महत्वका है। अहमदाबाद और बम्बईमें जो बने मित्रे और बहुतसे कारखाने चले ह व जब आरम्भ हुए तब उनके लिए प्राथमिक पूजी अधिकतर सराफी पेनिया ही महेया की था। पुरानी सराफी पेनियाके मालिकाम स ही आजके बहुतरा उद्योगपति जीर पूजोपति पना हुए ह। हम आग दलेंग कि धक तो थो समयके लिए ही पसा उधार देनेका काम करते ह जब कि सराफी पेनिया उद्योगके लिए ठम्बी अवधिका उधार देती ह। कोई नई मिल या नया बन् कारखाना तोलना हो तब हमारी सराफी पेनिया उसके गयर या डिजेंचर खरीन कर उसका आरम्भ करती ह। धक एस तरहके कामम नहा पडते। उनका मुख्य काम नये व्यापार उद्योग खन करना नहा बलिन उनके चानू काममें द्रव्यका सुविधा कर दना है। इसके सिवा सराफाकी पद्धति बहुत सादी और कम खचवात्री होती है। सराफाका सम्बन्ध अपने ग्राहकोंके साथ सिफ धक तक ही सीमित जीर धककी पद्धतिवाग ही नहा हाता बल्कि विश्वस्त मित्र और सयान सलाहकारका हाता है। सराफ अपन ग्राहकके साथ कामकाजका आरम्भ निजी

विश्वासके आधार पर करता है और एक कामनाजरा आरंभ करते समय ग्राहकों अविश्वासकी दृष्टिमें ही देनता है और इसलिए बचम पना लेते समय ग्राहकोंकी लची लची कानूनी विधियोंमें से गुजरना पड़ता है। सराफाका यत्नतत्ता कामकाज सिर्फ मुक्त बचन पर चलता है। सराफाका बचन अतिम माना जाता है। कितनी ही गति क्या न हो ता भी सराफा अपने बचनका सातिर उमे महन करेगा। सराफाका साथ ग्राहकका व्यवहारमें निजा सम्बन्धी प्रधानता रहती थी और आज भी रहती है। परन्तु यह पद्धति उम समयके लिए अनुकूल मानी जा सकता थी जब द्रव्यका व्यवहार मात्रामें और चापकतामें बहुत अधिक नहा था। आज तो उत्पादन और विनिमय दोनोंका काम बन्त बिनाल और चापक हा गया है। उसमें व्यक्तिगत सम्पत्तिकी गुजादगी बाडी रहती है। सारा लक्ष्य निजी विश्वास पर नही बल्कि नकद पस और सापबाल गेमाकी जमानता पर किया जाता है। हम जागे चक्कर देखेंगे कि बकाक कामकाजकी पद्धतिका विकास बत पमानक उत्पादन और बिदेगी व्यापारकी ही ध्यानमें रख कर किया गया है। अब हम देखेंगे कि बक मुख्यत क्या क्या काम करते हैं।

बकके मुख्य काम

६ (१) लोगोंकी अमानतें रखना बकम पूजी दा तरहम जमा का जाता है (क) चालू खातेमें और (ख) निश्चित अवधिक अमानत-खानेमें।

चालू खानेमें जमा की हुई रकम गनगार माग तत्र बकका उत गौटा दनी पत्ती है। रूपया निकालनके लिए गनगारको पहलम काद सूचना नगानी पत्ती। इस कारण चालू खानम व्याजका दर सामान्यत बहुत कम हानी है। इतना हा नहा बल्कि अमुक ग्वमम नीबका रकम पर बक त्रिकुल व्याज गहा देता। चालू खातमें न पमा जब चाटिय तत्र चरक जरिय निगारा जा सकता है। धधवाग लाग और भावगतिक नम्याण अपनी तिजोरियामें दनी रकम त रखकर अच्छे बकाम अपन चालू खात रगता है। निस कामनाजमें बिमाना पमा देना हा तो उम नरत पमा त रखर व अपने बकक नाम धर त्रिय तत है। इसा तरह अपन यण प्रतिनिग ता आय हा — नरत रूपमें पम द्वाग या बक द्वाग — उम व अपन खातमें जमा बरगत है। चालू खात और चरने गरिय पमका उपयोग त्रिय बिना बडा दना ग्वमाका गनगार त्रिय तरह निगटाया जा गरता है यत हन गरगपा द्रव्य विरचनमें ग्य चुप है।

पत्निया जीर करत ह। मराफा जीर बरारा म द्रव्यता व्यापार करनवाणी पत्निया वह सना ह। तिनन पाग पमा जरूरतन अधिन हा उनना पमा य अपन पाग जमा कर लन ह जीर जिह उग पमना उपयाग करना हा उन्हें वह पमा उधार दे देने ह।

सराफ और बक

४ मराफा पत्निया और बकात कामकाजना मूत्रभूत सिद्धान्त एव ही हान पर भी उाने कामकाजकी पद्धतिमें धाडा भर है। मराफ साम्राज्यन अपन यहा पराई पूजी जमा नहा रखने और यति कुछ लाग रखत भी ह ता याम सम्बन्धवागी ही रखने ह। परन्तु एम लागका वे चर लिखनवा अधिवार नहा ष्ते। उनका मुख्य काम हुडिया लिखना जीर हुडिया तेना-वचना हाता है। हुडियाक बारमें कुछ सराफ एव बन्त मह स्वरा काम करत ह। हुडी लिखनवाते सब सराफ पूरी साखवाते और दूज जायिन स्थितिवाते नही हात। एम सराफकी हुडी पर दूसरे तिमि प्रसिद्ध सराफवा नाम आ जाय ता वह हुडी आमानीसे हायाहाय धूम सक्तो है। कुछ सराफ अपनी सापना उपयाग करनक बन्नेमें थोनी फीस जिसे सिक्काई कहते ह ष्कर उस पर स्वीकारी लिख देते ह। एस तरहकी हुडिया दूसरे सराफ जीर बक बिना सक्तेच खरी ष्ते ह।

५ हमारे देाके व्यापार उद्योगमें हमार सराफाका स्थान बहुत महत्त्वका है। अहमदाबाद और बम्बईमें जा बनी मित्रों और बहुतस कारखान चरने ह वे जब आरभ हुए तन उनके लिए प्राथमिक पूजी अधिकतर सराफो पत्नियान ही मुड़ेया की थी। पुरानी मराफी पत्नियाने माठिनमें से ही आजके बहुतेरे उद्यागपति और पूजीपति पना हुए ह। हम आग दखेंग कि बक तो यो समयके लिए ही पसा उधार देनका काम करत ह जय कि सराफो पेड़िया उद्यागाके लिए लम्बी अवधिका उधार देती ह। काई नई मित्र या नया बन् कारखाना खोलना हो तव हमारी सराफा पत्निया उसक गयर या त्रिंवर खरी कर उसका आरभ करनी ह। बक एस तरहके काममें नहा पडते। उनका मुख्य काम नये व्यापार-उद्याग खर करना नही बल्कि उनके चारू काममें द्रव्यकी सुविधा कर रना है। इसके सिवा सराफाकी पद्धति बहुत सान्नी और कम खचवाली हाती है। सराफाका सम्बन्ध अपन ग्राहकोके साथ सिफ धधे तक ही सामित और धधकी पद्धतिवाला ही नहा हाता बल्कि विन्वस्त मित्र जीर पयान सलाहकारका होता है। सराफ अपन ग्राहक साथ कामकाजका आरभ निजी

विश्वासक आधार पर करता है और वह कामकाजका आरंभ करते समय ग्राहकों को अविश्वासकी दृष्टि ही दलता है और इसलिए वनमे पमा लन समय ग्राहकोंको लगी लगी कानूनी विधियामें से गुजरना पन्ता है। सराफाका यहतसा कामकाज सिफ मुहक वचन पर चन्ता है। मगपना वचन अनिम माना जाता है। किनी हा हाजि क्या न हा ता भा सराफ अपन वचनक मातिर उस महन कर ँगा। सराफक माय ग्राहकन व्यवहारमें निजा सम्बन्धकी प्रधानता रहती थी और आज भा रन्ती है। परन्तु यह पद्धति उस समयन ँिए अननूय मानी जा सवती थी जव द्रव्यका व्यवहार मात्राम और यापरतामें बहुत अधिक नहा था। आज ता उत्पादन और विनिमय दोनाका काम बहुत बिगाल और यापर ही गया है। उसमें व्यक्तिगत सम्बन्धका गुजाइग थोडी रहती है। सारा लेन-धन निजी विश्वास पर नही बल्कि नवन् पमे और सापवाल् लोकाकी जमानता पर किया जाता है। हम जाग चक्कर देखग कि वकावे कामकाजकी पद्धतिना विनाम बड पमानक उत्पादन और विदगी यापारको ही ध्यानमें रख कर किया गया है। अब हम देखेंग कि वह क्क मुस्यत क्या क्या काम करते ह।

जिस द्रव्यको तुरन्त जहरत न पडनवाता हा उस द्रव्यका ब्याक्ति जोर सावजनित सस्थाए बधी हुई अरधिक अमात-मानेमें जमा करान ह । यह अवधि एउस बारह महीनका जोर कभा कभा कुछ वर्षोरी भी हाता है । इन अमानता पर व्याज अधिक थिया जाता है । अरधि जितनी र्म्बी हाती है व्याजका दर तनी हा अधिक हाता है । मरुता कारण यह है कि लनका रकम लौगनका निश्चित तारीख धक्का मात्रम हानम इन अमानताकी रकमाका धक्क उनन समयन त्रिण निश्चित होवर दूगराना उधार द रगत ह ।

सर सिधा कुछ बक्क अपन यहा बचत या भणित राना रगत ह । रस खानमें छाटा छाती रकम भा जमा की जाना ह और उन पर व्याज थिया जाता है । रस रानमें म गप्ताहमें एक या र्ग बार हा पसा निवागत जा सकता ह । मध्यम और गराव बगव र्गमाका रस व्यवस्थाम बडा र्गभ होता ह । व अपन स्वचम विफायत करव घचात हुई रकम रस र्गाममें जमा करा रन ह । हमार दगम डाऊ विभाग भा रस तरहक राविगत धा घगता ह । इसन तिन गवामें बर नही हान यहा भी र्गमाका अपनी छाटा रकमें बचन-मानम ररानकी सुविधा मिल जाना है ।

(२) पसे उधार देना या पसे लगाना अपन यहा जमा की हुई अमानताम स बधी हुई अवधिना अमानताम धामें तो उह लौगनकी निश्चित ताराख धक्का मात्रम रहती है । बचत-सातमें जमा करानवाता र्गो सामायत बहुत कम रकम निवागत ह । और चानू र्गाम जमा रहनवाती रकमाम से भी पूरी रकम एउमाय कभी नहा निवाला जाती । बक्को यह ज्ञान हो जाता है कि कितनी प्रतिगत रकमके चक्क उसके पास आनवात ह यह ज्ञान भी बक्को हाता है कि इन चक्को से भी नवत पग तो अमुक प्रतिगत चक्काके ही चकान पडेंग । रसलिए रस जदाजके अनुसार या कानूनस यति यह निश्चित कर दिया जाय कि हर बक्को अपन यहा जमा रहावाली अमानताका अमुक भाग नवत द्रव्यके रूपमें अपनी निजोरीमें रराना ही हागा ता उतनी नवद रकम तिजारीम रक्कर बाकीका रकम बक्क दूसराका उधार दे देते ह । क्याकि बक्क व्यापारिक पनी होती है और नफा कमानके लिए र्नेत-दनका धधा करता है । कम व्याज पर पसा र्गना और अधिक र्गान मिल इस तरह पसा धधमें र्गाना उसका मुख्य काम है । रसलिए तिननी रकम रराना अनिवाध हो उतनी रकम रक्कर बाकी रकम वह रस तरह उदाग धधम र्गानकी कोणिता करता है जिसम अच्छा व्याज मिल । अब हम यह देखग कि बक्क किस क्रमस अपना यह पसा लगाता है ।

लगानके लिए जितना पसा धक्के पास होता है उसना अमुरुक भाग तो वह एसी सरकारी जमानता और उनमें भी खासकर टजरी विला* में रखता है जिह किसी भी समय बाजारमें बचकर पसा खडा किया जा सकता है। टजरी विल सरकारके चन्नी नाग जस ह। दोनाम अतर इतना ही है कि चन्नी नोट अपन पास रखनस कुछ ब्याज नहीं मिगता और टजरी विल पर थोडासा ब्याज मिल जाता है। टजरी विलाकी अवधि पूरी होनस पहले बक्का यन् एकाएक

* सरकार एस जा बन् खच उठाता है जिनका लाभ आगकी सतानाको मिगता है उतक लिए वह लगी अवधिक गान या बज लेती है और अपनी वार्षिक आयम से थोडी थोडी बचत करके य बज चुकाती है। लेकिन चालू खचने लिए भी सरकारको कभी-कभी पसकी तगी होती ह। जमीनक लगान और दूसर कराकी आय बपके एक निश्चित समयमें ही होती है जब कि सरकारका खच तो प्रतिदिन होता ही रहता है। एस चालू खचका पूरा करनक लिए सरकार थोडी अवधिके सामान्यत तीन महीनका अवधिक लान बचती है। इन गानाको टजरी विल कन जाता ह। इनमें यह गत होनी है कि इस लोनक खरीदनवालेको खरादकी तारीखम तीन महीनक भातर लानकी पूरी रकम मिलगी। इन गानाको खरीदना चाहनेवागसे सरकार टण्डर मागती है। लान खरीदना चाहनवाल तीन महानका अपना सोचा हुआ ब्याज पहलमे काटकर टण्डर भरत ह। जिसन कमस कम दर पर ब्याज काग ह। उसका टण्डर सग्वार पाम करती है। यह बात एक उगाहरणसे अच्छा तरह स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये कि बम्बई सरकारको तीन महीनका अवधिक लिए एक कराड रुपय चाहिये। वह घोषणा करती है कि पन्ना महानकी पहला ताराखका सो सौ रुपयका एक करोड रुपयके टजरी विल बचे जायग इसलिये जा खरीदना चाहें व टण्डर भरपर भजें। मान लीजिये कि पहली अप्रत्या ये टजरी विल बचे जात हैं। ता जूनकी २० तारीखका सरकार खरीदनवागना पूर मौ रुपय चुवानक लिए बघ जाती है। मान लीजिये कि सो सौ रुपयक टजरी विलके लिए रु० ९०-१२-० व बहुतस टण्डर आन ह और हम भावम सरकार एक करोड रुपयक टजरी विल बचती है ता सरकारका एक रुपय प्रतिगत वार्षिक आयम तान महीनकी अवधिक लिए एक कराड रुपय मिग। गगभग मभा दगाकी सरकारका निवट भविष्यमें हानवागी आयक अगता अपन चालू खचक लिए इस तरह टजरी विल जारी करन पन्द ह। हमारे गगमें टजरी विल बचनना और अवधि पूरा हान पर रुपया चुना गेनका काम सरकारका बारा रिजव बक करता है।

पसेका जरूरत पड़, तो बाजारमें उन्हें तुरन्त ही बचकर उनमें पसे राख विय जा सकते हैं। इसी तरह सरकारी दूसरी जमानतें भी तुरन्त बचा जा सकती हैं।

रुपया लगानक नाममें दूसरा तरह व्यापारिया तथा सराफाका मागत ही लौटानका मत पर स्थि हुए द्रव्यका हाना है। एम द्रव्यका माल मना — बुलान पर आ सडा हानवांग द्रव्य — वन्त ह। एगा द्रव्य सरकारी दम्नावेजा तथा स्थानीय सस्थाअने गना या डिपेंचरा अथवा अच्छा आर्थिक स्थितिवाली मिला या कारगानाके गयराकी जा किसी भा ममय बाजारमें बच जा सकत ह जमानत पर लिया जाता है। व्यापारी या सराफको थोर समयक लिए पसकी तगी हो तो वह एम दम्नावेजाना बचमें रखकर उन पर पना लेता है। दस्तावेजकी बानारकीमतका ७५ या ८० प्रतिशत पसा बक दता है। दानके थद्राय बचकी याजका जा प्रचलित दर होती है उमस कुछ अधिक दर दूसर बकाको इस तरह द्रव्य लगानम मिलती है।

इसने का मुद्र आर्थिक स्थितिवा सराफकी मीयांग हुडिया और विदेगी व्यापार-सम्बधी विनिमय-पत्र आत ह। इम व्यवहारमें बकका व्याज न मिलकर बढ़ा मित्ता है। मान गीजिय कि मुद्र आर्थिक स्थितिवा सराफका स्वाकारी लिखी हुई ६० स ९० दिनमें पसनवाली हुडी पर किसी व्यापारीको पसा चाहिय तो बक इस हुडीके पसनमें जितन दिन बाकी रहे हा उतन शिका याज पगी काट लेता है और बाकीका पसा उस व्यापारीका देता है। इस तरह पट्टेसे काट हुए व्याजकी रकमको बढ़ा कहते ह। याज अवधि पूरी होने पर चन्ता है और मूल रकमके सिवा लिया जाता या लिया जाता है जब कि बढ़ा मूळ रकमम स पहूठ हा काट लिया जाता है और उतनी कम रकम दी जाती है। यही हाल विदेगी विनिमय-पत्रका है। हमारे देाके किसी व्यापारीने अपना माल विदेग भजकर उसका विनिमय पत्र बनाया होगा तो उसका पसा उस विदेगी व्यापारीके पास मात्र पहुच तब यहाक व्यापारीको मिल सकता है। इसकी मीयांग अधिकतर ९० दिनकी होती है। केकिन यहाके व्यापारीको तुरत पसेकी जरूरत हो तो वह अपन बकको यह विनिमय-पत्र बच डागता है। एस विनिमय पत्रकी मीयाद पूरी हान तकके याजकी और विनिमय-पत्रका पसा वमूल करनके मेहनतानकी थाडी रकम बढ़वे तीर पर विनिमय-पत्रकी रकममें से बक काट गता है और बाकी पसा उस व्यापारीका दे देता है। बकको इस तरह थाडी महूतके लिए पसा लगानका एक अच्छा अवसर मिल जाता है।

क्याकि इस तरह पसा लगानेकी जमानतके तौर पर तो विनिमय-पत्र बचके पास होता है उसको द्वारा उसमें बताये हुए माल पर बचका अधिकार रहता है। विदेशी उस बचकी गावा हो तो उस गावाका और गावा न हो तो अपने आगतिया बचको वह अपना यह विनिमय-पत्र भज देता है और मालके विदेश पहुचते ही इस बचकी गावा या दूसरा आगतिया बच इस विनिमय-पत्रका पसा बहाके व्यापारीसे बमूल करके विनिमय पत्र उस दे देता है। और इस विनिमय-पत्रकी मन्से परलेगी व्यापारी अपना माल छुटा लेता है। बचका यदि बीचमें ही पसकी जरूरत पड जाय तो यह विनिमय-पत्र बच दूसरे बचको बच भी डालता है। यह बात हमन नियानके विनिमय पत्रकी की। इसी तरह आयात मात्के विनिमय-पत्र भी बाजारमें विकत ह और उनमें भी बच अपना पसा लगाते ह।

इन विनिमय पत्राकी तरह ही बच बचे हुए मालकी हवाला रसीद (डिलावरी रिमीट) पर भी पसा लगात ह। मान लीजिय कि क एक पास अवधिके भीतर मालका हवाला देनेकी गत पर ख का माल बचता ह। बिनीका सौग करनके बाद क तुरन्त ख पर मात्की कीमतकी हुडी लिखता है। इस हुडीक साथ नियत अवधिके भीतर मात्का हवाला दनकी रसाद मालकी तफमीन और कीमतका बीजक — इस तरह तीन बागज वह तयार करता है। क को यदि तुरन्त पसेकी जरूरत हा ता य तीना बागज ख को देकर उसस वह पैगगी पम ले लेता है और ख हवाला रसीदकी अवधि पूरी हान तकका याज काट कर क का पस दे दता है। यदि ख इस तरह पसा दनको तयार न हा तो क य बागज बचको बच देता है। य बागज खरीत समय बच हवाला रसादकी अवधि पूरी होन तककी तारीखका व्याज और उस तारीख पर खस पसा बमूल करनका मेहनताना काट कर क का पसा चुका देता है। हवाल्की अवधि पूरी हाने पर क ख से रस गिली हुई हुडीका पूरा पसा लेकर उम ये बागज सौंप दता है। इस व्यवहारमें बचका पसा अधिनस अधिन तीन महाने तक रहता है और इतनी अवधिक वट्टका लाभ उम मिठ जाता है।

इसके सिवा कारमानगारकी और व्यापारियारा विश्वस्त जमानत पर लाग तौर पर गानाममें पडे हुए उनको माल पर घाडी अवधिक या मात्र बिक जाय उस समय तकके लान भी बच देता है। गानाम पर बच अपना ताला और मुहर लगाता है और व्यापारा या कारमानगार जस जग पसा चुकाना जाता है वन बसे उम गानाममें से मात्र निवाल कर लिया जाता है।

इस सारे व्यवहारमें बच एक करामान करते हैं जा ध्यानमें रखने जसी है। जिन असाहियोंको पत्र उपर बनाये हुए ढग पर पसा उधार देने हैं उह बच शायद ही कभी नरत पसा देते ह। बच उनग कहत ह आप नकद पसा किसलिए ले गाने ह ? आपको जरूरत पडे तब त्तनी रकम तकने चक आप हम पर लिख दीजिय। इगना अय यह हुआ कि पसा उधार देने समय बच नकद पसा देवे बजाय अमानन जमा करानया या चानू गाना खोन्नवाल व्यक्तिकी तरह उस दनारको बच पर उतनी रकम चक लिखनवा अधिकार देने ह। बच नक पसा उधार नहीं देना बत्ति अपनी साख उस असाहियोंका उधार देता है अर्थात् अपनी साखना उपयोग करनकी छूट देता है। पसा उधार देनेकी यह क्रिया एव नया चानू खाना खानक बराबर ही हाती है। कहा जाता है कि इम क्रियामे बच एक नई अमानन खडी कर ेता है। जितन पम उधार देता तय हुआ हा उतन पस उस असाहियोंके खातमें एडवागये रूपमें नाम लिख कर उमरे चानू खानेमें अमानतके तीर पर बच जमा करता है। वह आत्मी जस जसे चक लिखता जाता है वसे वस यह रकम उसके चानू खातमें नामे लिनी जाती है। उधारकी अवधि पूरी हो जाने पर उस खातका हिसाब कर लिया जाता है। उधारका सींग करते समय याजकी दरके वारेमें जो दर तय हुई हो उसके मुताबिक व्याज जाड लिया जाता है। सामान्यत चक लिखकर जितनी रकम निकाशी गई हो उतनी ही रकमका उतनी अवधिका याज जोड लिया जाता है परंतु कभी कभी एसी गत भी होती है कि इस तरहका खाता खोलनके बान देनदार बहुत दरस चक लिखना आरम्भ करे तो भी उमे कमस कम अमुक रकमका निश्चित किया हुआ व्याज तो चुकाना ही पडता है।

जिस असाहियोंको पसा उधार दिया गया हो उसे नकद पसा न देकर सिफ उतनी रकम तकने चक लिखनकी जो सत्ता बच देता है उसमें बचको एक और लाभ भी होता है। वह असाहियों जिस मनुष्यको बचके नाम चक लिखकर देता है वह आदमी भी बचसे नक पसा नहीं े जाता। वह आदमी भी यदि व्यापारी हा तो बचमें उसका खाता होता है और वह अपन खातेमें चक जमा कराता है। अब जिस बचने उस असाहियोंको पसा उधार दिया है उसी बचमें यदि उस व्यापारीका खाता हो तय तो बचको एक खातेमें पसा नामे लिखकर दूसरे खातेमें पसा जमा करनेका ही काम रह जाता है। और पहला असाहियों दूसरा व्यापारी तथा तीसरा बच—इन तीनाके बीच पसेका

व्यवहार नरुद रकमका उपयोग न्हिये विना कवल जमा-नामे लिखनसे ही निपट जाता है। परन्तु उस व्यापारीका खाता यदि दूसरे बकम हो तो वटा अपने खातेम वह दस चनको जमा कराना है और इस दूसरे बकको पहले बकसे चनका पसा बमूल करना होता है। उसम भी नक पसेना उपयोग किय विना हवाला-गूह (क्लिअरिंग हाउस) के भारफत चकावा हिसाब आपसम मिलाकर कसे बराबर कर दिया जाता ह वह हम देख चुके है।

नई अमानत खनी करनकी रीतिका उपयोग करनके बजाय कुठ बक जिन लीगाको पसा उधार देनका निश्चय करत ह उह केवल अपने पर उतनी रकम तकके बैंक लिखनेका अधिकार देते ह। उनके खातेमें वस्तुत कोई रकम जमा नही होनी इसलिये इस तरह लिपे जानेवाके चकको जोवर ड्राफ्ट कहते ह। हमारे देगमें बक अपने जान हुए ग्राहकाको उनक चालू खातेमें जमा हुइ रकमके सिना गयरा डिवचरा मालकी हवाका रसीना और सोन चादीनी जमानता पर ओपर ड्राफ्ट लिखन देते ह।

यह सारा व्यवहार किस तरह होता है इसकी बिस्तृत चचा 'यापार सम्बन्धी लेन-देनका निपटारा' नामक प्रकरणमें की गई है।

(३) अलग अलग स्थानो पर रहनवाले असामियोंके बीचके लेन देनके निपटारेका काम पहले कटा जा चुका है कि यह काय सराफ हुडियोने द्वारा करते ह। बक भी यह काय करन लग ह। एक देगके दूसरे देगके साथ होनवाले व्यापारके सम्बन्धमें जो लेन-देन होता है उनका निपटारा एक्सचेंज बकाने द्वारा होगा है। सामान्य बकाका हम सराफ़ी बक और एक्सचेंज बकोको विनिमय-बक कहेंग।

(४) नोट छापनका काम यूरोप और अमरिकामें साधारण सराफ़ी बक अपन अपन चलनी नोट छापकर चनमें रखते थ। परन्तु यह काय बहुत ही महत्वका हानस हर देगकी सरकारन कानून बनाकर इस कायका अपन अकाममें ल रखा है। अपन बैंक बन्दीय बकको सरकार चन्नी नाट छापनेका अधिकार देता है और कानूनम यह निश्चिन करती है कि चिनन नोट छान जायें और उनर बन्धमें नक अमानत कितनी रखा गाय। हमारे देगमें नोट छापनका अधिकार आरममें बर्ई मद्राम और कल्कत्तेने तीन प्रांतेगिब बकाको था। सन् १८६१ में पनर परसी एक पाम बरक सरकारन यह अधिकार अपने हाथमें ल लिया। सन १९३४ में रिजर्व बक आफ इडिया एक पाम हुआ और उत्तर अनुसार सन् १९३५ में

रिजर्व बच स्थापित हुआ। तबसे चलना नाच छापनना काय रिजर्व बच करता है यह पहल कहा जा चुका है।

७ इसका मिया कुछ बच 'एम्ब्रिक्यूटर' (प्रश्रुषा) के नाम व्यक्तिगत और सावजनिक संपत्तिकी व्यवस्थाका और 'लेटिंग ऑफ फंडिंग' देनेका काम करते हैं। मनुष्य जब माशाम जाता है तब सचवे लिए मारा पमा अपन पाता ही रमनम उस धतरा माशूम हाता है। इगणिए वह बकमें पमा जमा कराकर उतने पसना लेटर जाफ फंडिंग (साव-भत्र) ल लेता है। जिम जिस गहरमें इन बककी गावा होती है उम उम गहरका गावामें जाकर उम मान-भत्रमें नाम लिखा वर वह व्यक्ति पसे ले सकता है। अन्तमावाक् इपारियत बकस एक हजार रुपयका साव-भत्र लिया हो ता शिरीमें सौ अलाहावाक्में पचास और धनारममें दा सौ इस प्रकार जय तक एक हजार रुपय पूरे न हो जायें तय तक जहा जहा दम्पीरियत बकका गावा हो वहाम रुपया निकाश जा सकता है। जिम गावाम जितन रुपय निकाशे जाय तन रुपये देनकी नाय उम गावामाके मान-भत्रमें लिख देत हैं। इसलिए दूमरी गावामाका माशूम हो जाता है कि कुछ जितन रुपये बाकी रह ह। विन्की यात्रा करनवाले तय अपन सुभीतेक त्रिए विनिमय-बका पर लिख गये साव-भत्र साय कर धूमते ह।

सबो अवधिके लिए पसा उधार देना अथवा पूजी लगाना

८ अत्र तन की चर्चामें हमन देला कि बक सामायन थोना अवधिके लिए पसा उधार देनेका काम करते हैं। उत्पादनके काममें दो तरहकी पूजीकी जरूरत पवती है। एक अचर पूजी जो स्थायी रूपमें लगी रहे जैसे कि मकानामें और मशीनोमें और दूमरी चल पूजी जस कि कच्चे मालकी खरीदम मजदूरी चुकानमें आदि आदि। तयार मालके विकन पर कच्चे माशमें तथा मजदूरीमें लगी हुई पूजी तो लौट आती है। उत्पादनक स्थायी साधनाकी घिसाई जितना खच भी तयार मालके विकन पर मिश्र जाना है। लेकिन स्थायी साधनाम लगी हुई पूजी उनमें स वापिस नहीं मिल सकती। इसलिए साधारण बक इस तरहके स्थायी या लवी मीयादक काममें लगानके लिए अपना पसा उधार नहीं देत। लेकिन जैसे जस नय नय उद्योग घडे चलत जाते हैं और पुराने उद्योग घडामें नई नई खोजके कारण परिवतन होते जाते हैं वसे वसे इन कामोमें लगानके लिए पसेकी जरूरत तो पडनी ही है। उनमें भी शोकाकी बचनका पसा लगाना तो चाहिय ही। लेकिन यह निश्चित नहा होता कि नई खडी होनवाली कपनीका सफरना मिलेगी

या नहीं, इसलिए साधारण बक ऐसे साहसके कामामें पड़ नहा सकते। तब लोगसे उनकी बचतका पसा इकट्ठा करने ऐसे स्थायी कामामें उसे लगानका काम कौन करता है और यह काम किस तरह होता है?

९ एस उद्यो धध चलानके लिए मर्यान्ति जिम्मेदारीवाली कंपनीया खाली जाती है और उनके लिए गयरा द्वारा आवश्यक पूजा जुटाई जाती है। यह कहा जा चुका है कि विपुल पूजा सडी करके एसी कंपनीया खोलनेका काम हमारे देशम पुरानी सराफी पेटियाके मालिकान ही अधिकतर किया है। कम्पनीके अधिकतर गयर वे ही खरीद लन है और बाकी शयर खुद तौर पर बचनके लिए बाजारमें रखते हैं। नई कंपनी सडी करनवाल व्यक्तिया या पेट्रीकी जिसे मनजिग एजेंटस कहते हैं साथ पर बाजारमें कंपनीके गयर बिक जाने हैं। यदि कंपनी चल पड और सफरता प्राप्त करके अच्छ डिविडंड देन लग तब ता इस कंपनीके गयर लनेवाके बहुत लोग निकल आते हैं। उस समय कंपनीके सस्थापकान बहुतम गयर खरीद रख हा तो उनमें से कुछ ध बच भी डालते हैं।

१० यूरोपम एसी नई कंपनीयाके लिए पूजा खनी करनका काम करनवाके विनाप बक हाने हैं। वे इंडस्ट्रियल बक कहलाते हैं। एलएमें पूजा सडी करनवाकी पेटियाका एन्वुय हाउसेज कहते हैं। नई कंपनीकी आर्थिक स्थितिके बारेमें और उसकी सफरताकी सभावनाआने बारेमें गहरी जाच करके एमी कंपनीके शयर पूजा लगाना चाहनवाले लोगोंके सामने रखनका काम वे एन्वुय हाउसज करते हैं। उन्हें द्रव्य-बाजारका गहरा पान होता है और पनी सनी करनकी इच्छा रखनवालाका ध एम बारेमें सलाह देते हैं कि किस समय और किस तरह बाजारम गयर बचनका काम सफर हो सनता है। दूसरी आर पूजा लगानका व्यवस्था कर देनवाली खास पेटिया भी एन्वुयम है। इन पेटियाको एन्वुयमण्ट ट्रस्ट कहा जाता है। वे पेटिया स्थाया या अचर पूजा सडी कर दनमें बडा महत्त्वपूर्ण भाग लेती हैं। वे पूजा लगानका इच्छा रखनवालाना अपन प्राहण बना लेती हैं। उनका पसा वे लम्बा अवधिका अमानतन तौर पर अपने महा जमा रखता है और उम मुदत आर्थिक स्थितिना उद्योग धधामें लगाती है। वे एर गह बनी रखन न लगानर अलग अलग उद्योग धधामें और जग-अलग कंपनीयामें विवरन नाय उम बाट देती हैं जिसस जिम्मेदारी बट जाय और मर्यान्ति भी हा जाय। वे ट्रस्ट इन विषयका विनाप अध्ययन कर लन है कि किस उद्योगामें और किस कप

नियामें पूरी राखनी चाहिये और तिनमें गही रोखनी चाहिये। इसलिए साधारण और शक्यतः पूजा लगानेवाला जितना ध्याय या डिविडेड मित्र राखता है उससे ध्याय ध्याज और डिविडेण्ड य ट्रस्ट उपजा सकते हैं। उन्होंने यदि बड़ा कर्पनियाक क्षयर कराए रखे हैं या जमानता पर बड़ी पूजा लगा रखी है तो क्षयरसे या दूसरी लगाई हुई पूजासे अच्छे भाव आन पर वे उन्हें बच डालते हैं और नये गयरा तथा नये धधामें पसा उधार देते हैं। जोर इस तरहका बन्धन-बन्धीमें ग व बीचना नफा निहाल राते हैं। इन ट्रस्टोंका मुख्य काम तो अधिक आय करानेवाले तथा न डूबनेवाले बज देनका है। लेकिन बीच बाचमें इस तरह जा नफा वे कमा लते हैं वह उनका अतिरिक्त आय हानी है। इस तरहकी आयको अपन प्राहृकामें न वाटकर ये ट्रस्ट कभी कभी अपने उधारक काममें हानिवाणी हानिकी पूर्तिके लिए अमानतक तौर पर रख छाड़ते हैं। अपन प्राहृकाको नियमित रूपमें ध्याज देना तो उावे लिए अनिवार्य ही होना है।

११ एसा कह सकते हैं कि इन्धुइग हाउसज पूजा गनी करनी इच्छा रखनेवाली औद्योगिक अथवा व्यापारिक कर्पनियाक लिए अनुकूलता पदा करनेका दृष्टिस काम करते हैं और स्वेस्टभण्ड ट्रस्ट पूजा गानकी इच्छावाले वगके लिए सुविधा पदा करनेकी दृष्टिसे काम करते हैं।

यह स्पष्ट है कि लोगका पसा जमा करके थोड़ी अवधिक लिए दूसराका उधार देना और नये खड हानिकाले उद्योग धधामें स्थायी (अचल) पूजा लगाना ये दो उधार देनेके विठ्ठुल अलग अलग रूप हैं। जहा पहले ढगका काम करनेवाले सराफ या बकरमें सावधानी विवेक और कायकुशलता तथा निश्चितता आदि गुण होना जोर व्यापारिकाकी आधिक स्थितिते परिचित रहना आवश्यक है वहा दूसरे प्रकारके काममें यह परखनेका ताल दूरदर्शिता होनी चाहिये कि कोई खास नया धधा या उद्योग सफल होगा या नही और साथ ही साहसिकता भी होनी चाहिये।

१२ लगाको अपनी वचत इस तरह स्थायी रूपमें लगानकी प्ररणा देनेमें शयर बाजार भी कुछ हद तक जो हिस्सा लेते हैं उसका यहा उल्लेख करना चाहिये। हम देखते हैं कि शयर बाजारमें अलग अलग कर्पनियोंके शयर खरीदन-बचनका काम रोज हुआ करता है। इस कारणसे कितना भी कर्पनीका शयर खरीदते समय खरीदारके मनमें यह धीरज रहता है कि हपकी जम्हरे पडगी तब शयर बचा जा सकेगा। शयर बचकर जब चाहिये तब पसा खडा न किया जा सके तो साधारण आदमा शयर

खरीदनेमें अपनी बचत न लगायगा क्याकि कंपनी कितनी भी सफ़ा क्या न हो जाय तो भी उसे तो केवल डिबिडेंड हा मिलता रहेगा। उसे पूरी रकमकी जरूरत पडे तब उस कम्पनास ता नियमक अनुमार वह रकम कभी नहा मिल सकती। शयर बाजार नर खडी हानवाली कंपनीयानि शयर त्रिक वानमें भी बकाना सहायतामे काफा काम करते ह। गुन हा जानक वाट नियमित डिबिडेण्ड देनवाला कंपनीयानि गेयराकी ही खरीट बित्री गयर बाजारामें अधिक होती है।

केन्द्रीय बक

१३ जहा पश्चिमी ग्गकी बक-पद्धति प्रचलित हा गर् है ऐसे प्रत्येक देशमें बकाना नियंत्रण बरनक लिए जा एक केन्द्रीय बक हाता है उसके स्वरूपको समय रना आवश्यक है। इण्ड फ्रान और जर्मनीमें ऐसे केन्द्राय बक बपेनि चलत ह। अमेरिकामें प्रथम महायुद्धक वाट अर्थात सन १९१८ के वाट फडरल रिजर्व सिस्टमके नामसे केंद्राय बकिंग मण्डलकी स्थापना हुइ। उसमें लगभग तरह रिजर्व बक गामित ह। हमारे देशमें रिजर्व बककी स्थापना सन १९२५ में हुई। दूसर बकानकी तरह यह केन्द्रीय बक भी शयर-होल्डरानकी मर्यादित जिम्मनारीवाली एक कंपनी ही था और उसका कामबाज डाइरेक्टरा द्वारा होता था। लकिन हर देशमें कानूनस अथवा रिवाजसे सरकार और केन्द्राय बकक बीच बहुत गहरा सम्बन्ध होता है यहा तक कि केन्द्रीय बकको सरकारा बक ही माना जा सनता है। १९४९ स ता रिजर्व बक पूरी तरह सरकारी बना लिया गया है।

१४ केन्द्रीय बकके दो विभाग हान ह। एक चलन विभाग हाना है जिसक हाथमें धातुके सिक्के और नाट चरनमें रखनका काम होता है। इस बारेमें काई मर्यादा नहा हानती कि कितन नाट चरनमें रर्य जायें। लकिन यह कानूनस निश्चित कर लिया जाता है कि नाटके पीछ सान चादीके पाट या सान चादीक सिक्क अमुक मात्रामें अमानतके रूपमें रखने चाहिय। कुछ देशोंमें यह भी हाना है कि एक बिगप रकम तकक नाट तो सान-चादीकी इस तरहका अमानतक बिना भा बक छाप सकता है। जस बक जाफ इण्ड २६ कराक पीछ तकक नाट साने-चादीकी किसी भी अमानतक बिना छाप कर चरनमें ररत मरता है। परन्तु इसग अधिनके नोटाक लिए उग पूरा अमानत रखना पन्ता है। हमार देशमें रिजर्व बकक लिए अमुक अमानत रखना अनिमाय कर लिया गया है यह हम हमार देशका चरन बाक प्रकरणमें दग चुक ह। मान चादीक सिक्का

गरवारी जमानताका भी अमानत मान लनकी प्रणाली लगभग प्रत्येक देशमें स्थापित हो गई है।

१५ दूसर विभागका हम गराफा (बैंकिंग) विभागका नाम द सतत ह। यह विभाग सरापाका काम ता जरूर करना है परन्तु लगभग सभा देशमें यह सामान्य जनताका साथ सम्बन्ध नहीं रखता। यह विभाग गरवारी गजानका पसा अपन यहा रखनका और सरकारका जय जरूरत हा तब पगा उधार दनका काम करता है। इमका मिया उमका बडा काम ता दूसर गराफी बका कामकाज पर दगरेय और अकुण रखना हाना है। काई बक यकि अधिक व्याज कमानका लाममें इग तरह पूजा लगा बठ रि पम जल्पा न छूट सकें तो वह कठिनाईमें पड जाता है। रिमा भी बका चारेमें यकि अविचामका वानावरण पदा हो जाय ता उसका सारे उनदार एवम् अपनी अमानतें निराक लनके लिए बक पर टूट पडत ह। इसका अमर दूसर अठ और मुद्द आर्थिक स्थितिवाल बका पर भी हाना है और सारे द्रव्य-बाजारमें सकट पग हो जाता है। बक वास्तवमें भले एव निजी व्यापारिक कपना ही हा उनिन एव बकका जब्यवस्था दूसरे सार बका जीर सारे द्रव्य-बाजारका नवमान पन्चानी ह। एसलिए प्रत्येक बकका काम एव सावजनिक ट्रस्टकी तरह चरना चाहिय और एसी तरह उसका नियन्त्रण हाना चाहिय। एक नियन्त्रण ता यह है कि हर बकको अपनी अमानताका अमुक प्रतिगत भाग तिजारामें नक् रखना चाहिय। दूसरा यह कि बकको अमुक विगप कामाने लिए ही कज देनका अधिकार होना चाहिय और इम तरहक कजोंका अधिकस अधिक अवधि भी निश्चित होनी चाहिये। उसके आडिट किय हुए व्योरेवार हिसाब समय समय पर प्रकाशित किये जान चाहिय और सुरक्षिताने लिए निश्चिन किय हुए नियमाका भलीभाति पालन होता है या नहा यह देखनके लिए बकके बहीखातेकी समय समय पर जाच-पडताक होनी चाहिय। यह काम केन्द्रीय बकके जरिय होनकी जागा रखी जाती है। हर प्रमाणित बकको केन्द्रीय बकके पास नैनदनका अपना साप्ताहिक हिसाब भजना पडता है। साथ ही बककी जमानतो पर अकुण रहनकी दृष्टिसे हर प्रमाणित बकके लिए यह अनिवाय माना जाता है कि वह अपनी अमानताका अमुक प्रतिगत भाग केन्द्रीय बकम अमानतके रूपमें रख। इस प्रतिगत भागकी मात्रा अलग अलग देशाम अलग अलग हाती है। हमारे देशमें प्रमाणित बक उसे माना जाता है जिसकी जमा हुई पूजी और रिखव पण्ड मिलाकर पाच लाख रुपयसे ऊपर हो जाते हो। इ ह अपने चानू खातेकी जिम्मेदारियाकी

५ प्रतिगत रकम और निश्चित अवधिकी जिम्मदारियाकी २ प्रतिगत रकम रिजर्व बकमें अमानतक रूपमें रखनी पडती है। सामान्यत कोई भी केन्द्राय बक एम तरह अमानत रखी हुई रकमा पर व्याज नहीं देता। इसका साथ ही केन्द्रीय बकका यह फज माना जाता है कि वह दूसरे बकाको जरूरत पन्न पर याजस पस उधार दे और सकटके अवसर पर उनका मन् करे। विन्नी विनिमयता दरका नियन्त्रण करना भी केन्द्राय बकका मुख्य काम है।

द्रव्य-वाजारका नियन्त्रण

१६ साधारण तौर पर केन्द्रीय बक सरकारा जमानतके दस्तावजा पर या वचन काम दा सराफी अथवा बकके हस्ताक्षरवा विनिमय-पत्रा पर पस उधार त्त ह। इस तरहक कज त्तमें याजका जा दर गिनी जानी है उमे बक रट अयात केन्द्राय या सरकारा बकके व्याजकी दर कहा जाता है। बक रटके घटन-वृद्धनका वाजारका याजकी दर पर और द्रव्य-वाजारकी माधारण स्थिति पर अमर हाता है। दूसरे बक अपने चालू खानक और बची हु अवधिकी अमानतक याजका दर बक रेटक वृद्धनके साथ बतान ह और घटनके साथ घटान ह। इसलिए वक रटक वृद्धन एसा एव पना हा जाता है कि लाग बकामें अधिक पसा जमा करान ह और बकामे कज कम मात्रामें लते ह। अधिक भाव खानका जागाम जा लोग पसा बकामे उधार लेकर भा मालका संग्रह करके रखना चाहते ह व अपना माल कम नफा लेकर भी बच डालना पमन् करने ह क्याकि एक तरफ यदि अधिक नफा कमानकी इच्छा व रखत ह ता दूसरा तरफ उन्हें व्याज अधिक चुनाना पडता ह। इसलिए जब याजकी दर ऊचा हाता है तब थोडा नफम माल बनकर भा उनके पम वृ कर त्तमें व्यापारीकी अधिक गम हाता है। यामें कहा गये ता बक रट ऊचा होना है तब लाग बकामे पसा लेनक वजाय पस अधिक मात्रामें बकामें जमा करान जाने ह। इसक फलस्वरूप वाजारमें पमना तगी लिमाइ त्त गता है। इसक विपरान यदि बक रट नाचा हा ता दूसरे बक भी अपने याजके त्र घना दत ह। इसलिए लाग बकामें अमानत रखनक वजाय बकस कज लना अधिक पमन् करत ह। वाजारमें पमका बहुतायत हातर वागण गम कज लकर अधिक नफकी जागाम मालका संग्रह करत ह इसलिए मटगाई पना हाता है।

१७ वाजारमें आय-वचनताग अधिक द्रव्य घमन लगा हा और उन वापम खाच त्तना हा ता केन्द्राय बक अपनी व्याजका दर चडा त्तना है और यदि वाजारमें द्रव्यका तगा हा त्त हो और उन मिगकर द्रव्यका मात्रा बतनी हा ता केन्द्रीय बक अपनी व्याजकी दर उधार दना है।

१८ द्रव्यकी विपुलता और कमाका नियंत्रण करके आवश्यक द्रव्य हा बाजारमें घूमने देनेके लिए एक रेटव बन्धमें या एक रेटव उपायकी अधिक मात्रा पहुँचानेके लिए केन्द्राय बन्ध और भा कुछ उपाय काममें लना है। हर देशमें केंद्रीय एक सरकारके साथ गृह्य सम्बंध रखकर काम करता है। हम देख चुके हैं कि सरकारका अपन चालू मन्त्रके लिए बहुत बड़ा ट्रेजरी बिल जारी करना पड़ता है। ट्रेजरी विभाग कामकाज केंद्रीय बन्धके द्वारा ही होता है। जब बाजारमें द्रव्यका बहुतसा हो जाती है और बाजारमें स द्रव्य मीच लना होता है तब केंद्रीय एक सरकारसे ट्रेजरी बिल जारी कराता है। इसमें आग बन्द कर कभी कभी केन्द्राय बन्ध अपन पासकी सरकारका जमानताके दस्तावेज बचना है और इस तरह बाजारमें स पसा सीचता है। यह जमानताके दस्तावेज बचना जाता है और उनमें बन्धमें चलनी नाट रू करता जाता है। इसलिए बाजारमें स बन्ध द्रव्य ही नहा जाता बन्ध एक जिस नकल द्रव्य मानत है उसका भा कमा हान लगती है। बाजारमें द्रव्यकी तगी हा गई हो और अधिक द्रव्य घुमानकी जरूरत हा ता केन्द्राय बन्ध नाट छापकर उनकी मदद सरकारी जमानताके दस्तावेज बाजारसे खरीदना शुरू कर देता है। इस तरह केंद्रीय एक खुल बाजारमें सरकारी जमानताके दस्तावेजकी खरीद और निजीमें पड़कर द्रव्य-बाजारका नियंत्रण करता है।

१९ लेकिन ये उपाय देशमें जितने सीधे-साधे आते हैं उतने व्यवहारमें परिणामकारी सिद्ध नहीं हुए हैं। सामान्यतः केंद्रीय बन्धकी तुलनामें दूसरे एक बहुत बन्ध होता है। और हम देख चुके हैं कि एक एडवॉन्स देकर उसके द्वारा नई जमानतें खरीद करनी करामातसे नकल पसेका उपयोग किये बिना ही बहुत काम कर सकते हैं। इसलिए दूसरे बन्धको केंद्रीय बन्धका आश्रय देनेकी जरूरत नहीं पड़ती। बहुत बड़ा बन्धके पास पसा बतना बन्ध जाता है कि एक रेटसे कम दर पर देनेका वे तयार हो जाय तो भी कोई लेनवाला नहीं मिलता। और कभी कभी ऐसा भी हो जाता है कि ब्याजकी दर बगाने पर भी बन्धमें लागू काफी पसा जमा नहा कराते। ऐसा हानक कारण इतना पेचीला है कि उनकी चर्चा इस पुस्तककी मर्यादाके बाहर मानी गई है। हमारे देशमें रिजर्व बन्धका कामकाज अभी थोड़े ही बपसा माना जायगा। एसा कहनेमें भी हज नहीं कि अभी तक तो वह द्रव्य बाजारका नियंत्रण करनेके काममें पडा ही नहीं है। लेकिन यह सही है कि सारे देशमें अपनी एकसा ब्याजकी दरके कारण बन्ध और कलकत्ता जैसे बड़ा द्रव्य-बाजारमें पाइ

जानवाला ब्याजकी दरके अन्तरको मिटानकी दिगामें और ब्याजकी दरको एन स्तर पर लानमें उसका कुछ असर होन लगा है। दूसर देगामें भी केन्द्रीय बकके बारमें एसा मत बनन लगा है कि जब तक दूसरे बक केन्द्रीय बकको पूरा सहयोग न द तब तक केन्द्रीय बकके लिए द्रव्य बाजारका नियन्त्रण करना बठिन काम है।

ध्याकी दरें

२० अय चीजोक बाजार भावकी तरह याजका दरके बारेमें भी हम कह सकते ह कि उसका आधार द्रयकी पूर्ति और माग पर रहता है। परन्तु द्रयकी पूर्तिक विषयमें हम देख चुके ह कि सरकारी द्रयस ही बाजारका सारा कामकाज नहीं चरता। उत्पादनकी कई मजिलामें मालकी खरीद और बिक्री होती है और अच्छा भाव लनका आगम उत्पादन और व्यापार माल तयार हो जानक वान भी उपमाग्य वस्तुआम संग्रह करके रखते ह। इन सब बातके लिए द्रयकी जो जरूरत पडता है उस सराफ और बक अपना द्रय — सराफी द्रय खडा करक पूरा करत ह। इसलिए यह कहा जा सकता है कि द्रयकी पूर्ति चकदार हानी है। सराफ और बक बाजारकी जरूरतके अनुसार इमे काफी मात्रामें घटा और वन सक्त ह।

२१ द्रव्यकी मागका विचार करन पर मालूम होना है कि उसन भी कई प्रकार ह। एक तो उत्पादनक स्थायी मागनामें पसा लगानक लिए लम्बी अवधिकी माग हाता है और दूसरी कच्चे मालकी खराद और मजदूरीन पसे चुवानके लिए छानी अवधिकी माग हाती ह। इसक सिवा अच्छा भाव मिठ नकी आगामें मालका संग्रह करके रखनके लिए एक पास अवधिकी पसनी माग होती है। कई बार अपन पासना मात्र विषय सब उसस पहे पगवा जरूरत होने पर मात्र विषयने तनके लिए पसकी माग हाती है। पसा उधार दनवाग इसका भी बारीकीसे विचार करता है कि उमकी माग किस हतुके लिए की जा रहा है। और इसका विचार ता पसा उधार दनम पहे यह करता ही है कि उसका पसा किस तरह और कितन समयमें लौट सकगा। मनीना जम स्थायी मागनामें लगानके लिए पसेकी जरूरत हागी ता यह जान ही गगा कि पसा की अवधि तब रका रहेगा। कच्चा माल उत्पादनके लिए पसनी जरूरत हागी ता वन जान लगा कि पसा याच नमयमें वापन मिल सकेगा। इसक सिवा मात्र तयार हानमें आया हो और उमक विषय जाने तबके लिए पसा चाहिये तो वह समन लना है कि इसस भी कम समयमें उमका पसा वापिस मिठ सकगा। फिर सारी परिस्थितिया पर ध्यान दनके वान पसा उधार

देनवालेको पसना भी विचार करना पड़ता है कि स्तनधारक पाग निश्चित अवधि में पसा आ सकेगा या नहीं तथा न्या हुआ बज बट्ट निश्चित रूपसे वापिस कर सकेगा या नहीं और उगव धधमें कोई एक अनिश्चित तत्व तो नहीं है जिनके कारण निश्चित अवधि में बट्ट पसा वापिस न दे सके। मगर यह है कि पसा उधार देनवाला तब बानासा विचार करता है (१) उमके पसव लिए जमानत क्या है? (२) कितना अवधिमें पसा वापिस मिल सकेगा? और (३) पसा वापिस आनको निश्चितता कितना है?

२२ ऊपरकी हर परिस्थितिना अगर व्याजकी दर पर पड़ता है और उस परिस्थितिमें अनुमार व्याजकी दर अलग अलग रहती है। हम बकरी की बात कर चुके हैं। यदि हम यह मानें कि पसा उधार देने के लिए बकरी उधारकी नीचीस नीचा दर है तो उमका बकरी विनिमय-पत्रा अथवा मास्की हवाला रसीदके बट्टकी दर आती है। यह पढ़ते पढ़ा जा चुका है कि बट्टका अर्थ है पस लौटानकी अवधि पूरा हान तकका व्याज पहलमें बाट लना। विनिमय-पत्रा और मास्की हवाला रसीद पर पसा उधार देना मजम अछा माना जाता है। एक तो विनिमय-पत्र मालकी वित्रीव सिलसिलमें पसा होना है। इसलिए यह उगभय निश्चित होता है कि सामनबाग अवधि पूरी हान पर विनिमय-पत्रका पसा देगा ही। दूसर पसा उधार देनवालेके हाथमें माल भल ही न हो तो भी मालका स्वामित्व-अधिकार—जहाजमें माठ चानकी रसीद या मालकी हवाला रसीद—उसके पास होता है। तीसरे पसा वापिस मिलनकी अवधि निश्चित होती है। इन कारणसे पसा उधार देनके लिए बकरीमें ऐसे विनिमय पत्राकी भाग रहा ही करती है। इसलिए किसी बैंक या सराफन विनिमय पत्रामें पसा लगाया हो और उनकी अवधि पूरी होनसे पहले उमे पसकी जरूरत पड तो बट्ट ही नाममात्रका हानिस विनिमय-पत्र वाजारमें बचे जा सकते हैं। यह हानि कितनी कम होती है इसका अनुमान इस परसे हो जायगा कि विनिमय-पत्राके सौतेमें एक प्रतिशानके भी अमुक भाग जितना ही फव होता है।

२३ विनिमय-पत्राके बाद जमानता पर थोनी अवधिके लिए दिय गये उधारकी दर आती है। इनमें मुख्य जमानत सरकारी दस्तावेजोकी होती है। यह उधार भी विनिमय-पत्रा जसा ही अछा माना जाता है। फिर भी इसमें इतना फव है कि विनिमय-पत्राकी अवधि तो एक निश्चित समय पर अपन आप ही पूरी हो जाती है जब कि इसमें निश्चित की हुई अवधि पूरा होन पर पसेका भुगतान न हा तो बकरी जमानतें बचनके लिए वाजारमें जाना पड़ता

है। लेकिन क्याकि सरकारी जमानत किसी भां समय बिक सनना ह इसलिये सरकारी जमानता पर लिये हुए उधार पसकी दर लगभग विनिमय-पत्राणि बराबर ही होती है। य दोना दर बक स्ट के बटुन नज्दीक होती ह और जसे बक स्ट में परिवर्तन हाता है वस हा न्ममें भी परिवर्तन होता ह। विनिमय-पत्राणी दरम और सरकारी जमानता पर लिये गये उधारकी दरमें एक भल ध्यानमें रखन गायक ह। वह यह कि विनिमय-पत्राणी दर बाजारमें रोज सुले तौर पर बोगी जानी ह और दूसरे उधाराका दर बका तया बज लेनेवाले असामियाके नीच करारमें निश्चित हानी ह।

२४ इसक बाद नम्बर आना है सरकारी जमानताक सिवा दूसरी जमानता पर लिये हुए लेनवा। इसका दर सामायत बक स्ट स बहुत ऊची हानी ह। य कितनी ऊची हागी इसका आगार जमानताक प्रकार और अमा भीकी साख पर रहता है। य एक-या प्रतिगत ऊची भा हा सकती ह और इसमें बहुत यादा ऊची भी हा सकता ह। भावामें मदी आ जाय तब घाटमें न उतरनेके लिये कारखानेदार और व्यापारी मालक स्ट्राबकी रोक रखने ह। न्ममें स जिाके पास पसा नहा होता उह बकसे बज लेन जाना पडता है। उनरे पास दूसरी मिाके गयर हा ता उनकी और न हा ता उनरे पाम जा भी माल हो उमकी जमानत पर ब बज गत ह। किसा व्यापारान विन्गस माठ मगाया हा और बट माल यहा जाकर पना हा पर उम छाननक त्रिए उमने पाम विनिमय-पत्रन बटलमें चुवानका काफी पसा न हो तो व्यापारी इन मालकी बकध गोताममें रखना मारु करक पसा उधार नेता है और माल छानना है। नभी बभी छान कारखानेदार अपना सारा तयार माल बककी सौंपकर उस पर पसा गते ह। एम व्यवहारमें व्याजकी दर काफी ऊची हानी ह।

२५ उपरके सपूर्ण विवचनमें हमने देखा कि आजकाला सराफी या वर्किंग पद्धति सनी या प्रामाद्यागाका जम्हताके लिए पना मुहया करनेका काम बिल्कुल नहा करता। यह मुख्यन व्यापारियाका — परदगी व्यापारक और भातरी व्यापारक सम्बन्धमें — पसा मुहया करनेका काम करता है। कुछ ह्म तब कारखानेवालाको खाडी अवधिा लिए पसा जुग देनका काम भा करता है। इसक अगवा, सरकारकी धारा अवधिकी जम्हताके लिए भी वह पसा दनी है। सती और ग्रामाद्यागाके लिए पसा दनका काम ता गावारे गाहूगार हा करा ह। सहकारा समितिपाने और गण्ड मार्गेज बवाने यह काम करना गुरु किया है, परन्तु अब तब उनरे गारा बहुत कम काम हो सना है।

हमारे देशकी सराफी और हमारे बक

देगी सराफी

१ हमारे देशमें तरह तरहके उद्योग धंधाके साथ साथ भीतरी और बाहरी व्यापारका विकास बहुत पुरान जमानत हुआ है। व्यापार धंधेके साथ सराफीका धंधा भी बढा हुआ पाया जाता है। यूरोपमें सराफीकी पद्धति आरम्भ हानके वर्षों पूर्व यह पद्धति हमारे यहां प्रचलित थी। उधारीके व्यवहारके मुख्य साधन हुडीकी प्रथा हमारे यहां मर्यादा पुरानी है। मुगल मारी राज्य स्थापित हानके प्रारम्भिक वर्षोंमें देशमें राजनीतिक अव्यवस्था फल गई थी और बाहरी भी देशमें एतदत्र राज्य ता स्थापित हुआ ही नहीं था। इस समयमें भी देशके भीतर और परदेशके साथ हिन्दुस्तानी सराफाका हुडा-व्यवहार चलता था। सराफ लगावी अमानतें रखते व्यापार-उद्योग और दूसरे कामोंके लिए रकबा उधार देने अलग अलग रायाके सराफाके रूपमें काम करते राजाआ और बाह्याहारी आनास टवसाउ चलते अलग अलग प्रकारके सिक्काकी अन्त-बदली कर देने और हुडियाके जरिये अलग अलग स्थानके बावका अन्त-दान निपटा देते। ईस्ट इंडिया कंपनी भी अपना द्रव्य व्यवहार यहांके देगी सराफाके द्वारा ही चलाती थी।

२ जब अंग्रेजी राज्य भारतमें आठी तरह जम गया और सारे देशमें उसने अपना नकद द्रव्य प्रचलित कर दिया उसके बाद हमारे सराफाके सिक्के बन्द देनका काम बन्द हो गया। कलकत्ता बन्दई और मद्रासमें यूरोपीय पद्धतिके प्रान्तीय बक प्रमग सन १८०६ १८४० और १८४३ में स्थापित हानके बाद कंपनी सरकारका कामकाज इन बकाको मिलन लगा। उसके बाद तो आज तक हमारे देशमें अनेक बक खुल गये हैं। फिर भी देगी सराफान अभी तक अपनी जगह बना रखी है। हर कस्ब और हर गहरमें ये सराफ पाये जाते हैं। गावाम भी उधारीका धंधा आठा चलता है। गावाम उधारीका काम करनेवालोको इन सराफोंसे अलग बतानके लिए साहकार या महाजन कहा जाता है। सराफोंमें और इन साहकारा या महाजनमें भेद यह है कि सामान्यत साहकार न तो लोगानी अमानत जमा करने हैं और न हुडीका कामकाज करते हैं। वे किसाना कारीगरा और छोट

व्यापारियोंको पस उधार दते ० । किसानाना माऊ गावस गार तक पहुचानमें तथा देगक अदर एक जाहमे दूसरा जगह मालका बजार करनमें इनका बहुत बडा हाथ होना है ।

२ परन्तु इतना ता कहना ही पया कि सराफाकी इमानदार और सावक लिए आज भी उनका जा नाम है वह नाम माहूबाराका अर नया रहा । उनका नाम हल्ला पया गया है, क्याकि उनका काम भा गये हा गये ह । किता मिन्ने साहूकारको छोड दें ता दूसरा किमानने माय स्पष्ट और माया व्यवहार नहा रहा । मया मवम बडा कारण यह है कि गावरी खेती और गमायाया बमाइने घये नही रहे किन्तु घाट घघ गये ह । इसलिये किमान या कारीगरको उधार दिया हुआ पसा पूरा पूरा बमू होनमें बडी कठिनाइ पटना है या वह मुक्तिम हा पूरा बमू जाता है । इसलिये अच्छे साहूकार ता गात्र छोडकर गहरामें चर गये या अना पसा गरावे उद्योग बनान गान गये ह । इस तरह पसा गावामे विचकर गहरामें चये जानक कारण मनाक उद्योगमें आरंभक पसा नहा गता और म कारण भी खेती निगता जाना है । अब ता किमानका ब नी लोग मा उधार देनक गिण तयार होत ह जो अपना पसा बमू करनमें का भी उपाय आनमानमें सबोच नहा करत । गावामे पुगा और प्रकिष्ठिन माहूबाराका ग्वान आज ग गपामे किमानका नाच कर ता जानवा और उनका गापन करनेवाे व्याजवारान ल गिया है । उनका अत करक गावारा उगारीका काम मजदूरत पाय पर खला बराकी कागिण अब महरारा ममिनिमा और सहरारा बका द्वारा हा नही है किमाना विचार हम आगे करण ।

४ यन ता हम गारवे मराफाकी जार बापन गीं । यूरोपीय पद्धतिक मर्यादित जिम्मदारारा गपर-हारडराने (जार्ण स्टा) बवावे माय उनने सम्बन्ध अच्छा तरह बघ गये ह । उं पसरी जल्द होनी है तब उनका प्रािममरी नाग आर दुडिया पर उं बरावे पसा मि गवना है । इसी तरह छुट मराफाका उतर चा गानेमें जितनी खम हा गम अधिन खमका दुडिया अपन पर गिवाका अधिकार बक दे दन ह । हा, रिडव बजन अभी तत हमार इन मराफाका मान्यता नग नी है । इसरा एक और मुख्य कारण यह ह कि अपन प्रमाणित बवाका हिमाय दरनका अधिकार रिडव बक रगता ह परन्तु हमार मराय अपना बहापाना और येन दनका हिमाय उत बनानने गिण तयार नही हान । अपन मया किमका पसा जमा है और उन्हान किमका पसा उधार गिया है, य बवाना और इ

तद्वह दूसरेका सातको मुला कर दाा य लाग अपन सराफा व्यवहारक गिन्याप समगते ह । इसवे सिवा हुडी और विनिमय-यत्र पर पसा उधार दत गमय रिजव बक दा हस्ताक्षर मागता है जत्र रि कुछ सराफ अपन दस्तावेजाता अधिक सातवाल बनानक त्रिण दूसरानि हस्ताक्षरानी जहूरतका अपनी सात पर बट्टा लगानवात्री बात समझत हैं । फिर सराफी पणिया सराफी कामवाजक सिवा दूसरा व्यापार पधा भी करती ह जिहा रिजव बक करनकी इजाजत नही देता । एम कारणानि रिजव बकक गाथ हमारे मराफाना मत्र नहा बठता ।

यूरोपीय पद्धतिके बर्षोंका प्रारभ

५ बल्बत्तमें यूरोपियनकी जो काठिया थी वे अपने दूसरे व्यापारके साथ सराफीका काम भी करती थी । य काठिया हमार देगने बत्र बड व्यापारियानि साथ पसेका गनन करती थी और बत्र बगीचेवालाका नीत्रे कारणाना पर तथा समुन्नी यात्रा करादात्र व्यापारियाका उनने मालसे त्रदे हुए त्रहाजो पर पसा उधार दती था । ईन्ट पणिया कपनीक नीकर और दूसरे यूरोपियन लाग अपनी पूजी इन कोठियामें जमा रखते थ । य व्याजकी दर भा अच्छी देती थी । परन्तु आग चत्रकर इन कोठियाकी सराफी गालाए सदृम पड गइ और सन १८२९ ग १८२२ क असमें उन पर आर्थिक सकट आ पडा । यूरोपियन पद्धतिका पहल पहल स्थापित हुआ बक आफ हिन्दुस्तान गामक बक त्रस सकटमें टूट गया । उसक बाद बल्बत्तके कुछ प्रमुख यूरोपियन व्यापारियोन यूनियन बक नामका बक खोला । उसका जत १८४८ में आया ।

६ तान मुख्य प्रान्तामें तीन प्रातीय बक स्थापित होनकी बात ऊपर कही जा चुकी है । इन बकाको अपन नाट जारा करनका अधिकार त्रिया गया था । सरकारका सारा कामकान भी य ही बक करते थ । सन १८६१ में नाट जारी करनका अधिकार सरकारन इन बकासे वापस त्रकर अपन हाथमें कर त्रिया । य प्रान्तीय बैंक सरकारी तो नहा थ परन्तु सरकारके साथ सम्बन्ध होनके कारण उनकी प्रतिष्ठा सरकारी बको जसी ही थी ।

७ सन् १८६० में इस विचारन जार पकडा कि गयर-होल्डरोके मर्यादित जिम्मदारीवाल कई बक देगमें स्थापित होन चाहिय । इसवे फलस्वरूप छोट बडे बहुतसे बक अत्रग अत्रग नामसे खुला । लकिन १८६५ में त्रइने भावोमें आय हुए उछालके कारण देगमें द्रयका बहुत बडा सकट जाया और उसमें य सारी कपनिया खतम हा गइ और बकाके सम्बन्धमें कोई प्रगति

न हुई। १९०५-०६ के स्वदेशी आन्दोलनकी वजहसे भारतमें बहुतसे देशी बक स्थापित हुए। परन्तु १९१३-१४के सवटमें इनमें से अनेक बैंक टूट गये। फिर महायुद्ध आया। उसमें नये बकावा प्रस्ताहन मिला। परन्तु १९२३ में फिर कुछ बक टूट गये। १९२९ से १९३१ तक जाच करके वर्किंग इन्ववापरा कमेटीन एक बडी रिपोर्ट प्रकाशित की। उसमें देशके बैंको पर देखरेख और अकुश रखने तथा सकटके समय बकाकी मदद करनके लिए सब बकावा एक बक रिजर्व बक आफ इण्डियाक नामसे स्थापित करनकी उस कमेटीन सिफारिश की। उसके आधार पर १९३५ में रिजर्व बककी स्थापना हुई।

इम्पीरियल बक आफ इण्डिया

८ कलकत्ता बम्बई और मद्रासके तीन प्रसिद्धन्सी बकावो एकत्र करके १९२०के इम्पीरियल बक आफ इण्डिया एक्टके अनुसार यह बक अस्तित्वमें आया था। १९३५ में रिजर्व बककी स्थापना हुई तब तब वह अपन जय कामवाजक सिवा सरकारी बकके तौर पर भी काम करता था। जुलाई १९५५ से उस स्टेट अर्थात् राज्यवा सरकारी बक बना दिया गया है। जान हमारे देशमें यह सबसे बडा सराफी बक है। पहले यह सरकारा कामवाज करता था और अब भा यह रिजर्व बकवा सोल एजण्ट' है, इसलिए इस पर बानूनके कुछ विगप प्रतिबन्ध ह। वह छह महीनसे अधिक अवधिके लिए पसा उधार नहा दे सक्ता। साथ ही जमीन और स्थावर सम्पत्ति पर पसा उधार देनका उसे अधिकार नहा है। सरकारी जमानता स्टेट रेल्वके बाडा तथा म्युनिसिपलिटि और लाकल बोर्डोंके लिजेंचरा पर अपन ताल और मुहरम रख हुए माल पर तथा दो भजवून आर्थिक स्थितिवाले सराफा या बकाव हस्ताभरवाल प्राभिसरी नोटा पर वह पसा उधार ले सक्ता है। इसके सिवा उस इण्डिया लिगने और मिक्करनकी विनिमय पत्र (गिल्स आफ एक्मर्चेंज) खरीदन और बेचनकी, सालपत्र (लैटम आफ क्रेडिट) देनवा और एक्विडक्यूटरक नाम जायतगाका प्रवच करनवा सक्ता है।

मार देशमें इसकी मुल्य ८०० गागाए ह (१९५९-६०) और व बढ़ती जा रही ह। इस नये बकका अधिष्ठत पूजी २० करोड रुपयकी है। और चुनना पूजी ६० ५ ६२५ करोडकी है। चुनता पूजीवा ५५ प्रतिशत रिजर्व बकके पास है तथा ४५ प्रतिशत निजा गपर-हा-डराने हाथमें है। पुराने गपर-हा-डराने इसमें तगजोह दो जाती है।

दूसरे सराफी बक

९ उपरोक्त स्टेट बकने सिवा मगशीना वामवाज करनवाले दूसरे कई बक हमारे देगमें ह। ये सब बक गयर-होल्डराने मर्यान्तित रिम्मन्गरी वाळे बक ह। वे मुख्यत छाटी अवधिबे लोन या बज दनका काम करते ह। वे चालू सातवी जीर निश्चित अवधिबी अमानतें रखत ह स्थानीय हुडिया बमीगन एवर स्वीकारते ह गरीन्त ह और बचन ह अच्छी आर्थिक स्थितिबा अतामियाने चाडू गानेमें एक निश्चित रकम तब उधार भी हाने देत ह शयरा पर और अनाज रुई या दूसरे मात्रा गोणामा पर पसा उधार देते ह और गयर खरीन्त-बचनक काममें भी पडते है। जिन बकाकी चुक्ता पूजा और रिजव फण्डको मिलाकर पाच लाखसे अधिज जायन्त हो जाती है उन बकाको प्रमाणित बक माना जाता है। उन पर रिजव बककी देखरेख रहती है। सन् १९५९-६० म प्रकाशित रिजव बकका रिपोर्टके अनुसार एस प्रमाणित बकाका कुल सख्या ९४ थी और उनकी कुठ गावाए ३९९६ थी। उनवे चाडू सातवी और निश्चित अवधिबी कुल अमानताका आकडा १७८७ करोड रुपयका था।

१० इनके अलावा हमार देगमें १९५९-६० में २७६ बक एमे थे जिनके नाम रजिस्ट्र नही थे जीर जिनकी ८६६ गाखायें था।

११ स्टेट बककी छोट्कर नीचे लिख पाच बक हमारे देगमें बडे मान जाने ह (१) सेण्ट्रल बक आफ इडिया (२) बक आफ इडिया (३) पञ्जाब नानल बक (४) बक आफ बरोडा और (५) अगहाबाद बक।

विदेशी विनिमय बक

१२ जसे जसे परदेगाके साथ हमारे देशका व्यापार बढा बसे बस इस व्यापारके सबधमें होनेवाले पसेके लेन-देनको निपटानवाले बकाकी आवश्यकता हुई। इस लेन देनका भुगतान हुडिया द्वारा होता है। लेकिन अलग अलग देगाका चलन अलग अलग होनेके कारण इन हुडियोकी खरीन्त विक्रीके समय अलग अलग चलानेके एक-दूसरेके साथ तुठनात्मक भाव निश्चित करन पडत ह। इन भावोको विनिमयकी दर कहा जाता है जीर इस प्रकारका काम करनवाले बकाको विदेशी विनिमयका काम करनवाले बक कहा जाता है। सराफी बकसे अलग पहचाननके त्रिए हमन इह विनिमय बकका नाम दिया है। क्योंकि इनका मुख्य काम अलग अलग देशोकी मुद्राका अदर-बदल कर दना अलग अलग देशके सिक्के भुना देना होता है।

१३ हमारे देशके बकाके हिस्सेमें यह काम बहुत ही षोडा आता है। आजकल ता यह काम विदेशी बकाका एकाधिकार-मा हो गया है। इन बकाके कन्द्रीय दफ्तर विदेशोंमें ह। यहा वे अपनी गासाया द्वारा काम करते ह। आजकल इन तरहके गगभग १८ बक हमारे देशमें काम करते ह। इनमें आठ बक ब्रिटिश ह और बाकी अमरिका जापान हाण्ड और पुतगाठ आदि देशके बकाकी गासाए ह।

१४ व्यापारक सम्बन्धमें होनेवाले लेन-देनका निपटारा सराफ़ा और बका द्वारा किस तरह हाता है इसका एक अलग प्रकरण आगे लिया गया है। इसलिए यहा हम उसकी चचा नहा करेंगे। व्यापारके कामकाजक सिवा अय सुविधाए भी इन बका द्वारा मिलती हैं। विदेश जानवाला आत्मी यहाके विनिमय बकमें यदि पसा जमा करा दे तो उसके दफ्तरमें विनिमयकी प्रचलित दरक अनुसार उस देशके बक पर उस देशकी मुद्रामें यह बक ड्राफ्ट देता है। दफ्तरमें पत्नेवाले विचार्यकी पसे भजना हो ता भी इसी तरहम उस देशक चलनका ड्राफ्ट प्राप्त लिया जा सकता है।

विनिमय बकाके विरुद्ध गिनायतें

१५ इण्डमें और दूसरे देशोंमें अपना भारी प्रभाव होनेके कारण ये बक हमारे देशक बकाकी दफ्तरों विनिमयके काममें हाय ही नहा डालने देते थ। इसक अलावा ये बक हमारे देशके व्यापारियाको हानि पहुंचा कर अपन अपने देशके व्यापारियाका अधिक सुविधायें दत थ। इस तरहका कितना ही गिनायतें इन बकाके विरुद्ध थी। इनक सिवा एक गिनायत यह भी है कि दूसरे सराफ़ा बकाकी तरह इन बकाने भी हमारे देशमें कुछ समयके सराफ़ी काम करना शुरू कर लिया है और इन प्रकार ये हमारे देशक सराफ़ी बकाके साथ प्रतिस्पर्धा करने लग ह। सन् १९५९-६० में इन विनिमय बकाकी हिस्सेतानकी अमानताका कुछ जाड २२९ करा था। विनिमय बकामें हिस्सेतानकी अमानतें रहनका अय यह हाता है कि इनका पसा देशक भागमें न रह कर देशक बक बट्टरगाहामें गिचकर चला जाता है और उनक द्वारा व्यापार लिये जानेवाक पसका सुविधायें आयात और निर्यातक व्यापारियाका मित्रो ह। परन्तु भज जानवाक माकवा गाधारण तौर पर बीमा कराया हा जाता है। इन कारणों एग गिनायत यह है कि विनिमय बक विदेशी होनेक कारण हमारे देशका बीमा-कंपनियाने प्रति मित्रताका इम नया रखने। ये अपने देशका कामा कंपनियाना अधिक सुविधाए दत हैं। यह मर हानका एक कारण यह

भी बताया जाता है कि इन विदेशी बजार प्रतिनिधियों द्वारा हमारा बड़ी व्यापारिक वित्तियिके प्रतिनिधियों साथ कोई सामाजिक सम्पर्क नहीं होता। हिन्दुस्तानके व्यापारिक रीति रिवाजोंसे अपरिचित होनेके कारण स्वभावतः वे जरूरतसे ज्यादा सावधान रहना चाहते हैं।

१६ इन सब विचारोंद्वारा इजाजत करनेके लिए और हमारे देशके बच विदेशी विनिमयका काम कर सकें इसी लिए सेंट्रल बैंकिंग इन्वॉयरी कमेटीने यह सिफारिश की थी कि किसी भी विदेशी विनिमय बचके हमारे देशमें आना खोजनेसे पहले सरकारकी इजाजत (लाइसेंस) लेना अनिवार्य कर दिया जाय। साथ ही स्टेट बैंको जिस विदेशी विनिमयका काम करनेकी इजाजत दी गई है यह काम आरम्भ कर देना चाहिये और दूसरे निजी बचकोको यह काम करनेमें सरकारकी ओरसे मदद मिलनी चाहिये।

स्वराज्य मिलनेके बाद अब हमारे बच यह बच यथाशक्ति कर सकते हैं।

रिजर्व बैंक आफ इण्डिया

१७ द्रव्यशास्त्रियोंको अनवरत वपेसि एव एस बचकी आवश्यकता मालूम हो रही थी जो देशके सारे बचके बचका काम कर सकें और सारे सराफोंके व्यवहार पर तथा देशके चञ्चल पर समान रूपसे अपना अनुगत रख सकें यह बच या तो सरकारी बच हो या इस पर सरकारका पूरा नियन्त्रण हो। इम्पीरियल बैंक अमुक अग तक सरकारी नियन्त्रणवाला जरूर था परन्तु उसका दूसरा व्यापार बहुत बड़ा होनेके कारण स्वभावतः उसे दूसरे बचके साथ स्पर्धामें उतरना पन्ता था और इसलिए वह तत्स्य ताका पालन नहीं कर सकता था। इसलिए बैंकिंग इन्वॉयरी कमेटीने इस तरहका एक अलग बैंक ही स्थापित करनेकी सिफारिश की। इस सिफारिशको राउण्ड टेबल कांफरेन्स भी स्वीकार कर लिया। तथा गवर्नमण्ट आफ इण्डिया एक्ट पास होनेके बाद सन १९३४में रिजर्व बैंक आफ इण्डिया एक्ट पास किया गया और सन १९३५में रिजर्व बैंककी स्थापना हुई। एक्टमें बैंककी स्थापनाका मुख्य उद्देश्य इस तरह बताया गया है

हिन्दुस्तानमें रिजर्व बैंककी स्थापना करना इसलिए जरूरी है कि चञ्चली नोट जारी करनेके कामका नियन्त्रण किया जाय ब्रिटिश भारतमें द्रव्य-सम्बन्धी स्थिरता बनाय रखनेके लिए अमानतका सग्रह रखा जाय और एसा प्रबंध किया जाय जिससे देशके चलन और सराफोंके व्यवहारकी व्यवस्था देशके हितके लिए हो।

१८ यह बक भी पहा गेयर-होडराना ही बन पा। जेकिन १९४९ क बाट इसे पूरी तरह सरकारी बना लिया गया है। बम्बई उद्योगिता, मंगल और दिल्लीमें इमने आफिस ह और लखनमें भी इमकी शाखा है। इमके सिवा अचर भी इसकी शाखाए खोली गई ह।

रिजर्व बकके मुख्य काम

१९ रिजर्व बकके मुख्य काम तीन माने जात हैं (१) चरगा नाट जारी करना (२) बकके बचका काम करना और (३) सरकारक सराफ़ा काम करना।

रजाना नाट जारी करने के कामक बारेमें विस्तृत जानकारी हमारे देशका चरगा बाज प्रकरणमें चलनी नाटके विभागमें दी जा चुका है।

यह बक बैंगाल बक केसलिए उठा जाता है कि उसका सारा काम बक रजिस्ट्रार बकके साथ हा होता है। वह स्वयं सिवा भी प्रसारका व्यापार नहा कर सकता और न किसी भी व्यापार या उद्योगकी पनाम अपना कोई स्वाय रण सकता है। व व्यापारी-बगरु साथ सीधा सराफ़ी व्यवहार भा नहीं रखता। दूसरे बैंगाले साथ प्रतिस्पर्धाया प्रान रण न होने देने के लिए उसे याज पर अमानतें रखनी भी मनाही है। उसका साथ तो केने गारे बका पर दररेख और अणु रखना है। इसक लिए सब प्रमाणित बकाकी अपना माप्ताहिक हिसाब रिजर्व बकके पास भज देना पना है। इमके सिवा हर प्रमाणित बकको अपन चारू खातेमें जमा रखमाका ५ प्रतिशत और निदिचन अवधिकी जमा रखमाका २ प्रतिशत रिजर्व बकमें अमानतके रूपमें रखना पडना है। वम बटूनय बक वम कानूनी आययकनाम नी कहा जयान रखमें रिजर्व बकमें अमानतक रूपमें रखन है। क्याकि नई रडो की हुई अमानतक सम्बन्धमें और अपना सामक विस्तारके बारेमें उत्पन्न हानवाला जिम्मेदारियां पूरा करनेमें य अमानतें उपयोगी सिद्ध होती हैं।

सरकारके सराफ़के रूपमें रिजर्व बक कन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारके राजनेकी राउड रखम अपन पूरा जमा राना है और जम जम चरगत पडती है वगे वम उहें दना रहता है। चर करवा बटूनी आना है तब यह रोड बड जाती है और फिर जम जम हाना जाता है वम वम राउड घटती जाती है। वभा राउड समान्त हा जाय ता रिजर्व बक सरकारका एषमा उधार भी देता है। फिर जम सरकारका आय जाती है तब यह गारा पसा बैंगमें जमा हा जाता है। बटून बार ता चर सरकारका बाट समने

लिए पैसेकी तात्कालिक जरूरत होती है तब रिजर्व बैंक सरकारके दृजरी बिल्लि जारी कराता है और उह बचनना और अवधि पूरा होन पर पम चुका नवना काम भी स्वय ही करता है। इसक अलावा सरकारन सराफती हैसियतसे सरकारकी आरग करवारी जमानतें और साना चादी खरीदन और बचनना काम भी रिजर्व बैंक ही करता है।

रिजर्व बैंक क्या क्या काम कर सकता है ?

२० रिजर्व बैंक कितने काम कर सकता है और कितन नटा कर सकता इसकी बानूनमें जो सूची दी गई है उनमें स मुख्य मुख्य काम यहा हम गिनायेंगे

(१) ऊपर बहा जा चका है कि बन् कितना व्याजवारी जमानतें (जमा) रख सकता है।

(२) विनिमय-पत्र और प्रामिसरी नाट खरीदन-बचनना काम वह कर सकता है। ये शुद्ध व्यापारक नून-नैतक सम्बन्धमें त्रिख टुए होन चाहिय और उन पर दो विन्वसनीय असामियात हस्ताक्षर होन चाहिय एन दो हस्ताक्षरामें स कमम कम एक तो बिगा भी प्रमाणित बक्के ही हान चाहिय। कमक सिवा य दस्तावेज यन्दि दूसर व्यापार उद्योगक सम्बन्धमें हा तो उनकी पवनकी अवधि ९० दिनमें पूरी होनी चाहिय और यन्दि सतीकी पन्वारम सम्बन्ध रखनवाटे हा ता उनकी अवधि नौ महीनमें पूरी हानी चाहिय।

(३) प्रमाणित बकासे स्टॉकिग खरानवा और उह स्टॉकिग बचनना काम कर सकता है।

(४) भारतको स्थानीय सस्थाआको प्रमाणित बकाको और प्रातीय सन्वारा बकाको इडियन ट्रस्ट एक्टक अनुसार जिनम पसा लगाया जा सकता हा एसा विन्वसनीय जमानता पर मोन चादी पर जयवा जो प्रामिसरी नाट और विनिमय-पत्र खरीदन-बचनना रिजर्व बैंकको अधिकार हाता है उन प्रामिसरी नोट और विनिमय पत्रो पर रिजर्व बैंक ऐसे लोन या एडवान्स दे सकता है जिनकी अवधि ९० दिनमें ज्यादा न हो।

(५) प्रान्तीय सरकाराको भी तीन महीनकी अवधिके लिए एडवान्स दे सकता है।

(६) भारत-सरकार और विदगी सरकारकी जमानतोकी खरीद विन्वी कर सकता है।

(७) प्रमाणित बकासे एक महीनकी अवधिके लिए पसे उधार ले सकता है।

रिजर्व बक क्या क्या काय नहीं कर सकता ?

- (१) किसी भी प्रकारका व्यापार नहा कर सकता और न व्यापार उद्योगकी किसी सस्यामें अपना स्वाथ या हिस्ता रख सकता है।
- (२) अपने जोर किसी दूसरे बकअथवा किसी दूसरी कपनाके गेयर नहा खरीद सकता तथा ऐसे गयरा पर लोन या कज भी नही दे सकता।
- (३) स्यावर सपत्तिकी जमानत पर पस उधार नही दे सकता। अपने दफतरा अपन अफसरा जोर नौकराके रहनुके मरानाने सिवा बोइ जोर स्यावर सपत्ति नही रख सकता।
- (४) जमानतके बिना कज या एडवांस नही दे सकता।
- (५) जो हुडिया दानी न हा उह लिख या स्वीकार नहा सकता।
- (६) अमानत (जमा) पर अथवा चारू खातेमें ब्याज नहा द सकता।

रिजर्व बकके बारेमें कुछ और जानकारी

२१ रिजर्व बक पर एक बतय यह डाला गया है कि उस लम्नमें सुरान मिल सकें एस स्टॉकि खरीदन जोर बचन चाहिये — जिनकी दर न तो १८६६ पैसेसे ऊची हा और न १७६६ पसस नीची हो। एम स्टॉकिकी बिन्नीके लिए जा टण्डर रिजर्व बकमें पेग बिये गाय व एक लाख रुपयस कम रकमके नहा हान चाहिये।

इम्पीरियल बकके साथ करार करके उम पद्रह बपने लिए रिजर्व बकका सार एजट बनाया गया है। जत्र रिजर्व बककी स्थापना हुइ उम रामय इम्पीरियल बककी जितनी गाताय थी उन सत्र गायाआंवा वहा रिजर्व बकक सराफ़ी विभागकी को गाया न हा ता रिजर्व बनना एजट माना जाता है। और सराफ़ी खानाना काम रिजर्व बककी तरफम इम्पारियल बक करता है। इम्पारियल बक इस प्रकार सरकारक लम्नका जो काम करता है उमकी वार्षिक रकम २५० करोड़ रुपय तत्र हो तत्र तर उस पर ६६ प्रतिशत और उमम कर निवनी हा उस पर ३६ प्रतिशतके हिमावग रिजर्व बक उा कमीशन दना है।

रिजर्व बकका आन जारी बिय दूण चलना नागना जोर अपने तमाम जमाननामेका टियाव प्रति गप्ताह सरकारक पाम भन दना पन्ना है और यह आवााराम प्रवागिन किया जाना है।

रिजर्व बक एक्टमें एर गन यह भा रखा गइ है कि ब् ययाानव जल्हा ही गती-सबधा लम्न नका विभाग सार। यह विभाग गनाम सम्बधित

लिए पसेवी तात्कालिक जरूरत हानी है तब रिजर्व बक सरकारण ट्रजरी बिलस जारी कराता है और उह बचनवा और अवधि पूरी होत पर पस चुका देनवा काम भा स्वय ही करता है। इगक अलावा सरकारण सराफकी हैसियतसे सरकारणी ओरसे मरपारी जमानतें और सोना चाला खरीदन और बेचनका काम भी रिजर्व बक ही करता है।

रिजर्व बक क्या क्या काम कर सकता है?

२० रिजर्व बक रिता काम कर सकता है और रिता नहा कर सकता इसकी कानूनमें जो सूची दी गई है उनमें स मुख्य मुख्य काम यहा हम गिनायेंगे

(१) ऊपर कहा जा चुका है कि वह बिना राजवागी अमानतें (जमा) रख सकता है।

(२) विनिमय-पत्र और प्रामिसरी नोट खरीदन-बचनना काम वह कर सकता है। वे गुद व्यापारके अनन्तक सम्बन्धमें लिख हुए होन चाहिय और उन पर दो विवसनीय असाभियाके हस्ताक्षर होन चाहिय इन दो हस्ताक्षरमें न कमग कम एक ता किमी भी प्रमाणित बकके ही हान चाहिय। इसके सिवा य दस्तावज यदि दूसरे व्यापार उद्योगक सम्बन्धमें हा तो उनकी पकनकी अवधि ९० दिनमें पूरा होनी चाहिय और यदि खतीकी पदावारस सम्बन्ध रखनवाठ हा ता उनकी अवधि नौ महानमें पूरी होनी चाहिय।

(३) प्रमाणित बकासे स्टॉकिंग खरानका और उह स्टॉकिंग बचनका काम कर सकता है।

(४) भारतकी स्थानीय सस्थाआको प्रमाणित बकाको और प्रांतीय सहकारी बकाको इंडियन ट्रस्ट एक्टक अनुसार जिनमें पसा लगाया जा सकता हा एसी विवसनीय जमानता पर मोन चादी पर अथवा जो प्रामिसरी नोट और विनिमय-पत्र खरीदन-बचनना रिजर्व बकको अधिकार हाता है उन प्रामिसरी नोट और विनिमय पत्रो पर रिजर्व बक एस लोन या एडवान्स दे सकता है जिनकी अवधि ९० दिनोंमे ज्यादा न हो।

(५) प्रान्तीय सरकाराको भी तीन महीनकी अवधिने लिए एडवान्स दे सकता है।

(६) भारत-सरकार और विदेशी सरकारकी जमानताकी खरीद बित्री कर सकता है।

(७) प्रमाणित बकोसे एक महीनकी अवधिने लिए पसे उधार ले सकता है।

रिजर्व बक क्या क्या कार्य नहीं कर सकता ?

- (१) किसी भी प्रकारका व्यापार नहा कर सकता और न व्यापार उद्योगकी किसी सम्पत्तिमें अपना स्वायत्त या हिस्सा रख सकता है।
- (२) अपने और किसी दूसरे बकक अथवा किसी दूसरी बकनीके गेयर नहा खरीद सकता तथा एस गेयर पर लोन या बक भी नहा दे सकता।
- (३) स्यावर संपत्तिकी जमानत पर पस उधार नहीं दे सकता। अपन दफ्तरा अपने अफसरों और नौकरोंक रहनेके मरानाके निवा बाइ और स्यावर संपत्ति नहीं रख सकता।
- (४) जमानतके बिना बक या एडवांस नहा दे सकता।
- (५) जो हुडिया दाना न हा उह लिय या स्वीकार नहीं सकता।
- (६) अमानत (जमा) पर अथवा चाट खानमें ब्याज नहा दे सकता।

रिजर्व बकके बारेमें कुछ और जानकारी

२१ रिजर्व बक पर एक कतय यह डाटा गया है कि उस एन्डमें सुरान मिल सकें एस एन्डिंग खरीदन और बचन चाहिये — जिनकी दर न तो $1/4\%$ पेंसस ऊंची हा और न $1/4\%$ पसम नीची हा। एम स्टैलिंगकी विक्रीके लिए जा एन्डर रिजर्व बकमें पेन निय गाय व एक लाख रुपयसे कम रकमके नहा हान चाहिये।

इम्पीरियल बकन माय करार करके एम एन्ड बकके लिए रिजर्व बकका साल एजेंट बनाया गया है। जस रिजर्व बकनी स्थापना हुइ उम समय इम्पेरियल बकका जितनी गावाय था उन मत्र गावाभ्राष्टा वहा रिजर्व बकक सराफ़ी विभागका बाइ गावा न हा ता रिजर्व बनना एजेंट माना जाता है। और सरकारी मरानाका काम रिजर्व बनका सरफन इम्पेरियल बक करता है। इम्पेरियल बक इस प्रकार गवकारक एन्डनका जो काम करता है उसकी वार्षिक रकम २५० करोड रुपय तन हा तन तन एत पर $1/4\%$ प्रतिगत और उसम जस जितनी हा एम पर $3/4\%$ प्रतिगत हिगायम रिजर्व बक जो कमाने ला $1/4\%$ ।

रिजर्व बकका अपन जारी किये हुए चरना नागना और अरने तमान जमानामका हिगाय प्रति मप्ताह सरकारा पाम भन दना पन्ता है और वह आशरामें प्रगायन किया जाता है।

रिजर्व बक एन्डमें एव गन मद्र भी रना है कि वह स्यामव जनी ही मना-मरपा एन्डनका विभाग ला। यह विभाग मराम सम्बन्धित

लेन-देने के सारे प्रश्नात् अध्ययन करे और इन चारमें सखारका और प्राताय सहकारी बचावो अपनी जिम्मान मगह दे।

सहकारी बक

२२ हम ऊपर वह चुक ह कि गावामें गता और दूगर ग्रामायागमि सम्बन्धित लन-नका काम गावक अल्ल सहकारा या मजजनाते हायमें नही रहा है और उचित-अनुचितका विचार न करामाग याजकार लागति हायमें जा पडा है। इस काममें नुरन्त बडा गुधार हानका आक्ययना है। इस कामका अली तरह चगनक लिए गावामें सहकारिताने ढग पर लन-न करनवागी समितियाका माधन याजमाया गया है। गावाकी लन सकारी समितियाका पसा दनका काम करनक लिए जिग सहकारी बकाकी याजना की गई है और जिग सहकारी बकाकी मल्ल प्रान्तीय सहकारी बक करत ह। गावाकी सहकारी समितियाका नेन-देनका सारा व्यवहार जिग सहकारी बकाक साथ रहता है क्याकि जिग सकारा बकाको उनक चारमें व्याखार सारी जानकारा हाती है। जहा जिग सहकारी बक नहा होते वहा प्रान्तीय सकारा बक अपनी गासाण खोन्कर उनके द्वारा गावाकी महकारी समि तियाक माय कामकाज करत है।

२३ प्रान्तीय बक आगाकी अमानत रखते हैं और उहें प्रान्तीय सर कागसे भा बज मिल सकता है। मलिए वे जिग बकाकी और जहा निला बक न हा वहा अपनी गासाअवि करिय प्रारभिक सहकारी समितियाको पसा उधार देनका काम करते ह और समितियाक पास पसा अधिक् हा तो उसका उचित प्रबन्ध भी करा दन ह। सब जिला बक अपन अपन प्रान्तीय बकामें अपन खात रखते ह। इसलिए प्रान्तीय बक जिग बकाके हवाग गह (किन्डरिंग हाउस) का काम भी करते ह।

२४ जिला बक भी आगाका जमातें अपन पास जमा रखते ह और अपनी अधीन सहकारी समितियाका पसा उधार दो ह। इन समितियाकी दरख करन और उह सगह दनका काम भी य बक करते ह।

भूमि-अधिक बक

२५ दूमरे सराफी बक जिस तरह थोडी अवधिका ही बज देत ह, उसी तरह य सहकारी बक भी ज्यागसे ज्याग एक बपस अधिक् लम्बी अवधिके लिए उधार नहा देते। और अनुभवन यह बताया है कि ब लम्बी अवधिके लिए पसा उधार द भी नही सकते। थोडी अवधिके लिए दिया

हुआ बज किमी भा घधवे लिए कामचलाऊ पूजा जुटा सवता है लकिन दूसरे उद्योग बधाकी तरह खतीवे उद्यागक लिए स्थायी (अचर) पूजाकी आवश्यकता हाती है। हमारी खेतीक सुधारके लिए उसमें कुछ स्थायी रूपक और एसे रक बरनकी जरूरत होती है जिनका बन्ला बहुत लंबे समयक वाग मिलता है। जैसे कुए खोदना जमीन सपाट करना बाघ बाधना आदि। साथ ही किसानाका व्याजपाराने पजस छुडानके लिए भी उह रम्बी अवधिके बज देनकी जरूरत है। यह काम साधारण सहकारी बका और सहकारी समितियाके बूतेना नही है। हमलिए रम्बी अवधिक उद्योगक लिए भूमि-बधक बकाकी योजना की गई है। ये बक किसानाकी जमीन पर पसा उधार देत ह। जमान पर किमानका अधिनार बमा है और कितना है उसक कितनी आय हा मकती है और अपना खच निकालकर बज चुकानकी उसमें कितनी शक्ति है ये सब बाने सांचरर कुछ नियत बर्षोंक लिए उस बज दिया जाता है और उमका पमा सागना किस्तामें बमूल किया जाता है।

२६ इस तरह लंबी अवधिके लिए उधार देनक लिए भूमि-बधक बरक पास एसा पमा हाना चाहिय जिसकी माग चाह जिम समय न की जाय। इसक लिए प्रान्तक मुख्य भूमि-बधक बरका एक निश्चित अवधि पर किस्तासे भुगतान किया जा सक एस डिबेंचर जारा बरनना अधिनार किया जाता है। फिर बक जितना रकम डिबेंचर लोगसे भरवा मकता है उतना रकमके डिबेंचर सरकार भर देता है। डिबेंचर पर निय जानवाग राजका दरमें और बिगानासे लिख जानेवाग ब्याजकी दरमें ये बक ज्यादाग ज्यादा तान प्रतिगतका अन्दर रख सवत ह।

२७ सबसे पहला एसा भूमि-बधक बक सन १९२९ में मन्गममें सण्ट्र रम्ब मार्गेज बकक नामक स्थापित हुआ। ३० जून १९४० तक मूठ घन और याजक लिए सरकारा आन्नागनवाग २६४ कराडक डिबेंचर भर गय थ और उस तारीख तक किसानाना निय हुए बर्जोंका आरग २ करागना था। सन १९४० के अन्त तक बगागमें एगे पाच बक स्थापित हुए थ। बम्बमें पहला सण्ट्रल लण्ड मार्गेज बक सन १९२५ में स्थापित हुआ। हमार रम्बक महकारी पायकी रिजब बकन जा समागेचना का ह उममें बनाया ग रि य बक किसानाका उनक पुरान बजा छुडानका आर अधिब ध्यान देन ह और खेताक सुधारका आर बम ध्यान देन हैं। इनक निवा कुछ प्रान्ताने सरकारकी आरग जा बज निवारण समितिया स्थापित का गई ह जार ताय इन बकाकी मिन्डर काम बरना चाहिय।

२८ परन्तु जसा हम ऊपर यह चुने ह हमारी गनी घाटा घधा हो गई है। वह जब तक बमाऊ न बन जाय और ममूद न हो जाय तत्र तत्र सिफ थोडा याज पर पसा उधार देना सरकारी बापस हमारे किसानानाका बाधिकर प्रान हल नही हो सकेगा। किसानानाका सुगहाल बनाना लिए ता उनकी सुगहातीके मूठ कारणाकी जाच करव ययामभव अधिकमे अधिव मारचा पर सुधारकी प्रवृत्ति आरभ करना जरूरी है।

पोस्टल सेविंग्स बक

२९ गाव गावमें बकाकी लागूए नहा गौगी जा सकता। आ मध्यम बगके लोगाकी अपनी छोटी बचतें ब्याज पर रखनकी सुविधा मिले इस उद्देशसे ये बक सन १८८२-८३ त राठे गये थ। पहले इन बकामें मातान प्रतिगत याज लिया जाता था। बीचके बालमें बहु घटा लिया गया था। परन्तु १९६२ के अगस्तसे ३ प्रतिगत याज कर लिया गया है। वृत्तमें कमसे कम चार आन भी याजस रखे जा सकते ह। एक असामीका कुल अमानत १५००० रु से अधिक नहा होन दी जाता। अपन रातमें से सप्ताहमें दो ही बार पसा निवाला जा सकता है। १९६०-६१ में इन बकाम जमा की गइ कुल रकम ४२१ करोड थी।

३० सन १९१७ के सालस डाकघरकी ओरसे पास्टल बक सर्टिफिकेट जारी करनकी प्रया शुरू हुई है। ये सर्टिफिकेट १० रु० से १०० रु० तक के अलग अलग दशाककी रकमके और पाच बपकी अवधिके हाते ह। किसीका १० रुपयका एक सर्टिफिकेट रना हो तो उसे वतनी रकम देना पडती ह जो पाच बरसमें ब्याज सहित १ रुपये हा जाय। अर्थात पाच बपके याजक बराबर कम रकम आज उस देनी पन्ती है और पाच बपम इस सर्टिफिकेटके पूरे १० रुपय मिठते ह। ये सर्टिफिकेट अब नगनठ सेविंग सर्टिफिकेटके नामस दिय जाते ह जो १२ बपक या इससे कम अवधिके भी हाते ह। सन १९६०-६१ म एस सर्टिफिकेटकी कुल रकम ४६३ करोड रुपय थी। गावोंमें जोर जयन गरीब बग और मध्यम बगके लोगाके लिए अपनी बचत लाभके साथ जमा रखनकी यह अच्छी सुविधा मानी जाती है। परन्तु एक बातकी जोर ध्यान दीघनकी जरूरत है कि गावाके और गरीब बगके लोगाकी छोटी छोटी बचतसे खडी होनवाली इन बडी अमानताका उपयोग सहकारी समितिया द्वारा और अन्य साधनो द्वारा खती और ग्रामोद्यागाके आवश्यक सुधारके लिए होना चाहिये।

आंतर-राष्ट्रीय व्यापार

१ जस जमे समाजम काय विभागका तव अधिकाधिक पन्ना गया वस वस समूह समूहके बीच कुटुम्ब बुटुम्बक बीच जीर फिर गाव गावके बीच तथा जागे चक्रवर देगक अक्रम गन्ग कुदरती प्रदेशाने बीच जीर उससे भी आगे वक्रर देग दगके बीच व्यापार हाने लगा है। पुराने जमानमें हमारे देगका व्यापार समुद्र मागसे पूर्वमें जावा-सुमात्रा और चीनके साथ हाता था जीर पश्चिममें अरबस्तान एक्सोनिया और अफाकाक पूर्वी किनारेके साथ होता था। स्थलमागसे पश्चिममें इरान और ईराक तक और वहास समुद्र मागसे इटलीक वनिस और जिनाआ जादि गहराके साथ हमारा व्यापार होता था। यूरोपके लोग हमारे देगका जीर पूर्वके दूसरे देशाना माल इटलीक इन शहराके मारफत खरीदते थ। इस व्यापारके कारण य गहर बहुत धना हो गये थ। इस लाभप्रद व्यापारका जपन हायमें उनके लिए स्पेन और पुतगालन हिन्दुस्तान पहुचनेवा सीधा जामाग गूटनके महान प्रयत्न किये। उनके फलस्वरूप पट्टवा गता दीने अतमें अमरीका महाद्वीपकी खोज हुई और हिन्दुस्तान पहुचनका जलमाग भी दूर निकाला गया। इन खानाने बाद स्पेन और पुतगात्का सम्पत्ति बहुत बढ़ गई जीर उससे दुनियाम यह विचार प्रचलित हुआ कि विदेशाके साथ व्यापार करनेसे देगकी सम्पत्ति बढ़ती ह।

उस काममें अथगास्त्रियाका एक ऐसा मन्त्रणाय था जियन सम्पत्तिने रूपमें सोन चादीको ही बहुत बग महत्व लिया जीर यह विचारमरणा पगई कि जिस देगमें सोन चादाकी खानें न हा उस देगमें सोना चादी खानका मुख्य साधन विदेशाके साथवा व्यापार ही है। स्पेन और पुतगात्क साथ इंग्लण्ड, फ्रांस और हाण्ड भी विदेशी व्यापारकी स्पर्धामें पग। पूर्वक देगाने साथ व्यापार करनेके लिए इन देगामें बग बनी व्यापारिक कपनिया बना और इन देगाने राजाजान अपन देगका इन व्यापारिक कपनियासा प्रात्माहन देगके लिए पट्टे लिये लिये और दूसरा भण्ड देना भी आरम्भ किया। इन व्यापारिक प्रतिस्पर्धामें राजमताका तथा मद्य बिक्री भी उपयोग हाने लगा। इन प्रतिस्पर्धामें अन्तमें इंग्लण्डका विजय हुई। इस प्रकार जिम देग देग हाय अवसर गगा उन देगरा व्यापार बढ़ा और यह समुद्र हुआ।

२ कुछ अर्थशास्त्री एगा कहते हैं कि अलग अलग देशोंके साथ हान वाला एसा व्यापार विभिन्न व्यक्तिगोत्रे बीच अथवा विभिन्न प्रान्तोंके बीचके व्यापारोंके विस्तृत रूप है। अर्थात् विशेषगोत्रे साथ होनवाला व्यापार समाजमें प्रचलित काय विभागता विस्तृत रूप है इस प्रकार सद्वाचिक दृष्टिसे ये अर्थशास्त्रा हमें समझाते हैं। इमना एग उदाहरण हम लें।

मान लीजिये कि भारत और चीनमें अमृष पूजा तथा धर्मसे अमृष माश्रामें सूता कपड़ा और रेशमी कपड़ा उत्पन्न होता है।

	रेशमी कपड़ा	सूती कपड़ा
चीन	८ गज	६ गज
भारत	८ गज	१० गज

इस उदाहरणके अनुसार दाना दग यदि अलग अलग चीजें उत्पन्न कर तो कुल १६ गज रेशमी कपड़ा और १६ गज सूती कपड़ा तयार होगा। इसने यन्त्रे यदि चीन सूती कपड़में लगनवाला धर्म रेशमी कपड़के उत्पादनमें एकसाथ लगाये और भारत अपन रेशमी कपड़के उत्पादनमें लगनवाला धर्म एकसाथ सूती कपड़के उत्पादनमें लगाये तो दानाके समुक्त धर्मस कुल १६ गज रेशमी कपड़ा और २० गज सूती कपड़ा उत्पन्न होगा। अत इस प्रकारके काय विभागता कुल ४ गज कपड़ा अधिक तयार होगा। भारतकी रेशमी कपड़ा उत्पन्न करनकी शक्ति चीनसे कम नहीं है। परन्तु भारतकी सूती कपड़ा उत्पन्न करनकी शक्ति रेशमी कपड़ा उत्पन्न करनकी शक्तिसे अधिक है। अर्थात् भारतको सूती कपड़ा उत्पन्न करनमें और चीनको रेशमी कपड़ा उत्पन्न करनमें अधिक लाभ होगा। इस कारणसे यह कहा जाता है कि अलग अलग दग इस प्रकार तुलनात्मक दृष्टिसे अपनी शक्तिका उपयोग करे तो अन्तमें कुल मिश्रकर अधिक माल उत्पन्न होगा और समाजकी संपत्ति बढ़गी। एसा माननमें कोई हर्ज नहीं कि यह व्यक्ति और व्यक्ति अथवा प्रांत और प्रांतके बीचके व्यवहारका विस्तृत रूप है। अब प्रश्न यह सडा होता है कि जब प्रांत और प्रांतके बीच जवातक बधन नहीं होते तो विभिन्न देशोंके बीच जवातके बधन किसलिए रखे जाते हैं?

दो प्रांतों और दो देशोंके बीचका व्यापार

३ जिस प्रकार किसी देशके दो प्रांतोंके बीच बिना किसी प्रतिबधके व्यापार होता है उसी प्रकार दो देशोंके बीच भी व्यापार हो सकता है। यह बात एक सिद्धान्तके रूपमें सही है परन्तु व्यावहारिक दृष्टिसे सही नहीं है।

हम दो भाइयों का उदाहरण लें। दो भाई जिस प्रकार एक-दूसरेको आर्थिक अथवा दूसरी कोई मदद करते हैं उसी प्रकार दो अलग अलग मनुष्य एक-दूसरेको आर्थिक अथवा अन्य प्रकारकी मदद क्या नहीं करते? इसका कारण यह है कि दोनों भाइयोंके बीच जो विविध प्रकारका सम्बन्ध है वह अलग अलग दो मनुष्योंके बीच नहीं होता। इसका अपवाद हो सकता है। दो मित्र एकसाथ रह सकते हैं। परन्तु इसमें यह नहीं कहा जा सकता कि सब मनुष्य एकसाथ रह सकते हैं। दो भाई आपसमें लड़ते-झगड़ते हैं तो भी दोनोंमें एक-दूसरेके प्रति जा भवना होती है वह अन्य लोगोंमें नहीं हो सकता। यह सगुणताका एक गुण है। इसका पीछा सामाजिक और आर्थिक कारण हैं। यही वजह है कि अलग अलग मनुष्योंके बीच ऐसा सम्बन्ध दुर्लभ होता है। कुछ इसी प्रकारका भेद दो प्रान्तों और दो देशोंके बीच होता है। दो प्रान्तों दो भाइयोंके समान हैं जब कि दो देश दो अनजान मनुष्योंकी तरह हैं। दो प्रान्तोंके बीच यदि उद्योगोंका विकास हो तो पता अपने देशमें ही रहता है और यदि दूसरे देशके उद्योगोंका विकास हो तो पता दूसरे देशमें चल जाता है। अतः कुल मिलाकर देखा जाय तो ऐसा लगता है कि दो प्रान्तोंके बीच उद्योगोंका विकास होना वाञ्छनीय है। इससे अन्तर्देशीय व्यापार देश ही होगा और देश समृद्ध बनगा।

४ सशुभ दो प्रान्तोंके बीच व्यापार हो तो पता अन्तर्देशीय दो प्रान्तोंके बीच होता है और यदि दो देशोंके बीच व्यापार हो तो पता अन्तर्देशीय दो अलग देशोंके बीच होता है। हम दो देशोंका एक उदाहरण लें। मान लीजिये कि जमनी और इण्डिया दोनों मद्ययोगस परस्पर व्यापार करते हैं। परन्तु यदि इण्डिया अधिक धन कमायेगा तो वह जमनीमें नहीं जायगा। और यदि जमनी अधिक धन कमायगा तो वह इण्डियाको नहीं मिलेगा। इस प्रकार कोई एक देश अधिक धन कमाये और उसका लाभ किमा दूसरे देशकी प्रजाको मिलेगा नहीं हो सकता। इससे अतिरिक्त दोनों देशोंका सरकारोंके भिन्न हानि दोनों देशोंमें बढ़ाकी सरकारों जो धन खर्च करणी उसका लाभ एक-दूसरेको नहीं मिलेगा। दोनों देशोंमें सरकारों और जनताका हित अलग अलग होगा। दोनों देशोंमें चलन (मुद्रा) में तो भेद होगा ही। पूँजी और श्रमों परस्पर भी दोनों देशोंके बीच आसानीसे नहीं हो सकता। इसका विना, अन्तर्देशीय व्यापार ही उद्योग किसी देशमें चलता है उद्योगोंका विकास विविध रूपमें स्वाभाविक विकास नहीं हो सकता। और युद्धोंके मात्तों आने जानमें भी कठिनाई पड़ती है। फिर, भाषाके भेदों से अन्तर्देशीय व्यापार — एक

अन्य भेदोंके कारण दगा भीतरी और घाटरी व्यापार एक ही स्तर पर नहीं चल सकता।* आजकी परिस्थितिमें दग और दगा बीचके चयनरा भेद जिस प्रकार स्वीकार करके चलना पड़ता है उसी प्रकार ऊपरके भी भी ध्यानमें रखना चाहिये।

५ इस परसे यह कहना भी ठीक नहीं कि आन्तर राष्ट्रीय व्यापार होना ही नही चाहिये। परन्तु हमें उगका मयाग समगनी चाहिये। गभा गभकी दृष्टिसे आन्तर राष्ट्रीय व्यापारके कुछ उदाहरण ये ह

(१) किसी दगमें जा वस्तुएँ वाता ही न ह। और जिनके दानकी सभावना भी न हो व वस्तुएँ परगन साय व्यापार हान पर ही उस दगा मिल सकती ह। जस उष्ण कटिबंध दगमें पदा हानवाग मिच मसाग गीत बटिवधने दगमें रहनवाग गगाको आतर राष्ट्रीय व्यापारके कारण हा मिच सकते ह। रगणको आज यदि रान-गीनकी चाज चाय गकर आगि काफी मात्रामें मिल सकती ह ता उमका कारण आन्तर राष्ट्रीय व्यापार हा ह।

(२) जो चार्जे जिस दगमें अच्छास अच्छा और कम महनत तथा कम साधनासे बन सकती हा व चीजें उसी दगमें बनाइ जाय और अग अग दगाने बीच एक-दूसरेकी आवश्यक चीजाका विनिमय किया जाय तो दुनियाकी उत्पादक साधन सम्पत्तिका अधिकम अधिक और अच्छेसे अग उपयोग किया जा सकता है। उदाहरणके लिए स्पन और इटलीमें अगूर खून हो सकते ह। अब यदि काचके घर बनाकर कृत्रिम गरमो पहुचाइ जाय तो स्काटलण्ड जैसे ठंड दगमें भी अगूर पना किये जा सकते ह। अकिन ऐसा करनेमें बिना कारण वनी भारी श्रमट उठानी पडगी और खच बहू बन जायगा। ऐसा करनेके बजाय जो चीज स्काटलण्डमें आसानीसे पदा हो सकती हो उसी पर स्काटलण्डने लोग धम कर और उसके बलेमें स्पन या इटलीके अगूर मगायें तो ज्यादा अगुा होगा।

(३) किसी दगमें उसकी आवश्यकतासे अधिक कोई चीज कुतरती सुविधाके कारण ही बहुत अधिक उत्पन्न होती हो तो आन्तर राष्ट्रीय व्यापारके द्वारा उस चीजका गभ दूसरे देशोको मिल सकता है। जैसे हमारे दगमें सन और चाय हमारी आवश्यकतासे अधिक पना होते ह।

* हमारे दगके हिंदुस्तान और पाकिस्तान जैसे सबथा स्वतंत्र विभाग हो जानके कारण दोनोके बीचका व्यापार भी दा स्वतंत्र दगोके व्यापार जसा हो गया है। उपरोक्त कारणोसे अब दोनोका व्यापार आतरिक व्यापारकी तरह नहीं हो सकता।

अतः जिन देशों में मन और चाय पदा ही नहीं हान और फिर भी जिन्हें इन चीजाँकी जरूरत है वह आन्तर राष्ट्रीय व्यापारके जरिये य चीजें उपयोगके लिए मिला सकती है।

(४) स्विट्जरलैण्डन घड़िया बनानके उद्योगमें खूब प्रगति की है। उनके अत्यन्त नाजुस पुरज बनानके लिए यन्त्री आवृत्तवा अनुकूल मानी जाती है और यन्त्रोंके कारागारवा हाथमें परम्परास विवर्धित हुई कई वर्षोंकी कुशलता भी है। अतः हम अपन देश घड़िया बनानका उद्योग खडा करनेके बजाय यहीकी घड़िया काममें लें ता इसमें कोई बुराई नहीं है। पुस्तकार मुद्रण-काममें प्राचीन भाषाशास्त्र टाइप कम्पाज करनेमें जमन कम्पोजिटरान कितन ही वर्षोंके अभ्यास बड़ी कुशलता और त्वरित गति प्राप्त कर ली है। अतः ऐसा पुस्तकारने जमनीम ही छपनेमें क्या बुराई है? वही तरह सगीतके वाद्य यन्त्राने जमन कारीगराना कुशलता अत्यन्त विकसित हा गई है। इसलिए वहाँके बन हुए वाद्य सारे यूरोपमें बिकें तो यह भी गलत नहीं समझा जा सकता। इन उदाहरणोंमें एक बात एसा है जिसकी ओर ध्यान खीचनी जरूरत है। जिस देशों में मजदूरीकी दर सस्ती ही उमी देशों में माल बनाना सस्ता पडता है एसा काद नियम नहीं है। स्विट्जरलैण्डने घड़ियाके कारीगराना और जमन कम्पोजिटरानकी मजदूरीकी दर अधिक मिलती हायी परन्तु क्याकि य अधिक लागतवाले और कुशल हात है इसलिए जो काम ब करते हैं उसमें उनकी उत्पादक शक्ति अधिक विकसित होनी है और इन लिए यदि उन्हें मजदूरीकी भारी दर देनी पड़े तो भा अतम कुशल मिला कर उनका बनाया हुआ माल ज्यादा अच्छा हाता है और सस्ता पडता है। परन्तु इस वस्तुस्थितिका उलटा अर्थ लगाकर मूनी बपडक बारमें धरुण्ड एन दलीन देना है, जो जानन गायन है। उमर यहा कई पत्र नहीं हाता और वह जो मूनी बपडा बनाता है उनका भी उने जरूरत नहीं हाता। फिर भा वह मूनी बपडा बनाता है। इसमें समयमें वह यह स्थाल देना है कि यह माल बनाकी विपय कुशलता हमन वर्षोंकी लागतमें विकसित का है। इसलिए वास्तवमें देना जाय ता आन्तर राष्ट्रीय बाजारमें हम अपना मूनी बपडन नहीं रखन बल्कि हमार कारागारकी विपय कुशलता रखने । यह कुशलता दूसरे देशों में नहीं है क्योंकि हमार मूनी बपडना व्यापार आन्तर राष्ट्रीय व्यापारके मिद्वानन अनुसार उचित ही है।

६ अब हम यन्मान आन्तर राष्ट्रीय व्यापारका कुछ हातिया पर नजर डालें

(१) किसी देशमें कुम्हस्ता तौर पर जिसा रास उद्योग चम्ननी मत्र अनुकूलाए हा तो भी जब तत्र बट् चाज परलगा आया करता है तब तत्र उस उद्योगके विकासके लिए बाई गुजाइग ही नही हाना । जस, हमार देशमें सबरके उद्योगके लिए सारी अनुकूलाए मौजू थी फिर भा जब तत्र परदगी सबर आती रहा तब तत्र तम् उद्योगका विकास नहा हा सत्रा । हमार सबरके उद्योगको सरक्षण दनक बाट अथ वह एमी स्थितिमें पहुच गया है कि सरक्षणके बिना भी बिन्नी गत्ररकी स्पर्धामें टिक सत्रना है । हमार देशके गेन्के उद्योगका भी यणी हाठ हुआ है ।

(२) हमारे देशमें हाय-बनाई और हाय-बुनाईके द्वारा कपडका उद्या अछी तरह चन्ता था और खताके साथ इतनी बन्नी तरह गुप गया था कि वह घषा हमारी आर्थिक मुस्थितिका आधार माना जाना था । मिन मचेस्टर और ग्वागायरकी कपडकी मित्रान त्स उद्योगको नष्ट कर दिया । त्सी तरह दूसरे बहुतसे ग्रामाद्याग भी परदेशा मालके आयातसे नष्ट हो गय ह । इसके फलस्वरूप हमारे देशमें बकारा और बगाली पदा हो गई है और त्रिनादिन चन्ता जानी है ।

(३) आन्तर राष्ट्रीय व्यापारके कारण कुछ सस्ती और आकषक परन्तु वास्तवमें निकम्मी और कभी कभी स्वास्थ्यको नुकसान पहुचानवाली विदेशी चीजाका भी आयात होता है । जस खरके तलेके बूट खरकी टोटीवाली छोट बच्चाको दूध पिलानकी गीगिया गरीरको सुन्त्र बनानका दावा करनबाठ तरह तरहके पदाय और कई तरहकी ग्वास्प दवाए आदि ।

(४) आन्तर राष्ट्रीय व्यापारके कारण कुछ देश बहुत बार अपनी प्राथमिक आवश्यकताकी चीजाके लिए भी दूसरे देशा पर निर्भर रहन लग जात ह । फिर जब यद्ध या बुदरती सकटक कारण परदेशसे य चीज जानी बन्द हो जाती ह तब य पराबन्धी बन हुए देश बहुत बनी भुसीवतमें फस जाते ह । उदाहरणके लिए इग्लण्ड खाद्य पदार्थके लिए दूसरे देशो पर आधार रखता है इसलिए मुद्धा समय उसकी स्थिति बहुत ही बठि हो जाती है ।

(५) विदेशी व्यापारके कारण देशका आर्थिक विकास बहुत बार एकागी बन जाता है । जसे इग्लण्डन खतीका घषा छोड दिया और हिन्दु स्तानके बहुतसे उद्योग नष्ट हो गय । यह स्थिति दीघ दष्टिसे दानो देशोके लिए हानिकारक थी । हर देशके प्राथमिक महत्त्वके अथवा राष्ट्रीय उद्योगाम अमुक विविधता तो होनी ही चाहिय तभी उसके आर्थिक जीवनमें स्थिरता

और सुरक्षितता आती है और दूसरी तरह भी राष्ट्रका जीवन समृद्ध और विकसित होता है।

मक्त व्यापार बनाम सरक्षण

७ आन्तर राष्ट्रीय व्यापारके सम्बन्धमें अयगास्त्रियामें इस बात पर बड़ा विवाद खड़ा हुआ गया था कि मुक्त व्यापार और सरक्षण इन दोनों से कौनसी नीति अच्छी है। अल्पवत्ता अब यह प्रश्न विवादास्पद नहीं रहा है। आर्थिक तथा राजनीतिक कारणोंसे भी सब देश सरक्षणकी नीतिको अपनाते लगे हैं। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि यह विवाद सदाके लिए मिट गया है। हम यहां उससे मुख्य मुख्य अगोकी चर्चा करेंगे।

८ मक्त व्यापार वह होता है जिसमें किसी भी तरहकी बाधा या नियंत्रणके बिना देश विदेशके बीच उम्मुक्त व्यापार होना दिया जाता है। इसका यह अर्थ नहीं कि आयात निर्यातके माल पर कोई जकात (कर) ही नहीं हाती। सरकार अपने सामान्य खर्चका पूरा करनेके लिए जरूरी आयके एक साधनके तौर पर देशके आयात निर्यातके माल पर थोड़ी-बहुत जकात लगाये, ता उस पर मुक्त व्यापारके समर्थकोंका कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु परदेशसे आनेवाले माल पर उस रोकनेके हेतुमें ही जकात लगाना या देशसे बाहर जानवाले मालको दूसरे देशमें सस्ता बच सकनेके लिए निर्यात करनेवालाकी मदद करना मुक्त व्यापारकी नीतिके विरुद्ध है।

९ सरक्षणकी नीति वह नहीं जानी है जिसमें परदेशी माल सस्ता आये तो भी तथा वह मात्र देशमें बनाने पर बहुत महंगा तयार हो तो भी स्वदेशी उद्योगकी रक्षाके लिए परदेशी मात्र पर इतनी अधिक जकात लगा दा जाय कि देशमें आन पर वह माल महंगे स्वदेशी मालसे भी अधिक महंगा हो जाय। इसके सिवा भी सरक्षणके कई प्रकार हैं जैसे (१) स्वदेशी मात्रको प्रात्माहन देनेके लिए उसका जितना उत्पादन हो उस पर अनुभव प्रतिशत मन्दा देना ताकि देशमें वह मात्र सस्ता बिक सके। जो स्वदेशी उद्योग देशके लिए ग्रास तौर पर जरूरी है उनसे बचावके लिए ऐसी मदद दा जाता है। इसके सिवा स्वदेशी मालका अधिक उत्पादन होता हो ता इसलिए भी यह मदद दी जाती है कि परदेशमें वह माल सस्ता बिक सके। (२) परदेशसे आनेवाले मात्रकी मात्रा निश्चित करके उनमें ज्यादा परदेशी मात्र देशमें आन ही न देना। स्वदेशी उद्योगके जरिये देशकी जरूरतका पूरा मात्र उत्पादन न किया जा सकता हो तब कम पडनेवाला माल परदेशमें आयात करनेके लिए यह नीति अपनाई जाती है। (३) दो देशके बीच

व्यापार-उद्योग-सम्बन्धी समझौते करने एव-दूसरेको एगो राहत और मुक्तिपाए देना निश्चय करता जिससे दूसरे देश हम तरह-समझौते में बंध हुए देशों अपना व्यापार न कर सकें।

१० उपर कहा जा चुका है कि आजका मुक्तिपाए गमा हम छोडे बहुत अगम सरक्षणकी नीति अपनाए एग ह। मन्त्रवा और अन्तरहवा गता-गामें यूरापक सार देश सरक्षणकी नानिको अपनाए थ। हमार देशमें विदेशी व्यापारिकको अपनी बोनी गान्ध और व्यापार करनेक लिए रायकी इजाजत लेनी पन्ती थी। लेकिन अठारहवा सन्तिक अंतमें और उन्नीसवी सदाक आरभमें एग-एगमें औद्योगिक प्राति हुइ तबसे अग्रज उद्योगपति व्यापारी और अर्थशास्त्री मुक्त व्यापारकी नानिकी जारगि हिमायन करने लग। और इग-एग अपना देशके और हिन्दुस्तानक लिए भा मुक्त व्यापारकी नीति अपनाई यद्यपि अब कुछ बपगि इग्लण्ड भी सरक्षणकी नीति अपनाए लगा है।

मक्त व्यापारकी हिमायत

११ हम पहल कह चुके ह कि किसी भी माककी बाजार-कीमत उस मालके उत्पादन-रखके आसपास घूमा करती है। लेकिन यह नियम किमी देशके अन्तरके उद्योगका उस देशके भीतरकी बाजार-कीमत तक ही लागू होता है। एक चीज अन्त सस्ती बन सकती हा परन्तु उसकी माग ज्यादा हो तो गुणमें उसकी बाजार-कीमत अधिक रखी जा सकती है। लेकिन उसमें होनवाके बन् नफको देखकर दूसरे उत्पादक भी उस धधमें पड़ेंगे और उस चीजकी पूतिक बन्नास उमकी बाजार-कीमत घट जायेगी। लेकिन यह नियम परदेशमें खूब सस्ती बननेवाली और दूसरे देशमें खूब महगी बिकनवाली चीजाको लागू नहीं होता। क्याकि एक देशके भीतर ही भीतर पूजी और मजदूराका परम्पन्न जितनी हू तक हो सकता है उतनी हू तक देश और देशके बीच नहीं हो सकता। परदेशका कोई धधा बहुत नफेका हो तो भी एक देशकी पूजी और मजदूर जल्दी दूसरे देशमें नहीं जाते। राजनीतिक स्वावटाने सिवा भापाने भेद रीति रिवाजके भेद आचार विचारके भेद दूर परदेशमें मजदूराकी जानेकी अनिच्छा तथा दूरके देशमें पूजी लगानका साहस — इन सब कारणसे प्रतिस्पर्धाका तत्व एक देश और दूसरे देशके बीचक नफ और मजदूरीकी दर पर असर नहीं डाल सकता। और

इस कारणसे मालकी कीमतमें भी अंतर रहता है। देगवे भीतरके उद्योगोंमें और बाहरके उद्योगोंमें यह बड़ा अन्तर है। लेकिन मुक्त व्यापारके हिमायती इस तरहका कोई भ्रम मानते ही नहीं। वे यह मानकर चलते हैं कि देग देगवे बीच भी प्रतिस्पर्धाका तत्त्व अपना काम किये बिना नहीं रह सकता। और वे यह दावा करते हैं कि मुक्त व्यापारसे हर देगका अच्छस अच्छा और सस्तेसे सस्ता माल मिलना ही है। वे कहते हैं कि आन्तर राष्ट्रीय व्यापार काय विभाग तत्त्वका ही एक विस्तृत प्रकार है। जो आदमी जिस घघके लिए अधिक योग्य हो वह आदमी वही घघा कर यह जैसे सामाजिक काय विभाग है वस ही जिस देगमें जा घघा या उद्योग चक्रानक लिए अधिकस अधिक कुदरती अनुकूलताएँ हा वह देग उस उद्योगको चलाय यह भौगोलिक काय विभाग है। पूजा और मजदूर अपन आप वहा पहुँच ही जायगे और उनका एसा उपयोग हा सवगा जिसस अधिकस अधिक लाभ हो। इस भौगोलिक काय विभागका आश्रय लनस हर देगका कुदरती साधन-सपत्तिका अधिकस अधिक उपयोग हो सकता है और एक देगकी यूनना दूसरे देगकी विशेषतासे पूरी हो जाती है।

१२ अठारहवाँ सदीक अन्त तक तो इंग्लण्डन सरसणकी नाति ही अपना रखी थी। लेकिन यन्त्रोद्योगकी स्थापनामें उसने यूरोपमें पहल की और वहाके तिसान सतीका घघा छाडकर बाहरवानामें काम करने लगे। इंग्लण्ड अपना जरूरतका अनाज और दूसरे खाद्य पदार्थ विदेशमें मगाने लगा और सारा दुनियाका बाहरवाना बनकर दुनियाके बाजारों पर अधिकार करने लगा। उस समय उसका नौकादल सबश्रेष्ठ था और परदेशसे अनाज मगाने और अपना तयार माल देग विदेशमें बचनमें उस कोई सतरा माहूम नहीं होता था। इसलिए इंग्लण्डके राजनीतिक पुण्या और अर्थशास्त्रियान अपने ही लिए नहा बल्कि सारी दुनियाकें लिए मुक्त व्यापारकी हिमायत की।

१३ इस मुक्त व्यापारकी हिमायतमें सामाजिक दृष्टिसे भारा अयाय पूण समसो जानवाली एक विचित्र दलाल कुछ अग्रज अर्थशास्त्रियाने प्रस्तुत की है जो जानन लायक है। वे कहते हैं कि तिसा भा देगक समाजमें जम ऊँच और नीच स्तर हात हैं—जस अनाथी मजदूर कुशल बारीगर निष्पान बजा निब अधरा बराग या ठाकर प्रनिभागाती कवि अथवा कठकार हात हैं—बस हा अग्र्य अग्र्य देगमें भा ऊँच और नीच स्तर हात हैं। गरम देगमें रहन-सहनका स्तर नीचा हाता है और वहा सस्ता दरवाग अकुशाठ मजदूर राय मिल जाने हैं। इंग्लण्ड तथा फ्रांस तस देगोंमें रहन-सहनका स्तर ऊँचा

है और वहाँ कुशल कारीगर तथा निष्णात बगानिन बहुत हैं। इसीलिए जस ऊँचे प्रकारके काम कर सखनबाउ प्रतिभा-भरपत्र और बढिगाग गग अपन एस काम जिनमें अधिन बुद्धि या होगियारी गच करनका जरूरत न ह। नौकरासे करा लेन ह और मुल मिलाकर उसामें अधिन आधिक लाभ हाता है उसी प्रकार इण्ड और पास जस ऊँच गहन-महनवाल देग गरम देगारे अनुगल मजदूरारे श्रमग सस्ता दर पर पग हानबाग अनाज चाय बट्वा मिच-मसाग और दूसरा बचा माउ गरीरें और अपन यहाके कुगल और निष्णात कारीगरा द्वारा बारखानामें तयार कराया हुआ माल एस गगाको दें तो एासे दुनियाको अधिकस अधिन आधिक लाभ हागा। एस देगाउ पर काई टीका करना अनावश्यक है।

सरक्षणकी हिमायत

१४ अप्रज अर्थशास्त्रियाने मुक्त व्यापारकी इस हिमायतका विराय सबसे पहले जमन अर्थशास्त्रियान किया। उनकी मुख्य दगीउ यह था कि इण्ड कुछ उद्योगामें आग बग गया है और अमुक माउ अच्छा तथा सस्ता बना सकता है परन्तु इसका कारण यह नहीं कि उस मालको बनानकी कुदरती सुविधामें इण्डमें विगप ह और दूसरे देगामें नहीं ह बल्कि उसका कारण इतना ही है कि कुछ खास उद्योग उसन दूसर देगामे पहउ आरभ किय ह। औद्योगिक विकासक गिलर पर पहुचनके लिए तो उसे भी सरक्षणकी सीनीका उपयोग करना पडा था। लेकिन अब गिलर पर पहुचनके वाउ यह सीनी बकार है एसो कहकर मुक्त व्यापारकी हिमायत करनभ ही उभ पापग है। लेकिन जिस देगके उद्योग बाल्यावस्थामें ह। उनका क्या? एम देगके पास सभी कुदरती सुविधाए होन पर भी कुगलताके अभावमें पूजीके अभावमें अथवा अय किसी कारणस इन उद्योगका पूरा विकास न हुआ हो तो क्या उहें अपन यहा ये उद्योग कभी आरभ हा न करन चाहिय? एसे उद्योग यदि वे आरभ कर तो जब तक य उद्योग बाल्यावस्थामें रहें तब तक उह सरकारकी मदकी और प्रजाकी ओरसे प्रोत्साहनकी जरूरत पडगी ही। यदि मुक्त व्यापारकी नीति स्वीकार करके एसे बाल उद्योगोकी रक्षा न की जाय तो वे दूसरे देगोके बढ हुए उद्योगाकी प्रतिस्पर्धामें खडे ह। नहीं रह सकते। दूसरी ओर यह सभव है कि बाल्यावस्थामें यदि एसे उद्योगाको सरक्षण दिया जाय तो आग चलकर दूसरे देशोसे वे विकासके अधिक ऊँचे दर्जे पर पहुच जाय। हमारे देशके गचकरके उद्योगका उदाहरण ऊपर दिया गया है। सरक्षणकी नीतिसे ही वह अपन परा पर खडा हो पाया

है। कपड़े उद्योगका उदाहरण लीजिये। यह निश्चित बात है कि हमारे यहाँ कपास पत्त होना कारण कपड़े घड़े लिए इच्छाम अधिक कृती सुविधाएँ हमारे लामें ह। इमालिए इच्छामनी प्रतिसपर्धा हाने गुण नी और विदेशी सरकारका आरम का मत्त या प्रोत्साहन न मित्र पर भी हमारे देश कपास उद्योगका विरास हुआ है और वह अपन परा पर र्णा हो सका है। एम उद्योगका यति आकषर सरक्षण मित्र हाना ता वह बहुत पन्ने अपन पर र्णा र्णा। र्किन हमार दामें कपास उद्या पर एर दूसरा ही दृष्टि विचार करना चाहिये। कपासका उद्योग हमारे विमाना सहायक गृह उद्योग रूपमें जीर बुनाका उद्या हमारी खताका ब पट्टवानका एव ग्रामोद्योग रूपमें चन्ता था और आज भी उमा तरह चलना चाहिये। परन्तु त्रिणी रायमें मुक्त व्यापारका नीतिक अनुसार किसा भी तरहका एकादके त्रिना आनका त्रिणी कप और मूनन इन गृह-उद्योग और ग्रामोद्योगका तो त्रिया और दगाका जपार नुक्मान पट्टवापा। आनर स्वदगी मित्र विनयना कपाको ता निका बाहर कर त्रिया है। र्किन यति विमानाका खुहाल बनाना हा ता हमें स्वर्णी मित्र मित्र भा र्णीका सरक्षण देन और जाग वानका नानि अपनानी चाहिये।

१५ सरक्षणक पन्में दूसरी वना र्णाल यह है कि प्रत्येक दामें उद्याकाकी विविधता होनी चाहिये और नहा तक हा मवे प्रत्येक र्णा अपनी मुख्य कृतीने वारमें स्वयपूण और स्वावर्म्भी हाना चाहिये। उद्याकाकी विविधताक कारण जनताका भावर्णिक और सवागीण विकास हो सरता है। एव हा तरहका उद्योग एकर बठ र्णने किमा देशकी जनताकी वदिवे भा एकागी हो जानका डर र्णता है। इमक मित्र समाजन जावनाधार उद्यामा — जस कि अनाज आर कपडा — तथा मुख्य उद्यामा — जस र्णका उद्यामा — क वारमें कोइ भा दगा दूसरा पर निभर रह ता र्णमें वहुन वना खतरा है। एसी चीजें विर्णामे सरानमें मन्ता पन्ता हा और अन र्णमें वनानमें मन्ती भा पन्ता हा ता भी य चाजें हर दगाका अपन यहा बनानी चाहिये। आधिक दृष्टिम किमा चाजरा महगा या मन्ता हाना दगा जीवनमें मुग् वस्तु नहा है क्पाकि दूसर दगाकी चीज भू हा मन्ती वनी हा र्केनि वनाम यह चात तयार लानमें उा चाजका वनानकाठ हमार दगा लाग यि बेकार हा तात हा और र्णें दूसरा का काम त्रिया न जा सकता हा ता मन्तपनक उग सन्धि लाभका तुन्नामें बकाराका यह निश्चित हानि बट्ट बड जानी है।

साम्राज्यके अगभूत देशको तरजीह — 'इम्पीरियल प्रिपरेस'

१६ आगेकी परिस्थितियोंमें मुक्त व्यापार और संरक्षणकी नीति विवादास्पद विषय नहीं रही। प्रत्येक देश संरक्षणकी आवश्यकताको मानने लगा है। मुक्त व्यापारका बहुत समयके इच्छुक भी पहले महायुद्धके बाद संरक्षणकी नीतिको हस्त अपनाते गए और गन १० में इम्पीरियल ड्यूटी एक्ट पार करके उसने स्पष्ट मुक्त व्यापारकी नीति छोड़ दी। परन्तु उमर बनाए उसने एक नई नीति निरानी है जिसमें साम्राज्यकी भीतरके देशों द्वारा एक-दूसरेकी तरजीह देनेका बात कही गई है। इस इम्पीरियल प्रिपरेस कहा जाता है। इसमें देशों यह दावा जाता है कि हम भू-भाग ब्रिटिश साम्राज्यके बाहरके देशोंके माल पर संरक्षणका भार उठाते हैं परन्तु साम्राज्यकी भीतर एक-दूसरेके साथ मुक्त व्यापार कर और यदि संरक्षणकी जरूरत पड़ेगी तो दूसरे देशोंकी अपेक्षा साम्राज्यके अगभूत देशोंके माल पर कम जमानत देंगे। इसमें साम्राज्यकी स्वयंपूर्ण बनानेकी विचार समाया हुआ है। लेकिन एक राष्ट्रकी स्वयंपूर्ण बनानेमें जो राजनीतिक सुरक्षा तथा धन है वह साम्राज्यकी स्वयंपूर्ण बनानेमें सहायता नहीं सजना क्योंकि ब्रिटिश साम्राज्य तो दुनियाके एक सिरम दूसरे सिरे तक फैला हुआ है। मान लीजिये कि अफगान अथवा हिन्दुस्तान कुछ सात चीजोंके लिए कनाडा पर निर्भर करता है तो युद्धके समय जब समुची मांग अरक्षित हो जाय तब कनाडाके माल लाना भी कठिन हो जायगा। साम्राज्यके अगभूत देशोंको तरजीह देनेमें एक और दोष भी है। मान लीजिये कि हमें अपने यहांके कुछ खास उद्योगोंको तो संरक्षण देना ही है। लेकिन संरक्षणकी जरूरत पड़ते समय हम जापानकी अपेक्षा आस्ट्रेलियाके साथ पक्षपात करते हैं। एक ही जातिके जापानी माल पर हम अधिक कर लगाते हैं और उसी तरहके आस्ट्रेलियाके माल पर कम कर लगाते हैं। यदि हिन्दुस्तानमें वस मालके भाव जापानके माल पर लगाय हुए भारी करके हिसाबसे तय किये जाय तो हिन्दुस्तानके खरीदारोंको वना ज्यादा बाधा उठाना पड़ेगा। उसका लाभ या तो हिन्दुस्तानके उत्पादकों या व्यापारियोंको मिलेगा अथवा आस्ट्रेलियाके व्यापारियोंको मिलेगा लेकिन हिन्दुस्तानकी सरकारको यानी हिन्दुस्तानके कर देनेवाले सामान्य लोगोंको उस मालके खरीदारोंके रूपमें अपने पर पड़ हुए बांधके बदलेमें जो लाभ मिठना चाहिये वह नहीं मिलेगा।

१७ इसका निम्ना साम्राज्यके अगभूत देशोंके साथ पक्षपात करनेमें व्यर्थ ही दूसरे देशोंके साथ गत्रता होता है। मान लीजिये कि कनाडा या

आस्ट्रेलियाकी अपेक्षा अमेरिका जमनी या जापानके साथ व्यापारिक सवध रानमें हमें ज्यादा लाभ हा तो भी इम तानिके कारण टम यह लाभ नहीं उठा सकते। एसा होते हुए भी ब्रिटिश शासन-बालम सन् १९३२ में साम्राज्यके देगाने मिलकर कनाडाके मुख्य गहर ओटावाम परस्पर करार (ओटावा पक्ट) किय। उनम भारतका भी सम्मिलित माना गया और तत्वातीन केन्द्रीय धारासभा द्वारा जल्प बहुमतसे उन कराराका स्वीकार भी कराया गया। नवम्बर १९३६ म उन कराराका अन्त आ गया था। अब हम स्वतन्त्र हो गय ह इसलिये हम अपनी इच्छानुसार करार करके किसी भी देगके साथ व्यापार कर सकते ह।

सरक्षणके प्रकार

१८ अर हम यह देखें कि किसी भी देगमें विकसित हा रह उद्योगाको सरक्षण देना हो तो वह किस तरह लिया जा सकता है (१) विदेगी माल पर आयात-कर (जकात) लगाकर विदेगी मात्रका देगा मालस महगा बनाना (२) देगी मालक कारखानाको माल देकर देगी मालका विदेगा मालस सस्ता बनाना (३) विदेगी माल पर आयात-कर लगाना और देगा मात्रकी सहायता करना — इस प्रकार दोना रूपमें सरक्षण देना। सरक्षणके इन प्रकारोकी हम सक्षपमें यहा चर्चा करमे।

विदेगी मात्र पर आयात-कर लगाकर देगके उद्योगाका सरक्षण देनास अय देगके साथ बर-द्वप बन्गा और युद्ध हाग। दूसरे देग हमार माल पर आयात-कर लगावेंग और देगमें एसा मात्र महगा विकेगा। अत कुछ लोगाका कहना है कि एसा माल उपयोगमें लेनवालाका नुस्सान हागा।

देगी मालको आर्थिक सहायता देकर सरक्षण प्रदान करनी देगके भीतर ही अगडे बन्ग जनचित प्रतिस्पर्धा हागी और कुछ लागको तो एसा भी डर है कि उत्पादक नफा होने पर भा झूठा गोरगुठ मचाकर या झूठे बहीपाते दिगाकर कहेंग कि उह मात्र तयार करनमें नुस्सान हाता है।

एसी स्थितिमें जिसे माल दा जाय और किस न दी जाय यह प्रान लना होना है। कौइ उत्पादक कह कि उस मालक उत्पादनमें घाटा आता है, ता इम बातकी जाच करानी पडगी। और इस तरह जाच करानना सब बहुत यड जायगा। यह सब और महायताकी रकम रायन खानस देना पडेगा। इसना अय यह हुआ कि उनना रकम जनता हितर लिए सब करनको नहा मिलेगी। सरक्षणरी रीतिपात्र विरुद्ध य महत्वपूर्ण आपत्तिमा ह। किसी भी प्रकारसे सरक्षण देनमें बठिनाइया तो ह हा। फिर भी उचित

विचार कर देगी मात्रा सर्रास लिया जाता चाहिये। यह बात परिस्थिति पर निर्भर करती है कि ऊपर बताई गई रातियामें न मरणाणका कौत्सा रीति अपनाई जाय। यदि देग अय त्गान सामन टिना रत्नमें मगय हा ता विन्नी माल पर आपा-कर त्गाना मदन अछा वान हागा। इगमें गव कम आयगा। केवल धौरी करनना हा रत्न हागा।

यदि देगमें यह गक्ति न हा ता उम अपन उद्योगाको आर्थिक महायता नेनी चाहिय और अपन उद्योगाता विनाम करता चाहिये। और जम जम देगी उद्योग स्वावन्मी बनन जाय वस वस आर्थिक महायता या सरदाण वत् करते जाना चाहिये।

मालका लाटना (डम्पिंग)

१९ महा रत्न बातका ना उल्ग्य करना चाहिये कि अपने देगा व्यापार जमानत लिए एव देग अपना बनाया हुआ मात्र दूसरे त्गाके बाजार पर गत्कर वहाके प्रचलित भावानी गिरानके लिए गगत कीमनम भी मस्ता बचना है। किसी त्गमें उसका जल्दनम अधिन मात्र बनता हा और उम मात्र लिए दूसरे देगाके बाजार अधिनारमें करने हा ता उस देगकी सरकार उस मात्र नियति पर कुछ रान मत्त दती है जिसम परत्गमें वह मात्र सस्ता बचा जा सके। परत्गेन स्थानीय उद्योगका नष्ट करनक हतुमे उस देगके बाजारमें अपना माल गगतस भी मस्ता बचना उस देग पर मात्रा लाटना या उम देगस साथ भावनात् प्रतिस्पर्धा करना कहगता है। उत्पादक या व्यापारिक कपनी बहुत बडा हा ता सरकारकी मत्तके बिना भा थात् समय तक स्वय हानि सहकर वह मात्रा डम्पिंग कर सकती है। उसक पाम पर्याप्त रूपया होनस वह एकाध साल तक घाटा सह लेती है और परत्गेने उद्योगको तोड देती है। इसके फत्स्वरूप जत् प्रतिस्पर्धा मिट जाती है तत् वह अपने मात्रक भाव बनाने त्गना है और गुरुमें उठाया हुआ घाटा पूरा कर लेती है। माल लाटनका एक दूसरा प्रकार भी है। किसी उद्योगकी बन्ते उत्पादनका नियम लागू हाता हो ऐकिन अपने देगमें अमुक मात्रासे ज्याग उसके मालकी खपत न हा सकती हा तो उत्पादक बन्ते उत्पादनके नियमका गभ उतानके लिए मात्र तो अधिक मात्रामें बनाता है परन्तु अपन देगमें जितना मात्र खपता हा उतना ही बनाने पर जो उत्पादन-खच जाये उसका हिसाब लगाकर उस भावसे अपने देगमें वह मात्र बचना है और जो जस्तसे ज्याग मात्र बनाया हा उम वह सस्ते भाव पर परदेगमें बचना है। एक उदाहरण देकर हम यह बात स्पष्ट करेंगे। किसी चीजके ५ हजार नग

पन्ना करानमें प्रतिनग ४ रु० खच आता है। परन्तु इस उद्यागको बन्दे उत्पादनका नियम गानू हानस उनके १० हजार नग तयार निय जाय तो प्रति नग ३ रु० खच आता है। अत्र गानू जहरत ता ५ हजार नाना हा है। फिर भा उत्पादन १० हजार नग बनाता है और उनका कुल लागत खच ३० हजार रुपय आता है। यह उत्पादन अपन देशमें ता ५ हजार नग ४ रुपय प्रतिनगकी दरसे हा वचेगा और एसा करक वह २० हजार रुपय खड करेगा। इस तरह बाकीके ५ हजार नग उम १० हजार रुपयमें अर्थात् प्रतिनग २ रुपयके हिमावम पड। परदेशमें वह २॥ या २। रुपयमें एक नग वचे तो भी उसकी मूल लागत कीमत — प्रति नग रुपय — से यह भाव कम हुआ। इस तरह गगतसे कम भावमें अपना माल बचकर भी परदेशक उद्यागका वह नष्ट कर सक्ता है। इस उदाहरणम एसी विचित्र बा हाती ह कि जिस देशमें मात्र बनता है उस देशकी अपक्षा परदेशमें वह बहुत सस्ता बिकता है।

व्यापारकी तुला और लेन-देनकी तुला

२० आन्तर राष्ट्रीय व्यापारक सिलमिलमें एक महत्त्वकी बातका विवेचन करके हम यह प्रकरण पूरा करग। यह बात व्यापारकी और लेन-देनकी तुलासे सम्बन्ध रखती है।

२१ कोई भी देश दूसरे देशके माय सम्बन्ध समय तक तभी व्यापार कर सक्ता है जब वह जितनी कामतका मात्र आयात कर उतनी हा कामतका माल निर्यात कर सक। क्याकि नियानम अधिक जितना माल वह आयात करगा उतनकी कीमत उस सान चानक रुपमें देशसे बाहर भजनी पडेगा। जितना अधिक माल वह आयात करेगा उतना अधिक साना चाने उम बाहर भजना पडेगा। हमेगा इस तरह करते रहनेके लिए गायक ही सिमा देशके पाम पर्याप्त मोना चादी होता है। इसलिए प्रत्येक देश अपन आयात आर निर्यातका तुलाका सतुलित रखनकी बाणिज्य करता है और इस तरह आन्तर राष्ट्रीय व्यापार विस्तृत स्वरूपक वस्तु विनिमयका रूप लेता है। आयात निय हुए मात्रकी कामत हर देश निर्यात निय हुए मात्रक रुपमें चुकाता है।

२२ फिर भा सिमा देशका निर्यात आयातसे अधिक हा ता उम देशक लागत हान ह और एसा मात है कि हमन जितना अधिक माल निर्यात किया उतना हमारे देशका धन बड़ा। जिन देशका निर्यात आयातम अधिक हो उम देशके व्यापारकी तुला उमना आर धुरा हुई माना जाती है और यह कहा जाता है कि व्यापारका तुला उम देशक अनुकूल है। यदि नियानम आयात अधिक हो तो कहा जाता है कि व्यापारका तुला उनके प्रतिकूल ह।

२३ लेकिन आयात निर्यातवे जा सरकारी आर प्रशासित होने ह उन परस य कानमें भू हो सता है कि व्यापारकी तुला रिगी दान अनुकूल है या प्रतिकूल । विभिन्न देशों में मा और गयाआता जा कान-कान हाता है वह सबका सब सरकारी या सावधानि आरडामें दन गी होना । एनी अनका बीजाना आयात निर्यात हाता है जिना आर वही भा रज हुए नही मिन्ते । जिना आयात निर्यात आर दन हात ह उगे हम दुय या सावजनिन आयात निर्यात कहेंगे और निमन आर रज नग हात उग हम अरय या व्यक्तिगत आयात निर्यात कहेंगे । जिना भा दान बाहरकी तुनि या सय कानवाल व्यापार और कन-कन पूरे आरड निवाउन हा, ता सावजनिन जीर व्यक्तिगत दाना ही प्रशासका आयात निर्यात हिनाममें लेना होगा ।

२४ आन्तर राष्ट्रीय कन देन पूरे हिनाममें सामान्यत नीचे लिखी बातें सामि की जानी ह

(१) माका आयात निर्यात (२) दुय अर्यात सान चानीका आयात निर्यात (३) एक दग द्वारा दूसर देगको व्यापारके सम्प्रधमें दी हुई सवाए अयवा विय हुए काम जस स्मरारा भाडा बीमा-खच थकाना व्याजवट्टा और विनिमय-दर (४) एक दगने दूसर देगको पसा उचार लिया हा ता उसका व्याज (५) दूसरे देगमें कोई पूजी लगाई हो तो उसका नफा (६) दूसर देगमें रहनवाणे दूतावास पर होनवाला खच (७) पराजित राष्ट्रका औरस विजता राष्ट्रको दिया जानवाला दड (८) परदेगमें नौकरी या व्यापार बंधके लिए गय हुए लोग वहासे जो धन कमाकर लायें वह धन या वही रहते हा तो अपन सग-सम्बन्धियोंको व जो पसा भजते हो वह पसा (९) एक देगवे यात्री दूसरे देगमें जाकर जो पसा खच करत ह वह पसा (१०) परदेगमें पन गय हुए विद्यार्थी दूसरे देगमें जो खच करे वह पसा और (११) एक देग दूसरे देगका शिक्षा कष्ट निवारण धम प्रचार या एस ही दूसरे कामामें मदद करनके लिए जो पसा भजना है वह पसा ।

२५ उपरकी सूचीमें दिय गय कुछ बिपयाक आरड सरकारी दफ्तरोसे मिल सकते ह और कुछ नही मिठ सकते । लेकिन इससे यह तो स्पष्ट हो हा जाना है कि सिफ मालके आयात निर्यातके अतर परसे यह कहना ठीक नही कि एक देगसे दूसरे देगमें कम या अधिक धन जाता है । यह हिसाब सिफ व्यापारकी तुला परसे नही परन्तु ऊपरकी सूचीमें बताय हुए सार कन देनकी तुला परसे उगाया जाना चाहिय । इन्डकी दश्य या

सावजनिक व्यापार-तुला दखें ता उसका नियत आयातम बहुत कम हाना है अर्थात् व्यापार-तुला उसका विरुद्ध है। फिर भी हमारा विश्वयुद्ध गुरु होना पहा वह दनगर नहा बल्कि लनदार दग था। क्याकि उसकी सावजनिक आकटामें दज न हानवाली आप बहुत अधिक थी। दग विन्गामें उसका वर और वीमा वपनिया था जिनका नफा उन मिन्गा था। इसका अगवा उमन परन्तगामें सूत्र पसा उधार न रका था और पजा ना लगा रका थी जिसका याज और नफा उस मिन्गा था। और उसकी वनीम वनी आप ता उसका जहाजाक निरायका थी। इसलिए आयातम कम माल नियत करन पर भा उन उनकी तुला उमन अनुकूल रहता था और प्रतिवप अधिक धन इन्गामें तिखरर दग आना था।

१८

व्यापार-सम्बन्धी लेन-देनका निवटारा

१ दगके भानरी और बाहरी व्यापारक सम्बन्धमें द्रव्यता जा लन-लेन होता है वह निम तरहस निगटाया जाता है। इम निन्गामें पिउने प्रकरणामें महा महा प्रसगवग उल्लेख त्रिया गया है। फिर भा इम व्यवहारका समग्र रूपमें कल्पना हा सब इसन लिए थाग-बहुन पुनरुक्तिना दाव करव भा उनका एकनाय सम्बद्ध वणन नम प्रकरणमें वर दना उचित समना गया है।

२ भिन्न भिन्न स्थानानि याव हानेगाक मालन लन-लेनका निगटारा सराफा और दवनि द्वारा हाना है यह पन्त कहा जा तुना है। यह काम व ननन पगा ल या देनर नग करत परन्तु दुडियाके द्वारा करत ह य भी हम जानते ह। जिस आन्मीका दूगरा जगह पगा भेजना हाना है वह पगा लरर अपन सराफन पाम या अपन बरमें जाना है। मराक यह पगा न्ता है और जिम जगह पगा भेजना हो वहाक जिम मराफन माव उमरा गाता चन्ता है उमरा नाम पर हुडा गिक्कर उस आन्मीका न्ता है। नम हगामें जिम आन्मीको पसा न्ता हा उमना नाम बताया जाता है और लिखा जाना है कि य आन्मी या इमका तरफम जा आन्मी हना निन्गावे उन पगा न दाजिय। बैकन पाम हम गावें ता वह अगना गावा पर या दूमर बैक पर हुडा गिक्क दता है। एक वरका दूमर वक पर गिगा हुई हुडाका दानन वन्त है।

देगरे भीतरका लेन देन

३ देगरे भीतर हा नातर या मानवा लेन-देन हुआ है तो उमन सम्बन्धित उन-द्वारा विपणन भी एग्री हुडिया द्वारा होता है। मान एग्रीजिये रि अहमदाबादकी एग व्यापारिक पढ़ाको कर्तव्य एग व्यापारिक पढ़ीना मात्र भजना है। अब हम देखें कि कसना पगा रिम तरह पुराया जाता है। या तो कर्तव्यका व्यापारा माना कर्तव्यता स्थापन पर पढ़ा ही तुरन्त अहमदाबादके व्यापाराके पास पगा भज या पहला ही अहमदाबादके व्यापाराके महा अपनी रकम जमा रखकर मानके रकमें चर्त ही उतनी रकम ताम लिखनको कह। अथवा अहमदाबादका व्यापारा कर्तव्यके व्यापारीके महा हियाय रगता हो तो मानके अहमदाबादके रवाना हाने ही या कर्तव्य पढ़ाके ही कर्तव्यका व्यापारी अहमदाबादके व्यापारीके सानमें मालकी कामतकी रकम जमा करे। परन्तु इस तरहस मानकी बीमत देन या बमूल करनका मौरा बहुत कम थाना है। अधिक् प्रचलित रति तो यह है कि मानको रेलमें चर्तकी रसीत और मालकी बीमतकी माल खरीदनवाक व्यापारी पर लिखी गई हुडी अहमदाबादका व्यापारी अपन कर्तव्यके आन्तियका सराफको या अपनी तरफमे काम करनवाले कर्तव्यके बन्को भज देना है। यह आडतिया सराफ या बक माल खरीदनवाके उस व्यापारीको खबर देता है और वह व्यापारी हुडीको स्वीकार करव या तो नरद पसा देता है या अपना साता चलता हो तो उसमें नाम लिखा देता है और रेलके रसीत केकर उसकी मदसे माल छडा देता है।

४ जब एक और त्रिया वाकी रहती है। इस तरह कर्तव्यके माल खरीदनवाके व्यापारीसे जो पसा बमूल हुआ उस अहमदाबादके व्यापारीके पास पहुचानेका काम रह जाता है। इसके लिए कर्तव्यका सराफ या बक अपनी अहमदाबादकी गाला पर या अहमदाबादमें जिस सराफ या बकके साथ उसका हुडापनीना साता चलता हो उस सराफ या बक पर उतने रुपयकी हुडी लिखकर अहमदाबादके व्यापारीके पास भज देता है। अहमदाबादका व्यापारी इस हुडीको भुनवा कर या तो उसका नरद पसा ले लेता है अथवा इस हुडीको अपने सराफके महा या अपन बन्में अपन खातेमें जमा करा देता है।

५ कर्तव्यसे अहमदाबाद मात्र जाया हो तो भी ऊपर बताई हुई विधि ही होती है। अन्तमें कुछ मिठाकर परिणाम यह आता है कि सराफके महा या बकामें आमन-सामने जमा-नामे लिखी गई रकमें अधिकतर बराबर हो जाती

हूँ और वास्तवमें नकद पसा अहमदाबादसे कठकता और क्लकत्तसे अहमदाबाद भजना नहीं पड़ता। मालके बत्लेमें मालका आना जाना होता रहता है और नकद पसा भजे विना आमन-सामने कीमत बराबर हो जाती है। सराफाके यहा और बकोम तथा व्यापारियाँ यहा जमानामेके हवाजे डल जाते हूँ और हवाला गृह (क्लिअरिंग हाउस) का थोडासा कामवाज करना पड़ता है। दो स्थानाके बीच आमन-सामन आन-जानवाले माठकी कीमतमें अन्तमें कुछ मिलाकर जितना फक रहता है उनना ही पसा वास्तवमें एक स्थानसे दूसरे स्थानको भजना रह जाता है।

६ हालमें ही एसी प्रथा गुरू हुई है कि अहमदाबादकी व्यापारी पनी रेलवे रसीद और मालकी कीमतकी हुडी अहमदाबादके ही बन्को जिसकी शाखा क्लकत्तमें भा काम करती हो थोडासा कमीशन चुकाकर देव देती है और अहमदाबादके बन्से पसा तुरन्त ल लेनी है। अहमदाबादका बन् अपनी क्लकत्तकी गाखाको वह रेलवे रसाद और हुडी भज देता है और क्लकत्तके व्यापारीमे पसा बमूल करके उसे रेलवे रसीद सोप देता है। यह व्यवहार एसा ही है जसा कि हम आगे विदेशी व्यापारके सम्बन्धमें होनवाला विनिमय-पत्रा (बिल्ल ऑफ एक्सचेंज) का व्यवहार देखेंगे। विनिमय-पत्रमें रसाद और हुडीके सिवा मालका थारा और कीमतका बीजक भी होता है। विदेशी व्यापारिया और सराफाके बनिस्वत दाने भीतरक सराफ और व्यापारी एक-दूसरेको अधिप जानने हूँ इसलिए उह एसे बीजकवाले विनिमय-पत्रकी जरूरत नहीं मान्ते हाती। मानी हुडी पर्याप्त रूपमें सुरक्षित मानी जाती है। बने देगे भीतरके एसे विनिमय-पत्राका कामवाज करनमें बकाको बहुत दिलचस्पी नहा होती। इसका कारण यह है कि जहा परदेशी विनिमय-पत्राकी अवधि सामान्यत तीन महीनकी हाती है वहा दान भीतर ता एक जगह दूगरी जगह माठके पहुचनमें छह-मात दिनग ज्याता नहीं गते। इसलिए दाने थोड समयके विनिमय-पत्रामें पैसा राखनमें बकाका कामवाज जितना बन्ता है उतना उह लाभ नहीं हाता। विदेशी विनिमय-पत्र गुन्नामें अधिक् लम्बे समय ता गड रहते हूँ फिर भा उनका अवधि अनिश्चित न होनस पसका विवमनीय व्यवहारमें लगानके लिए बक इस बहुत अच्छा माधन मानन हूँ। इसके सिवा विनिमय-पत्राको सरोरि विदेशी व्यापार हाता है और ब कई हायामें ग निकलते हूँ इसलिए जान बराना अच्छा लाभ मिठ जाता है।

७ देगे भीतरक विनिमय-पत्राके बनिस्वत विदेशी विनिमय-पत्र अधिक् लम्बी अवधिप होत हैं। इसक सिवा, विदेशी व्यापार-सम्बन्धी

लेन देनमें एक बरा जन्तर यह होता है कि जो दाना का चन्न अन्न अन्न होता है और जसकर मानव परानवार व्यापारीका मानव कामा माल बचनवार व्यापारिक दाममें प्रचलित चन्न रूपमें घुसानी जाता है। इन दो भदाव सिधा विन्मय साथ हानवार लन देनव निवटारेवा रीति तत्परन वहा हाती है जा देनव भीतर लन देनवा हाता है।

विदेगावि साथ होयाला लेन-देन

८ विदेगावि साथ लन-देन निवटारेवा गारा व्यवहार ममानव लिए थारम हम एन साठ उदाहरणत करम। मान गजिये कि बम्बईक मावजीभावन लनके गरस नामक व्यापारिको रुईका गी गाठें सौ रूपय प्रतिगाठ भावम बदा ह और उन गरसम १० हजार रूपय लन ह। जस हम यह मानें कि लदनक डविड नामक व्यापारिक बम्बईक चतुभुजका कपड कुछ घान बच ह जिनकी कुल कीमत ७५० पीण हाती है। प्रति रूपया १८ पैसेका चातू विनिमय-रस दस हजार रूपय पूर ७५० पीणके वरापर हुए। लदनका लॉरेस बम्बईके मावजीभाईको १० हजार रूपय दनने लिए ७५० पीड भज और बम्बईका चतुभुज १० हजार रूपयके ७५० पीण लनके डविडको भजे तो पसवी दुगुनी आवा-जाई हो। इसके वजाय बम्बईका चतुभुज बम्बईके ही मावजीभाईको १० हजार रूपया दे दे और लदनका लॉरेस लदनक डविडका ७५ पीण दे दे तो रूपये या पीण भज बिना एव-दूसरेके लन देनवा निवटारा हो जाता है। लदन बम्बईका चतुभुज यह कम जान कि उसाके गहरके मावजीभाईको लनके व्यापारिके रूपय लन ह और लदनका लॉरेस भी यह कसे जान कि उसाके गहरक डविडको बम्बईके व्यापारिके पीड लेन ह। इस तरह यह प्रश्न खडा होता है कि दाना व्यापारिको इन्टठा कसे किया जाय और उनका मल कसे बठाया जाय। इसके सिवा इस कल्पित उदाहरणमें तो हमन एव-दूसरेको समान रकम देनकी ही कल्पना की है परन्तु सब सौते थोड ही एकसी रकमके होते ह। फिर सत्र उदाहरणमें पसे चुकानेकी अवधि भी समान नही होती और सब व्यापारी भी तो एकसी साखवाल नही होते। य सब कठिनाइया विनिमय (एक्सचेंज) का काम करनवाली पेटिया और बकोके द्वारा दूर हो सकती ह। बम्बईका मावजीभाई बम्बईक विनिमय-बकमें जाता है और अपो निर्यात किये हुए मात्रसे सम्बन्धित कागजात — अर्थात् जहाजमें माल चत्तानका रसीद मात्रकी तफसील और कीमतका बीजक तथा लदनके लॉरेसने नाम लिखी १० हजार रूपयकी हुडी — बम्बईके विनिमय बकको बच देता है और

उसके रुपये ले लेता है। बम्बईका बक अपना लानकी गाखा या मुख्य दफ्तरका ब कागजात भज देता है और वहाका बक लानके लॉरमेंसे उन कागजामें म हुडीका पसा पॉन्क रुपमें बसूल करके सार कागजात उस सौंप देता है। उनके जाधार पर लदनका व्यापारा जहाका बपनीम माल छुटा सकता है। इस तरह हुडीका पसा बसूल होने ही लानका बक अपनी बम्बईकी गाखाको सूचना कर देता है। इसा तरह लानका व्यापारी डविड अपन निर्यात बिय हुए मालके कागजात घनाकर लानका बकका बक डाकता है। लानका बक अपनी बम्बईकी गाखाका ये कागजात भज देता है और बम्बईका बक बम्बईके चतुभुजस पस बसूल करके उस कागजात सौंप देता है।

९ इस सारे व्यवहारमें एक बात और होती है। मान लाजिय कि लानका बक वान बेचनवागा व्यापारा डविड अपन हाथमें पस आय बिना जहाज पर माल लानका तयार नहा जाता। तब वह अपन मालका बिल बनाकर थान खरीदनवाल बम्बईक चतुभुजका भज ताता है और चतुभुज बम्बईक विनिमय-बकमें जाकर उस बिलकी रकमक बराबर कीमतका दाना हुडा (डिमाण्ड ड्राफ्ट) खरीता है और उन हाथसे या तारसे डविडका भज देता है। और डविड लानके बकमें जाकर उस दिखाता है और पस बसूल करनका बाल माल जहाज पर चाना है। इस तरह पसा ड्राफ्ट हुडाके जरिये भजा जाता है तब उस डिमाण्ड ड्राफ्ट या डी० डी० कहा जाता है और यदि तारसे भजा जाता है तो उस टेलिग्राफिक ट्रान्सफर या टी० टी० कहा जाता है। इस तरह आयात निर्यातक लान देनका निबटारा विनिमय-बक द्वारा दाना हुडा (डिमाण्ड ड्राफ्ट) द्वारा या तार जर्वात् टेलिग्राफिक ट्रान्सफर द्वारा किया जाता है।

विनिमय-बकका भाव

१० अब यह प्रश्न मठा जाना है कि आयात निर्यात सम्बन्धित ये अलग अलग तरहके कागजात खरीदने-बेचनका काम जा बन करत है व किस भावसे इन्हें खरात ह और बचत ह? य कागजात खरात-बचन समय बन नाच निमी बातना हिमाय जान ह (१) एन गेम दूसरे गामें मोना भजना हा पड ता भजनका रकम कितना आता है? (२) दानाका अवधि कब पूरा जाता है? (३) जहा बक पस लेता है वहा जो जगा पस बसूल करने हा वहा गात्रका चालू दर क्या है? और (४) आयात और निर्यात कागजातकी पूर्ति जोर माग बाजारमें कितना है

११ यदि दा देशों बीच आयात और निर्यातका व्यापार समान कीमतवा हा ता जितना पसा परल्ला भगा हाता है उता हा पसा परल्लाग लाना हाता है। एस मामलामें लन-दनरा मारा निरदारा विनिमय-पत्रा जरिय ही पूरा हा जाता है। एव दगास दूगरे दगम नरल पसा भजना ही नहा पत्ता। विनिमय-पत्राकी पूति और माग बराबर होना है इगलिए विनिमय-पत्र जितना रकमव हात ह उता मूल्यमें व बिरत ह। बव मिफ विनिमय पत्र खरील्लर पसा ले समय विनिमय-पत्रकी अर्वाधि पूरी होने तववा याज वाट लता है और पसा धसू लरनव अपन महनतानर वल्लामें कुल पीस लता है। विनिमय-पत्रव एग भावका सनुल्लित भाव कहत ह। लकिन मान लीजिये कि देशमें स जितना माल निर्यात हुआ है उसस अधिक माल देशमें आयात हुआ है। तज इतना ता निदिचत है कि निसा भा आयात-व्यापारीका इन दानाके फवकी रकम नवद पसके रूपमें परदेश भजनी हागी। लकिन परदेशमें पसा भजना खर्चाला और क्षयलवा काम है। पसिय करना पत्ता है बीमा कराना पडता है इग तरह कई क्षमटें करनी पडती ह। इसलिए हर व्यापारी एस मौकेको टालता है। बवबाल आयात निर्यातव कागजाव बाजार हयसे हमगा अच्छी तरह परिचित रहने ह। इसलिए बव आयात-व्यापारियाको अपन पासके विनिमय-पत्र बचत समय विनिमय-पत्रकी रकमस कुछ अधिक रकम चढा कर बचत ह। इस विनिमय-पत्रके लिए बट्टा या कमीशन चुकाना कहा जाता है। लेकिन इस कमीशनकी एव सीमा होती है। आयात-व्यापारी इसीलिए विनिमय-पत्र खरील्लनको तयार होता है कि ऐसा करनस नवद पसा भजनकी अपेक्षा उस कम खच पडता है। कमीशनकी रकम नवद पसा भजनके खचसे हमेगा कम ही होती है। यदि अधिक कमीशन मागा जाय तो व्यापारी नकल पसा ही भजना पसल करेगा।

१२ अब एस मान लीजिये कि आयातसे अधिक माल देशसे निर्यात हुआ है और देशमें अधिक पसा जानवाला है। निर्यात करनवाले व्यापारी अपने निर्यातके विनिमय-पत्र बकोव पास बचने जायग उस समय बव विनिमय-पत्रामें लिली हुई रकमस कुछ कम रकम निर्यात करनवाले व्यापारीको दग। निर्यात व्यापारियोंको इतना घाटा सहना पल्ला। लेकिन घाटकी यह रकम नकल पसा मगानेके खचसे तो कम ही रहेगी, क्योकि घाटा यदि उससे अधिक हो तव तो निर्यात-व्यापारी विदेशसे नवद पसा मगाना ही पसन्द करेगा।

१२. अलग अलग देगात्रा चलन अलग अलग होनके कारण इस तरहक लेन देनमें कुछ और प्रश्न भा पण हान ह। हिन्दुस्तान और इंग्लण्डक चलन भिन्न अवयव ह। लेकिन रुपय और पौण्ड्रा भाव या इन दानके बीचक विनिमय की दर कानूनस निश्चिन की हुई है। पहले वन दरमा तब १६ पेंसका एक रुपयकी दर जारी गी। सन १९२७स १८ पेंसका एक रुपयकी दर कानून द्वारा निश्चित कर दी गई। इसलिए चलनक विनिमयक सम्बन्धमें विनिमय पत्राने भावमें साम अन्तर नहा पडता। व्सा तरह जहा दा ग्गामें गुद्ध सोनका चलन हा यानी चलनक मिकान वन्तमें समान निश्चित भावस गुद्ध साना मिल सकता हा वहा भा विनिमयका दरामें वन्त उचल-मुयन्त नही हाता। प्रथम महायुद्धक पहले इंग्लण्डक एक पौण्ड्रा ११२ ग्रैन गुद्ध साना मिन् सकता था। व्सी तरह अमरिकाक डालरका २३२२ ग्रैन गुद्ध साना मिन् सकता था। व्मगिए एक पौण्ड ४८६ डालर हात थे। पौण्ड और डालरक इस भावको टकमाना भाव (मिण्डपार एकमर्चेज) कहा जाता था। प्राममें जब गुद्ध सानका चलन था तब एक पौण्डका टकमाना भाव २५२२ प्रकन्त हिसाबस निश्चित हाता था।

१४. इंग्लण्डस अमरीका या अमरीकास इंग्लण्ड सोना भजना हा तो पकिंग जहाजका किराया बीमा-पत्र व्याज-बट्टा मन्त मिगकर १ पौण्ड भजनका खच ०२ डालर आता है। इमगिए चलनके जिम आयात-व्यापारीको अमरिका व्सा भेजना हाता है वह अमरीकाक विनिमय-पत्र खरीन्ते समय वन्ही ४८३ डालर प्रति पौण्डम अधिन्त भाव दगा हा नहा। क्याकि विनिमय-पत्र इससे महगा मिन्गा ता वह विनिमय-पत्र खरीन्तक अजाय पौण्डमें खच भेजनक गिए ०३ डालर प्रति पौण्ड खचनका तयार हा जायगा। इसी तरह चलनक जिम निर्यात-व्यापाराको अमरीकास पसा लना है वह अपना विनिमय-पत्र ४८० डालर प्रति पौण्डम सन्ना नहा वचगा। क्याकि व्ममे कम भाव लेनकी अपेक्षा अमरिकास डालर मगवानमें उम लाभ है। विनिमय-पत्राका खरीन्त विन्तीने भावक य दा गिर साना या पौण्ड या डालर भजनेमें होनेवागे खचकी मर्यादास निर्धारित हात ह। अबजामें इन दा गिराका गान् अथवा स्पानी पाइन्ट कहत हैं। जब मालका आयात अधिक किया गया हा और अधिक रुपया अमरीका भजना हो तब पौण्डका भाव ४८ डालर सन्त जनरता है और उम सुवण निर्यातका निरा कहा जाता है। और जब अमरीकास अधिक पसा इंग्लण्ड लना हा तब पौण्डका भाव ४८९ डालर तब पडना है और उस

सुवर्ण-आयातका सिरा बहा जाता है। हमारे देशमें विनिमयकी मर्यादों के दासिरे १८५६ पेंस और १७५६ पेंस प्रति रुपयके हिसाबसे रहा है।

१५ डाऊर और पौण्ड्रे तुलनात्मक भावको प्राग रेट कहा जाता है। दानो देशके आयात और निर्यात व्यापारकी मात्रामें होनेवाले परिवर्तनोंके कारण यह प्राग रेट समय समय पर बदलता रहता है। जहाँ बचने वालोंके लिए एक और खरीदनेवालोंके लिए दूसरा प्राग रेट तथा न्यूयार्कमें बेचनेवालोंके लिए एक और खरीदनेवालोंके लिए दूसरा प्राग रेट व्यवहारमें रोज छपता है। बम्बई और लन्दन तथा बम्बई और न्यूयार्कके रुपयों और पौंडोंके बीचके अमक पेंसना एक रुपयके हिसाबसे और रुपयों तथा डाऊरके बीचके सौ डाऊरके अमक रुपयके हिसाबसे प्राग रेट अखबारोंमें रोज छपते हैं। इनमें समय समय पर जो अन्तर पड़ता है वह अमक देशों या बहुत छोटे अपूर्णत्वके बराबर ही होता है।

१६ विनिमय-मन्त्रके भावमें इस कारणसे भी पक्क पड़ता है कि उनका पसा तुरन्त चुनाया जानवाला है या देरसे। टर्निंगफिक् ट्रांसफरके भावोंके बेल रेट कहा जाता है। ये हमेशा ऊंच होते हैं। जिन विनिमय-मन्त्रकी अवधि तीन महीनेमें पूरी होती हो उनके भाव नीचेसे नीचे हाते हैं। दशनी हुई या कम अवधिकी हुईयाके भाव इन दोनोंके बीचमें रहते हैं।

चलनकी खरीद-शक्तिके आधार पर उसके मूल्यकी तुलना

१७ परन्तु आजकल तो किसी देशमें सोना या चादीका चलन प्रचलित ही नहीं है। चलनी नोटोंके बदलेमें सरकार सोना या चादी देनेके लिए बचनबद्ध नहीं होनी। प्रत्येक देशकी सरकार पर प्रजाके विश्वासके आधार पर ही हर देशमें बागजी द्रव्य चलता है। ऐसी स्थितिमें एक देशके चलनकी दूसरे देशके चलनके साथ टक्काली भावसे अथवा सोना चादीके बाजार भावसे तुलना करनेका प्रश्न ही नहीं रहता। ऐसी स्थितिमें अलग अलग देशोंके बीच चलनेवाले निवटारा किस ढंगसे किया जाता है? एक देशसे खरीदे हुए मालके बदलेमें दूसरे देशको अतमें तो नकद सोना या चादी ही देनी पड़ती है। लेकिन खरीदके सौदे तो चालू चलनके मापसे ही करने पड़ते हैं। इसलिए क्या एक चलनकी दूसरे चलनके साथ तुलना करनेके लिए कोई माप है? अर्थशास्त्री हर देशके चलनकी खरीद शक्ति परसे इस तुलनाका माप निकालनेकी सूचना करते हैं और मित्रदेशोंके बीच इस तरहकी तुलना पद्धतिसे व्यवहार भी होता है। इस पद्धतिको चलनकी खरीद शक्तिकी तुलनाकी पद्धति (पॉजिग पावर परिटी) कहते हैं। मान लीजिये कि १०० रुपयके नोटसे हमारे देशमें

दस मन गहू खरीदे जा सकत ह इग्लण्डमें दस मन गहू खरीदनके लिए ५ पौंडका नोट देना पडता है और अमरिकामें दस मन गहू खरीदनके लिए २० डालरका नोट देना पडता है ता सी रुपये, पाच पौण्ड और बीस डाकर तीनोंको हम समान मूल्यके मान सकत ह और इस आधार पर लन-देनके निवटारेके लिए विनिमयकी दर निश्चित की जा सकती है। लेकिन इस तरह एक ही वस्तु खरीदनेकी गति परस चलनका मूल्य ठहराना ठीक नहीं माना जायगा। इसलिए हर देशकी खास खास चीजोके भावकी सूचीसख्याक आधार पर उस देशके चलनकी खराद गतिनको नापा जा सकता है। अलवत्ता भावकी सूचीसख्या परसे तुलना करनेमें पूरी निश्चितता हमें नही रह सकती। क्याकि समव है अग्न अलग देशा द्वारा अपने भावोकी सूची सख्या निकालनक लिए गिया हुआ आधारभूत वप एक न हा भावकी सूचीसख्या निगानके लिए चुनी हुई चीज भी अग्न अलग हा और भावकी सूचीसख्या निकालनकी पद्धति भी भिन्न भिन्न देशाका भिन्न हा। ऐसी विपम परिस्थितिमें भी विनिमय-बक कई तरहक हिसान लगाकर अग्न अग्न चलनके बीचके विनिमयकी दर निर्धारित करत ह। लेकिन चलनका मूल्य निश्चित करनके लिए कोई माप न मिलन पर भी दो देशामें मालका विनिमय करना ही हा तो किसी मालकी अमुक देशकी जरूरतक आधार पर दोना देशका गुद्ध वस्तु विनिमयक स्तर पर ही काम करना पडता है। अलग अलग देशके व्यापारियाके प्रतिनिधि मण्डल आपसमें मिलकर और एक जगह बठकर यह तय करत ह कि एक देशक अमुक मालक बलमें दूसरा देश अमुक माल द।

१८ आजकल पमव रूपमें मालकी कीमत लगाकर विभिन्न देशोके बीच आयात निर्यातका व्यापार हाता है। फिर भी अतमें इस व्यापारका स्वरूप वस्तु विनिमयका हा हा जाता है। हम जिन मालका आयात करते ह उसकी कीमत हम पसा देकर नही चुकाते बल्कि उन मालक बलमें दूसरा माल निर्यात करके चुकाने ह। अथवा व्यापारक सिवा दूसरा लन-देन हा ता उन हिसाबमें पकडकर जमाना-बराबर करनका शर्तिग करत ह। परन्तु हर साठ जमाना-बिलकुल बराबर नहा हा सक्ते इसलिए जा रकम बाकी रहती है वह दूसरे देशको चुकानी पडती है।

तेजी-मदीका चक्र और आर्थिक संकट

१ इस प्रकरणको विस भागमें रखा जाय यह एक प्रश्न है। हम इस प्रकरणमें देखेंगे कि एक ग्रास निश्चित समयक क्रममें लगातार आनवाले आर्थिक संकटाका मूल और मुख्य कारण आजकालकी दोषपूर्ण उत्पादन-वृद्धि है। इस तरह यह प्रकरण उत्पादन विभागमें जाना चाहिये। परन्तु इस दाय युक्त उत्पादन-वृद्धिका शक्य बनानवाला तो बकाकी व मुनियता ही है जो व आजकालकी सराफी और उधार-व्यवहारकी वरामातम वृत्तिम रूपमें द्रव्यकी मात्रा घटान-वृत्तितक लिए करत है। इसलिए आजाकालक द्रव्य-व्यवहार और सराफीन धारेमें जाननके पहलू इस विषयकी चर्चा करना सम्भव नहा था। इसलिए इस विभागके अंतमें यह प्रकरण जान दिया गया है।

२ आजकालका अत्यन्त अल्पतटा और पचीदा हो गया है। लेकिन उमे कठिनाईके बिना चंगनकी शक्ति अभी तक मनुष्यन अपनमें बनाई नही है। इसलिए वह तत्र मनुष्यकी शक्ति और अनुशक्त बाहरकी चीज बन गया है। यह एक बड़ी समस्या है कि एक-दूसरेके विरोधा स्वाय रखनवाले भिन्न भिन्न वर्गों और राष्ट्रों बटा हुआ मानव-समाज इस तरह दुनियाभरमें फटे हुए और अत्यन्त अल्पतटा अथतत्रको भविष्यमें सही-सलामत चला सकेगा या नहा। सयान लोग ना कहते हैं कि हमारे सारे अय-व्यवहारको विवेचित बनाये सिवा दुनियाको आर्थिक उत्पाताके चक्रसे और समय-समय पर फूट निकलनवाले युद्धकी आगस बचानका और कोई उपाय नहा है।

उद्योग धंधोंका एक दूसरे पर असर

३ आजकालके उत्पादनमें अनगिनत चीजें उनके लिए माग होनसे पहले ही माग पदा करनकी आगामें तयार की जानी है। मागकी यह आगा दूर दूरके कई प्रदेशोंसे रखी जाती है। उसके लिए कल्पित ग्राहक भी तरह तरहके होने हैं। फलान और रहन-सहनके ढंग जाय तिन कल्पनाम भी न आ सके एस मनमान ढंगसे बालते रहते हैं। भौगोलिक और औद्योगिक वाय विभागका इस हल तक विकास किया गया है कि कइ धार ता एसा देखा जाता है कि उपभागकी एक मामूली-सी चीजके बननेमें सारी दुनियाके उत्पादकोंका कुछ न कुछ हाथ रहता है। ऐसी व्यवस्थामें सारी श्रृंखलाकी एक कडी

भा कमजोर हो, तो पूरी श्रृंखलाकी गति कम हो जाती है। जिस कच्चे मालक बिना या आधे तयार किये हुए मालके बिना काम ही नहा चल सकता, उसके लिए आजका समाज इतना ज्यादा एक-दूसरे पर निर्भर रहने लगा है कि उसका एकाध चक्र टूट जाय तो उसका असर दूर दूरके बहुत लोगो पर होता है। एकाध धधा सकटमें आ पड तो उसका बुरा असर कई धधा पर होता है। एक धधकी मदी देखकर दूसर धधवालागे दिगमें भी मदीका डर घुस जाता है और उनका रख भी अपना कामकाज समट नैकी आर हा जाता है। इसका असर उस धधस सम्बन्धित कच्चा माल पदा करनवाला पर उसके लिए मनीने बनानेवाला पर यातायातका काम करनवाला पर भापूनी मजदूरा और फुटकर दुकानदारा पर—इस तरह अनब वर्गों पर होता है।

४ जस एकाध धधमें मनी आन पर उसका असर दूसरे बहुतसे धधो पर पन्ता है वसे ही एकाध धधमें तेजी आन पर उसका असर दूसरे कई धधा पर पडता है। किसी भी एक चीजकी माग बढ जाय तो उस चीजके बनानमें जरूरी अन्य बहुतसी चीजाकी माग भी बढ जाती है। मान लीजिय कि कपडकी माग बढ जाय तो बनकराका धधा तारन बढना है कातन-पीजनवालाको खूब काम मिलन लगता ह। इतना हा नही रईकी आवश्यकता अधिक हानस कपासकी खती भी बढ जाता है। और यत्रात्यान्तमें कपडकी मागके लिए मनीनराका माग बढती है मिलके लिए मवानाकी माग बढता है मजदूराके रहनके मवानाकी माग बढता है और मजदूराका अधिक राजी मिलनके वे दूसरा बढ चाजाका भी अधिक मात्रामें उपयोग करते ह। इस तरह कई धधामें तेजी आती है।

उत्पादका लया धम

५ आजकाल यत्रात्यान्तका धम बहुत ऊंचा है। इतना लया है कि उसकी श्रृंखलाके एक मिरका कनिया घिमरर टूटनका आ गइ हा तब कहा दूसर मिरका कडिया तपार हाना है। हम कपडके उत्पादनका ही उदाहरण लें। कपडकी मागन बढत हा तुरन्त नया कपड तयार करके बाजारमें नही रगा जा सकता। इससे कपडके भाव बढत ह। और कपडके उद्योगमें बढत नया होने दगकर उद्योगपतिया और पूजीपतियाका हम उद्योगमें अपना पूजी लगानका प्ररणा हाना है। वे नइ मिले गढा करन लगत ह। सन मित्रें एवसाय गडी नही हा सकती। थोडे जल्दी बतता है कई दरम घतता है। पदाती मिलवालाको ता गइ लाभ हात ही लगता है और जो गये गगन

जल्दी इस क्षत्रमें आते ह उह भी अच्छा नपा मित्रता है। गई मित्रें गठी होन लगती ह इसलिए उनरी मगानें बनानवाल भी अपने कारणान बढ़ाने लगते ह। इनमें भी पुरानाका और जन्ती जागनवाआका अलग लाभ हाना है। लेकिन नई मिलें सडी करना और उनरी मगानाणे कारणान बढ़ाना — यह सब एक दिनम नही होता। इगमें महीन ही नही मिन्तु बरगा लग जात ह। इसलिए एसा हो सकता है कि एक गिरे पर कपडकी मित्रता नई मगानें बनानका तयारी हाती हा तब दूसरे गिर पर कपडकी माग घटा लगी हा। क्यकि विसा भी चीजका माग एबसी ता बना हा नही रह सकती। अकार पड वाट आय भूकप आय महामारा पत्र युद्ध छिड जाय — इस तरह कई अनसाचा आफने जा पन्ता ह। तब प्रकार किसी भा कारणस कपडकी माग घट जाय ता कपडक उद्योगक मिलगिलमें जिहान अपना घधा रखा दिया हा — मगानरीवाआन मगानें बनाना गुरु कर लिया हो मित्राक लिए नय मकान बन रहे हा मकानाकी रचनाक लिए इटें सीमण्ट आदिज घध बन हा किसानान कपासकी खती बढ़ा दा हो रत्नवाआन यातायातकी व्यवस्था बढ़ा दी हो और उसक लिए सामग्री बनानवाल कारखाने जारी हुए हा — उन सभीके घधमें मदी आती है। एतना ही नही कई घध तो विलकुल बरबाद हो जात ह। कई पेलिया टूट जाती ह और लिमिटड कपनियाका दिवांग निकल जाता है। इस तरह तेजीके बाद मदीकी उतर फट जाती है।

६ परतु एसी मन्ती स्थायी नहा होती। कुछ समय बाद लोगका मन स्थिर और शांत हाने लगता है। बाजारमें भी विश्वासका वातावरण जमता जाता है। जिनका दिवांग निकल गया है एसी कपनिया पूरीकी पूरी या उनका माल फुटकर विकन लगता है। जिनके पास पसा होना है वे इन कपनियाको या इनके सामानको बहुत थोडा दामामें खरीत लेते ह इसलिए घानी पूजी लगाकर वे अपना उत्पादन कर सकते ह। मदीके कारण मजदूर धवार हा जात ह और मजदूरीकी दर भी सस्ती होती है। इसलिए उहे मजदूरीका खच भी कम लगता है। इस तरह उत्पादनका खच कम आनसे उस घधके पर फिरसे जम जाते ह वह स्वाबलवी हो जाता है। और एक घधके पर जमन उम कि उसका असर दूसरे घधा पर भी पडता है। फिरसे सारे ध्यापार घधे तेजीकी तरफ चल पडते ह। इस तरह मदीक बाद तेजी और तेजीके बाद मदीका चक्र चलता रहता है।

तेजी-मदीका नियमित पुनरावतन

७ इस तरहकी तेजी मदीके पिछले डड सी वपके इतिहासकी जाच पड ताल करके यूरोपके अर्थशास्त्रियान एसा अनुमान लगाया है कि तेजी मदीका चक्र एक नियमित क्रममें चला करता है। मन्ीके समयमें व्यापार घघे ठप हो जाते ह और बेकारी फल जाती है। जिनके पास पसा होता है वे धीर धीरे हिम्मत करके फिर घघा गुरु करने लगते ह और अच्छा समय आने लगता है भाव बढ़ते जाते ह नफकी मात्रा भी कुछ बढन ँगती है और उत्पादन बढानकी जोर प्रवृत्ति चरता है। बच्चे मालक और बायग तथा लीहे जसी बुनियादी चीजाके भाव पर बाजारका फौरन असर हाता है। बाजार भाव बढनके साथ ही उनके भाव भी बढन लगते ह। लेकिन मजदूरी और व्यानकी दर झटसे नहा बढती। इमत्रिए मदीक बान साहमी प्रत्यर्कोंका थोडे व्याज पर ली हुई पूजीकी मददसे नये घघ बढानकी बडी अनुकूलना मित्र जाती है। मजदूरीकी दर कम होनमे भी उह उत्पादन-सच कम आता है। बढने हुए उद्योग घघोकी जरूरतें पूरी करनके लिए बक अपना उधारीना काम बढाते जाते ह। अच्छ समय का लाभ उठा लनक लिए सभी उत्सुक हो जाते ह।

८ लेकिन इस अच्छे समय में मे ही उसे और ग्याग अच्छा समय बननस रोकनवाके अकुग उत्पन हो जाने ह। बढते हुए नफको देगकर मजदूर मजदूरीकी दर बढानकी माग करते ह और उनकी दरें बढानी पडती ह। इतना ही नहा उत्पादन बढानके त्रिए खास तौर पर दर बढाकर मजदूरानि अनिरिक्त समयमें काम त्रिया जाता है और अकुगल मजदूरानो भा इस काममें लगा लिया जाता है। इसलिए उत्पादन-सच बढन लगता है। बच्चे मालके भाव तो बढ ही जात ह। मजदूरीकी दराके साथ व्यानकी दर भी बढने ँगती ह। इससे नफकी मात्रा घट जाता है और तेजीका अन्त आन लगता है। सामान्यत थोई न बान बडी आनस्मिक घटना हा जाती है तब लोगामें डर और अधीरतावा भावना फल जानी है और उम समय एबन्म मदीकी ँहर दीड जाती है। जमा ऊपर बहा गया है अनावृष्टि अथवा अतिवृष्टिक कारण फमउ पका न हो बडा भूचाल आ ताय बडी बान आ जाय सारे प्रयेग पर भारा बाधी-नुफान आ जाय महामारा पूर निरये या युद्ध छिड जाय ता बड बक व्यापारिया और उद्योगपनियानो या ता सोच हुए नफ नहीं मिन्ने या कल्पनागीन नफा हो जाना है। उम समय भी ऐसे आर्थिक उत्पादन हान ह।

९ जहाँ अन्तः समय या तेजी उग रातनवाते अनुशासना योज अपने गभमें ही लेनर आती है वसा ही मनीरा भा होता है। मनी भी उसे दूर करनवाती परिस्थितियाँ वीज लेनर आती है। मनीक समय मजदूरी और व्याजकी दर घट जाती ह। मजदूरराम वरारी फनी हुई हानने कारण अनाडी जीर अनुशल मजदूर कारणानाम निवाल न्यि जात ह। साथ ही उत्पादनकी सीमा पर काम करनवाते कमजार कारणान वन हो जात ह। इसलिए उत्पादनवच घटन लगता है। और जम जमे यह बाजार भावम अधिकाधिक नाचे आता जाता है वसा वसा नफरा मात्रा बढ़ती जाती है। सारा चक्र कम नरन चन्ता रहता है। सतुलन और स्थिरता — नये नये सुधार — बन्ती हुई हिम्मत — पसवा उद्वानयन और हन्ती व्याज — उन्नति और समृद्धि — तेजीरा उमात — वतम ज्यान साहम और धावती बपनिया — धक्के लगनकी गुरुआत — पसकी तगी जीर भारी याज — उत्पादन खचका बढ़ना जीर नफका घन होना — यापार रोजगारमें मनी — कमजार पनिया जीर बारखानाक निवाल — मजदूररकी वरारी और सस्ती मजदूरी — कम खचमें उत्पादनकी सभावना — बाजारमें विश्वासवा वातावरण — फिर वापस सतुलन जीर आगका नम। इम तरह यह चक्र चन्ता ही रहता है।

पिछले आर्थिक सङ्कट

१० एसा कहा जाता है कि खगहाली और पामालीके चक्रना यह समय नियमित रूपमें ७ स १० बपरा होता है। तेजी मनीके चक्रे सन १८१४ से लेकर आज तकके इतिहास परसे यह अनुमान लगाया गया है। इतनी तफसीलमें न जाकर हम अपन देगना ही विलुक्त ताजा इतिहास देखें तो उसमे भी यही बात मालम होनी है। सन १९१४ से १९१८ का महायुद्ध आरन हुआ उसस पहले १९१३ १४म हमारे देगमें एक बडा आर्थिक उपात आया था जीर उस समय बहुतसे बका और मिगवा दिवाडा निकल गया था। यह आर्थिक उत्पात दुनिया भरम फला हुआ था जीर लदनका बाजार भी बडी डावाडोत स्थितिम पहुच गया था। गयर और स्टाक एक्सचेंज तथा बक कई जिनो तक बढ रख गय थ। गयर और स्टाक बाजार इस्तित्ठ बढ रख गय थ कि रोग अपनी जमानें बच डालनमें स्पर्धा न कर और बक इस्तित्ठ बढ रख गये कि लोग अपना पसा निका लनके लिए उन पर धावा न करे। साथ ही बककी याजकी दर बढाकर दस प्रतिगत कर दी गई ताकि लोग बकमे कज नैन न आवें। युद्ध छिड जानके बाद मदी घटन लगी। युद्धके कारण नये नये धरे और रोजगार

पना हुए मिलें और कारखाने जाराम चरन उगे। लोग काफी कमाने उगे मरकारन चलनमें प्रसार करना गृह किया—यद्यपि दूमरे महायुद्धस वह बहुत कम था। और सगि हानक गत औट हुए सिपाहा टि साठ कर पसा खच करन लग। इन सबका फल यह हुआ कि भाव तेजास चरने लग। मन १९२० में दुनियाभरमें तेजा चरम मीमा पर पहुच गई। जगई १९१४ क भावाकी सूचीसख्याका तुगनामें माच १९२० के भावाका सूचामख्या २६३ प्रतिगत अधिक ऊची थी। मध्य यूरोपक हार टुण दगामें तो मुद्रा प्रसारकी हट ही हो गई और वहाकी भारी आर्थिक यवस्या टूट गई।

११ फिर ज्या हा इगुण जोर जमरीमान चलनका सकाचन करनकी नीति आरभ की त्या ही चाजकि भाव गिरन उग। एम आगाम रि भाव और ज्याग गिरन लाग खरीण कग्ना मुत्तवा रखन लग। एसम जमनीस युद्धण्डके रूपमें बहतसा माल मित्रगज्यात पाम आने लगा तत्र मित्ररायाके उरनादकाकी स्थिति कग्नि ग। गई। युद्धस पहलके भावाका सूचीसख्याकी तुगनामें १९२१ के लिस्मरमें भावाकी सूचामख्या बेचल ८२ प्रतिगत हा अधिक रह गई। १९२४क वाट भावामें स्थिरता आन लगा। परन्तु १९२९में सारी दुनियामें जवरलमन मनीकी लहर फिर फगी। यह मदी लगभग १९२५ तक बना रही। फिर वापस स्थिरता आई। दूमरे महायुद्धन टिगन पर मुग प्रसार हुआ और तेजी आइ। आज यद्ध वट हानका उगभग १८ वष हुए फिर भी यह स्थिति चाडू है।

आर्थिक सवटका स्पष्टीकरण

१ साधारण लाग तेजी मगाक इस निरमित चलनवाट चररा कवड आनस्मिक मानन ह। परन्तु जयगास्त्री उमका निश्चिन स्पष्टाकरण दन है अलगत्ता इस वारमें उन लोगामें अग अग मन प्रचरित ह और अलग अग वाट या स्पष्टाकरण प्रस्तुत त्रिये जान ह। उनमें से मुख्य मताका हम यहा चचा करेंगे।

पुदरती सवट

१ पुगान अयगास्त्रियान तो इन आर्थिक सवटाका मुख्य कारण कुग्ना सवटाको ही माना है। कच्चे माटक बिना वाई उद्या घष नहीं चड सपत। और अनाचष्टि अनिवष्टि भूकप वाट या आधी-नूफान जा कुग्ना सवटाके कारण पगलका हानि पडुच अयवा फाट न पव ता उन माट पर आधार रखनवाल उद्योग घषाका घक्ता उगना है। माग गतिप बिगा कारण

हमारे देशमें अनाज कम पदा हो या जमरीनाकी रुईकी फगल पर सबट आवे तो सहा ही उसका अगर इन्गण्डन उद्योग घटा पर होगा। रुईकी कमीके कारण इन्गण्डको बपटा बनानमें बगिनाई होगा। फिर हिन्दुस्तानमें अनाज कम पदा हुआ हो तो हिन्दुस्तानक किसान इन्गण्डना जो मात्र खरादत हा वह नहा खरीक सकेगे और इस तरफ भी इन्गण्डन निरने ही उद्योगका घक्का पहुचगा। एक देश पर या एक बग पर सबट आ पड ता उसका आर्थिक प्रभाव दूगरे देश और दूगरे बगों पर होना ही है।

१४ कुदरती सबटाक कारण आर्थिक क्षत्रमें सबट पना हा और मनी आवे यह ता अच्छी तरह समझमें आ सता है। परन्तु तेजी-मनीना चत्र मानो नियमित चगता रहता है और आर्थिक सबट अमुन निश्चित बपोंरे याक आ खड हाते ह इसका स्पष्टीकरण कुदरती सबटावाक कारणाने नहा मिक सक्ता। बयाकि कुदरता सबट नियमित आननाके नहा हाते। हा यह साबित करनने गिए कि कुदरती सबट भी एक साम प्रमस ही आते ह एक एसा वाद प्रस्तुत किया गया था कि सूयकी मतह पर कुछ निश्चित बपोंके अन्तरसे अधिक दाग दिखाई दत ह और उनका हानिकारक असर हिन्दुस्तानके चोमासे पर और सारी दुनियाकी छता पर होना है। यह बहा जाता था कि सूयकी सतह पर दाग अधिक हानस जमानका गरभी कम मिकती है और उससे फसककी मात्राका और उसक गुणको नुकसान पहुचता है। आजके बनानिक सूयके दागावाली बातको एतना मन्त्व नही देते परन्तु यह जरूर मानत हैं कि पथ्वीके ऊपरके वायुमडलमें एक निश्चित समयके वाद परिवतन होता है और उगका असर छता पर और उसके कारण हमारे उद्योग घटा पर भा होता है। इसलिए इस कारणका आर्थिक सबटाके बहुतसे कारणामें से एक कारण अवश्य माना जा सक्ता है।

उत्पादनकी पूजीवादी रचना

१५ परन्तु इन सबटाका बडा कारण तो उत्पादनकी पूजीवादी रचना ही है। यत्रोत्पादनकी पद्धतिमें ग्राहकके काममें आन गायक माल तयार होकर बाजारमें आय उसक बीच और यह मात्र जिस कच्चे मात्रसे तयार होता है उसके बीच जो उत्पादनकी क्रियाए की जाती ह उनका क्रम दिनोदिन उभवा होता जाता है और उत्पादनक साधनोका आडवर बड जानसे अधिकाधिक पूजीकी जरूरत पडती है।

१६ ग्रामाद्योगोकी पद्धतिमें कच्चे माल और तयार मालके बीच एसा भारी फक नही होना। बहुत बार तो एसा होता है कि कच्चा मात्र पैदा

करनेवाले ही उस पर सारी थियाए करके तयार माल बनाते ह । इसके अलावा इसके साधन भी घरेलू या दहाती होते ह जो थाने समयमें और कम सचमें बन सकत ह जम कि यन्त्रात्पादनमें बीचकी प्रत्येक क्रियाके लिए बडे कारखाने होते ह । कुछ कारखान आखिरका तयार मात्र हा बनाते ह कुछ आखिरी दर्जेसे पहलेकी थिया करनेवाले होत ह कुछ उससे भी पहलेकी थिया करनेवाल होते ह कुछ उसके लिए औजार बनानेवाले होते ह कुछ उमक लिए मशीनें बनानेवाले होत ह और कुछ कच्चा माल ही देनेवाले होते ह । इसके सिवा य सब थियाए अलग अलग स्थाना पर — एक-दूसरेमे बहुत दूर दूरके स्थानो पर होनसे रल जहाज आदि यातायातके साधनाका बडा भारी प्रबन्ध और संगठन लडा करना पडता है । कारखानाके लिए बडे बड मकान बनान पडते ह और मजदूरोके रहनेके लिए भी मकानाकी व्यवस्था करनी पडती है । कच्चे माल और तयार मालके बीचकी इन सब थियाआम बहुत बडी पूजीकी जरूरत पडती है । उपभाग्य मालके एक घटक पर एक ओर कच्चे मालकी कीमत और आत्मीकी मजदूरी तथा दूसरी ओर यन्त्रा, औजारा मकाना यातायात-व्यवस्था आदि उत्पादनके साधनान लिए पूजी — इन दोनाकी कीमतकी तुलना कर ता इसका कल्पना हो सकता है कि यह पूजा उस पूजीस जितने प्रतिगत अधिक है । जस जस यन्त्रोद्योगाका विवास होता जाता है वस वसे उपभाग्य मालमें जितन प्रतिगत वृद्धि होती है उमसे कही ज्यागा वृद्धि उसे तयार करनेके लिए आवश्यक पूजीके प्रतिगतमें करनी पडती है । इसालिए एन उत्पादनके उत्पादनकी पूजीवानी रचनाका नाम लिया गया है ।

१७ इस तरहकी अधिक पूजीके लिए समाजका कुछ आर्थिक आयम स अधिक बचन हानी चाहिये । मित्रा और कारखानाका आयमें स मजदूराने हिस्सेमें आनवाला भाग बहुत थानी हानी है । तेजी या खुहागाक समय हानवाती अधिक आयमें स मजदूराने हायमें बहुत थानी आय थाना है । और तेजाक समय महगाई होनका कारण य गा बचन तो कर ही नहीं सकत । अधिक आयका बहुत थना भाग उद्योगपतिया और उनका माधियाके पास हा जाता है । और य ही थना थना रूपमें बचा गवन है । इस बचनको वे नय साहस आरम्भ करनेमें त्मान हैं । इसका फलस्वरूप एन बडी निरमता पना होता है । नये नय कारखाने पना हा तानम उपभाग्य सम्पत्तिका उत्पादन बड जाता है । दूसरी ओर आजकी अयायपूजा आर्थिक अगमानताका कारण कुछ सम्पत्तिका बहुत थना हिस्सा मुन्गीनर आत्मियाने हायमें लना

बहुजन-समाजमें यह अधिन मात्र गरीबोंकी शक्ति नहीं है। समाजका मात्रा जरूरतस वही अधिन कारणान पैदा हो जात ह और जिनकी मात्रामें मात्र तयार होता है उनी मात्रामें उमकी खपन न हानन कारण भाव गिरन गते ह और बाजारमें मनी आता है। जगा हम ऊपर खपन कर चुने ह यह खपन घूमता घूमता फिर नजी पर आता है। परन्तु इस तरह निरंतर नहीं चलता रहता। यह खपन नया या खपन नया कर नया होना ही चाहिए। लेकिन अभी तक यह खपन नया नया खपन कारण य ह नया नया प्रयोगका मात्रा हूँ वहा नई शक्तियाँ बसा वहाय मूत्र निवासी आधुनिक सम्यक्ताय जालमें पैदा शक्ति खपन और हिन्दुस्तान और चान जैसे प्राचीन देशोंमें प्रामोद्योगका नष्ट करत वहा भा पश्चिमय देशों अपन बाजार खड विय— इन नया कारणोंसे पश्चिमय देशों कारणानमें पैदा होनवाय अधिन मात्रों लिए मजाईय निकलती रही। उनका अतिरिक्त माल इन बाजारों खपन ग्या। परन्तु अय नया प्रयोगकी शक्ति और पुरान देशों बाजार पर अधिकार करनकी मर्यादा आ गई है और इसन कारण एक प्रकारकी आर्थिक शक्ति ही पैदा हो गई है। १९१४का महायुद्ध और कुछ वय पूव समाप्त हुआ दूसरा महायुद्ध इस सङ्घटको दूर करनव पश्चिमी जनताके मिथ्या प्रयत्न ही थ। आर अभी तक भी समस्या मुठझी तो है ही नहीं।

सराफी द्रव्यकी करामात

१८ शक्ति उपयोगका माल बनानकी पूव-तयारीने रूपमें उत्पादनके विविध प्रकारक साधन बनानवाले कारखाना आदिके लिए सभीके पास नकद पैसेकी वचत हो यह जरूरी नहीं है। ऐसे कोई साहस आरम्भ करनवाके प्रबन्धकोकी पैसा बाजस मिले तो भी उनका काम चलता है। इसके सिवा बकामें लोगकी वचत अमानतके रूपमें जितनी जमा होती है उतना ही रुपया उधार देकर बक बठ नया जाते। बकोने पास साख पर नया पैसा पैदा करनकी भी करामात होनी है यह हम पहले देख चुके ह। किसी भी साहम—नये उद्योगमें जितना प्रतिशत मुनाफा हानकी आगा हा उससे कम दर पर पैसा मिले तो प्रबन्धक ऐसा साहस आरम्भ करनको तयार ही रहते ह। नमकी वचत हो सके एस नये नया यत्र खोजकर उह बनानेके कारखाने खडे करनेको वे तयार होते ह रेठ यदि भापके एजिनसे चलती हो तो उसे बिजलीसे चरनेवाली बनाते ह जहा बिजली जीर गसकी सुविधा न हो वहा उस जुटानकी योजना बनाते ह बिजली उत्पादन करनेकी

कोर्गिंग करते हैं—एसा अनक योजनाए और साहस आरम्भ करनेके लिए व तयार होने ह । इन सब प्रयत्नामें अन्तिम उद्देश्य तो यही होना है कि उपभोगका माल और सुख-सुविधाके मात्रा अधिक मात्रामें पदा विय जाय । लेकिन इन सब साधना द्वारा उपभोगका माल उत्पन्न होना आरम्भ हा उमक पहले अपने पासक या बकासे मिटे हुए पमक वक पर य माहस आरम्भ ही जाने ह, इसलिए उपभोगकी वस्तुआके भाव वक जात ह और उनक कारखाने दाराकी बडा मुनाफा होने लगता है । यह देखकर उन कारखानेदाराका उत्पाह बढ़ता है जा उपभोगका तयार मात्र पना हानस पहलेकी क्रियाए पूरी करते ह । और एस कारखानाकी सख्या भी वकन लगनी है । व्याजकी दर कुछ वकानकी जरूरत हो तो उसे बककर भा पमा उधार देनेकी व्यवस्था ता बक करते ही ह । अलवत्ता यह सब पसा कृत्रिम रूपमें खडा किया हुआ सराफी द्रय ही हाता है । इसलिए द्रयकी मात्रामें प्रसार हान लगता ह और जसे जसे द्रयका प्रसार होना ह वस वस बाजार भाव चकन जात ह । भाव हमगा वकत ही रहनक कारण व्यापारी भविष्यमें बचनके लिए माल खरीदन लगते ह या अपन पास माल हा ता उस जमा करक रखने ह । और इसके लिए पमा उनको वे बकाके पास जान ह । बक कम तरह पसा उधार देकर बाजारमें पमकी मात्रा जितनी बकते ह उनका मालका उत्पादन भी बकता जाय तय तो कोई हज नहा । लेकिन बक जितनी आसानीग पसकी मात्रा बडा सकते ह उनका आसानीग मालका उत्पादन नहा बकता । इसलिए फिर बाजारमें मात्रा वास्तविक अन-अन हानक बजाय सट्टा पना जाने लगता है । और बाजार सट्ट पर चकन ह इसलिए बक स्थनावन पसा उधार देनेके माममें मावधान हा जाते ह । व व्याजकी दर बडा देने ह । और व्याज और मजदूराकी दर बढ़नस उत्पादन-वच बक जाता है इसका असर उपभोगका माल बान पर और उत्पादनका मामा पर काम करनवाल बमजार कारखाना पर जला हान लगता है । जब य कारखाने टूटने लगत ह तो उमका धनका यत्र बनानबाक कारखानाका इमारती सामान तयार करनेवाल कारखानाको और रख तथा उमका सामान बनानवाल सब कारखानाका भी लगता है । कुछ कारखान ता आध तयार हा चुकन पर भी पसा न मिश्रनक कारण बीचमें ही बक करन पकन ह । इसमें आर्थिक सङ्कटकी स्थिति उत्पन्न हानी है ।

भूलें कसे होती ह ?

१९. यहा सवाल यह पता हाता है कि यदि बकोर पसा उधार दनवे कारण अर्थात् 'याजकी कुदरती या सतुलित दर' भी कम दर पर पसा उधार देनक उनक कामस यदि ऐसे आर्थिक सवट सड हाने ह तो कब एसा करनवे लिए क्या प्ररित हाने ह ? एक समय सवटमे सबर गैरर कब समझदार क्या नही बनन और बार बार वही भूल क्या करते ह ? इसना कारण आजक व्यापारिया और सरकारा तथा दूसर द्रव्यशास्त्रियाने एक तरहने मानममें रहता है। उन्हें ऐसा लगता है कि किसी भी तरह ब्याजकी दर घटानस समाजकी आर्थिक उन्नति ज्यादा आसानीसे और अच्छी तरह की जा सकती है। तेजी मदाक चरणी स्पष्टता जितने साधे सरल रूपमें यहा की गई है उतनी सानी वह व्यवहारमे नही होती सरकारको लगी अवधिके खचवाली कुछ योजनाए बनानी होती ह उद्योगपति और प्रबन्धक लोग भी बड बड साहस आरभ करनकी धुनमें हाते ह और कब पर भी उनका असर और अधिकार हाना है। इसके सिवा ये सब किसी सामुदायिक शक्तिकी दृष्टिसे विचार नहा करते। प्रत्येक अपना अपना स्वाय देवना है। और उनमें भीतर ही भीतर भयकर प्रतिस्पर्धा चलनवे कारण प्रत्येक अपन प्रतिद्वंद्वीका गिरावर खुद ही सारा लाभ कमा ले जानकी इच्छा रखता है। इस

* 'याजकी जिस दर पर कजवे लिए व्यापारियाकी माग और समाजकी वचतें बकके पास अमानतके रूपमें आती ह उस दरको अर्थात् पसेकी माग और पूर्ति बराबर रहे एसी दरको 'याजकी कुदरती दर' कहते ह। कक इस कुदरती या सतुलित दरसे ब्याजकी दर नीची कर दें तो कजकी माग बकामें आई हुई वचतकी अमानतसे ज्यादा बढ जाय। उस समय कक बनावटी ढंगस सड किय हुए पस द्वारा इस कजकी मागको पूरा करते ह। यदि कक इस कुदरती या सतुलित दरसे ब्याजकी दर ऊची कर दें तो बकोसि कज लेनकी माग घट जायगी और बकोमें आई हुई अमानतें उनकी तिजोरीमें पडी रहेंगा। जब बाजारमें ब्याजकी दर इस कुदरती और सतुलित दरसे नीची होती है तब बाजारमें चीजाके भाव बढते ह क्योंकि लोग बकासे पसा 'याज' पर लाकर मात्र जमा कर सकते ह। जब बाजारमें ब्याजकी दर कुदरती या सतुलित दरसे ऊची होती है तब चीजाके भाव गिरने लगते ह क्योंकि ऊचा 'याज' देकर मात्र जमा रखनेके बनिस्वत लोग नीचे भावसे भी मात्र कच डालना ज्यादा पसन्द करते ह।

तरह उत्पादनके सारे क्षेत्रमें एक प्रकारकी घातक स्पर्धा और अराजकता फैली हुई रहती है। इसके सिवा यह सारा धन इतना अधिक अल्पता हो गया है कि एक माजना या साहसका असर दूसरे पर क्या पड़ेगा यह नहीं कहा जा सकता। उपभोगकी चीजोंकी मागका सच्चा अंजाज नहीं लगाया जा सकता। फिर बढ़ती हुई परिस्थितियोंके अनुसार उत्पादन एन्टम घटाना बढ़ाना भी नहीं जा सकता। उत्पादन बढ़ानेके लिए नये कारखाने खड करानमें वर्षों लग जाते हैं। और नये कारखाने चालू हो जानेके बाद उत्पादन घटानकी जरूरत पड़ती हो तो ये कारखाने बाजारको धक्का पहुंचाये बिना एन्डम बन्द नहीं किये जा सकते। उपभोगके मात्रकी माग बढ जाये और उसका उत्पादन बढ़ाना पड़े, तो भी उसके लिए बहुत लम्बा समय चाहिये। ठेठ कोयला और लोहा अधिक मात्रामें जुटानसे इसकी गुरआत करनी पड़ता है। फिर मशीनें बनानेके कारखाने खडे करना रेश और जहाजोंके सामानके लिए कारखाने छोडना मरानोंकी रचनाके सामानके लिए कारखाने खड करना—इन सब कामामें बहुत समय लग जाता है। फिर ये तरह तरहके कारखाने इनही खडे करने चाहिये कि वे एक-दूसरेकी कमीका पूरा कर सकें। परन्तु उनके बीचका अनुपात निश्चित करना उडा कठिन होता है क्योंकि किसी समग्र योजनाके अनुसार यह काम नहीं होता। प्रत्येक प्रवर्धन या उत्पादक अपने स्वायत्तके अनुसार ही काम करता है। अलग अलग प्रकारके मात्रके उत्पादनके बीच योग्य अनुपात रह तो ही अत्यन्त एकता चलाता है। हम सारे मात्रक मुख्य चार विभाग करेंगे

(१) दैनिक उपयोगका माल (अनाज कपड़ा आदि)

(२) दैनिक उपयोगका होते हुए भी कम अधिक टिकाववाला मात (रहनने मराना उनका साज-सामान मोटर गाडिया पानीके नल रिजला या गमका सामान और दूसरी सावजनिक सेवाआदि सम्बन्धित सामान)

(३) नये उत्पादनके टिकाऊ माधन (जोहने कारखाने इट और सीमेंटके कारखाने कपडका मिठें यत्र बनानेवाक कारखाने रेशके बिजली घर आदि)

(४) टिकाऊ मात्रके उत्पादनके लिए जरूरी बच्चा माल (लोहा फौलाट सामण्ट लकडी इटें चूना कोयला आदि)।

२० हम सब प्रकारके मात्रके उत्पादनमें एक-दूसरेके साथ मेल रानेवाला अनुपात कायम न रह तो बिगमता उत्पन्न हाती है। तेजीक समयमें हमें मात यह अनुपात भुगाना पडता है। जिस बाजमें ज्यादा नफा लीयता है उतीको

तयार करानें गर ताग लग जा । परन्तु य गर प्रचार माण एव-दुगरेता वनीको पूरा कराया ह । इगणिए एव प्रचार माणता पूरिता मात्रा बहुत अधिा वड जा । अरो आन ह । उाए पूरा मात्रा तगा ह । जाा है । तस चण्टरा जोढामे ए एव चण्टरा गा जाा तो दूगरी गिगमी हा जाा है वसी ही यट वान है । टिकाऊ मात्रा उत्पान गग आन-वतान अधिा हो जाता है । नया उत्पान गा होगा हा रगा ए ओर मात्र गिकाऊ हान कारण उगकी माग अधिा रही रगा गगणिए इग मात्रा वानन गिए आवयन वचा मात्र जग लोहा पीगन मामण आनि पाणू पदा रगा है । फिर जा ऊार रहा गा घुा है कारणता गडा वगाा गुदभान हान समयसे एवर उगमें ग मात्र तयार हार वजारमें आन तरा समय वन लम्बा होना है गगणिए ती यट अनुपान वापन रहा रगा जा सता । इसर सिवा वारवान ओर यत्र ता लम्ब समय तर गिनमाऊ हान है अत उनमें से पग हानमाडे मात्राी माग घट जाव तो व पाणू जोर भाररूप हो जाने ह ।

२१ उत्पादनने साधनारा और उपभोगन टिकाऊ मात्रा अनिरिक्त उत्पादन यदि पास रह जानवागे एव चण्ट है तो फिर गोई हुई चण्ट क्या है ? दनिव उपभोगन गिन टिकाऊ माल विगपन गान-पीनकी चीजें और वपन वह खाइ हुई चण्ल है । नव उत्पादनन गिए वारगान गडे विय जाव उनके लिए वच्चा मात्र पन गिया जाव और दनिव उपभोगन टिकाऊ माल भी पदा विया जाव तो भी वाम नहा चठना । इा सत्र वामामें लगे हुए मजदूरोके लिए खान-पीनका सामान चान्थि पन्ननने गिए वपड चाहिये और इसी तरह दनिव उपभागकी दूसरी वइ चीजें चाहिय । उपभोगका मात्र बनानेकी पूव-नयारीक रूपमें ये वारखाने सड हाते ह तत्र उपभोग्य मालका उत्पादन ती बग ही नहा होता । इसमें भी खाने-पीनकी चीजाका उत्पादन बढानके गिए जितनी चाहिय उतनी कोगिा नही हाती । इस खोई हुई चण्लके विना वह पासकी चण्ट बेकार और भाररूप हो जाती है । और इसीमें से गार्थिक उत्पात या आर्थिक सकट पन होते ह ।

वाजारका रुख

२२ तेजी मनीके चनको गति देनम और इसक फलस्वरूप आर्थिक सकट खटे करनम वाजारका रुख भी बहुत गडा काम करता है । किसी भी कारणसे मालकी माग वन उग और वाजारम तेजी जाव तो सभी वापारी अपन सामन तेजी ही दखा करते ह और एकदम घनवान वन जानके हवाई किठे बाधन लग

जात है। सम्पूर्ण परिस्थितियाँ समग्र दान तो किसीके सामने होता ही नहीं। प्रत्यक्ष संकट अपना स्वायत्त साध लेनेकी जल्दीमें होता है और इसलिए अविचारपूर्ण माहमके काम कर बटना है। जी० वी० हवलर नामके लेखकने अपनी प्रास्पेरिटी एण्ड डिप्रेशन (तेजी जोर मर्जी) पुस्तकमें इस घटनाको समझाने वाला एक बहुत बर्णिया रूपक दिया है। कमरेको गरम करनेके लिए आपके चूल्हमें आग सुन्गानी है तो आग अचछा तरह मुग्धने और कमरमें ज्वरा गरमी पत्त हानक लिए आपको थोड़ी देर राह देगनी पत्ती है। लेकिन ठंड लगती है और थरोमीटरमें पारा नाचे ही उतरता जाता है। तब जिस अनुभव नहीं होता और जो उतावला होता है वह चूल्हमें कोयले डालता है चला जाता है। यहा तक कि आवश्यक गरमीके लिए जितना कोयला चाहिए उससे अधिक कोयला वह चूल्हमें भर देता है। फिर जब यह सारा कोयला सुलगता है तब कमरा असह्य मात्राम गरम हो जाता है। अब किसी एक क्षणमें ठंड लगती है और थरोमाटरका पारा नीच जाता है तब उसे देखकर जो लोग उतावलोमें कमरा गरम करने जाते हैं वे उस बहुत अधिक जोर असह्य मात्रामें गरम बना देते हैं। आजके बाजारामें व्यापारियाका मानस इसी तरह काम करता है। और इस तरहके मानसको प्रात्माहन देनेवाले दुष्ट गठ और रिक्ततार राजनीतिक गण और पूजीपति तो मौजूद रहते ही हैं। वे झूठ लालच और भय खड़े करके व्यापारिया और कारखानेकाराको उल्टा माग पर ले जाते हैं। इस तरह इन सारे आर्थिक संकटके कारण सिर्फ आर्थिक नहीं होत। हम भरे ही यह मानें कि हम बहुत प्रगति कर रहे हैं लेकिन जिस तरह हम समय समय पर बरखाको खाता दते हैं उमसे यह सिद्ध होता है कि हम बुद्धि या समझदारीमें और नीतिमें आग नहीं बने हैं।

२३ थोड़ेमें कहें तो समाजका आवश्यकताआ अथवा उपभाग्य बन्नुआ की मागने बारमें गलत अणज उत्पादनमें पूजाका प्राप्ति आर्थिक अगमानताके कारण बन्नुअन-ममाजना घटती हुई गरीब गविन, कृषिम दमस खड किये गये पसकी मन्नुअ बका द्वारा दिया जानवाला आवश्यकताअ अधिक उधार कारखानेकारा जोर व्यापारियामें एक-दूसरेको नुनगान पट्टाकार अपना अपना स्वायत्त साधनकी स्पर्धा उत्पादनके क्षणमें अराजकता हमके फलस्वरूप विभिन्न प्रकारक मालक उत्पादनका एक-दूसरेके मन्नुअ मानवाला अनुपात स्थापित करनेकी अक्षमता और उत्पादन तथा उपभाग-गम्बधी टिकाऊ मानना आवश्यकताअ अधिक उत्पादन राजनीतिक पुरखा तथा पूजापतिवारी घटना और रिक्ततयोरी फनवानो और गणकारी बुद्धि और नातिना नियालियापन

—ये सब कारण अलग अलग और समग्र रूपमें भी आर्थिक संकट गढ़े बननेमें सहायक होते हैं।

इसके उपाय

२४ समाजवादी अर्थशास्त्री इसका उपाय यह बनाते हैं कि एक-दूसरे के साथ होठ बरनवाले पूँजीपतियों के हाथों से सारा उत्पादन छीन कर उसे सामाजिक नियंत्रणमें ले आना चाहिए तथा पहेले समाजकी आवश्यकताभारा ठीक अनाज तयार करके और उतनी ही वस्तुआने उत्पादनकी सारा योजना बनाने उसीके अनुसार उत्पादनके कामकी व्यवस्था करनी चाहिए। यका पर तो अपन-आप अकुल गंग ही जायगा। एगा होने पर ही उद्योगपतिया और पूँजीपतियोंके स्वायत्त कारण आनेके कारण और भूतके कारण खड होनवाले आर्थिक संकटसे दुनिया बच सकती है। इस समय ता उद्योगपति और पूँजीपति भी योजनाबद्ध अर्थ रचनाकी बातें कर रहे हैं यद्यपि वे उत्पादनके कुछ काम तो जाज भी निती पूँजीपतियोंके हाथमें हा गनकी सूचना करत हैं। लेकिन जय रचनाकी ये योजनाएँ उत्पादनके तारमें कुछ अकुल गंगानसे आग नहीं बढ़ती। आप भले ही उत्पादनका काम निजी पूँजीपतियोंके हाथसे छीन लीजिय और पहेले निश्चित की हुई मात्राके अनुसार अमुन प्रकारका माल ही बनाइय। परन्तु इससे उत्पादनके तारमें फक नहा पडता और उसके दोष भी दूर नहा किय जा सकते। उत्पादनमें से पूँजीपतियोंकी सत्ता आप दूर कर सकते हैं परन्तु जब तक उसकी रचनामें पूँजीका प्राबल्य रहेगा तब तक इस पूँजीकी व्यवस्था करनेके लिए आपको किसी न किसी आदमाके हाथमें सत्ता रखनी ही पडगी। यह आत्मी पूँजीपति न होकर राज्यका अधिनारी होगा और राष्ट्रका सेवक कहाना होगा परन्तु उसके हाथमें सत्ता तो रहेगी ही। साधारण लोगोंको तो इन सरकारी या राष्ट्रीय प्रबंधका और व्यवस्थापकोंकी सत्ताके नीचे ही रहना पड़ेगा। इसके सिवा जब तक दैनिक उपभोगका माल तयार करनेकी प्रतिम क्रिया और उसके लिए उत्पादनके साधन बनानेकी पहली क्रियाके बीच देग और कालका बहुत लंबा अंतर भी रहेगा तब तक समाजका जरूर ताके पहेले लगाय हुए अनुमानों और तत्सम्बन्धी उत्पादनकी योजनाआका मेल नहीं बठगा और भूल होनकी भारी संभावनाएँ भी रहेंगी ही। उत्पादनके साधन तयार करनेकी आवश्यकतासे अधिक कितनी ही प्रवृत्तिया जाजकी तरह ही चलती रहेंगी और उपभागका भी कितना ही अतिरिक्त माल तयार हाता रहेगा और उसके विगड जानके मौके भी आते हा रहग।

२५ परन्तु हमारे कहनेका मतलब यह नहीं कि कोई याजना बनाइ ही न जाय। ऊपर कहा जा चुका है कि आजना अथ-प्रवहार वि-व्यापी हो गया है और उसे सुनियमित रूपमें चरानका काम एक-दूसरेके साथ झगडनवाल अलग अलग वर्गों और अलग अलग राष्ट्रोंके मानव-समाजकी शक्तिस बाहरका है। इस विश्वव्यापी व्यवहारका जडमें ही अयाय और गोपणने तत्त्व निहित है। उनके प्रचड पाणने बचनेका उपाय मनुष्यके लिए यह है कि उत्पादनकी समस्त प्रवृत्ति विकसित कर दी जाय। फिर मनुष्यकी लोभी बृत्तिके कारण उत्पन्न हानवाक संकटोंके लिए अवकाश नहा रहगा। इतना हान पर भी समाजके लिए आवश्यक कुछ उद्योग बड पमान पर चलाये पडेंगे। उनकें लिए राष्ट्रके हितचिन्तकोंके अवश्य कुछ आयोजन करने पडेंगे। परन्तु अपनी प्राथमिक आवश्यकताओंके विषयमें ता मानव समाजका छान छोट घटकाता स्वावस्थी और स्वयपर्याप्त हाग ही न आर्थिक संकटोंके बचनना एकमात्र उपाय मालूम होता है।

मानव अर्थशास्त्र

चौथा भाग

घटवारा या वितरण

प्रास्ताविक

१ समाजमें जो सारी सम्पत्ति का उत्पादन होता है उसका वितरण — बटवारा इस उत्पादनमें जिन लोगों हिस्सा माना जाता है उन लोगों में स हर व्यक्तिका मिलनेवागी आयके रूपमें होता है। सम्पत्तिका उत्पादन कई मनुष्याके सहयोगसे होता है। कुत्तरती साधन-सम्पत्ति पर बतसे मनुष्य श्रम करके उससे मनष्यके उपभोगके लिये सम्पत्ति निर्माण करते ह। इस सम्पत्तिके निर्माणमें जिसका जितना हाथ रहा हो उमक अनुसार उस सम्पत्तिका बटवारा उत्पात्काके बाक होना चाहिये। इस भागमें हम बटवारे अथवा वितरणकी पद्धतिकी चचा करग।

२ सम्पत्तिका उत्पादन अब ब्यक्तिक स्वरूपका नही रहा है बल्कि सामाजिक हो गया है। इसी कारणम बटवारेका प्रश्न समाजमें पदा हा गया है। जब प्रत्येक कुटुम्ब या समूह अपनी अपनी जत्तरतकी चीजें स्वय उत्पन्न कर लेता था उम समय सम्पत्तिके विनिमय मूल्य और कीमतके तथा बटवारेके प्रश्न खट ही नहा हान थ। प्रत्येक कुटुम्ब एकसाथ मिलकर उत्पादन करता था और तयार का हुई सम्पत्तिका मिल जुत्कर ही उपभोग करता था। पुरान जमानके सवया प्राथमिक समाजमें यह प्रश्न ही सत् नहा हाना था कि मित्री-जुत्री सम्पत्तिमें स किमक हिस्सामें कितनी सम्पत्ति मानी जाय और कौन कितनी सम्पत्ति काममें ल। उत्पादनकी पद्धति ज्या ज्या बत्ती गई और समाजकी अथ रचना जम जमे जटिल बनती गई बस बस थ प्रश्न पदा होन ग कि उत्पन्न हुई सम्पत्तिमें से किम कितना भाग लिया जाय अथवा कौन कितना भाग ल। गुलामीकी प्रथामें मजदूरीकी दरवा प्रश्न सामन हा नही आता था। गुलामम जितना काम हा सनता था उतना वह करता था अथवा यह कहना अधिक नही हागा कि मालिक गुलामम जितना काम उ सनता था उतना लता था और इगलिए उसका पान-पापण करता था कि गुलाम जीवित रह और अच्छी तरहम काम कर गये। जब अर्थोत्पादन कुटुम्ब और गावका जत्तरल पूरी करनन किए ही हाना था तब कच्चा माल औजार और मरान आदिवा — जिह हम पूजा कहते ह — का मालिक होना था वहा स्वय परिश्रम भी करता था और उस का कुछ मिन्ता था उम मजदूरी समझा जाय या मुनाषा यह

प्रश्न ही खड़ा नहीं होता था। इसी तरह अर्थ विगीता पना उधार क्रिये विना मनुष्य जब अपनी ही पूजा में धन करता था तब अर्थ व्याजना प्रश्न पदा नहीं होता था। एरिन आकी उत्पादन प्रथामें कुर्ता माधन सम्पत्ति—उत्तरणने लिए जमीनका मालिक एक आत्मा होता है पूजा लगानवाग वग दूसरा ही होता है परिश्रम करावाग वग तीगरा होता है और सारे उत्पादन-कायकी व्यवस्था करनवाग वग चौथा होता है। इसलिए इन सबके समग्र प्रयासस उत्पन्न सम्पत्तिना बटवारा करते समय अर्थशास्त्रका यह विचार करता पड़ता है कि उत्पादन-कायमें हाथ बटानवाग सत्र गणामें से किसे कितना हिस्सा दिया जाय। बटवारेके विचारका अर्थ है मुख्यतः उत्पादनके विविध जगामो कितना बटवा दिया जाय इसका विचार। परिश्रम करनवागको जो बदला मिलना है उसे मजदूरी करते हैं। उत्पादनके लिए जो पूजा लगाई जाती है उसने बटवारेको व्याज कहा जाता है। उत्पादनके कुर्ता माधनने बदलका भाडा या किराया कहत है। जमीनको इन कुर्ती साधनाको गामिक कर लिया है। परन्तु जमीनक सिवा और भी कई तरहकी जायतों होती हैं जो किराये पर दी जाती हैं। यह भाडा गल अर्थशास्त्रमें एक विषय अर्थमें प्रयुक्त होता है जिस हम भाडा-सम्बन्धी प्रकरणमें देखेंगे। अब यह जाता है प्रवचक जो योजना बनाता है और साहस या उद्योग जारभ करता है। उसके बदलेको भका कहत है। उत्पादन-कायमें भाग लेनवाग सारे मनुष्याकी आय इन चार गणकामों से किमी एक नोच आ जाती है।

३ आज तो दुनियाके हर देशमें यह देखा जाता है कि इस आयका बटवारा 'यायके' आधार पर नहीं होता। उत्पादनके काममें अपनी बुद्धि और श्रमसे सहायता करनवाले सारे मनुष्याको कितना भाग सामुदायिक आयमें से मिलना चाहिये उतना नहीं मिलता। प्रत्येक समाजमें थोड़ेसे व्यक्ति—या एक छोटासा वग—एतिसिक् घटनाअसि उत्पन्न परिस्थितिका लाभ उठाकर उत्पादनके साधना और द्रव्य पर अधिकार किय बठ है और उनके बठ पर सारे समाजके श्रम और सहयोगसे उत्पन्न होनवाली आयमें से वे सिंह भाग हड़प लेते हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि उत्पादनके साधना पर और द्रव्य पर उनका स्वामित्व-अधिकार है। अपने पासके उत्पत्तिके साधनाका तथा पसेका वे अपनी शक्त पर ही समाजको उपयोग करन देते हैं और य शक्त इतनी बड़ी होती है कि यह अधिकार रखनके सिवा उनके और कुछ काम न करने पर भी आयका बड़ा हिस्सा उन्हें मिलता है। इसलिए वितरणके

प्रश्नका विचार करते करते यह महत्वपूर्ण चर्चा लड़ी हुई है कि उत्पादनके साधना पर यवितका स्वामित्व-अधिकार रहना वाछनीय है या नहा।

४ इसी तरहकी दूसरी चर्चा करार-स्वातन्त्र्य और प्रतिस्पर्धाकी है। उत्पादनके जो चार मुख्य अंग हैं उन अंगोंका स्वामित्व अलग अलग वर्गोंका है। जमींदारोंके पास जमीन है उद्योगपतियों और पूजीपतियोंके पास कारखाने और पसा है मजदूरोंके पास श्रम है और प्रबंधकोंके पास योजना गति और साहस है। प्रत्येक वर्ग अपने पाम जो जग है उनका उत्पादनके काममें उपयोग होने दानके पहले आयमें से बड़ा हिस्सा मागता है। जमींदार अधिक लगान मागता है पूजीपति और सराफ अधिक राज चाहता है, प्रबंधक अधिक मुनाफा चाहता है और मजदूर अधिक मजदूरी मागते हैं। सब वर्गोंके बीच भयंकर प्रतिस्पर्धा चलती है। यह कहा जाता है कि इन सब वर्गोंका इस बातकी स्वतंत्रता है कि वे उत्पादन-काममें भाग लेनेसे पहले अपनी इच्छानुसार अपना गते पैग करके एक-दूसरेके साथ करार करे या न करे। परंतु कहना पडगा कि एमी स्वतंत्रता केवल तब या कल्पनामें ही है। वास्तवमें तो एसा कोई स्वतंत्रता देखी नहीं जाती। प्रतिस्पर्धा और करारकी स्वतंत्रता मजदूरोंकी गतिवाले व्यक्ति या वर्गोंके बीच हा तभी पायी मानी जाती है। केवल बंधन और निबंधोंके बाधकी करार-स्वतंत्रता या स्पर्धामें से तो अनाय और गोपणका ही जन्म हागा। जमींदार और पूजीपति वर्गकी स्थिति एमी है कि उनके पामने साधन अमुक समय तक बिना उपयोगके रह जाय तो भी उन्हें कोई भार अमुकविधा नहीं हाता। उनके पास जतना धन जमा रहता है कि धाड़ दिन तक उन्हें कोई नई आय न हा तो भा उस धारमें वे बपरवाह रह सरन ह। आय बंधन हा उन्हें भूखा मरनेकी नीवत नहीं आती। केवल मजदूर-वर्गका जो समाजका बहुत बड़ा वर्ग है आय या राजीब बिना धार दिन भा टिकना कठिन है। अपने कामका उचित दर प्राप्त करनेके लिए तब तक वे लड़ें तब तक उन्हें कामने बिना रहना पडता है और भूखा मरना पडता है। इसलिए भूखा मरनेके बजाय वे उचितम काम दर पर भा मजदूरी करती लाभारीग पमने कर लते ह। हमने गिवा जमींदार और पूजीपति वर्ग समस्यामें छाटा है और मजदूर-वर्ग समस्यामें बंधा है। इसलिए मजदूरोंके बीच काम पाउनेके लिए स्पर्धा अधिक है। हम कारणग भी उन्हें काम दर पर काम कराना पडता है।

५ हम प्रकार आज जिन ढंग और गिद्वान पर सम्पत्तिका बंटवारा होता है उसमें अगमानता और अनाय है इस सब कोई स्वीकार करत ह।

इस असमानता और अयायका दूर कराने के लिए तरह तरह का यात्रनाम और वायव्यम मुझाये गये हैं। इनकी चर्चा हम आगे करेंगे। अभी तो हम इसी बात की चर्चा करेंगे कि आज के अयनक्रम में विभिन्न प्राणियों का अयन क्या चिह्नित होती है और वह क्या अयन उचित है अथवा अनुचित।

२

भाडा

१ किसी भाग्यकार या जगम वस्तुना स्वामित्व-अधिकार रखनेवाला आत्मी उस वस्तुका निश्चित समयके लिए दूसरे आत्मीका उपयोग के लिए दे और उसका बदले में उचित मूल्य निश्चित का हुई खरम के तो उस खरमका भाडा कहते हैं। भाडा नाम सामान्य व्यवहारमें इसी अर्थमें उपयोग किया जाता है। इस तरहमें बहुतसी वस्तुएं भाडा पर ली जाती हैं और दी जाती हैं। मकान मालिक अपना मकान दूसरेको रहने के लिए भाडे पर देते हैं। हम एक जगहसे दूसरा जगह जानने के लिए बरतगाड़ी घोडागाडी या माटर भाडसे ले जाते हैं। रेलगाडीमें यात्रा करने के लिए हम जो टिकट लेते हैं वह रेलगाडी भाडा ही है। इसी तरह बाजारमें बरतन भाडे फर्नीचर और सजावटका सामान भी भाडसे मिलता है। बिजलीमें बचनवाला मनुष्य अपनी माट्रिकीकी वस्तु उसकी कीमत लेकर हमेशाके लिए दूसरेको दे देता है। भाडसे देनवाला मनुष्य उस वस्तुको नियत किये हुए समयके लिए दूसरेको उपयोगके लिए देना है और उसका भाडा लेता है। यह भाडा मालिक इसलिए लेता है कि उस वस्तुके बनानेमें या तो उसने कुछ श्रम खर्च किया है या उसे प्राप्त करनेमें पूजा लगाई है। इसलिए जब वह दूसरेको काममें लेनेके लिए वह वस्तु देता है और इस उपयोगके कारण ही उस वस्तुकी कुछ घिसाई भी होती है तो उसके बदलेके रूपमें उपभोग करनेवाले मनुष्यसे वह योग-बहुत मुआवजा लेता है। यह मुआवजा अपन श्रम या पूजाके फलस्वरूप प्राप्त वस्तुको दूसरेके उपभोगके लिए देनेका बदला है। इसमें दो पक्षोंके बीच करार होना है और भाडकी रकम तथा वस्तुके उपयोगकी दूसरी गतों करारसे तय होती हैं। इस भाडको करारसे तय किया हुआ भाडा अथवा करार भाडा (काण्ट्रैक्ट रेण्ट) कहते हैं।

२ अथवाश्रम भाडका विचार सिफ इत सामान्य या प्रचलित अथमें ही नहीं बल्कि एक विनाय अथमें किया जाता है। हमने ऊपर जो वस्तुएँ गिनाइ—जस घर घाटागाडी फर्नीचर बरतन भाड आदि—उना तात्विज स्वल्प दखें, तो य सन वस्तुएँ मनुष्यक श्रमम बना हुइ हानने कारण कुटरती सम्पत्तिसे भिन्न प्रकारका ह। ये वस्तुएँ उपयोगर लिए देनका जो बदला लिया जाता है उसे भले ही हम भाडा कहें परन्तु आग कर हम दायग कि चान्तवमें यह उन वस्तुआमें लगाइ हुई पूजीना ब्याज है। भाडका विचार हम कुटरता सम्पत्तिसे सम्बन्धमें बरना है।

३ हमने कुदरतकी अथवा कुटरतकी दा हुइ माधन-सम्पत्तिका उत्पादनका एक अण माना है। कुटरतकी दा हुई विपुल माधन-सम्पत्तिमें जमीन खानें और जगत् मुख्य मान जान ह। उनका भाडका इम प्रकरणमें इमें विचार बरना है। यह समझनक लिए कि इन तीन वस्तुआक भाडका प्रदन किस तरह पना होता है इन तीनाकी मुख्य बिनापनाका पहा पल्लव बरना पन्ना। एष ता पूजा और श्रमकी तरह इन वस्तुआकी मात्रा बर्दाई घटाई नहीं जा सकता। मागकी ध्यानमें रखकर पूजा और श्रममें बढि बरनी हा तो की ना सकना है। यद्यपि मजदूरोकी सख्या हम जितनी चाहें उतनी नहा बग मरत परन्तु उसक बजाय भीतिर गकिना उपयोग करवे और नई नई मगानाका खाज करवे अर्थात् पूजीमें बढि बरक हम मजदूराका तगाका उपाय कर सकन ह। परन्तु जमानकी मात्रा ता परिमित ही है। काइ नय खाज हुग प्रन्नामें नई बस्ता बमाई जाय ना बहाकी जमीन हम काममें ला मरत ह और इम तरह जमानकी मात्रामें बढि हा सकता है परन्तु नहा तन हमारा आजना पान पहुचता है वहा तक ता पथी पर मनुष्यक बसने लायक सारे प्रदगाकी खोज हा चुकी है और नई जमान हमें मिल इमकी सभावना नहीं पायता। इसलिये विभिन्न कामके लिए जमीनक उपयोगका मारा खल हमारा पाम जितना जमीन है उसकी मयागमें रहनर ही हमें चलना है। गानकि भातरक सतिज पनाथों और जगत्क उत्पादनकी मात्राक लिए ना बहा बहा जा सरता है। खनिज पनाथों और जगत्के उत्पादनकी परिमित मात्राक ही हमें अपना काम चलना है।

४ उत्पादनके इन तान अगाके कारणमें दूगरा उत्पादनाय वान य कि मारा जमान मारा खानें और सार जगत् उत्पादनकी लिये एतक कम एबसो शक्ति या एवम गुणवाक नहा होत। अधिक उपजाऊ जमीनक अमुक मात्रामें पूजा और श्रम लागत पर जितना उत्पादन हाता है उनना उत्पादन

इस असमानता जोर अयाया दूर कराने लिए तरह तरह यात्राएँ और वायत्रम गुणायें गय ह। इनकी चर्चा हम आग करण। अभी ता एग दगा वायी चर्चा करण नि आजक अयंत्रमें विभिन्न प्राणकी आय यग निश्चित होनी है और वृ आय उचिन है अया अणित।

२

भाडा

१ सिगा नी स्थावर या जगम यन्तुना स्वामित्व-अपिहार रणनमाल आत्मा उस वस्तुको निश्चित समयके लिए दूसरे आत्मीका उपयोगके लिए दे और उसका बन्धमें उसका कोई निश्चित की हुई रकम ल तो उस रकमकी भाडा कहते ह। भाडा गल सामाय व्ययहारमें इसी अयमें उपयोग किया जाता है। इस तरहस बहुतसी वस्तुएँ भाड पर ली जाती ह और दी जाना ह। मकान मान्नि अपना मकान दूसराने रहनेके लिए भाडे पर देते ह। हम एक गहने दूसरी जगह जाननेके लिए बलगानी घोडागाडी या मोटर भाडस ल जाते ह। रलगाडीमें यात्रा करणके लिए हम जो टिकट लेते ह वह रेखा भाग ही है। इसी तरह बाजारमें बरतन भाड पनीचर और सजावटका सामान भी भाडसे मिलता है। बिश्रीमें बेचनवाला मनुष्य अपनी मालिकाकी वस्तु उसकी कीमत लेकर हमेगके लिए दूसरेको दे देता है। भाडसे देनवाला मनुष्य उस वस्तुको नियत किये हुए समयके लिए दूसरेका उपयोगके लिए देता है और उसका भाडा लता है। यह भाडा मालिक इसलिए देता है कि उस वस्तुके बनानमें या तो उसन कुछ थम खर्च किया है या उसे प्राप्त करणमें पूजा लगाई है इसलिए जब वह दूसरेको काममें लेनके लिए वह वस्तु देता है और इस उपयोगके कारण ही उस वस्तुकी कुछ घिसाई भी होनी है तो उसके बन्धके रूपमें उपभोग करनवाले मनुष्यसे वह थोडा-बहुत मआवजा देता है। यह मुआवजा अपन नम या पूजाके फलस्वरूप प्राप्त वस्तुको दूसरेके उपभोगके लिए देनका बदला है। इसमें दो पक्षोंके बीच करार होना है और भाडकी रकम तथा वस्तुके उपयोगकी दूसरी गतें करारसे तय होनी ह। इस भाडको करारसे तय किया हुआ भाडा अथवा करार भाडा (काण्ट्रक्ट रेण्ट) कहते ह।

२ अथगास्त्रमें भाडेका विचार सिफ इस मामाय या प्रचलित अथमें ही नहीं बल्कि एक विशेष अथम किया जाता है। हमन ऊपर जो वस्तुए गिनाइ—जसे धर घोडागाडी फर्नीचर वरतन भाडे आदि—उम्मा तात्विक स्वरूप दयें ता य सब वस्तुए मनुष्यने श्रममे बना हुई होनके कारण कुदरती सम्पत्तिसे भिन्न प्रकारकी ह। ये वस्तुए उपयोगके लिए देनका जो वस्त्र लिया जाता है उसे भल ही हम भाडा कहें परन्तु आग चल कर हम देवेंग कि वास्तवमें यह उन वस्तुओमें उगाई हुई पूजीका ध्याज है। भाडेका विचार हमें कुदरता सम्पत्तिसे सम्बन्धमें करना है।

३ हमन कुदरतको अथवा कुदरतकी दी हुई साधन सपत्तिको उत्पादनका एक जश माना है। कुदरतकी दी हुई विपुल साधन-सम्पत्तिमें जमीन खान और जगत् मुख्य माने जाते ह। उनके भाडका इस प्रकरणमें हमें विचार करना है। यह समझनके लिए कि इन तीन वस्तुगावे भाडका प्रश्न किस तरह पदा होता है इन तीनोंकी मुख्य विशेषताका यहा उल्लेख करना पया। एक तो पूजी और श्रमकी तरह इन वस्तुआकी माना बनाई घटाई नहीं जा सकती। भागको ध्यानमें रखकर पूजी और श्रममें वृद्धि करनी हा तो की जा सकती है। यद्यपि मजदूराकी सख्या हम जितनी चाह उननी नहीं बना सकते परन्तु उनके बजाय भौतिक शक्तिका उपयोग करके और नई नई मशीनाका खोज करके अर्थात् पूजीमें वृद्धि करके हम मजदूराका तगाका उपाय कर सकते ह। परन्तु जमीनकी मात्रा ता परिमित ही है। काइ नय खोज हुए प्रत्यामें नई वस्ती बसाई जाय तो वहाकी जमीन हम काममें ग सकते ह और इस तरह जमीनकी मात्रामें वृद्धि हो सकता है परन्तु जहा तक हमारा आजका ज्ञान पहुचता है वहा तक तो पथ्वी पर मनुष्यक बसने लायक सारे प्रदेशकी खोज हो चुकी है और नई जमान हम मिले इसकी सभावना नहा शेषता। इसलिए विभिन्न कामके लिए जमीनके उपयोगका सारा खल हमारे पास जितनी जमीन है उनका उपयोगमें रहकर हा हमें चलना है। खानाक भीतरक खनिज पदार्थों और जगलाक उत्पादनकी मात्राक लिए भी यही कहा जा सकता है। खनिज पदार्थों और जगलाके उत्पादनका परिमित मात्रामे ही हमें अपना काम चलाना है।

४ उत्पादनके इन तान अगाने बारमें दूगरा उल्लेखनाय यान य कि सारी जमान सारी धानें और सार जगत् उत्पादनकी दृष्टिम एकस बग एवसा शक्ति या एवम गुणवाढ नये हाने। अधिउ उपजाऊ जमीनक अमुक मात्रामें पूजी और श्रम लगान पर जितना उत्पादन हाता है उनना उत्पादन

उतनी ही पूजा और श्रम गाने पर भी कम उपजाऊ जमीन नहीं है। इसी तरह कुछ खानों में स रानि पत्तय अधिर आगानी और अटी जातिने मिट सते ह जब कि दूसरा कुछ खानों में स उतनी ही पूजा और श्रम गान पर भा बहुत कम और घटिया रानिज पत्तय मिलन ह। जगत्की भी यी बात ह।

५ हमने अगवा य तीनो वस्तु संपूणत स्यावर ह। पूजा या मजदूरानो एक जगहने दूसरी जगह ले जा करने ह परन्तु जमीन जगत् या गनाना उपयाग करना हा ता व जिस जगह हा यहा मनुष्यका गाना पत्ता है। गगिए उनरी उयोगितामें स्यानका बहुत बडा हाय रहा है। उनकी पत्तावारका उपयाग नगाने भागमें जितना गया जा सता है उतना बहुत दूरके भागमें नहा हो सता। क्याकि उगमें यातायात-पचरा विचार करना पडता है। जितने दूर हम जायगे उतना यातायात-पच बग्गा। फिर किमा जमीनकी सतह बहुत उपजाऊ हान पर भी यदि क्व किसी एक जगत्के बाच आ गइ हो जहा हिंख पगु रहते हा और जहाना हवा-गानी मनुष्यके रहन याग्य न हो तो एसी जमीनको काममें लेनमें मनुष्यको बहुत दर लगती है। एसगिए जमीनके गुणमें उमक वसके सिवा आवादी और बाजारका साभिध्य हवा पानीकी अनुकूलता और जान मात्की रक्षाने तत्वाका भी हिसाब गाना पडता है।

भाडेका विषय अथ

६ जमीनके स्वरूपके बारेमें तनी छानबीन करनके बा उतने भाडका प्रश्न समझना बहुत आसान हो जायगा। जब तक किसी देशमें मनुष्यको खतीके गिए जितनी जमीन चाहिय उतनी हो और एसी स्थिति हो कि अपनी पसदसे जो भी जमीन वह जोतना चाहे उस जान सके तब तक जमीनके उपयोगके लिए किसीको भाडा नहीं देना पडेगा। जसे असीम मात्रामें मित्रन वाली हवा और पानीके गिए या क्मी प्रकारकी दूसरी कुदरती चीजाने लिए भाडा नहा देना पडता वसे ही जमीनके लिए भी किसीको भाडा नहीं देना पडगा। यदि संपूण देशकी सारी जमान एन्सी उपजाऊ होती बाजारसे समान अतर पर हाती मात्रामें अमर्यादित होती और दूसरे सब गुणोंमें भी समान हाती ता भाडका प्रश्न पदा नहीं होता। परन्तु क्योंकि जमीन मात्रामें अमर्यादित नहीं है और उपजाऊपन तथा दूसरे गुणोंमें समान नहीं है इसलिए देशम जस जस आवादी बन्ती जाती है वसे वसे खतीकी जमीन पसद करनमें स्पर्धा होती है। हर मनुष्य अच्छीस अच्छी जमीनमें खती करना

पमान करता है। अच्छी अच्छी जमाना पर कुछ मनुष्याका काम और स्वामित्व अधिकार स्थापित हो जाता है। फिर भा अधिक जमीन जानतका आवश्यकता तो होनी ही है। इसलिए त्रिनादिन कम गुण जोर कम कामका हल्की जमानमें खना करना पन्ता है। हल्की जातिकी जमीनका जातत ही मातूम पड जाता है नि एवमा महनत और पूजी खच करने पर भा उचा जातिकी जमानस अधिक आय हाता है और हल्की जमीनस कम आय हाती है। इन ता प्रकारकी जमीनस ज्ञानानक फसका अथगात्रमें भाग बहत ह। भाटा कसका हमें जिन विगप अथमें उपयोग करना है वह अथ यह है।

७ यह चीजका हम एक कापनिज जाहरण द्वारा स्पष्ट करण। मान जाजिय कि निसी काममें तीन प्रकारकी जमान है। ए प्रकारका जमान अयन्त उपजाऊ है ए प्रकारकी जमान उत्तम कम उपजाऊ है और ग प्रकारका जमान उत्तम भी कम उपजाऊ है। पहल ता लाग ए प्रकारका जमान जाता गन करेण। जब आवाणी बगी और अधिक अनाजकी आवश्यकता हागा तब तब ए प्रकारका जमान भी जानत लगेण। आनात और भी बत जाय और अनाजका जम्मत भी बढ जाय ता तब ग प्रकारका जमान भा जानत लगेण। अब मान जाजिय कि १००० रुपयका पूजी और श्रम खच करना ए प्रकारका जमानस १००० मन गहू पना हाता है। परन्तु आवाणी बतन पर अनाजकी आवश्यकता बतन कारण ए प्रकारका जमान खताक काममें खनका जम्मत पन्ता है। परन्तु घटिया हानस १००० रुपयका हा पूजा और श्रम खच करन पर भा उममें ७५० मन गन पना हाता है। आवाणी और ज्यादा बन्ता है और जागाका और अधिक अनाजकी आवश्यकता हाता है। इसलिए व ग प्रकारकी जमान भा जानत लगत ह। परन्तु वह जमान और भी घटिया हाता है। इसलिए उममें १००० रुपयका पूजी और श्रम खच करन पर भी ५०० मन गहू पना हाता ह। इस गहूका भा समाजमें जम्मत तो है ही। अब इन ताना प्रकारका जमानस गहू एन ही जातिक हानक कारण बाजारमें उनका भाव ता एक ता गता। एन प्रकारका जमानवाका गहूका लागत कीमत एन रुपया प्रतिमन आती ह। हमरे प्रकारका जमानवाकी गहूका लागत कीमत एन रुपया प्रति पीने मन आता है और तामरे प्रकारका जमानवाका गहूका लागत कामत एक रुपया प्रति आधे मन आती है। तामरे प्रकारका जमानवाका अपना गूजिम भावमें पना हाता उमस सस्ता व नहीं बच मनन और उनस गेहूकी

गहरम तो है ही । इसका बाजारमें गढ़ना भाव तागरे प्रसारकी जमाने वाला लाना कामनक जुगार रगा । इस भावम वचनमें ग प्रसारकी जमीनवाला लानी गार्न हुई पूजा और श्रमा मुश्राजता तो मित्र जायगा परन्तु काई नफा नहीं रगा । क और क प्रसारकी जमीनवाला गढ़ना भाव तो ग प्रकारकी जमीनवाले बराबर ही मित्रगा परन्तु क प्रसारकी जमानेवाको १००० रुपयकी और क प्रसारकी जमानेवाको ५०० रुपयकी अतिरिक्त आय हागी । ग प्रकारका जमाना हम गलाके लिए परान की जानगानी अतिम या सीमा परकी जमीन कह्य । यदि इन तीना प्रकारकी जमीनके कुल उत्पादनसे भी अधिक गहूनी जहरत पग हा ता उनम भी हाका चौथ प्रकारकी जमीन खतान काममें लनी पगगी । उस समय चौथ प्रकारकी जमीन खतीकी सीमा परकी जमाने मानी जायगा । और क जमीनम पदा हानेवाके गहूकी जो लागत कीमत जायगी उगी भावन सारे गह विकेंग । जब एसा हागा तब तीसरे प्रकारकी जमीनवाको भा कुछ मुनाफा रगा । लेकिन यदि गहूकी जहरत कम हो जाय और उसकी माग घट जाय तो ऐसा भी हो सगता है कि तासरे ग प्रकारकी जमीनवाको भी खती करना आर्थिक दष्टिस गभकारी न हो । क्याकि गहूकी माग कम होनस और यह माग क और क प्रकारकी जमीनमें उत्पन्न होनवाक गहूने पूरी हो जानक कारण ग प्रकारकी जमीनवाको गहूकी जो लागत कीमत पडी हा उस कीमत पर कोई गहू खरीदनको तयार नहीं होगा । एमे समय पर दूसर प्रकारकी जर्थात क प्रकारकी जमीन खतीकी सीमा परकी जमीन बन जायगी । उसे जोतनवाको अपनी लागत कीमतके बराबर ही मिलेगा । कोई नफा उन्हें नहीं हागा । खतीकी सीमा परकी जमीनसे अधिक ऊंची जितनी जमीन होगी उस जमीनमें खती करनेसे नफा रहेगा । कस नफको जमीनका भाडा या लगान कहा जाता है । खतीकी सीमा परकी जमीनको भाडा या लगान न उपजानवागी जमीन कहते ह ।

८ इस परम जमीनके भाकी याख्या यह निश्चित की जा सकती है

भिन्न भिन्न कस और गुणवाली जमीनमें खती करने पर हलकीसे हाकी जमीनमें उत्पन्न होनवाले मालकी जो लागत कीमत आवे और उससे अधिक जचडी जमीनमें उत्पन्न होनवाले मालकी जो लागत कीमत आवे उन दोनोके बीचका अन्तर जमीनका भाडा या लगान होता है ।

अनुपाजित नफा

९ हमारे उदाहरणमें क जमीनका भाडा १००० रुपये माना जायगा, ए जमीनका भाडा ५०० रुपये और ग जमीनका भाडा गूय माना जायगा। ग जमीनवाल इसीलिए खती करते ह कि उनकी लगाई हुई पूजी और श्रमका बन्ला उह मिल जाता है। क और ए जमानवालाका जो नफा या भाडा मिलता है वह उह जमीनके मालिक होनके बदलेमें ही मिलता है। इसके लिए उह न तो कोई अधिक श्रम करना पडा और न अधिक पूजी लगानी पडी। इसी तरह बिगेप कुगलता भी उह नही लिखानी पडी। इसलिए उह मिल हुए नये या भाडकी बिना परिश्रमके मिठा हुआ नफा अथवा अनुपाजित नफा कहते ह। इससे यह साफ हो जाता है कि हम भाडका जो प्रचरित अथ करते ह और जिसके लिए हमन करार भाग गलवा उपयोग किया है उसस जयगास्त्रके भाडका अथ विलकुल भिन्न है। करार भागस अलग करनके लिए हम इसने लिए आर्थिक भाग गलवा उपयोग करेंग।

१० हम देव चुके ह कि कारखानाके उत्पादनकी तुलनामें जमीनके उत्पादनमें घटते उत्पादनका नियम जल्दी अमलमें आता है। घटते उत्पादनका नियम अमलमें आनके कारण ही यह भाग या लगान जा बिना परिश्रम किय मिला हुआ नफा है सम्भव होता है।

११ बाल्पनिव उदाहरण लकर ऊपर लिख गय विवेचनमें हम तान बातें मान कर चरत ह (१) देगमें जमीन उत्तम उत्पादनवालीसे गुह्र हाकर उतरते उत्पादनवाली जमीनक श्रमसे जीती जाती है (२) रम उगादनवाली जमानमें खता करनका कारण आवागाना बन्ना है और (३) आवागी जस जस बन्ना जाता है वमे वमे अनाजका माग बन्ना कारण उस जमीनकी कीमत भी बढ़ती गाना है और तग जम गकरा जमानमें गती हाता गाना है वग वस ऊचा जमानने मालिकाना भाडा या लगान बढ़ना जाता है।

१२ परन्तु इस उदाहरणकी बचनना यह समझाने के लिए हा की गई है कि जयगास्त्रन विगिण्ट चयमें भाडा कम बन्त ह। अमलमें गतीकी जमीन एग किमी श्रमग नहा चुता जाती। गमें जर लाग रई बस्ता गगते ह तव ता जमीन पहर उहें दाखती है उगावा व काममें रत ह। गेता भा हो गवता है कि यह जमान हकी जातिकी ग और फिर तग जम आवाग बन्ती गाय और लाग आग बडन जाय थम थम अररत गगाट मा अ-२४ •

प्रदेशों में अधिक उपजाऊ जमीन उनके हाथ गये। इस तरह वमा रमी तो एसा भी हा सकता है कि आवाणीक बढनर गाय साथ गग ज्याग अउा जमीन जोतन लगे और इगम अनाजकी कीमत कम हा ताय तथा पुरानी जमीनोन भाड घट । इसणिए यह पहना ठार नहीं कि जमानरा भाडा हमेगा वता ही जाना है। देगमें हा अधिन उपजाऊ जगा मिठ जानर सिवा दूसरे देगमें नई वस्ता वमा हा और वहा पयाया हुआ रास्ता अगाज पुरान देगमें आय तत्र भी पुरान देगमें जमीनरा भाग्य घट जाना है। अमरोवास सस्ता अनाज जय इल्ण्ड जान लगा तत्र इल्ण्डमें जमीनरा भाडा घट गया था। हमार देगमें सूनातकी सस्ती वपाग और आस्ट्रेलियाका सस्ता गहू आनके कारण वपाग और गहूक भाव घट गय थ और उतका असर इन चीजाकी पयागार करनवागी जमाव भाव पर हान उगा था।

१३ इस तरह छत्रपुट उताहरणा पर विचार कर ता कई तरहके अपवाट मिल जात ह। परन्तु मय वाताकी दयन हुए इतना निश्चिन है कि अधिन अच्छ गुण वस तथा अनुकूलताआवाणी जमीन और उतरत गुण वस और दूसरी प्रतिकूलताआवाणी जमीन — इन दोनाके भाडमें अन्तर हुए बिना नहीं रहता। और देगकी सारी खताके लायक जमीन यनीके काममें आन लग जाय उसके वाट अधिक उपजाऊ और अनुकूलतावाला जमीनके माणिकावा अनुपाजित नफा मिगता ही है।

१४ खतीस भी मवान वनान लायक जमीनकी कीमतमें इस तरहका अनुपाजित नफा बहुत बार एकाएक होन उगता है। किसी गाव या गहरमें कोई मुहल्ला अतिम सिरे पर हो और वहा प्रनिष्ठिन लोपोकी आवाणी भी न हो तो उस समय एसी जमीनकी कीमत कम होती है। परन्तु वस्ती बढनके कारण या इस मुहल्लेकी जय कोई अनुकूलता ध्यानम आनके कारण उस भागमें आवादी बढन गय तो वहाकी जमीनके भाव एकदम वट जाते ह। गहरोंमें तो नय रास्ते बन जानसे भी रास्ते पर पडनेवाली जमीनके भाव बढ जाते ह। एसे मौका पर उन जमीनाके मालिकाको बहुत बडा अनपाजित नफा मिठ जाता है। यही गाय जगत्रा पर और खाना पर भी लागू होता है। जस जमे उनकी पयावारकी माग बन्ती जाती ह वसे वस कम उपजाऊ जगल और खानें काममें ली जाती ह और अधिक उपजाऊ जगत्रा तथा खानके माणिकोको अनुपाजित नफा मिलन लगता है।

१५ ऊपरकी विचारसरणीक अनुसार हमें यह मानना पडगा कि हर देगमें बिना भाड की कुछ जमीन तो हानी ही चाहिये। क्योकि किसानको

अपनी लगाई हुई पूजा और श्रमका बदला मित्र जाने वहाँ कुछ बचे तभी तो वह भाड़ा दगी? परन्तु हमारे देशमें वस्तुस्थिति कुछ और ही है। किसानिके बड़ भागका खतीमें लाभ नही होता अर्थात् उह अपनी जमीनसे निर्वाहक लायक आय भी नही मिलती। फिर भी वे खेती करते हैं क्योंकि खती करें तो ही उह कोई रकम उधार लेना मिलाता है। यह समझकर कि उनकी मेहनत मजदूरीका जितना प्रापण हो सके उतना ही सही पसा उधार लेनेवाले लोग निकल आते हैं, और किसान सोचते हैं कि बिना कुछ भूना मर जानेसे तो आध पट रहकर भी यदि जा सकें तो जीना चाहिये। यह समझकर वे खती करते रहते हैं। यदि उनकी अपनी जमीन न हो तो वे आर्थिक दृष्टिसे लाभकारी सिद्ध न होनेवाली जमीनका भी भाड़ा या लगान देकर खती करते हैं। इससे हमारे देशमें जो जमीन आर्थिक दृष्टिसे भाड़ा या लगानके लायक नहीं होता उसका भी लगान मिल जाता है। जमानमें भाड़के लायक रकम या गुण न होने पर भी और स्वयं कोई श्रम न करने पर भी जमान पर स्वामित्वका अधिकार होनेके कारण ही ऐसे जमानदारको भाड़ा या लगान मिलता है। ऐसे जमानदारको जो आय होती है वह जमीनके उपजाऊपनके कारण नहीं होता परन्तु जमानकी तगबने कारण ही होती है। इसलिए यह आय अनुपाजित होनेसे अर्थात् प्रापणकारी भा हानी है।

१६ इससे उल्टे यह कहना भी ठीक नहीं कि आज जितने जमानदारको भाड़ा या लगान मिलता है उन सबके लिए वह अनुपाजित आय ही है। आज जितनी जमीन भाड़ा या लगान पर दी जाती है वह सारी आरम्भमें बुद्धिपूर्वक उपजाऊपनवाली नहीं थी। उस जमीनका मुधारनमें काफी पूजा लगाई गई तब बड़ी यह उपजाऊ बनी है। आज बहुत बड़ी जमीन अपने मूठ बुद्धिपूर्वक स्वरूपमें हागी। लगभग सारी जमानको मुधारनमें श्रम और पूजा सब करनी पडी है। जमीनकी सतह प्रायः उपजाऊ है परन्तु वह क्षाह-शकारम भरा हो या अच्छा समतल न हो, तो उस पर श्रम और पूजा लगानसे ही उसने उपजाऊपनका लाभ मिलता है। कुछ जमानाकी सतह बिना कुछ हटका होनी है वरसा तक उसमें साँस दे देकर उस उपजाऊ बनाया जाता है। एसी जमीनका जो भाड़ा या लगान मिलता है वह हमने भाड़का जो अर्थ दिया है उस अर्थमें भाड़ा नही होता बल्कि उसका मास्त्रि द्वारा सब की हुई पूजाका म्याज होता है। जमानका भाड़ा सच्चा आर्थिक भाड़ा नही बल्कि पूजाका म्याज है, इससे कुछ बिना कुछ स्पष्ट उदाहरण भी हैं। मान लीजिये कोई

जमीन उसके उपजाऊपन अथवा दूसरे गुणों जैसे बाजारवा नजदीक होना बढ़िया मुहल्ला आदि परसे लगाई हुई बाजार कीमत पर जमीन मनुष्यन खराती है। तो उसे जो आय हाती है वह तो उस जमीनमें लगाई हुई पूजाय ब्याज ही हाती है। आवागने बढ़नेके साथ या दूसरे कारणोंसे जमीनकी जो अधिक आय होती है और कीमत बढ़ती है उसका लाभ जब बहुत पुरान समयसे जमीनके मालिक बन हुए जमीनदारोंका मिश्रण है तब अवश्य वह अनुपाजित नफा होता है। लेकिन यह नफाके कारण जमीनकी कीमत उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है और बढ़ी हुई कीमत पर जो जमान खरीदता है उस अनुपाजित लाभ नहीं मिलता।

भाडवा अनौचित्य

१७ जमीनो जगत् या खानोंके मालिकोंको जो अनुपाजित नफा मिलता है उस पर उचित रूपमें किस हद तक उनका अधिकार माना जा सकता है इस प्रश्नके विचारमें सभ्य नभ्य खरीदार बरी हाना चाहते हैं। हम भी इस प्रकरणके लिए उन्हें अलग रखकर ब्याजके प्रकरणमें उनका विचार करण। क्योंकि 'याज खानों' वारेमें भा अनुपाजित नफा असा ही प्रश्न सामन आता है। आर्थिक भाडवा या अनुपाजित नफा ऊपर जो पयक्करण हमन किया है उससे इतना तो अच्छी तरह मातूम हो जाता है कि जिन लोगोंको अनुपाजित नफा मिलता है उनका इन जमीनो जगत् और खानोंके मालिक होनेके सिवा उत्पादनके कायम किसी तरहका हाय नहीं होता। उत्पादन बतानके लिए वे कोई श्रम करते हैं। बुद्धि या कुशलताका उपयोग करते हैं और अच्छी योजना बनाते अथवा व्यवस्था करते हैं। तब तो उसके बदलेमें भी उनका कुछ मेहनताना गिना जा सकता है। परन्तु वे लोग तो बड़े मुफ्तखोर होते हैं। उनमें से अधिकतर तो अपनी जमीन पर रहते तब नह। शहरमें रहकर बठ बठे जो आय उन्हें जमीनमें म मिल जाती है उसी पर गुच्छरों उडाते हैं। बहुतान अपनी जमीन कभी देखी भी नह। ऐसोको अनुपास्यत जमादार (एग्सेण्टी लण्डलाड) कहते हैं। जमीनकी अच्छी सभाल होती है या नहीं उस पर काम करनवाक किसान बसा जीवन बिताते हैं उनको और उनके बाल बच्चाको पेट भर अन मिलता है या नहीं और इन किसानोंको उनके साहूकार बसे सताते हैं — इनमें से एक भी बात देखनकी उन्हें चिन्ता नहीं होता। उनमें से बहुतोंको तो अपनी ही सभाल करनकी अकल नहीं होती तब वे किसानोंकी क्या सभाल करण? मुफ्तकी आय मिलनसे वे आलसी बन जाते हैं तथा उडाऊ दुराचारी और

व्यसनी जीवन विताते ह और बजमें डूब रहते ह। उन्हें जो भाडा मिलता है वह हमारे दशमें ता सच्चे अर्थमें अनुपाजित नफा भी नहीं होता। किसानों पर वह एक बोझ ही होता है। अनुपाजित नफा वह तभी कहलाये जब किसानोंको अपनी मजदूरीका पूरा पूरा बट्टा मिल जाय और उसका बाद कुछ बच। किसानोंकी कमाई और ऋणग्रस्त स्थिति यह बताती है कि उन्हें अपना महनतका बदला नहीं मिल पाता। इसीलिए यह भाडा या लगान किसानों पर एक बाध होता है। जमींदार मुफ्तखोर न रहकर अपनी जमीनका उत्पादन बढ़ानके लिए किसानोंके साथ मिलकर काम करें तो इस कामका महनतानका रूपमें उन्हें जरूर कुछ मिल सकता है। परन्तु हम तरह काम करनेको ब तयार न ह। तो जमीन पर उनका स्वामित्व-अधिकार अनुचित है और यह अधिकार उनसे छीन लिया जाना चाहिये ऐसा कहना गलत नहीं होगा। उत्पादनका साधनामें जमीन बहुत बड़ा साधन है और कोई काम किये बिना केवल उस पर स्वामित्व अधिकार रखनेका कारण उसकी आयका घटा हिस्सा बन गये ह। यह भारी सामाजिक और आर्थिक अबाध है। इसीलिए समाजवादी लोग जो यह मानते ह कि उत्पादन सार साधनाका स्वामित्व-अधिकार मिट जाना चाहिये ऐसा कहते ह कि जमीनका स्वामित्व-अधिकार भी मिट जाना चाहिये। गांधीजी भी जब भूमि गांधीकी यह बचन उद्धृत करके कहते ह कि जो खेती करने उमकी जमान होनी चाहिये यही मन्ना था है। फिर भी वे कहते ह कि जमानका यदि अपनी जमीनके मालिक रहना चाहें तो मालिकक कर्तव्य पूरे करके ही वे मालिक रह सकते ह। उन्हें अपनी जायदादक ट्रस्टी बन जाना चाहिये। उन्हें वह अनुपाजित नफा तो नहीं मिलेगा लेकिन ट्रस्टीक नाम उनको मवाका जा उचित महनताना होगा वह मिलेगा। हमारी खेतीका उपजिते लिए किसानोंको विविध प्रकारका महायता और मागतानका जरूरत है। यह काम यदि जमानार अपनी जायदादक ट्रस्टी बनकर करने लगे तो फिर भी वे अपनेको जमीनक मालिक मानें या मनवायें परन्तु इन जमानका आयमें से कुछ भाग उनके अधिकारों ता वे उमी हात्तमें मान जायक जब उन्होंने उसका उत्पादनक काम अपनी मवारा कुछ हिस्सा लिया होगा। इन मवारा उचित महनताना हा उन्हें मिलेगा। परन्तु आज उन्हें जो भाग मिलता है उमने अधिकारों ता वे हैं हा नहीं। हम अनुपाजित नफा या अर्थात् भाडा पर किसानोंकी नजर न्यायिक गार समाजका अधिकार हाना चाहिये।

जमीन उसके उपजाऊपन अथवा दूसरे गुणों, जैसे बाजारवा मजरीर होना बढ़िया मुहल्ला आदि परसे लगाई हुई बाजार कीमत पर किसी मनुष्यने मरीती है। तो उसे जो आय हाती है वह तो उस जमीनमें लगाई हुई पूजाका ब्याज ही होती है। आयाग बढ़नकं साय भा दूगर कारणमि जमीनकी जो अधिक आय होती है और कीमत बढ़ती है उसका लाभ जब बहुत पुरान समयसे जमीनके मालिक बन हुए जमानाका मित्रता है तब अवश्य वह अनुपाजित नफा होता है। जिन धन नफेके कारण जमानका कीमत उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है और बढ़ी हुई कीमत पर जा जमीन खरीन्ता है उसे अनुपाजित लाभ नहीं मिलता।

भाडका अनौचित्य

१७ जमीनो जगला या खानाके मालिकको जो अनुपाजित नफा मिलता है उस पर उचित रूपमें किस हद तक उनका अधिकार माना जा सकता है इस प्रश्नके विचारमें स य नय खरीन्तर बरा होना चाहते हैं। हम भी इस प्रकरणके लिए उह अलग रखकर ब्याजक प्रकरणमें उनका विचार करग। क्योंकि याज खानक वारेमें भी अनुपाजित नफे जसा ही प्रश्न सामन आना है। आर्थिक भाडका या अनुपाजित नफका ऊपर जो पथकरण हमने किया है उससे इतना तो अच्छी तरह मात्रूम हो जाता है कि जिन लागको अनुपाजित नफा मित्रता है उनका इन जमीनो जगला और खानाक मालिक होनेके सिवा उत्पादनके काममें किसी तरहका हाय नहीं होना। उत्पादन बढानके लिए वे कोई श्रम करते हा बढि या कुशलताका उपयोग करते हा और अच्छी याजना बनाते अथवा यत्रस्था करते हा तब तो उसके बदलेमें भा उनका कुछ मेहनताना गिना जा सकता है। परन्तु वे लोग तो बड मुफ्तखोर होत ह। उनमें से अधिकतर तो अपनी जमीन पर रहते तक नहा। शहरमें रहकर बठे बठे जा आय उह जमीनमें से मिल जाती है उसी पर गुलठरें उडाते ह। बहुतान अपनी जमीन कभी देखी भी नहीं होती। एसाको अनुपस्थित जमादान (एक्सेण्टी लण्डनाड) कहते ह। जमीनकी अच्छी सभाल होती है या नहीं उस पर काम करनवाके किसान कसा जीवन विताते ह उनकी और उनके बाल बच्चाको पेट भर अन्न मिलता है या नहीं और इन किसानाको उनके साहूकार कैसे सताते ह — इनमें से एक भी घात देखनकी उह चिन्ता नहीं होती। उनमें से बहतोको तो अपनी ही सभाल करनकी अकल नहीं होती तब वे किसानोकी क्या सभाल करग? मुफ्तकी आय मित्रनसे वे आलसी बन जाते ह तथा उडाऊ दुराचारी और

व्यसनी जीवन बिताते ह और वजमें डूबे रहते ह। उह जो भाग मिलता है वह हमारे देशमें तो सच्च अर्थमें अनुपाजित नफा भी नहा होना। किसाना पर वह एक बोझ ही हाता है। अनुपाजित नफा वह तभी कहलाये जब किसानकी अपनी मजदूराका पूरा पूरा बटला मिल जाय और उसका वाद कुछ बच। किसानका बगाल और ऋणग्रस्त स्थिति यह बतानी है कि उह अपनी मेहनतका बदला नहा मिल पाता। इसीलिए यह भाडा या लगान किसाना पर एक बाध हाता है। जमीदार मुफ्तखोर न रहकर अपनी जमीनका उत्पादन बढानके लिए किसानका साथ मित्रवर काम कर तो इस कामका मेहनतानका रूपमें उह जरूर कुछ मिल सकता है। परन्तु इस तरह काम करनेका ब तयार न हा तो जमीन पर उनका स्वामित्व-अधिकार अनुचित है और यह अधिकार उनस छान लिया जाना चाहिये ऐसा कहना गलत नहा हागा। उत्पादनका साधनामें जमीन बहुत बडा साधन है और काई काम किये बिना केवल उस पर स्वामित्व अधिकार रखनके कारण उसकी आयका बडा हिस्सा य लाग हटप ॐ यह भारा सामाजिक और आर्थिक अन्वय है। इसीलिए समाजवादी गेग जा यह मानत ह कि उत्पादनका सार साधनाका स्वामित्व-अधिकार मिट जाना चाहिये एसा कहत ह कि जमीनका स्वामित्व-अधिकार जल्दीमे जलना मिट जाना चाहिये। गांधीजी भा मव भूमि गापालकी यह बचन उद्धत करके कहत ह कि जो खती करे उसकी जमीन होनी चाहिये यहा मच्छा बाध है। फिर भी ब बटत ह कि जमीदार यदि अपनी जमानके मालिक रहना चाहें ता माणिक बतव्य पूरे करके ही के मालिक रह सकते २। उह अपनी जायतारक ट्रस्टी बन जाना चाहिये। उह वह अनुपाजित नफा ता नही मित्रगा २किन ट्रस्टीके नाते उनकी मवारा जा उचित मेहनताना हागा वह मिलेगा। हमारी खतीकी उन्नतिके लिए किसानाको विविध प्रकारका सहायता और मागन्गनका जरूरत है। यह काम यदि जमीनार अपनी जायतारक ट्रस्टी बनकर करने लगे ता फिर भू ब अपनका जमीनका माणिक मानें या मनवापें परन्तु इन जमानका आयमें क कुछ भी उनके अधिनारा तो के उमी हात्तमें मान जायग २ उन्हाने उसका उत्पादनका काममें अपनी मवारा कुछ हिस्सा लिया हागा। इन मवारा उचित मेहनताना ही उह मित्रगा। परन्तु जाय उह जा भाडा मित्रगा है उमर अधिनारा ता ब ह हो गही। एम अनुपाजित नफा या आर्थिक भाडा पर निगी ध्यनितना नग बनि मार समाजका अधिकार हाता चाहिये।

व्याज

वचन

१ मनुष्यको जो आय होता है उसमें से थोड़ी-बहुत राश बचानकी इच्छा वह रखता ही है। मनुष्य जानता है कि अमुन उमररा वा वह अच्छी तरह काम गहा कर सरेगा और उसकी आय या रोजी आगे-पीछे ब हानवाली है। इसलिए वह बामारी दुधगा और बुडापेमें काम आनर लिए थोडा-बहुत बचाकर रखनना बरिग करला है। बगर मजदूरी और नीररी करनवाल लोगाको ऐसी वचन करनकी ज्याग जरूरत होनी है। परनु पूरापनि और जमागर भी एमा बिवार न करते हा सो बान नहा। जा गग हा हेतुसे वचाना चाहते ह उहे वचन करनके लिए और बिसो बिगप गउचकी जरूरत नही हानी। भविष्यमें परगान न हाना पड इसी हनुमे व वचन करनके लिए प्ररित हाते ह। क्विन जितन गेग वचन करना चाहते ह उनन गम वचन नही कर पाते क्वाकि कुल आबानीक बहुत बड हिस्सेकी दगा तो एमा होनी है कि उनका रोजका गुजारा भी बठिनाईने होता है। इनस ऊपरका कुठ भाग एसा होना है जा काट-कमर करके कुछ बचा सकता है। जीर प्रत्यक समाजम ठठ ऊपरका बग एस लोगाका भी होता है जिहें वचन करनके लिए कोई बिफायत नही करनी पडनी। वे खुले हाथो जितना खच करना चाहते ह करते ह फिर भी उनकी जाय इतना अधिक होनी है कि वे पूरीकी पूरी आय खच नहा कर सकते। एसे गेग जरा भी तगी भोग बिना बहुत बडा वचन कर सकते ह।

२ मनुष्य अपनी वचन घरमें नही रख छुठते। समाजमें उद्योग ध- चलानके लिए जो पूजा चाहिय उसमें वे अपनी वचन गगाते ह। लोग युगसि जो वचन करते आये ह वह सब पूजाके रूपमें इकटठी हो गई है और प्रति दिन जो नई वचन होती जाती है वह उस एकन पूजीमें जुडती जाती है।

३ फिर समाजमें जितना उत्पादन होता है वह सन उपभोगके लिए नही हाता। कुठ उत्पादन तो उपभागकी चीजें बनानेका साधन ही होता है जिस हम उत्पादन-सपत्ति कह चुके ह। यह उत्पादन भी आज तबकी एकन पूजीम जुडता जाता है। जो लोग इस पूजीके मालिक ह और जो नई वचन

करके उसे पूजोक्त रूपमें उपयोग करने के लिए दूसरोंको देने हैं व अपनी पूजोके उपयोगका बन्धा भागत है। इस बन्धका व्याज कहा जाता है। आजकल सारी पूजोका कामत पसके रूपमें गिनी जाती है और गग अपनी उचत भी पसके रूपमें कहें हैं इसलिए व्याजका गिनता पस पर की जाती है।

४ ऐसा भी हाता है कि जिनके पास अनिश्चित पसा रहता है वे हमेशा उस किसी उत्पादक काममें ही नहीं लगता। किसी आत्मोको विवाह या मृत्यु जस सामाजिक प्रसगा पर खच करनेके लिए पसका जरूरत हाती है या अपना घरसूच चलानके लिए पसकी जरूरत हाता है या किसी धनवान आत्मोके उदाऊ गन्धका एग-आराममें लगनके लिए पसकी जरूरत हाती है। इस तरहके काममें खच करनेका भा पसा लिया जाता है। उमता भी पसका मालिक व्याज तो लेता ही है। किसी चीजका मालिक अपनी चीज एक निश्चित समयके लिए दूसरको उपयोग करनेके लिए देता है तब जस यह उमता भाग लेता है वस हा पसा देना समय उमते भाग्य रूपमें पसके उपयोगके बन्धके रूपमें व्याज लिया जाता है। यह पसा उत्पादक वायमें लगता या जनसाधन वायमें या प्रसग व्याज पर पसा देनालेके सामने गीण हाता है।

५ इस तरह पसका व्याज मित्रके कारण जो यकिन पुछ ना बचत कर गनता है वह बचत करके अपन बचाय हुए पसका व्याज पसा करना चाहता है। इस प्रकार एक हक तक व्याज भा बचत करनेकी प्ररणा देनवाडा कारण हा जाता है। कुछ लोग यह विचार भा करते हैं कि इतना पसा बचा कर रखा जाय कि जिगमे गा चलकर व्याजम उनका निवाह हा सग। कुछ लोग अपन बचाय हुए पसका पसके रूपमें व्याज पर न कर उमन मवान या जमीन गरीब लेत हैं। यह इसलिए कि जायगा उनके अधिहारमें रह और उसने भागकी आय भी हा। हम विच्छ प्रररणमें कह चुक हैं कि वास्तवमें इस तरहका भाग व्याज ही है।

बचतको लगानमें लतरे

६ बचतका तात्पर्य अथ पस है कि जो पस हम आज खच कर सकते हैं उस भविष्यमें खच करनेके लिए रग छाडन है। एसा करनेसे गा काम है उनके साथ कुछ गार भा बुड रग है। मभय है आज पसका जो मूल्य है वह भविष्यमें न रग। यह भी हो सकता है कि बचाय हुए पसा व्याज हमने जा मवान या जमीन गरीब लेती हा उसका कामत भविष्यमें पस हो जाय। बस वार अगमाल लाभ ना हा जाता है। मभय है पसका मूल्य

भविष्यमें बट जाय अथवा खरीदे हुए घर या जमीनकी कीमत बढ़ जाय। इसी तरह यह भी संभव है कि जिन उद्योगोंमें पैसा लगाया हो व बूट जाय या और ज्यादा बिक्रित हो जाय। हम तरह बचाव हुए पणों किमी उद्योग या जायदाद आदिमें लगानमें अस्मान लाभ या हानिका संभावना रहती है। बचत करन और उसे लगानमें खतरा ता पूरा पूरा रहता है। पैसा लगानवाला इस तरहका खतरा उठाना है यह व्याजके बचावमें एक जोखन तक है।

७ मनुष्य अपने पासका पैसा लगाने समय व्याजके रूपमें होनाका आयका लाभ और पैसा लगानमें समाया हुआ खतरा — दोनोंका तुलना करने पैसा लगाता है। लगाया हुआ पैसा जब इच्छा हो तब वापस लिया जा सक ता खतरा कम रहता है और पैसा जिसा नियत अवधिके लिए लगाया जाय तो खतरा ज्यादा रहता है। इसमें भी अवधि जितनी लम्बा हागी खतरा उतना ही ज्यादा होगा। मनुष्यके सामन बहुत ज्यादा व्याजका प्रलोभन न हो ता वह दस बरफी अवधिके लिए पैसा उधार देना बजाय पाच ही बरफी लिए पैसा उधार देना पसंद करेगा। लेकिन क्विन 'व्याजके योगमें मनुष्य उम्मी अवधिके लिए पैसा उधार देना है। खतरा और आयका लाभ इन दो चीजोंका विचार करके मनुष्य विभिन्न प्रकारसे अपनी बचतका पैसा लगानका प्ररित होता है। इनमें से मुख्य प्रकार यहा गिनाये जाते ह (१) भवान और जमीन जसी स्थावर जायदाद खरीदनेमें जिसमे भाग मि (२) सराफके यहा अथवा बकके चालू खातेमें (३) सराफके यहा या बकमें नियत अवधिके खातेमें (४) सरकारी ढोन या म्यनिसिपलिटी या लोकल बोर्डके डिबेंचरामें (५) कारखानोंके शेयरामें (६) स्थावर जायदादकी जमानत पर लिया जानवाले उधारमें।

८ पूण सुरक्षितताकी दृष्टिमें देखें तब तो मनुष्यके लिए अधिकसे अधिक सुरक्षित माग यही है कि वह अपना पैसा अपनी पेटी या तिजोरीमें बंद करके रख। इसमें भी चोर डाकुओंका डर ता रहता ही है। परन्तु इस तरह पैसा रखनवाले लाग भी ह। कुछ लोग घरमें पैसा रख छोडनके बजाय चादी-सोन अथवा हीरे मोनीक गहन रखत ह। इसमें अपनी बचतको सुरक्षित रखनक साथ ही अपनी अमीरा दिखानेका मौका भा उठ मिलता है। परन्तु यह प्रथा अब अधिक प्रचलित नहीं है। धनी लोग भी बहुत कीमती गहन नहीं रखत क्योंकि ये लोग भी यह हिसाब तो करते ही ह कि इनमें व्याजका नुकसान होगा। विल्कुल छोटी बचत कर सकनवाले साधारण स्थितिने

लोग सेविंग बककी सुविधाके कारण अपना पसा घरमें रख छोड़नेके बजाय ब्याजके लोभसे सेविंग बकभ रखना ज्यादा पसंद करते ह। इससे पसा चोरी जानेका डर नहीं रहता और याजकी आय भी हाता है।

९. ब्याजकी दरकी दृष्टिसि दखें ता बक अथवा सराफके चातू खानमें कमसे कम याज मिलता है क्यकि बकम या सराफके यहां जमा कराया हुआ पसा हम जब चाहें तब निकाल सकत ह। नियत अवधिका ब्याज स्वभावत ज्यादा होता है। उसमें भी अवधि जितनी लम्बी हाती है याजकी दर उतनी ही ज्यादा मिलती है। सरकारा लोनमें सराफी सातेस ज्यादा ब्याज मिलता है, क्यकि यद्यपि लान बाजारमें जब चाहें तब बिक सरता है फिर भी बहुत धार गन बचने जाने पर बट्टा या कमागन देना पता है। कारखानाके गयरामें यह निश्चित रही होता कि कितना याज मिलगा गयरक भावामें फरकाल होनेकी सभावना रहती ह और सर कारखानाके गयर बाजारमें तुरन्त बिक नहीं सकते। इसलिए हम जब चाह तब उतना पसा नहा मिल सता। इस तरह इन गयरामें पसा लगाना सुरक्षितताकी दृष्टिसि अच्छा नहा माना जाता। परन्तु इसमें यह प्रभेदन होता है कि कारखानका अच्छा नफा हो ता बड डिविडंड मिलते ह और गयरके भाव भा ब ग जाते हैं। स्याजर जायगा पर भी अधिक याज मिलता है परन्तु इसमें भी जब चाह तब पसा निकाल नहा सता। पसा बमूल करनेके लिए मकान बचनका मौका आय ता मकान बेचनेमें देर लगती है साथ ही इसमें कानूनकी विधिया पूरी करना पती ह। सार यह कि खतरा और असुविधा जितनी अधि है उतनी ही ब्याजकी दर अधि मिलता ह।

याजक कारण

१०. अब हम इस प्रश्नका चचा करग कि ब्याज पर पसा लेनवाला मनुष्य किमलिए ब्याज देनेको तयार होता है। एम कुछ उगाहरण होने ह जिनमें लाग सिजूलखर्ची और एग आराम करनेके लिए बज गत ह। एम गग अधिचारी गत ह और उन्हें पसा उधार नना ब ग गनरना काम है। एग गग बिना साच-समय चाह जितना याज देत ह। परन्तु अधिखतर बज अधिख लाभका खानिर समय-युक्तकर बिचा गता ह। हम गग चुन ह कि हर तरहक उत्पादन काममें थमक साथ साथ पूजाका जरूरत हाता हा है। छा पमान पर उत्पादन हा ता पाना पूजा चाहिय और ब ग पमान पर उत्पादन हा ता अधि पूजा चाहिय। पनाका गगत काम थप करनेका इमाका भी हलके लिए गाडाव किए बगाने किए बाजत किए और मोपमके गनर

दैनिक मादूराको मजदूरी चुनानेके लिए पूजोको जहरत पत्नी ही है। तार खानपानको मगीना वगराने लिए पूजोको जहरत पडो है। पूजोकी बहु रताके कारण वे अठ गाथा रग गये ता अन्तमें उन्हें अधिप मुताफा हाता है। परन्तु पूजोके उपयोगकी भा सामा हाता है। उद्योग धधमें पूजो बढ़ाने ही जाय तो एव तास सीमा तत अधिप नफा मित्रगा परन्तु वह सीमा पार करनके बाद पूजो बढ़ानस अधिप नफा नगी हाता। एता ही गराता है कि पूजाका ता यात देता पड उगम भा नफा कम मित्र। इसलिये अमुक मजिठ पर पहुच चुनने बाद पूजो गगानता सामा आ जाना है। उगने जाग पूजाकी माग नहीं रानी। जत तत यातकी रकी अनेगा नफा प्रतिगत अधिप हा तत तत उत्पात्ता जाग याज पर पना रने ह। इनमे आग व पसा लेना बन् कर देत ह।

११ जो लोग सरापाने महा या बरामें अपना पसा अमानने कामें याजस रखत ह या सरकारी लानमें अथवा म्युनिसिपल डिबन्वगमें पसा लगाते ह, उनने वारेमें यह कहा जा सगता है कि उह जो ब्याज मिलता है वह पसे पर उनक स्वामित्व-अधिकारके भावके रूपमें मित्रता है। लकिन जो लोग उद्योगमें पसा लगाते ह वे उद्योगमें होनवाले नफका भी कुछ हिस्सा लेना चाहते ह। और इसलिये उन्हें गतरे भा अधिक उगने पडने हैं। सामा यत एसा कहा जाता है कि लिमिटेड कपनियामे शयर रखावालाको याज मिलता है लेकिन सच पूछा जाय तो उसमें भाडवा तत्व कम और नफका तत्व ही अधिप हाता है।

१२ हमार साहूकार किमानाको जो पसा उधार देत ह उसमें एक ओर साहूकारको सतरा ज्याग होता है और दूसरी ओर किसानकी गरज भारी होती है इसलिए उस याजमें भी नफका तत्व अधिक हाता है। किसानकी गरोवाको दखें तो उस पसा उधार देनमें कुछ भा सुरगिनता नरा भानी जा सकती। लेकिन तब तक किसानके पाम उसकी मालिकाकी थोकी भी जमीन होती है तत तक साहूकारका अपने पसेकी सुरगिनता मात्रुम होती है और किमानकी गरजका लाभ उठाकर वह उसे चूस सकता है इसलिए साहूकार उसे पसा उधार देता रहता है। इसके सिवा कुछ असामी कच्चे निकल जाय और उनका पसा बसूल न हो सव तो इसकी पूर्तिके लिए साहूकार सब किसानसे ब्याजकी भारी दर रना है, और वारह महीनमे जितना नबसान रहे वह निकालकर गुढ याज अमुक प्रतिगत मिला एसा हिस्साव वह लगा लेता है।

१३ इतन विवचनम यह स्पष्ट समझमें आ जायगा कि पसका ब्याज इसलिए मित्रता है कि पूजीने रूपमें पसकी जितनी जरूरत है अमात् पूजीकी जितनी माग होती है उसकी तुलनामें पूजीनी यानी वचन पसकी तगी हानी है। हर दाम उद्योग में चरानर लिए और उनका विनास करनेके लिए पूजीका जरूरत बढ़ता जाती है। जोर इसीलिए उस देाके जयवा परलगाव पसका वचन करनेवाक गगानी ब्याज मित्रता है।

याज्ञनी सीमासा

१४ जगतने लगभग सभी धर्मों में धर्मास्त्रान याज्ञनी मित्र का है। इस्लाममें याज्ञ रना हराम माना गया है और याज्ञक धधवा विाप रूपम नियध किया गया है। हिंदू धर्मास्त्रामें एमा वधन नहा है कि ब्याज मित्रा ही न जाय। फिर भी समाजमें एक मान जानवाल ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्णोंके लिए तो एमा कठिन नियम था ही कि व याज्ञना धवा न कर। स्मृतियामें एम वचन मित्रने है कि याज्ञ-वट्टका धधा करना ब्राह्मणने लिए महापाप है। पुराणम मध्यकाठमें याज्ञ-वट्टका धधा नीचा समझा जाता था। इसका मुख्य कारण यह माझूम होता है कि उस जमानमें उत्पादन अधिकतर छोट पमान पर होता था और इसीलिए उद्योग धधाने लिए बाजकी तरह बटा पूजाका जरूरत नहा पन्ता थी। अत पसा उधार लनकी घटनाए किमा अनमाच मरटव समय अयना विाप कठिनाईक जयमर पर ही होता था। एम गमय उधार मित्र हुए पसका याज्ञ रना एक-अस्त मनुष्यकी कठिनाईका अनुचित गम उठावक बराबर समया जाता था। जित्त धानना हमें जरूरत न हो उसका दूसरेको उपयोग करत रना एक नतिम बनव्य गमया जाता था। इसक वजाय पसका याज्ञ मागनमें एक प्रसारका नाचना और धन्याय मागा जाता था। इतन मित्रा युगामें उधाराना धधा बन्ना गम करत थ। इसा लग यहूतियाका अपन कौमा सुमन ता मानत ही थ। एम पर रंगार्द लोग ही अधिकतर उनक कजगर जाने थ इसीलिए भा यक धधा पूजाकी दुष्टिग रना जान लगा। आज ना गहरोंमें जा गता अमारक आवासा जोर दुराचारी गवारा भारी ब्याज पर पसा उधार रनका धधा करत ह या मित्र भजदूग तथा भगी जस वम बननसा म्पनिमित्तप नोचगना एम पर आना या गगाना माग्वारी ब्याज एकर पसा उधार रना धधा करते ह या गावामें रिमानारी लचार म्पनिमता एम उगार उहें भारी म्याग पर पसा उधार देकर उनका भहंतता पसा किया हवा

मजदूरी

मजदूरीका व्यापक अर्थ

१ संपत्तिके उत्पादनमें मानव-श्रमका योग्य बड़ा हाथ हाता है। अब हम यह विचार करेंगे कि यह श्रम करनेवाला मजदूरका उनका श्रमकें क्या मिलाता है और क्या मिलाता पात्रिय। मानव-श्रममें हर तरफ़री महनतको गिन किया जाता है। फिर भूत यह महनत गिके गाराकी हा या बुद्धि चातुयकी हा। एत महनतके गिके गिभान रूपमें पूर-सयाराका गाररत हो या केवल यताया हुआ काम हा करता पत यह महनत कगाराकी हा या यत्रनुगत इजीनियरकी हो। एत प्रकार ककीका डॉक्टरा अलग अलग सरकारा विभागान अधिकारिया कारगाना और व्यापारिक पत्रियाके मनजरा आदि सबकी महनत इसमें गामिठ कर गी गई है। और इन सबका अपना अपनी महनतके बन्धमें गी राजी यतन फीस आदि मिलत ह उन सबका महनताना या मजदूरी ही माना गया है।

२ जमीन आदि बुदरती साधन-संपत्ति और भूतकायन मानव-श्रमका उत्पादन पूजीके माटिकाको जसे उत्पादनमें स भाड और "याजक" रूपमें बाला मिलाता है वसे ही श्रम या महनतके माटिकाका उनकी राजी यतन या फासके रूपमें उनके श्रमका बदला मिलाता है। केकिन उत्पादनके जगाने रूपमें एक आर जमीन और पूजी तथा दूसरी और मजदूर — इन दोम बहुत फक है। पहली दो चीजें निर्जीव ह। उनका उपयोग करना या न करना हमारी इच्छाकी बात है। हम दख चुके ह कि उनके उपयोगके बन्धमें जो भाडा या "याज" किया जाता है उसमें अयाय भरत है। इसके सिवा "याज" या भाडा बिलकुल ही न दिया जाय तो भी काम चल सकता है। परन्तु मजदूरको तो जीना है। वह आर्थिक उत्पादनमें मन्त करे या न कर उस खाना तो चाहिये ही। परन्तु जब वह आर्थिक उत्पादनमें हाथ घटाता है तब तो यह देखना समाजका कतय हो जाता है कि उसे जीवनकी जरूरतें पूरी करने लायक मेहनताना अधिकारपूर्वक मिल जाय। भाडा या ब्याज घटते घटते गूय तक पहुच सकता है परन्तु मनुष्यको मिलावानी मजदूरी उसके जीवन निवाहके लिए आवश्यक अल्पतम रकमसे नाचे नहीं जा सकती।

श्रम बाजारकी वस्तु माना जा सकता है?

५. इस बातका विचार करत समय नि मजदूरीका दर किस तरह तय की जाता है और यह दर कितना होना चाहिये अथवा म्निमाने दूसरा सब बाजारकी तरह श्रमकी भा बाजारका बाज माना है। व कहते हैं कि दूसरी बाजारकी वामत जम माग और पूर्णिक एन-दूसर पर पन्ववाल अतरामे निश्चित होना है वस श्रमका दर भा इमा टगम निश्चित होना है। परन्तु श्रमको बाजारका चीज मानना हो ता ना उग नजीव प्राणाम अलग नहा विया जा सकता है म्नि यह ध्यानम रचना चाहिये कि वह दूसरा बाजारका बाजमे कई बातमें भिन्न हो जाता है। एक ता बाजारकी चीजका उत्पादन उपभागन लिए अथवा मनुष्यका अन्तर्त पूरा करने के लिए होना है। मनुष्य के लिए ऐसा तहा कहा जा सकता है। मनुष्यका आगामे जा वमा या वृद्धि होना है उमर पाछ समान उपभागना या समाजका जहरताका हनु नहा होना। दूसरा बात यह है कि बाजारका बाज एक बार उत्पन्न हुई कि यह मनुष्यकी जहरत पूरा करनेका काम अपन-आप करता है। मनुष्यका यह बात नहा है। वह काम कर या न कर और क्या काम कर यह उसका इच्छा पर निर्भर रहता है। म्निके सिवा उन निर्जीव बाजारका आराम तहा चाहिये जो न वे विरोध करत रचना पर जाता है। मनुष्य ता आगामे के लिए छुट्टी चाहता है और अपन अधिकाराके लिए रचना है। उमर अछा काम रना हो तो उमने साथ सम्भावपूग और मानवताका व्यवहार भा रचना हो चाहिये। तागरा बात यह है कि निर्जीव वस्तुका खुशका अन्तर्त नहा पन्ता। मनुष्यका ता अपन निवाह के लिए श्रम करना हो पन्ता है। पूजापतिया और मजदूरीका एक-दूसरका आवश्यकता जरूर होती है परन्तु पूजापति अपना कारणाना बत करके रम्ब समय तक बटा रह सकता है। साधन और मगाने पढा रचना हैं व बाइ इगडा नहा करता और मानका भा नहा मागना। पूजापतिक पास अपना जमा विया हुआ धन होना है। उमर वह अपना निवाह रम्ब समय तक आमानाम कर सकता है। परन्तु मजदूरके पास का मग्रह नहा होना इमके लिए पूजापतिके जम काम लेनका जितनी गरज होना है उमर आग गरत मजदूरका काम जुटानकी होना है। चौथा बात यह है कि दूसरा बाजार बाजारका उनका स्वामा जय चाह तत्र बच सकता है और दग रचनामें भन्न सकता है। मजदूर भा अपनी श्रमकित या महनतका स्वामा करत है परन्तु वह अपनी महनतका अपनम अन्ग नग कर सकता है। बाजारकी चीजका

७ इस वास्तव की वस्तु भूल यह है कि इसमें एका मात्र किया गया है कि मजदूरी पहले निर्दिष्ट की हुई राशि में ग हा चुका जाय। परन्तु स्थिति इसमें उल्टी है। यह बात यह है कि उत्पन्न हुए मात्र के मान मात्र का कीमत से ही। जम भाग गया उस जाति अनाम तो उत्पन्न हुए मात्र का कीमतमें ग ही निर्दिष्ट है यह ही मजदूरी भा निर्दिष्टा है। ता पूजा पहले गगाद जाती है वह उत्पन्न होयागी आपना भागान हा गगाद जाता है। और पूजा गगानम भा निर्दिष्टता जमा कुछ नया जाना। जम मजदूरीकी सख्या घटाई-बटाई ता गगना है वम पूजा भी घटाई-बटाई ता सखनी है। इसक सिवा इस वास्तवमें यह बात भा भुक्त ता जाना है कि मजदूर अपन श्रमके उत्पन्नम कमा-बगी करके मजदूरीमें बाटी जानवाग रममें कमी-बगी कर सकत है।

उत्पादनके अनुसार मजदूरीकी दर

८ इस परम हम एक दूसरे वास्तव पर आन है। यह यह है कि मजदूरीकी दर मजदूरों द्वारा किये हुए उत्पादन पर निर्भर करता है। मजदूरोंकी मजदूरी इसीलिए दी जाती है कि वे अपने श्रमसे एका चीज उत्पन्न करत ह जिनकी बाजारमें कीमत मिलता है। जम और सब चीजोंका मूल्य उनका अनिम उपयोगिता परम गगाया जाता है वस ही श्रमका मूल्य भा इस परम गगाया जाता है कि अनिम मजदूर उत्पादनमें कितनी अतिम वृद्धि करता है। यह अनिम वृद्धि क्या है श्रम हम एक उत्साहण द्वारा स्पष्ट करेग। मान लीजिये कि जमान जितनी चाहिये उतनी पनी है। तिस जमीन जानती हो वह जोत सकता है। इस जमानका कुछ भी भाग नहा दना पन्ता और इस जमीन पर जा श्रम करगा उस इसम पदा हुआ सारा मात्र अपनी मजदूरीके रूपमें मिलेगा। जब इस जमीनमें एकसे अधिक जान्मी काम कर ता संभव है कि एक जान्मा अपने श्रमसे जितनी फल पदा कर सकता है उसकी अपेक्षा अधिक जान्मियाके श्रमके कारण अधिक फल पदा हो। क्याकि जमीन तो बड़ी मात्रामें है ही इसलिए सहयोगसे काम करतसे जल्दा फल मिल सकता है। ज्वेल जान्मीका उससे श्रमका जो फल मिलता उसके बजाय जनक मनुष्य सहयोगसे काम करें तो प्रत्येकके हिस्सेमें अधिक मात्रा जायगा। पर इस तरह मजदूरोंकी सख्या मर्यादासे अधिक बनाते जानमें लाभ नहीं क्योंकि एक खास मर्यादा पार कर जानने वास्तव घटते उत्पादनका नियम लागू हो जायगा और मजदूरोंकी सख्या जितनी बटाई जायगी उतना ही लाभ घटता जायगा। और

एसा करत करत एव स्थिति एसा आवगा जस नय मजदूराका लगानम मालमें त्रिस्तुत वद्धि नहा टागी। एकिन इस हए तर काई मजदूराका बटाता नहा जाना कि अधिन मजदूरान कामम लगनम थोडा भा मात्र न वए क्वाकि मनुष्य जा श्रम करता ह वह दमालिग करता है कि कुछ न कुछ लाभ हा। अगर अधिन जान्मियाके श्रमन कुछ भा लाभ न हाना हा ता फिर अधिन जान्मियाका श्रम किमलिए करना चाहिये? इस परम दाना समयमें आ जायगा कि किमा भा काममें मजदूरानी मख्या बढान जानम एव समय एनी भियति आती है कि अमुक मख्याम आग यति मख्या बढाने गाय ता उत्पादनका मात्रामें जरा भा वद्धि नहा टागी। इस निरम्म अनिखिन मजदूरक पण्डवा मजदूर एसा है जिमके कामम उत्पादनमें थानी वद्धि ता भा हागा ह। एम जतिम उपयोग मजदूरक श्रमम हानवाग वद्धिका जतिम वृद्धि कहा जाता ह। इस मजदूरका हम उत्पादनमें अतिम भाग ननवाग अतिम मजदूर कहेंगे। इससे बावु मजदूरक श्रमम उत्पादनमें कुछ भी वद्धि नहा टागी। अब मान गजिय कि यह जतिम वद्धि हान तर किमा उत्पादन बायम मजदूराका गगाया जाता है। एम उत्पादनमें यति और किमा तरकरा जममानता नहा हा और हर मजदूरन उम सौगा हुआ काम एगसा कुण्ठनाम किया हा ता सारे उत्पादन-बायम उम अतिम मजदूरन अय सस मजदूरान बराबर ही श्रम या काम किया हागा एगलिए उम जतिम मजदूरका भा अय मजदूरान बराबर हा मन्ताना मिग्या। यह मन्ताना उतना ग गिना जायगा जितना अतिम मजदूर द्वारा उत्पादनमें वा गइ जतिम वद्धिका जयवा अतिम उत्पादनका मूल्य हागा।

० एमार गाब हुए उत्पादनम हमन खताना धभा लिया है। पण्डु किनी और धधवा बढाना कर ता भी परिणाम यह निकरगा। एकिन एख व्यवहारम एम ता जम मजदूराना मख्या निश्चित नहा हाना वन जमान जाए पूजाका मात्रा नी निश्चित नहा जाता। इगलिए उत्पादनक कामम बढाने इतना ग विचार नहा होना कि अधिन एन ज्यादा वा कम मजदूराना लगानमें ह या नहा बलि यह भा विचार करना पत्रा है कि उत्पादनके दूमरे अग जम जमान और पजा बढ़ाये जाय या घटाये जाय। यनामें कभी कभा एसा हाना है कि किनी निश्चित जमान पर अधिन मजदूर लगानक बजाय अधिन जमीनमें मनी करान मिगय लाभ हागा है। तेर उत्पादनमें अधिन उत्पादनका मिया जमानके भातर यानमें जाना ह। बारनानामें भा मजदूराना तरका यदानक बजाय यानमें बढाने अधिन

राम हानकी संभावना है। फिर भी इस नियममें थोड़ा साटाटा उपात्ती क्याकि देला यह जाता है कि मजदूरीना दर तय गानमें उत्पादन-वायमें गग हुए सार मजदूरराम स अतम गगाय एए मजदूरराम कारण तितना उत्पादन बना हागा उतन उत्पादनरा ही निगायन हाय हाता है।

जीवन निर्वाहका स्तर निश्चित करनकी जरूरत

१० जय प्रगा यह पदा होता है कि किगी भा उत्पादन-वायम अतिम मजदूर द्वारा किय हुए कामकी कीमतक बराबर मजदूररामा दर दनम मजदूर काम पर आनका तयार हाग या नही ? इसरा आधार मजदूररामी वमा जीर बहुताया पर रहता है। जीर मजदूररामा वमी और बनुतायतरा आधार इस बात पर रहता है कि मजदूररामा उत्पादन-सच — अयात उमक और उसक कुटम्बक निवाहका सच — उस मिठ जाता है या नही। इम तरह हम पुन जावन निवाहक स्तर पर आत ह। कित्ता भी सम्य समागमें मजदूरीकी दर इतनी तो हागी ही चाहिय जिसस सामाय मनुष्यकी उचित जरूरतें पूरी हो जाय। उचित जरूरतें उन्हें कहना चाहिय कि जो उसके योग्य विनासक लिए आवश्यक हो। इम स्तर या स्ण्डन अनुसार मजदूरक जीवन निर्वाहना जा खच आय उतनी कीमत उस वृद्धिकी मिलना चाहिय जा अतिम मजदूरन उत्पादनम की हो। अतिम वृद्धिकी कीमत और जीवन निर्वाहक हमारे निश्चित किय हए स्तरक अनुमार सच — एन दो चीनाका मठ बठ जाय तो मजदूरको उचित दर मिठ। परतु आज ता उत्पादनकी अतिम वृद्धिकी बाजारमें जो कीमत मिलती है उसी परसे मजदूरीकी दर निश्चित होती है। मजदूरका वनाई हुई चीजकी बाजारमें मिठनवाली कीमतका अधिक उल्लवान तत्व माना जाता ह जीर उसके आधार पर मजदूरीकी जा दर मिठे उस दरके अनुसार मजदूरका अपन रहन सहनका स्तर बनाना चाहिये एसा कहा जाता है। इसके बजाय जीवन निवाहका स्तर निश्चित करके उसके अनुसार कमसे कम अमुक मजदूरी प्रत्येक मजदूरको दी जानी चाहिय।

११ एसा भी होता ह कि बाजार-कामत अधिक मिलन पर भी उसका लाभ भाड गान और नफक रूपम जमातर पजीपति और प्रबधक त्रेण हृष्य तेते ह और मजदूररामा उसके उचित और सुघन जीवन निवाहक गायक भी नही मिलता। इसका कारण यही है कि उत्पादनके सारे जगाके अलग अलग मानिकाके बीचकी स्पधाम मजदूर कमजोर पडता ह।

मजदूरीकी ऊँची दरका स्पष्टीकरण

१० परन्तु इन्ग्लैण्ड जोर अमराका जैसे जगामें ता मजदूराना जे काफा ऊँचा ह जोर रहन-महनका उनका स्तर भा अञ्ज है। इमका कारण हम अभी यना चवे ह कि इन्ग्लैण्ड दूसर दगाना गापण करके बहुत धनी बना हुआ दग है आर अमराकाम उनका बिबुट कुटलता साधन-मपत्तिव प्रमाणमें आगानी कम ह। फिर भा इन दाना दगामें दूसर मटायुद्धसे पहलू काफा बबारा थी। इसक सिवा य दाना जग अपना माल दूसर दगाना बाजारमें बचकर वहाकी आगानामें भा बबारी पना करत थ। व मजदूरीकी जग ज्याग न मरत ह और मजदूराना रहन-महनका स्तर भी ऊँचा रण सवत ह। परन्तु जगार दगामें या अय दगामें बबारा फल कर ही व एना कर मरत ह।

१ इम बानूनका अच्छी तरह समझनके लिए हमें आजका परिस्थि तिया समझना पना। अब पूजापतिया जोर मादूराना बीच अनिधितत स्पधा नहा रहा। मजदूराना प्रबल मध बन गय ह जोर व अपन-अपन जग राय तय पर कुछ न कुछ जवर डाग मर ह तिमर फलमरुप हर मन्व मान जानवाग रायमें मजदूराना हिनका रक्षा करतवाल धाग-बहुत बानून भी बन न। जग जानन पगमें हर दगामें बानावरण उपन्न हा गया ह कि मजदूराना इतना मादूरी जगर मिगना चाहिय जितत व रहन-महनका अमुर स्तर बायम रण मके और बामन घट भा जमुव निश्चित घनाग अधिक कभी न रण जाय। फिर भा अर्थोपादनक बाममें धागबाल ता पूजा पतियाका ही है। गायनम पूजापतियाका प्रमान अधिक है। अर्थोपादनका मारा प्राति पूजापना जगना है। जगलिए जर जगना ध्यान जगा तरफ राना ह कि उत्पादन कम यर आर माग ज्यागा ज्याग मन्ता कम बन। फिर जग जा अर्थोपादनम नीतिर गतिरता उत्पाग बाना जाना है वम कम मानन गतिरता जगल कम हाता जाना है। अन्वता भीतिर गतिरता उत्पागग और यगामें जिनातिन हावाग मुवारम ता कुछ काम जर जर न जा मानन-गतिरता पना कभा नहा हा मर व जोर अरना मानन गतिरता जाज भा नग हा मरत। जकिन एम बामामें भी जा मानन गतिरता हा मरत ह भीतिर गतिरता जगना बरता जा रण न जगलिए मानन गतिरता जगति मगुप्य बजार हात जा र ह। जिन जगाना-इजान — अधान जगाना बामन जहा जग अधिक मध हाता जगना पना जगाना मर घनाग — रण जाना है उगन कारण भी एमा युतिया

सोजी जा रही है कि मजदूराकी मस्या ता घट जाय, परन्तु काम उतारा उनना ही है। रोगाणुजना कुशाग्रता मिया जाय ता उमम मगानाता मुधार एत तरह मिया जा सकता है कि मजदूराकी जरूरत कम पर जोर काम अधिक आता है। इसमें फिर यह भी विचार किया जाता है कि कच्चे मालका अधिकम अधिक उपयोग किम तरह किया जाय और यह यात्रा भी की जाता है कि मजदूरका मिसा तरहका नुकसान पट्टासय किया जाय और यका कर परैमान मिय मिसा उगत अधिकम अधिक काम किम तरह किया जाय। कुशल पूजापतिका ध्यान मजदूरीका दर घटानका और विस्तृत गहा राना बल्वि मजदूरा अधिक उत्पादन करानका और राना है। इसलिए क अधिक तर देकर भा कुशाग्र मजदूराका काममें रगाना ज्याना परान कराना है। परन्तु कम मजदूरा पर मजदूर रकनकी प्रतिस्पधा राना था। अब अधिक मजदूरा देकर भा कुशाग्र मजदूर जुटानकी प्रतिस्पधा हानी है। पूजीपति यात्रा मजदूरी रानवा मजदूरका परान नका करता बल्वि अधिक काम करनवा अधिक कुशाग्र मजदूरका परान करता है। इसलिए आज मजदूराका दर घनी नहा है उन्त यह कहा जा सकता है कि मजदूरीकी दर दिनादिना बन्ना जाता है। किमन भौतिक शक्तिका ज्या ज्या अधिक उपयोग किया जाता है त्या त्या पहलसे मजदूराकी जरूरत कम होनी जाती है। इसलिए मजदूराका दर घटनक बन्याय मजदूराकी माग घटा है। अधिक कुशल मजदूराका ही काम मिलता है और बाकाको बकार रहना पन्ता है।

१४ वकारीक कारण रोगामें असनोप न फल इसके लिए इन्तर्ण जोर अमरीका जस धनी देगामें बकार मजदूराका वकारीना भत्ता (डाल) दिया जाता है। वकारका भत्ता लनवाक मजदूर जनता पर वाझ और सरकारक आश्रित बनकर रहत है इसलिए उनका स्वाभिमान ता नष्ट हाना ही है इसमें सिवा कोई काम किय बिना आलसी हाकर भत्ता लत रहनस उनमें जोर भी कई बुराइया पदा हो जाती है। इन वकार मजदूराका भार तो सारे करानताआ पर पडता है जब कि जिन परिस्थितियाके कारण यह बेकारी पदा होता है उसका गम अकेले पूजीपति ही उठाते है। इसके सिवा य वकारा भत्ता धनी देग ही दे सकते है। वकारी भत्तक सिवा एत घना देगामें मजदूराका अय कई प्रकारकी राहत भी मिलती है। किमन यह ता इन देगान दूसर देगाके उचाग वधाका विकास रोककर या विकसित धधाको नष्ट करके वहा बगागी और वकारी पदा करके तथा कई तरहस उन देगाका शोषण करक जो धन बटोरा है उसमें स अपने यहाके मजदूराका दिया हुआ कुछ भाग जसा ही

है। सार यह कि मजदूराकी तर एम धनी कामों और दूसर दगाक बुद्ध कारखानामें भी जरूर बनी है एकिन अद्यतन यथावा कारखानाके सिवा दूसर धधामें काम तीर पर मती और हाथ-बागीगराम धधामें, ता तर घटी ही ह। हमार दगामें खेता और दूसर हाथ उद्यागामें मजदूराका मुस्किराम पट भरन जितना ना नहा मिगता।

दियाई दती ऊची दर और सच्ची दर

१५ राज और बन्दकी राजका तर जरूर अधिक लियाइ देता है एकिन उन्हें स्थायी काम नहा मिगता इमकिण वास्तवमें ता उनकी तर कम हा है। किमा आत्मोता प्रतिनिनि डेड रुपया मिगता हा ता हमारा एमा नहीं हाता कि उम महानमें ४५ २० मिग हा जात ह। क्यकि महानमें जिनन निन उसे काम मिगता ह उनन ता निन डर रुपया मिगता है और हमार गहरामें रात और बरब कामका औगन निगामें ता महानम काम दिन भी उन्हें मुस्किराम काम मिगता हागा।

१६ एमर सिना उम मजदूरा अधिक मिगता है या कम इगारा अनु मान एम परम गगाना ना ठार नहा कि प्रतिनिनि उम जिनन रुपय मिगन ह। मान गजिय कि किमा आत्मका बतमान (द्वार) मुद्धम पहल बारह आने राज मिगन थ जार जाज उस रुपया या डड रुपया राज मिगता ह ता ए परम य नहा वहा ना मकता कि उमरा सच्चा दर बग है। क्यकि एम मजदूरो तताम प्रतिगत या सौ प्रतिगत बग ह वहा मजदूरन उपवागन गिण अनाज आनि जा पाणें चाहिय उनन भागमें एमो या टाद मो प्रतिगत तर मुद्धि हुई है। मजदूराकी सच्चा तर ता इग परम आका जानी चाहिय कि मजदूरका जा काम मिगन ह उनका गरीर गकिन वितना है। आज हमार मजदूराका मिग उद्यागामें महगार् भत्ता जरूर मिगता है परन्तु दूार बटुतम उद्याग धधामें एम महगार् भत्त नहा मिगन। मजदूरीका तर घाण-बटुन जरूर बढ़ा है, परन्तु मन्गाइय अनुपातमें यह नहा बनी। एमर अगवा उम तर पर म्याया काम र्नी मिगता। आज यतामें मजदूराको म्याया राज मिगता हागा। परन्तु उह बारका महान इम तर पर वीर काम देना है ?

१७ गय वाताका एमरा एम एव आर अपता गकिन तथा श्रम बरावाय मजदूर है और दूगरा आर गगता श्रम गराएनरा कारखानार जमानर आनि ह। इत दा पगामें मामामन मजदूराका पग बरन कमजार है। वर जपाना जीर गगाना है। मजदूराका एम वाताका कुछ पान नहा हाता कि बीनम उद्याग या धधमें मिगता कामा हाता है। वर जच्ची तर पानर गिए

राह देगता बटा नही रह गवा कयाकि उमवा पट तो गावा मागता हा है। मनीा और जीाग बवार प गह ता व एगम त्रिग ही जा त्रिन मजदूर आल्सा रह ता बहु भूगा मरता है। ओर मजदूर भूगा मर ता इमर्षी बाग्यानगर या जमानखा पाइ चिता तहा हाती। व अपन गाधनाया रक्षारी चिता वरत ह। मान त्रिग जाय या टूट जाय ता तई एगम उन्ह पसा रच वगना पन्ता है परन्तु गादूर धामार प जाय या मर जाय तो इसकी उन्ह वार् परवाह नहा हाती। कयाकि एव मजदूरकी जगह दूगरा मजदूर गनमें उन्हें बुछ विगप रच नहा वरता पन्ता। राजा पानकी उम्मीवारी वरनवा मजदूराना ताना राग लगा हा रहता है।

सबको काम पान और अच्छी तरह जीनेवा अधिकार

१८ सार समाजके स्वास्थ्यकी दृष्टिग दनें तो यह स्थिति बनी ही घुरा है। सुखी और स्वस्थ समाजमें

(१) प्रत्येक वयस्व स्त्री-पुरुषको उगव गपन समाजापयागा काम जरूर मिलना चाहिये।

(२) स्वस्थ सुखड और प्रगतिशील जीवन निवाहवा एव खास स्तर हमें निश्चित करना चाहिये (हा मचना है कि यह स्तर गैर और कान्ठ जनमार अलग अलग हा) और जा आत्मी अपना गकिन अनुसार समाजकी भगईका काम करे उस कमसे कम इस स्तरके अनुसार जीवन बिता सवन जितना मेहनताना ता मिलना ही चाहिये।

ऊचेसे ऊचे पारिश्रमिककी मर्यादा निश्चित की जाय

१९ यहां तक हमने मामूली मजदूरोकी मजदूरीकी दरका विचार किया। हम यह कहते ह कि उह कमसे कम अमुक पारिश्रमिक तो मिलना ही चाहिये। इससे साथ यह भी निश्चित हानकी जरूरत है कि अधिकसे अधिक पारिश्रमिक भी एव खास सीमासे अधिक नही होना चाहिये। दूगर महायुद्धसे पहल मजदूरी करनवालेको आठ जाने भी नही मिलते थ। चरसा-सघन यह तय किया कि वारीगरको कमसे कम तीन जान ता देन ही चाहिये। उधर कुछ वकीला और डाक्टरकी फीस राजकी हजार रुपय हाती है या पराधान भारतमें वाक्सरायको बीस हजार रुपयेका भासिक वतन मिलता था जार उनकी कायवारिणी सभाके मेम्बराको पाच या छह हजार रुपये वेतन मिलता रहा होगा। यापार उद्योगमें तो गोग लाखो रुपये वमाते ह। अलग अलग धध करनवागके पारिश्रमिकमें जो बहुत गडा अन्तर है उसके कारण

प्रत्येक समाजम घोर आर्थिक असमानता पाई जाती है और उस अमानताका फलस्वरूप बहुतमी बुराइया पदा हाती ह। जस जावन निवाहका स्तर एक सास सीमास नाचा हानस जीवनके विनामम बाधा पन्ती है बस ही जीवन निर्वाहका स्तर मर्यादान अधिक ऊचा हो ता वह भा जीवनक विकासम रुकावट बन जाता है।

२ जिह बहुत बडा पारिश्रमिक मिलता है वे इसक बचावम अनक दानों पेश करत ह। वकील या डाक्टर यह कहत ह कि हमें अपना पना साखनमें बहुत बप रग और बहुत खच हुआ आर उसक बान भी इम घधम सब सफल नही होत। हममें बढि चातुय विणप होनन कारण हमें अधिक पारिश्रमिक मिलता ह। सरकारी अधिकारी कहते ह कि अपने कायकी विणप योग्यता प्राप्त करनके लिए हमें भी बहुत समय लगाता पना है और रुपया खच करना पडा है और बानमें भी हमें काफी महनत करनी पटा है। इसक मिवा हम बहुत बनी जिम्मेदारी अपन निर नेत ह इसलिए हमें अधिक पारिश्रमिक मिलना चाहिय। कुछ लोग कहते ह कि हम बहुत विवाम और गतरके काम करते ह और समाजक लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हाने ह हमारे एव एक कामस समाजकी सारी मूरत बन जाता है इसलिए हमें अधिक पारिश्रमिक मिलना चाहिय। मुख्यत एसी दलील नई मानन नई दवाए और नये आविष्कार आदि ग्राजनवाके दते ह। व यह दावा करत ह कि हमार काम नतन निरा और अभुन हान ह कि और किसाग हा हा नहा मन्त। कविया चित्रकार और दूसर कलाकाराना भी एसा दावा हाता है। य दूसरा बात हे कि आकर्षका पूजीवाना अच-व्ययस्यामें एन मगाधका और कलाकाराना हमगा ही बहुत नहा मन्ता। निमा यन्तुव मगाधरन उम यन्तुव वाग्गाननन बन अधिक बन्त ह और बरिया तथा चित्रकाराने बनिस्वा उाक प्रसाग वरुन जधिव बन्ताने ह।

२१ इन सब बड पारिश्रमिक मागनवागन कहा जा सन्ता ह कि आप बड पारिश्रमिक लेनर ममानमें जा अनमानता पना करते हैं व ठीक नहा ह। आपका काम यदि समाजक लिए बन्त लाभकारी ह और दूसर विगात नहा हा मान हा ता उनक बन्तमें आपना ममानमें बाणि और प्रतिष्ठा मिन्ता है। क्या यह मुआयजा घाग है कि आपना बन्त अधिक घन भा माता चाहिय? भाय हा, आपक काम एन हान ह कि एन कामान ह आन आपका मिल जाता ह। आपना बनत वाग्गना एनना अधिक रगन हाता है कि घनके रूपमें उमसा बन्त आना न मिन्ता ना भा एन आपना

जो आनन्द मित्रता है उसका मागिर भी आप यह काम त्रिय बिना नहीं कर सकेंगे। क्या समाधान और क्याकार धारा त्रिण अपना काम कर रहा है? बड़े राजनीतिक पुण्य जा सारे दाना राजनाज पणन हू यति वन वन न मित्र ता क्या अपना राजनानिा काम दान ? जा महाविद्वान है और सच्चा विचारसिा भा है वन क्या वन वनला मित्रता तभी पणनेका काम करणा या पुस्तके त्रियणा ? एग विणप प्रवारन कायेति त्रिए जिनमें अनाया गकिनकी जरूरत हाता है बडे बड पारिश्रमिा दान और मागाका जा प्रया पन गइ हू वह पूजीवाता जय-व्यवस्थाता ही एग परिणाम है। आज तवन त्रिणासकी जाच वन ता एसा जाामी गनिवाता गिनन ही गग हा गय हू जा समाज पर स्थायी उपकारक वन गड काय कर गय हू। गनि य काय उन्हांन बड पारिश्रमिक गवर नहा किय।

२२ फिर भी जिन कामाके लिए विणप कुणनवाका जरूरत हा जाा जिनक त्रिए साम तयारा आर तागामका जरूरत हो एग कामाा लिए सामाय मजदूरम अधिक पारिश्रमिा दान स्वीकार कर लिया जाय ता फिर नस हम यह कहत हू कि कमस कम जमुक पारिश्रमिा ता हर मजदूरको मित्रता हा चाणिय बस हा अधिकस अधिक पारिश्रमिक भा निचिन हा जाना चाहिय। उसय अधिक कित्ताका भी नहीं मित्रता चाहिये। एस कमस कम और अधिनसे अधिकने बीचका अंतर इतना बडा नशा हाता चाहिय जिससे समाजमें अयायपूण असमानता उत्पन्न हो।

२३ कुछ काम ऊगानवाले अच्छे न लगनवाठ और गरीरको नुसमान पहचानवाये होने हू इसणिए कोर् भा उहे करनको तयार नहा होता। कुछ काम एस भा हात हू जो आनन्द देनवाले और चित्तको प्रमन करनवाल हीत हू। उवानवाता काम करनवाताका अधिक पारिश्रमिकका लाच दनक बजाय ज्यादा अच्छा तो यह है कि ऐसे कामाके घट ही कम कर डाने जाय और दूसरा सुविधाए दी जाय ताकि कम घटा और दूसरी सुविधाअकि लोभस भी कुछ गग उह करनको तयार हो जाय। इसन सिवा एसी तरकीमें टूड निकालनी चाहिय जिनस वे काम ऊगानवाके न रहे। अथवा ऐसे कामोना बटवारा एस ढगस किया जाय कि उनका खाडा खाडा भाग सबको करना पड। आम रास्ता पर झाडू लगानका काम नालिया साफ करनेका काम पाखाने साफ करनेका काम कोयनेकी खानोमें मजदूरी करनेका काम—एन कुछ काम गिनाय जा सकते हू जिह एक धधके तौर पर करनको काइ तयार न हीगा। इनमें गरीरकी धिगाई भा ज्यादा हो

मरती है। एन कामार्में जितन मुधार हो सक उनन कर डागना चाहिये और कामन घट बहुत कम कर देना चाहिये।

५

मुनाफा या लाभ

१ उत्पादनका चौथा जग हमन प्रयत्नका माना है। कच्चा माल पूजी और श्रम इन तीन जगाका एकर करव प्रत्यक्ष सम्पत्ति उत्पन्न करनेका व्यवस्था यह प्रयत्न करता है। सम्पत्ति उत्पन्न करने के लिए उद्योग के लिए ग्राहकों को पाने के लिए उनकी क्रियाका भाग उत्पन्नका है। एक जग माना है। प्रयत्न और व्यापारी दोनोंका उनका महत्त्व बटलमें जो कुछ मिलता है उस मुनाफा कहा जाता है।

मजदूरी और मुनाफा

२ लेकिन प्रयत्न और व्यापारका जो कुछ मिलता है वह उनकी महत्त्वका करव देना ही हो ता यह प्रश्न माचन जमा है कि उग मालूग न करके मुनाफा किसके पास जाय। उत्पादनका सम्पूर्ण क्रियामें मजदूरका जा स्थान है— फिर भले वह मालूग जिम्मा भाग करेगा ही बताया हुआ काम करनेवाला मालूग मजदूर है या मालूग करनेवाला व्यवस्था करनेवाला बड़ा मनजर है— उगक स्थानम और प्रयत्न तथा व्यापारक स्थानमें एन भेद है। मालूग मजदूर— साधारण मजदूर या बड़ा मनजर— निश्चिन की हूँ गतों अनुसार पारिश्रमिक करव काम करत है। उनका मजदूरी एक निश्चिन ठहराई देना है एन महत्त्वका ठहराई देना या एक कपका परन्तु वह एक निश्चिन करत जाता है और सम्पत्तिका उत्पादन और विश्व जनम परत वह करत उग मिल जाता है। उनका निम्नतरा उग मालूग काम ता ही सामित रहता है और मालूग हुआ काम पूरा क्रिया कि वह अपना वतन मागतन अधिकारा हा जान है। परन्तु प्रयत्न और व्यापारका स्थिति दूसरी जाता है। इतना ता उग मालूग सम्पत्ति किस जाय उग या उग हूँ उग उत्पादनका अधिक जा कुछ बचना है करी मिलता है। मजदूर ता करत अनुसार काम करव पारिश्रमिक परत है उग जाता है जब कि प्रयत्नका काममें यदि मुनाफा हा ता मिलता है और पाया उग ता वह नी मागना परता है। मालूग माग उगका पारणा कम हा ता

या और किसी कारणसे उन्नी बाजार-कीमत उत्पादन-वचन भी घट जाय तो प्रबन्धको कुछ भी नष्ट मित्रता। उलटा घाटा होता है। इसलिए प्रबन्धन एक तरहका साहस करता है। इसी तरह व्यापार अपना दुःखानमें बचनना माल-मरीना है और उस इन तरह करता है कि कुछ मुनाफा न जाय। परन्तु किमा भा कारणम माउने ताव थठ तावे ता उम कुछ नष्ट मिलना और घाटेमें भा उतरना पन्ता है। उमन मिननी हा मन्तन क्या न का हा परन्तु वह निष्कृत जाती है। इसलिए मुनाफा महत्त्वका पन्ता नग हाता प्रति याजना नकिन दूरदर्शिता और मानव अथवा सन्तरेना बन्ता हाता है। उसम अनिश्चिन्ताना अग तो रहता है। उसमें मुनाफा हातन बचाप घाटा हातका भा सभावना रहती है।

व्याज और मुनाफा

३ कुछ लखक व्याज और मुनाफा बीच भा इमा तरहका घाटाला करते हैं। परन्तु हम न्य तक है कि व्याज पूजाका उपयोग करन इनके लिए उमन मालिकको मिलनवाला बन्ता है जब कि मुनाफा किसी भा कारणान-व्यापारिक पत्नी या खानके संचालनका बन्ता है। व्याज खानवालेको पूरी खनका खतरा रहता है फिर भी बरारस यह निश्चित रहता है कि उस व्याज कितना मिलेगा। परन्तु यह विल्कुल अनिश्चित रहता है कि बार खानन संचालनम कितना मुनाफा मिलेगा। व्याजको सम्पत्तिक उत्पादन-वचन गिना जाता है तब कि मुनाफाको उत्पादन-वचनमें नहीं गिना जाता। मुनाफा उत्पादन खच और बाजार-कीमतके वाचन भाद है।

मुनाफेका स्वरूप

४ जब हम मुनाफेके स्वरूपको ताव करग। जमीनके भातकी चचामें हम नख चुके हैं कि जत्र अधिक उपजाऊ और कम उपजाऊ दोन तरहकी जमीन खतीने काममें लनी पन्ती है तो दाना पर एकसा खच करन पर भी अधिक कमसे कारण अथवा अधिक उपजाऊपनके कारण दूसरी जमीनसे पहली जमीनमें ज्यादा फसल होती है। इस अधिक उत्पादनको नसे भाडा कहा जाता है वस ही कारणाना नया अथवा पुराना होनेके कारण अथवा प्रबन्धका विनाप कुशलताके कारण एक हा माठ वनानवाठे दो बारखानाके मालिक उत्पादन खच और बाजार-कीमतके बीच जा कम ज्यादा अंतर रहता है उसे मुनाफा कहा जाता है। जिस प्रकार अलग अलग प्रकारका जमीनमें एक विनाप जमीनको उत्पादनन लिए हमन सोमाकी जमीन माना था उसी

प्रकार कारखानाका भा है। जमुक कारखाने उत्पादनकी सीमा परव हान ह। उनमें मात्रा उत्पादन-वच जीर मालका बाजार-वामत लगभग समान होत ह। एम सामा परव कारखानासे ऊपरव जितन कारखान हाव उह अपन उत्पादन-वचस बाजार-वामत धांग-बहुत अविन मित्रता ह। यहा अधिक प्राप्ति मुनाफा है। यहा यह बात ध्यानमें रखना चाहिये कि बाजार कीमतके निश्चित हानमें मुनाफा कारण नहा हाना। बाजार-वामत यह साचरर निश्चित नहा हाना कि प्रव-घरको वमुक मुनाफा मित्रता हा चाहिये। बाजार-वामतके निश्चित हानमें दूसर कारणारा हाव र्णना ह। उसका कारण चीजकी माधारण उपयोगिता जीर उसका उत्पादन-वच इन दो तरका पर बहुत हाना है। बाजार-कीमत बहा रह और उत्पादन वच कम आय ता मुनाफा होता है। इसलिए मुनाफा बाजार-वामतका फल है। उत्पादन-वच कम आना हागा जीर यदि गुण म्पवा चरता हागा ता बाजार-कीमत उतर कर उत्पादन वचन नरनाक आ जायगी और मुनाफा कम हा जायगा या मित्रकृता नहा रहेगा। इसलिए यह कहा जा सकता है कि मुनाफा बनाय रखना हो ता बाजारमें जा वामत हा र्णन उत्पादन-वच हमारा नाचा रखनर लिए नइ नइ युक्तिया दून हा रहना चाहिये।

मुनाफेके प्रकार

५ उद्योग घषमें होनवाला मुनाफा समाजरर लिए उपयोग बाजारर उत्पादन करनमें वचव मात्रा वामत भावा व्याज मरदूरा मरकारक टण वीमका प्रीमियम विनाशनाका वच यातायात-वच आदि मार वच गिन ता पर उतर होत जीर बाजार-कीमतस बाच जा अन्तर ररता है वह प्रव-घरका मुनाफर रूपमें मित्रता है। लागाका दोन बीनमा बाजों जितना मात्रामें चाहिये उसका अनुमान लगाकर र्णान अनमार —ह तयार करावा ध्यरवा करना इन बाजोंके उत्पादनर लिए आवश्यक ऊपर वतान दूण मभा तत्पारा एकर करना जय उत्पादनका काम चरता हा तय उसका र्णरण र्णना और उतका मरार्णन करना — इन मार वामत पाश्चिमिस् मा वररर रूपमें उद्योग घषा चरनेवाक प्रव-घरका मुनाफा मित्रता है। एम वर र्णन चुन ह कि र्णममें अतिरिक्तता जीर मररका तव हावर ररण य मात्रा पाश्चिमिस् नगी है। परन्तु जेता कहा जा सकता है कि एम मुनाफा र्णनवाक आत्मा ममावरर लिए किमा न मिता तए र्णानी मिद र्णनर र्णना वरर र्णना है। एम मुनाफ पर तभी आर्गति की जा सकता है जय ममाजरमें वय

सार उत्पादन-व्ययों का पारिश्रमिक मित्रता है उमंग या मुनाफा बहुत अधिक हो। इसका सिद्धांत प्रत्यक्षतया अधिक मुनाफा मित्रता के उपाय-मार्ग कम करके या अतिरिक्त मजदूर-व्ययों का कारण दिया जाय तब भाग्य मुनाफा का विराग्न किया जा सकता है। प्रत्यक्ष या दलील देने से कि परिश्रम करनेवाला जीर परिश्रम करनेवाला मजदूर धर्म में पुनर्जात आय का भाग्य प्राप्त भाग्य उठाते हैं इसलिए हमारे मुनाफा की भाग्य मर्यादा नहीं बांधनी चाहिए। स्पष्टतया मर्यादा का हमारे मुनाफा पर ही क्या कि मित्रता भी धर्म में अधिक मुनाफा दाना लिखना तो दूसरे उमंग उस धर्म घुसारा स्पष्ट करण ही और उमंगे फल स्वल्प मात्रा मात्रा योगी और बानार-वामन नाच उतरना है। इसलिए जहां सुनी स्पष्टतया जाना है वहां मुनाफा का उपाय-मार्ग घटने का तरफ है। स्पष्टतया है और फिर तो हमें अपना मन्तव्य बराबर ही मुनाफा मित्रता है। यह स्पष्ट दाखती ना सच्चा है परन्तु मजदूर दूसरे वर्गों का जा पारिश्रमिक मित्रता है उसमें इन प्रत्यक्षतया अथवा उपाय-मार्गों का मित्रतावाला मुनाफा स्पष्ट ही इतना अधिक होगा कि कितना ही बचाव क्या न किया जाय फिर भी उसका पीछा रहा अथवा लिपता नहीं।

६ पूजा लगानसे होनेवाला मुनाफा जिनके पास बचने का पसा पास तार पर बड़ी रकम में होता है वह अपना पसा अथवा उपाय-मार्ग स्पष्टतया लगाकर उससे मुनाफा कमाते हैं। जस कोने मिलने योग्य तरफ में और उनका भाव वृत्त पर उन्हें बच डाले और फिर उसी पसा दूसरी मिलने योग्य तरफ ल। गयरोके विविधण्डके अथवा बाजारका रज देवकर इस तरह उनकी खरीद और बिक्री करनेमें बीचका अन्तर उसे मुनाफा रूप में मित्र जाता है। गयराकी तरह ही डिबेंचरा और बाडा आदिका भी जाना है।

इस तरह कुछ लोग जमीन और मकान खरीदने बचने का धंधा करते हैं। उनकी मुख्य आय ही इस तरह का मुनाफा की होता है। जो लोग विवेक दूर-दिशाना और समय-समयसे बाजारका रुख पहचान सकते हैं जो कहासे भी जानकारी हासिल करके यह जतन हीन हीन उगा सकते हैं कि पसा मिलने योग्यरोके भाव वृत्त या घटने जो आबादीके फरवदरसे निर्वाचित रूपमें यह जान सकते हैं कि अमक मुहूर्तका जमान या मकानाका भाव वृत्त या घटने का योग्य इस तरहके धंधा में सफल होते हैं और बड़ा मुनाफा कमाते हैं। कुछ लोगोंको अकल्पित मुनाफा भी होता है। और कुछका कितना ही प्रयत्न और जांच करने पर भाग्य नकसान होता है। परन्तु मुख्य प्रश्न यह है कि ये लोग इस तरह जो मुनाफा खाते हैं उसके बदले में क्या वे सचमुच

समाजका वाद भवा करत ह ? क्या व सचमुच समाजक लिए वाद उपयोग काम करत ह ? उनक पाम अतिरिक्त पसा हाता है। इन पसम व खर वाई उद्योग धंधा तहा चलते। दूसराक उद्योग प्रधामे व जा पसा पूजाक रूपमें लगान ह उमका उहेँ स्थिर व्याज मिगना रहता है। हम ता यह प्रश्न भा उगत ह कि इम व्याजर भी व बहा तन उचित रूपम अतिशारा ह ? परन्तु उन गणाका सिफ व्याजर ही गताय नहा हाता। व जमानामें मजानाम गणगम या कभी कभा मानम और हार मातियाम अपना पसा गगार और उनरी प्रित्री करक भावने पत्रितनया गम उठाते ह। कभा कभी ता इन गणाका प्रवृत्तियामे कारण ही भावामे अधिक पत्रितन हा जाता है और उम हूँ तन य गण सवाके प्रजाय कुमवा करत ह। ऊपरम यह नुस्मान और हाता है कि एसे मुनाफ पर व आरामता जायत प्रितारर ममाज पर बाध बन जात ह।

७ सट्टका मुनाफा पसकी एम तरह अलग-बलग हानरा मुनाफमें सयाग और भाग्यता तव गनक कारण कुछ हूँ तन यह धंधा सट्ट जात जात है परन्तु वस्तुत मट्टा दूसरा ही चाज है। पूजा गगानक धधमें मनुष्यक पाम गगानक लिए पूजा ता हाती है और अपनी इस पूजाक वह जा जायगा खरीत्ता ह उम फिर निश्चिन अवधिअ भातर हा बच दना समक लिए आवश्यक नहा हाता। जय अछा भाज आय तन धधना चाट ता बट रेच मयता है। सट्टम इम जागाम सराग और प्रित्री का जाना है कि अमुक अवधिअ वात भाज वस्तुग जोर उमम मुनाफा गगा और नियन का हुइ अवधि पर—गिम बाधन कन जाता ह—याना बाधनरा नारीग पर एम भावरा बाधरा फन गना या नना पन्ता है। सट्टाक पाम पूजा न ग ता ना काम कर मयता है क्याकि स्थि हए सोरन जनुगार मालरा प्रिताररी मधमुच दना या गना नग पन्ता। इम तरह जा माग अने अतिशारम न हा उम रचनता और जिमरा जयत अतिशारमें न आना निश्चिन है उा सरागनरा मोग स्थिया जाता है। एम मट्टा प्रकरणमें (निय भाग २ प्रकरण ७) एम नुक् ह कि सट्टाक बाजारक लिए गगाना हानवा तिना हा दाया कना न गन हा, ता ना उममें जायत तत्र हा अधिअ हाता है और सट्टाक कुट मिगारर ममानका नुस्मान हा अधिअ पट्टाक -।

८ मट्टाक प्रकरण व है जिस बाजारमें गगान करना (बाधरिग) कन जाता है। जय एम आत्मा उच भावरा धारणम बाजारका माग उर लय माग गगा कर अरु गवमें कर गता है, तन यह कन जाता है कि

उत्तम स्थिति में है। निजी मित्त पर्यन्त रक्षा या मान राशियाँ स्थाना क्रिया जाता है। एता स्थान परन्तुल घडाभरमें तरोत्पति बन जात ह और घनीभरम दर तरो भिवारी हा जात है। परन्तु गफ्त होनेके वनिस्वत उनर निष्फ्त हानत मोये ज्याग आन ह। विगत पाम बहुत अधिन पसा हा और एता मोरा आन पर सौत्र मार माग्नी डिगरी त्र उम भागता अमुक अवधि तन अपन हायमें रगतवा साहम और साधन उमये पाम हा ता उम दगम गफ्तता मित्र गानता है। परन्तु एम विगानीने विरुद्ध दूमरा विगानी भी जि पर च जाय तो दानाम जो ज्याग ताकतवर हागा वहा दूसरेका गानमें मित्र गता। सामाजिक दृष्टिस साचे ता सद्र और स्थानस लाभ कुछ नहीं और नुनमान अपार है। मुनियानिन अय रचनावाठ समाजमें मद्रु और स्थालार त्रिए वाइ भी स्थान नहीं हा सनता।

९ ठकेदाराका मुनाफा यह कहा जाता है कि हमारा वनमान अय यवहार खुला स्थाने सिद्धान्त पर हाता है। परन्तु असलमें गुली स्पर्धा बहुत थोडी हाता है। विजयी पदुधानके त्रिए शहरामें टाम और बस चानक लिए रलावे लिए और सावजनिक उपयोगिताए एम ही दूसरे कामाव लिए कानूनसे कुछ सावजनिक सस्थाआको ठके त्रिये जात ह। एन ठका पर कानूनका अकुग होता है और उनमें किसीका निजी स्वाय नहीं होता। इमलिए एसे कामाका ठका होन पर भी उनमें नफा कमानवा नहीं वल्कि गाने लिए उपयोगी बननका हंतु ही प्रधान होता है। गाधकाको पटण्ट त्रिय जाते ह और लेखकाको कापा राइट त्रिया जाता है। उसमें भी ठेकका तत्व है। फिर भी उसमें उद्द्यय यह रहता है कि गाधक या लेखकन जो कडा परि श्रम किया है उसका लाभ दूसरे न उठा सें और वह मुद अपन परिश्रमका फल भोग सके। इसके सिवा यह ठक जसा सरभण उसे अमुक मयादित समयक त्रिए ही दिया जाता है। कुछ वर्षोंके बाद तो पटण्ट या कापा राइट रद्द हा जाता है और शोधककी रोज और लेखककी रचना सावजनिक सम्पत्ति बन जाती है। इसलिए एस शोधको और लेखकाको मित्रनेवाग विगप मुनाफा सामासे अधिक न बन जाय तो उस पर कोई आपत्ति नहीं करता।

१ परन्तु आजकल बड बडे उद्योगपति अपने कारखानागा सगठा बनाकर अपनी भातरी स्थधाकी खतम कर देते ह और जो बोर्ड उनके सगठनम गराक नहां होते उनकी स्थधाको तोड देते ह एसा करके अपन उद्योग मधमें ठकदारी अथवा एकाधिकारकी जो स्थिति व प्राप्त कर लेते ह वह कहा

तब ठीक है यह एक विचारणाव प्रश्न है। एम मगठनाका जिन्हें कम्बोदन्त
 टम्बम या मिडिक्वम कहा जाता है मुन्ब नु अधिकम अत्रिब मुनाफा
 कमाना ही हाता है। इनक मुनाफ पर मुन्ब अतुंग यही हाता ह कि अगर
 व अपना चाज बहुत महगी कर डारें ता उमक वन्बमें चर एमा मस्ता चाज
 दून निकालनन त्रिए दूमर उन्पात्त प्ररित हात ह। जीर व गगासो दूमरा
 चाज वन्बमें चर वकें ता गोग मन्गा चाजका उपयोग करना छोट दन ९ जीर
 इम मस्ता चाजका काममें रन गग जात ह। इमलिए व र्गगन्त जपन धरवा
 त्रियाय र्वनक त्रिए बहुत ज्यान्त मुनाफा न र्कर चाजकी कीमत उचित
 हा र्वन ह। दूमरा बात यह है कि मुनाफका आधार इम बात पर र्हाता
 है कि चाज कितनी मात्रामें खपता है। मुनाफका प्रतिगत वन्ब अधिक
 र्वनम चाजका खपत यन्ि त्रिन्तु क्म हा जाता हा और मुनाफका
 प्रतिगत वम र्वनम चाजका खपत वन्त वन् मक्ता हा ता मुनाफका
 प्रतिगत घात्त र्वनम हा एकाधिकारका गम ह। क्वाकि खपत बहुत हा ता
 मुनाफका प्रतिगत घात्त र्वन र्ना भा कुन् मुनाफा बहुत अधिक हाता है।
 किन् भा वन्बमें दूमरा चाजक स्थामें र्वर जानना मय न र्हनकी स्थितिमें
 अथवा र्व चाजके सामत न जान त्क ता एकाधिकारी काफी मुनाफा कमा
 हा करता है। इमक सिवा कर् चाज गगाका अनिवाय र्करतवा हाता
 ह त्क तो एकाधिकारा कितना हा कामत र्व ता भा लागका बहु र्ना ही
 पन्ता है। इमलिए मन् बातका र्वन हुए अन्ता ता यहा है कि निजा
 व्यक्तियाका एकाधिकारकी स्थिति प्राप्त न वन्ब नी जाय। और एम
 सामाजिक अतुंग हात ग गान्थिय जिनम कान् निजा व्यक्ति एमा स्थिति
 प्राप्त करव भाग मुनाफा न कना मर।

मुनाफ पर नियंत्रणकी जरूरत

११ अन्ग जन्ग वन्ब मुनाफका विचार करत समय ही र्वम
 मुनाफक जीरिन्दर विरयमें और र्व पर नियन्त्रण र्वनेक विषयमें कुछ
 रिचार कर चुक ह। मुनाफका विरय तात कारणामे त्रिया जाना है
 (१) साधारण उद्योग स्थामें जा भारा मुनाफा हा करता च र्वमरा गान
 कारण उन्पात्तक मायना पर व्यक्तित्त स्वामिचका अधिार है। (२)
 पन्त वन्बमें और मन्ता मन्बमें अधिन्तर वन्पात्त हा मुन्ता हाता
 है। (३) एकाधिकारका मनाना गन्त पर बाणन्त है। र्व ताता कारणारा
 जाय र्वम र्वन्त प्रमग करेय।

(१) एकाधिकारम भा उत्पात्तिर गाधना पर व्यक्तित्ता स्वामित्ता तत्व ता होना ही है। अर्थात् यह उचित रहा कि समाजक अनिवाय उपयोगकी चीजें बह पमात पर बनाना सब लोग अपना समकन करत शीतान मनमान भाव में और बश मुनाफा कमायें। जहा यत् पमात पर उत्पादन हाता हा बहा उपत्तिर सावना परग व्यक्तित्ता स्वामित्त्व मिटा गिया जाय, ता बड एकाधिकारानी गजाइत ता रन्ता। छात् पमानक उत्पादन एकाधिकारकी स्थिति पत्ता हातकी बहुत कम सभावनाए ह फिर भा एमा स्थिति पत्ता हा ता भावा पर नियन्त्रण करके जोर अधिक मुनाफा कमानवाता पर विनाय कर रगाकर उग पर जुटा रगा ता सता ३।

(२) पसना करपत्त करके और सट्टा पत्तर जो गग मुनाफा कमान ह व तो समाजकी बाई भा उपयोगा सेवा निय बिना यत् मुनाफा कमान हैं। सट्टा जोर ख्याता ता कानूनक बत् होना ही चाहिये जोर पमन करपत्तसे हातावात् मुनाफ पर भारी कर रगाना चाहिये ताकि केवत् भावारे फरवत्तवा व लोग मत्नत निय बिना जा गभ उठा एत ह यह न उग सकें।

(३) उद्योग घघाम भा हमन दय गिया कि उत्पादनके सोमावाले कारखानदाराका अपनी देवरय और सचान्तकी मत्नतर बत्तने मिवा अधिक मुनाफा नहा मिन्ता। अधिक मुनाफा ता सामास ऊपरवाते कार खान्ताराको हा मिन्ता है। यदि सभी बड कारखाना पर समाजवा स्वामित्व स्थापित कर गिया जाय तो उाके प्रगचकाको नुसमानका काइ सतरा न उठाना पत् और उहें अपन सचान्तका पारिश्रमिक मिल जाय। इसके साथ यह भी जरूरा है कि सारा उत्पादन योजनारुद्ध तथा पहलेसे समाजकी जरूरतोका विचार करके गिया जाय। इससे मुनाफके बचावमें अनिश्चितता जोर माहसकी जो दगीठ दी जाती है उसके लिए कोई गजाइत ही नहा रन्ता। और उत्पादनका सारा हेतु ही बदल जायगा।

मजदूर-संघ

संघर्षी आवश्यकता

१ मजदूर-संघर्षी प्राप्ति एक नरदन नसा है यद्यपि मध्यकालमें बारा गरा व्यापारियों और एक घरवालाक मध व। हमार दगमें ता अब भा कागारा जीर व्यापारियोंक मध मौजूद ह। परन्तु एक ग्रास खुदा मजदूर-संघर्षी प्राप्ति ता औद्योगिक प्रान्ति बारा मजदूरोंका काम बंदिन हाने और एक कारखाने कायम हानेवा हा परिणाम है। एक एक कारखानेमें एक हा कारखानेदारक अधान हारा जायमा काम करत ह। और जस जस कारखाने बारा हान तात न बस बस एक एक कारखानेमें काम करत-साले मजदूरोंका मध्या प्रता जाता न। इमलिए मास्त्रि जीर मजदूरक बाब पढ़ जा प्रतिमान मजदूर रहता ना जार एक-दूसरेक लिए जा प्रम और महानुभूति पाई जाता था उका जस मभावता ना रह। कारखानेमें चरन बाग मगानारी तरह मास्त्रि जीर मजदूरोंक बाबता मजदूर भी ना जीर मास्त्रिक हा गया है। इमर सब हा मजदूर एक हा कामर लिए एक हा स्थान पर बस सम्बन्धमें खट्ट हान न मास्त्रि उनका सगल आमान हा गया ह। मजदूरोंमें जसना पगधान और लाचार स्थिति बारमें असताप निमित्त प्रता जाता है। यन तर मि मजदूरोंका दर घाटा-बहुत चाल मिने ता नम उन्हें मताप नहा हाता। व ना कारखानेदारक अधान हा हूना चाहत ह। उनका माग यह ह मि मजदूरोंका दर और नामका गते बस कारखानेदारका इच्छाक अनकार नहा बसि मजदूरोंका समितित निश्चिन हाना चास्त्रि। यन द्वारा बात है मि हमार दगमें मजदूर मजदूर-संघर्षी अधा प्रता बारा ह। अधितर मजदूर अधा तर आगठित दगमें हा ह। क्याकि हमार मजदूर अधा आता ह और उनमें एकता नहा है। फिर जा लो जाग बढ़ार भा लन ह उमें मास्त्रि अनता दुमन मगानार नीरगत निताक न ह निमा मगानार ना दर तात ह।

२ यह ता बस जा सता है मि जसना मजदूरोंका दर न्ति कारखानेदारक माप जसना मजदूर अनुकार मीन करलेकी स्वतंत्रता हर मादूरता न। परन्तु यन स्वतंत्रता नामरा हा है। मजदूरोंक यह कहता मि तुम्हें

गौण करारकी स्थापना है स्तनपान करना हुआ जाना है। यह स्त्री का जा सकता है कि एक कारणान्तरण महा न पुत्राय ता उग्रता वाग्म्यात् छात्रात् दूधर कारणामें काम करता मजदूरता स्थापना है। परन्तु यह दान वाग्म्या है करारि दूधर वाग्म्यानवाय ना पट्टर (गा हा हागा) दूधर वाग्म्यामें क्या कर ना जाती ' यह ता मादूर जाता हा है। फिर 'वरा-पुत्रा आत्मा अत करार-स्थापना र्था करार किण एक वाग्म्याना छात्रात् क्या वाय जीर दूधरा जगत् र्था 'वाय मादूरी' न मित्र ता उग्र मामा प्रियता ता भूमा मर्याता हा र्था जाता है। वार्त् मजदूर कुछ जीर मुक्तिधाय माय जा करारान्तरण व न पुत्राय तो वह उग्र मजदूरता नौराग अग्र्य कर माता है। र्था जितना त्रि उन दूधरा काम गहा मित्रता उग्र त्रि र्था भूमा र्थनता नौराग आता है। यह वाग्म्यान्तरण महा जो हजारों आत्मा काम करत ह उनमें ग स्तनपाना गुमारीवाक और अपन अधिपारक किण लहना। पार जा थाय मजदूर हात ह उन्हें वह जग्य कर द ता उग्रता कुछ भा नुषगात गहा हाता। र्थिन एम निराग दूए मजदूरता र्था बडा वुरा हा जाता है। र्थ तरह मजदूरता वाग्म्यानस अग्र्य करता अधिपार कारणान्तरण र्थमें एव जगदस्ता हथियार ह जीर जग्य हातर वकार हा जानता उर मादूर पक्षरा सवम बना कमजोरा है। परन्तु यदि कारणान सभो मजदूर मगत्न कर तें ता कारणान्तरण नौराग अग्र्य कर दावा या अलग कर दनका घमवारा हथियार भाथरा पत्ता ता =। एव-पुत्रा निराग र्थ पर यदि मज मजदूर एवसाथ काम छात्र तें ता वाग्म्यान्तरण भा साचना पत्ता ह। उन भी फिर दूधर मजदूर पूरा सत्यामें तुरत नहा मित्रता। र्थाक गिवा नय आनवात मजदूरता वाग्म्यानस सारे कामकाजम परिमित हानमें भा कुछ त्रि र्थत ह। इम तरह कारणानदारको भी था त्रि ववार वान जीर नवमान उठानका नौराग आ जाता है।

३ इव-पुत्रे मजदूर कारणान्तरके सामन कमजोरी जीर गचारी अनुभव करते ह। इसन उपायने रूपमें मगत्न करके अपनी गरिब बचानकी वाग्म्यामें म मजदूर-सघाका प्रवृत्तिका जन्म हुआ है। अपन हिता जीर अधि वाराकी रक्षाके लिए तथा अपनमें एकता परम्पर सग्यता जीर सहयागकी वृत्तिका विनास करव अपना गरिब बचानके लिए मजदूर अपना जो मण्डल वनामें अथवा सघ वापस कर उम मजदूर-मन कहत ह। एमे सघका सन्त्य बना हुआ मजदूर कारणान्तरक साथ रवन्त्र यक्त्रिन्त्र नाते किसा भी तरहना व्यवहार नही करना वह कारणान्तरके साथ अपना सारा व्यवहार अपन

सघन जरिये करता है। सघ अपना विधान तयार कर लेता है और अपने मन्स्वाके व्यवहारके नियम भी निश्चित कर देता है। सघका सन्स्य हानवाका मजदूर प्रतिमाह या प्रतिवय अपन बतनक अनुसार तमुक रकम सदस्यताका फीम या गुल्बवे रूपमें देता है। इस आयम सघना सब गज चन्ता है। अपनी गिग्यत पग करनक लिए सघक सन्स्य अपन प्रतिनिधि चुन लेत ह। ये प्रतिनिधि समय समय पर एकत्र हाकर अपन सामन गाय हुए प्रन्ता पर विचार करक प्रस्ताव पास करत ह और उ प्रस्ताव सजब लिए बचनकारक हाते हैं। मजदूर-सघाकी जाय नियमित जीर निश्चित हो ता व अपने तरह तरहक कामाक लिए बतनिक कायकर्ता भा रख सकत ह।

४ इन मजदूर-सघाक कायकी सफलताका आधार इस बात पर हाता है कि उन्हें पयप्रदाय और नेता बस मिलत ह। हमार दगमें और दुनियाक दूसर दगाम भा जभी तक मजदूरामें स ही दम कायक नेता बननवाक उग नहा निकर ह। इसलिए मजदूरामा नतृत्व एम गगाक हाथमें ले जा स्वय मजदूर नहा हैं। इनमें स कुछ तो मजदूरामा आर्थिक और सामाजिक स्थिति गुधारनका काय सिफ दयाकी भावनाम करत ह जार कुछ लाग वस भावनाम काम करते ह कि मजदूर स्वय अपन अधिकाराका समसन लगे और राजनीतिक मामलामें भी अधिकार भोगन लगे। कुछ एम भा हात ह जा स्वय आग आनक लिए अथवा अपन राजनीतिक विचाराका आगे बन्नाक लिए मजदूरामाकी मन्स्य लके खातिर इग काममें पन्ते ह। अतिम प्रसारन उग बहुत धार मजदूरामा भग्य करनक बजाय उनका बुरा करनकाठ मावित होने ह।

मजदूर-सघके उद्देश्य

५ मजदूर सघन दो काय मुख्य मान ता सकत ह (१) अपन जदि कारा जीर निताना रक्षा जीर बढिक लिए लन्ता और (२) अपन नारर भ्रानुनाम एनता और सह्याका नायना पन् करक अपना गरिज बन्ना और अपना मवागीग उपति मापना। पट्ट कायका हम लन्ता काय बन्ता दूमन्का रानात्मक काय बट सकत ह। पट्ट रचनात्मक काय बट नरन्ग हाता है। लगमें बीनाराक गन्स्य एन-दुगरेका व्यस्तिगा लामें मन्स्य दमग लरर सघना तरफग दवागन्का गहायनाक लिए दवागान और अण्पाण चन्तन नरता काम हाता है। गिग्यत विषयमें मजदूरामा स्थितिका और तरर तरहक विरपाकी जाननाग लबनाग निताराग ध्यागान पुगाराक प्रौढ गि लनक पग बन्नाक लिए पागगागण जीर एगान्क धार्मिक मद काय रिय

जाने ह। मजदूर तबाल और दूसरे हाजिराग व्यक्तियों त पदों पर त्रिए एग हाटक और कत्र तान जान ह जहा तान-मन्ड और माका प्रमन्न वतावता जगहामें उरें त्रिाव गात-गातका कानें मित्त मक्के और दूसरे मगोरानन रमन्न और गात बड़ानवाक कापनम कयाप जात ह। मक्के सिवा त्रिावत करतता कुत्र रान्कर मयमरी तरफ त जानता मक्के और मुषडानन रम पग रगती मक्कारिता और नातिमतात आचार विचार मित्तानन — गातम उर उर डगता समाजावगाता तानन मित्तान योग्य बनानन त्रिए तरत तरतता प्रमृतिपा मजदूर-मपता तरतम तगई जाना ह। जा मजदूर-मप एग रतात्मन कामका जात ध्यान मक्के व हा अधिा उत्रता हाने ह और मजदूरता त्रि अति अण्ड। तरत कर समन ह।

६ फिर भी मजदूर-मपता मुख्य और महात वाय ता मादूरान त्रिा और अधिसारात त्रिए त्रिता हा माना जाता है। मक्के कापनममें मजदूरका दर यथामभव ऊता करवाता और कामत घट यथामभव कम तरताना — य दा मुख्य हेतु मान जात ह। कामकी परिस्थितियामें मुभार करानक प्रफल करना और मक्के सित्रमित्तमें पदा हानवाक त्रिावतें दूर करानक त्रिए त्रिा उपाय करना भा मजदूर-मपता महत्त्वपूर्ण वाय है। इसत जगवा कारखानममें हवा और रागनी पेगात्र पाग्यान नगात धान और ग्यानक स्थान आन्विकी सुविधाए प्राप्त करावे त्रिए भी मजदूर-मपता त्रिता पत्रता ह। मजदूर-मप इसका भी ध्यान रखत ह त्रि कारखानदार और मक्के मुकात्म तग मजदूराने साथ अण्डा बरताव कर उनस अपमान न करें उन्हें गात्री न दें आर उनके साथ मार पीट न करें। सध यह भी कागित करता है कि मालिकान साथवे समथम और दूसरे लागामें मजदूरका स्वानिमानकी रक्षा हा और व भी दूसरे नागरिकाकी तरत हा प्रतिष्ठा प्राप्त कर। काइ मजदूर स्वतत्र विचारका ही कारखानदार उस सहन न कर सन और अनुगासनवे नाम पर उम निशाल दे ती एम समय पर मजदूर मप इस दातकी जण्टी तरत जाच करता है कि कारखानदारन मजदूरका उचित कारणस जलग विया है या कवल अपनी तानाशाहा कगानवे त्रिए एसा विया है। और यदि उस गलत तरीतस अग्न त्रिया गया हा तो उसके लिए भी सध लडता है।

मजदूर-सपकी प्रवृत्तिका आरभ

७ हम कह चुके ह कि बड कारखानाक खडे हान पर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई थी कि मजदूर सगठित हा तो ही कारखानदारोक् साथकी

प्रतिस्पर्धामें ठिक सतते थे। फिर भी जीवोद्योगिक क्रान्ति प्रारम्भमें अनेक वर्षों तक मजदूरोंका असंगठित स्वरूपमें रहना पड़ा था। इंग्लैंडमें १८ वा सत्राव अंतमें जीर १९ वा सत्राव प्रारम्भमें जब बड़े बड़े कारखाने बनने लगे तब बड़ा मजदूर यकीन-स्वातन्त्र्य जीर अनियंत्रित प्रतिस्पर्धाकी हवा जारामें चल रहा थी। मसा फिगसफी चल रहा थी कि हरएक मनुष्य अपने स्वाधिका र्ण्य करनमें तत्पर रहता था और राज्य या समाज लगावे व्यव हारमें विस्तृत हस्तक्षेप न करें ता अपन-आप सज्जा भगाई हा जाता है। इसीलिए जसा चलता है वसा चलन लिया जाय और मरवार अथवा समाज लगाक आपसक व्यवहारमें मानवनाक खातिर या निरालका ध्या करनके लिए अथवा अय विभी भी कारणम वाचमें न पत्। इस फिग सफार अनुसार ता मजदूर-सघ बनाना भी मजदूरोंका व्यक्तिगत स्वतन्त्रतामें खाकट डालना समझा जाता था। एक पुराना कानून ता ऐसा था जिमके अनुसार धारस जातमी एकत्र हाकर काइ नियम बनावे सबके लिए उन्हें बंधनकारक मान तथा उन्हें अनुसार व्यवहार करनका प्रस्ताव करें ता उम पडयक वहा जाता था। इस कानूनके अनुसार आठ-स मजदूर तमा हाकर अपना कतन कवान अथवा दूमर अधिवार पानके लिए काई भा कर्म नहा उग मनने थे। इस तयारहित स्वतन्त्रतामें मजदूरोंका दगा विनाशिन मूर विगन्ता गई। धार मर तामन जापन हान गया। अंतमें मन् १८२४म इंग्लैंडमें मजदूरोंका अपन सघ बनानका स्वतन्त्रता मिया। यह कपक वा दूमर दगामें ना गया स्वतन्त्रता मियन गया। आज विमा भा तगमें मजदूरोंका संगठन करनमें विभी भा तगका रसाक नहा है। लगभग प्रयेक उद्योग मरन काम करनवाक मजदूर अपने सघ बनान गे ह। यह दूमरी बात है कि जभा कुछ मजदूरोंकी संगठना दपते गे संगठित मजदूरोंका मर्या बढत थाता है।

८ जय उम सघ नहा थे और कारखानेदार प्रयक मजदूरों काय अग्य अग्य करार कर सतता था उम ममकता करण अनुभव एगा है कि मजदूरोंका तरे कपक गाका रत्ता था। मजदूरोंका तरे कपक वारमें रिवाजोंका उपराकत गी कानून ही चलता था। गित मजदूरोंके संगठनाके कारण अर स्थिति बर्या है। एक म्यानक मार कारखानाके अग्य अग्य विभागामें एव ही प्रसारक वापक गिण मजदूरोंकी तरे एवमा हानी है और मजदूर-सघ तरे वातका माकानता रत्ता है कि व कमा कम अमृत मर्याता नाता त वात पायें। मजदूरोंका दरे ममा हान पर भी गया नग हता कि मजदूरोंका

कमाई नी समान है। जिन काममें मागिय याग बधा हुआ है वह काम करनेवाले समान मजदूराता कमाने ता समान ही है। परन्तु कुछ विभागमें जितना काम हुआ है उगा आपार पर मजदूरा दी जाता है। जहां इस तरह कामका आधार पर मादूरी ना जाता है वहा स्वभावतः जा मजदूर अधिक अनुभवा पुगा जीर तत हागा व अधिक कमायगा। यदाग विभागमें मादूर दगा पद्धति का करना पगा करा ह। कर्माणि मगाओंमें गुधार हानस रामती जो मात्रा बढ़ी है उमका पाग-बद्धन लाभ ती —हें मिग्ना ही है। इस तरह मामाया प्रत्येक कामका दर बधा हुई हाता है। परन्तु घषमें मगा आन पर कारखानेकर मजदूराका र घगनका विचार कगन है जीर घषमें तेजी आई है। जीर महगा चलता है तब मादूर अधिक र गा चाहत है। मजदूराने बतनमें अयापगून बढ़ीना न हान रना और उगमें उचित बद्धि करवा दना मजदूर-अघका बद्ध ही महत्त्वना काम माता जाता है। सप इस बातका आग्रह रगता है कि जीवन निर्वाहने लिए जरूरी बतन मजदूरका मिग्ना हा चाहिये जीर इगक लिए सप रगनका भी तयार रहना है।

बोनस और मुनाफमें हिस्सा

९ किन्तु बतनमें अमुक बद्धि करवा रता हा मगगनका उद्देश्य नहीं होता। कारखानेमें हानकाठ मुनाफम स भा मजदूर हिस्सा मागत ह। जस कारखानेकर पूजीना मागिक हातर कारण अपन पारिश्रमिाके उपरगत मुनाफा मागता है वस ही मजदूर भा अपनी मजदूरीक मागिक ह या उनकी मजदूरा ही उनकी पूजी है जीर उस व कारखानेक रगाते ह इसलिए उसके बद्धमें कारखानेकरके साथ व भी अपनका मुनाफके अधिवारी समझत ह। अच्छा काम करनेके बद्धमें उन्हें जा अधिक पारिश्रमिक मिलता है उस बोनस कहते ह। यह बोनस काई मुनाफका भाग नहा है। कयाकि यह बानस ती नफ टोका हिमाव रगानसे पहले ही द रिया जाता है। रसका हिसाब मुनाफ परस नहीं लगाया जाता बल्कि मजदूरके किये हुए काम परसे लगाया जाता है। असाधारण अच्छा मुनाफा हुआ हो तब ती मजदूर अधिकारपूर्वक बोनस मागत ह। केबिन मुनाफमें मादूराको सच्चा हिस्सा ती तब मिग समना गाय जब कारखानेक हुए जसला नफम से निश्चित किय हुए बतनके अगाव उनका भाग अधिकारपूर्वक उन्ह दिया जाय। इस प्रथाको मुनाफमें मजदूराका सागा (प्रॉफिट शेरिंग) कहा जाता है। अमरीनामें बहुत थोडे कारखानोंमें यह प्रथा गुट हुई है। मजदूराकी चात्रू बतनके अगावा वपके अतमें मुनाफमें स अमक भाग नकद बाट दिया जाता है या प्रोविडेण्ट फण्डमें जमा कर

दिना जना २, या का-वानन जना रकमक पर न्हें न्यि जान हैं तिनन मनदूर भा का-वानन गुण-हा-का बन सकन हैं। जहा पर प्रया हाता ह बना मजदूरका का-वानना अना जना ३। व अधिक जानस काम करन ३ आर औद्योगिक गान्नि जच्छा नह बना जना ३। य प्रया तमा नदुठ जता ३ ज का-वाननार दूठ उगर हृषणला जोर इमानार हो। नही ता मनदूरका दरक वा-क सिवा मुनाफा किना ३आ है इनका हिमाव करनका एक नया कगण पन हा जाना है। उन सिवा मनदूर भी एक हा कारवानमें नि रहकर नया न जना ममन व स्याया तीर पर कामें काम बनवा न हा ता जिन नि न्हान काम किना हा उन तिका उन हिस्सा मुनाफा बन लिए उह दून जाना प। कि तिन वा-माका किना जपरायक कारण का-वानन निकाला गया हा वह भा मुनाफमें हिस्सा मागन अथ ता एक नया जना गडा हा जान। ये मर कठिना-या हान पर भा जब तन का-वानना पर मनाज्ज स्वामित्व नया स्थापित हा जाना तब तक यह प्रया जाग करन गयक है। ऊपर बता दू कठिना-याका इगत्र कर हा मकना है।

मजदूरोंका कल्याण

१० आज ह दामें मजदूरका कामक घट पहलम घट गय ह और मानवताका अन्तिम मनदूरका अमन सुविधाण भा ग जाना हैं। इसमें मजदूरकी काम मागा या का-गिक बनिम्बन मानवताका दुष्टिम काम करनार ममान-मुधारका और वनानिकासा ज्याग गय है। मजदूरका एक माममें ता मजदूरका गारा स्वाय हाता है। जिन द्वारा सुविधाण भा अ- अधिकारपूर्वक मिटना चाहिये न बनका भान ता मनदूरका अभा अभा हान ला है। मियेया और रिगारका मजदूरका बारमें कानूनक प्रतिनय हा-में हा ग है। गुरू गु-में मजदूरगन इगस मुठ रिगान भा तिया या क्रांति अदनी मियेया और रिगारका मजदूर बन जाना अ- नुकमान भा-म हाता था। का-याका जनामें काम आनवाग ला-नमें वा गुगार हुआ व मजदूरकी माका प- नया ३। य- ता इन वनानिक गारनन नयाका है कि ला-नका दि- उर- दु-न बनान जाय। जमा तर- मानिक जिना पर जना रखनका ता-क ता जिनम मजदूरक हा-पर जमें न आ जाय मानिक गुधारका गारता ह। प- ३। जिन अ- ज- ज- मजदूर गि-ता हाता जाना ३ त- त- मनदूर ना-र- एन मुठ ज-भाविक अधिगारति दारमें व- जा-न हाता जान है। और हा

घाती मावधानी व अग मपत गरिप रणा है हि उगा भयन लिए वा ह्म वानुतामा अमर जच्छी गरु हाता है वा न ।।

हृत्ताल

११ जगा तु पूरा करता लिए जोर अपना मागे पूरा करतार लिए मजदूरक पाग मरग बदा हथियार र्नाताया है । तब उतरा बाद माग वारणातर मरु त रर रिगा मजदूरक माय अयाय हुआ हा जार बट दूर न रिया जाय जयवा रिगा मजदूरका मरु वारणम निरा र्ना जाय नर मजदूर र्नाताउ ररत ह । र्ना तुम मजदूर यदि दम तरह विराय करे ना र्ना निरा र्ना र्ना जाय और उनरी वार् गुनवाद न हा । र्ना लिए व मय मि र्ना काम करना वर पर र्न ह और यह निरचय पर र्ना ह कि जय त उतरा माग वारणातर पूरी नहा वगा तर तर व काम पर वापग रहा जायग । ह्नातरा ह्म अधिक् बच्छा गती पर अपना तीररी चाटू र्ना हाता है । मजदूर अपना नीतरा छाड बिना अपना मागे मजूर वगना चान ह । र्ना लिए व दूमर मादुरागा भी अपना गगह काम पर जानम रोरत ह ।

१२ पट्ट तो एसा वार् ह्नाल करता वानूनर विरुद्ध माना जाता था और ह्ना ररनवातावा गजा दा जाता था । र्नामें जिनकी गिनायत उचित हा उनकी ह्ना वानूनी ममगी जान र्गा । फिर भी अपन किमा वारणक बिना दूमरेकी गहानुभूतिमें ह्नाल करना या र्नु ह्ना ररक दूमरारी वारणममें काम पर न जान र्नक लिए धरना दना या पिक्टिय करना गरवानूनी माना जाता रहा । किनु जम जस मजदूरारके पथमें गरमत तयार हाता गया वम वम वानूनमें परिवान हुए और आज तो मजदूरारका ह्ना ररनका अधिवा और अपना ह्नालका टिफाय रखनर लिए गानिम धरना र्नका अधिवा सब र्नाम वानून द्वारा मान लिया गया है । अलवसा ह्नाल करवान या जारी रखने लिए जबरदस्ती की जाय ता सरकार धीचमें पत्ती है और जबरदस्ती करनवाके साा देती है । बहुत बार वारणानाराकी तरफस यह थनावर कि ह्नालम जबरदस्ती हानी है ह्नाल तोडनके लिए गुडाका र्ना जाता है और उनरे द्वारा या मजदूरामें म हा कुछको फोकर उनर द्वारा मजदूरामें उत्तजना फर कर मजदूरामि दगा करवानकी वार्णा की जाती है । इसके जगावा छोट छटे पुत्सक आत्तमियेमे उगाकर वड वर सरकारी अफमरा तर वटुतमे वारणानारोके पथम होते ह । इसलिए थोडामा भी वहाना मिलने पर स्थानीय सरकारी अफमर

पुलिमकी गक्ति और जरूरी है। ता मनिज गक्तिना भी उपयोग करनके लिए तयार हा जात ह। इसीलिए हस्ताल छापी हो या बची मजदूराका चुपचाप रहनर गान्ति कायम रखना हडताका सफताकी अतिनाय गन ह। मजदूर जराना भी ग्या फनाए कर दें ता उनका मामगा कितना हा पायमान बना न ही ब हार जात ह। जो मजदूर-नता हस्तामें गान्तिना मत्त्व नही समयन ब मजदूरोकी कुसवा या हानि करते ह। हडतालका सफताके लिए दूमरा आवश्यक गत यह है कि मजदूराना अपना पायपूण और उचित मागें बहुत ही विनय और विधनक साथ अत्यन्त स्पष्ट और निश्चित गताम पा करनी चाहिय। इसर सिवा उहे हडताल करनस पहल माकिनस साथ समझौतेकी मातचीन करके जगता निपटानकी नयारा बनानी चाहिय। माकिन समझौता करनस एनकार कर द पचक द्वारा पाय बनाना म्नासा न कर और यह बात मान ही नहा कि मजदूराका भी भिन्न गय रखनना अधिकार है तो हस्ताके अनिवाप हो जाती है। एमा हस्ता करनस पहल व्यवस्थित मजदूर-सघ मादूराना मत भी गन ह और यदि अधिकतर मजदूर हस्ताके लिए तयार हा ता ही हडताके घापित का जाती है। हस्ताम एन और हस्ताके दौरानमें मजदूराना अपन पगमें लोचमन तयार करनना प्रयत्न करना भी चाहिय। गगाकी सहानभूति जगा हस्तालका अन्त गनमें एन मन्गार हानी है। अगर हडताके गरी चए और गगाका हस्ताके साथ सहानभूति हा ता हडताके नएके लिए जिम सरगानक विरुद्ध एना हा उमरे साथ माका केन एन बए करन अवदा जय प्रकारग भा उमका बकिाए करनकी लागामे अपाए का जा मना ह। तासरी बात यह है कि हडताके गिनामें मजदूराना असाए न बठ रहना चाहिय यदि का न वाइ कामचगाऊ क्या टूटर उममें गग जाना चाहिय। एम धनन गनवाग आयना योग बएन आविन महारा एना है और कर समझौता गगा कर समझौता हागा एम प्रकारका मनना निरा बनानवाग चिन्ता नगी बना रहनी। इसरिए गापीजा ता बड कारखानामें काम करनवाए मजदूराका मगाए ऐन ह कि एग सरएके समय काम जाय दएरिए उन्हें बाई गु उद्याग साथ गगा गान्ति। यदि ज्याग बमाकाग दूना का गु उद्याग न मिग ता हर मौद पर और हर म्यान पर चए मननसाग पगा ता है हा। चौथा बात समझौता और यक्तिना है। पधमें मगा हा कारखानसाग पाए माका मन्गार भर गया हा और बकागा कारण दूमरा गन गग हमारो जगा एनका नयाए हा। ता एमा समय हस्ताके

कर मसत। लेकिन एसे कारखाने में हा खानगा हा या सावजनिक उनमें हस्ताश्रवा राखनन लिए एना नियम हाना जावयन है कि ए मजदूरों और नचाक्काक याच मनभए हा तए अयए हनाए करन जसा अयाय हुआ मजदूरोंका एगता हा एए हनाए न करे उहें अपना मामन एन पचक मामन पए करना चाहिये ए दाता पनाका मजूर हा जयवा एन मामनका नियमारा करनके लिए ऊच एएका एक स्वतंत्र पायाधान हाना नासिये जीर वह एा भा नियम न वए एना पनाका स्वीकार करना चासिये। सावजनिक उपयोगन काम करनलाए सस्याश्रमों मजदूरों पर यह प्रतिबन्ध रहता है कि व हडनाए करनन पहर नासिये न नासि सक्कारकी कित मातूम एा ता वए वीचमें पड सके।

१८ हनाए चाजे हा एसा है कि वह कितना हा अनिवाय जाए उचित एा ता भी उमन नुक्मान ता हाना हा है। यह दूमरा बात है कि कारखानेदार अधिक साधन-सम्पन्न हानन कारण आसिये नुक्मानका पचाह न करे। परन्तु हनाए बार बार पनां हा है ता कारखानेदाराका भा वाफा नुक्मान हा। हनाएन त्नाम दूरे एाका भा कठिनाया भागना पना हा। मजदूराना आय वए एा जानम व मनाका तरह सच नहीं कर एन और नका प्राहका पर निभनवाए एए छए टुरानेए भा बगए बनत है जा नुक्मानमें पान है। हनाएवाए क्षममें नासि भग होनका डर ता एा एा रहता है। मयम एा नुक्मान एनासियाका ही हाना है। उन पान वन उचन नहा एाता आर सधका पण कितना ही वए हा ता भा वह एना वए नहा हा सवता कि हजार-लाखा आसियाका वह बहुत मयम नए निभा सके। एसिये एए हनाए एम्बा चएता है तए ता मजदूर जीर उनका साए उच नूना ही मएन एात है। भून वचारी सिम्बियाहए और अधमर एनासियाका नयकर चहराका दय वदुत वण हाना है। एसिये हनाए जहा पर हा मन टालने एा चीन है। एन हथियारका एयाए नभी कएता चासिये तए जाए वाए एयाय वाका न ए।

सामग्री और पब्लिसिटी

१९ अब मार एामें हनाएवा टालनके लिए तए मड हान एा है। जाएतक मजदूरोंके मएन एाका नभी उजा घभामें हा मये है। कारखानेदारान ता एमभ न। पहर एना मयटन बना सिये है। एसिये एसा प्रया पएन एगा भा जीर जव ता उन वानुनका एए न। ए सिया है कि हडनाक परना पहर मजदूरोंके प्रतिनिधि जीर कारखानेदारोंके प्रतिनिधि

एकत्र हजार गगदर प्रजा पर गमनीता तरनरी गार्गिण पर । आर तमें
 कारणात्तर मादूरात प्रतिनिधियात एगमें वात्ता आत्मियाता ह्या त
 स्वात्तर नग परा थ जोर यद आप्र रगा थ ति मजदूरातें स ही वाइ
 उनरा प्रतिनिधित पर । इमम मजदूराता य र ग्हा कि हममें स ही वाइ
 प्रतिनिधि वागा ता उता ग्नी रगातर उत आग गाया तायगा । दग
 डरव मार मजदूराया माग मजदूरात ताय ता त की तातरी भा
 गभावना ग्हा थी । एगमें मजदूरात एग बानरा आप्र रगा है ति वात्ता
 गाना ग्मात प्रतिनिधि माता जात जोर कारणात्तराता एग मीसार
 रगा रगा ३ । एग रगा वगामी गिरायारा तियारा ता दोता जात
 प्रतिनिधियाते अपसो गमनीता हा हा जाता है । परन्तु तय एसा नियारा
 नग हा पाता तय गमनीता बरातर ति अनव दगमें मखाखी तरफा
 गमनीता तिसारा (कान्तिर) तिगात तिया रगा हाता है जोर दाना
 आरव प्रतिनिधिया जोर एग तस्य व्यक्तित वा हुण गमनीता मडगा भी
 रचता की ग हाता है । इग गमनीता-अधिरारा तयना गमनीता मडगा मा
 अववा तिणय गामें स तिसा भा पगत तिे बधनरागद तहा मान तात
 रतिन व गगात गामन दाना पगारा मामग पग बरनम बतत उपाया
 सिद्ध हात ह । फिर हडताठ बरनम पहू वा हडताठ गुण हात वा
 गाना प तारी गिरायारात नियारा बरनव तिे पच फमदेवी प्रथा भी
 काममें गई जाता है । अर ता बहुनम दगमें औद्योगिक गमनीते सम्बधमें
 गमनीत जोर पच फमद बाना भी वत गय है ।

हमारे देगवे मजदूर-सघ

१६ हमारे दगम मजदूराने गहल-गहउ सयुक्त वाय बरनका उताहरण
 वह ३ जिसमें १८८४ में मजदूराकी परिपन्न फररी-बमीगनका एक बग
 प्रायता-वन भाग था । उससे वा १८ ७ में देगवे नौराकी एक रोगायटी
 स्थापित हुइ । १९०७ में पास्टा यूनिन (डाग तमचारियाका सघ) वा
 जोर १९१० में बम्बईमें कामगार हितवधक सभा स्थापित हुई । परन्तु हमारे
 देगमें मजदूर सघकी प्रवतिका यवस्वित आरम प्र रम महामुदके समय महगाई
 बतन और मुदके वा भावामें बहुत तेजी आनके कारण १९१८ में हुआ ।
 १९१८ से १९२२ के बीच अपना बतन बवानके तिे मजदूराकी जगह-जगह
 हडतालें करनी पग । इमम जगह जगह मजदूर-सघ बने । १९२० म अखिल
 भारतीय ट्रड यूनिन कांग्रेस इस हेतुसे स्थापित हुई कि आन्तर राष्ट्रीय मजदूर
 परिपदमें हिंदुस्तानी मजदूराके प्रतिनिधि भज जा सक । सन १९२९ म इस

आल जणिया ट्रेड यूनियन वाग्रेस पर कम्युनिस्ट रुवक उग्र कायकताआन अधिनार जमाया । जीर उसर वा ता अगिर भारताय नामवाल तान चार मगठन अस्तित्वमें आये ह ।

१७ हमार मजदूरानी गरावी निरक्षरता जातपातर भदभाय मजदूरान सच्चे हितकी लगनवाल कायकताआका कमा आरि कारणसे हमार दगमें मजदूर-मघाका काय अभी तक बहुत व्यवस्थित और बज्जान नही बन पाया है । मालिक-मघाम से भी बहुत कम मजदूर-मघाकी मायता देत ह और उन्हे प्रतिनिधियाके साथ समझौतेकी बातचात बज्जना तयार हाने ह । सार दगम अरुग अहमताआका मजदूर मघ ही इय स्थितिको पहुचा है नि जग्ज जग्ग मालिकाने साथ और मिल-मालिक मडाने साथ समझौतेका बातचात कर सक । मन् १९१८ में अहमताआके मि मजदूरानी गाधीजीने नतत्वमें जो मु प्रमिद्ध हडता हई उसर बाद यह सघ स्थापित हुआ है । इस हडतालक समय गाधीजीने मि मालिकाने पच फरसेका तस्व स्वाकार कराया तयम मि मालिकान एक प्रतिनिधि और मजदूर-मघक एक प्रतिनिधिक पच द्वारा छान मा पगड निवटा जकी प्रया लगभग याम वष तक चगा । जिन बम्बद प्रानमें औद्यागिक शगजते वारेमें वाप्रसी मत्रि-मण्डलन जयम कानून बनाया तयम मालिकान पचका प्रया छान दा है और हडताआका समाधना पन हा तय या सरकार मजदूर कर तय वे कानूनमे स्थापित जगलतरा पच स्थापार करत ह । पच फरसेका प्रया तय प्रचीति था तव का भी प्रन मटा हाना ता पन मजदूर-मघ जीर मि मालिक मडान आपसमें समझौता कराना बागिन करते थ और व समझौता न कर पात तव उनका नामग पचार सुगुट रिया गाना था । पनामें मनभद हाने पर मरपच नियुक्त रिया गाना था और गरा नियम दाता पन स्वीकार करत थ । गाधीजीन नतृतरा एम मिन्शन अहमताआका मजदूर-मघ आज सार दगम गवग बला और तयम अधिन गगति मजदूर-मघ है ।

अहमताआका मजदूर-मघ मजदूराने हित और स्वाभिमानका रक्षा करत हण प्रमग आन पर मि मालिकाने साथ सहयोग भा करता है और गरा वानाको देगा हण उगा अल्ल परिणाम भा आय ट । वह व्यवस्थित जग जगता कार्याग्य पगाना है और उनमें प्रतिवष पाचा छट हजार रगिगण्ड और गामुति गिनापते कर हाना है । अधिनतर गिनापते दूर पनाने गपकी गज्जता मिळता है । इगक गिवा यह सघ मजदूरान गि पागताआण स्वाज्ञान प्रगुति-मु वाचनालय स्थापान गाना आरि पगाना

है। सपरी गणना वाषाणित कारण आज अन्तर्गत मान्यता दूर गहरा मान्यता जितना बना मित्रा है। अन्तर्गत पर ५ राजीनित वागामें भा भाग ५५ है और अन्तर्गत म्युनिसिपलिटामें व अपन सम्म्य चुनार भज मता है।

१८ मा १००३में भारत गन्तारा टु म्युनिसिपल एक्ट पास किया। उा तातुत जागर दन हण मजदूर-मघाता कुड मस्या मन् १९५० में २० ७ था तथा मघात कुड मस्याता मस्या १८६,२०० था। अन्तर्गत मजदूर-मघात मस्याता मस्या १ मघात जागपाग रता है।

इन्डस्ट्रियल डिस्प्यूट एक्ट

१० औद्योगिक शक्तारा राता और श्राड उत्पन्न हान पर उह मित्राता वारमें अय म्याता तर हमार ममें ती अनक कानून बन ह। इन कानूनामें वम्प्रेत वाधगी मजि मन् मता पास किया गया मन् १०,८ वा वास्य इन्डस्ट्रियल डिस्प्यूट एक्ट उगत था १०४६ और १९५ में उस किया गया तथा म्वरूप और १९६३ में पद्रीय मन्वार द्वारा पास किया गया मता सम्प्रेत रपनवाता कानून — य मन् मन्तुण अद्योगिक कानून ह। मन्ता उनकी मन्व मों महा म ताता ह

वम्प्रेत कानून अतमार भादूर-मघाता तीन वगोंमें वाट किया गया ह (१) दज हुण (रजिस्ट्र) मघ (२) प्रतिनिधित्ववा (रिप्रजेंटेटिव) मघ और (३) वास्यतावा (क्वालिफाइड) मघ। मजदूराकी कुड मस्याता ५ प्रतिगत मन्व-मस्याता और माटिका द्वारा माय किया हुआ अथवा माटिका द्वारा माय किया आ हा था न हा परन्तु जिमन मन्व मजदूराका कुड मस्याक वमम वम २५ प्रतिगत या वह मजदूर मघ म्ज हुआ (रजिस्ट्र) कन्गता है। यति मन्व-मस्या मघ ५ प्रतिगत हा और माटिक उस माय न कर ता वह मघ वास्यतावा (क्वालिफाइड) माना जाता है। जिस मजदूर सघकी मन्व-मस्या म्गानार छह महान तक २५ प्रतिगत या म्सस ऊपर रह उस प्रतिनिधित्ववा (रिप्रजेंटेटिव) मघ कहा जाता है। दज विय हुए और प्रतिनिधित्ववा मघात प्रतिनिधि मजदूराकी तरफस उनका मामता पग कर सवन ह परन्तु मघ केवल वास्यतावा ही हो ता मजदूर अपना मामता पग करनके गिग अपनमें स ही पाच मन्व-मस्याका नियुक्त कर सकते ह।

२ दाना कानूनाने अनमार हडताक अथवा तालाबदा (लाक जाउट) आरम करनस पहे दोना पक्षाका तान म्मामें से गुजरना पडता है। पहल ता एक दूसरको नोटिस (मूचना) म्नी पडती है। नोटिस देन पर समझौतेकी

ज्ञानदान आरंभ होता है। उसके फलस्वरूप यदि समझीता हो गाय तो वह दज बर श्रिया जाता है। यदि समझीता न हो तो गिवायत करनवाले पणना अपना सारा मामला सरकार द्वारा नियुक्त समझीता अधिकारी (कसा गियटर) के सामने पेश करना पड़ता है। वह जोना पक्षाका मामला दज करता है और यदि समझीता न कर सक तो सार बगडका रिपाट सर कारक पास भज जाता है। वह रिपाट सरकारी गजटमें छप जाता है। उमक वाट दाना पश कोई भा कारवाइ करनक लिए स्वतंत्र हात है। परन्तु यदि दाना पक्ष माग कर ता सरकार इस मामलको समझीता मण्डल (बोर्ड आफ कमालियशन) के पास भेज देती है जिसमें एक प्रतिनिधि मजदूर-संघका एक प्रतिनिधि भागिक मंडलका जोर एक व्यायाधाग हाता है। समझीता मण्डल दाना तरफन प्रमाण लेकर और दानेले सुनकर अपना निणय देता है। समझीता मण्डलका निणय माननेके लिए कोई भी पश बधा नहा हाता। परन्तु उमक विरुद्ध जाकर दोनामें से एक भा पक्षक लिए बहुत सबल कारणके बिना कोई कदम उठाना कठिन हो जाता है। क्वाकि एफमन समझीता मंडलका निणय न माननेवाके पक्षके विरुद्ध हा जाता है।

२१ इसके सिवा, इन कानूनाके अनुसार एक स्थाया औद्योगिक पंच अथालत (वडस्ट्रियल जात्रिड्रगन बोर्ड) का स्थापना भा की गइ है। उसक पान जाना रिभी भी पक्षके लिए अनिवाय नहा होता। दाना पश सहमत हाकर उमका गभ उठाना चाहें तो उठा सरत है। परन्तु यदि दाना पक्ष पंच अथालतन सामने जाय ता उसका फमला दानाक लिए अनिवाय माना जाता है। बिगए परिस्थितियामें सरकारका उचित गग ता वह दाना पक्षाका पंच अथालतन सामने जानको बाध्य नी कर सरता है।

२२ ये कानून जीयागिन गाति कायम रगनक लिए बपाये गय है। क्विन कुछ गगाकी ऐगी राय है कि समझीतन लिए जा लम्बा चौहा रिफि पूरा करना पड़ता है वह मजदूरका तिन विरुद्ध जाती है, क्वाकि समझीतनमें तान चार महाने लग जात है और गभ बाच हस्ताक लिए अतकू समय निरल जानका सनासना ग्हता है। इसके सिवा इन समझीतनमें मजदूरका उल्हाह भी छप पड जाता है। क्विन मजदूरका समझीतन मजदूर हा और उर व्ययमिया तथा गकिागाला नकत्य मि, ता मजदूर दूताककी तत्पाफो बर सरत है और उर पाद मि गकता है। अथना गो तता दूताकका एक प्रातिपारा गम्भ्र मभदूरर प्रातिप। न-दान

यानवान् आरम्भ होता है। उसके फलस्वरूप यदि समझीता हा जय तो वह रज कर लिया जाता है। यदि समझीता न हा ता गिवायत करनवाले पक्षना जपना मारा मामला सरकार द्वारा नियुक्त समझीता अधिकारी (कमा थियटर) व सामन पण करना पता है। वह पाना पक्षाका मामला दज कराता है और यदि समझीता न करा मक ता सार वगत्वा रिपाट सर वारक पास भज पता है। व रिपाट सरकारी गजटम उप जाता है। उनक वाट दाना पण काइ भी वारवाई करनक लिए स्वतंत्र हात है। परन्तु यदि दाना पक्ष माग कर ता सरकार इस मामलाका समझीता मण्डल (वाट आफ कमालियगा) व पास भज दता है जिममें एक प्रतिनिधि मजदूर-सघका एक प्रतिनिधि माथिक मालका आर एक मायावाग हाता है। समझीता मण्डल पाना तरफक प्रमाण कर और लगे मुनकर अपना नियम दता है। समझीता मण्डलका नियम माननके लिए वाट भा पत वधा नहा हाता। परन्तु उमक विरुद्ध जाकर दोनामें ग एक भी पक्षक लिए वस्तु सवत वारणाक जिना काई कसम उठाना कटिन हा जाना है। क्याकि लोकमत समझीता मण्डलका नियम न माननवाते पक्षक विरुद्ध हा जाना है।

२१ इससे गिना इन कानूनान अनुसार एक स्थाया औद्योगिक पक्ष अगलत (इन्डस्ट्रियल आर्गिजेशन वाट) का स्थापना भी की ग है। उसक पास जाना जिमी भी पक्षक लिए अनिवाय नहा हाता। दाना पण महमत हाकर उमका पण उठाना चाहें ता उठा मन्न है। परन्तु यदि दाना पण पक्ष अगलतक सामन जाय ता उमका पक्षक दानके लिए अनिवाय माना जाता है। विनाय परिस्थितियामें सरकारका उचित लग ता वह दाना पक्षाका पक्ष अगलतक सामन जानका बाध्य भा कर मरता है।

२२ य कानून औद्योगिक गानि कायम रखनक लिए बनाये गय है। जकिन कुछ योगावी ऐसा राय है कि मजदूरके लिए जा लम्बा-चौड़ा मिनि पूरा करना पता है वह मजदूरके तिक विरुद्ध जाना है क्याकि समयानमें तात चार म्यान लग जान है और लग बाव लम्बाएक लिए अनुकूल समय निकल जानका सनावात रहता है। मकर गिना इनक समयमें मजदूरका उगाह भा ठग लग जाना है। जकिन मजदूरका मण्डल मजदूर हा और उ व्यसथित तथा गिवायाग जनक मिट ता मजदूर हस्ताका ताकाको धर मरत है और उ पक्षक मिट गवजा है। अन्तता ता नता लम्बाएक एक कतिनागी गस्त्र मजदूरक गानिना नदारा

मजदूरोकी भलाईके कानून

१ प्राचीनपक्षी अथगाम्त्रियाका बहूता था कि माग उद्योग पक्षे तुली और अनियमित स्पर्धि सिगान्त पर चरें समीमें समाजना आर्थिक गम ह। उन समयनी फिलामफाने म कथनका पुष्टि वा। परन्तु समाजका भक्ति बुद्धिने तुग्न म लिया कि कारखानेदार मनुष्यनाका ताकमें रखकर स्पधा करने म ह आर मजदूराका कमजाराका लाभ उठा रह ह। मल्लिण मजदूराकी रक्षा करनका विचार पहर पहर दयाधर्मी लागद ह्यमें पना म्जा। पहर उर य म्गा कि कारखानाका चक्कीमें पिसनवाग म्त्रिया और बच्चाका तुग्न रक्षा करना चान्त्रिय। भौतिग गक्तिम चरनवाग यत्राके कारण यन्तम उद्योग म्शामें नातुव गरीग और धाग गक्तिमाग आत्मियामे भा काम च मरता था। मल्लिण कारखानेदार मन्ता श्रम गाननक ग्ण म्त्रिया और बच्चाका नाम पर ग्गानक ग्ण तयार हुण। और अपना गरादान कारण य गम भा काम पर जानका तयार हा गय। १८ वा मन्तक अन्तिम और १९ वा मन्तक आरम्भ वपोंमें म्त्रलण्ण कारखानाम आग नौ जार दस मागक बच्चाके ग्गान्द वाग और कभा कभा ता चौट्ट चौट्ट पर तर काम ग्िया जाता था। म्त्रामें रात पाग चरता था। अत उनम गतका भा काम ग्िया जाता था। म्त्रियामे भी यन्त हा गमय तर काम ग्िया जाता था। यन्ता हा न्गा उनम एम भारा परिश्रमक काम भा ग्िय जात थे जिनम गरास्की वरजाग म् जाय और व य्वान जमा बन जाय। एग कारण यन्ताका आरम इग्ण्डमें हुआ और बाग्में तमना फाम म्त्रिया म्ग आदि मर म्गाम भा यग हुआ। तारें स्वाडा और डनाकर म्ग बर उद्योगाग म्त्राम अपनातुन बच गय क्पासि यग छाग पमानर उद्योग म्त्रियाग पद्धति पर म्गा तरह जम गय थ।

२ म् जगगपनक रिगार गरागनकी आवाज उठन इग्ण्डमें म्त्रा फकरा एकर म् १८०० म गाम म्आ। परन्तु परिपतिवारा हाग बग गम हाग था। म्त्र कारखानाका माग किग्णामें रिगनग जा गाना म्गामें आना था म् म्त्रार खानीतिक पुग्गारा आरें रोधिया जानी था और पर ना म्त्रा पत्रागतिवारा जवमें हा रता था परन्तु म्त्रारा य म्त्राया जाता

वन देना पड़ता है। लेकिन एम अतिरिक्त कामों लिए बोर्ड वही उम्मीद मजदूर बीच आराम समयता मिश्रण १३ घण्ट अधिक जीर बाक ७।। घण्ट अधिक समय कारखानमें नहा रह सकता। माय ही सुवहन छह वान पट्ट और गामने सात प्रजे वाट काई स्त्री या बाक कारखानमें नहा रखा जा सकता।

४ अमरिखामें १९२८ क फरर रपर स्टण्डिस एक्ट द्वारा कामके घट सप्ताह ४० करोवा ध्यय निधारित किया गया है। इस ध्यय टन धार धार पहुंचना तय हुआ है। ४८ घण्ट सप्ताहके बजाय १९३० म ४४ घट उमर बाक वरमें ४२ घट और फिर ६० घट निश्चित निय गये ह। कायलका गानामें सन् १९२० क बानून द्वारा फास और बलणमें दनिर कामके ७ घट निश्चित निय गय हैं।

५ लेकिन कामके घट कम कर देनेमें ही मजदूरोंका माग भंग नहा समा जाती। जा गानमें स्वतन्त्रता हा और जिनमें मनुष्य बाढामा भा फण्ट करन पर फस सकता हा उनका अच्छा तरह रक रखनर णि गानामें हरा रागनी और उचित मगामतियाता प्ररथ करनर णि और कारखानामें हरा और रागनाके सिवा पगात्र-पागानाका टाक व्यवस्थाक णि बाना बनाय गय ह। बागाकी प्रभावटमें जिन पगथोंका प्रयोग करनम मजदूरका तदु ग्नीको गुनता पत्र उर उपयागता नियध क किया गया है। ग्नीरणक णि तमाम सम्य ग्नीमें पट्ट मफ्ट फाफागमता जा न्वासगइ पनाइ जाना बा और जिनमें मजदूरोंका नार जीर ग्ने राग हा जान थ उगता उपयाग क्क क किया गया ह। बलण कारखानता काम गाने बज ग्क हा जीर जितन बज क्क हा बाकमें क्क क्क गारामके णि ग्म्या और थाग समय राग गय वना बाकको तारायें जीर स्थान मजदूरोंकी गरान और उनर द्वारा निय दुए नुवमानर णि जुर्माग करती कारखान दागवा गताकी मयाग ठकम काम गन पर उगका मजदूर गिननका गति भाति बूटा छोटा छाग बानार णि कानून बा ह। ग्नी गिस मजदूर गाय काइ दुफ्तता हा जाय ता उगता हर्जाता न्क बारमें जीर मिश्रता प्रगृतिर समय अमुक वननर गाय छुटा वनर बारमें भा बानू वन । गामाय मजदूरका भी कामके २८ णि बा १ छुटा पानता अधिार दिया गया है और क्क जग बड उद्योगामें सन् १९५२ क बानू गग प्राविहण पड न्की व्यवस्था की गइ है। ग्नी अतिरिक्त कामारामें मरा दस-ग और गार-गामाकी व्यवस्था भी क्क की ग है।

जिम्मेवारी नही मानी जाती थी। यह कहा जाता था कि कारखानदार और मजदूरोंके बीच एक बराबरका सम्बन्ध है। उस बराबर अनुसार मजदूरका उसका मजदूरी का जाता है। मजदूर काम करता है और उनका बन्धमें उस मजदूरी मिलता है। लेकिन वह बीमार पड़ और दूसरे दिन काम पर नही आता तो उस कारखानदार उसके लिए कोई जिम्मेवारी बात भी अनजाने पर नही रखता बस आरम्भमें कारखानामें काम करत करत मजदूर दुपटनाका गिफार हा जाता ता उसका जिम्मेवारी भी कारखानदार अपने निर पर नही रखता था। फिर भी आखिर ता कारखानदार मनुष्य हा हाता था, इसलिए वह उस अन्यायमें भग्न होता था और भला हाता ता मजदूर रागव्या पर पना ता तब तक उस खानका भी देता था। परन्तु एसा वह पराकार और त्यागा दलित करना था वाननी कतयने रूपमें नहा। इन स्थितिमें काम करतक लिए कौनसे सरकारल मन् १९२३में दकमान कॉम्प्लान्स एक्ट पास किया। उसक बाद इस कानूनम बन्द मुबार निय गय ह। इस कानूनक अनुसार दुपटनामे लगनवागी चणरी ध्यानमें रखकर मजदूरका हवाना देना नियम किया गया है। दुपटनाक कारण मजदूर या न्ति तब काम न कर सक तो उस कतनक अनुसार कुछ हजाना दिया जाता है। यदि मजदूर कामके लिए अग हा जाय तो उस अमुक मात्रामें हजाना दिया जाता है और दुपटनाम मर जाय ता अमुक हजाना दिया जाता है।

१० हजानेकी रकम निर्दिष्ट करतक लिए उद्योगक बन्धनमें सर कारका दरम्य विषय अधिकारा नियुक्त निय जात ह। मजदूरोंकी राहत केबाद इस कानून या एम दूसरे कानूनमें सरकारी अधिकाराकी इमा नारा मजदूरोंकी और बाय-नरायणता पर बना आधार रहता है। हमार मजदूर भा बना अपन अधिकारा पर अमल करानक लिए काफी जाग्रत और जानकार न्ति हुए ह। जहा मजदूर-मध्य मुमकटिन हात ह वहा वे मजदूरोंकी तरफम पह कान अछा तरह कर सक्ते ह।

११ मजदूरोंके रहनेके मकानाका प्रश्न बडा कठिन है। हर दसम जन कारखाना नहा हात एत तब ता मजदूर क्ता और कसा जगहामें रहे कर काम पर जात ह इसका विचार करना किसीका भा पज नहा माना जाता था। निना मकान-मार्तिक भाग कमानक लिए कारखानाके पासक मुहल्लामें मजदूरोंके लिए मकान बनाने ला। इनका ध्यान मुकियाए देतकी तरफ दिखाने न हमार विरामा कमान पर हा अधिक रहता है। जबक बा कुछ नियम-मार्तिकान भा मकान बनाना शुरू किया है। परन्तु उनमें से बहुत कम

६. हमारे जमाने पहला फक्तरा एक्ट मिन १८८१ में पास हुआ। वह १८०२ के दफ्तरीय कानूनन भा बन्द कर था। उनमें ७ बयम नाबिक बालकाका कारखानमें न रखना तय हुआ था। १२ बय तकका उम्रवालाका हा बालक माना गया था और बालकम ९ घण्टम अधिक काम न करवा निश्चय किया गया था। पन्तु उनके बाद आगाका तीर मन्कारका दयाशुद्धि विधाय आम्न हुद है। बालक मरकार और प्रान्ताय मरकारान अला अलग कानून बनाय ह। कामन घटा और बालकाका कामानामें रखनका उम्र उम्र बरमें उम्र कहा जा चका है। फक्तरा एक्टमें बइ सुधार हुए ह और मिन १९८६ के इडियन फक्तरा एक्टन उनमार ममान विभागमें कृत्रिम नपाका मात्रा कितना रखना बढत गरमान मजदूराका बचाना तिन कारखानमें १५० स अधिक मजदूर काम करत हा कहा मजदूराका आरामन समय बढनक लिए ठायानर तगह रना म्त्रियाके छह बयसे कम उम्रक बच्चाको रखनक लिए अच्छ कामराका व्यवस्था करना—आदि बातके लिए नियम बतानका प्रान्ताय सरकाराका अधिकार दिया गया है।

७. कारखानामें काम करनवाला म्त्रियाक लिए कुछ विधाय कानून बनाय गय ह। उपर हम कह चुक ह कि मुबह छह बरस पहल और गामका सात बज बाद म्त्रिया और बालकाका कारखानमें नहा रवा ना सकता। ना म्त्रियाए गरारका हानि पहचानेवाला अथवा अय प्रकारस मन्गनाक हा उनमें म्त्रियाका रगनका मनाहा है। तिन उद्यागामें मानका उम्रना हाता हा उनमें म्त्रिया और १८ बयम कमक तक नहा रगय ना सकत। मन् १० में खानके काममें म्त्रियाकी मख्या घटानका निषय दिया गया और जम्बूर १९०३ में खानामें म्त्रियाके काम कराना लिडु बन्द कर दिया गया।

८. म्त्रियाका प्रमूतिका नमय कुछ न कुछ रहत या मुविधा दनक कानून मिन १९२९ के बाद जग जग प्रान्तामें जग जग बयमें पम हुए है। बवइ प्रान्तमें म्त्रियाका प्रमूतिका आठ मन्ताहका ह्का छग म्त्रिया है। छुटाक म्त्रियामें उन्हें चाडू बतन या प्रतिमि जाठ जान रन ममें न जा कम हा बन्द दिया जाना है। मन्क निवा मजदूर म्त्रियाके छोट बच्चाके लिए कारखानमें पालन रखना अनिवार्य कर दिया है और म्त्रियाका समय पर बच्चाका दूध म्त्रियानक लिए तानका छडा दा जाना है।

९. कारखानामें काम करनवाल माइरके काम करत करत म्त्रिया तुम्नका गिकार हा जाने पर पन् कारखानगामका इम बरमें काइ

जिम्मेदारी नही माना जाती थी। यह कहा जाता था कि कारखानेदार और मजदूरोंके बीच एक करारका सम्बन्ध है। उस करारके अनुसार मजदूरका उमरका मजदूरा दी जाता है। मजदूर काम करना है और उमर बढ़नेमें उस मजदूरी मिलती है। लेकिन वह बीमार पड़ और दूसरे दिन काम पर नही आये तो जम कारखानेदार इसके लिए पाई जिम्मेदारी आन भी अपन सिर पर नही रखता, बस आरम्भमें कारखानेमें काम करने करते मजदूर दुधटनाका गिहार हा जाता तो उसका जिम्मेदारी भा कारखानेदार अपने सिर पर नही रखता था। फिर भी आखिर ता कारखानेदार मनुष्य हा होता था, इसलिए वह उस अस्पतालमें भेज देता था और भोग होता तो मजदूर रोगाग्या पर पडा रह तब तब उस खानको भी देता था। परन्तु ऐसा वह परापकार और त्याका दृष्टिमें करता था वानूनी कर्तव्य रूपमें नही। इस स्थितिमें सुधार करनेके लिए केन्द्रीय सरकारन सन १९२५ में व्यवस्थापक विभाग एक पाम किया। उनका बाद दस कानूनमें उक्त सुधार किये गये है। एक कानूनन अनुसार दुधटनामें लगनवाली चाटका ध्यानमें रखकर मजदूरका हजाना देनेका निणय किया गया है। दुधटनाके कारण मजदूर थोड़ा दिन तब काम न कर सके तो उसे बतनके अनुसार कुछ हजाना दिया जाता है। यदि मजदूर हमेशाके लिए अपंग हा जाये तो उस अमुक भागमें हजाना दिया जाता है और दुधटनामें मर जाये तो अमुक हजाना दिया जाता है।

१० हजानेकी रकम निश्चित करनेके लिए उद्योगद व क्षेत्रोंमें सरकारी तर्फसे विषय अधिकारी नियुक्त किये जाते है। मजदूरोंका राहत देनेका इस कानून या एम डूमर कानूनमें मरवारी अधिपारका इमा नगरी महानुभूति और याय-वरायणता पर बन्धा आधार रहता है। हमारे मजदूर भा अभा अपन अधिकारा पर अमल करानेके लिए बाधा जायते और जानकार नही हुए है। जहा मजदूर-मध मुसगठित हाते है वहा ये मजदूरोंकी तर्फसे यह बाय अन्ध तरह कर गयेत है।

११ मजदूरोंके रहनेके मकानाका प्रश्न बन्धा कर्तित है। हर जगहमें जय कारका गन् हाते एम तब ता मजदूर वहा जीर कसा जगहमें रहे कर काम पर आते है इनका विचार करना कियासा भा पना गहा माता जाता था। निजा मराने मात्तिये भाया बमानके लिए कारखानेके पासके मुसगठमें मजदूरोंके लिए मराने बानन गये। इनका ध्यान गुंवियाए करनेका तर्फ सिन्डिकेट न हाकर किया बमान पर हा अधिन रहता है। तब बाय उक्त सिन्डिकेटन भा मराने बनाता गून् किया है। परन्तु उनमें ग बहुत कम

मकान अच्छ सुभीतेके होने ह । टाटा जापरन एण्ड स्टील कंपनीन अपन मजदूरोके लिए मकानाकी अच्छी व्यवस्था की है । अहमदाबाद म्युनिसिपलिटान अपने मेहतर नीकराने लिए कुछ अच्छ मकान बनवाय ह । अहमदाबाद मजदूर-संघन मजदूरोंके लिए थासे सुभीतेवाले मकान बनवाय ह । इसके पीछे योजना यह है कि किरायके साथ साथ मजदूरोंकी पूजा भी विस्तारमें गैना कर अनमें मजदूर मकानका मालिक बन सक्ता है । परंतु य प्रयास समुद्रम वृत्तके समान कह ना सक्ते ह ।

१२ मजदूरोंकी स्थिति सुधारनकी दिशामें संघ और सरकारी कानून अभी तक तो बहुत योग ही काम कर पाये ह । हमारे देशमें बड़े उद्योग बन्द जा रहे ह और अभी बड़े उद्योग और ज्यादा बढ़ानकी बातें भा बहुत हो रही ह । बड़े उद्योग बन्द विना हम जायिक प्रगति नहीं कर सकेंगे एसा केवल पूजापति ही नहीं परन्तु बहुतसे लोकसेवक भी मानते ह । परन्तु प्रगतिवा माप पूजापतियोंके नफे और मजदूरोंकी तनखानें बढ़नेके जावार पर लगाना बड़ा भूल है । ये बड़े उद्योग जैसे जैसे बन्दे जाते ह वैसे वैसे लाखों आत्मी मानवतापूर्ण जीवनस दूर होने जा रहे ह और भीड़ गनी जनान दुराचार और गराबखोरीकी स्थितिमें धकेले जा रहे ह इसका हम विचार नहीं करते । हम इस बातका खयाल नहीं आता कि मजदूरोंकी अथरी और गनी कोठरियाके भीतर गरीबी और दुराचारमें पिसनेवाल मजदूरोंकी हायकी कितनी प्रचण्ड आग धक रही है ।

आर्थिक सुरक्षितता और बीमा

बीमा-पद्धति

१ मनुष्यके जीर सब व्यवहारका तरह उसका जय-व्यवहार भी अनिश्चितता जीर स्वतन्त्रता बरा रहता है। मृत्युमें अधिक निश्चित अथवा क्वि वस्तु नही यह बात सच होने हुए भा उमके समयन ता अनिश्चितताका तत्त्व है ही। मृत्यु आयगी तरह परन्तु यह निश्चित नहीं होता कि वह कब जायगा। मनुष्य जवानामें विचार करता है कि मैं अपनी आमदनीमें स योग्य भाग बचाकर बचापेन लिए और अपने पुत्रपुत्रके भरण-पोषणके लिए बाका राशि इकट्ठी कर दूंगा। इस तरह कुछ आत्मा कुछ निपाटके लिए आर बुटापेन लिए कुछ न कुछ बचा भा सक्ते ह। परन्तु बटुनर गग कुछ बचा सक्ती स्थिति ही नही होने और कुछ लग अममय हा मर जाते ह। उस समय उनका आश्रित लोग निराधार हो जाते ह। बीमा ऐसा अनिश्चितताका आर्थिक परिणाममें बचनकी एक याचना है। मनुष्य बीमा कंपनीमें जितनी रकमना बीमा कराता है उमका अनुमार उम वापिस फिस्के चुकानी पत्ता ह। माप्यना उम क्या है उमका जराता और उमके माता पिताका स्वास्थ्य क्या है और माता पिता मर गय हा ता वे जितनी उममें मर जा घया बीमा करानवाका आत्मा करता है वह स्वतन्त्रता है या बिना स्वतन्त्रता है शरीरका क्वत धिमाई करनवाका है या आराम ननवाका ह आर कुछ भिन्नतर वह पुत्र-पुत्रिपारा जायन रिनाता है या नग — इन सब बातोंके पर अज्ञान लगाया जाता है कि वह जितन कब तक बिना आर उमका अनुमार क्व विषय किया जाता है कि जमुन रकमक बीमाके लिए उा कर्ममें अमुन रकम चुकाना पत्ता। याना करानवाका मनुष्य यह रकम विषमिल कराना ता उमका मर जान पर — मर हा उमका मरन तक एक-ग विषय हा कराद हा — जितना रकमना बीमा उमका कराया हा उनका रकम उमका वापिसाता या जितना उमका उमका याना लिए लिए हा उम भिन्न जाता ह। स यान क्व तरह हाव ह। कुछ बीमाके ऐसी गन हाता है कि जमुन निश्चित क्वि दूग कर्षित वाक याना। रकम मर करानवाका निर या उता पत्ता क्व मुक्त गन ता

उसके वारिसाको मिले। कुछ बीमोग जीवनभर बीमेकी निश्चित वापिक, छमाही या तिमाही निस्त चुकाना होती ह और कुछमें निश्चित किय हुए पन्ह बीस या पच्चीस वय तक निस्त चुकानके बाद और कुछ देना नहा पडता और बीमकी रकम उसके मरन पर उसके वारिसाको या जिनके नाम उसने वनीयत लिख दी हो उनको मिलती है। बीमेकी कुछ योजनाए एसी होती ह जिनमें बीमा करानवाळे मनुष्यको बीमा कपनीको होनवाले मुनाफमें से जमुक हिस्सा मिलता है।

२ इससे बीमा करानवाले आत्मीको एक तरहकी निश्चिनता और उसके पीछे रहनवाले परिवारके सदस्योको सुरक्षितता जसी मालूम होती ह। हर मनुष्य दीघ जीवन जीनकी इच्छा ता रखता है परंतु दवयोगस यदि वह जन्मी मर जाय तो बीमके कारण अपन पर निभर रहनवाळे लागाक निवाहरी उस चिन्ता नही रहती। केकिन बीमा-कपनिया यह काम किसा परापकार-बुद्धिसे नही करता। उनका तो यह एक घधा होता है क्याकि बीमा करानवाळे सभी मनुष्य जल्दा नही मर जाते और बीमेकी निस्त तो सबसे मिलती ही ह। इन निस्ताकी रकम अमुक हिसाब लगाकर निश्चित की जाती है। हर देशकी मृत्युसख्या देखकर यह हिसाब लगाया जाता है कि जमुक उम्रमें प्रति हजार निस्त आत्मी मरते ह। उस परम यह निश्चिन किया जाता है कि किसी कपनीमें बीमा करानवालोमें से जमुक प्रतिशत लोग जमुक उम्रमें मरेंगे। बीमा कपनीको यह तो निश्चय नही होता कि कौन आत्मा किस उम्रम मरेगा। परन्तु उसे यह अनुमान होता है कि प्रतिवय प्रति हजार पाच या छह जादमी मरेंगे। इस परस वह यह हिसाब लगा सक्ती है कि स्वीकार किये हुए बीमा पर उस प्रतिवय कितना पसा चुकाना पडगा। इसी परस वह वामेकी निस्तकी रकमना सब सामान्य स्तर निश्चित करती है। इस सिद्धातमें जलग अलग ग्राहककी स्थितिके अनसार उसका बीमा स्वीकार करते समय परिवर्तन भी कर लिया जाना है। और किसाके शरीरकी स्थिति खराब हो तो उसका बीमा कपनी अम्बोकार भा कर देता है। बीमा स्वीकार करते समय ग्राहककी जमुक आयु भयागकी सभावना सब सामान्य मृत्युसख्या और वामेका निस्त पर भिन्नवाल पाज आदिवा हिसाब लगाकर बीमा कपनिया काम करता ह।

३ जीवनके बीमेकी तरह मदान और माऊका तथा आग और दुघटनाका वामा करानवाली और समुहमें यात्रा करनवा गहाजाकी दुघटनाका वामा करानेवाली कपनिया भी होती ह। इसक सिवा दुघटनास मत्य तककी

नौमन न भा आय परन्तु गरार त्तना पगु हा ताय कि जात्मा काद काम धवा करल गपफ न रज या काइ धान वधा करने गपम न र ता उमका बामा करलवाग वपनिया ना हाता है।

बामेकी आवश्यकता

८ बामका प्रया त्रिष्टुठ आनुनिक है। उमका जावदकता तज वक्क यत्राद्यागाका मामाजिक अनुगामे रहित गर जिम्नगर प्रतिस्पामि पग हुं २। हमार त्तमों वण-व्यवस्थान सिद्धान्ताक अनुसार तग अपन बाप दाजिके धन करल ये प्राहणे वधा और निश्चित हाता था और अग्य अग्य प्रकारका मामाजिक मया करलवाग वषोकि तग अपन प्राहकाका काम औ मया करनक त्रिष्टुठ प्रव हुण मान तान व जीर दूमरा तरफ य प्राहक अग्न वारागरा जीर सबकाका निबाह भगीभाति हाता रह यह दयनका वध तुए मान जात थ। त्तमक जलका गावामें ग्राम-पचापन यह दयनता था कि जनक गावामें वन तग मार वारागर और मजदूर आन्विका याग-क्षम अठ्ठा तरह चलता है या नहा। त्तमरामें अग्य अग्य धधा करतताग व्यापारिया तथा वारागराका पचापने इम बातका ध्यान रखता था। एसा स्थितिमें बामका जात्र पयनता नर्ण पन्ना थी। साथ हा मम्मिलिन कुटुम्बका प्रयाक कारण बामारा य बुगपेमें आत्मा निगपार नहा हा ताता था। हाता हा तग काम करनका वम कुगत्ता और वम गति रखावाग आत्मो भा मम्मिलिन परिवारमें निभ जाना था। दूरापमें भी मध्यकात्म बधी हुइ प्राहका और वारागराका पचापनका प्रया था। परन्तु द्रम यत्राद्यागाक त्तमाम ता यह स्थिति हा गइ २ कि प्रनिश्चिन त्तना हो आय हाता ह जिामें मुक्तिगम निबाह ग सक। दूमरी तरफ सारी उद्योग-पद्धति एसा है तिममें दुपटना और बन्तरीता नभा यना जतिर रता है। फिर त्तमा जीर भात्तागमें रत्नक कारण बामारा भा समय समय पर आती रहती ह जाग बुगता भा जलन आ जाना ह। ए जमानका आर्थिक प्रगतिका त्तमाना वग्य ताता २। परन्तु जम एउ आर्थिक प्रगति हाता त्रियाइ त्ता है वम वम अधिस्तर आवागारा ताउन अर्थिक अनिश्चिनता और मनगमि नग होना जाना ह। त्तमकि आर्थिक युग्न इम अतिश्चिनता और मत्तेरा उपाय करनक त्रिष्टुठ बामका यात्ता एउ निताग है। बामका यातना अतिश्चिनता आर मत्तरता याग एउ ध्यति पर ग रह कर बीमा-वपनाग रच शास्त्रा पर वग जाना है।

७ परन्तु य बाग वग एग करत सदा ह ग जता बापमें १ हुण वधत पर गता २। जीर एउ त्तमाका गग्य वन वग्य हाता ह।

दवाकी बहुत बड़ी जावादीका जाय एसा जीवन विनानके लिए भी काफी नहीं होता जिसे उचित सुख-सुविधाआवाला माना जा सके। हर साठ कुछ बचत रहनेके बजाय पैसेकी तगो रहती है। एसा होते हुए भी थोड़ी किन्तु निर्यामद गाय हा तो आदमी उसके अनुकूल अपना जीवन बना लेता है। लेकिन आज काल यन्त्रोद्योगोके जमानमें तो जायकी जरा भी निश्चितता नहीं होती। किसान भी समय बकार बनार घरमें बटाका खतरा सिर पर लटकता रहता है। बकारोकी बड़ी पाँज काम प्राप्त करनेके लिए मारी मारी फिरता ही रहती है। कुछ भी बचत न हो सके एसी दैनिक गाय पर काम करनेवाला मजदूर जब बीमार पड़ता है तब उसका स्थिति बहुत बठिन हो जाता है। यामारीम दवादाहवा खर्च उलटा बन जाता है। एसी कठिनाईके समय उसकी जाय बढ हा जाता है। एसे सिवा कारखानमें नरारको घिस डालने वाला मजदूरी बीसपच्चीस साल करनेके बाद बुढापेमें उसका कोई आधार नहीं रहता। कारखानेमें काम करते हुए दुघटना हा गाय और उसके कारण मजदूर अपग बन जाय तो उम हजाना मिलनके कानून तो बंध वा गय है। लेकिन यह हजाना बसूठ करनेके लिए अदानताका सहारा लेना पड़ता है और उसम मजदूरको पूरा लाभ गायद ही मिल पाता है। क्योंकि अदालतम मास्त्रिककी तरफस एसी सफाई पेश की जाती है कि मास्त्रिकन तो नियमके अनुसार मनीनको रक रखा था परन्तु मजदूरकी अपना असावधानीसे दुघटना हुई तब दवाकी जिम्मेदार मास्त्रिक न्यो उठाय ? फिर एक मजदूर यदि दूसर मजदूरकी असावधानीसे ब्राइ चोर पहुचा दे, तो मास्त्रिक उसके लिए भी क्या जिम्मेदार समझा जाय ? इत्यादि। इसलिए मजदूर इस सारी अज्ञातम पडनके बजाय इक्कठी रकम ठकर समझौता कर लेता है। लेकिन एसे समझौतेम निताना मिलना चाहिय उतना मुआवजा उस नहा मिलता। यामारी बुढापा और दुघटना जसी आफत मजदूरके जीवनका दुखी और नीरस बना देनेके क्रि काफा है। लेकिन बकार ता हा सबसे बढा चने और सब जगह फग हुइ आफन है। यकी नई नई खोत और उनम हानवाले नय नय सुधाराम मजदूरके काममें उत्थ-पुथत हुआ ही करती है। किसी भी समय किसी न कित्ता उद्योगके मजदूर बकार बखनेमें जात है जो एकदम किसी दूसर उद्योगम नहा लाय जा सक्ने। कारखानामें जो एकसा और उवलानवाग काम करना पड़ता है उसके कारण भी मजदूर एक कामका छोकर दूसरी तरहका काम टूटते फिरत है। साथ ही उद्योग घबोमें समय-समय पर जा मदा जाती है उसके कारण भी बकारी पदा होता है। कुछ उद्योग जैसे

कामका आगई आर पिजा मीममी हान ह। मीमम निरुक्त जाने पर उस उद्योग काम करनवागना बकार बठना पन्ता है। कुछ धधामें, उदाहरणक लिए, व्याह गान्धियानि निनामें तथा दीपावली आर बन्निब त्वीहारा पर दरजीबे आर मिठाई बनानक धधामें जाणेंमें गरम उपडक धधमें और श्रावणक महानमें बिन्तीने बनानके धधमें अवसरक अनुसार अत्याया तेजी जाना ॥ परन्तु बाणमें मनीक समय पूरा काम नहा मिलता। कुछ धधामें जम जहाजा और रण निन्नामें माण भरने और छापी करनक धधमें काम बहुत ल अनियमित रहता है। ममान बनानक कामम उगतवाल राज घण्ड आणिका भा अनियमित रूपमें काम मिणता है। इय तरह वामारा बनापा दुघटना मीममा तजा मदा कामकी अनियमितता और प्रकारा जाणिका मामना करनक लिए वामका याता करता सुरक्षितताका दृष्टिम करवा हा गया है।

बीमा प्रयावे बोध

६ वामकी प्रयाका सहारा करण ता भविष्यक स्तराने अपना रणना उपाय करत ह परन्तु बीमा-कपनियाका दृष्टि ता नक पर हा रहता ह। रणाका धामा करानक लिए समझानका ब अन एजण करता ह और य एजण अधिख सक्षामें ग्राहक उदान और वामका आग बनानक लिए जा-ताड प्रयत्न करते ह। इगका नताका यह भा हाना है कि वामा करवावाग आणमा पूरी तरण समझ बिना या वामका निम्न चुवानकी अपना गक्ति और स्थिति पर पूरा विचार किय बिना बीमा करा णता है और दा चार निम्न चुवा कर शन जाता ह। एय णग अपन चुवाय हूण पने वा करन ह। जण और मजदूर-बगम एमी घटनाए बहुत अधिख हाता देया जाता ह। आनका बीमा कपनियाका मण एक बण दाण है।

सामाजिक सुरक्षितता

७ परन्तु मण ता व्यक्तिगत वामकी यान ह ॥ जिन सामाजिक बीमा या सामाजिक सुरक्षितता बना जाता है उगका आणय तार मजदूर-वाका उमा वामक गाय णता है जिनिचितताका और गणगी बाना है। एय करण बाणता नियमा बाणता हाता है। वामकी निन्नाका जमुा निन्ना हा मादूरता णमा कराना णता है। अरि जिन्नाका बाणताका पर णता जाता है और वामका निम्नका बाण निन्ना गकरा भा णता है। मक निन्ना म वामका काम पणक वामा-निन्नाका अरि कराना प्रयाका प्रागाहता तदा निन्ना जाता। अर ण गणका तार णता ता रहा है कि

यह जिम्मेदारी सरकारका हा नया विभाग खाल कर उठा लेनी चाहिये। और जीवन-बीमेका काम हमारी राष्ट्रीय सरकारने अपन हाथमें ले भी लिया है। इसकी तडम बल्पना यह है कि चूँकि संपत्ति सार समाजक उपयोगक लिए उत्पन्न की जाती है इसलिए इस सम्पत्तिके उत्पन्न करनवाला पर जा खतर जाते ह उनका वास्तु सार समाज पर पडना चाहिये। यह हनु ध्यानमें रखकर कारखानमें काम करनवाले हर मजदूरक लिए दुषटना बीमारी बलापा और बकारीक सामन कुछ न कुछ गारंटी होनी ही चाहिये। इस तरहके कानून पहले पहल जमनाने सन् १८८० से १८९० के दशकमें बनाय। उसके बाद इंग्लण्ड फ्रांस इटली आदि देशमें एम कानून बन। इन सब कानूनमें बीमारी पद्धतिना आश्रय नही लिया गया। कुछ कानून तो सरकारकी ओरने सीधी मदद देनवाले भी ह। परन्तु इन सबका उद्देश्य मजदूरको अनिश्चितता और खतराके सामन बिलग हा जानसे बचाना और उसका सहायता करना है।

बीवरीज योजना

८ हम इन सब कानूनाकी तफसीलमें न जाकर सामाजिक सुरक्षितताकी उस योजनाकी सक्षिप्त रूपरखा यहा पेन करेंगे जा इंग्लण्डमें सर विलियम वावरीजने ग्रंट फ्रिटनकी सारी जतनाक लिए बनाई है। उसमें हम समझ सकग कि सामाजिक सुरक्षितताम किन किन बातका समावग होता है।

९ सर विलियम बीवरीजकी योजनामें मुख्य सिद्धांत यह रहा है कि सारे राष्ट्रके समस्त स्त्री-पुरुषाका भले के काम पर हा या न हा बीमार हा या चगे हो घूट हा या जवान हा कमसे कम अमुक आय तो होनी ही चाहिये निराधार हालतमें कोई न रहना चाहिये और सारे कुटुम्बको पूरी डाक्टरकी सहायता मिलनी चाहिये। इसमें जाखा और दाता सबधी डाक्टरकी सहायता आ जाती है तथा अस्पताल और नर्सिंग होमकी सेवा शुध्रूपा और बीमारीस अजा हो जानके बाद गरमि आन तक आराम्य भवनमें रहना भी गामिग है। इसके अगवा गरीबको ताजगी और आराम देनकी सुविधाए भी हर नागरिकको मिग एसी व्यवस्था इस योजनाम रखी गई है।

१० इस योजनाके लिए समूची जनसख्याना वर्गीकरण इस तरह किया गया है

(१) नौकरीक करार पर काम करनेवाले सारे मनुष्य। इसमें बतनकी कोई सीमा नही रखी गई है और सारे बतनभागा नौकरा और कारखानाक मजदूरको गामिल किया गया है।

(२) नफ़की दृष्टिमें काम करनेवाले मंत्र मनुष्य। इसमें वतनभागा मन्त्रराजा छानकर मंत्र कारखानदार और जपन जपन ढगसे छान-बड धध करनेवाले गग शामिल ह।

(३) काम कर करनेवाला आयुवागी गृहिणिया — अथवा जा आयुप्राप्ति हा ऐसा कोई काम न करता हा जोर निवाका आयु पानका आयुस कम हा।

(४) काम कर करनेकी आयुवाले अथ गग जा महनताना या गफा समानवा कोई धधा न करते हा। इसमें कोई काम यथा निय बिना व्याज नाह जातिसे घर बठ आय करनेवाले गगाका और दूसरे बिना कारणत काम करने योग्य न रहे गय हा एस गगाका समावेश हाता है।

(५) काम करन योग्य आयुसे छान गग। गाला छान मकनव गिए जा आयु नियत की जाय उनम नीचकी आयुवाले समस्त गगव इसमें शामिल ह।

(६) काम करन योग्य आयुम अधिव आयुव गवा निवृत्त गेग।

११ इस वर्गीकरणम जासक्याह सार म्या, पुरुष जोर बालक आ जात ह। वरम व धनवान मनुष्यारा भा इस याजनाम अग नया रखा गया है। इस याजनाम मित्रवाले गभ सार बगाव लागव गिए उनव वतन या जायना कोई विचार निय बिना एकम रण गय ह। हर वग आयुव गगमाव गिए कामा कराना अनिबाय रखा गया है। कामका रिस्का रकम म्थीम पुरषत गिए यानी गगना गवा गई है। यह प्रति गप्ताह प्रति मनुष्य लगभग ४ गिनिंग २ पैस हाता ह। जा वग आयुव रखा पुरुष बवार बीमार या बूट हाता न उनव कामका विस्तार रकम उन्हें मित्रवाले गभका रकममें ग बाट ग जाता है। अतर वरम दगाता गमूचा उनमक्याका नाच गिय गभ मित्रा न

(१) मरणोत्तर क्रियाके लिए बनी आयुवाले गिए ०० पौण्ड १० ग १ बपबालके गिए १५ पौण्ड २ ग १० बपबालके गिए १० पौण्ड वरम गिबिका आयुवाले गिए पौण्ड।

(२) अशक्त या अपग मनुष्यके लिए बग आयुव अथ गगमाव गिए ४ गिनिंग गका रखा जोर यथा आयुव गग आश्रित गिए प्रति व्यक्ति १६ गिनिंग। दगाताया ४० गिनिंग। धधा करनेवाला गिवागिन रखाका १२ गिनिंग। १८ ग ०१ बपवाले अथ पुरषत गिए ०० गिनिंग ६ जोर १८ बपत बाचर लडक-लडकीर गिए १५ गिनिंग। य रकम ह गप्ता दी जाती ह।

(३) उद्योगके सबधमें जगत्त या अपग होनेवालोको पेंशन पट्ट १३ सप्ताह तक ऊपर गिजी धारा २ के अनुसार जगत्त आन्मीक रूपम गभ मिले और उसके बाद उस इस धाराके मातहत रखा गाय और इतनी पेंशन दा जाय जो उसकी सामान्य आयक ३ के बराबर हो पर प्रति सप्ताह ६ गिजिंग ज्याग न हा।

(४) बेकारोको धारा २ के अनुसार।

(५) बडी आयुवाला कोई व्यक्ति किसी खास घघकी गिक्षा पाना चाहे तो उसके लिए धारा २ के अनुसार परन्तु ज्यादास ज्यादा २६ सप्ताहके लिए।

(६) प्रसूति-कालमें भत्ता हर सप्ताह ३६ गिजिंग - १३ सप्ताह तक।

(७) प्रसूतिकी मदद ४ पौण्ड।

(८) ६० वयसे नीचेकी विधवाको विधवा होनेके बाद १३ सप्ताह तक हर सप्ताह ३६ गिजिंग। फिर जने कोई घघा सीखनके लिए धारा ५ के अनुसार गभ मिलना है। उसक बाद काम न मिले तो बकारीना गभ मिलता ह। जगत्त हो तो जगत्तताका गभ मिलता है आर पेंशनके लायक हो तत्र पशनका लाभ मिलता है।

(९) ६० वयसे नीचेकी आश्रित बालकोवाली विधवाके लिए हर सप्ताह २४ गिजिंग। परन्तु उसकी कमाईको देखकर इस रकमम कमी की जा सकती है। यह रकम उसके विधवापनकी मददके निवा उसे मिलता है।

(१०) बच्चोके लिए माता या पिता कमाता हो तो पट्ट बच्चेके लिए कुठ न दिया जाय। परन्तु वे कमाते ही तो भा एक हा बच्चेका वाज कुठुम्ब पर रखा गया ह। इसीतरफ पट्टे बच्चेके बादके हर बच्चे पर प्रति सप्ताह ८ गिजिंग।

(११) निवृत्ति कालमें पेंशन (२० वयक कामके घाट) ६५ वयके पुरुष और ६० वयकी स्त्रीका यदि अरुल हो तो हर सप्ताह २४ गिजिंग आर दपती हा ता हर सप्ताह ४० गिजिंग। दपतीमें स्त्रा न कमाती हा और पुरपज सहार रहती हो तो स्त्रीका जायु नहा देखी जाता। निवृत्तिके लिए निवृत्त का हुई आय पर काम न छाडकर जो माप्य काम तारी रख उम तितन वय अधिक काम तारी रखा गया हो उतन वपक्ति हिमावम प्रति सप्ताह एक गिजिंग अधिक दिया जाता ह।

(१२) निवृत्ति-कालमें पेंशन (पूरा काम न किया हो उनको) (१) जिहान पेंशनके लिए वामा बराया हा उन्ह पट्ट वय अकेका हर सप्ताह

१४ गिरिंग और दफनाका २५ गिरिंगके हिमायम वारमें हर दो सालमें क्रमस १ गिरिंग और १॥ गिरिंग अधिक तब तक लिया जाय जब तक बद्धि पूरा दर तक न पहुच जाय। (ख) जिन्हाने पेंगनका बामा न कराया हो उन्हें १९५८ तक कुछ न लिया जाय। वारमें ऊपर लिख अनुसार लिया जाय।

१२ प्रयेकका डाक्टरो मन्त्र मिलनक वारमें ऊपर कहा गा चुका है। यह याजना जमलमें आनक वार सरकारका तरफन जारी का गइ अलग अलग तरफकी कष्ट निवारणका सारा योजनाए बढ हा जायगा। इसा तरह जिन्हाने दुपन्ता बीमारा बुतापा आर्थिक तानाका कपनियामें बीम कराम हाण उन सबका भा सरकार ल एगा। कबमन्म काम्पेन्शन एक्टमें इकटठा या एक मुन रतम कर हमार त्तमें तम मजदूर समथोता कर डाता है बस इन्गण्डमें भी बह कर डाता ह। कयाकि मालिक साय अन्तमें लानकी उगवी हिम्मत भी नहा हाता और शक्ति भा नही हाती। तमा तम दग चुन ह निजी बामामें भी बीमा-कपनियके एजण अपना काम त्तानके लिए मजदूरतारा उल्ला-सीधा समथावर बीम करवा त्त ह और वारमें मजदूर बामकी त्तमें न चुका सकनके वारण नुबनानमें पडन हैं। इन सब ज्ञाताका चर्चा करक मर विनियम थावराजन कहा ह कि सामाजिक सुरक्षाकी सारा जिम्मनारी स्वय सरकारवा हा उठा त्तना चाहिय और यह गिफारिंग वा है कि कुछ खचरा एक भाग लागसे एक भाग वातानतारगे जोर एक भाग सरकारा सजानस त्त लिया जाय।

१३ आज इन्गण्डमें सामाजिक सुरक्षाकी याजनाभा पर जा खब हाता है उसने वातराजकी याजनामें कितना सब ज्याता हाता य नीचेक आनडागे मालूम हागा।

मोजूना याजनाप्रति अनगार गच (कराण पौण्डमें)	वाकरीत जनुमार
साग्यारा सजाना	२६७
लागागे बीमेकी किम्मत	६०
मार्तिवागे	८२
भ्याजकी आयग	१५
	<hr/>
	४२
	<hr/>
	१०३

मोजूना याजना अनुसार त्रगाकी बामका विस्तार हए गता प्रोतनू वा १ गिरिंग १० पन्स चुवान पडो य उगत बत्राय बीमरीब योत्रामें प्रति मा अ-२८

सप्ताह ४ गिलिंग ३ पेंस चुकान पडत ह। परन्तु वीवरीजका कहना है कि मौजूदा याजनाआवे अनुसार अनिनाय किस्ताक साथ लोग जो अपना मरजीस बीमा कराते उमकी किस्ताका हिसाव लगायें तो लोग हर सप्ताह लगभग ३ गिलिंग १ पस ता खच करत ही। अब यह मव खच करनका उहें कारण नही रहेगा क्याकि जिम उद्दयस लाग निजी तीर पर बीमा करात थ उसकी बहुत कुछ रक्षा वीवरीजका योजनामें हो जाता ह। इसलिए लोगको असलम तो हर सप्ताह १ गिलिंग २ पस ही ज्यादा देन पडग। सरकार जार मालिकोको भी जा अधिक पसा देना पटना है वह भी उनके आजके कुल खचसे कुछ ही अधिक है। इसलिए थाडा अधिक बोच उठा नेनेमे सारी प्रजाकी सुरक्षा वनी रहती है और किसानो विवश स्थितिम नहा रहना पडता।

योजनाकी भीमासा

१४ इस सारे खचको सद्दातिक छानगीन दर ता इसमें ऐसी कोई बात नही है कि किसीके खचका बोच काइ दूसरा व्यक्ति उठाये। सरकार इस योजनाम जा पसा देती है वह आखिरमें तो कग्दाताआसे ही लिया जाता है और कारगानगर जो योग देत ह वह भी उत्पादन-खच पर चनाया जाता है और अतमें चीनोका उपयोग करनवाशको महंगा बीमतके रूपमें चुकाना पडता है। इस तरह लोगको गभके रूपम जा कुछ मिलता है वह उहीका दिया हुआ हाता है। इतना बहा जा सकता है कि जिस व्यक्तिको जो मित्ता है वह उसका दिया हुआ नहा होता। सब लोग मिलकर जो सम्पत्ति पदा करते ह वही सम्पत्ति उनमें फिरसे बट जानी है। इसमें काइ नई सम्पत्ति उत्पन्न नही होतो। सारे समाजकी कुल जायमें कोई फर नहा पता। पर समाजमें पदा होनवाली दुघटनाए बीमारी बकारी बुढापा तीर बुटुम्बक एकसे अधिक वालकाका मोझ सारे समाज पर पडता है। बड पमानकी उत्पादन पद्धतिका रूप ही एसा हाता है कि उसमें बहुजन समाजके पास कोई स्थायी साधन नहां रहत तीर उन्ह अपनी रातकी मजदूरीसे राजका निर्वाह करना पडता है। उनके पास बिना कमाइने तिनोके लिए कोई बचत नपा होती। इसके सिवा जाजकी समाज रचना एसी है कि उसमें कुटुम्ब या पास पनोसक लोग काई मन्द नहा कर सकत। इसलिए सरकारकी बग विभाग खोलकर एसी व्यवस्था करनी पती है। दुघटनाआ बकारा वानारा तथा बुढापेक समय अमहाय अनुभव करना और एकस ज्यादा बच्चानो पानकी शक्ति न होना—य सब आनककी उत्पादन-पद्धति और उसके

साथ जुट हुए सपत्तिक असमान बटवारेक परिणाम हैं। इसलिए आका सारा परिस्थितियाँ और इस योजनाका मार यह है कि पहले सपत्तिका बटवारा असमान हान दिया जाय बकारी पना हान दी जाय और एसी स्थिति पदा हान दी जाय कि लाग मिलान साधनहीन बन जाय और फिर नम स्थिति उपायक रूपमें एमी राष्ट्रव्यापी याजना बनाकर बना सरकारा विभाग लोका जाय।

१५ इस योजनामें सक्टाका पना हानम रासनक उपाय नहा किय जात। उत्पादनकी नर नर खाज युक्तियाँ और बान-बमर हमगा नर नर बकारी पना बरती रहता है जोर जा बकारी पहलम हानी है उम बरती है। फिर खाना भीतरक काम और कुछ रामायनिक उद्योग गरीखा बहुत ज्यादा धिमाद करनबाक और तरह तरहका बामारिया पदा करनबाक हान है।

१६ इमन सिवा जितना ही याजनाए कषा न बनाई जाय और कितन हा बानून क्या न जारा किय जाय परन्तु व लागत लिए महाधन और मुगक साधन तभा बन सन न जोर उनका अमक चहुन ही सहानुभूतिम उचा भावनाएँ और परमान-श्रुद्धिम किया जाय। प्रथम जितना बना और अष्टपटा हागा उनका हा महानुभूति जिम्मलारा और ध्यक्तिगत भावनाका तत्व उममें बन रणा। बना यत्र रचनाका तरह वन महनमामें यह नहा दसा जाना कि अमुक कामका मनुष्य पर क्या अमर हागा बन्नि यही दसा ताता है कि नियमा और बानूनका पालन हागा है या नहा और लाग फाना टान तरह क्या हुआ है या नहा ?

१७ इमन गिना एमा याजना ता लक्षण जसा बहुत धारा पावनाकाएँ और पना नगा हा या गयता है। परन्तु एमा यह दूर अनेक गारा प्रजाभारा बगा बनाकर और गारमें आकर हा कर गयता है। एगार जन दामें नहा बरना लोग बनाएँ और भूय है और गिने गानकी गिना है उनका भी स्थिति अनुसन्धित या गयता भरा हा है एमी गिना योजनाका गयता ना नहा गिना ता गयता।

सहकारिता आन्दोलन

१ आधुनिक पद्धतिवाली सहकारिताकी याजना मौजूदा पूजावादी और द्रव्यवादी समाजम गरीब मजदूरों और किसानों द्वारा अपनाया गया अपने शोषणको रोकनेका एक उपाय है। यूरोपमें उनीसवीं सदीमें सहकारिताके इस सिद्धान्तके बारेमें इतनी बड़ी आशाएँ बांधी गई थी कि मजदूर यदि अच्छी तरहसे संगठित हो जाय तो जिस उद्योग धर्म वे काम करत हो उसमें से योजकों और व्यवस्थापकोंको निकाल कर सारी योजना आर व्यवस्था अपन हाथमें ले सकते ह। जिस प्रकार प्रजासत्तात्मक तन्त्रमें प्रजाक चुने हुए प्रतिनिधि तन्त्रको चलानकी नीति निर्धारित करत ह और उस तन्त्रकी सारी जिम्मेदारी और खतरे अपने पर लेते ह उसी प्रकार मजदूर संगठित होकर अपन प्रतिनिधियोंके जरिये उद्योग धर्म चला सकते ह। फिर आजकी तरह योजक और व्यवस्थापक उद्योगोंके मालिक जैसे नहीं रह्य बल्कि मजदूरोंके प्रतिनिधियोंमें से ही हाग अथवा उनके वेतनभोगी नौकर हाग। जस राजनीतिक मामलामें प्रजाकी सत्ता चरती है वैसे उद्योग धर्मके मामलामें मजदूरोंकी सत्ता चरनी। परन्तु ये आशाएँ कल्पनामें ही रही ह। किसी किसान जगह इस तरहके प्रयोग किय गय परन्तु वे असफल सिद्ध हुए ह क्योंकि एसे कार्योंके लिए आवश्यक जिम्मेदारीकी ऊँची भावना सावधानी बुद्धि कुशलता तथा समूहके कार्यको अपना कार्य माननकी उन्नत भावना और जादत किमी भी तन्त्रक वेतनभोगी कमचारी बता सक इतना मानव विकास अभी हुआ नहीं है। सामूहिक संचालनम जिस निस्पृहता हृदयकी विशालता और कुशलताकी जरूरत है वह अच्छेसे अच्छा विधान जसवा कानून बनानस भी पदा नहीं होती। अब तक सहकारिताके कार्याने इतनी ही प्रगति की है कि सहकारी भंडारके रूपमें दुकानें चलाई जाय पैसेका लेन देन किया जाय और छोट उत्पादकोंके मालकी सयक्त बिनी और खरीद कर ली जाय।

सहकारी भंडार

२ दुकानदारी या व्यापारमें सहकारिताकी पद्धति जारी करना बहुत जामान है। मजदूर या अथ कुछ लोग एक सहकारी समिति बना के थोडा-सा पसा काम कर लें अपनी जरूरतकी चीजें थोकर खरीद लें और फिर

आपसमें बांट लें — यह इसका सन्तान साधन स्वरूप है। जितना योग इस तरहकी सहकारितामें शामिल होने ह उननाको माल सस्ता मिलता है और इस तरह थोड़ी बचत हा जाती है। लेकिन जब थाक माल खरीदा जाता है उसी समय सब योगाको उसकी जहरत नहा होती, इसक सिवा, किसीको एक तरहका ता दूसरका दूसरा तरहका इस प्रकार तरह तरहकी चाजाका माग होता है। इसके लिए समितिवा अपनी दुकान खोली पडती है। दुकान खोलना मतलब यह है कि ग्राहकाकी विविध मागें पूरी करनेके लिए अलग अलग प्रकारका माल रखा जाय और उसमें से कुछ माल हलकी जातिका रह जाय ता उस बिना नफेके और कभी कभी लागत कीमतसे कम भाव पर भी बचा जाय। इसलिए सहकारी दुकानमें सुरदा माल बचनवाली दूसरी दुकानामे माग सस्ता नहा बचा जाता बल्कि सुरदा दुकानामे भावसे ही बचा जाता है। यामें तान महान छह महीन या बारह महीनमें हकी जातिके पड रहनवाले मालका घाटा बगरा गिनकर सारी दुकानका तापट तयार किया जाता है और जा गढ़ नफा रहता है वह समितिके सार सन्ध्यामें जिसने जितना माग खरीदा हा उसके हिसाबसे बांट लिया जाता है। सार सन्ध्याकी खरीदका हिनाय खनना काम जरा टडा है। इसलिए हर सन्ध्याका एक बाड रखा जाता है और सन्ध्या जा गराय करता है वह उममें दज कर दी जाती है। और उसक कुल जाड परसे मुनाफा हिसाबका हिसाब लगाया जाता है। सहकारी दुकानमे माग सन्धा बचनका बजाय बाजारक पुनर भावसे बचकर यामें मुनाफा दनन का लाभ होत ह एक तो महाराज दुकानको अचानक घाटा हा जाय ता दुकान एनाएक टूट नही जाती और दूसरा, समितिके सन्ध्याका रर तापान समय याग याही जा बचन हाता है उनका पता नहा करता फिरन तीन महीन या छह महानमें मुनाफा जा लिया मिश्रता है उसका रकम बरा हाता कारण व उस बचाकर रण करत ह। इस तरहका बचनका प्रोत्साहन दनन गिग सहकारी दुकान या भंडारण साथ साथ समितिके सन्ध्याका छापी छाया अमानें रखना काम नी गुर किया जाता है। महाराजी दुकानमे गविण्य बर भी गाना जाता ह।

महाराजी दुकानमे दूनाय बना लान य है कि उममें गारा बिना गणन पगग बा जाती है। गानका दुकानामेक यका, माग उधार मिश्रता है तय जायमी अरन गय पर बाकी तय विषयण नही रण रचना थोर बरन बार बिना कारण हा विदूय गार नी कर डालता है। फिर महाराजी

दुकानमें मात्र नकद पैसे लेना पड़ता है इसलिए कुछ विफायत अपने-आप हो जाती है और बहुतसा बिगाट अपने-आप रुक जाता है।

४ कुछ सहकारी दुकानवाले थोड़ी ज्यादा कीमतके माल बचकर ज्यादा बड़ा नफा बांटते हैं। समितिने सदस्याको यह बात मालूम होती है, फिर भी वे इसे पसन्द करते हैं, क्योंकि फुटकर खरीद करले समय उह जो ज्यादा पसा देना पड़ता है वह नफके रूपमें इकट्ठा वापिस मिल जाता है। बचत करनका यह भा एक अनुकूल उपाय हो जाता है। छोटी छोटी फुटकर रकमें दनी पड़ें तो अधिक बाझ जसा नहीं लगता। परन्तु एकसाथ बड़ी रकम मिल जाय तो वह बहुत उपयोगी हो जाती है।

५ इन्होंने ऐसे सहकारी भंडारोंका काम बड़े पैमाने पर होता है। कुछ सहकारी भंडार तो इतने बड़े हैं कि उन्होंने अपने भंडारमें बेचनकी चीजाके छोटे छोटे कारखाने भी खोले हैं। अर्थात् ये कारखाने व निजी कारखानेद्वाराकी तरह मौजूद पद्धतिसे ही चलाते हैं। अतएव इतना ही है कि कारखानेका मुनाफा सहकारी समितिके सदस्याको मिलता है। परन्तु यह तो गायर-होल्डरोंको जाइंट-स्टॉक कम्पनीके नफमें से हिस्सा मिलने जसा ही हुआ। जहां निजी दुकानदार कुंठा न हो और गरीबोंसे बहुत ज्यादा मुनाफा लेते हों वहां सहकारी भंडारोंकी खास आवश्यकता मानी जाती है। कहा जाता है कि अमेरिकामें एस सहकारी भंडार सफल नहीं होते क्योंकि वहांके दुकानदार अपने ग्राहकोंका अच्छा सत्कार दे सकते हैं। हमारे देशमें शहरोंके मजदूर-मुहल्लामें और गांवोंके पिछड़े हुए प्रदेशोंमें एस सहकारी भंडारोंकी बहुत जरूरत है। क्योंकि वहां दुकानें लगाकर बैठनवाले छोटे-यापारी माल महंगा ही नहीं बचते बल्कि हठकी नीतिके भा बचते हैं।

कज देनेवाली सहकारी समितिया

६ ऐसा कहा जा सकता है कि पसा उधार देनेवाली सहकारी समितियोंके मामलेमें हमनीने नतत्व ग्रहण किया है। वहां किसानों और अकिसानोंकी दो प्रकारकी पसा उधार देनेवाली सहकारी समितियां जन्म हुयी हैं। गलज नामक एक आत्मीने एक सहकारी समिति छान् दुकानदारा और कारीगरोंकी र्म हेतुम खोली कि उन लोगोंको अच्छी गती पर छोटे छोटे कज मिल सकें। उसने सदस्यामें से ही पसा इकट्ठा करके पूजा खड़ा की और उस पूजाके बज पर बाहरके लोगोंमें दो तीन गुनी रकम व्याजसे ली। एसा तय किया गया कि बाहरके आत्मीयोंके ला

हुइ रखमव लिए समिति के मार मन्स्य सामूहिक रूपमें और व्यक्तिगत रूपमें भी जिम्मेदार माने जायें। ऐसी व्यक्तिगत और नामूहिक जिम्मेदारता गुल्ज समिति की सफलता के लिए जरूरी तन समझता ह। क्योंकि समिति का उधार का हुइ पूरी रखमने लिए भारी समिति और समिति का प्रत्येक मन्स्य व्यक्तिगत रूपमें जिम्मेदार होना कारण हर व्यक्ति समिति का व्ययस्था और कामकाज पर अच्छा तरह ध्यान रखता ह। इस तरह सन्स्य की अपना और बाहरम उधार का हुइ रखमका जा पूजा चबटा जाता है उनमें स जिन सन्स्य का जारत हा उह छोटा छोटी रखम धानी अवधि के लिए यात्रम का जाता है। वगैरे बाहरम उधार का हुइ रखम निम व्याज पर का जाता है उसम व्याजकी कुछ अधिक दर उस जातमाम की जाता है जिन पसा उधार दिया जाता है। फिर भी वह आत्मी दूगरी जाहन जिन यात्र पर पसा उधार लाना है उसम ता समिति के यात्रका दर कम ही जानता है। और समिति का ध्यय ता यही जानता है कि उनम सन्स्य का कम यात्रम पसा मित्र। कम पढनिमें समिति के सभी सन्स्य का समुक्त मायका उपयोग होना ह। जमनामें सन्स्य पनाने पर उत्पादन बरनवाए वगैरे कम तरहका महाराग समिति का बहुत प्रिय हा तइ ह और व हजारम तातामें बन गई ह। उनमें स कुछ समिति का तो बहुत यनी ह। उनम सन्स्य भा वने स व्यापारा और उत्पादन जान ह और व बर पकाता तरह काम करनी ह।

विज्ञानों की सहकारी समितियां

७ जमनीत सहकारिता जातमाम दूगरी बर नेता रखसुन हा जाना है। उनम विज्ञान का सहकारी समिति का बनानका सिगाम बहुत कम काम किया ह। उनका सारा ध्यानता ता गुल्जका महाराग समिति का बना ही ह। परन्तु पूजा चबटी बरामें जान धान महाराग मन्स्य का ह। इसम सिवा गुल्जकी समिति का धारागरा और व्यापारिया का जाना ह इसलिए उनमें धान अवधि के बरम काम चर जाता ह जब कि व समिति का विज्ञान का ज्ञान के बाण उनमें कम काम कर बरना अवधि का बर ता दना हा पना ह। जमनीमें सना महाराग समिति का ह और बाधम जना विज्ञान सन्स्य सिवा न किया समिति के सन्स्य बन सग ह।

इसम बगवा, जमनामें सन्स्य मात्र सार बीजार करीत तजार माल बरने और जो मगानें एव व्यक्ति न करीत जाना हा सन्स्य सिवा महाराग और उनका उत्पादन बरनवाए सिवा नी महाराग समिति का सन्स्य, मन्स्य के बा

डेमाकवा सहकारी आंदोलन

८ परन्तु सहकारी समितियाकी प्रवृत्तिमें सबसे आगे बढ़ा डेमाक है। और उससे दूसरे नम्बर पर नार्वे और स्वीडन ह। किसानों और गापालकोंने सहकारी पद्धतिसे बड़े पमान पर दूध इक उसका मकानन और दूसरा चीजें बनानमें और उह विदेशोंको भ सफलता प्राप्त की है। इसके सिवा सहकारी पद्धतिसे वे अण्डोंके भी बड़ा व्यापार करते ह। डेमाकम सहकारी पद्धतिके बहुत सफल होनेके मुख्य कारण ये ह

(१) वहाके ग्रामवासी खतीके साथ गोपाननका धंधा करते ह। हर छोटा किसान अपना जमीनका स्वतंत्र मालिक है।

(२) सब किसान पढ़ लिख ह।

(३) बड़ी आयुके किसानोंका अपना कुटुम्ब और ग्राम-जीवन सस्कारी और शास्त्रीय पद्धतिसे विताना सिखाने लिए लोकमालाए बहुत अच्छी और सफल रीतिमें चलायी जाती ह। बड़ी उमरके किसानोंको इन लोक-शास्त्रोंमें ग्राम-जीवन और राष्ट्र-जीवनका सामूहिक जिम्मेदारियाकी कल्पना बहुत अच्छे ढंगसे कराया जाती है।

(४) वहाकी सहकारी समितिया व्यापारिक समितिया हैं। वे किसानोंका सारी फसल खरी लेती ह और उस अच्छी तरह बाजारके लायक बनाकर थाकवद बेच देता ह। इसके सिवा वे किसानोंके घरेलू उपयोगकी और खतीके उपयोगकी सारी वस्तुए थाकवद सस्कारी भंडारोंके जरिये उनके पास पहुंचाती ह। ये सहकारी समितिया स्थानीय बकास बज लेती ह और उस बजके लिए समितिसे सारे सन्स्य व्यक्तिगत रूपमें और सामूहिक रूपमें जिम्मेदार मान जाते ह। वकोंमें सदस्योंका पसा भी काफी जमा रहता है इसलिए एक तरहसे देखा जाय तो सन्स्यका अपना रूपया ही उह उधार दिया जाना है। इसलिए हर सन्स्यका पस लौटानकी बहुत चिंता रहती ह।

हमारे देशमें सहकारी आंदोलन

९ अब हम यह देखग कि हमारे देशमें सहकारिता आंदोलनने कितना प्रगति की है। यूरोपके देशोंमें सहकारिताना आन्दोलन सन् १८५५ के बाद शुरू हुआ। उस प्रकारकी सहकारिताका प्रवृत्ति हमारे देशमें सन १९०० के बाद दिखाई पन्ती है। सहकारी समितियासे सम्बंधित पहला कानून हमारे देशमें १९०६ में पास हुआ। इस कानूनका हतु किसानोंको करीबग

और दूसरे छोटी आयवाड़े ओगामें किफायत स्वावलम्बन और सहकारी वृत्तिका प्रोत्साहन दना' था। सहकारिताका आन्दोलन चत्तानक लिए प्रान्तीय सरकारसे रजिस्ट्रार नियुक्त करनका सिफारिश का गइ और उनक जरिय जमनाकी गुल्ज और रफमन समितियाक ढग पर हमार दगम सहकारी समितिया स्थापित होन लगा। किसानान कज और बड याजक बाजका हज्जा करनक लिए उह सस्ती दरस पसा उधार दना इन सहकारी समितियाका उद्देश्य था। रजिस्ट्रार किसानान कजका बग कारण ता उनका खेता और ग्रामोद्यागाकी तबाही थी। इमलिए जय तक यतामें सुधार न हो और किसानानी आमना न बग तय तक मन्म ब्याज पर न्यि जानवाड़े पमसे उनका प्रश्न हट होनवाडा नहा था। इमलिए बहुतसी सहकारी समितिया अयफल सिद्ध हुइ। सन् १९२१ में इस काननमें कुछ मुधार करक इन समितियाका कानूनी मायना देनका निणय किया गया और रजिस्ट्रारगे सहकारी आन्दोलन ज्याग जास्त चगनका बहा गया। इन लागाने दगावस समितियाकी सख्या ता बनी परन्तु घर करक बड हुए मूल रोगका बोई इलाज नहा हुआ। इसलिए सहकारिताक आन्तानन बाइ जा रहा पकडा। सन् १९१९ क मुधारक बग सहकारिताका काम प्रान्तीय सरकारको सौंपा गया। इमलिए बम्बैन सन १९२० में मगन सन् १९२२ में और बिहार तथा उडासान सन् १९३५ में सहकारी समितियाके मन्वचमें कानून पाम न्यि।

हमारी पचसपीय याजनाआम सहकारी आन्दोलनक विभाग पर विगय जोर दिया जाता है। १९५९-६० में इग आन्दोलनी स्थिति इन प्रकार थी

भारतनी सहकारी समितियां

(१९५०-६०)

समितियाकी सरना	मन्व्याकी मन्वा	राम करनक लिए पूजा (वर्गिक बपित्त)
१३४९०	०२१३०००	१०८३६७ लाख र०

ऊपरका कुछ ३१३४९९ मन्वारी समितियामें स ७२ प्रतिगन अर्थात् २२४९४३ ऋण दनेयाग समितिया थीं। बाकी रही २८ प्रतिगन अर्थात् ८८५५६ समितिया ऋण न देनयाग थीं।

ऋण दनयागी समितियामें स ०१ प्रतिगन गेता सन्धिघा ऋण देनयागी थी। इग प्रकार अविचार समितियां ऋण दनयाग ही थीं। अर

उहे विविध कायकारी समितिया बनानेका प्रयत्न चल रहा है तथा अय क्षेत्रोम भी सहकारी समितिया स्थापित करनेका प्रयत्न हो रहा है।

१० रिजर्व बककी स्थापना हो जानेके बाद किसानको पसा उधार देनेके सम्बन्धमें योजना बनानेका काम उस सीपा गया है। इस आन्दोलनकी जाच करके रिजर्व बककी तरफस एक रिपोर्ट प्रकाशित की गई है। इस रिपोर्टमें बताया गया है कि गावने लोगका धोखा हटानेके लिये सहकारी आन्दोलनने अब तक जो काम किया है वह बहुत निराशाजनक है। लेकिन भूतकाठम मिश्री हुइ निष्फलताके बावजूद सिफ सस्ते पसेका प्रबन्ध करके ही नहीं बल्कि इस आन्दोलनने गावका पुनरचनाका एक बड़ा साधन बना कर इसका विकास करनेका जरूरत है। किसानामें सहकारिता-आन्दोलन आग न बन सकनेके दो कारण हैं (१) किसानकी आमदनीकी अत्यन्त अनिश्चितता और (२) स्वावलम्बता तथा एव-दूसरेके सहायता देनेकी वृत्ति जो सच्चे सहयोगका प्राण है बढानकी तरफ सहकारिता-आन्दोलनने कोई ध्यान ही नहीं दिया या लोगामें रही इस भावनाको वह उगा न सका। सहकारिता कोई मस्ते याज पर रुपया देनेका ही आन्दोलन नहीं है। यह तो लोगामें घुठमिल जान उनका संगठन करन और उनमें एक दूसरेके साथ मिश्रकर सामूहिक जिम्मेदारिया उठानकी गति पदा करनेका आन्दोलन है। लेकिन सहकारिता-आन्दोलनके नेताओका — सरकारी अपमरा और सरकारी कार्यकर्ताओका — इस बातकी तरफ बहुत ही कम ध्यान गया है। मौजूदा सहकारिता-आन्दोलनकी अस कमजोरीकी तरफ रिजर्व बककी रिपोर्टमें ध्यान खींचा गया है। उसमें यह भी सिफारिश की गई है कि आजकी सहकारी समितिया मुख्यतः पसा उधार देनेका ही काम करती हैं इससे बचाय उह कई हतु ध्यानमें रखकर काम करना चाहिये। समिति केवल पसा उधार देनेका ही काम न करे बल्कि साथ साथ गाववालाके जीवनको सुधारनेमें भी सहायता दे किसानको शुद्ध और अच्छी जातिके बीज दे उनके औजारामें क्या क्या सुधार हान चाहिये इसकी खोज करके ज्यादा अच्छा काम देनेका औजार जुटा दे उनमें पचायतकी प्रथा जारी करके उह मुक्तमेवाजीने बचा ले किसानके धिसरे हुए सतको एकर करके सामुदायिक खेतीका योजना बनाय उह स्वच्छता और स्वास्थ्यकी रक्षाकी व्यावहारिक शिक्षा दे और स्त्रियाके लिए प्रसूतिके समय दाइका आर सत्रके लिए दामाराक मौसममें डाक्टरी सहायताका व्यवस्था करे। सत्रमें ग्राम्य जीवनका ऊचा उगानके लिए और उस स्वच्छ और खुशहाल बनानेके

लिए जा जो काम करनेकी जरूरत है उन सभका केन्द्र प्रत्यक्ष सहकारी समितिको बनना चाहिये।

११ हमारे देशमें राज खेतीकी इनादमी आधिन दृष्टिसे लाभकारी नहा ह। हर किसानकी जमीन एक ंगट नहा हाती वलिन चारा तरफ विखरी हुई होता है। इसने निजा खतीकी इकाई छोटी होनेके कारण स्वभावत उसमें खतीके साधनाकी कमी रहती है। यह कठिनाई और इस तरहकी खताकी अन्ध कई कठिनाइया अजर थो थो निगान मिश्रकर सहकारी पद्धतिस खती कर ता दूर हो सक्ती ह। गापालनका धंधा भी उस करन वाला किसान हा या ग्याग सहकारी पद्धतिस करनेकी जरूरत है। क्यावि अच्छी नमन्के साडकी व्यवस्था अच्छा चराईकी व्यवस्था मूख डोराने लिए चरागाहका प्रबंध हर पामचाग उगाने और माइलज बनानकी व्यवस्था — य सब काम वयन्तिस ग्यागान लिए जनमभव ह और सहकारी पद्धतिस वुन अच्छी तरह और मस्तेमें हा करते ह।

१२ इस प्रकार इन प्रवृत्तिका क्षत्र बहुत विगात है। लागानी तयारी हो ता किसी भी धन्धमें सहकारी पद्धतिस काम हा सकता है। हमारे देशमें क्यासके जिन प्रम तथा गकरख कारणाने सहकारी पद्धति पर मुग्ध ंग ह। छोटे उदागामें खास तौर पर इस पद्धतिस काम करना लाभदायक है।

इस आदोशनका उद्देश्य आधिक लाभ साध जीवानी उन्नति और विकास गाधना भी समझना चाहिये। और यह उन्नति परम्पर गणवता तथा एकत्रित श्रमसे सिद्ध करना चाहिये।

समानता और याय, समय और सबय सगठन और स्वयंसेवक समान अधिकार और समान अवसर प्रत्यक्ष सभन लिए और मत्र प्रत्यक्ष लिए इन प्रसारकी गामूहिक जिम्मेदारी — य सब इस आन्तक सिद्धान्त मान जात ह। इह ध्यानमें रखकर हा यह गान्ठान चलाया जाना चाहिये।

मा डगत जब इन आन्तक विरमित करनेका — चगानका प्रयत्न किया जाता है। इन काममें सरकारी आकषन मापान और मन् दना चाहिय परन्तु मट ना दना चाहिय कि उमक बाजार नीध यह आन्तक द्य न पाय। मा गान्ठाना निगाम और मचाला लागामें स ना हागा पाहिये। लागामें सहयोगका भावना और उगना गमन विनी बडगा जननी ही ंग बनना उन्नति हाता। सरकारी सगणता और नियम ता पीनर लिए बाडना काम करता है। यी भावना और समझना पीया न हो ता क्या गदायज और नियमना थानग बाई पान नगी हाता।

सरकारी आय-व्यय

सरकारी खर्चका हतु

१ कुछ काय ऐसे होते ह जिह प्रत्यक मनुष्य स्वतन रूपसे करे या करावे तो उनका खर्च बहुत बढ जाय। इस कारण कम खर्चमें काम करनेके उद्देश्यसे एस काय समस्त प्रजाकी जोरसे सरकार करती है। उदाहरणके त्रिए शिक्षा। सब ग्रेग स्वतन शिक्षक रखकर अपने बालकोको शिक्षा दें तो खर्च बहुत अधिक जायेगा। इसलिए सबकी ओरसे सरकार शिक्षाकी व्यवस्था कर देती है और इस कायकी व्यवस्थामें होनवाठ खर्चके त्रिए प्रजासे कर लती है। परन्तु सरकारको इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि प्रजाको शिक्षाका पूरा लाभ मिले। इसके सिवा यह काय सामूहिक रूपम होता है इसलिए कम पैसेमें प्रजाको अधिक लाभ मिलना चाहिये। यही सिद्धांत राज्यके सब कार्योंको लागू होता है। सरकारका गुण सूयके जसा होना चाहिये। सरकार जितना प्रजासे ले उससे अधिक प्रजाको वापिस दे जिस प्रकार सूय पानी चूसता है और बरसातके रूपमें उस बरसा कर अनक गुना लाभ दुनियाको पहुंचाता है। इसी प्रकार राज्यका कर केनका अथवा आय करनेका उद्देश्य प्रजाको अधिकसे अधिक लाभ पहुंचाना होना चाहिये।

व्यक्ति और सरकारके आय-व्ययमें अंतर

२ व्यक्ति और सरकारके आय-व्ययमें सबसे बडा अन्तर यह है कि व्यक्तिको अपनी आय देखकर खर्च करना होता है और आयके अनुपातमें ही खर्च करना पडता है। व्यक्तिको अपनी जायके अनुसार खर्चकी मर्यादा रखनी पडती है। इसक विपरीत सरकार पहले खर्चकी मर्यादा तय करती है और बादमें उसके हिसाबसे आय करनेकी बात सोचती है। प्रजाकी कर भरनकी गकिनकी दृष्टिसे सरकारको भी कुछ जग तक व्यक्तिका नियम लागू होता है। परन्तु सरकार अधिक आय प्राप्त करनेके त्रिए प्रजा पर कर लगा सक्ती है इतनी ह तक सरकारका खर्च व्यक्तिक खर्चसे अलग पडता है। व्यक्ति चाहे उस समय अपनी आय नहीं बना सकता। सरकार भी अमर्यान्तित रूपमें कर नहा बना मक्ती। परन्तु सरकारका मर्यान्त और व्यक्तिको मर्यान्तमें

भेद है। यदि सरकारी तरह व्यक्ति भी अपनी आय बना सके तो दोनों आय-व्ययमें कोई भेद न रहे।

सरकारके वतव्य और सच

३ ऐडम स्मिथके मतानुसार सरकारके वतव्य तीन प्रकारके हैं

(१) विदेशी जाय्रमणसे देनाका रक्षा करना और देनाके भीतरी लडाइयोंका मिटा कर शांति और सुव्यवस्था स्थापित करना।

(२) व्यक्ति और व्यक्तिके बीच जाय करना।

(३) एसा सामाजिक काम करना जो व्यक्तिसे रहा हो सकता और जो सारे समाजके लिए उपयोग हो।

४ उपरोक्त तीन वतव्याके अनुसार राष्ट्रके सच भी तीन विभाग किये जा सकते हैं

(१) सुरक्षा विभागका सच।

(२) जाय विभागका सच।

(३) सावजनिक मस्यायें चलानेका तथा सामाजिक काम करनेका सच।

पहले विभागमें जल्सेना स्थलमेना और वायुसैनिके सचका दूसरे विभागमें पुलिस अग्राहता तथा जल्के सचका तथा तीसरे विभागमें शिक्षा व्यापार-उद्योग और अन्य सावजनिक कार्योंके सचका समावेश होता है।

५ आधुनिक समयमें राष्ट्रके कार्योंका क्षेत्र अत्यन्त विस्तार हो गया है इसलिए इन तीनों विभागमें सच बहुत ज्यादा बन गया है। मृगया-वृत्ति अथवा गोपवृत्तिवाल समाजमें प्रत्येक मनुष्य सिवाहा होता था इसलिए सुरक्षाका सच बहुत कम होता था। परन्तु आज तो सुरक्षाका काम बहुत बर्चीला हो गया है। जाय विभागका सच भी इतना ही बन गया है। परन्तु इनमें से बहुतना सच दाना फासि ला जानवागी म्याम्प-मार्गमें स निवारण लिया जाता है। इतना जाय विभागका काम तुम्हारे त्तना बर्चीला नहीं होता। सावजनिक मस्यायें चलानेका तथा सावजनिक काम करनेका सच भी देनाके उद्योग-धंधारा आधार राष्ट्री सहायता पर अधिक होना कारण बढ़ा ही है।

सरकारी आयके साधन

१ आधुनिक समयमें किसी भी सम्य सरकारी आयके साधनोंके तीन विभाग किय जाते ह (१) प्रथम और मुख्य विभाग करका होता है, (२) दूसरा फीस (गुल्क) का और (३) तीसरा कीमतका या सम्पत्तिके विक्रयका।

(१) कर सरकारके क्तव्य पूरे करनमें हानवाले खचके लिए सरकारी सत्ताके बल पर व्यक्ति या समुदायकी सम्पत्तिमें स प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूपमें जो भाग लिया जाता है उसे कर कहा जाता है। इस विभागमें उत्पत्ति कर जमीन-कर नमक-कर आयात और निर्यात-कर आदि समस्त आयकी वस्तुआ पर लगाय जानवाये करका समावेग होता है। इन सबम एक सामान्य लक्षण यह है कि सरकारके क्तव्य पूरे करनमें होनेवाले खचके लिए व्यक्तिकी सम्पत्तिका अमुक भाग अनिवाय रूपमें लिया जाता है भू ही कर उगाहनकी पद्धति चाहे जो हो।

(२) फास सरकारी आयका दूसरा साधन फीस है। सरकारके कुछ काय विशिष्ट व्यक्तियोंके लाभके लिए हाते ह। इसलिए उन पर सरकार जो खच करती है वह फासके रूपमें सम्बन्धित व्यक्तियोंसे लिया जाता है। दीवानी अदालतमें दादी और प्रतिवादीस ली जानेवाली कोर्टफीस दस्तावेज रजिस्टर्ड करानकी फीस उत्तराधिकारके प्रमाणपत्रकी फीस तथा शिक्षाकी व्यवस्थाके बदलेमें विद्यार्थियोंसे ली जानेवाला फीससे प्राप्त आयका इस विभागमें समावेग होता है। इस आयके प्रकारमें विशेषता यह है कि सरकार जो काम करती है उसके बदलेम यह फीस उसे मित्ती है। अत यह काम करनके लिए जितना पसा खच हो उतनी या उससे कम फीस और कभी कभी मुनाफा करनके उद्देश्यसे खचस भी अधिक फीस रखी जाती है। इस दृष्टिस यह आय कराकी आयस भिन्न है।

(३) कीमत अथवा सम्पत्तिका विक्रय सरकारी आयका तीसरा साधन कीमत अथवा सम्पत्तिका विक्रय है। सरकार कुछ सम्पत्ति उत्पन्न करती है। और जिस प्रकार कोई निजी व्यक्ति अपना माल बचकर आय या मुनाफा करता है उसी प्रकार सरकार भी निजी व्यक्तिकी तरह अमुक

माल ग्राहकों को बचकर उससे आय या मुनाफा करती है। कुछ कारखाने सरकार स्वयं चलाने हैं। उसी तरह कभी कभी सरकार जमीनकी मालिक होती है और उम जमीनका उमे भाग अथवा लगान मिलता है। सरकारने अधिनारमें जगह होने ह दिनमें पदा हानवाली चीजें बचनसे प्रनिकप सरकारका आय हानी रहती है। इसी प्रकार सरकार नलीत नहरें ननराल कर सनचार्दके लिए नोगाकी पानी दती है और इसन आय प्राप्त करती है। सरकार अपनी रेकें चलती है और अपनी रानें चठाती । इन दोनोंसे भी सरकारका पसा मिलता है। सक्षेपमें सरकार स्वामी अथवा कारखानागारक रूपमें जा आय करती है उम सवका समावंग इस वनभागमें हाता है।

२ पुरान जमानमें इस प्रकारकी आयका वनप महत्व था। यूरापमें नागीर-भदनि युगमें राजाका प्रजा पर कर नहा लगाना पढता था क्यारन राजका सन राजाके स्वामित्ववागी जमीनकी पनाचारमे ननरल आता था। इमक ननवा नजरान वगरास भी राजाका आय हानी था। परन्तु आगरे युगमें समस्त सम्य राष्ट्रामें आयका दूसरा और तानरा साधन अपक्षाटन कम महत्तरा हो गया है। और सरकारका मुख्य आय प्रजा पर लगाय गये करासे ही हाता है।

अय हम करारे वनपमें वनचार करणे।

•

कर-निर्धारण

करका सामाय स्वरूप

१ देशम सुयवस्था जीर गति बनाय रखनेका और लोगको दूसरी कई तरहका सामूहिक सुविधाए प्रदान करनेका खच निवारणक लिए हर देशकी सरकार लोगसे कर लेती है। शहर या कस्बकी म्युनिसिपलिटिया जीर जिलेके लोक बोड भी लोगकी ज सेवाए करते ह उनके बदलेमे उनसे कर लेते ह। इसलिए एक तरहस देखें तो कर सरकारको या स्थानीय सस्थाआको उनकी सवाआके बदलेमें निया जानवाला मेहनताना अथवा बदला ह। केकिन हम दूसरी सेवाआ जीर कायके बदलेमें जो मेहनताना देत ह उसमें तथा सरकार जीर स्थानाय सस्थाआको जो कर चुकात ह उसम एक बहुत बडा भद हे। दूसरी सेवा या कायका बदला तो उसा मूरतम दिया जाता है जन वह ली जाती है परन्तु कर तो अनिवाय रूपमें देना पडता है। हम पत्र लिखें या तार द या रेलम यात्रा कर ता पत्र पर टाकका टिकट गमाना पडता है तारके दाम देन होत ह या रेलका टिकट लेना पडता है। परन्तु सरकार पुलिस या सेना रखे म्युनिसिपलिटी रास्ते साफ स्वच्छ रखे या गेशनीका प्रबध करे तो उसका सीधा लाभ हम लें या न लें ता भी उसके बन्लेके रूपमें हमें अनिवाय कर या म्युनिसिपल टक्स चकाना पन्ता है। क्योंकि ये सावजनिक सेवाए और काय एसे ह जिनका इन प्रकार हिसाव लगाना समभव नही कि उनस किसन कितना लाभ उठाया। सरकार जो पुलिस जीर सेना रखती है उससे जिसके जानमात्रका कितनी रक्षा हुई यह कहना असभव है। इसलिए पुलिस जार सेनाका खच जीर इसी तरहके दूसरे खच अमुक हिसाबसे सब पर डाठ दिय जाते ह। यह सच है कि यह वटवारा न्यायपूण ढगसे होना चाहिय। करकी यह न्यायपूण मात्रा निर्धारित करनेक प्रश्न पर बड बड वाद विवाह हुए ह।

२ एस कुछ उदाहरण टूड जा सकत ह जिनसे पता चल कि इम प्रकारकी सामूहिक सवाआक कर भा अमक वग पर या उन सवाआक लनवाला पर ही लगाये जा सकत हैं। जस आग बचानक बम्बे रखनका खच उन्हा गोगा पर क्या न डान्ना चाहिय जो अपने पास मुग्ग उठनवाला धाजें रखते ह ?

जा सीमण्ट-फ़ाब्रिक या आग न परकृतवायु मकान बनाते हैं उन पर यह सब किसलिए डाला जाय? ऐसी ऐसी दंगाई दी जाती है। लेकिन अब यह मान लिया गया है कि आगको पन्नाम राखना सारे समाजके लाभका काम है इसलिए आग बुझानके बढका कर सन लागू पर पन्ना चाहिये। इस तरह पहले गहर या घनी आगामीमें दूरकी सड़का और पुत्रके सबक लिए टाल या चुगा लगानकी प्रथा था। जो आग इन मकान या पुत्रका उपयोग करते थे उन्हीसे यह चुगी ली जाती था। परन्तु अब यह प्रथा घट्ट हाना जाती है और सामान्य कराकी आयस हा इन तरहके सबक किये जाने हैं। गिनानके सबका उदाहरण बन्त साचन जसा है। निजी दंगम गिधाका काय करना हो तो किया जा सकता है। हमार देगमें पहुँक गुरु एसा निजी गानाए सालन थ और जो विद्यार्थी पन्ना आत उनस अग अग रुपमें महताना बमूल कर लेते थ। आज भा हमार देगमें अत्रिकतर माध्यमिन गानाए एसा पद्धति पर चन्ना है। पर अब प्रत्येक मम्म प्रजा यह मानन ग्या है कि अमन अरजे तस्की गिधा तो फीम न सननवाय बन्नाका हा नहा बल्कि सभी बन्नाका मिलनी चाहिये। धनियासे लिय हुए करम गरीवाना गिधा मिश्रता है। इसमें एन हनु यह भी है कि प्रत्येक ब्यक्तिकी गरामन गरीम वगना भा आग बढनका अवसर औरके जितना ही मिश्रता चाहिये। इसलिए अब निय प्रायमिक गिधा ही नहा बल्कि उनस आगकी गिधा भी मावयिन और नि गुलन दनक पन्नामें लासमत जारदार बनता जाता है। इस समय गवमनका प्रवाह नम गिधामें बह रहा है कि पुस्तकालय सप्रहालय बाग-बगैच अस्पताल आदि सभा मावजनित कार्य करनकी जिम्मेदारी अधिकाधिक मात्रामें सरकारका उजाना चाहिये। उसका उद्देश्य भा यही है कि धनियामें बमूल किये हुए करम गार समाजके लाभ लिया जाय। यह पहा जाता है कि करकी आयत माय जनित सेवाने एम काय जा जम अधिन हान जायें वन वम यह मानना चाहिये कि सरकार और लाग सामूहिक बन्नाय और प्रगतिन वारमें अधिन जायन हाने ग्य हैं।

३ योगाकी भन्नाईके अधिन अधिन काय मावजनित गम पर हा और उनस सबका लाभ पहुँके एम वारमें एवमन हान पर भा उमन लिए स्वच्छान पमा दनका बढन कम लाग तमार होत है। गार राष्ट्र पर आय हा गवत या इगी सरकारी दूमरा आर्त्तिक ममय गग अरर तगाम पमा दन न गिन एम प्रमग बढन कम आते हैं। सामूहिक निस कार्योके लिए निपयिन रुपमें स्वच्छान पमा दनका कम लाग हात हैं। तबका भन्नाईके कार्योका धायपयता

विषयक विचारार्थें जितनी प्रगति हुई है उतनी ऐसे कार्यक लिए पसेकी सहायता देनेमें प्रगति नहीं हुई। इसीलिए वर अनिवाय रूपमें लगाने पडते ह। और लोग हमेशा उस वचनकी इच्छा रखते ह। बहुतोफी मनावृत्ति यहा हाती है कि किस तरह कर चुकानस बिल्कुल वच जायें या कौनसा ज्याय अपनाया जाय कि कमसे कम कर भरना पड। इसीलिए ऐसे प्रश्न पत्ता होते हैं कि करकी मात्रा कस निश्चित की जाय और उस वसूल किस तरह किया जाये।

वर निश्चित करनकी पद्धति

४ वर लगानके बारेमें हिंदू शास्त्रकारोका मत यह है कि राजा गोगानी जो सेवा करे उसके बदलेमें अपने मेहनतानेके रूपमें और राज दरवारके खचके लिए वह लोगोस करे। गुनाजाय कहते ह राजा कर जरूर वसूल कर परन्तु लगाका कर चुकानेकी शक्ति बढानमें सहायता देनेके बाद ही वह कर ले—जस माली वक्षोसे फल फूल लेता जरूर हे परन्तु उनको पानी पिलान और उनकी सार-सभाल करनेके बाद ही उता है। इसीलिए करकी मात्रा इस ढंगसे निश्चित करनी चाहिये कि गोगानी बरबानी न हो। वृक्ष पर जब फल पककर गिरनको तयार हो जाय तभी उस तोडना चाहिये। भडकी जल आप भठ ही उतार गीजिये परन्तु उसकी चमटीका नुकसान नहीं पहुचना चाहिये। इसा तरह करकी मात्रा सावधानीस निश्चित की जाय तो राज्यके लिए पूरी आय उत्पन्न करन पर भी कर देनवालोकी उत्पादन शक्ति घटगी नहीं। करका बोझ प्रत्येक व्यक्ति पर उसकी शक्तिके अनुसार ही पत्ता। जो लोग मुश्किलसे अपनी जीविका चला सकते ह उह करके बोझसे मुक्त करके सामर्थ्यवालासे ही अधिक कर लेना चाहिय। जिसे पानीकी कोई तगी नहीं है उसे समुद्रम से पानी भाप बनकर ऊपर चढता है और फिर जिसे आवश्यकता होती है उसे बरसातके रूपमें मिल जाता है वमी ही व्यवस्था करकी वसूली और उसके खचकी होनी चाहिय।

आधुनिक अर्थशास्त्रियोमें जो पुराने विचारके ह वे कहते हैं कि प्रत्येक मनुष्य अपनी आयक हिसाबसे कर दे। धनी मनुष्यकी आय ज्यादा होती है इसीलिए वह ज्यादा कर दे। परन्तु नितमी आय ज्यादा हो उता ही ज्यादा कर वह दे उसस ज्यादा न दे। इसकी जडमें विचार यह है कि सम्पत्तिका बढवाग जिस ढंगस हो रहा है उमी ढंगसे बिना किसी हस्तक्षपके उसे चालू रहन लिया जाय। जो मनुष्य सी रूपय कमाता हो उससे यदि पाच रूपया कर लिया जाय तो हजार रूपय कमानवासे आप पचास रूपय लीजिये। परन्तु पचासस ज्यादा कर लिया जायगा तो उसका मतलब होगा कि आप

उसकी विषय बुद्धि कुशाग्रीत और दीर्घदृष्टि पर ही कर लगात ह। इस तयन विरुद्ध यह कहा जाता है कि प्रत्येक मनुष्य तत्र सरकारको कर दता है तत्र वह मामूहिक हितने त्रिए धान आत्मचाग करता है। यह त्याग यत्रि मत्र लाग उचित मात्रामें कर ता ही कर लगानम सुमानता और चायकी रणा हा मरती है। हम मूल्यकी मामासामें त्रय चुक ह त्रि सौ रुपयकी आयवात्रके त्रिए पात्र रुपय त्रितन मूल्यवान = उनन हजारकी आयवात्रके त्रिए पचास रुपये तहा त्रान। सौ रुपयकी आयवात्रका जत्र पाच रुपय दन पत्रत ह तत्र उम अपन सान-भातक या दूसरे बहुत ही जरूरी त्रचमें कतीनी करती पत्रता है जत्र त्रि हजारवात्रको पचास रुपय त्रि समय सौवालक अनुपातमें बहुत कम कतीना अपन जरूरा त्रचमें करती पत्रता है। और त्रिनकी आय बहुत ज्याग हाता है और त्रिहें अपना त्रच कुठ भा कम त्रिय त्रिना बचन होती है उह त्रस बचनमें स त्रितनी भी त्रयम त्रना पत्र ता भा उह काई त्याग नहा करना पत्रता। इसत्रिए नय विचारवात्र अध्यागत्रियारा मन है त्रि करका दर उत्रया दन या आयन मामाय जनपातम त्रिचिा न करक उमकी कत्रना हुई मात्राक अनुपातम त्रिचिा करनी चाहिय। कर लगान माय कवत्र मनुष्यका आयकी मात्रा न दना त्रय चिा यत्र भा दना जाय त्रि कर त्रेनका त्रगवा त्रिनि त्रितना है। त्रय ही कर चुतान समय उम त्रितना त्याग करगा पहागा त्रमरा भा त्रिगार त्रगाना चाहिय और त्रम तरत मनुष्यका त्रिनि और त्यागर त्रिगारम करकी दर त्रिचिा करनी चाहिय। यत्रि सौ रुपयकी आयवात्रकी कर त्रनका त्रिनि या मामूहिक हितन त्रिए त्याग करनकी त्रिनि पाच रुपया हा ता हा मरता है त्रि उम मनाजमें त्रार रुपयकी आयवात्रका कर त्रेनका या त्याग करनकी त्रिनि सौ रुपयन बराबर हा और इसम अधिक आयवात्रका त्रिनि इसम भी अधिक बत्रन हुत्र अनुपातमें ही।

५ आयकी उत्तरात्तर कत्रना त्रु मात्राम अनुगार कर लगानेरा मन रणागार अध्यागत्रियारे मनमें एत्र और वात भा रूता है। उहें यामान अध-श्वरत्रामें अचाय त्रिगाद दना है। आयका भरकर अगमानतात्राका जहमें उह चाय और नात्रि तत्रतरा अभाव त्रिगाई त्रिा है। इसत्रिए य त्रि गुल्म त्रिगारा एत्राधिकारा पर त्रियत्रगा मत्रदूराका दगा गुपारनक त्रिए बचाय जान यात्र त्रानू उत्रयात्रारा काय अधिाधिक मात्रामें मरगात्र हायमें त्रनका यात्रनात्रे—ममात्रकी रचनामें गुपार करन और आधिक त्रियमनाए घटानक इन मत्र उगायोंका त्रिए य कर आनका पदत्रिका उत्रयाग भी आधिक अगमानता घटानमें करना चाहते है।

६ इसलिए व एक आय और दूसरी आयमें भी भेद करते हैं। यह भी एक चर्चाका प्रश्न है कि जमीन मकान आदि स्थावर सम्पत्तिके विरायकी आय और द्रव्य या पूंजीक 'जायका आय'—जिसे हम स्वामित्वके अधिकारके कारण होनवाली आय कहें—तथा सीधी मेहनत मजदूरीकी आय पर करकी दर एक ही हिसाबसे रखी जाय या कम-ज्यादा रखी जाय? जायदादवाले और उनके उत्तराधिकारियोंको सदा कोई श्रम किये बिना आय हुआ करता है। उनके पूंजीके अधिकारमें यह जायदाद कमे भी जाइ हो—उहान मेहनत करके कमाई हो उहामें जान कर प्राप्त की हो तत्कालीन सरकारकी कोई विधि मदद करके इनाममें पाई हा या हिसाब छीन ली हो—परन्तु एक बात निश्चित है कि आजकल उस भोगनवालाका जा आय होता है उसके लिए उह कोई श्रम नहा करना पडता। इसलिए उनकी आय तो जिसे अनुपाजित आय कहा जाता है वसा ही है। दूसरी तरफ मेहनत मजदूरी करके प्राप्त हुई आयमें बतन मजदूरी धधका नफा और वकील-डाक्टरकी फासकी आय आती है। ये लोग जब तक कुछ भी श्रम करते हैं तभी तक इह आय होती है। यह अलग प्रश्न है कि उनके मेहनतानकी दर जो कम-ज्यादा हाती है वह कहा तक उचित है। इसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं। परन्तु एक बात निश्चित है कि इनकी आयको जायदादवालोंकी आयकी तरह बिना श्रम किये होनवाली आय नहा कहा जा सकता। तो फिर उस बिना श्रम किये होनवाली आय पर और इस पसीनेकी कमाई पर लगनवाले करकी दरमें अन्तर क्या नही होना चाहिये? इन जायदादवालोंकी सारी जायदादको या उनकी समूची आयको करके जरिये या दूसरी तरफ जन्त करनकी योजनाको 'अन्यायपूर्ण' या 'बोलोविक्' कहनेवाले अवश्य निकल आयेंगे परन्तु बतमान अर्थ रचनाको 'यायके स्तर पर लाना हो तो इसमें शका नही कि उसके पहले कदमके रूपमें ऐसी आय पर बन्दे हुए अनुपातस कर लगाना चाहिये। अन्तता यह उपाय केवल तात्कालिक और ऊपरी उपाय है। सच्चा उपाय तो रोगकी जडको दूरकर उसे निमू बनाना ही है। इसके लिए जायदादके स्वामियोंको बिना श्रमकी कमाई खानवाले रहने देकर इस जायदादके सिलसिलेमें उनके सम्बन्धमें आनवाले लोगोंके प्रति अपना कर्तव्य पूरा करनवाले बनाना चाहिये—अर्थात् उस जायदादके ट्रस्टी बनाना चाहिये और ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये कि ट्रस्टीके रूपमें जितने मेहनतानके वे अधिकारी हा उतनी ही आय उह मिटे। इसके लिए उपाय यह है कि शिक्षा देकर लोगोंको जाग्रत किया जाय और उनकी शक्ति इतनी बडा दी जाय कि वे शोषणके शिकार बननसे इनकार कर

हैं और मुफ्तवोराका विगनस इनकार कर दें। परन्तु हम जरा आगे बढ गय। अभी ता हम कर लगानकी पद्धतिना हा विचार करय।

करके यारेमें सरकारी नीति

७ परन्तु यह ता भावा याजनाकी और सिद्धान्ताकी चचा हुइ। जस सरकारक अयमत्रा अपना बजट ममज्ञात ह तब जपन भाषणमें व एमी बातें कहत हैं कि कर दनवालाका गन्तर अनुसार ही कर लगाया गया है यह चिन्ता रखी गइ है कि गरीबा पर बोझ न पड और यह भी अच्छी तरह ध्यान रणा गया है कि किसी बाज उद्योगको नुकसान न हा। परन्तु उनक मनमें ता एक यह बात हाता है कि निर्धारित किय हुए खचको पूरा करनक लिए आय किस तरह सजी की जाय और वह भी इस ढगस कि किमी बखान और आवाज उठा सकनवाये पक्षवा विराध न हा और गग भा उस करसे नाराज होकर भक् न उठें। इसलिए वे नीचे लिखी बातना ध्यान रखकर कर लगात ह

(१) जहा प्रजामत बखान होता है वहा धनी लगाकी आय पर उत्तरोत्तर बडती जानेवाली मात्राने सिद्धान्त पर करकी दर निर्धारित की जाय तो उमस टोस आय होता है और कोई साम विरोध नही हाता। इगवे अलावा जिन चाजना विगाज मात्रामें उपयोग होता है उन पर हल्का कर लगाया जाय तो आय अच्छा होता है और विराध नही होता। इनके सिवा चीजा पर लगाया गया कर पराग रूपमें बमूल होता है। अन्तमें उमरा बोझ उस चीजको काममें लनवात्रा पर ही पडता है परन्तु वह सीधा उनम नही लिया जाता बल्कि आयात-ब्यापारी निर्यात-ब्यापारी अथवा कारखानेदार उत्पादनकन लिया जाता है। इसलिए एगा कर त्रोगाको एकत्र सटवता नही। ब्यापारी इस करकी खमको मालका कामत पर ता चढ़ात हा ह फिर भी मात्रा काममें लनवात्रा लाग जस उसे माल सरीस्त जात ह बस बस व यह कर देन ह और मालकी कीमत जितनी बड जाती है उनना अर्थात् बखन छाटा त्रिन्नामें उह यह कर चुकाना पडता है। एग तरह करता भार उहें भारी मानूम नहा हाता। फिर भी जिन चीजा पर कर लगाया जाना है उनक चुनावमें बहुत मावधाना ता रणना हा पडता है। गरीब लागका प्रति त्रिन्की जखरनकी चाजा पर कर गग और उमर बागग गरीब लाग आवयन मात्रामें उसना उपयोग न कर मरें — यानी व चाज मटगा हा जाय (जस हमारे दामें नमकका कर या) ता व उचित नहा है। इमी तरह एग ढगस कर लगाना भी उचित नही त्रिमन हमार नय एगा उपायके विराधमें मनायत पग

हो। स्मृतिकारों ने कहा है कि जैसे मधुमक्खी फूलों से शहद चूस लेती है और फूलको इसका पता भी नहीं चलता और उसे कोई नुकसान भी नहीं होता वैसे ही कर ऐसे अप्रत्यक्ष ढंगसे लगाया चाहिये कि लोगोंका उसका पता भी न चले और उन्हें कोई नुकसान भी न हो।

(२) कर लगाने के समय इस सिद्धांतकी रक्षा करना जरूरी होता है कि कर चुकानेके समय कर वसूल करनेकी पद्धति और करका आकड़ा यह सब कर चुकानेवालेका और दूसरे लोगोंको स्पष्ट और निश्चित रूपसे मालूम हो। इस तरहकी निश्चितता इसलिए आवश्यक होती है कि कर देनेवालेको यह सब यदि निश्चित रूपसे मालूम हो तो कर वसूल करनेवाले सरकारी अधिकारी उससे रिश्वत नहीं ले सकते और न किसी तरहका अयाय अथवा जबरदस्ती कर सकते ह।

(३) साथ ही कर इस ढंगसे और ऐसी चीजों पर लगाया चाहिये कि कर वसूल करनेका काम बर्तन जासान हो जाय। चीजों पर लगाया हुआ अप्रत्यक्ष कर वसूल करना बहुत आसान होता है क्योंकि जहां चीजें पदा होती ह या उनका आयात निर्यात होता है वही उन पर कर ले लिया जाता है। इसलिए कर वसूल करनेवालेको अनेक स्थानों पर भटकना नहीं पड़ता।

(४) करकी योजनामें ध्यान देने योग्य चौथा तत्त्व यह है कि करकी रकम लागूकी अवधि में निकल कर सरकारी खजानेमें पहुँचे तब तब उसमें थोड़ीस थोड़ी कमी होनी चाहिये अर्थात् कर वसूल करनेकी योजना ऐसी होनी चाहिये कि उसमें कमसे कम खर्च आय। जिन करोंकी वसूलीमें अधिक खर्च आता है वे अच्छे नहीं मान जाते। उदाहरणके लिए शहरोंमें वाइसिक्ल पर जो कर लगाया जाता है वह इसी प्रकारका होता है। हमारे देशमें एक राज्यकी हदमें से दूसरे राज्यकी हदमें प्रवेश करते समय जो चुगी ली जाती है वह बहुत तकलीफ देनेवाली और खर्चीली होती है। इस तरहसे लोगोंमें अगाति पदा होती है और सरकारको बहुत रकम नहीं मिलती।

८ कर निर्धारणके बारेमें कुछ अर्थशास्त्री ऐसा भी मानते ह कि गरीब और मजदूर-वर्ग पर करका बिल्कुल बोझ न पड़े यह ठीक नहा है। भले उन्हें थोड़ा ही कर चुकाना पड़े परन्तु थोड़ा भी कर वे देने रहेंगे तो सावजनिक कार्योंमें और सावजनिक खर्चके बारेमें वे रस लेते रहेंगे। उन्हें कुछ भी कर न देना पड़े तो उनमें ऐसी वृत्ति पदा हो जाती है कि सरकारके पास कोई बन्ध बांध जमा है जिसमें से हमें सारी सुविधायें और रोजी भी मिलना चाहिये। हमारे देशमें गरीब वर्ग पर विशेषत

दिमाना पर—जो दाना जतमय्याका वस्तु वग भाग है—करका भार वस्तु अधिक पन्ता है और उसका वस्तुमें उह नाममात्रका सुविधाए मिळती हैं। इसलिए जहा सच्चा प्रजातंत्र हा जाय सरकार प्रताका सच्चा न्याय करके लिए सग तयार रत्ता हा वहाक लिए गायत ऊपरकी दरील ठीक हा सक्ती है। वरना एसी छोटी रजमके करका वस्तुका बहुत महगी पडती है और उम चुकानवाय बिना कारण उत्तजिन हो उठते हैं। इसाणिए मत देनमात्रका प्रमत्त रखनका दृष्टिम काई एम करका समयन नहा करता। इनक वायजूय प्रजातात्रिक सरकारें भा इम बातका विचार नग करता नि कर भाररूप मात्रम हान पर भा एम पराग ढगम लगाये जान चाणिय कि लगाका व अलरें नहा।

विधिय प्रकारके कर

९ आय-कर अनर प्रकारक करामें आय कर या इनकम टैक्स सारी मुनियामें अय अठम अच्छा कर माना जाने लगा है। जावन निवास्तुणिए जितना आय जरूरी समता जाता है उन करम मकत गया ताय— और अधिकतर रगा हा जाता है—ता यह कर समाज अधिन धनी वग पर हा पन्ता है। अय अनर तरहक करारा वाय ता मुत्तामें करावा पर हा अधिन पडता है। परन्तु यह कर मिन धनवानाका ही दना पन्ता है इसाणिए इसरी मात्रा उत्तरानर बढ़ाइ भा ता सक्ता है।

१० आय-कर दो तरहका वस्तु किया जाता है। (१) मनुष्यकी सारा आय पर साधा कर लगाकर जाय (२) जहा तयग आय होता है उन भू-स्थाना हा कर वस्तु करक। उदाहरणक लिए काइ आत्मा मरवारा लान रता है या म्युनिगिपलिटि या लान वायके डिर्वेचन रता है। इन तरह सन्तारी या अध-मरतारी मय्यात्राका जमानतामें जिमा अपना रखा लगाया हा उन ब्याज किया जाता है। यह योज आय-कर पायकर हा किया जाता है। इमा तरह जिगा ताइण रग कानियामें धनरामें रखा गग रगा हा उहें विविडण्ड नन मनय आय-कर काय रनका मूचा मरतायकी तरहक बनारा दा हुन हाता है। यका जाय ताण्ड स्पौन कानियामें जिगा पूजी जमानतके रूपमें रगा हा उहें मिनगण्ड ब्याजमें ग भी आय-कर वस्तु करता आयात है। एमा तरह जमीन वा दूमरी म्यावर तम्पनिम जिहें जाय हाती गो उता आपमें ग भा इनरम टका पाय रना वग भागान है। वग वस्तु पायेगा वा मरतारी या मर-मरतारी बनतारी इनरम टका नन वाय होत है उनक पायों ग नी उता मरिगा वा मय्यात्राके भाग ही आय-कर पाट

लिया जाता है। इस तरह जहाँ आयका जड़को पकना जा सकता हो वहाँ सरकारको कोई झंझट या सब किय बिना इनकम टक्स मिल जाता है। परन्तु हर आयकी जड़ तब इस तरह पहुँचना कठिन होता है। वकीला और डाक्टरकी कमाई साधी उनके मुक्किलता और रोगियासे हाता है। व्यापारिया और दुकानदारका नफा भी सीधा ग्राहकसे होता है। बड कारखानदार और उद्योगपतियाना भी सरकारी या अध सरकारी सस्थाओसे या बका और जाइण्ट स्टॉक कपनियामे जो याज और टिविडेण्ड मिलना है उसके जत्रवा दूसरी आय भा हाती है। किसी विदेगामे जायगाद बनाइ हो या उद्योगम पूजी लगाई हा तो उसकी सारी आय उस देगके बकोके जरिय ही नही मिलता। इसलिये जगास इस बातका उत्तर मागा जाता है कि उह कितनी आय हुई है और इस उत्तरके वारेमें इनकम टक्स विभागके निरीक्षक जाच करनके बाद जाय कर लगाते ह।

११ जब आयके मत्र स्यानस ही आय-कर काट लिया जाता है तब जिनका कुल जाय आय-करके योग्य नहा होती उनका आयमें स भी आय-कर कट जाता है। ऐसे आत्मियावा अपनी कुल आयका आकडा लिखकर प्रस्तुत करन पर काटा हुआ जाय-कर लौटा दिया जाता है। लेकिन जिनकी आय बन्त अधिक होती है उनको जामन्नीके अनुपातमें उत्तरोत्तर बन्ता हुआ कर दना पडता है। पर इस पद्धतिमें इस बढते हुए करसे वे लोग बच जाते ह। इसलिये एस जगासे तो पुन उनकी कुल आयका आकडा दिखानवाला उत्तर लना जरूरी रहता है।

१२ बडी आय पर जो अधिक कर लिया जाता है उस सुपर टक्स कहते ह। इंग्लण्डम पाच हजार पौण्डसे अधिक जायवालो पर सुपर टक्स लगानवा आरभ १९१० से हुआ था। १९१४ से १९१८क प्रथम महायुद्धके समय १० हजार पौण्डकी आय भी सुपर टक्सक लायक समझी गई थी। यह सुपर टक्स जायके अनुपातमें उत्तरोत्तर बन्ता हुआ रखा गया था। इंग्लण्डम अधिबसे अधिक कर आयके ५० प्रतिशत तक और जमरानाम ६५ प्रतिशत तक पहुँचा था। हमार देगमें उत्तरोत्तर बन्तवाला आय-कर १९१६ मे जारी किया गया था। १९१७ स सुपर टक्स शुरू हुआ और युद्धक कारण एक बपके लिए ३ हजार रुपयसे अधिक आय पर अतिरिक्त मुनाफका कर (एक्सेस प्राफिट टक्स) लगाया गया। दूसरे विश्वयुद्धम ३६ हजारस ऊपरकी आय पर एकस प्राफिट टक्स ८० प्रतिशत तक लगाया गया था।

१० उत्तराधिकार-कर आय-कर का भा उत्तराधिकार-करमें उनका
 त्तर वन्दनका अनुत्तराधिकार निपट कराना अधिक माना है। परन्तु प्रश्न
 यह उठाया जाता है कि क्या इस करमें उत्तराधिकार वृद्धि करना ठीक है ?
 उत्तराधिकार-कर विलोक सत्र का अर्थ यह हो जाता है कि यदि
 मरकर यह कर बढ़ता है तो वह तो अनुत्तराधिकार वन्दन की मरकर वन्दनका
 वृद्धि है और निम्न कारण पूजा करने का होता है जो उत्तराधिकार-कर में
 लाना है उस वृद्धि का अर्थ पञ्चम और अन्त में पूजा इत्यादि न
 होता। पर यह अर्थ पुनः उमानका माना जाता है। अतः अधिक
 अमानता अर्थात् और गणनाका कारण बन गई है। उन कम कर या
 निम्नकर के उत्तराधिकार-कर का एक नौम्य उपाय है। निम्नकरमें
 मियाँ यह बनी बना जायगा कि वह एक बिना कुछ श्रम किये उठते
 उठानेवाले वय समाज के लिए हानिकारक है। अतः भारत उत्तराधिकार
 करके कारण बना बना जायगा कि वह जायगा। तो फिर इस जायगादि
 कारण ही समाज की जो काम हात है व काम मरकरका अर्थ हाथमें
 लाने चाहिये। वय जायगादिवालेके दानम या नावतनिक मर्यादा बलता
 है वय जायगादिवालेका पूजा जो वह उठाए चले है व मय समाजके
 लिए यदि जरूरी है तो जिन हट तक जरूरी है उन हट तक व
 मरकरका तरफम चले चाहिये। अतः तो अन्ततः इस परमें है कि
 आय-कर भा उत्तराधिकार करकी मात्रा उत्तराधिकार बाद जाय अर्थात्
 जायगा जिनकी बड़ी है उनका है अधिक प्रतिगत उन पर कर लगाया
 जाय। हा अर्थ कराना तरफ इस करसे हानिकारक अर्थात् अर्थात्
 ही ठीक ठीक नही लगाया जा सकता। इसलिए राज्यक चालू मरकर लिए
 एक आय पर मराना रचना ठीक नही। इस अर्थका उपाय तो स्वयं
 स्वयं बढ कामके लिए हो करना ठीक है। इस उमानमें यह निश्चिन्त
 करना बठिन नही कि मनुष्य मरकर वा वित्तना मरति छाए गया है।
 मरकर मरति तो प्रकृ ही होता है और अर्थ मरति भा गया अर्थ
 अर्थ परमें नया रण छाडन। जो नाम मरति ला मरतिमें जीव
 अमानतामें लगाए है व भा छिन्नक नया रण जा जाता। निम्नकर
 गाते और दूसरी व्यक्तिगत उत्तराधिकारी चारों परदा रण जा सकता। परन्तु
 व बहुत बनी रचनी नही होता। प्रश्न तो यह है कि अर्थ बहुत भारी
 उत्तराधिकार कर लगाया जाय तो परिणाम मनकर यह हो सकता है कि
 मरान अर्थ जीवनी अर्थात् मरति जायगादिवालेके अर्थमें न हो। अर्थात्

उपाय यह है कि सावजनिक कार्योंके लिए तो नहीं परन्तु व्यक्तियोंको दी जानवाली बड़ी कीमतकी या भारी रकमकी भटा पर बहुत भारी स्टाम्प ड्यूटी अनिवाय रूपसे लगाई जाय । स्टाम्पमें उत्तराधिकार कर लगानकी प्रथा है। और हमारे दगमें भी १० ५०००० से ऊपरकी रकम पर उत्तराधिकार-करके साथ जुडा हुआ भेंट-कर डाला गया है। इसकी दर ४ प्रतिशतसे लेकर ४० प्रतिशत तक है।

१४ जमीनका कर हमारे दगमें सरकार तमाम जमीन पर कर लेती है। उस जमीनका महसूल कहते ह। सरकार जो महसूल लेती है वह कर ह या भाडा यह बडा विवादास्पद प्रश्न है। सरकारका दावा तो यह है कि वह तमाम जमानकी मालिक है और लोगको जमीन जातनक लिए या दूसरे कार्योंमें उपयोग करनके लिए देती है इसलिए वह उसका भाडा लेती है। सरकारका यह दावा लोग नहीं मानते। इतना ही नहीं परन्तु सामूहिक रूपमें और सफलताके साथ लोग इसका कई बार सत्रिय विरोध भी कर चुके ह। परन्तु जमीनके इस महसूलको कर मानिये चाह भाडा वह अपन हाथो खेती करनवाले किसानो पर बहुत ही भारी बोझ है और उनकी गरीबी तथा कजदारीके लिए एक बहुत बडा कारण बना हुआ है। हमारे दगमें जमीन-करके मामलेमें एक और बड़ी बुराई यह है कि स्वयं खेती करनवाले किसानो और सरकारके बीच जमीन पर स्वामित्व-अधिकार रखनवाला एक बडा बग ऐसा ह जा स्वयं जमीनमें खेती नहीं करता परन्तु दूसराको जमीन खेतीके लिए देता है और उसके बन्धन उनसे भाडा भा लेता है। इसे जमाबंदी कहा जाता है। यह अ किसान या जमादार बग बीचमें दिना कुछ किय ही खेतीका आय खाता है। सरकारका दिय जानेवाला जमान महसूलका बोझ तो यह बग किसानो पर डालता ही है इसके अगवा जमान खेती करनके लिए देनके बन्धन उनसे भाडा भा लेता है। इसलिए जो किसान जमीनके मालिक नहीं ह उनके रक्षण और राहतके लिए महसूलका कानून बनानके लिए सरकार पर लोकमतका दबाव डाला जाता है। हमारी खेतीकी वर्तमान स्थितिको देखते हुए जमीन महसूलके बारेमें और जमीनके मालिकी हक्के बारेमें नीचे कुछ सुधार तुरन्त होन जरूरी ह

(१) जो किसान स्वयं खेती करनवाले ह और जिनके पास अपने कुटुम्बक निवाह जितनी ही जमान है उनसे जमीन महसूल विलुप्त न लिया जाय। साधारण परिवार अपनी महनतम और मौममद दिनामें मजदूर रखकर उाकी सहायतासे जितना जमानमें खेता कर सके उसका और साधारण कुटुम्बके

निवाहक िए जितनी जमीन चाहिय उमरा मर धठारर—अलग अलग प्रणाम एसा कर-मुक्त जमीनकी मात्रा अग्य अग्य होगी—सताका उननी द्कारको हर प्रकारक करस मक्त समझना चाहिय । जाय-करक विवेचनमें हम बह चुके ह रि कुटुम्बक निवाहक लिए जरुरा कमस कम आय निश्चित करव उस आय-करस मक्त रखना चाहिय । वहा चाय यहा भी लागू बिया जाय । जिस रिमानकी आय अधिन हो उमम आय-करर गिद्धातके अनुगार कर िया जाय ।

(२) सतार दनिक मन्दूराक िए उनका जावन निवाह अच्छी तरह हा मक एसा कमस कम दर तय करना चाहिय । उसस कम दर रिसाका नही दी जाना चाहिय ।

(३) जा गर रिमान सतीका जमाना पर माणिका हक रखत ह थ जिम हक तक अपनी जमानक द्रुन्टा या सरक्षक दत मके और जमीनमें गुधार करक तथा दूसरी तरहम किसानका मरु दकर अपन थम और हागियागम सताका उत्पादन बतानमें हाय बटा सके उस हक तन उचित महनतानक अधिवारी मान जायग । एस तरह माणिका हकके कारण ता उह कुछ भी नही मिन्ना चाहिय परन्तु जा कुछ मिठे बह उनन थम अयरा याजना और व्यवस्थाक कारण मिन्ना चाहिय । अपन रिमानके द्रुम्बीर तात मार बतय पालन करत हुए जमानरका अगर चाय आय हा ता उमम आय-करक नियमके अनुसार कर िया जाय ।

१५ अर हम अपन गहरा और गावामें आगदारी जमान पर गगाय जानयार करवा विचार कर । जा गग एसा जमीनका—उम पर रहनक िए मरान बनातर या और बिनी तरह—स्वय ही उपबाग करत हा उनन सरकार यि आमन्नास िए जरुर पढन पर करनिषाणन गिद्वान्त अनगार उनरी गभितका गगार कुछ कर ता इस पर बाई आपति नगी का जा करना । रिन प्रन ता तब पना हाता है तब रिमा मर या गावरा गुणगनी बतन एा और बाई गग मरग अधिव महकरा माना तानक कारण उमरी आगदीका जमाना कामन बून क जाय । हम गामाय भागामें बतन है रि मरवका मुन्तमें मरानका बागा बड जाता है रिन अमरमें भीमल ता गगर जमानकी हा बडा है क्यणि एग भागमें बिडगु निरम्मा मान हा ता भा उग बका पर उमरी विवारी रिनन और रिगयत न पर उमरा रिताजा जा अधिव मिन्ना है य गग मरानका बाण नही बनि उमर मरवसाल भागमें हाय बाण हा मिन्ना

है। बिक्रीकी कीमतमें या किरायेकी जायमें होनेवाली यह वृद्धि मालिकके किसी पुरुषार्थसे गहा होनी। परन्तु सत्रका खुगहाली वृद्धिसे होती है। शहरोंमें महत्त्वकी जमीनकी कीमतमें हानवाली इस तरहकी वृद्धि पर बनी हुई कीमतके अनुसार ही मार्जक्स कर लिया जाता है। दम्भण्डमें एसी जमीन जब बची जाती है तभी उड़ी हुई बिक्रीका कामत पर कर ले लिया जाता है। हमारे यहां म्युनिसिपलिटिया जब शहरके विस्तारकी योजना बना कर बढ़ाय हुए भागमें सबके बनाती है और रोशनी तथा पानीकी सुविधायें खड़ी करती है तब जमीनकी कीमत बढ़ती है उसका अमुक भाग अपने किय हुए खर्चके बचमें जमीन मालिकसे वसूल करनी है। सक्षमों समाजकी खुगहाली या प्रगतिक कारण जमीनकी अपन-आप बढ़नवाली कीमतका लाभ उसके मालिकके बनाय सारे समाजको मिलना चाहिये। इस तकके अनुसार बड़ी हुई कीमतका बहुत बड़ा भाग करके रूपमें सरकार के तो यह सवया उचित है। वशक, सरकार राष्ट्रीय होगी और उस तरहसे हानेवाली जाय जनताका भलाईके काममें ही खर्च की जायगी। यहां एक और बात ध्यानमें रखने जसी है। वह यह कि शहर या गावके अमुक भागका महत्त्व बढ़नके कारण या दूसरे सुभीतीके कारण जिसन बनी हुई कीमत पर यह जमीन खरीदी हो उसे इस जमीनस कोई अनुपाजित अतिरिक्त जाय नहीं मिलती। इसलिए एसी जमीनका टक्स सरकारने बना लिया हो तो खरीदते समय इस टक्सका विचार करके ही खरीदार उस जमीनकी कामत देता है।

१६ मकान-कर मकानके सम्बन्धमें अनुपाजित आयका प्रश्न ही पदा नहीं होता। क्याकि जिस जमीन पर मकान हो उस जमीनकी कीमतसे मकानकी कीमत अलग कर दी जाय तो मकानकी कीमत तो उसे बनानमें हुए खर्चक बराबर ही हागी। लेकिन इसमें भी महगाईके कारण इमारती सामानके भाव बढ़ गये हैं तो मकानकी कीमत भी उसी हिसाबसे जहर बढ़ जाता है और मकानके मालिकको मकान बचने पर महगाईका लाभ मिळता है। मकानों पर तो आम तौर पर म्युनिसिपलिटि अपने खर्चक लिए कर लगाती है। जो मकान किराये पर लिये जाते हैं उन पर यदि ऐसा कर बना दिया जाता है तो मकान मालिक मकानका भाडा बढ़ा कर यह बोध किरायदार पर डाक देता है। जहां कितना खास समयके लिए मकान भाडस दिया जाता है वहां समय पूरा होने तक मालिकको करका भार उठाना पड़ता है।

१७ परोक्ष कर आय उत्तराधिकार जमान जीर मकानके कर प्रत्यक्ष कर कह्यात है। क्योंकि कर निर्धारण करन समय विधानसभाके सन्स्थानके मतमें यह निर्दिष्ट होता है कि जिन पर कर लगाया जायगा उन पर उमका वाय पढ्या यद्यपि हमन मजानके सम्बन्धमें यह किया कि अनमें यह वाय मजान नास्तिक पर नया परन्तु मिगपत्तार पर पढ्या है।

१८ चाहा पर लगाये जानवा करका पराध इमलिए कहा जाता है कि यद्यपि यह कर बमूठ ता किया जाना उन चाजक उत्पादन या बचन वाला, परन्तु उमका वाय उम चाजका काममें लनवा पर हा पढ्या है। उत्पादन या बचनवाका करका खम चाजका काममें जाकर हा अपना चीज उचता है। इमलिए वह मामायन हम बातका बून परजा नही करता कि कर अधिन है या कम। परन्तु उत्पादनका करका विचार उम समय करना पढ्या है जय करके कारण चीज मढ्या हा ताज जाय हम महगार्का अमर चाजका माग पर पढ्या है। किमा चाजक उद्योगमें उत्पादनका नफका गुजास्त अधिन रहता हा ता करकी रकमका बाजद नफा छाड कर बमूठ चीजन पर उम चाजका बचना जारा रखता है क्योंकि जय नफका गुजास्त अधिन हाता है वहा स्वधा करनवा पर रहे हा है। फिर भा नियमके रूपमें यह कहा जा सता है कि अधिनतर चीजामें और लम्बा अवधिमें ता चाहा करना वाय खरापर पर हा पढ्या है।

१९ इमलिए हम करके सम्बन्धमें यह मानधाना रखना पढनी है कि गरार लागाने राजक उपयोग उन चाजा पर जिनके बिना काम नहा चल सता एन कर नहा जगन चाहिय। परन्तु अथमदा ता आय पर ही अपना दृष्टि रगता है। जा चाज बहुत बडा मात्रामें इस्तमा हाता है उन पर कर लगाया जाय ता करकी दर घाडी हान पर भा राखका बून बडा आय हाती है। और घना लागाने कामका चाजा पर लगाय जानवा परकी दर अधिन हाता हो तो भी आय घाण हाता है।

२० हमार देगमें नमरकर गरीब लाग पर भारा अयाय जीर भार रन हा गया था क्योंकि गरीब और अल्प मिनिवा लागका अथवा गावरा रिमाना और गरीब लोगका नमरकी जरूरत चाण हाता है। उन्हें अल्प उपायग लिए जितना नमर चाणिय उमर माय अल्प गरीब लिए और पन्थीधामें इत्यनके लिए भी नमरका जरूरत पढनी है।

२१ इमलिए चाजा पर कर लगाने समय इतना विचार ता करना हा चाणिय कि जिन लाग पर करका वाय पढेण उन लागामें हम करका

चुकानेकी गक्ति है या नहीं? जहा करके कारण जीवन निर्वाहका स्तर घटाना पड या जिन चीजोके बिना काम न चल सके उह भी कम करना पड वहा तो यह कर बिल्कुल अनुचित ही है। करकी उत्तम व्यवस्था तो यही है कि विशाल जलरागिवाले समुद्रमें से पानी लेकर प्यासी पथ्वीको बरसातके रूपम द दिया जाय जिससे सरकारका खच भी निकल आवे और थोडेसे आदमियाके हाथमें वकटठी हुइ सम्पत्तिका बहुत लोगमें वटवारा हो जाय। एसी कर निर्धारण पद्धति उत्तम मानी जायगा।

२२ करके बारेम एक अधिक महत्त्वका प्रश्न यह भी सोचने जता है कि अधिक कर लेकर समस्त सावजनिक काय सरकार ही करे तो अच्छा या सावजनिक कार्योंकी व्यवस्थाको भी विकेंद्रित करके उसके लिए आवश्यक कर डाकनेकी जिम्मेदारी स्वराज्य भागनवाठ स्थानीय केन्द्रो पर छोड दी जाय तो अच्छा? यह प्रश्न कर गगानेकी पद्धतिसे सम्बंध नहा रखता बल्कि इसका सम्बंध सारी राज्य व्यवस्थास है। समाजका प्रत्यक घटक — छाटस छोटा और गरीबने गरीब घटक भी — स्वतंत्रता भोग सके ऐसी राज्य व्यवस्था और अय व्यवस्थाको ध्ययके रूपमें स्वीकार कर लिया जाय तो सावजनिक कार्योंकी व्यवस्थाको भा विकेंद्रित कर देना ही अच्छा है। स्थानीय कार्योंके लिए स्थानीय सस्थाआके हाथम कर निर्धारणका अधिकार रखा जाय तो इसस यायकी रक्षा अधिक हो सकती है। इतना ही नहीं इससे स्वराज्यके इस सिद्धांतकी रक्षा भी अधिक अच्छी तरह हा सकेगी कि अपनी व्यवस्था हम स्वय ही कर ठ।

सरकारी ऋण

१ आजके युगमें कुछ सच सरकार ऋण लेकर करता है। आजकल प्रत्येक राष्ट्र पर ऋण हाता है। और कुछ इस तरहकी मान्यता प्रचलित हो गई है कि ऋणी राष्ट्र मानो दूसरे राष्ट्रसे अधिक प्रातिगील ह।

२ आज सत्सारेके राष्ट्रा पर जितना ऋण है उतना पुराने जमानमें नहा था। उस समय राजाआजा ऋण लेनेके बहुत कम मौक आते थे। कभी कभी युद्धके खर्चके लिए धनका अभाव होना तो उभरनेके लिए राजा लाग थोड़े समयके लिए ऋण लेते थे और कुछ समयमें उस लौटा देते थे। उस जमानमें ऋण लेकर सावधानिके काय नहीं किया जाने थे। यदि राजाआजे पान राजानेमें अधिक धन हाता तो उसने बल पर व सावजनिके काय करते थे। परन्तु स्वायी ऋण करके पुराने जमानके राजा-महाराजा कोई काम नहीं करते थे।

इस प्रकार पहलके राजा-महाराजा अपन पाग धा हाता तो ही सावजनिके काय करते थे धन न हाता तो नहा करते थे। इसलिए उह ऋण नहा लेना पडता था। और युद्धके लिए यदि ऋण लेना भी पडता था तो युद्धका अन्त हा जाननेके बाद किमी धनिकसे पसा लेकर भी वे यह ऋण चुका देने थे। लेकिन आज इससे उलटा स्थिति हो गई है। आज एक भा राष्ट्र ऐसा नहीं है जिस पर ऋणका भार न हो। ऋण प्रत्येक राष्ट्रके लिए साधारण बात हा गई है।

सरकारी धनाम व्यक्तिगत ऋण

३ आजकल सरकार राष्ट्रके नाम पर विभिन्न सावजनिके कायों तथा युद्धके लिए ऋण लेता है। इसी प्रकार व्यक्ति भी ऋण लेता है। इन दानाके ऋणमें भेद क्या है? दानाके ऋण लेनेके कारण इस प्रकार ह

(१) आयका कम हाता व्यक्ति सग अरनी आयके आगार ही रात करता है। परन्तु परिस्थितिका उजकी आज घट जाय तो उजे पसा उपार हावके लिए मजबूर हा जाना पटना है। यह बात राष्ट्रके विषयमें भी सच है। राष्ट्रकी आयका आपार प्रजा पर होना है। जब अकाज जन किमा कारणसे राष्ट्रकी आय घट जाता है तब राष्ट्र पर भार पडता है और वह भा ऋण लेता है।

(२) खचका बड़ ाना खचके बट जाने पर व्यक्ति और राष्ट्र दोनोंके लिए दो ही माग सुल रहत ह। या ता खच घटाया जाय अथवा ऋण िया जाय। लकिन खच अगर घटाया न जा सके तो ऋण लिये सिवा कोई चारा नहीं रह ाता।

(३) अस्थायी कठिनाई ऐसी कठिनाईमें सामान्यत प्रत्येक व्यक्ति ऋण करता है। उदाहरणके लिए किसान बपमें दो फसल लेता हो और फसल पडनेके पूव उसे कोई खच करना जरूरी हो जाय तो ऐसे समय पास पसा न होने पर किसान अपन पडोसी या साहकारस पसा उधार लेकर काम चलाता है। यह अस्थायी ऋण है। राष्ट्रको भी जमीन महमूल आनसे पूव अपना खच चलानके लिए एसा अस्थायी ऋण लता पडता है।

(४) असाधारण खच अकाल या आगका सकट आ पडने पर पसा खच करना पडे तो व्यक्तिको पसे उधार लेने पडते ह। इसी प्रकार राष्ट्रको भी अचानक कोई खच करना पड तो वह भी पसा उधार लेता है। उदाहरणके लिए युद्धके अवसर पर।

(५) धंधा आरंभ करनेके लिए यह ऋण उत्पादक ऋण है। सामान्यत एसा ऋण दोषपूर्ण नहीं माना जाता क्योंकि इस ऋणके पसे मुनाफा कमानके लिए धंधमें लगाये जाते ह। यह ऋण चुकानके लिए राष्ट्र जल्दी नहीं करता व्यक्ति भी जल्दी नहा करता।

४ ऋण लेनेके जो कारण ऊपर बताये गय ह वे राष्ट्र और व्यक्ति दोनोंको एक्से लागू होते ह। व्यक्तिको तो सामान्यत अपना ऋण ाज और मूल रकमके साथ लौटाना होता है। परन्तु राष्ट्रके ऋणमें भद होता है। राष्ट्र अमुक ऋणके लिए चाहे तो केवल ब्याज देता रहे और मूठ धन न दे तो भी चल सकता है। इस तरह केवल ाज देते रहनेकी अवधि कभी कभी अमर्यादित होती है। और राष्ट्र उधार ली हुई रकम पर लम्बे समय तक ाज देता रहता है। इस प्रकारका ऋण केवल राष्ट्र ही ले सकता है। यह ऋण अवधिरहित ऋण कहा जाता है। निश्चित अवधिवाला ऋण राष्ट्र अमुक समयके पचात चुकानके लिए बचनबद्ध होता है।

५ व्यक्तिका कोई धनी आदमी ऋण दे तो ही वह ऋण ल सकता है। परन्तु राष्ट्र जवरन भी प्रजास ऋण ले सकता है। वह अपनी प्रजासे जवरन पसा बसूठ कर सकता है। दूसरा भद राष्ट्र और व्यक्तिके ऋणमें सुदृ आर्थिक स्थितिके कारण खडा होता है। व्यक्तिकी अपेक्षा साम्यी आर्थिक

स्थिति अधिक सुदृढ़ मानी जाती है। इसलिए राज्यका कम ध्याज पर और स्थायी ऋण देनेवाले भी मिल जाते हैं जब कि व्यक्तिको नहीं मिलते।

६ व्यक्ति अपना सारा ऋण चुका देनेका प्रयत्न करता है। हा ऋणकी रकमसे अधिक आय करनेकी गुंजाइश हो तो वह ऐसा नहीं करता। परन्तु राष्ट्र उत्पादक ऋण चुकाना नहीं चाहता। व्यक्तिक पास अपनी पूजी होती है राष्ट्रक पास अपनी पूजी नहीं होती। इसलिए व्यक्ति अपना ऋण चुका दे तो उसे नुकसान नहीं होता इसमें उसका हित है। व्यक्ति उत्पादक ऋण चुका सकेगा। राष्ट्र उत्पादक ऋण नहीं चुकायगा और न चुकानमें ही उसका लाभ है। क्योंकि राष्ट्रके पास पैसे अधिक हैं और यदि वह ऋण चुकानमें व पैसे लगा दे तो उसकी प्रजाका उनका हा कर देना होगा तथा वह लाकोपयोगी बाय बनाना चाहें तो भी बन नहा सकेगा। ऋण चुका देनेसे भावी प्रजाका बोझ कम अवश्य हा जायेगा परन्तु इसके लिए आत्मी प्रजा पर बोझ डालना ठीक नहा। सामान्यतः जो प्रजा कठिनार्द्ध भाग उसाको लाभ मिलना चाहिये।

१४

राष्ट्रीय ऋणका स्वरूप और कारण

१ भारतमें राष्ट्रीय ऋणका बाजरूपमें आरंभ पेशवाआजि समयसे हुआ था। प्रथम तीन पेशवाआजि समयमें युद्ध लड़नेके लिए ऋण लानकी जरूरत पड़ी तबसे इस पद्धतिआ आरंभ हुआ। परन्तु इस पद्धतिआ पुराना सागवाना साहूक सो मूरत हा है। यूरोपके सभी देशमें राष्ट्रीय ऋणकी पद्धतिआ बहुत प्रचार हुआ है। राष्ट्र जितना बड़ा और जितना धन-सम्पन्न और बलवान हाता है उतना ही उसका ऋण बड़ा हाता है। इंग्लैंड जमनी कान आदि युद्धमें सम्मिलित होवकाल राष्ट्रारा ऋण बहुत बन गया है। हमारे देशमें युद्ध जितना भी लगी ही स्थिति उत्तम हा गद है। यह कानमें अनिगयोक्ति नहा है कि हमारे देशमें तो उस समयत ऋणका पद्धति आरंभ हा चुकी है जब तिगाको इस बातकी कल्पना भी नहीं थी कि एक अरमन बाग भारतमें एव बड़ा राज्य पद्धतिआ निर्माण हावकाला है। क्योंकि गना एन्जिनाउषक जमानमें अर्थात् सा १६०१-०२में रिम ईस्ट इंडिया कंपनीकी स्थापना हुई था व गन १८५७ व बाग तब टडी तो ता समय उसका मूल पूजीया भाग-भरतारक ऋणमें जाड गिया गया था। अगर गिया कंपनी-भरतारक भारतको जावनक ना अ-३०

लिए जो लडाइया लड़ी उन सबका खर्च भी इस राष्ट्रीय ऋणमें जोड़ दिया गया था। फिर कपनी-सरकारने ब्रिटिश सरकारसे जो जो ऋण लिया उसका भी कुछ जरा इस राष्ट्रीय ऋणमें समाया हुआ था। कपनी-सरकारका राज्य प्रबंध जब घाटमें चलता उस समय ब्रिटिश सरकारको उसकी पजाका ब्याज भोजनक लिए कपनीको जो ऋण लेना पड़ता था उसका भी भारतके राष्ट्रीय ऋणमें समावेश कर दिया गया था। सन् १७६९ में कपनी-सरकारको ऋण देनेकी इजाजत दी गई उसके बादमे कपनी-सरकारका ऋण बढ़ता ही गया था। हैदरअली और टीपूके साथ लड़ी गई लडाइयो, मराठोके साथ लडा गई लडाइयो ब्रिटेनके हितके लिए मोल ली गई परन्तु भारतके सिर मनी गई अफगान लडाई सिंधको अन्यायसे अपने अधिकारमें करनेके लिए लड़ी गई लडाई देश राज्योंको खालसा बननेके लिए किये गये प्रपच तथा सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य-युद्धको दबानेके लिए किये गये खर्चके कारण यह राष्ट्रीय ऋण तेज गतिसे बढ़ता गया था। १८५७ के विद्रोहके बादके वर्षमें हमारा ऋण ७ करोड़ पौंडका था। उसके बाद विनिमय-दराकी कठिनाईके कारण लिया गया ऋण अकालके कारण लिया गया ऋण रेलों और नहराके लिए लिया गया ऋण महान यूरोपीय युद्धके खर्चके लिए भारतको जो भाग दना था उसके लिए लिया गया ऋण— इन सब ऋणोंको मिठाकर १९२० में हमारे सरकारी ऋणका आकड़ा लगभग ४६ करोड़ पौंड तक पहुँच गया था।

२ अब इस पुराने ऋणका तो निबटारा हो गया है। परन्तु १९४७ में देशके स्वतंत्र होनेके बाद पंचवर्षीय योजनाभाके कारण हमारा राष्ट्रीय ऋण तेजीसे बढ़ता जा रहा है। यह ऋण सन् १९६२ के अंतमें लगभग २० ६००० करोड़ तक पहुँच गया था और वह उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है।

३ किमी भी देशमें राष्ट्रीय ऋणकी पद्धति आरंभ होनेके लिए उस देशमें स्थिर सरकारका होना जरूरी है। आज यह राजा है तो बल दूसरा ऐसी स्थितिमें राष्ट्रीय ऋणकी पद्धति संभव नहीं हो सकता। क्योंकि जो लोग ऋण दें उन्हें अपनी मूल रकम और उसका व्याज बराबर मिलते रहनेका विश्वास होना चाहिये। देशमें लडाई या लूटपाट नहीं होनी चाहिये तथा शांति और न्यायका तंत्र होना चाहिये। जब तक प्रजाक जान-मालकी रक्षाके लिए पुलिस सना आदिकी सस्था खड़ी न हुई हो जब तक व्यक्ति और व्यक्तिके बीचक झगडोको मिटानवाली तथा व्यक्ति और व्यक्तिके बीच हुए कराराका न्यायपूर्वक पालन करानवाली सस्थाकी देशमें स्थापना न हुई हो तब तक किसी देशमें व्यापार और उद्योग घघोका विकास नहा हो सकता। ऐसी

स्थितिमें लाग सरकारको उधार देनेके लिए पसा बहास लायें? और जो पसा सरकारका उधार न्यि जाय व बमा इउनवा नही ए एसा निश्वास लागका न हो तो जिनके पास पसा हा वे लाग भी सरकारको उधार देनेके लिए तयार बम हाग? एसी स्थितिमें लाग अपन घनका दबावर रखते ए और जब ऊपर बताई हुई अनकूल स्थिति पदा हाती है तभी सरकारको उधार देनेके लिए तयार हाते ह और तभी सरकार ऋणके रूपमें पसा पानमें समय होती है।

४ यूरोपमें सब प्रथम राष्ट्रीय ऋणकी पद्धति ब्रिटीशके वनिम जिन्को और फ्रान्स आदि स्थानामें आरभ हुई थी क्याकि उपरावन अनुकूल स्थिति सवम पटक इहा भागामें उत्पन्न हुई था। इमके बाद इंग्लंड फ्रांस आदि बड बड राष्ट्रान इटलाय इन स्थानाका पद्धति पर राष्ट्राय ऋण लेना शुरू किया। यूरोपके बड राष्ट्रामें स इंग्लंडमें अनुकूल स्थिति जल्दी उत्पन्न हा गई इसलिए वहा इम पद्धतिका तेजीस प्रचार हुआ। इमीलिए इंग्लंडका राष्ट्राय ऋण अन्य सब राष्ट्रायकी अपक्षा वन्त ग्याग पुराना है। यह ऋण बहाका चाभीर दारी पद्धति समाप्त हानके बाद आरभ हुआ था।

५ इंग्लंडके साथ विस्तारके साथ उमना राष्ट्रीय ऋण भी बहूत वन्त लगा। परन्तु साथ विस्तारके साथ उसके उद्योग पधका भी अदभुत विकास हुआ इमीलिए वह आमामानम ऋणका यह भारी बोझ उठा सका है। राष्ट्रीय ऋणकी बढिस इंग्लंडके व्यापारको नुकसान नहा हुआ जब कि अन्य अन्यक देशोंके व्यापारका उनके बहूत ऋणसे बहूत बडा नुकसान हुआ है।

६ आधुनिक कायमें सरकारका तीन कारणोंसे ऋण लेना अनिवार्य हो जाता है

(१) धार्मिक आय-व्ययका हिमाय न मिलने पर राजानका घाटा पूरा करनेके लिए

(२) मुद्धने अवमरग पर मुद्धका गच पूरा करनेके लिए

(३) राजनीतिक या सामाजिक दृष्टिम कुछ उद्योग सरकारका अपन अधिनारमें लेना आवश्यक मानूम हा ता एम उद्योगामें गच करनेके लिए। य उद्योग यदि अनुत्पात्क हा ता सरकारका उन्हें चलानमें पाग आता है। एम समय अथवा उद्योगोंके उत्पात्क हान पर भा उन्हें चलानके लिए लगेक निजा ध्यिका या स्थिति-गमूह साम्य करने भाग न आवें तब सरकारके लिए उत्पात्क उद्योग भी चलाना आवश्यक हो जाता है और उम उद्योगमें लगेक जानकारा पूजारा गचम उधार लेना पडता है।

७ प्रत्येक सम्य राष्ट्रमें प्रजासत्ताका सिद्धांत कम-अधिक मात्रामें व्यवहारमें आता है इसलिए ऐसे राज्यामें सरकार अपने वार्षिक आय-व्ययका बजट बप आरंभ होनेसे पहले तयार करके प्रजाकी प्रतिनिधि सभाके समक्ष रखती है। सामान्य नियम यह है कि आय-व्ययके बारेमें प्रतिनिधि-सभाकी समति लेनी चाहिये। आधुनिक राष्ट्राकी आयका मुख्य साधन विभिन्न प्रकारके कर होते हैं। उनमें से बहूतसे कर परोक्ष होनेसे उनका ठीक अनुमान नहीं लगाया जा सकता। जिस करकी उत्पत्ति मालकी खपत पर आधार रखता है उस करकी आय भी कम-ज्यादा होती है। वसी प्रकार कोई विशेष कारण न हाने पर भी खचके अनुमानमें फक पडना स्वाभाविक है। आय और व्यय दोनोंमें इस तरहकी अनिश्चितता होनेके कारण बपके अन्तमें आय-व्ययके पन्ड मिलते नहीं और सरकारी खजानका द्रयकी तगी भोगनी पडती है। ऐसे समय सरकारको तुरत ऋण निकालना जरूरी हो जाता है क्योंकि नया कर लगानेके लिए प्रतिनिधि-सभाकी इजाजत लेनी पडती है और एक दो कर लगानसे भी उनकी आय एकदम बसूल नहीं होती। अनेक सम्य राष्ट्रोंमें अत्यन्त आवश्यक खचका अनुमान पहले निकाला जाता है और उस खचको चलाने जितना ही कर प्रजा पर लगाया जाता है। इसलिए आय-व्ययके बजटमें यथासंभव बचत नहीं दिखाई जाती। किसी भी प्रकार गोनो पलडोको बराबर करना होता है। सरकार सदाके सामान्य खच जितना रकम ही लोकासे बसूल करती है। किंसा विशेष अबसर पर ही नया कर लगाया जाता है अथवा ऋण निकाला जाता है। परन्तु कुछ देशोंमें ऋण लेनका मौका ही न आये इस खयालसे अथवा आवश्यकता पडने पर उपयोगी सिद्ध होनेके खयालसे आय-व्ययका बजट इस प्रकार तयार किया जाता है कि कुछ रकम बच जाय। इस पद्धतिमें खचका अंश खूब ज्यादा लगाकर वह सारा खच पूरा हो सके इतन पसे प्रजासे बसूल किये जाते हैं। लेकिन आवश्यकताके अनुसार रकम बसूल करनकी पद्धति ही अच्छी है। ऐसा करनसे बपके अंतमें सरकारी खजानमें बनकी तगी खडी हो तो भी कोई हज नहीं क्याकि इससे सरकार मितव्ययिता करना सीखती है। यदि खचके बाद रकम अधिक बचती है तो सरकारी अधिकारियोंको व्ययका खच करके पसे बरबाद करनेका माह होता है। यह सच है कि आय-व्ययके अनुमानकी घाट वाली पद्धतिमें खचके आकडेका मिगान करनके लिए कभी कभी सरकारको ऋण लेना पडता है। परन्तु ऐसी तात्कालिक ऋण लेनकी पद्धतिस लोकाको बहुत बप्ट नहीं उठाना पन्ता।

८ प्राचीन कालमें राजाओंको सय विभाग पर बद्ध घोडा — नही जसा खच करना पडता था परन्तु आजके युगमें सरकारको सय विभागका संचालन करने और प्रत्यक्ष युद्ध लडनमें बहुत अधिक ऋण लेना पडता है। क्षातिव समयका सरकारा खच उसकी आयके बराबर होता है इसलिए यह सारा खच युद्ध छिडत ही सरकारका ऋण निवाल कर पूरा करना पडता है। नये कर लगानम तात्कालिख खच पूरा नहा हो सकना। लकिन ऐसी व्यवस्था ह्यो सख तो भी नय करवि लिए प्रजा समत नहा होगी और युद्धका काम रक जायगा। अत यह कहा जा सयता है कि ऋण-पद्धतिका राजसे युद्धको एक प्रकारसे उत्तमन मिना है। सम्पत्तिशास्त्रकी दृष्टिसे ऋण लेनर युद्ध करनेका अथ यही होना है कि सरकारके कृत्याना पत्र भावी प्रजा भोगे क्योकि इम ऋणने व्याजका भार सतत बन्ना रहता है और यह भार भावी प्रजाका ही उठाना पडता है। कोई अन्य राय अयायसे हम पर आश्रमण करे और उस समय केवल आत्मरक्षाने लिए ही युद्ध करना पडे तो एस युद्धके साथ भावी प्रजाका सम्बन्ध रहना है। ऐसे समय राष्ट्रीय ऋण निवालना उचित है। परन्तु सरकारके दोषस या उसकी मनायताक कारण उपस्थित होनवाल युद्धके खचका वास्त भावी प्रजा पर डालना अन्याय है। इसलिए कुछ सम्पत्तिशास्त्रिया तथा राजनीतिनायक मत है कि युद्धका खच मयाममव भारी कर डालनर ही पूरा किया जाना चाहिये।

९ ऋण निवालनेका तीसरा कारण इम बातमें है कि सरकारका उद्योग धयानि लिए पूजी मुद्दैया करना पडनी है। सरकार द्वारा ऋण निवालनके जो तीन कारण ऊपर यताय गये ह उनमें स इम तीसरे कारणने विषयमें कोई भी मनभन नही है। राजनातिव और मामाजिन दृष्टिसे कुछ उद्याग-धके सरकारके हाथमें हा सा ही अच्छा यह साचनर सम्य दगामें ऐसे उद्याग धय सरकारके हाथमें हा रने जात ह। गोलान्वास्त्र तथा युद्धक गस्त्रास्त्र बनाननर कारखान सरकारके हाथमें रहे यही वाछनाय माना जायगा। इमी प्रकार डाक-नार विभाग भी सरकारके हाथमें रह बहु उचित है। इगन गिवा माहम गान और पग प्रनारकी अन्य बातानी लोकारा निजी रूपमें अनुबूलना न हो तो एग समय राष्ट्रहितकी दृष्टिसे सरकारको ही इना सम्बन्धित मस्यायें दयवा कारमाने आनि खालनका काम हाथमें लेना चाहिये। इन कामान लिए प्रण लेनर पूजा राठी करना भा गलन नहीं हागा। परन्तु एमा पूजी कर द्वारा राठी न। करना चाहिय क्योकि ये काम भावी प्रजाक लिए भी लाभानयन मिड होत है और इम खानन लिए यनि भावी

प्रजाको 'याजके' रूपम सरकारकी सहायता करनी पड़े तो उसमें 'याय भी है। ऐसे कारखाने 'यापारकी दृष्टिसे लाभदायक न हो तो भी उनके लिए ऋण लेना वाछनीय माना जाता है। स्पष्ट है कि ऐसे कारखान निजी 'यक्ति अपने ही बल-बूते पर नहीं खोल सकते। इसी कारणसे सरकारको एस समय जागे बढकर इस प्रकारके काम हाथम लेन चाहिये। आजक युगमें ऐसे काम अधिकतर स्थानीय स्वराज्यकी सस्थाओके हाथम होत ह। म्युनिसि पल्टी जसी सस्थाआन राष्ट्रीय ऋण-पद्धतिके अनुसार इस ऋण पद्धतिको स्वीकार कर लिया यह उचित ही है। शहरका स्वास्थ्य सुधारनके लिए डनज बनानकी जरूरत हो या पानीका सग्रह करनके लिए रिज्रवायर बनानकी जरूरत हो उस समय ऋण निवारनकी जो पद्धति प्रचलित है वह ठीक है। 'सी प्रकार देशके समुद्र-तट पर बंदरगाहोका विकास तथा एमे अय लोकहितके काय ऋणकी सहायतासे ही किय जा सवत ह। खती-बाडीके लिए नहरें यातायातके लिए खाडिया रलें सडकें वगरा कायोंके लिए भी क्रिया जाने वाला ऋण उचित माना जायगा। सार यह कि जो काय निजी 'यक्ति न कर सके तथा जिन्हे अत्यंत 'ओकोपयोगी काय माना जा मके ऐसे सारे काय राष्ट्रीय ऋण-पद्धति पर अवलंबित रहते ह। अत इस प्रकारके कायोंके लिए भावी प्रजा पर लादा जानवाला ऋणका बोझ अनुचित नहीं माना जायगा क्योंकि उनका सारा 'शभ उस प्रजाकी मिलेगा। इसके विपरीत एस महान काय वतमान प्रजास पसे लेकर किये जाय तो वह बडा अ-याय माना जायगा। क्याकि एसा करनेसे भावी प्रजाके लाभके खातिर वतमान प्रजाके सिर पर बिना कारण बोझ पडता है।

ऋणके प्रकार

१ सरकार जा ऋण निकालता है वह मुख्यतः तीन प्रकारका होता है (१) स्वाया (२) नियतकालिक (३) अस्थायी।

स्वाया ऋणका साधारण नाम दिया करता है। परन्तु मूठ खम गायत ही गौतना है। ऋण दनवालेको हमना अपनी खमना नाम मिला करता है।

नियतकालिक ऋणमें पाच वष वाग मा अमुक वष वाग मूल खम लौगनेकी अवधि नियत कर दी जाती है। जब य अवधि पूरी हो जाती है तब तस ऋणकी मूठ खम वापिस मिल जाता है और यदि खमकी ऋणके रूपमें घालू खमना हो तो दूसर ऋणमें घट फिरम रखी जा सगना है।

अस्थायी ऋण कुछ समयक लिए होता है और छोडी जबधिका वाग चका दिया जाता है। वषन बीच अर्पात आय अमुक मागम हानवात्री हा अर घाग खच उमस पट्ट करना हा अथवा अचानक काई नया काम सडा हा जाय तब सरकारका एसा ऋण लना पगना है।

२ स्थायी और नियतकालिक ऋणके दो विभाग विच गान ह (१) उत्पाक और (२) अनुपाक।

उत्पाक ऋणकी खम नहरा रला कारगानामें खच का जाती है जिनसे घागमें हमना आय हाती रहती ह। एना ऋण सरकारका भारी नहीं पडना क्यकि उममें से उम ब्याज मिगना रहता है और कभा कभी मुनाफा भी हाता है।

अनुपाक ऋण यह है जिसम सरकारका काई आय नहा हाती परन्तु ब्याज भरना पडना है। एस ऋणम सरकारका काई गम नहीं मिलना अथवा गम्बी अवधिका वाग मिलना है। यह ऋण गिहा मुद्र वारा पर खच दिया जाता है। राष्ट्र और व्यक्ति शानसे ही ऋणमें य दो विभाग रहत ह।

३ जिस प्रकार व्यक्ति दूसर व्यक्तिग वम उपार लता है उगी प्रकार राष्ट्र दूसरे राष्ट्रके या अपनी प्रजाग या उपार लता है। भारत पर एका देग दिगारा राष्ट्रीय ऋण माच १९२४ अतमें दो प्रकार का

रु० ४३९१ करोडका देशके भीतरका ऋण

इसमें रु० २७६७ करोडके लोन।

रु० १३२९ करोडकी खजानेकी छुडिया।

रु० २७७ करोडका जस्थायी ऋण।

रु० १८ करोडके पके हुए लोन।

रु० १५२१ करोडका विदेशी ऋण

इसमें रु० ५०३ करोड अमरीकाके।

रु० ९५ करोड अमरीकाके बकाके।

रु० १२३ करोड रुसके।

रु० १७८ करोड इंग्लण्डके।

रु० १९८ करोड विश्वबक्के।

रु० १२९ करोड पश्चिम जमनीक।

रु० २९५ करोड अय देगोके।

कुल ऋण रु० ५९१० करोड

मानव अर्थशास्त्र

पाचवा भाग

व्यय

मनुष्य-जातिके अथ-व्यवहारमें सम्पत्तिके उत्पादनकी अपेक्षा उसके खर्चका महत्त्व कम नहीं है। परन्तु इस आर समाज-आस्त्रियान जितना चाहिये उतना ध्यान अभा तक नहा लिया है। अथके सदध्ययका सामोपाग आस्त्र निर्माण हाना अभी बाकी है। इसका एक कारण तो यह है कि उत्पादन अधिकतर सामूहिक या सामाजिक स्वरूपका होता है अत्र कि उसके अयम अयम इच्छाए रुचि-अरुचि और मनकी तरगाका बहुत बडा हाथ रहता है। आज अधिकतर अय परिवार तक ही सीमित रहता है। इसीलिए गृह विज्ञानम अयका विवेचन आता ह। किन्तु वह पूण नही होता। इसके सिवा अयम कुशलताका अपेक्षा विचार शिक्षणकी अधिक आगा रखी जाती है। इसलिए इसका कुछ भाग तो शिक्षा और नीतिके क्षेत्रम जाना ह। इसलिए इस पुस्तकमें अयके सम्बन्धम केवल दिगा सूचन करके ही खे जाना हमने उचित समझा ह।

किसी भी राष्ट्रका अयका विचार करनस पहले इस बातका भी विचार करना चाहिये कि उसकी सम्पत्ति और आय कितनी है और उसे खर्च करनवाली जनसंख्या कितनी है। इसलिए य दो प्रकरण हमने इस भागमें ही रखे ह।

राष्ट्रीय संपत्ति और राष्ट्रीय आय

१ किसान मनुष्यकी आर्थिक स्थितिके बारेमें ज्ञातचान या चर्चा जाना है तब हममें यह कहनेका प्रयास है कि असम सठ करासंपत्ति है अमुक-शापारा संपत्ति है अमुक किसानके पास पन्नाम या सौ बीघा जमान है या अमुक गापासके पास सौ गाया अथवा दो सा गायाका सठ है। करणमें मनुष्यका स्थितिपर ध्यान धात करत समय अधिकतर उमका वापिक आय बताया जाता है कि असम व्यक्तिके वापिक आय पाव हतार पाण है या तस हजार पीण है। तस तरह संपत्तिके मापनके दो पद्धतिया प्रचलित हैं (१) संपत्तिके मपूण मानाके आधार और (२) वापिक आयके आधार पर। कुछ मात्रा परम संपत्तिके हिमाज लगानके बजाय आयके आधार पर यह हिमाज लगाना बस्तुस्थिति बतानके अधिक अच्छा रानि है बजाकि व्यक्ति या राष्ट्रके अधिक सुख-सुविधाका आधार इस बात पर रहता है कि उम उपयोग या तब करनेके लिए कितनी चीजें और कितनी सेवाएँ मिल सकत हैं। भूत किमा मनुष्यके पास एक लाख रुपयेका सामान है या सा पन्नाम बाघ जमान है परन्तु उम जायगा या जमानम उस जितनी आय या कितनी पन्नाम हास्य बहा उम उपयोगके लिए मिल गतनी है। जायगा या जमान ता उपयोगमें आ गहा जा सकता।

२ यह बात ठीक हीन हुए भा उमके साथ यह बात भा ध्यानमें रखन जमा है कि मान या वचम हानवांग अमुक आयका या उत्तन समयमें उपयोग या सचके लिए मिलनवांग चीजा और सेवाआका आधार इमा पर रहता है कि समाजमें या राष्ट्रमें संपत्तिकी कुल मात्रा कितनी है। अतः संपत्तिकी मात्राका विचार भी आवश्यक हा जाता है। किमा राष्ट्र या समाजकी संपत्तिकी मात्राका विचार करत समय य सब बातें ध्यानमें रखनी चाहिये कि उम प्रयोगकी जमान कतिज पन्नाम आदि मापन-संपत्ति बहाका जायगा उम प्रयोगका प्रादुर्भाव मुक्तता स्थितिमें जहात्रा या नावते ध्यानकी मुविधा उमके बस्तुगाहमें उल्लेख मुविधाण उतना भौगातिक महत्व और उम प्रयोगके ऐतिहासिक अवस्था और स्मारक गो धारणके लिए आवश्यक है। समाजमें एका मारा चीजाका गिनता करना चाहिये

जिन पर उस प्रदेशके लोग स्वामित्व अधिकार रख सकते हो और जिनका वे लभभोग कर सकते हा। इसवे जलाया ये सब चीजें सम्पत्ति बनकर मनष्यके उपयोगमें तभी आ सकती ह जब वहा बसनेवाले लोगोको इन चीजोका उपयोग करना आता हो। किसी प्रदेशमें कुदरती सम्पत्ति बहुत होने पर भी य द वहा रहनवाले लोगोको उस सम्पत्तिका उपयोग करना न आता हो तो व सम्पत्ति बकार पडी रहती है।

द्रव्यके रूपमें सपत्तिका माप

३ राष्ट्रकी सपत्तिके इस प्रकारके समूह या सग्रहमें से उपयोगी चीजोका मा प्रवाह बहता रहता है वही राष्ट्रीय आय है। राष्ट्रकी सम्पत्तिके सारे जग उपयोगी वस्तुओके वार्षिक प्रवाहमें वृद्धि करत ह। इनमें से जा जो अग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमें समाजकी उत्पादन शक्ति बढ़ाते ह और उपयोगी चीजो या सेवाओकी मात्राको बढ़ाते ह वे सब राष्ट्रीय आयमें वृद्धि करते ह। राष्ट्रीय सम्पत्ति और राष्ट्रीय आयको द्रव्यके रूपमें ही मापनकी प्रथा पड गई है क्यकि हमारे पास सम्पत्ति और आयको मापनका द्रव्यके सिवा और कोई साधन नहीं है। परन्तु यह ध्यानमें रखना चाहिय कि राष्ट्रीय सम्पत्ति और राष्ट्रीय आयमें बहुतसी चीज ऐसी होती ह जो द्रव्यके गजसे नहीं मापी जा सकता। यह कठिनाई राष्ट्रीय सम्पत्तिका हिसाब लगानकी अपेक्षा राष्ट्रीय आयका हिसाब लगानमें ज्यादा बाधक होती है। उदाहरणके लिए राष्ट्रीय आयका हिसाब लगाते समय घर या फरनीचर यदि किसीको किरायसे दिया गया हो तो उसका भाडा आयमें गिना जाता है परन्तु उसका मालिक स्वय उसे काममें ले या भाडा लिये बिना दूसरे किसीको उपयोग करनके लिए दे दे तो उससे मालिकको कोई आय नहीं हाती। इसलिए ऐसी चीज राष्ट्रीय आयमें नहीं गिनी जाती। अलबत्ता इन चीजोसे जो लाभ मिलता है या सुख-सुविधा मिलती है उससे समाजको प्राप्त होनवाले इस प्रकारके लाभ या सुविधाकी मात्रा तो बन्ती ही है। यह कठिनाई दूर करनके लिए एसा किया जाता है कि मालिक स्वय मकानका उपयोग करता हो तो भी उस किरायसे देने पर जो आय हो सकती है उसका बदाज ग्याकर उसने अनुसार आयकी गिनती कर ली जाती है। परन्तु मनुष्यने पास कप-लत्ते हो बरतन भाडे हा गहस्याका दूसरा सामान हो पुस्तकाग्र्य हो घोडागाडी या माटर हा गहना-गाटा हो और उन सबका वह स्वय ही उपयोग करता हो तो उसकी कोई आय नहीं पकडी जाती। हमारे जस दानम तो आयका हिसाब लगानमें इससे भा ज्यादा कठिनाई होती है।

मतमें घरक हा आत्मी काम करत हा तो उन्हें पसेने रूपमें कोई मजदूरी नहा चुकाई जाती। इसलिए उनक श्रमकी आयमें गिनता नहा बा जाता। इसा तरह खेतमें जो फसल पके उस किमान स्वय अपने उपयोगमें ल ले या घरमें जो गाय भस हा उनक दूध या या छाछका स्वय हा उपयोग करे ना उस आयमें नहा गिना जाता। जा बाजारमें बेचा जाय उमाका गिनती आयमें हाना है।

सेवाओंकी आय

४ सेवाओंकी आयका हिसाब गणनमें भी एम अटपट प्रश्न खड हात ह। हमार दगके कुछ अयोग्यता इस मतक ह कि एसा आय हिसाबमें न गी जाय। क्योंकि उन्हें इसमें मुमकिनता नहा मानू हानी कि कुछ सेवाओंका आय ता हिसाबमें पकरी जाय और कुछकी न पकटा जाय। घरका काम करनवाल नौकराका जा बतन मिगता है वह उनकी आय है और इसलिए वह हिसाबमें ला जा सकती है। परन्तु परिवारक गण घरका काम कर, तो उन्हें कोई बतन नहा लिया जाता। इसलिए उनका कोई आय नहा गिना जाता। परिवारमें माता और पला जा भवा करती ह और उसम परिवारका जा गुन मिलता है उसकी कीमत पगमें आकी हा नहा जा सकना। राष्ट्रीय या सामाजिक आयमें उसकी कोई गिनता नहा हानी परन्तु इसी तरहका यद्यपि दगम कहा अधिक घणिया काम आया नौकरानी या शिक्षिका करना है ता उनकी आय हिसाबमें पकटा जाती है। इस प्रकारकी हियावकी पद्धतिमें एम अजीब बात यह हो जाती है कि कोई पुरुष उमका घर मन्मालनका नौकरानीम विवाह कर ले तो राष्ट्रीय आयमें कमा हा जाती है। युद्धकालमें गृहिणिया जब अपने घरका काम नौकरानी गौपतर युद्ध प्रयत्नमें महायत्ता करनक लिए तरा तरहन काम करला ह तत्र घरका काम करनेवाक नौकराका बतन और इन गृहिणियाका बतन दोनाने मिगकर राष्ट्रीय आयमें दुगुना वृद्धि गिनी जाना है।

५ अर सरकारा नौकराका भवाभारा विचार कर। उसी गणन राष्ट्रक गिण उपयोगी माना जाता ह। परन्तु उन्हें जा बतन मिगता है क राष्ट्राय आयमें उपयोगी माना जाता है। परन्तु प्रश्न ता यह है कि उन्हें ना बतन मिगता है ता राष्ट्रीय आयमें गिना जाय या नहा? कुछ अयोग्यता ता राष्ट्रीय आयमें गिनतका नियम करत ह। व कहत है कि एमका मत एम ता य एसा कि सरकारी व्ययम्पारा सब बड़ाग राष्ट्रीय आयमें वद्धि राजा है। मान सत्रिय गिना प्रणों पारी या लूट-भ्रमाक गणन हान

जिन पर उस प्रदेशके लाग स्वामित्व-अधिकार रख सकते हैं और जिनका वे उपभोग कर सकते हैं। इसके जलावा ये सब चीजें सम्पत्ति बनकर मनुष्यके उपयोगमें लानी जा सकती हैं जब वहां बसनेवाले लोगोंको इन चीजोंका उपयोग करना आता है। किसी प्रदेशमें कुदरती सम्पत्ति बहुत होने पर भी यदि वहां रहनेवाले लोगोंको उस सम्पत्तिको उपयोग करना न आता हो तो वह सम्पत्ति बकार पड़ी रहनी है।

द्रव्यके रूपमें सम्पत्तिको माप

३ राष्ट्रकी सम्पत्तिके इस प्रकारके समूह या सग्रहमें से उपयोगी चीजोंका जो प्रवाह बहता रहता है वही राष्ट्रीय आय है। राष्ट्रकी सम्पत्तिके सारे जग उपयोगी वस्तुओंका वार्षिक प्रवाहमें वृद्धि करत है। इनमें से जो अंग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमें समाजकी उत्पादन शक्ति बनाते हैं और उपयोगी चीजों या सेवाओंकी मात्राको बढ़ाने में वे सब राष्ट्रीय आयमें वृद्धि करते हैं। राष्ट्रीय सम्पत्ति और राष्ट्रीय आयको द्रव्यके रूपमें ही मापनेकी प्रथा पड़ गई है क्योंकि हमारे पास सम्पत्ति और आयको मापनेका द्रव्यके सिवा और कोई साधन नहीं है। परन्तु यह ध्यानमें रखना चाहिये कि राष्ट्रीय सम्पत्ति और राष्ट्रीय आयमें बहुतसी चीजें ऐसी होती हैं जो द्रव्यके गणनेसे नहीं मापी जा सकती। यह कठिनाई राष्ट्रीय सम्पत्तिको हिसाब ठगानेकी अपेक्षा राष्ट्रीय आयका हिसाब लगानेमें ज्यादा बाधक होती है। उदाहरणके लिए राष्ट्रीय आयका हिसाब लगाने समय घर या फरनीचर यदि किसीको किरायेसे लिया गया हो तो उसका भाड़ा आयमें गिना जाता है परन्तु उसका मासिक स्वयं उसे काममें ले या भाड़ा लिये बिना दूसरे किसीको उपयोग करनेके लिए दे दे तो उससे मासिकका कोई आय नहीं होती। इसलिए ऐसी चीज राष्ट्रीय आयमें नहीं गिनी जाती। अलबत्ता इन चीजोंसे जो लाभ मिलना है या सुख-सुविधा मिलनी है उससे समाजको प्राप्त होनेवाले इस प्रकारके लाभ या सुविधाकी मात्रा तो बढ़ती ही है। यह कठिनाई दूर करनेके लिए ऐसा किया जाता है कि मासिक स्वयं मकानका उपयोग करता हो तो भी उसे किरायेसे देने पर जो गाय हा सकती है उसका अंदाज ठगाकर उसने अनुसार आयका गिनती कर ली जाती है। परन्तु मनुष्यके पास कपड़-लत्ते हैं और बरतन भाड़े हैं गहरीकी दूसरा सामान ही पुस्तकालय है घोंगलाया या मोटर है गहना-नाटा ही और उन सबका वह स्वयं ही उपयोग करता हो तो उसकी कोई आय नहीं पकड़ी जाती। हमारे जैसे देशोंमें तो आयका हिसाब ठगानेमें इससे भी ज्यादा कठिनाई होती है।

घरमें घरके ही आत्मी काम करत हा ता उट्ट पमवे रूपमें कोई गजदूरी नहा चुकार् जाती। इसलिए उनवे श्रमकी आयमें गिनती नहा का गाा। इसा तरह खेतमें जा फमल पक उम बिमान स्वय अपन उपयागमें ले या घरमें जा गाय भस हा उनक दूध घा या छाछगा स्वय हा उपयाग करे तो उस आयम नहा गिना जाता। जा बाजारमें बेना गाय उसका गिनती आयमें होनी है।

लगती है और वहाँ पुलिस तथा फाँदारी अदालतोंकी सख्या बढ़ानी पड़ती है। सच पूछा जाय तो जितना सरकारी गच बढ़ता है उतना ही कर देन वालों पर बोझ बढ़ता है। इसके बदले यदि हम पुलिस और मजिस्ट्रेटोंके वेतनाका राष्ट्रीय आयमें गिन ता गंगा पर करका बोझ बढ जान पर भा राष्ट्रीय आय बढी हुई मालूम होगी। वतना होन पर भी जिस ढंगसे जाजकल राष्ट्रीय आयका हिसाब लगाया जाता है उसमें स तरहके वेतन जायके रूपमें ही मान जाते ह। हमारे जैसे देशमें भी जहाँ सरकारी सच बहुत भारी है इसी तरह हिसाब किया जाता है। इसके भीतर रहा अयाय तो स्पष्ट ही है।

६ अब वकीलों और डाक्टरोंकी सवाओका उदाहरण लीजिये। लोगोंमें झगड और मुकदमेवाजी वत ता वकीलोंकी आय बढ़ती है। लोगोंमें बीमारी और महामारी फरे तो डाक्टरोंकी आय बढ़ती है। इन आयोंको हिसाबमें पकड़नेसे राष्ट्रीय आय बढी हुई दिखाई देगी पर चण्ड-टटोवाल समाज और रोगी समाजमें लोगोंकी उत्पादन शक्ति तो घटी हुई ही होती है और लोगोंकी सुख सुविधाओंमें भी कमी हो जाती है। इसी तरह गरावके धधसे, जुएक धधसे और सट्टेके धधसे होनवाली आयके बारेमें समझना चाहिये।

७ ऊपरकी चर्चा इतना ही ध्यानमें रखनक लिए है कि किसी समाजको सचमुच कितनी आर्थिक सुख-सुविधाए प्राप्त ह इसका अंदाज राष्ट्रीय आयका इस तरह हिसाब लगानसे निश्चित या सच्चे रूपमें नहीं हो सकता। इससे तो समाजकी आर्थिक स्थितिका बहुत मोटा और धुंधला-सा अंदाज ही हो सकता है। अकसर द्रव्यके रूपमें गिनी जानवाली राष्ट्रीय सम्पत्तिका और राष्ट्रीय जायका समाजकी वास्तविक आर्थिक सुख-सुविधाओंके साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता। फिर भी चूँकि हिसाब लगानेका और कोई उपाय नहा है इसलिए द्रव्यके रूपमें हम हिसाब लगाते ह।

आयका हिसाब लगानेकी रीतियाँ

८ अब हम यह देखेंगे कि यह हिसाब किस तरह लगाना जाता है। इसकी दो रीतियाँ ह एक रीति ता यह है कि समाजके प्रत्येक व्यक्तिकी पैसेके रूपमें हानबाराण आयका जोड लगाकर उस परसे राष्ट्रीय आय निश्चित की जाती है। इनकम टक्सके आकडा परसे आयका हिसाब लगाया जाता है और जिनकी आय इनकम टक्सके लायक न हो या इनकम टक्समें न आती हो उनकी आयका अंदाज निकालकर उसमें जोड दिया जाता है।

९ दूसरी रीति यह है कि प्रतिवप जितनी चीजें और सेनाएँ समाजके उपभागके लिए मिलती हैं उनका मूँचा बनाकर जार बाजार भागमें उनकी कीमत लगाकर उसे जाड़ लिया जाता है। दगमें हानवाल हर प्रकारके उत्पादनका तफसीलवार और निश्चित नाप हो ता ही इस रातिम गणना मिल सकती है।

१० इसलिए दोना रीतियारा जा मय सेना ठीक है। एक रीतिस निराल हुए आवडाकी दूसरी रीतिम निवाण हुए आकाले कुना करक दाना आनका पनवा जाच भी की जा सकती है। इस प्रकारक हिगायका निश्चितताना आधार हिसाब लगानके लिए उपकरण साधना और आनका पर हाता है। इस मामलम हमार दगमें बडी कठिनाइया ह। जनसख्याका बण भाग विसानाना है। उनकी आय इनकम टकमके क्षत्रमें नहा आती। जावादीक दूसर वर्गामें भी इनकम टकम देनवाण बहुत षाड लाग होने ह। इनके आरड नही मिण सकत कि थ्रम करनवाले लागवा कुण कितनी गजदूरी मिलता है। इसी तरह सत्र प्रकारके उत्पादनका भा तफसीलवार या निश्चित नाप नया हाता। सरकारी विभागा और स्थानीय सस्याआमों कितन मनुष्य काम करत ह आर उनके वेतनकी रकम कितनी हानी है इसके भा इण्टरड जावड नहा मिणत। घरका काम करनवाण गौरानी सख्याका षाई निश्चित आनका प्राप्त नहा होना। इस तरहके सार आधारभूत तथ्याक जमायम हमार दगमें आयका कुल आरडा निराणना भारी कठिन और गामना काम है।

३० रायका हिसाब

११ फिर भी हमार दगमें बण बण जसगास्त्रियान यण गाम्य दिया है। उनमें ग अतिम और अधिग मूकम प्रयाग टा० रावरा है। उहान राष्ट्रीय आयकी नीच लिए अनुमार ध्याना करक उसारा गियाव लगाया है।

१२ जिन षाजा और गनाआता प्रवाह यण भर चणता रण हा और जा उम वषमें विचार लिए उपलभ्य हा उनमें ग आयान हुई षाजे जीर गवाण अण निराणर जा बसें उनका बाजार नाण कीमत निराण नाप। और उसमें ग नाव गिया षाजे अलग कर दी जाय।

(१) दगमें पुराण गणममें ग ज कुण गण दिया जाय और उमन काण उम गणममें आ कामा हो उगना कामा।

(२) फिर षीजा और सवाआरा प्रवाह उणाननायमें गण हो उगी कीमत।

(३) पूजीके रूपमें काम आनवागी साधन-सम्पत्तिकी रक्षाके लिए जो चीजें जोर में आए खर्च हों उनकी कीमत।

(४) राज्यको परोक्ष कराके जरिये होनवाली आय।

(५) जायात निर्यातकी यापार-तुलाम होनवाली वस्तु।

(६) देशके विदेशी ऋणमें होनवाली वृद्धि।

(७) विन्शासे वसूल होनवाले देशके — सरकारके और प्रजाके — ऋणमें होनवाली कमी।

१३ इस विवरणके आधार पर डा० रावने सन् १९३१-३२ के वर्षका हिसाब आगे ब्रिटिश भारतकी राष्ट्रीय आयका अंदाज लगभग सनह अरब रुपया निकाला है। उसकी तफसील इस तरह है

आयका मूल स्रोत	कीमत (करोड़ रुपयोंमें)
(१) खताका उत्पादन	५९२७
(२) ढाराका उत्पादन	२६८३
(३) मच्छीमारी और निकास	१२०
(४) जंगलका उत्पादन	९२
(५) खानाका उत्पादन	१८०
(६) न्यूनतम टक्सकी अनुमानित आय	२१६१
(७) उद्यागामें ऋण हुए मजदूरोंकी आय	२१००
(८) सरकारी विभागों रेल्वे डाक और तारके नौकरोंकी आय	५९०
(९) यापारमें ऋण हुए लोगोंकी आय	१०२३
(१०) वकील डाक्टर शिक्षक आदिकी आय	४१६
(११) रेल्वे डाक और तारके अलावा यातायातके अन्य साधनमें ऋण हुए लोगोंकी आय	२८२
(१२) घरका काम करनवाले नौकरोंकी आय	३२५
(१३) विविध	७८०

कुल १६८९०

न० ७ से १३ तककी आय एसी है जिस पर न्यूनतम टक्स नही लगाया गया है। इस हिसाबमें ब्रिटिश भारतमें सन १९३१-३२ के वर्षके लिए प्रतिमनुष्य औसत आय ६२ रुपये आता है।

इसके पहले लगाये गये हिस्साय

१४ हमारे देशमें राष्ट्रीय आयका हिस्सा सबसे पहले दानभाई गोरानाने सन १८७६में लगाया था। उन्होंने अपन हिस्साके लिए १८६८ ६९ का वय लिया था। तबसे आज तक अनेक निष्णाता द्वारा यह हिस्सा लगाया गया है। नाच बोझमें इसका तपमाला दा गई है

हिस्साय लगाने वालेका नाम	किस वर्षमें हिस्साय लगाया	हिस्सायका वय	प्रतिमनुष्य औसत आय (रुपयामें)
दानभाई गोराना	१८७६	१८६८	२०
वर्तिय एण्ड बाबर	१८८०	१८८१	२७
गड बच्चन	१९०१	१८९७-०८	४०
त्रिभुवन डिगरी	१९०२	१८९०	१८
एफ० जा० एन्डिंगन	१९०२	१८७१	२७ ३
	१९००	१८९५	५२
सर बा० एन० गर्मा	१९२१	१९११	५०
फिरोज गिराज	१९२६	१९११	४९
	१९२४	१९२१	१०७
	१९२४	१९२२	११६
गाह और गभाना	१९२४	१९२१	७०
वाडिया और जागी	१९२५	१९१५-१४	४४ ३
फिरोज गिराज	१९२२	१९३१	६३
डॉ० राव	१९००	१९०५-२०	७६
,	१९४०	१९०१-१२	१०

ऊपरके हिस्सायमें गाह और गभानाके आका सारे हिस्साय लिए है और दूसरे सब आकाके गिराज गिराज गिराज गिराज लिए है।

१५ परन्तु हम इन आकाकी एक-दूसरेके साथ तुलना नही कर सकते क्योंकि इनके लम्बे अर्थमें आकाके भागमें बहुत जरा फरक है। गाह और डॉ० राव गन् १९२१ में ७० तक आकाके आका पर तुलना तुलना आकाके परिवर्तन करके उन्हें एक-दूसरेके साथ तुलना किया है। गिराज एक दूसरेके साथ तुलना था ता गह। उनका परिणाम हम तब है

लेखक	औसत आयका आकडा	हिसाबका वय	१९२५ से २९ के भावोंके अनुसार फक करने पर आया हुआ आकडा
दादाभाई नौरोजी	२००	१८६८	४४२
एटकिंसन	३५२	१८९५	५५०
शाह और खभाता	८८०	१९२१-२२	७८०
डा० राव	७६०	१९२५-२९	७६

परन्तु डा० राव स्वयं हा यह कहते हैं कि इस तरहका परिवर्तन कर देन पर भी इन आकडाको सच्चे मानकर एक दूसरेके साथ इनकी तुलना करना ठीक नहीं है क्योंकि अदाज निकालनकी रीतिम बड़ा फक रहता ही है। उसका जसर अदाजने आकडा पर पड विना नहीं रहता।

१६ जस किसी एक देशके पुरान आकडोके साथ नय आकडोकी तुलना करना दोषपूर्ण है वसे ही अलग अलग देशोकी आयके आकडोकी भी एक दूसरेके साथ तुलना करना दोषपूर्ण है। क्योंकि अलग अलग देशामें लोगोकी जरूरतकी चीजाके भावोका स्तर अलग अलग होता है अथ रचना अलग अलग होती है और हिसाब लगानकी रीति भी अलग अलग होती है। फिर भी इन आकडोको एक साथ देखनसे अलग अलग देशोके रहन-सहनके स्तरका मोटा अदाज तो ऋग ही सकता है। यह जाननेके लिए नीचेके आकड दिये जाते हैं

देश	प्रति मनुष्य वार्षिक आय (रुपयामें)	
	(१९५५)	(१९५९)
अमेरिका	१०२३४	११११८
केनेडा	६९८१५	७३१९
ग्रेट ब्रिटेन	४०४३	४८६३
फ्रान्स	३९५३	४२०८
जापान	१०६	१४२६
भारत	२६२	३०२

१७ भावोका फक और हिसाब लगानका रीतियोके भदको ध्यानमें रखें तो भी ऊपरके आकडे देखनसे यह मान्य होता है कि हमारे देश और दूसरे देशोकी आर्थिक स्थितिके बीच जमीन-आसमानका अंतर है। थान्स घावान देशो छोड दें ता भी दूसरे देशोस हम बहुत गरीब हैं।

जनसंख्या

१ प्रत्येक देशका अपना राष्ट्रीय आयका निम्नान् गणना ही अपनी जनसंख्याका हिमाव भा ध्यानमें रखना ही चाहिये और हम बातका हिमाव गणना चाहिये कि गणना वास्तविक उत्पादन दामों बसतवा गणना भरण पायणन गिण पयाणन है या नहा। य गणना विस्तृत सच है कि अधिकतर गणना गराना सपतितव असमान बटवारक कारण पया होना है। परनु मान गजिय कि हम सपतितवा स्यापयूण और उचित बटवारा करनमें सप ग हा जाय ता भा यह प्रश्न तो खडा ही रहता है कि गणना कुल आय गणमें बसतवा गार लागते गिण पयाणन है या नहा।

माल्यसक्ती चेतावनी

२ अठारहवा सन्तक उत्तरगधमें माल्यस नामक एक खबन एसा हिमाव रगाया था कि बीचमें और बार्क बाधा न आवे ता दुनियाकी जनसंख्या पञ्चाग बधमें तुगुना हा सक्ता है। इसक सिवा नितनी मात्रामें जनसंख्या बढ़ता है उतनी मात्रामें खाद्य पदार्थोंका पयावार नहा बन्ता। जहा जनसंख्या रगा-गणितक नियमग अर्थात् दा दून चार चार दून आठ, आठ दून मात्रहक प्रसस बन्ता है वहा खाद्य पदार्थोंका पयावार अकगणितक नियमग अर्थात् दा और ग चार चार और ग छह छह और दा आठ तथा आठ और ग दसक प्रसस बन्ता है।

५ एसा अगज गगाया गया है कि माभायन स्वस्थ समाजमें अधिक जनसंख्या एक हजार पर ४५ रहता है और कमन कम मृत्युसंख्या एक हजार पर १० रहता है। हम गिणावन चक्रवृद्धि ब्याजकी पद्धतिग गिनता की जाय ता २५ बधमें जनसंख्या जफर तुगुनी हा सक्ती है। परनु आज तक दुनियामें देगा गया है कि गिगा भी ग्रावित प्राणियांरी सग्या अधिकतम अधिक दरक अनुमार रक हा नहा सक्ता। इसा विचार परर दारिनिन अपना जीवन-भाषामना मिढान्य निराग्य है। उमन कहा है कि बार्द ना प्राणा अरना सग्यामें अरना पूरा सक्तर अनुमार वृद्धि कर सन ता दूरर बार्द प्राणियांरी गिण पृथ्या पर रहनकी जगह ही न बच और उहें गानका पूरी सराक भी न मिग। गगारिण दुनियाक प्राणियोंमें आरामों और एक प्राणीका दूगर प्राणित गाय जीवन-भाषाम हाडा रहता है और उममें जा अरिण बलवान हागा है वहा ती सक्ता है। हममें बलवान गिग

कहा जाय यह प्रश्न सोचन लायक है। जिनकी सहार गवित अधिक हो वे बलवान या जिनकी सहयोग शक्ति अधिक हो वे बलवान? अधिक सहार शक्तिवाली जातियाका परिचय हमें दो महायुद्धों हो गया है। अब ता गति और प्रगतिके लिए सहयोग गन्तिका विवास किय बिना काम गहा चल सक्ता। पर हम दूसरे प्रश्न पर चले गय।

४ माल्यसका हिसाब अन्तरंग सच्चा नहा निकला। दुनियाके सामन उसका मत प्रस्तुत होनेको आज लगभग पीन दो सौ बष हा गय ह। पच्चीस बषमें तो नहा परन्तु सभव ह इन पीन दो सौ बषोंमें दुनियाकी जनमस्या दुगुनी हई हा। परतु उसके साथ मनुष्यन साथ पदार्थोंकी पदावार भा काफी बढा ली है। नय नय प्रदेग उसन लल ह और आहारके भा बहुतस नय साधन मनुष्यका मिले ह। परन्तु माल्यसकी बातना हम गन्गय न करे और उसे चेतावनाके रूपमें मानें तो उसकी बातमें बहुत सार है और यह विचारने लायक है एसा हमें मानना हा पडगा।

बद्धि पर प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष अकुण

५ माल्यसन तो यह चेतावनी जगतके सम्य समाजाको दी है परन्तु विल्कृत प्राथमिक और जगली जीवन बितानेवाले समाजोंमें भी आहारके अनुपातमें जनसख्याके बढनका प्रश्न पदा होता है और उन्हें उसे रकनके उपाय करन पडते ह। हसी लखक प्रोपाटविनन अपनी 'सहयोग बत्ति नामक पुस्तकमें उत्तरी ध्रुवमें बसनेवाली एगूट जातिके कुछ रीति रिवाजोका बणन किया है। माता पिता बच्चासे बहुत प्यार करते ह और उन्हें लड उडात ह इस बातना उल्लेख करके वह आग कहता है एमे प्रेमा माता पिताको जब हम बच्चाकी हत्या करत देखते ह तब हमें यह स्वीकार करना ही चाहिय कि यह प्रथा भले उसका बाहरी रूप कसा भा हो अनिवाय परिस्थितियाके दमावके कारण ही चली होगी। अपने समूहकी हस्ता कायम रखनका कनब्य पूरा करनके लिए और पाल पास कर बडे किय हुए अपने बालकाको जीवित रखनके लिए वे बान्हत्याकी प्रथाका आसरा लते हाग। वे अमर्याद रूपमें प्रजोत्पत्ति नहा करते और जन्मकी सख्याको मयागमें रखनके लिए अपन पर कितने हा अकुण लगात ह और उनका सखीस पाउन करत हैं फिर भी जिनने बच्चे पदा होने ह उन सबका वे पाउन-पापण नहा कर सकते। यह भी पता चला है कि जब वे अपन निर्वाहके साधन बढा पाते हैं तब उनमें एकत्र बालहत्या कम हो जाती है। माता पिता यह धूर बृत्य बहुत ज्याग भजनूर हो जान पर ही करते ह। जन्मके लिए उन्हान अच्छ और

शत्रुनके दिन निश्चित कर रने ह। अछ तिन पदा होनवाले बच्चावा के जिलाते ह और बुरे तिन पदा हानवालाको मरज देते ह। फिर भी बच्चेको मार डालनका क्रूर काम करत समय सबका बपवपा तो छूटती ही है। इस त्रिए साधी हिमा करवे बच्चकी ताग उनक बजाय ब एस बच्चेको जगलमें छाड आना अधिन पसद करते ह। इस तरह उन लोगामें वाग्दृत्पाकी प्रथा निद्रयताक कारण नहा बत्कि मारी आवादीके लिए पूरा आहार न होनके कारण गचारासे पडी है। शानाटकिनने कहा है कि अन्य बहुतसी बतवासा जातियामें भी वाग्दृत्पाकी प्रथा एस ही कारणसे प्रचलित है।

६ और इसी कारण बहुतमी बतवासी जातियामें आत्महत्या करनेकी प्रथा भी पायी जाती है। जब किता बूट आत्मीका गगता है कि यह समूह पर भार बन गया है और हर रोज बच्चके मुहना खोर छीनता है साथ ही जब उस एसा लगता है कि हर रोज समुद्रके पयरीले किनारे पर या घन जगलम उस नोजवानाक बध पर घग्गर घूमना पडता है तब यह बहन लगता है म दूमरके खानमें हिस्ता बटाता ह। अब मरे जानका समय आ पहुचा है। फिर बट बूढा भरनका तयार हो जाता है। वह अपने त्रिए बत्र सोन लता है और अपन गग-मम्बधिमाको एत्र करवे उनसे प्रमक साथ बिना गना है। उमके पितान भी एगा ही किया था और अब उम भी एमा ही करना चाहिय। इस तरहका आत्महत्याकी य बतवासी लाग अनन समूहक प्रति एक बहू बग बनव्य समझत ह। कुछ बतवासी जातियामें थोडासा भाया या रास्तमें गानका सामान बूड आत्मीक साथ बाध कर उस जगलमें छोड आनकी भी प्रथा है।'

७ कुछ बतवासी जानियामें एमी प्रथा होनी है कि बोर्ड नोजवान जब तक बमस बम एक आदमीका मार कर उमका मिर न ल आय तब तर यह निवाहक लयन नहा माना जाता। इस प्रथाका जहमें यह गयाता है ही कि मनुष्यको गृहम्याधमका पाग उठानक लिए तयार हानस पहुक अपन पराधमा हानका परिाय दना चाहिये। इसक अलावा इनक पीछ मर सपाल भी हा गगता है कि विवाह करक मनुष्य जनसंख्यामें बडि करल लग उगा पहुके उगमें तमी भी कर द। यह घन है कि त्रिन घनघासा जातियामें विशाकी माग्दा पानके त्रि विगावा हवा करनेकी प्रथा हानी है उन जानियारा सभ्या बड नटा पागा।

८ हमारे सभ्य गाा जानसा गमात्रामें जनसंख्याकी बडि पर ग प्रकारक जहुग काम करल है। एन भहुग ता प्रत्यन है। गगमारी युद्धामें

होनवाला सहार अकाल वाट भूकप भुखमरी आदि आकस्मिक सक्टाक कारण बहुत लोग समय समय पर मारे जाते ह जीर जनसंख्याके बटनमें रखावट हो जाती है। दूसरा अकुश अप्रत्यक्ष है। बड़ी उमरमें विवाह करना जिससे सन्तानोत्पत्तिकी अवधि कम रहे जीर बड़ी उमरमें बच्चे होत भा कम ह इसलिए एक शारीरिक कारणका भी लाभ मिलता है समय रखना जीर गभ निरोधके कृत्रिम उपाय काममें केना—य उपाय दूसरे प्रकारके अकुशमें शामिल ह। एक मायता ऐनी भी है कि मनुष्य जैसे जस अपन रहन-महनका स्तर ऊचा करता जाता है जीर मानसिक व्यवसायोमें ज्यादा व्यस्त रहता है वस वसे उसकी प्रजनन शक्ति घटती जाती है। एसा लगता है कि यह मायता इस साधारण निरीक्षणके आधार पर बनी होगी कि गरीब लोग जीर मजदूर वर्गोंमें बच्चोकी संख्या अधिक पाई जाती है जीर धनिको तथा सुशिक्षितामें कम बच्चे देख जाते ह। मनुष्य जैसे जैसे अपन जीवनको सस्कारा उदात्त और आदर्श-परायण बनाता जाता है और उच्च प्रकारके सुख भाग सकता है वस वसे उसकी प्रजननकी प्रवृत्ति अपन आप घटती जाती है।

९ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अकुशोंके बारेमें एक बात ध्यानमें रखनी चाहिय। प्रत्यक्ष अकुशो जैसे महामारी अकाल आदिके कारण जनसंख्या न बढ़ तो इसमें समाजकी सुस्थिति और समृद्धिकी रक्षा नहीं है। ये अकुश मृत्युकी संख्याको बहुत बढ़ाकर अपना काम करते ह। इनमें रोगोंको अपार सकट और यातनायें भोगनी पडती ह। इसलिए हमें ऐसे ही उपाय करन चाहिय जिनसे समाजमें इस प्रकारके अकुशोंके व्यवहारमें आनकी स्थिति पदा न हो। ऐसे अकुशोंको काम करनेका मौका ही न मिले यह सुखी समाजका एक लक्षण है। फिर भी हम देखते ह कि ये अकुश अपना काम लगभग दुनियाके सारे देशोंमें करते ह। सारी दुनियामें अपना व्यापार घधा जमाकर धनी बन हुए दश अकाल जीर महामारी आदि सक्टासे मुक्त रह सकते ह परन्तु वे अपने अमर्याद लोभके कारण बार बार युद्धोंको योता देने लग ह और इन तरह सहार और सवनाओंके रास्ते मुड गये ह।

१० सारी दुनियाको लूटकर धनवान बने हुए पश्चिमके देशोंमें आज रहन सहनका जो ऊचा स्तर है उसे बनाये रखनेके लिए कृत्रिम तरीकासे गभ निरोध और सन्तति नियमनके प्रयोग भी बहा हा रहे ह। अग्रजी भापा बोलनेवाले देशोंमें इस तरहके प्रचार और प्रयोगके खिलाफ सरकार या समाजकी ओरसे कोई प्रतिबन्ध नहीं है जब कि रोमन कथोलिक सम्प्रदायवाले देशोंमें इस चीजको पाप समझकर इसका विरोध किया जाता

है। पर किसी निम्न देशमें ता गम निरासक्त आन्दोलनका मरदास्की आरसे इमलिए भी विरोध किया जाता है कि युद्धके लिए उन मनुष्य चाहिये। इनका ही नहीं अधिक बच्चावाक्य माना पिताका राज्यका औरम प्रामाहण किया जाता है। सोवियट रूसका भा गम विरोध और मन्त्रि नियमनकी जरूरत नहा माशूम हुई। उस एसा जगता है कि यदि मन्त्रित्वा बटवारा उचित रूपमें किया जाय तथा उपासन कुछ जागते नफके लिए नहा परन्तु सार समाजकी जरूरतका विचार करके किया जाय और एमी मुनियोजित पद्धतिम किया जाय कि किमी तरहका विगाड न हो ता वरन वांग जनमस्याने लिए आहार आर्थिकी चिन्ता न करना पड। इस विचारकी जहमें यह दृष्टि भी हा सनाता है कि हमरे देशके आक्रमणके सामन नई जय रचनाक अतन प्रयासका टिनाय रखनके लिए रूसका बड़ी सनाकी जरूरत रहगा। इन मर देशमें कामका उपाहरण ध्यान गीचनवाला है। वहा यह प्रवृत्ति मूब फडा हुई है और उमके कारण फ्रांसका जनमस्या पिछके कुछ देशामें बिलकुड नहा बड़न पाई है।

जन्म-मरणके आंकड़

११ लीग आफ नेशन्सकी मन् १९२५-२६ की स्टटिस्टिकल ईयर बुकमें नाथ लिए देशके जन्म मरणक आंकड दिय गय है। य विचार करन जन ह। य आंकड १९३१ म १० ५ तकन वर्षोंके प्रति हजारके हिमाकग निसाड हुए औमनक है।

देशका नाम	प्रति हजार जन्म	प्रति हजार मरण	जन्म औमनकी यदि	विगत वर्षमें जन मर्या तुगुना हो सनाता है
मिस्र	४३६	२७०	१५७	४५
रूमानिया	३२८	२०६	१२२	५७
जापान	२१६	१८१	१३५	७२
इटली	२३८	१४०	९८	७१
हंगरी	२२४	१५८	६६	१०५
अमराना	१७	१०९	६४	१००
आस्ट्रिया	१६०	९०	७९	८८
यूबायक	१६९	८२	८७	८०
फ्रान्स	१६५	१७७	८	८६८
इंग्लैंड और वेल्स	१५५	१२२	३३	२११
स्वीडन	१४१	११६	२५	२७६

१२ यूजीलण्ड आस्ट्रेलिया और जमरीकाकी मरण-संख्या कमसे कम है। थाडी मृत्युसंख्या स्वास्थ्य और खुगहालीका सूचक है। जमका प्रमाण घटानमें इन तान दशोक सिवा फ्रास इंग्लण्ड और स्वीडनने भी सफलता पाई है। जमका अनुपात घटाकर भी वे अपन यहा मृत्युका प्रमाण नहीं घटा सक इसलिये उनकी जनसंख्या स्थिर-सी हो गई है। वह बन्ती नहा। बाकी सब सम्य माने जानवाले देशान अपन जमका प्रमाण पहेलेमे घटा दिया है। यह नीचे लिख आकडाने जान पड़ेगा

इंग्लण्ड	१८५०-६०	प्रति हजार जमका अनुपात	३५
इंग्लण्ड	१९३१-३५		१५५
फ्रास	१८५०-६०	, ,	२६
फ्रास	१९३१-३५		१६५
जमनी	१८५०-६०		३६
जमनी	१९३१-३५		१६६

यह माना जाता है कि इन सब दशोने कृत्रिम उपायसि गम निरोध करके अपने यहा जमका प्रमाण घटाया है।

१३ अब हम अपन देशके जम मरणके आकडे देखें।

वय	प्रतिसहस्र जनसंख्या पर	
	जन्म	मृत्यु
१९०१-१०	४८१	४२६
१९११-२०	४९२	४८६
१९२१-३०	४६४	३६३
१९३१-४०	४५२	३१२
१९४१-६०	३९९	२७४

हमारे यहा जमसंख्या और मरण-संख्यामें १९२१के बाद कमी हाती गई ह। इन दोनके बीचका फक हमारी जनसंख्याके बड जानका एक बडा कारण दीखता है।

१४ मरण-संख्यामें भी बच्चोंकी मृत्युकी संख्या हमेगा ज्यादा होता है और हमारे दगमें ता बालमृत्युकी संख्या भयकर रूपस ज्यादा है। नीचके काष्ठकम हमारे दगमें तथा इंग्लण्डमें जमे हुए प्रति हजार बालकमें से एक बपके भीतरके बितने बालक मर जात ह इसके आकडे दिये गये ह

	१९११	१९१५	१९२५	१९३६	१९४७	१९५०	१९५४	१९५५
इस्रायल	११०	८०	७५	७०	—	—	२६३	२५९
हिंदुस्तान	२०५	२०२	१७८	१८९	१७०	१६०	११५	१०२

इतना भयंकर बालमृत्यु का कारण बाल विवाह तथा पौष्टिक भोजन का अभाव एक बड़ा कारण है। स्त्रियाँ भी मृत्युसंख्या में गंभीर भाग ले रही हैं। १५ से ४५ वर्ष की उमर में बहुत अधिक है। हमें अज्ञान हमारे देश में बच्चा की संख्या को हानि जोड़ कमजारी तथा बुढ़ापा तथा आ जाना कुछ जनसंख्या का भाग ही अच्छा तरह काम करने तक रहता है। ऐसा अज्ञान लगाया गया है कि हमारे देश में कुछ जनसंख्या ४० प्रतिशत लोग काम करने तक हानि है जब कि प्रथम ५० प्रतिशत और इसमें ६० प्रतिशत लोग काम करने तक हानि है।

१५ जन्म और मृत्यु अनुपात जन्म और मरण अनुपात आराम में एक रहता है या हा एक देश में भीतर जन्म और मरण वर्गों में भी जन्म-मरण अनुपात में एक रहता है। मृत्यु-मान मुझ स्थिति का ऊपर वर्गों में जन्म और मरण दाना अनुपात था होता है। नाम तोर पर मृत्यु की संख्या तो कम होती है। हमें ऊपर जा मृत्यु का कारण स्थिति व ता पूरा जनसंख्या सभी वर्गों का आमत विचार कर लिये है। अज्ञान गराव का मरण-मृत्यु का कारण निराशा जाय ता उनका अनुपात बहुत भारी होगा।

१६ हम देख चुके हैं कि जिन देशों जनसंख्या बहुत घटती आधार उनका जन्म-मरण अनुपात पर है। जिन प्रकार पौष्टिक तत्वों रहित आराम भोजन मृत्यु-संख्या में बड़ा कारण होता है उस प्रकार जन्म-संख्या इस बात पर निर्भर करता है कि देश का कुल जनसंख्या जिन प्रतिशत स्वास्थ्य दिव्य है उनका विचार सामान्य कि उमर में होता है और हर परिवार में औसत जिन बच्चों का होता है। इन बनी-बनी सामान्य रण-दशों का जन्म हमारे देश में मृत्यु-संख्या द्वारा जन्म-अधिक है कम है विवाह-संख्या भी कम है। मनु १९५१ की जनसंख्या अनुसार १५ से ४५ वर्ष की स्त्रियों में अज्ञान स्त्रियों का प्रमाण भारत में १८ प्रतिशत था जब कि इसमें यह प्रमाण १५ प्रतिशत था। इसका अर्थ यह हुआ कि भारत में प्रतिशत स्त्रियों का प्रमाण कम बड़ा है। अज्ञान इस बड़ा निराशा-संख्या हमारी भयंकर जनसंख्या एक बड़ा कारण समझना चाहिए।

जनसंख्याका असमान बंटवारा

१७ अब हम यह विचार कर कि क्या कुल मिलाकर मानव जन संख्या पृथ्वी पर बहुत अधिक बढ़ गई है? हमारी इस धरतीमें जितन मनष्योका निर्वाह करनकी शक्ति है उसकी अपेक्षा क्या जनसंख्या बहुत ज्यादा बढ़ गई है? इस समय दुनियाकी जनसंख्या तान अरब मानी जाती है। इतन मनुष्योको पाल सकनेकी शक्ति पृथ्वी जरूर रखती है। परन्तु उनीसवी सतीम और वासवी सदीक शुरूमें जिस प्रमाणमें जनसंख्या बढ़ी, उसी प्रमाणमे यदि बन्ती चली जाय और हर पन्चीस वषमें न सही परन्तु हर सौ वषमें दुनियाकी जनसंख्या दुगुनी होती जाय तो क्या पृथ्वी इस बन्ती हुई जनसंख्याक लिए पूरा अन्न ले सकती है? बेशक, यह तो नहीं माना जा सकता कि पृथ्वीकी अन्न देनेकी शक्ति अपार है। परन्तु साथ ही क्या हम यह मान लें कि जनसंख्या भा अमर्यादित रूपमें बढ़ती ही रहेगी? हम ऊपर देख चुके हैं कि पश्चिमके जनक देशो ता अपनी जन संख्याकी वृद्धि पर काफी अकुश उगाना शुरू कर दिया है। दूसरी बात यह है कि जिस प्रकार सम्पत्तिका असमान बंटवारा और सम्पत्तिका अप व्यय (इस पर हम अगले प्रकरणमें विचार करेंगे) इस दुनियाकी कगालाका बड़ा कारण है उसी प्रकार इस पृथ्वी पर जनसंख्याका असमान बंटवारा भी सब लोगोको पर्याप्त पोषण न मिलनका एक बड़ा कारण है। दुनियाके जो भूभाग बसने लायक हैं और जहा काफी मात्रामें अन्न मिल सकता है ऐसे थोड़ी जनसंख्यावाले प्रदेशोंमें घनी जनसंख्यावाले भूभागोंसे जाकर लोग बसने लगे तो कितन ही वर्षों तक अधिक जनसंख्याका प्रश्न खड़ा ही न होन पाय। युनाइटेड स्टेट्स (अमरीका) केनेडा दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया—य सब थोड़ी जनसंख्यावाले देश हैं। परन्तु अपन रहन सहनका स्तर ऊंचा रखन और अपनी सम्पत्तिमे स दूसरोको हिस्सा न देनेके लिए वे अपनी राजनीतिक सत्ताका उपयोग करके दूसरोको अपने भूभागमें घुसन ही नहीं दत। इसके सिवा दक्षिण अमरीका और अफ्रीकामें कितने ही प्रदेश ऐसे हैं जहा मनुष्य बस सकते हैं। अल्पता नई वस्तिया बसानक लिए साहस करना पड़ेगा और अनक कठिनाइयाका सामना करना पड़ेगा। परन्तु नये उपनिवेशाका प्रश्न मनुष्य जातिकी आर्थिक जरूरताका प्रश्न न रहकर थोड़ेसे गारे लोगोकी सत्ताका प्रश्न बन गया है। विपुल साधन-सम्पत्तिवाल और बसनेके त्रिए अच्छा आबहुवा हान पर भी थोड़ी

जनसंख्यावाला इन प्रदशाका कुछ गार लाग खाबर बठ गये हैं और इस तरह युद्धाक त्रिण कारण पना कर रहे ह।

हमारे देशकी स्थिति

१८ जान अधिक जनसंख्याका प्रश्न यानि ज्याणम ज्याण गभीर रूपमें बिना दगाक सामन हो ता बठ चीन जीर हिन्दुस्तानके सामन है। दुनियाकी जनसंख्याका लगभग तीसरा हिस्सा इन दो देशोंमें है। दुनियाका उपनिर्वाक दरवाज इन दोनों देशोंके त्रिण बन्द ह। गत महायुद्धमें हर देशका माकत आर नौजवान लोगावा जा महार हुआ है उसक कारण यह भी हा सकता है कि हर देश अपनी जनसंख्या बतानक त्रिण अपन यहाकी जनसंख्याका बतानमें जुट जाय। त्रिण त्रिण दूसरे देशोंके वारमें या सारा दुनियाका जनसंख्याके वारमें तब वितक करनके बजाय हम अपन देशके प्रश्न पर हा विचार करण।

१९ हमारे देशकी प्राचीन जीर मध्यमालक विन्गी यात्रियान बतून घना आबादीवाला देश बनाया है। पहल आजकालकी तरह जनगणना नहा ना जानी थी फिर भी यह आज लगाया गया है कि अकरक मरनक समय अर्थात् सन् १६०५में हिन्दुस्तानकी जनसंख्या १० करोड था। यह बात स्पष्ट नहीं है कि यह आका सारे हिन्दुस्तानका माना जाय या अकरक माघ्रायका ही माना जाय। यह आकडा सारे हिन्दुस्तानका ही तत्र ता यह जनसंख्या आजका जनसंख्याका एक-चौथाई हूँ। फिर भी उम समयके और उमम पहल आय हुए यात्रियान हिन्दुस्तानका बतून घनी आबादावाला देश बहा है। उम परम इतना हा अनुमान हाता है कि दूसरे देश बतून कम आबादावाले रहे हाय।

२० पिछल छह दशकोंमें ता हमारा जनसंख्या बतून हा बढ़ गई है। नीचेका कोष्ठक त्रिण

वष	जनसंख्या (करोडमें)	बढ़ती या घटती (प्रतिशत)
१९०१	२३५०	—
१९११	२५०७	+ ६.६९
१९२१	२४९९	- ०.३१
१९३१	२७७४	+ ११.००
१९४१	३१६९	+ १४.२३
१९५१	३५९२	+ १३.३४
१९६१	४५.६४	+ २१.४९

इन आंकड़ोंके अनुसार गत ६० वर्षोंमें हमारी जनसंख्यामें २० करोड़की वृद्धि हुई है। अर्थात् ८५ प्रतिशतकी वृद्धि हुई है। ये आंकड़े भारतके इस समयके भूभागको ध्यानमें रखकर दिये गये हैं।

२१ यह मानकर कि हमारी जनसंख्याका जलग अलग दृष्टिसे वर्गीकरण करने पर कुछ आंकड़े रसप्रद और शिक्षाप्रद सिद्ध होंगे व यहाँ लिये जाते हैं

स्थानके अनुसार वर्गीकरण

वय	शहर	शहरोकी जनसंख्या (लाखमें)	गाव	गावोंकी जनसंख्या (लाखमें)
१९३१	२५७५	३८९	६९६८३१	३१३८
१९४१	२७०३	४९६	६५५८९२	३३९३
१९६१	३०१८	७८८	५५८०८८	३५९२

पाँच हजारसे ज्यादा जनसंख्यावाले स्थानोंको शहर माना गया है और पाँच हजार या उससे कम जनसंख्यावालोंको गाव माना गया है। इन शहरोंमें एक लाखसे ज्यादा जनसंख्यावालोंकी संख्या १९३१ में ३८ थी जो १९६१ में १११ हो गई है। ये आंकड़े दिखाते हैं कि १९३१ में गावोंकी आबादीका अनुपात ८७.९ प्रतिशत था जो १९६१ में घटकर ८२.१६ प्रतिशत हो गया है।

२२ अब हम शिक्षाकी दृष्टिसे वर्गीकरण देखें। शिक्षाका मतलब इतना ही होता है कि अपनी मातृभाषामें साधारण लिखना पढ़ना आ जाय। ऐसा नहीं होता कि इस तरह पढ़े हुए लोगोंकी पुस्तक या अखबार पढ़ना भी आता ही हो।

वय	शिक्षितोंकी संख्या (लाखमें)	शिक्षितोंका प्रतिशत
१९०१	११७	५.३
१९११	१२६	५.४
१९२१	१४८	६.३
१९३१	१७	६.९
१९४१	३७०	१२.८

१९२१ की जनगणनाके अनुसार भारतमें उपरोक्त प्रमाणसे पुरुषोंमें शिक्षणका प्रतिशत ३३.९ और स्त्रियोंमें १२.८ आया है। और दोनोंका कुल प्रतिशत २३.७ आया है। इसका अर्थ यह हुआ कि संपूर्ण देशमें प्रति चार मनुष्यों पर एक मनुष्य पढ़ लिख सकता है।

घघेके अनुसार वर्गीकरण (१९६१)

घघा	जनसंख्याका प्रतिशत
सेता	६९८
सतास भिन्न घघे	१०५
व्यापार	६०
यानायात	१६
नौकरी	१२१
	१०००

इस प्रकार हमारी जनसंख्या ७० प्रतिशत लगभग घघेके घघमें लगे हुए है।

क्या देशमें पर्याप्त अन्न है ?

२२ अब हम यह प्रश्न पूछें कि अपना पेटना कब जनसंख्याके लिए काफी है तब तबना अन्न हम पेट करत है या नही ? हमारे आगासी सामान्य मान्यता ऐसा है कि हमारा पेट सती प्रधान कारण हमारे देशमें अन्न अनाज पदा है तबना हमें खानना चाहिये। हमें कभी कभी अन्नकी जा तथा भुगतनी पटना था उमंग कारण यह माना जाता था कि दिल्ली सरकार हमारे महाम अनाज खान कर बाहर ले जाता था। परन्तु हम अपनी गल्ची स्थितिवा बारासीम निरीक्षण कर ता यह मानना ठीक नही है। यह निश्चित मय है कि हमारा मुक्तम मुक्तम मानुभूमि हमारी समूची जनसंख्याके लिए आवश्यक भोजन आज नहीं मिल सकता। ओर आगे हम अपने खानके लिए पेटना अन्न पेट नही कर सतत।

२४ १९५३-५४के आगासी अनुमान नागतमें कुल २१७६ करोड़ पेटना पेटनामें सता हुई था। इस हिसाबसे प्रतिव्यक्ति ०.७४ एकर जमाना है। एक अमानत करत हिसाब आगाया है कि एक मनुष्यका उमरा मामूली जमानाका अन्न पेट करतके लिए ना १० एकर जमाना चाहिये परन्तु लड़ी पीछेके पुरानेके लिए १ एकर जमाना चाहिये। अमरासत गात पानके सारता तथा जमानका पेशवागर्बी स्थिति हमारे निर्यात भिन्न हानके कारण तबतके लिए प्रतिव्यक्ति ०.७४ एकर जमीन हाना बहुत ही बगाल स्थिति माना जायगा। अनासा जमानके आकरता स्थितिमें हमें खानने अन्न हरगिज पेटा मिल सकता। माय है यह भी ध्यानमें रखना है कि इस जमाना ७७

प्रतिशत भागमें ही खाद्य-वस्तुएं पदा होती ह बाकीक २३ प्रतिशत भागम कपास सन तम्बाकू आदि मनुष्यके लिए जलाद्य वस्तुएं उत्पन्न होती ह ।

२५ डाक्टर राधाकमल मुक्जर्जिने सन १९३८में लिखी अपनी फूड प्लानिंग फार फार हण्डड मिलियस (४० करोड मनुष्योके लिए सुराककी योजना) नामक पुस्तकमें बताया है कि सामायत जच्छ सालम भी हमारी जनसख्याक लिए १२ प्रतिशत अन्नकी कमी रहती है । प्रो० नानचदन सन १९० से १९३४ तकका हिसाब उगाकर दिखाया है कि इतने वर्षोंमें जहा भारतकी जनसख्या २१ प्रतिशत बनी है वहा खतीकी जमीन ११ प्रतिशत ही बढी है ।

२६ परंतु यह ता अनाजकी बात हुई । शरीरके योग्य पोषणके लिए अनाजके सिवा सागभाजी कुछ फल और खास तौर पर दूधकी जरूरत है । सागभाजी और फल हम कितनी मात्राम उत्पन्न करते ह इसके ठीक ठीक आकड नहा मिल सकते । और दूधके मामलेम तो स्थिति यह है कि दुनियाके किसी भी देशसे हमारे यहा दुधारू मान जानवाल ढोराकी सख्या अधिक होन पर भी हमारे करोडो आदमियोको दूधकी एक वूद भी देखनको नसीब नही होती ।

२७ इसत्रिए एक ओर हमारे खाद्य पदार्थोंका उत्पादन बढानकी जरूरत है और दूसरी ओर हमारी जनसख्याकी निरकुण वद्धिको रोकनकी जरूरत है । खानकी चीजोके वर्तमान उत्पादनमें तत्काल कितनी वद्धि होना जरूरी है इस बारेमें कोनूरकी युट्रीगन रिसच लेबोरेटरीके डायरेक्टर डा० एकाइडकी नीचे लिखी सूचनाएं ध्यानमें रखन योग्य ह

- (१) अनाजका उत्पादन १५ से २० प्रतिशत बढाया जाय ।
- (२) दालोके उत्पादनमें १५ से २५ प्रतिशत वद्धि की जाय ।
- (३) शक्कर गुडका उत्पादन १० स २० प्रतिशत बढाया जाय ।
- (४) सागभाजीके उत्पादनम १० प्रतिशत वद्धि की जाय ।
- (५) घी-तेरका उत्पादन २० प्रतिशत बढाया जाय ।
- (६) दूधका उत्पादन यथासभव बढाया जाय परन्तु फिलहाल १००

प्रतिशत तो बढाया ही जाय ।

- (७) मठलियोंमें १०० प्रतिशत वद्धि की जाय ।

(८) परम्पराके कारण और भाजनमें उसकी जरूरतको देखते हुए हिन्दुस्तानमें आहारके तौर पर मासको कम महत्त्व दिया जाता है और यह

ठारु हा है। साथ पत्नीकी पत्नवार बगनके वायत्रममें उस स्थान देनका जरूरत नही।

(९) अडे आहारके नात बहत कीमता हान पर भा बहुत मग ह क्यानि मुगों जीर बतवाको दाना खितापर उनस अड प्राप्त करनम ९२ प्रतिगन कलराका हानि उठानी पडती है।

(१०) फाके वनमान उपादन और खपतके निश्चित आवड मित्र नहा नके परन्तु ज्याग फल पना करो का जवरल्प आन्तान करनकी जरूरत है।

२८ ऊपर मित्र साथ पत्नीकी पत्नवारका विचार किया गया है परन्तु उमके साथ साथ दूसरा भा जररा चाजाकी पत्नारार बगना जररा है। हमार लगाका पहननके लिए पूर कपड नहा मित्र रहनन मकान हवा रागनीवाणे नही हान और गणे हाने ह। लगाका तटुम्नाक लिए और बच्चाका शिक्षाके लिए पूरा प्रयत्न नहा है। इन सब बातामें मुघार और बढि करके हमारे रहन-अहनके अत्यन्त नाचे वनमान गनका ऊचा उठानका जरूरत है।

जनसंख्याकी बढिकी रोकनके उपाय

२९ परन्तु गग निगामें जिनन भा प्रयत्न किये जायें उनका ठीक गन हमें तभी मिल सकता है जब हमारी जनसंख्याका तत्र बढि पर राख रगार्द जाय। एमा मातूम हाना है कि पश्चिमी दगामें जन्मका प्रमाण जा पट्टम बढत घटा है उमका गस कारण यह है कि यहा गभ निरायक कृत्रिम माधनाका उपयोग किया जाता है। हमार यग भा इन माधनाका निमायन हान गगा है और उच्च वगके कुछ कुटुम्बाम इनका उपयोग भी गग हा चुका हागा। पर यट एक बडा गभार प्रन है कि एम माधनाका निमायन या उनका समथन करना गारहिय या नहा। एमा मातूम होना है कि पि उमा देगाका इन माधनाका मत्तम जनसंख्या बर्धनिके करनमें मकत्ता मिन्ती है परन्तु यह भा दगनकी जरूरत है कि यहा इन उपायान उपयोगक गारारिक और ननिब परिणाम क्या आय ह। अना इतना समय गहा बाता है कि इन माधनाके उपयोगम मनुष्यके गसर और स्वभाव पर हानवाक अमरक बारमें निश्चित रूपत कुछ बहा जा मक। परन्तु इग बारमें बार्द गवा नहा हा गनना कि इन उपायाने उपयोगक कारण एक आर स्वच्छता और कामुकता तथा दूसरी आर र्नाय और लाभ बढत हैं। बाइ भी गनात्र गयमका वृत्तिकी बढाय बिना आग नहा बड सकता। हमारे धार्मिक विद्याय

और सामाजिक आत्म भी हमें इसी निशामें प्रयत्न करनेकी प्रेरणा देते हैं। जतन सख्याकी जनचित्त वृद्धिको रोकनेके लिए समय ही सबसे उत्तम उपाय है। ब्रह्मचर्य-अवस्थाका समय जहां तक हासक लम्बा कर देना चाहिये। उत्तम उपाय यही है कि बड़ा उमरमें विवाह किया जाय और बादमें भी तहां तक हो सक विवाहित या गृहस्थ जीवनका अवधि कम कर दी जाय। एक या दो सन्तान हानके बाद प्रजात्पत्ति रोक देनी चाहिये।

अच्छी सन्तान पदा करना

३० जनमर्यादको जमर्याद रूपमें धरन न देनेके साथ ही इसका भी विचार करना चाहिये कि भावा सन्तान उत्तम गुणा और शक्तिवागी ही पत्नी हो तथा शारीरिक और मानसिक रोगवाला और विकलांग मनुष्योका वावृद्धि न हो। सुप्रजनन शास्त्रमें हुई प्रगतिके कारण जब हम वनस्पति और पशु पक्षीकी जातिको सुधारने हैं ता मानव वंशको सुधारनेकी कोशिश हम क्या नहीं करनी चाहिये? परन्तु इस बातका विचार करना जितना आसान है उतना ही कठिन उस पर अमल करना है। वनस्पति तथा पशु पक्षीके विषयमें ता हम जितना विधेयक जग मूझ सकते हैं उतनीको दूर करके उनके स्यागक प्रयोग हम कर सकते हैं। परन्तु मनुष्यके मामलेमें ऐसे प्रयोग करना विष्कुल संभव नहीं। विवाहका विषय इतना व्यक्तिगत है कि समाज या कानून मनुष्यकी विवाह-सम्बन्धी पसन्दमें कोई रकावट डालनेमें सफल हो ही नहीं सकता। फिर भी घर या क्याके चुनावमें — भले वह चुनाव माता पिता कर या व खुद करे — कई बातोंकी सावधानी रखना जरूरी है। बहुत नजदाकके रिश्तेमें या एक ही गोत्रमें विवाह न करनेकी जो प्रथा हिन्दुओंमें प्रचलित है उसकी जडमें सुप्रजननका विचार होगा ही। परन्तु हम यही रक जाना पडता है। आजका प्रजननशास्त्र तो कहता है कि आप चाह जितना चुनाव कीजिय ता भी अपने विचारोंके अनुसार सन्तान आप पदा नहीं कर सकग। इससे इनकार नहीं कि माता और पिताके कुछ गण बच्चोंमें आते हैं परन्तु बच्चोंमें एस गुण भी उतरे हुए देखे जाते हैं जो माता पितामें विष्कुल नहा पाय जाते। माता पितामें उनके किसी पुरखमें प्रकट हुए गण विलकुल गुप्त और अदृश्य दामों पड़े रहते हैं और व गुण उनके बच्चोंमें उतर आते हैं। इससे बहुत बार ऐसा दवा गया है कि माता पिता दोनों सुन्दर हा ता भी उनके बच्चे उनस आधे भी गुन्दर नहा होने। माता पिता सुचरित्र हा तो भी उनकी सन्तान दुश्चरित्र निकल जाती है। इसी तरह चरित्र हान माता पिताके पन्से चरित्रवान सन्तान जम लती है। जीवविद्याशास्त्री

और प्रजननशास्त्री इसका कारण यह बताते हैं कि दो तान चार या इससे भी ज्यादा पानिक पुत्रजाके लक्षण बालकामें प्रगट हात ह। यह भी हो सकता है कि त्रिलकुल नीरोग माता पिताके बच्चोंमें कोई पुरखाका रोग उत्तर आय। इसलिए यह विश्वासपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि स्त्रा-पुरप बहुत अच्छा चुनाव करके विवाह कर तो भी उमसे उत्तम सन्तान ही उत्पन्न होगा।

३१ एक और बात भी सोचने अयक है। वनपति और पशु-पक्षियोंके प्रजननका विचार करते समय हम कोई विशेष निश्चित किया हुआ गुण ही उनकी सन्तानमें लानेके प्रयोग करते हैं। अनाजके विषयमें बड दानकी या किसी खास रोगके सामने टिके रहनेकी शक्तिका और गायके विषयमें उसकी बछड़ोंमें ज्यादा दूधकी या बछड़में ज्यादा बोध टानकी या ज्यादा दौलतकी शक्तिका ही हम ध्यान रखते हैं। परन्तु मनुष्य तो कई गुण-अंगुणा और शक्ति अशक्तियाना मिश्रण होता है। कुछ मनुष्य विचक्षण बुद्धिमान होने पर भी भारी नुलकस्त होते हैं। कर्तकार अपनी कलामें डूबा रह सकता है परन्तु दूसरा बहुतसी बातोंमें वह असावधान रहता है। विगिष्ट प्रतिभावाल कृषिया कलाकारों वपानिकों और राजनीतिक पुरपामें अवश्य कोई न कोई विचित्रता पाई जाती है। फिर भी इन सबके लिए समाजमें स्थान है और महत्वका स्थान है। योगजाके साथ पमन्द क्रिय गय स्त्रा पुरपास सयोगस प्रतिभागागी व्यक्ति पदा नहीं किये जा सकते।

३२ परन्तु इसमें हम यह नहीं कह सकते कि समाज अच्छी सन्तान पान करनेका कोई विचार ही न करे। हरएक समाजका यह मानवानी ता रखनी हा चाहिये कि उसकी विवाह प्रथा सुयोग्य हा और विवाहमें चुनावके नियम निर्णय हा। यह सावधानी भी रखनी पडगी कि बाल विवाह न हा इतना ही नहीं बल्कि उमरमें गुणामें स्वभावमें और आत्माओंमें दो स्त्रा-पुरप बमत् न हो और यदि अकस्मात् एम बमेत् सम्बन्ध हा ताय ता पति या पनी दोनोंमें स किमी एकके चाहन पर एस विवाहका विच्छेत् हा सन्तकी भा व्यवस्था हानी चाहिये। बच्चोंमें कौनस गुण आयग और कौनस नग आयग या माता पितामें न पाय जानवाल दूसर हा बाइ गुण आ तायग — इस बारमें हम निश्चित रूपन कुछ न कह सकें ता ना इतना निश्चित है कि अधिकतर बच्चामें माता पिताके ही बन्तन गुण आयग। एम विवा यह भी जरूरत है कि प्रजननमें बापका माता पिताका प्रममय और अच्छे सन्तारावाला धानाकरण मिले। य सब बातें कानूनन ही हा गवना। इन बातोंमें निश्चा और समाजके अच्छे रीति रिवाजाना अधिक हाय रहना है।

और सामाजिक आदर्श भी हम इसी दिशा में प्रयत्न करनेकी प्रेरणा देते हैं। अतः जनसंख्याकी अनुचित वृद्धिको रोकनेके लिए समय ही सबसे उत्तम उपाय है। ग्रहणचय-अवस्थाका समय जहां तक हो सके लम्बा कर देना चाहिये। उत्तम उपाय यही है कि बच्चे उमरमें विवाह किया जाय और बादमें भी जहां तक हो सके विवाहित या गृहस्थ जीवनका अवधि कम कर दी जाय। एक या दो सन्तान होनेके बाद प्रजोत्पत्ति रोक देनी चाहिये।

अच्छी सतान पना करना

३ जनसंख्याको जबरन हटाने के बजाय न देनेके साथ ही इसका भी विचार करना चाहिये कि भावी सतान उत्तम गुणा और शक्तिवाली ही पदा हो तथा शारीरिक और मानसिक रोगवाले और विकलांग मनुष्यानी वंशवृद्धि न हो। सुप्रजनन शास्त्रमें हुई प्रगतिके कारण जब हम वनस्पति और पशुपक्षीका जातिको सुधारने हैं तो मानव काको सुधारनकी वांछना हमें क्या नहा करनी चाहिये? परन्तु इस बातका विचार करना जितना आसान है उतना ही कठिन उस पर चमल करना है। वनस्पति तथा पशु-पक्षीके विषयमें तो हमें जितना विचारक अंग सूझ सकते हैं उतनाको दूर करके उनके संयोगके प्रयोग हम कर सकते हैं। परन्तु मनुष्यके मामलेमें ऐसा प्रयोग करना विचारकूल संभव नहा। विवाहका विषय इतना व्यक्तिगत है कि समाज या कानून मनुष्यकी विवाह-सम्बन्धी पसन्दमें कोई रोकथाम डालनेमें सफल हो ही नही सकता। फिर भी घर या बन्धुके चुनावमें— भूत वह चुनाव माता पिता करे या वह स्वयं करे—कई बातोंकी सावधानी रखना जरूरी है। बहुत नजदीकके रिश्तेमें या एक ही गोत्रमें विवाह न करनेकी जो प्रथा हिन्दुओंमें प्रचलित है उसकी जड़में सुप्रजननका विचार होगा हा। परन्तु हमें यही रोक जाना पता है। आजकलका प्रजननशास्त्र तो कहता है कि आप चाहें जितना चुनाव कीजिये ता भी अपन विचाराक अनुसार सतान आप पदा नहा कर सकेंग। इससे इनकार नहा कि माता और पिताके कुछ गुण वचामें आते हैं परन्तु बच्चामें एस गुण भी उतरे हुए देख जाते हैं जा माता पितामें विरुद्ध नहा पाये जाते। माता पितामें उनके बिसा पुरुषमें प्रकट हुए गुण विरुद्ध मुक्त और अत्यन्त सामान्य रहते हैं और व गुण उनक बच्चामें उतर आते हैं। इससे बत वार एना देखा गया है कि माता पिता दोना मुन्तर हा ता भा उनके बच्चे उनसे आध भी मुन्तर नहा हान। माता पिता मुचरित्र हा ता भा उनकी मनान दुचरित्र निकट जाता है। एसा तरह चरित्र हान माता पिताके पन्ने चरित्रवान सन्तान जन्म लेती है। जावविद्याशास्त्री

हितकर है। इनके बिना लम्बी आयु भी व्यक्ति और समाजके लिए आपत्ति बन जाता है।

३६ सार यह कि किसी प्रजाका सुखी बनना ही और अपनी उन्नति साधनी है तो उसे समयका जीवन बिनाकर जनसंख्याका अमर्यान्तित रूपमें बढने नहा देना चाहिये और साथ ही यह चिन्ता भा रखना चाहिये कि भावी पीढ़ी गरीब बलवान, बुद्धिमें तेजस्वी और चरित्रमें उत्तम है। संख्या पर जटुग और गुणामें बद्धि यह सूत्र प्रत्येक प्रजाको अपना दृष्टिक सामन रखना चाहिये। वरमेको गुणी पुत्रो न च मूलगतानायपि — इस सुन्दर वचनका ध्यानमें रखकर चलना चाहिये।

३

सम्पत्तिका व्यय

१ समाजकी सारी आर्थिक प्रवृत्तियाँ संपत्तिक उत्पादनका अंतिम हेतु सम्पत्तिका व्यय करना है। समाजके लिए आवश्यक सम्पत्ति निर्माण है, निर्माण हुई सम्पत्ति जिम जिमका जरूरत हो उसका उपयोगके लिए उसका पास पहुँचा दी जाय और इन दोनों कार्योंमें महायत्ना करनेवाले समाजके अग प्रत्येकामें उमरा चायपूर्ण और उचित बटवारा हा जाय इतना हा अर्थशास्त्रकी विचारणा पूरी नहा हानी। अर्थ प्रवृत्ति तभी कृतार्थ हाता है जब सम्पत्तिक उत्पादनमें स जा कुछ मनुष्यके हिस्समें आता है उमरा उत्तम रीतिस व्यय हो। और सम्पत्तिका उत्तम व्यय हुआ तत्र माना जाता है जब सम्पत्तिमें मनुष्यके लिए उपयोगी हानका मनुष्यकी सुख-सुविधा जुटानका जा गुण है उसका मनुष्यका पूरा लाभ मित्रे। सम्पत्तिका जरा भी बिगाड न हो उमरा पूरा कस निवालेकर इस तरह उमका उपयोग करना जिमन समाजका ज्यागने ज्याग सुख-सुविधाए मित्रे य सम्पत्तिका मद्-न्यय माना जायगा। उमरा जितना सुख-सुविधा मित्र करता है उतनी प्राप्त किय बिना सम्पत्तिका व्यय कर डालना उसका दुःख है और उम हू तत्र समाज द्वारा सम्पत्तिके उत्पादनमें खच किया हुआ धन व्यय जाता है।

व्ययके बारेमें उपेक्षा

२ पूजावाणी अर्थशास्त्रियाँ आज तत्र सम्पत्तिक उत्पादन और उमरा वाक्यकर अग विनिमयका ओर ही योग्य ध्यान किया है। य अर्थशास्त्रा य

३३ और कानून भी अच्छी सतान पदा करनेके बारेमें एक काम तो कर हा सकता है। कानून इतना ता कर ही सकता है कि छूतवाले और बग-भरपरागत रोगके रोगी पागल मूख और अपराधी बतितवाले स्त्री-पुरुष बच्चे पना करके बुरी प्रजाको न बतान पाय। हम ऊपर वह चुके ह कि दुष्ट माता पिताके पेटसे भी पवित्र बाक जन्म ले सकता है। परन्तु जहा दुष्टता सिद्ध हो चुकी हो बहा यह समझ कर कि शायद एमे बुर माता पिताके पेटसे भी गुड बालक पदा हो सकते ह उन्हें प्रजावद्धि करा देना ठीक नही। जो लोग शरीर या मनकी निश्चित रोगी दशाक कारण समाजके लिए कूडा-करकट बन गये ह उह तो बच्चे पदा करनेसे रोकना ही चाहिय। एक छोटीसा गस्त्रक्रिया द्वारा मनुष्यको बध्य बना देनेकी जो आधुनिक खोज हुई है उसका प्रयोग ऐसे लोगो पर करनेमें कोई बराई नहा २।

३४ इसके सिवा जैसे सरकारी नौकरी या फौजमें भरती करनेसे पहल मनुष्यकी डाक्टररी जाच की जाती है वसे ही विवाहकी इच्छा रखनवाले स्त्री-पुरुषकी डाक्टररी जाच करनेकी प्रथा पडे या कानून बन तो वह भा बुरा नहा ह। यद्यपि डाक्टररी जाचस पूरी खातिरी तो नही हो सकती फिर भी उत या बग-भरम्परागत रोगका तो पता चल ही जायगा।

३५ आयु मयागका प्रमाण ब २ यह समाजकी तदुहस्तीका एक लक्षण माना जाता है। परन्तु इसमें भी देखात यह है कि युवावस्थाका समय ज्याग हो न कि बुरापेका। मनुष्यका स्वास्थ्य और काम करनेकी शक्ति लम्ब समय तक टिकी रहनी चाहिय। उपनिषदोमें सी बप जीनकी इच्छा रखनकी बात कही गई है लेकिन उसके साथ यह भी कहा गया है कि कतव्य-व्रम करते करते ही सी बप जीनकी इच्छा रखनी चाहिय। इनमें जानकी इच्छाकी अपेक्षा कतव्य व्रम करन पर अधिक जोर दिया गया है। निष्प्रियतावागी बद्धावस्था लम्बा ही तो वह समाजके लिए सक्टरूप बन जाती ३। इसलिए मनुष्यकी आयु मयाग बतानके प्रयत्नके साथ साथ एसी स्थिति पदा करनेका भी प्रयत्न हाना चाहिय जिसमे मरन तक मनुष्यके शरीर और मनकी गकिनया अच्छी तरह टिकी रहें और वह उपयोगी काम करता रह। एस उपाय करन चाहिये जिनस समाजमें रोगी अपग पागल कमगोर और काम न कर सकनबा आत्मियाकी बद्धि जहा तक हो सके रहे। साथ ही अनतोपी मूख और स्वार्थी मनुष्याका भी बद्धि नहा हानी चाहिय। इन सब गनके साथ प्राप्त हानवागी लम्बी आयु समाजके लिए

और व इतने खुले हा कि पहनने पर गरीरका ज्यादास ज्यादा आराम मिले तथा कपड इस तरह धोय और पहने जाने चाहिये जिसस उनकी अधिक समा हो और व लम्ब समय तक टिकें। परन्तु व्यवहारमें हम देखते ह कि उत्पानमें जो विफायत निद्ध हो सगी है वह व्ययमें नहा हा सगा है।

सद्व्ययके लिए अधिक कुशलता चाहिये

४ उत्पानका व्यय एसा एक ही चाज बनानकी आर रहता है जियने बनानेमें वह अधिकसे अधिक कुशल हो और जिस बनानेकी उसज पास अधिकम अधिक मुविधा हो। इसने लिए वह तालीम ले ले कि उसरा काम गुरु हो जाता है। एक बार अपना धधा निश्चित कर उनक जाद उसे विनाप चुनाव नही करना होता। उस धधका परम्परागत प्रणालिकाजाक आधार पर उसे चरना हाना है। उत्पानक बोई नया सुधार कर तो वह भी एक धध तक ही सीमित होता है। उत्पान एक चीजे बनान पर ही अपना सारी गक्ति बद्रित करता है। उमे एक ही प्रणका विचार करना होता है। परन्तु व्यय करनवागेके नात मनुष्यक सामन बइ चाने आकर खडी रहती ह। यदि विष्कुल प्रारम्भक आवश्यकताओंना हा विचार करें तो भी क्या खायें क्या पहनें क्या आनें कम धरम रहें—इस तरह हर बानमें मनुष्यके लिए अपना चुनाव करनकी गुताग रहती है। और यह सब गान्त्रीय पद्धतिम इस तरह करना हा कि उस अधिकस अधिक लाभ हा ता इन सज विविध विषयाना पान उस हाना चाहिये इम पानको अमलमें लानका सकल्पबल उसमें होना चाहिये और उसमें अच्छा आनें होनी चाहिये। इसलिए सफ और कुशल उत्पानकम सफ और कुशल व्ययी (एक करनवाल) में अधिक बुद्धि होगियारी पान और मून-यूनका जरत है। मरय यह है फिर भी मनुष्यन उत्पान पर जितना गक्ति और बुद्धि गच बी है और परिश्रम बचान पर तथा नये नये पणथ गाजरर उनगे उत्पान अच्छा और सस्ता बनान पर जितना विचार किया है उनना सम्पत्तिने व्यय पर नहा गया। इसरा ए वना कारण ता यह है कि उत्पानमें निय हए गुधाराका फर प्रवण दावना और उनना लाभ भा उसा गमय मिल जाता है जब कि गुधरी हूइ और शान्त्राय पद्धतिम निये गये गन्धयस लाभ तुरत और प्रवण नहा गिगार गी। गुगती आना और नमाजक पररागत गति रिवाजनि मनुष्य शर छू नहा मक्ता, उन छूतना विचार भा नग आता। गमचताका पिता आग और मानन पिता आग या मीगता बूठकर गूब माप गया हुआ पाय और विप

मानकर चले ह कि यथासभव अधिकसे अधिक उत्पादन किया गाय और उसका इस तरह विनिमय किया जाय कि उत्पादकको अधिकसे अधिक लाभ मिले तो निश्चित ही समाजकी सुख सुविधा अपने आप सध जायगी। जब तक सम्पत्तिका बटवारा उचित और पायपूण पद्धतिमें करके समाजमें फ़ी हुई असमानता दूर न की जायगी तब तक कोई भी समाज सुखी नहीं हो सरता इस बातकी जोर सबसे पहूँ समाजवादी अर्थशास्त्रियोंने ससारका ध्यान खांचा जोर इस सम्बन्धमें आज तीब्र ऊहापोह चल रहा है। आज इस किस्मकी नई समाज रचना करनके लिए आन्दोऽन हो रहे ह जिसमें पाय और समानताके आधार पर सम्पत्तिका बटवारा हो। परन्तु सम्पत्तिके सदपयकी ओर अभी तक पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है।

३ आजकालके बनानिको और शोधको नई नई मनीना और रसायनाकी खोज करके चीजोका उत्पादन किस तरह बन सकता है जोर परिबहन-यवस्यामें भी नई नई खोज करके उत्पन्न मालका विनिमय किस तरह आसान जोर शीघ्र हो सकता है इसके लिए जितन प्रयत्न किये ह उनके सोवें हिस्सेके प्रयत्न भी इस बातकी खोजके लिए नहीं किये कि सम्पत्तिका सपय बसे हो सकता है। आज बडे बडे कारखानोमें ठेठ नीचेकी सीटीके उत्पादके काममें भी यांत्रिक शोधो और विनानकी मदद मिलती है परन्तु सुनिश्चित मान जानेवाले लोगोको भी सम्पत्तिका पय करना नहीं आता। इस दिगामें माग दिखान और मदद करनका काम बनानिको जोर सशोधकोने बहुत थोडा किया है। उत्पादन अच्छसे अच्छे ढंगसे हुआ तभी कहा जायगा जब उत्पादनका खच कमसे कम आय कमसे कम थम द्वारा कुदरतसे कच्चा माल प्राप्त किया जाय उसका तयार मान बनानेके समय जरा भी बिगाड न हो और कमसे कम कच्चा माल खच हा तथा तयार मालके बनानमें भी कमसे कम थम करना पडे। इसी तरह सम्पत्तिका अच्छसे अच्छा पय द्वारा तब माना जायगा जब उससे समाजको ज्यादासे ज्यादा सुख-सुविधाय मिले। उत्पादनमें हम खच घटानेका प्रयत्न करते ह जब कि पयमें सुख-सुविधा या उपयोगिता बनानका प्रयत्न करना होता है। जस उत्पादक इस बातकी चिन्ता रखता है कि कपडका एक थान कमसे कम खचमें कम तयार हो वस ही व्यय करनवाउको कपडके थानका उपयोग करते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि उसका ज्यादासे ज्यादा उपयोग बने हो सकता है। थानस कपडे साचे या मिगाने समय यह सावधाना रखनी चाहिय कि कपडकी कतरन बिगडुल न निकले या कमसे कम निकले इन कपडकी बनावट ऐसी हो

और वे इतन खुले हा कि पहनने पर शरीरको ज्यादा ज्यादा आराम मिले तथा बपड इस तरह धोये और पहन जाने चाहिये जिससे उनकी अधिक समाल हो और वे लम्बे समय तक टिकें। परन्तु व्यवहारमें हम देखते हैं कि उत्पादनमें जो क्वायन सिद्ध हो सकी है वह व्ययमें नहा हा सनी है।

सर्वव्ययके लिए अधिक कुशलता चाहिये

४ उत्पादकका लक्ष्य एसी एक ही चीज बनानकी आर रहता है जिनक बनानमें वह अधिकसे अधिक कुशल हो और जिस बनानकी उसके पास अधिकस अधिक सुविधा हो। इसके लिए वह ताजीम ले ले कि उसका काम गुरु हो जाता है। एक वार अपना धधा निश्चित कर उनक वाद उस विशय चुनाव नहीं करना होना। उस धधकी परम्परागत प्रणालिकाओके आधार पर उसे चलना हाता है। उत्पादक कोई नया सुधार करे तो वह भी एक धध तक ही सीमित होता है। उत्पादन एर चीजके बनान पर ही अपनी सारी शक्ति केन्द्रित करता है। उसे एक ही प्रश्नका विचार करना होता है। परन्तु मय करनेवालेके नाते मनुष्यके सामन कई चीज आकर खडी रहती ह। यदि विलकुल प्रारम्भिक आवश्यकताआका हा विचार कर तो भा क्या खाये क्या पहनें क्या ओरें कस धरम रह — इस तरह हर बातमें मनुष्यके लिए अपना चुनाव करनेकी गुताइग रहती है। और यह सब शास्त्रीय पद्धतिमे इस तरह करना हा कि उस अधिकसे अधिक लाभ हो ता इन सब विविध विषयाका गान उस होना चाहिय इस गानको अमलमें लानका सक्ल्य-बन उसमें होना चाहिय और उसमें अच्छी आदतें होनी चाहिये। इसलिए सफल और कुशल उत्पादकसे सफल और कुशल व्ययी (सच करनेवाले) में अधिक बुद्धि होशियारी गान और सूझ-बूझका जम्मत है। सत्य यह है फिर भी मनुष्यन उत्पादन पर जितना शक्ति और बुद्धि गच की है और परिश्रम धचाने पर तथा नय नय पणाय खोजकर उनन उत्पादन अच्छा और सस्ता बनाने पर गितना विचार चिया है उनना सम्पत्तिके व्यय पर नहीं गिया। इसना एर वग कारण ता यह ह कि उत्पादनमें गिय हुए सुधाराना पत्र प्रत्यग दीग्यता है और उनका गभ भा उसी गमय मिग जाता है जब कि सुधरी हुई और शास्त्रीय पद्धतिन गिये गय मन्त्र्ययके लाभ तुरन् और प्रत्यग गहीं गिगार्द दने। पुरानी आदना और नमाजन परंपरागत रानि रिवाजसे मनुष्य झट छूट गहीं गचना उसे छूटनेका विचार भी नथी आता। हायचकराना पिगा भाटा और मनीना गिता आटा या मगात शूटरर पूय गाक गिया हुआ धाय और गिफ

लकड़ीकी चक्कामें कुटा हुआ या बहुत साफ न किया हुआ हाथकुटा चावल — इन दोनोंके बीच पोषक तत्त्वाकी दृष्टिसे जो फर्क रहता है उस तुरन्त जाना या अनुभव नहीं किया जा सकता। और इसलिए इस तरहक परि-
वर्तनोका स्वीकार करनेके लिए मनुष्यकी बुद्धि तयार नहीं होती। इसी कारणसे उत्पादनकी अपेक्षा व्ययके बारेमें मनुष्य स्वभावसे ही दकियानूसी पाया जाता है। अपना भोजन बनानकी पद्धतिमें, भोजनक व्ययनाम, अपनी पागाकमें और मकानकी बनावटम मनुष्य बहुत हा थोडा और धीमा परि-
वर्तन करता है।

उपयोग करनेकी शक्तिमें अंतर

५ कुछ मनुष्यामें अमुक प्रकारकी भौतिक अथवा अभौतिक वस्तुआका उपभोग करनेकी दूसरोसे अधिक शक्ति होती है। खाद्य पदार्थों जसा प्राथमिक आवश्यकताकी चीजाका भी सब मनुष्य एकसी मात्रामें उपयोग नहीं कर सकते। अगर सब लोगको समान मात्रामें अथवा एक ही प्रकारका आहार दिया जाय तो वह सबको अनुकूल नहीं जायगा और उससे भारी अनर्थ पदा हा सकता है। प्राथमिक आवश्यकताकी वस्तुआकी अपेक्षा उच्च कोटिकी मानी जानवाली वस्तुआका उपभोग करनेकी मनुष्यकी शक्तिमें बहुत बडा अन्तर देखा जाता है। किसी मनुष्यकी शक्ति अमुक प्रकारकी सम्पत्तिका अधिक उपभोग करनेकी होती है, जस पुस्तक और दूसरे मनुष्यकी शक्ति एक दूसरे ही प्रकारकी सम्पत्तिका अधिक उपभोग करनेकी होती है जसे घाघ चित्रकलाक साधन आदि। आर्थिक जखूरतसे भिन्न दूसरी चीजाके बारेमें व्यक्तिक शक्तिके ऐसे भेद अधिक पाये जाते हैं। उदाहरणके लिए एक आदमी पुस्तकक रमणाय दृश्य देखकर उससे आनन्द प्राप्त कर सकता है और दूसरा नहीं प्राप्त कर सकता। रस्किन कहता है कि जिसमें रसिकताका विकास नहा हुआ है और जो प्रारम्भिक दगाका जीवन बिताता है वह किमान किसी उच्च कलाकृतिका रमास्वादन नहीं कर सकता अथवा साधारण लिपिना पन्ना जाननवाल मनुष्याके लिए गभीर विषयाकी चर्चा करनवाक साहित्यका पुस्तकालय निरूपयागी अथवा बहुत कम उपयोगी सिद्ध हागा। वे कहानियाका या दूसरी हठक साहित्यकी पुस्तकाना उपभोग कर सकते हैं। आज भा हम बन्धन सावजनिक पुस्तकालयोमें देखते हैं कि गसा ही पुस्तकका उपयोग ज्यादा हाना है। उपभागके योग्य किसी भी सम्पत्तिके बारेमें यह कहा जा सकता है कि जावनके लिए उपयोगी हो मकनवाक उसके मूल्यका आधार दसा बात पर रहता है कि जिमके हाथमें वह आनी है उसे उमका सद्ब्यय

करना आता है या नहीं। इसमें सिर्फ लागोंमें रसवत्ति उत्पन्न करने या उसका विकास करनेका प्रश्न नहीं होता प्रश्न किसी वस्तुमें रही उपयोगिताका पूरा लाभ उठानेकी क्षमताका भा हाना है।

दुग्ध्ययके प्रकार और कारण

६ अज्ञान यह राजने अनुभवकी बात है कि हमारे घराब चूहा और अमीठियामें जो दाप होते हैं उनका कारण इधनकी बहुतसी गरमी बनार पानी है और घुंका बप्ट भी उठाना पन्ता है। यूरोप और अमरीकाम मन्की सफ़ डबल रोटी खानका रिवाज पन् गया है। और विज्ञानका ज्ञानवाक सुशिक्षित लोग भी यही रोग खात रहने हैं। श्रद्धय आहारशास्त्री अब यह कहत लगे हैं कि इससे रोग न बचल उठनम पापक तत्त्व ही का बठत है वन्कि यह मन्की डबल रोटी बहुत लम्ब समय तक खार् जाय तो आता और पाचन शक्तिको विगाड देती है। घी और मावकी मिठाइया और तलमें तला हुई चीजाके बारेमें भी यह कथन सत्य है। य चाजें ज्यादा मट्गी हानी हैं और स्वास्थ्यको नुकमान पहुँचाता है। उनके पन्में स्वाक सिवा दूसरा एक भी कारण नहीं है। परन्तु स्वाकवत्तिका इम तरह विकमिन किया जा सकता है कि जा चीजें पोषणकी दृष्टिस लाभदायक हा व हा हमें ज्यादासे ज्यादा स्वादिष् र्गें। इस तरहके दुग्ध्ययकी जडमें स्वादेन्द्रियकी गलत तागेम और उस पढी हुई कुरा आदतें हानी हैं। इम तरहका भाजन पन्में समाजमें कोई अप्रतिष्ठा नहीं गमसी जाती इसके विपरान सामाजिक धानद मनान और समाजमें वाहवाही उठनक र्ण भाजन-ममारभामें नाम तीर पर इसा तरहका भाजन काममें र्णिया जाता है।

७ धार्मिक विधियाँ और अधविश्वास पूजामें पात्र र्णिया हाना हानमें धा जस बड महत्वके ग्राह्य पत्नयको जग डान्ना मन्नाव या अथ देवी-देवताआकी मूर्तियाँ दूधके घडामे नन्नाता उा पर कसर चन् या तत मिदूरकी नन्िया र्णाना मूर्तियाँ कामना वस्त्र तथा आभूषण पन्नाना — ये गन धमका विधिपार कारण होनेवाक दुग्ध्ययक विधिय प्रसार है। दसर विश्वयुद्धक तमानमें जब गगारा खानक र्णि भा धा-दूधका तगी धी मबडा या हजारा मन धी जलाकर विश्वगतिक यन कराव गय थ। दय मन्त्रिममें जा जगकूट हाना ^१ और धा- रणवाय जान है उनमें भा कितना ही भाजन-मामघा व्यय नष्ट हाना ^२।

इसा तरह धमक नाम पर पन् दुग अधविश्वासके कारण भा अन्तका काफी विगाड हाना है। लाग किगी न किगी लामक रानिर कोर अनुष्ठान

करते ह। इसमें धमके नाम पर धावा देनेवाले लोग मिल ही जाते ह। कुछ अनुष्ठान तो बहुत हा खर्चीले होने ह। इसके सिवा बीमारीमें सीध डाक्टर वच या हकामका इलाज करानक वजाय लोग जोशोसे मतर-जतर कराते ह माता घुमाते ह। इन बातोंमें हानिवाला खच बकार तो है ही परन्तु यह प्रथा समाजके नतिक स्तरको भी गिरानवाली है। ऐसी प्रथाओंसे अनक नतिक बुराईया पग होता ह।

८ उदाऊपन और श्रीमतीका प्रदान लोग श्रीमती दिखानके लिए जा कुछ भारी खच करते ह व भी जायिक दृष्टिसे हानिकारक ह। श्रीमतीका प्रदान करनेक खातिर तडक भडकवाले जरी या मखमलके कपड पहननेमें और आभूषणोंसे सजनेमें व्ययका खच तो हाता ही है साथ हा गरीरको भी बडा असुविधा और हानि होती है। मनुष्य जितना धनवान होता है उससे ज्यादा लिखाक लिए बहुत बार वह गलत खच करता है। लडकेके लिए बहू गनी हो बसालेस काम निकालना हो या कोई बडा ठका लेना हो तब लोग अपन बतसे बाहर खच कर डागते ह। लडकेके लिए लडकी न मिलती हो तो लोग बज करके जमान खरीदत ह मरान बनात ह और घोडागाडी रखते ह। इसके अगवा आतिथ्यमें भी अपना बडपन और अमीरी दिखानेके लिए लोग भारी खच करते ह।

९ सामाजिक रीति रिवाज और रुढ़िया विवाह मृत्यु और जनेऊ आदि सामाजिक प्रमगा पर भाजामें अत्रका जो विगाड होता है और दूसरे कितन ही यथेके खच हात ह व सबका मासूम ह। इसके उत्तरमें यह कहा जाना है कि जमभर मनुष्य एक ही तरहका किसी भी प्रकारका विविधताके बिना पाइ पाईके हिमावपाला बसतभरा जीवन बिताता है उसने जीवनमें दो चार हा एस मोके आत ह जब वह अपनी बधी हुई बतियावो जरा सुग छा सकता है। एस समय यदि वह अधिक खच कर ले तो इसकी टीका क्या की जाता है? एसा तक आनन्द उत्सवके प्रमी या भोगी और रसिक कहगाने वाले आगा द्वारा खान तीर पर किया जाता है। यह सब है कि आनन्द उमव तावनक लिए जन्मा है। जीवनमें उल्लाम और आनन्दक लिए खान हा चाहिय। परन्तु आनन्द भूखता या जयापूषण टगन नहा मनाया जा सकता। एगमें आमपामन गग भूखा मरन हा एसे समय जिनके पाम साधन-मर्णति हा व आनन्द उमवने पम उगयें एसमें समाजन साथ एक तरहका अध्याम अवग्य हाता है। परन्तु आजकी करण स्थिति ता यह है कि जिनम पाम बाद साधन नहा हाता और दिनका एमा खच करनवा हातिक

इच्छा भी नहीं होती, उसे समाजने राति रिमाग और सन्ध्याके कारण इस तरहकी फिजूलखर्ची और विगाड करना पन्ता ह । एस उदाङ्पनमें और सम्पत्तिका बरवादामें भला क्या रसिकता या क्या आनद हा सकता है ? लग पेटूका तरह बरत और फिर भा पत्तलामें बहिसात्र जूठन ठाडकर उठ जायें और बादम यह सब जूठन भिखारा साथ या चायें — इस दृश्यका रसात्पादक आनन्ददायी अथवा उल्लासपूण कमे कहा जा सकता है ? वर गहरामें कुछ मीठी जीव होटलोमें खान-पीनका आनन्द लेते ह और वहा बहिसात्र अन्नका विगाड करके आनन्द और उन्नत प्राप्त करनका णवा बरत ह । परन्तु हाटलवाला तो हिसाबी पत्तिका जाग्गी होना है । इन्तर्गि यह धरने यहाकी जूठन और बासी खाना गरीब लोगाना बच डाण्टा है । उत जान् और उल्लासको क्लुपिन करनेवाले इस आनुपगिन परिणाम पर एस लागारा ध्यान जाना ही चाहिय जिनमें समाजर प्रति जिम्मेदारीका थाडा भा भावना बने हुई है । सग मन्त्रियया और मित्राके साथ मित्र-जुगनका आनन्द लेना हा ता उसके लिए भी अच्छ और सस्कारा तरीक बूटन चाहिय । आज ता हम इस तरह व्यवहार बरते ह मानो साथ बठकर मिठाइया उडाना ही गान्तका एवमात्र साधन है । हमें एस सहभाजाका याजना करना सीखना चाहिय जो मान् हा, जिनमें बहुत क्षण्ट न हा और जिनमें अन्नका पिगाड न हो ।

१० व्यसन तवाकू मद्यपान और जया आदि व्यसना पर भी मनुष्य अपार दुष्यय बरता है । इनम स मद्यपान ता किनी भी समाजमें प्रतिष्ठाकी वान नही समझा जाता । परन्तु तम्बाकूका भवन गाम कर बीडी मिगरेट पीनका रिवाज सत्र जगह है और इसमें कोई अप्रतिष्ठा भी नहीं माना जाता । प्राकार सिगरेटका धुआ उठता उठान अन्न विद्यायिकाके साथ वारें बरत ह कवि और लेखक कीनी मिगरेटव धुएम प्ररणा ग्रहण करनेका णवा बरते ह और कारदुनी या मजदूरी करनेवाले गग याच यात्रमें बीनाक धुएसे आरामका अनुभव बरते ह । तम्बाकूका गनाक लिए बहुत ज्वाग जमीन काममें ली जाती है । गरायकी इन मनुष्यन छुटाना जागाने पर वाणीका इनम मनुष्यका बयाना बनि है । बाडीका व्यसना जय वाणी न निर साधनका स्थितिमें पन् जाना है तो बद् बाडी जुगनक लिए चाह जा नीच उपाय बरनमें भी नहा विचिचिता । यही धात गणका भी है । गणत कुछ प्रकार उगाहरणक कि घुण्टी एा ह जिनम भाग लेना अप्रतिष्ठित नहा माना जाता । जिहें उमका लण पन् जाना है व लाग बबन् सय-पगना ही बरगा नहा हने बलि द्वारा भा बर पुगणपाने निवार वन

जाते ह। रेश या घुडदीन्व पीछे कितना सफर-खर्च कितना हाटल-खर्च और कितना समय गूट होता है इसका हिभाव लगाया जाय तो ठीक पना चर कि उसके लिए कितना दुःख होता है।

११ फशन कपडा और रहन सहनके फशन समय-समय पर बदलन रहते ह। और एक फशन पुराना हुआ कि उसके लिए खरीदी हुई सारा चीज और बनाया हुआ माग निकम्मा हो जाता है। फशनके लिए मालबे बनानमें भी बहुत बिगाड होना है। शरीरका सजान और कपड बगराके बारेमें मनुष्य सुवच जरूर रह और कला तथा नुदरताका भी ध्यान रख परन्तु आजकलक फशन न सिर्फ पसा बरवाद करनवाल हाते ह बल्कि कला और सौदयका खून करनवाल और अभिरुचिको हीन बनानवाग भी होते ह।

पूजीवादी उत्पादन और नफाखोरी

१२ सम्पत्तिक दुःखयके इन अगग अगग प्रकारोकी जडमें आजकी जा दोषपूण अथ-व्यवस्था है उमका अब हम विचार करगे। आजकल उत्पादनक लाग पसेके रूपमें उन्ह ज्यागस ज्याग नफा हो इसी दृष्टिसे अपनी उत्पादनकी प्रवृत्ति चलाते ह। इमलिए उपभोगका वस्तुआके प्रकारमें तथा उपभोगकी समुची रीतिमें अत बड दोष घुस गय ह। नफाखोर उत्पादक उपभोग और व्ययकी कलाको मुख्यत ता तरहस बिगाडते ह और नुकसान पहुचाते ह। (१) मनुष्यको सचमुच हानि पहुचानवात्री और उसका अनिष्ट करनवाली चीजें और सवाए व्ययक लिए व बाजारमें रखते ह (२) समाजकी मरस आवश्यकतायें पूरी करनक लिए बाजारमें आनवात्री चीजामे मिलावट करके या उन चीजाका बनावटमें हलका माल लगाकर या घटिया काम करके उन चीजाकी उपयोगी होनकी शक्तिको घटा देत ह (३) वे लोगोको ज्यादासे ज्यादा सुख-सुविधा पहुचानक लिए नहा बरिच इस दृष्टिमे काम करते हैं कि उन्हें ज्यादासे ज्यादा नफा हा। इसलिए वे लोगोकी कुछ व्ययका या कम महत्त्वकी आवश्यकताआका बिगप उत्तजन देत ह और जीवनकी पापक आवश्यकताआको पीठ ढकल देने ह।

१३ हमारा कुछ अत्यन्त खर्चाला और जीवनको चूसनेवाली सामाजिक बुराइयो — जस मद्यपान जुआ बेग्यावृत्ति बिना हवा रागनीवाला गदा चारें मिश्रावणवागी गाने-भोनकी चारें चूठी प्वाइया और नकली तथा कमजार चीजें बगरा — की तहमें देखें ता मालूम होना है कि इन चारुके घघमें बन्न उडा नफा रहता है और इसालिए समाजमें इनका प्रचार हुआ है। इस प्रकारक व्यापार घघमें लगे हुए लाग जीवन-कलाका प्रगतिके बन्स बड गनु है। इन

चात्रोंका बुरादमें फिरे ए मनातना उनक नाममें से किस तरह निकाला जाय यह आनका सबन बरा सामानिक प्रान ह। उन सब बुरादयासे सम्बन्ध रखन बाए व्यापार घमाका वल वगन या उन पर जकुण रखनके लिए हर दका सरकार बाए-वन्त महनन करता न या महनत करनका त्वावा करता है। इन नकागारात सरकारा तयमें ना अपना साठगाठ और अपना अमर इतना नमा रका है कि व सरकारका सुच्च जावयक कदम नहा उजन दन। मरकारका व कवए एसा त्वावा ना करवान है कि वह जनताका भरा चाहनवाग है। इमलिए सरकार द्वारा इन बुरादयाका न उवाहनमें कितना मफलता मिगा यह निश्चन नहा बहा जा सकता। इसका सुच्चा पाय एसा अय रचनाका अन्तित्वमें गना हागा जिनन उन बुरादयाकी जडम घुस हुए नकन गभक लिए नरा भा गुनादग न रह। इसक लिए गगाका गिगा दवर तयार करनेका काम गिगागास्त्रिया नीर मुगाकावा है। व यदि सरकार पर प्रभाव डाल सकें ता इम कामन लिए सरकारा तयना उपया हा सकता ह।

साध पदायोंमें मिलावट

१४ नकागोरीक कारण मनुष्यकी प्रतिष्ठितकी खान-मीनका चातानें हानवाग मिलावटक और उमने कारण वनाम वनी प्रायमिक जावयवताका पूनिमें पुनी हुई बुरादयाक कुछ उगहरण हम यहा देंग। दूध और घामे होनेवाली मिलावट ता बहन जानी हुई और सबक अनुभवका धान है। आज गुद्ध दूध या घी न कवए मिक गहरामें नही मि सकता अतिक गावामें भी नहा मि सकता। मिलावट करनका युक्तिया और मिलावटका चात्रे गाने भीतरी भागामें ना घुन गई ह। हागगा गना और मियाईका दुरानानें गाम खाम बीजे गराकरा हानि पदुचानवाल रगामे और हल्व दरजक मुग धिन पनायोंमें आकपर बनाइ जाता ह। हागगामें आमका और दूमर फगाता जा रम पराना जाता है वह गायन हा उन फलोका मन्वा रम हाता ह। दागनमें वमा ही हलकी चात्राता मावा बनाकर उममें उम फला मुगध देनवाल हउन सग (एमन्स) उग गिय जान ह। बाजारमें तयार मिलन बाग मिगाइया मुरना बगरामें बना मिलावट हाता है गक कुछ उग हरण गच० गा० वारी वक वय एण्ड हैवानन बाफ मतराण्ड नामना पुस्तकम नाच दिव जात हैं

(१) एग मटमाठा गात्रियाका पुठिया पर गुद्ध फगाता गग गग सिफ गसरर ऐसा उग फर्चा बिमबावर एक बानी बचता र्हा। उग पर पागा दनकी गात्रिण ह। उगमें एग उिड करन बनाया गया था कि ग

मीठा गालिया बनानमें फल या शक्कर दोनोमें से किसीका भा उपयोग नहीं किया गया था। चापारी आजकल असरी चीजाके बजाय स्वीकृत विकल्प काममें लेता है। यह भी एक चतुराई भरा शब्दप्रयोग है। नीबूके रखे स्थान पर साइटिक एसिड और गकरके स्थान पर ग्लुकोज'को स्वीकृत विकल्प' माना जाता है। इस कपनीने तो साइटिक एसिड भा दूसरे चापारीसे खरीता था। उस दूसरे चापाराका यह खयाल था कि साइटिक एसिड के स्वाकृत विकल्पके रूपमें टाटरिक एसिड दिया जा सकता है। चापारकी नीति तो यहा तक पहुचती है कि टाटरिक एसिड भी हठका बनाया जा सकता है। इस तरह खटमीठा गोलिया बनानवाली उस कपनीका तो टाटरिक एसिड के स्वीकृत विकल्पके रूपमें दूसरी ही कोई चीज मिला था। उस कपनीको कुछ पता ही न था कि उसन क्या चीज काममें ला है। साइटिक एसिड नीबूका तेजाब होता है और टाटरिक एसिड इमलाका तेजाब है। परन्तु वे नीबू या इमलीसे नहा बनाये जाते। इतनी ही बात है कि रासायनिक दृष्टिसे उनमें नीबू और इमलीके तत्व होते हैं। कुछ बहुत हल्का चीजासे ये तेजाब बनाये जाते हैं। ग्लुकोज गकरके तत्वोदाला रासायनिक पदार्थ है और अधिकतर हड्डियोसे बनाया जाता है। अणुगतकी तरफमें पथकरण करान पर यह मालूम हुआ कि यह हड्डियोसे ही बनाया गया था। इस तरह उस कपनीने तो जीभके स्वादमें फसे हुए वचारे बच्चोको विकल्पका विकल्प और उसका भी विकल्प एसा का पदार्थ दिया था। पुनिया पर चिपकाये गये पचेम उपरोक्त झूठ गान ही नहा ये बल्कि उस पर ता एक बड और पीठे नीबूका और पीठका और सुन्दर खिलाइ देनवाले और नीबूको ताजा बनानवाले नीबूके सुन्दर हरे पत्ताका भा चित्र दिया गया था। प्रतिवादी कपनीन यह दलील दी थी कि यह चित्र तो बसलिए दिया गया था कि उस बखकर खानवाल्को यह अनभव हो कि इन खटमीठा गालियाका स्वाद सचे नाबू जसा है। परन्तु साक्षा एसी आई कि गालियामें नीबूका स्वाद जरा ना नहा आता था। प्रतिवादी यह दलील भी दे सकने थे कि इसीलिए तो पुडिया पर नीबूका चित्र उनकी खास चयन था। गराबन अपना धुगा करनवाल कोई आत्मी जो जम भर उस धानक जहरन दूर रना ही अगर उन खटमीठी गोलियाको चब ता गुराबका गराब और सग नई हेल्याम निराशी गई न पवनवाग चार्जे हा उनके पैरमें जायगा। यह विचार बस सुखनामी है।

(२) निम्ना फर्का मुरवा फर और गकरका चाननी उन नाम बनता है। घर पर बनाए गए मुराबमें खानकर ये ही ग चार्जे हानी हैं।

उसमें हटका जातिका जडें हटका वनस्पतियाका मावा, रग आदि कुछ तहा डाला जाता। परन्तु अन्नक बाजारमें पहलू अरजक और दूसर दरजक मुरखे कसे विकत ह यह जानने गायब है। पहलू अरजक भरतृमें फटका मात्रा ५० प्रतिशतस अधिक नहा हाना और दूसर दरजक मुरखमें यह मात्रा २० प्रतिशतस अधिक नहा हानी। इनक थगवा य ५० प्रतिशत फल भा गुद्ध तहा हाने। उनके स्वीकृत विस्फुरन रूपमें बगती जानवाग चाह जसी वामा वनस्पतिया मावा जाता है। जिस फलका मुरगा बहा जाता हा उस फलक बाज मावमें दीनत चाहिय। अमलिए बाज बचनवागके पुगने नग्रहमें न दीनत तानर इनमें अल गान ह। इन बाजा पर साइड्रिक एसिड या टार्टरिक एमिड चुपन लिया जाता है और न इन तरह रग लिय जात ह कि ताज लियाइ दें। पहलू दरजका अग्रेजा मुरवा तन एसा हाना है ता दूसर और तानर दरजेक मुरग कम हाने हाग अमका बचनना का जा सकती है।

१५ जा लाग बानारम मिश्रवाग तयार अचार चनी मुरखे आदि काममें उन ह उह मावधान रहना चाहिय।

१६ यह ता मिश्रवाकी बात हुइ। परन्तु हमारा आजकी आन्त और हमारा जीवन एसा हा गया है कि हमार खान-पानका बाजामें जा गुण हान ह जना हमें पूरा तन नहा मिश्रता। अन्नमवाग और बजइ जम गहरामें जा दूध मिश्रता है यह १२-१५ घट पहलू निवाग हुआ हाना है। दूधक गुणकारी तत्व एस बासी दूधमें बहुत कम हा जात ह। यही बात सागमाजी, फल और अण्डे आदिना है। गहरामें बल बल अनाराना भा ये चीजें तानी नहा मिश्र गतना। हायबकामें राज पामकर वाममें लिय जानवाल आने और मिलमें पिसवाकर ८-१५ दिन तक काममें लिय जानवाग आन्क गुणाम बहुत बल अन्तर फल जाना है। एसा ही अन्तर तामकुने चावल और मिश्रमें पालिग किये हुए चावलने गुणामें पड जाना है।

झूठी दवाए

१७ अन्नक क्षयम हम उनरत न तब ना भारा धानबाजी हाना लियाई तना है। जानकरत अनारामें आधात चाला अगह दवाक विनापनाने भरी रहना। दवाक गणा और उसक अनार हानक जरूरतस तब बगनेवाग विनापन तथा दवाका शीगिया और किरियाने बढ़िया पविग हा ज्याग गचीक हान ह। अन्नका अन्न ता बचत हा कम कामतका हाता है और यह ना ताम प२ जानवाग हाना है या नहा यल गगस्य हाना है।

मीठी गोलिया बनानमें फल या गन्कर दोनोमें से किसीका भी उपयोग नहीं किया गया था। व्यापारी आजकल असली चीजाके बजाय स्वीकृत विकल्प काममें लेते हैं। यह भी एक चतुराई भरा शास्त्रप्रयोग है। नीबूके रसके स्थान पर साइट्रिक एसिड और गन्करके स्थान पर 'ग्लकोज' को 'स्वाकृत विकल्प' माना जाता है। उस कंपनीने ता साइट्रिक एसिड भा दूसरे व्यापारीसे खरीदा था। उस दूसरे व्यापारीका यह खयाल था कि साइट्रिक एसिड के स्वीकृत विकल्पके रूपम टार्टरिक एसिड दिया जा सकता है। व्यापारकी नीति तो यहा तब पहुंचती है कि टार्टरिक एसिड भा हठका बनाया जा सकता है। इस तरह खटमीठी गोलिया बनानवाली उस कंपनीको तो टार्टरिक एसिड के स्वीकृत विकल्पके रूपम दूसरी हा कोई चीज मिली थी। उस कंपनीका कुछ पता हा न था कि उसन क्या चीज काममें ला हे। साइट्रिक एसिड नीबूका तेजाब हाता है जार टार्टरिक एसिड इमलीका तेजाब ह। परन्तु ये नीबू या इमलीसे नहीं बनाये जाते। इतनी ही बात है कि रासायनिक दृष्टिसे उनमें नाबू और इमलीके तत्व होत ह। कुछ बहुत हलका चीजासे ये तेजाब बनाय जाते ह। ग्लकोज गन्करके तत्वोवाला रासायनिक पदार्थ है और अधिकतर हृन्धियासे बनाया जाता है। अनालतकी तरफम पथक्करण करान पर यह मातूम हुआ कि वह हृन्धियोस ही बनाया गया था। इस तरह उस कंपनीन तो जीभके स्वादम फमे हुए बेचारे बच्चाको विकल्पका विकल्प और उसका भी विकल्प एसा काइ पनाय दिया था। पुडिया पर चिपकाये गये पचेमें उपरोक्त चूठे गन् ही नहा थे बल्कि उस पर तो एक बरत और पील नीबूका और पीछकी जोर मुन्टर लिखाई देनेवाले और नीबूको ताजा बनानवाले नीबूके मुन्टर हर पत्ताका भी चित्र टिया गया था। प्रतिवादी कंपनीने यह दलील दी थी कि यह चित्र तो इसलिए दिया गया था कि उमे देखकर खानवालेको यह अनुभव हा कि इन खटमीठा गोल्याका स्वाद मच्चे नीबू जसा है। परन्तु साक्षी एसी थाइ कि गोलियामें नीबूका स्वाद जरा भी नहा आता था। प्रतिवादी यह दलील भी द सकन थ कि इसीलिए तो पुडिया पर नीबूका चित्र लेनकी खास जरूरत था। गराबन अल्पन घगा करनवाला कोई आत्मी जो जाम भर इम धानन चटहन दूर रहा हो अगर इन खटमीठी गोलियाका चने ता खुदायका गराब और मने हद हृन्धियासे निवाली गइ न पवनवाले चाजें हा उनके पेटमें जायगा। यह विचार बरा ठुखगापी है।

(२) निमा फरका मुरवा फल और गन्करका चागनी इन नाम बनता है। घर पर बनाय हुए मुरबेमें खानकर ये ही गन् चारें हानी हैं।

उसमें हल्का जानिका जई हल्का बनस्पतियाका मात्रा रग आदि कुछ तहा डाला जाता। परन्तु लालक बाजारमें पहल दरजक और दूसर दरजक मुख्य कम मिलने ह य प्र जानन लायक है। पहल दरजक मुख्यमें फल्का मात्रा ५० प्रतिशत अधिक नहा हाता आर दूसर दरजक मुख्यमें यह मात्रा २० प्रतिशत अधिक नहा हाती। इमक अगवा य ५० प्रतिशत फल् भा शुद्ध तहा हाते। उनक स्वीकृत विक्रयक रूपमें बरता जानेवाला चाह जसा यामा बनस्पतिका भावा हाता है। जिम फल्का मुख्य तहा जाना हो उम फल्क बाज मारमें धारने चाहिये। अगिए बाज बनवालके पुगन नग्रहमें न बीन गार इममें जग जान हैं। उन बाजा पर माइडिक एसिड या टाटगिक एमिड चुपक लिया जाता है जग व इन तरह रग लिय जात ह कि ताज लिकाद दें। पहल दरजका अग्रेजा मुख्य तब एमा होता है ता दूसर जीर तानर दरजक मुख्य कम हात हाग अमवा बनना का जा मरता है।

१५ ता लोग बाजारमें मिलनवाला तयार अचार चटना मुख्य आदि काममें उन ह उह नाबधान रहना चाहिय।

१६ यह ता मिठावकी बात हइ। परन्तु हमारा आजका जालने और हमारा जीवन एमा हा गया है कि हमार गान-मानका बाजारमें जा गुण हात ह उनका हम पूरा गान नहा मिलता। अमगवाला और बबल जम गहरामें जा दूध मिलता है बह १२-१५ घण पहल निराग हुआ हाता है। दूधक गणकारा तत्व एम यामा दूधमें बहुत बन हो जात ह। यहा बात रागमानी फल् और अण आलिया है। गहरामें बह बल अमारका भा य बाजें ताती नहा मिल मरता। हायचकरीमें रात पामरर काममें लिय जानवाल आटे और मिठमें पिसवाकर ८-१५ दिन तक काममें लिये जानवाला आटक गुणामें बहुत बडा अन्तर पल जाना है। एमा हा अन्त हायकुर चाकर और मिठमें पाणिग किये हुए चाकर गुणामें पड जाना है।

झूठी दवाए

१७ अरक अथम हम अरक ह तब ता भागी पाववाना जाता लिकाद तना है। बावकर अरकारामें आधार याल जगह तवाक विनापनाये मरा रहता ह। तवाक गणा और उसक अरकार हातक जबरस्त तब करनेवाला विनापन तथा अरका गणिमा और टिड्डीवाये बलिया पकिग ता ज्याग मर्चो हात ह। अरकी अरक ता बन्त हा कम बीमनका हाता है और य भा जग पृचानमाण हाता है या नग यह गरास्त हाता है।

मीठी गालिया बनानेमें फल या शक्कर दोनोम से किमीमा भी उपयोग नहा किया गया था। यापारी आजकल जसती चीजोके दजाय स्वीकृत विकल्प काममें ग्ने ह। यह भा एच चतुराइ भरा श प्रयोग है। नीबूके रसके म्यान पर साइटिक एसिड जोर शक्करके स्थान पर ग्लुकोज'को स्वीकृत विकल्प माना जाता है। कम कपनीन तो साइटिक एसिड भा दूसरे यापारीसे खरीदा था। उस दूसरे यापारीका यह खयाल था कि साइटिक एसिड के स्वीकृत विकल्पके रूपमें टार्टरिक एसिड दिया ना सकना है। यापारकी नीति तो यहा तक पहुंचती है कि टार्टरिक एसिड भी हलका बनाया जा सकता है। इस तरह खटमीठी गोलिया बनानवाली उस कपनीको तो टार्टरिक एसिड क स्वीकृत विकल्पके रूपमें दूसरी ही बाई चीज मिली था। उस कपनीको कुछ पता ही न था कि उसन क्या चीज काममें गी है। साइटिक एसिड नीबूका तेजाब होता है जोर टार्टरिक एसिड इमलीका तेजाब है। परन्तु वे नीबू या इमलीसे नहा बनाय जाते। इतनी हा बात है कि रासायनिक दृष्टिसे उनमें नाबू और इमलीके तत्त्व होने ह। कुछ बहुत हलको चीजोसे ये तेजाब बनाये जाते ह। ग्लुकोज शक्करके तत्त्वोवाका रासायनिक पदार्थ है जोर अधिकतर हड्डियामे बनाया जाता है। जलालकी तरफसे पथक्करण कराने पर यह मालूम हुआ कि वह हड्डियामे ही बनाया गया था। इस तरह उस कपनीन तो जीभके स्वादम फसे हुए वचारे ग्लुकोको विकल्पका विकल्प और उसका भी विकल्प एसा कार्ड पलाय दिया था। पुडिया पर चिपकाये गये पचेमें उपरोक्त झूठे गन्त हो नहा थे बल्कि उस पर तो एक बडे और पीठे नीबूका जोर पीछकी जोर सुन्टर लिखाई देनवाले जोर नीबूको ताजा बनानवाले नीबूके सुन्टर हरे पत्ताका भी चित्र दिया गया था। प्रतिवादी कपनीन यह दलील दी थी कि यह चित्र तो इसलिए रिया गया था कि उमे देखकर खानवालेको यह अनभव हो कि इन खटमीठी गोलियाका स्वाद सच्च नीबू जसा है। परन्तु साक्षा ऐसी आई कि गालियामें नीबूका स्वाद जरा भी नहा जाता था। प्रतिवादी यह दलील भी दे सतत थे कि इसीलिए तो पुडिया पर नीबूका चित्र रनका खान पन्त था। गराशम अत्यन्त घगा करनेवाला कार्ड आत्मी जो जम भर इस घातक जहरम दूर रण हो अगर इन खटमीठी गालियाको बन तो गुरानका गराय और मन्त हइ होंयासे निवात्री गइ न पवनवागी चार्जे हा उमने पन्में जायगी। यह विचार बना गुरानयी है।

(२) किमा पन्का मुरना फल और शक्करका चागनी इन नाम यनता ह। घर पर बनाय हुए मुरामें मानकर ये ही गी चीजें हाना हैं।

उसमें हल्की जातिकी जड़ें हल्की वनस्पतियाना भावा रग आदि कुछ तहा डाला जाता। परन्तु लन्ने वाजारमें पहल दरजक जीर दूसर दरजेक मुरब्बे कम विकते ह यह जानने गायक है। पहल दरजक मुरब्बम फन्की मात्रा ५० प्रतिशतसे अधिक नही हाता और दूसर दरजक मुरब्बेम यह मात्रा २० प्रतिशतसे अधिक नही होती। इनके जलावा य ५० प्रतिशत फन् भा शुद्ध तहां होने। उनके स्वीट्टन विकल्पक रूपमें बरती जानवाला चाहे जसी वासी वनस्पतियाना भावा होना है। जिस फलका मुरब्बा बहा जाता हो उस फन्क बीज मात्रमें दीखने चाहिये। इसलिए बीज बचनेकालक पुरान सप्रहमें स वात अकर इसम डाल जात ह। इन बीजो पर साइट्रिक एसिड या टार्टरिक एसिड चुपन् दिया जाता है और वे इन तरह रग दिय जात ह कि ताज तिवाई दें। पहल दरजका जंगेजी मुरब्बा जत्र एमा होना है ता दूसर जीर तामरे दरजेक मुरब्ब कम हाते हाग इसका बचपना की जा सकती है।

१५ ता लोग वाजारम मिश्रणवाल तयार अचार चटना मुरब्बे आदि काममें देने ह उह सावधान रहना चाहिये।

१६ यह ता मिश्रणककी बात हुइ। परन्तु हमारा आजका आन्तें जीर हमारा जीवन एसा हो गया है कि हमार सानमानकी चामों जा गुण हात ह उनका हम पूरा गम नहा मिश्रता। जहमलावा और बरई जस गहरामें जा दूध मिश्रता है वह १२-१५ घन् पहल निराग हुआ हाता है। दूधन गुणकारा तत्व एस वासी दूधमें बहुत कम हो जात ह। यही बात मागभाजी फल और अण्ड आदिका है। गहरामें बड बडे जमीराका भा य चीजें ताजी तहा मिल सकती। हायचरकीमें राज पागवर काममें लिय जानेवाल आटे और मिलमें पिगवावर ८-१५ तिन तक काममें लिय जानवाक आन्क गुणामें बहुत बडा अन्तर पन् जाता है। एमा ही अन्तर हायट्रुट चायठ और मिश्रम पालिन किय हुए चावलन गुणामें पड जाता है।

शुष्ठी बयाए

१७ त्वाक क्षयम हम उत्तरन ह तत्र ता भारा धारवाकी हाता लिखाई दना है। आनकने अन्तरामें आधान ज्याग जगट त्वाक विनापनाने भरी रहना है। त्वाक गुणा और उत्तर अन्तर हातक जबरस्त शये बरनेवाक विनापन तथा त्वाका शानिया और डिस्मियाने बड़िया पक्ति हा ज्याग लक्ष्मी हात ह। अन्तकी त्वा ता बचन हो कम भीमनका हाता है और यन् ना लाभ पहुचावाली हाती है या नहा यह त्वाक हाता है।

१८ हमारे राष्ट्रकी कुल आय १९६०-६१ में १४२ अरब रुपया मानी गई है। उसका हमें पूरा उपयोग करना हो जयात उससे सामान्य लोगोंको अधिकसे अधिक सुख-सुविधायें देना हो तो सबसे पहल इस आयका बटवारा यायपूवक होना चाहिये। वतमान अयायपूण आर्थिक असमानतामें थाडसे आर्दामयोके हिस्सेमें आयका बहुत बडा भाग चला जाता है और उन्हें किसा वातकी कमी न होनेके कारण व सम्पत्तिका मयकर दुयय करते ह। दूसरी जोर बडी सख्याके योगाको आवश्यक व्यय करन यायक पसा भी मयम्सर नही होता। हमें जो कुछ आय प्राप्त हाती है उसका पूरा सदयय करनके लिए हमें कहा कहा नजर दौडानकी जरूरत है और कसे कसे विगाड रोवने चाहिये इसकी कुछ कल्पना करानके लिए हमन दुययके प्रकाराक कुछ उदाहरणा पर विचार कर लिया। यदि समाजकी उचित जोर आरोग्य प्रदान करनवाली आवश्यकताओको ध्यानमें रखकर समाजके रहन-मान जोर खचके स्तर निश्चित किये जाय तो हमारी कुल आयसे समाजका अधिकसे अधिक सुख-सुविधायें मिल सकती ह और समाजका जीवन भी सब तरहसे विगप समद्ध बन सकता है। एसा होनमें कहा कहा रकावटें आती ह इसे भलीभाति समझनके लिए हम अपनी आवश्यकताआ और उन्हें पूरा करनेकी पद्धतिमा पर थोडा विचार करेंग।

प्राथमिक समाजमें दुव्यय नहीं होता था

१९ मनुष्यन अपन आसपासकी प्रकृतिसे पहले तो सहज बत्तिसे और वानमें बुद्धिका उपयोग करके अपनी आवश्यकताय पूरी करना आरभ किया। जिस प्रकृतिके वाच मनुष्य रहा उसमें अपन जीवनको टिकाय रखनके लिए उसन परिश्रम करके अपना आवश्यकताए पूरी करनकी कुछ प्रयाए डागा। गुरुमें उसन अपन पासकी प्रकृतिसे ही अपना भाजन अपन कपन जपना घर अपन औजार और अपने हथियार जुटाना गुरु किया। अपन आमपामने प्रतैगमें जा वनस्पति और पशु पक्षी मिल जाते उन्हीमें स उसन अपना भोजन हून निकाना। वनक उनमें स अपना चुनाव करनके लिए तो उन बुद्धि गगानी ही पडती थी। और उसने बुद्धि गगाइ इसीलिए अन्नका भण्डार वानने लिए उसे खता करना और पशुपालन करना मूज्ञा। अपने पहनने औन्नक लिए कपडा भा उसन उसा जगह मित्र जानवाले चमड रोए वाल और पत्ताका छालको टीप टाप कर बना लिया। रहनके लिए उमन बड पत्तसे खोखल तना और गुफाआका उपयोग किया। अपने औजार हथियार और बरतन आदि भी उसने इसा तरह आसपासकी प्रकृतिमें

से उत्पन्न कर लिये। यह सब करनेमें जहा तक मनुष्यकी प्रवृत्ति प्राथमिक स्वरूपकी आवश्यकतायें पूरी करत तक ही मर्यादित रही वहा तक यथक मामलमें गभीर भूल होतकी या सम्पत्तिका विगाट हानका गुनादान बन्त थाडा थी। हा एसा हाता था कि स्थानीय प्रदशम मित्रनेवाए आहारका तथा समा चीजाका उपयोग वह नही कर सकता था। लकिन यह स्थिति बहुत समय तक नही रह सकी। जमे जम जनसख्या बन्ता गई बस बस आहारके बारेमें प्रयोग करके स्थानीय प्रदशम मिल सकनवागी सारा भाजन सामग्रीका उपयोग वह करने लगा। किमा जहरानी चाजका सा जानेकी भूल मनुष्यन की होगी परन्तु उम तुरत मुधार भी ली होगी। क्यकि वह जा कुठ खाता था बेबठ जीवनका टिकाय रखनक लिए खाता था तरह तरहक स्वाद लने और मौज उडानके लिए नहा खाता था। इसलिए जम आज हक जहरसा काम करके गरीरका हानि पहचानवाली चाजे मनप्य जानने हुए भी स्वादवतिके वग हारर खाता है कमा प्राथमिक मानव नहा करता था। जब तक मनुष्यका रहन-सहन प्राथमिक स्वरूपका था और मनुष्य प्रकृतिके अधिक समीप था, तब तब प्रकृतिम मिश्रनवाल अधिकतर पदार्थोंक व्ययमें मे मनुष्य जावनकी दृष्टिम ज्यादा ज्यादा लाभ उठा लगा था। खान-पीन और कामका दूसरा चाजारा चुनाव करनेमें उमका मुख्य ध्यान यही देखनेकी आर रन्ता था कि उनमें जावनक लिए उपयोगी हानक गुण कितन ह। गुफाआमें रहनवाल मनुष्या था प्रारभिक दगाका गाय-जावन पितानेवाए कुटम्बाके रहन मन्तका स्तर बहुत ऊचा नहा था पर व जिम किमी चाजका व्यय करत थ उममें मनुष्यका मुख-मुविधा जुगनकी जिनना भी गकिन हाता थी उमका व पूरा उपयोग कर लन थे। उनक व्ययमें विगाट या उठाऊपन नहीं हाता था। मनुष्यन आहारके जरुर नत्ता मरधा आधुनिक धनानिक गोजारा उम जान नहा था। फिर भी आहारमें म प्राचीन गहरर चरबी मत्त आदि तत्त जरुर मागामें मिश्रन रह इम ढगम उमन अपनी गानकी चाजे मन्त्र बनिस पगल कर ला था। इगा तरह प्राथमिक मनुष्य आजके जम कपल कभा नहा पहनता था जिनमें फानक कारण कपलता बाफा विगाट हाता है और फिर भा गरीरका त ता पूरा आराम मिगना है और न उमका पूरा रक्षण हाता है। स्मन सिवा यह अपन पागले माधनारा एव नग परन्तु अनर उपयोग करला था। उमक औजार और हथियार लगभग एव हा रन्त थ। व उत्पादनक काममें भी धान से और आमरगाके लिए जडनमें भी काम आन थ।

रहनका निवास जोर कपड बहू एस बनाता था जो गरीरको सरदी गरमी और बरसातस बचानके सिवा हिंस्र पशुओंसे भी उसकी रक्षा करते थे। खाना बनाने जोर खानका समय उसन एसा रखा था कि इधनका उपयोग जिस समय खाना बनानके लिए होता उसी समय उसे तापनको भी मिल जाता था।

२० तब इन स्थितिमें से समाज आग बन्ग और खेती तथा हाथ उद्योगका विकास हुआ उसके बाद भा जब तक उत्पादन और व्ययके बीच साधा संबध रहा जोर अधिकतर उत्पादन या तो अपन ही उपभोगके लिए होता था या अपन जान हुए ग्राहकोंके लिए होता था तब तक उत्पादन और व्यय दानामें संपत्तिका विगाड नहीं होता था। परंतु जवसे उत्पादन दूर दूरके बाजारोंके लिए जोर बन्ग मनाफके लिए होन लगा और परिवहन तथा व्यापारक साधन अधिक तेज होन लग तबसे उत्पादन और उद्योग धंध खूब बढे ह दूर दूरके त्त एक दूसरेकी बनाई हुई चीजोंका उपयोग करन लगे ह परंतु कुत्तरती और स्थानीय अथ रचनाको वससे बडा धक्का लगा है। इससे इनकार नहीं कि बाजारक लिए किय जानवाते इस उत्पादनसे समाजको कुछ लाभ हुआ होगा परंतु तबकी अपना हानि अधिक हुई है। हम यह नहीं जान सकते कि दूरके दगामें तयार हुइ खानकी और दूसरी चीजोंमें कितनी मिश्रवट है कितना नक़लापन है। पुरान तमानक लोग बाहरसे आइ हुई अपरिचित वस्तुयाको हमारा तबकी नजरस देखते थे। पर आज तो नवीनताका मोह इनना अधिक बन्ग गया है कि नइ चीजमें जीवनके लिए उपयोगी होनका कितना गण है इसकी जत्ती तरह तब किय बिना हम उसे सिफ इसलिये के लेते ह कि बह नई है और फिर देखाखेणी उसका प्रचार भी होता है।

२१ आज हमन अपनी आवश्यकताआका जजाठ इतना बन्ग लिया है कि हम यह विवेक करना भी भूल गये हैं कि हमारी सच्ची आवश्यकतायें क्या हैं और एग-आरामकी वस्तुएं क्या हैं। जब तक मनुष्य अपनी आवश्यकतायें उननी ही रखता है जिननी उसर गरीरको भन्नीभाति काम करने लायक स्थितिमें रखनके लिए जरूरी ह तब तक वे अपन आप ही सम्पत्तिक मन्व्ययका उचित मजगामें रहनी हैं। केकिन जब बह तयारकियत सम्य जीवनका स्तर जगता है और एसा आवश्यकतायें बन्गन गता है जिनकी कीमत जावनकी दृष्टिम बन्त कम है कुछ नहा है या घटान लायक है तब सम्पत्तिके उत्पादन और व्यय दानामें भूत्रे और विगाड हानकी सम्भावनाए बडने लगता है और राष्ट्रीय आय निरम्मा और हानिकारक चीजा पर सब

हाने लगता है। इसीलिए पश्चिमरु बहुतसे विचारवान आगान और गाधीजीने आधुनिक सम्पत्तिकाके एक महाराग कहा है।

२२ हम दख चुक ह कि हमारा आय बहुत ही घाटा है। इसलिए निक्कम्मी चीजा पर गन्त खच करना हमें पुसा नहा सकता। हमारे पाम जा कुठ है उनका पूरा पूरा सदुपयोग हम करेंगे ता ही टिक सकेंगे। अठवत्ता इनका यन् मनल्व नही कि हम कगाल और नारम जीवन बिनायें। केवल हमारी गारारिक आवश्यकतायें पूरी हो जाय इसस हमें कभी सताप नही मानना चाहिये। जीवनमें आनद और उल्लासक लिए जम्पर स्थान है। परन्तु यह आनन्द और उल्लास प्राप्त करनेके तरीके हमें एम खाजन चाहिये जा सारे समाजको बल पहुचानवाले हा। मन्व्ययका एक नन् कन्ना हमें निर्माण करनी हागा और इसक लिए समाजका तालीम भी दना होगा। खर्चीठे साधनके बिना भी हम ऊच प्रकारका आनन्द ले सकत ह। कम गचवाय गलबूदाकी योजना की जा सकती है। और बड बन् माधनारा आढम्बर रच बिना भी मल्य-मगीत पूरी तरह आह्लात्न बनाये जा सकत हैं। प्राकृतिक दूयाका रगास्वाद गनका हमें तागीम मिली हा ता उनमें म तो उत्पामकी धारायें बहाई जा सकता ह। और इसमे कौन इनगार कर सकता है कि माटर या रल्की यात्राकी अपरा पन्ठ यात्राका मूल्य कहा अधिक है? सम्पत्तिकाके नाम पर जयवा आनन्द उल्लाम या मीज-मीरके नाम पर सपत्तिका दुव्यय मच्च विकास या प्रगतिका लक्षण नहा है, बल्कि सा जीवनन साय ऊच विचारा और ऊची गवत्तियारा विकास करनेमें ही मच्चा विकास और सच्चा प्रगति है।

मानव अर्थशास्त्र

छठा भाग

नवीन अय-रचना

मानव अर्थशास्त्र

छठा भाग

नवीन अथ रचना

समाजवाद

१ मजदूर-संघाकी त्रिविध प्रवृत्तिया समाजकी आर्थिक सुरक्षाकी याजनाए सहयोग-वृद्धि और कर लगाकर असमानता कम करनेकी रीति — य सब सम्पत्तिक असमान बटवारेकी दुराश्याकी दूर करनेका प्रयत्न जरूर करता ह परन्तु य सब प्रवृत्तिया और योजनाए आर्थिक असमानताकी जड़ पर प्रहार करनेवाली नहीं ह । इन योजनाआ और प्रवृत्तियाका हेतु यह है कि समाजका पूजावादी व्यवस्थाका कायम रखकर उसमें यथासंभव सुधार किया जाय । कुछ अर्थशास्त्रा मानते ह कि नई नई राजें और सुधार करके सम्पत्तिका उत्पादन करनेका प्रोत्साहन और प्रेरणा पूजावादी व्यवस्थामें ही संभव है और जस जस सम्पत्तिका उत्पादन बढ़ता जायगा वस वस भौतिक सुख-सुविधायें अधिकाधिक मात्रामें मनुष्याको मिलता जायगी । इसलिए व एसी प्रवृत्तिया और याजनाआको ही समाजकी सुस्थिति और प्रगतिके लिए पर्याप्त मानन ह । जो लोग यह मानते हैं कि सम्पत्तिक बटवारमें असमानतायें ता रहेंगा ही और ये असमानतायें समाजकी प्रगतिके लिए वाछनीय और आवश्यक भा ह वे तो यह भी मुझते ह कि य प्रवृत्तिया और याजनाए जरा धीमी गतिम चलना चाहिय । दूसरी ओर ऐसा वाद पदा हुआ है जा कहता है कि वर्तमान पूजावादी अथ रचनाको डिग्रभिन्न करके उसके स्थान पर एसी नई समाज रचना स्थापित किय सिवा मानव-समाज आग प्रगति नहा कर सकता जिसमें उत्पादनके साधना पर व्यक्तिगत स्वामित्व-अधिकार न ह । इतना ही नहीं बल्कि समाजकी प्रगतिके लिए पूजावादी व्यवस्थाका नाग अर नजदीक आ पहुंचा है और हमें तो इस नामें निमित्तमात्र ही बनना है ।

२ आज तककी अथ रचनामें व्यक्तिको प्रधानता दी गई है । दुनिया इस विदवास पर चली है या उम चलाया गया है कि प्रत्येक व्यक्तिको पूरी आर्थिक स्वतंत्रता मिले ता अपन आप मारे समाजका आर्थिक हित सध जायगा । इसके स्थान पर अर एक एमा वाक्य व्यक्तारमें आया है जो कहता है कि मारे समाजके हितकी दृष्टिस विचार करा समाजकी सुलनामें व्यक्ति गौण है और समाजके हितमें ही व्यक्तिको हित भी समाया हुआ है । यह वाक्य अर्थशास्त्रने सार साधना परम व्यक्तिगत स्वामित्व हटाकर उन पर समाजका स्वामित्व स्थापित करनेकी और सम्पत्तिक उत्पादन वितरण आदि समस्त

आर्थिक प्रवृत्तियाँ परसे व्यक्तिवादी नियंत्रण दूर करके समाजका नियंत्रण स्थापित करनेकी हिमायत करता है। इसलिए यह वाद समाजवाद कहलाता है।

२. एसा कहा जा सकता है कि इस समाजवादका एक आर्थिक बलके रूपमें यूरोपमें १९वीं शताब्दीमें जन्म हुआ। उसकी अनेक योजनाएँ हैं। इन सब योजनाओंमें यह तत्त्व सामान्य है कि उत्पादनके साधनों परसे व्यक्तिगत स्वामित्वका अधिकार नष्ट कर दिया जाना चाहिये। लेकिन सभी समाजवादी यह नहीं मानते कि किसी भी तरहका काम करनेवाला प्रत्येक व्यक्तिको एकसा परिश्रमिक मिलना चाहिये और समाजमें पूरी आर्थिक समानता स्थापित होना चाहिये। पूरी समानताका आग्रह रखनेवालोंको दूसरे समाजवादीयोंसे अलग पहचानानेके लिए साम्यवादी (कम्युनिस्ट) कहा जाता था। परन्तु सन १९१७की रूसी क्रांतिके बाद समाजवादी (सोशलिस्ट) और साम्यवादी (कम्युनिस्ट) यद्यपि कुछ दूसरे ही अर्थमें प्रयुक्त होते हैं। जो हिंसक शान्तिको अनिवाय समझते हैं और मजदूरोंके विद्रोह द्वारा राज्यसत्ता हाथमें लेकर उस सत्ताके द्वारा सार समाजमें शान्ति फैलाना चाहते हैं वे साम्यवादी (कम्युनिस्ट) कहलाते हैं और जो वर्तमान गेहसत्तात्मक व्यवस्थामें बहुमत प्राप्त करके वाननकी मजदूरी आर्थिक मामलोंमें शान्तिकारी परिवर्तन करनेमें विश्वास रखते हैं वे समाजवादी (सांग्निस्ट) कहलाते हैं। हमारे देशमें अधिकतर कम्युनिस्ट (साम्यवादी) रूसकी कम्युनिस्ट पार्टीके साथ संबन्ध रखनेवाले हैं। अधिकतर समाजवादका प्रयोग इसलिए किया गया है कि एसा भी कुछ लोग हैं जो अपना ही साम्यवादी (कम्युनिस्ट) तो मानते हैं परन्तु रूसकी कम्युनिस्ट पार्टीके साथ संबन्ध नहीं रखते। हमारे देशमें साम्यवादी एसा मानते हैं कि समाजवादी अर्थ रचना स्थापित करनेके लिए पक्ष तो हमें विशेषता प्रकट करने पड़ेगी और इस पक्षसे छूटने के लिए जो समाजवादी विचारधारा नहीं रखते उन लोगोंके साथ भी अभी तो हमें संबन्ध मात्रा कायना पक्ष और स्वतंत्र हानक वाद प्रजातंत्रके जरिये ही समाजवादी अर्थ रचना स्थापित करनेका वागिनी गुरु का ता सबगी। अन्तिम हेतु एसा हान पर भी अलग अलग वाय-अडिनियाकी हिमायत करनेवालोंके लिए समाजवादी और साम्यवादी जयवा साम्यवादी और कम्युनिस्ट जन्म अलग अलग पक्ष काममें लिये जाते हैं। वन एसा तत्त्वज्ञानके लिए ता समाजवाद पक्ष ही प्रयुक्त है कि यह पक्ष मूल अर्थका पूरा तरह प्रकट करता है।

६. उदाहरणके काममें भौतिक शक्तिका उपयोग करनेकी ताज हानक वाद पूरेमें वन पमान पर उत्पादन करनेवाले कारणाने गुरु हुए और

उनका कारणक यद्युग अथवा उद्योग-युग आरम्भ हुआ। इस युगकी युगदयाका सामना करनेके लिए समाजवादका नाम हुआ है। उनक समय लखका और प्रचारवान समाजवादी अलग अलग रूपों और प्रयोगात्मिक विधायक की है। इन मंत्रों अपना विद्वत्ता प्रतिभा और पारमार्थिकताके कारण प्रसिद्ध जमाने तकमाना काय माक्य अपना अपना स्थान रखता है। मन्त्र समाजवादको शास्त्राय रूप द्वारे उनका संपूर्ण वास्तवम् उद्भूत विस्तारण साथ दुनियाके सामने प्रस्तुत किया है। उनका मन्त्र सिद्धान्तकी इस प्रकरणमें हम मरिचक चना करण।

पूजारा सचय मजदूरोंके गोपणसे हुई अक्षतता परिणाम

५ अभा जिम सम्पत्तिवा उपभाग हम कर रहे ह वह सब मनुष्यक परम्परागत श्रमका परिणाम है और इसलिए चाजाना मूल्य उन्हें तयार करनेमें लग हुए परिश्रमके आधार पर जाका जाना चाहिये—इस तरहका काय माक्यके सिद्धान्तका, जिम अक्षर विधारा जाफ वयू व नामस पुजारा जाता है विवेचन* करत समय हम दाय चा ह वि उल्पादनक मत्र माधन पूजापत्तियाक अधिकारमें हातके कारण व मजदूरका उमके श्रमक जितन दाम चुकात ह उनक अधिक दाम उम चाजका—जा उमके श्रमका फल है—वाजारमें प्रचरर लख कर लन ह। जहा उल्पादनक तथा माधनका मात्रिक स्वय श्रम करना हा—जम हायका कारागारक धधामे—वहा एम जा जी अधिक दाम मिश्रन ह वे श्रम करनेवाल्या ही मिश्रन ह। परन्तु उम उल्पादनक माधनका मात्रिक आर श्रम करनेवाला न अलग अलग जायना हात ह वहा य अधिक दाम उल्पादनक माधनका मात्रिक हय कर लता है आर उम लख तक मजदूरका पायण हाता है। इस तरहका पायण दुनियामें बहुत पुरान जमानके अलग मात्रिका और मजदूरोंके दा अलग अलग वग लख तभाम चला जाया है। मात्रिक गुणमारा पायण करत ह शत्रुर और जमानार विमानका पायण करत ह व्यापारा शय-कारागारका पायण करते ह और जातकक कारमानकक मजदूरका पायण करत ह। उल्पादनक विधिय माधनक नाम जा भा सम्पति आर दुनियामें मौजक और मन्त्र का वद्धि हाता जा रहा है मन्त्र पर अवाधित स्वसिद्ध स्वामिन्त्र का लन पायणका कारण है। माध्य दुनियामें पला हजा तमारा उमन जा कुछ अलग किया और उममें । वा कुछ लन किया उम निराक लन दान वा कुल मता ह वग

* दणिय १७ २०९ प्रकरण ८ भाग ।

हमारी वर्तमान पूजा है। यह पूजा समस्त जनसमाजके श्रमका फल है न कि किसी खास वर्गके श्रमका इसलिए उस परसे व्यक्तिगत स्वामित्व दूर होना चाहिये और समाजका स्वामित्व स्थापित होना चाहिये। तब उस पूजाका साधनके रूपमें उपयोग करके उस पर श्रम करनेसे जो कुछ बचत होगा वह धोरेसे पूजापतिया या मालिकाको न मिलकर सारे जनसमाजको मिलेगी। इस बचतका उपयोग मजदूरा यानी सारे समाजके रहन-सहनका स्तर ज्यादा ऊंचा उठानमें किया जायगा साथ ही पुरानी पूजाकी घिसाई पूरी करने या उत्पादनकी मात्रा बढ़ानके लिए पुरानी पूजाकी वृद्धि करनेमें भी इसका उपयोग किया जायगा।

६ आज जो लोग उत्पादनके अलग अलग साधनके मालिक बन बैठे हैं वे उत्पादनके काममें स्वयं परिश्रम करके या बद्धि लगाकर जो कुछ मदद देंगे उसके बदलेमें अपन मजदूराका तरह उन्हें भी पारिश्रमिक मिलेगा। परन्तु सिर्फ स्वामित्व-अधिकारके दावसे उन्हें कुछ नहीं मिलेगा। इसका परिणाम यह होगा कि उत्पादन होनवाली मपत्तिमें से भाग, याज और नफके रूपमें एक छोटासा वग आज जो बड़ा हिस्सा हड़प कर लेता है वह नहीं कर सकेगा। उत्पादनके काममें भाग लेनेवाले सभीको पारिश्रमिक या मजदूरी मिलेगी।

आर्थिक नियतिवाद

७ वर्तमान आर्थिक असमानता और उसके कारण पदा होनवाली बेगुमार बुराईयोकी जड़ पूजा या उत्पादनके साधनो पर व्यक्तिगत अधिकार है ऐसा समझकर मान्य कहता है कि पूजा पर जम हुए व्यक्तिगत स्वामित्वके अधिकारका मिटना अब मानव-जातिकी विनाश प्रगतिके लिए अनिवार्य है अथवा इसके लिए परिस्थितियां निर्माण हो चुकी हैं। अपना यह कथन सिद्ध करनेके लिए वह इतिहासका सहारा लेता है। इतिहासकी घटनाओंको एक महान विवेचककी दृष्टिसे देखकर उनका सूक्ष्म विश्लेषण करनेकी मायममें अन्तुत गति है। यूरॉपके इतिहासमें विपुल सामग्री प्रस्तुत करके वह सिद्ध करता है कि उत्पादनकी अलग अलग पद्धतियां अलग अलग समयकी ऐतिहासिक परिस्थितियोंके कारण व्यवहारमें आई हैं। उत्पादनके साधनोमें जिनमें औजारों और मन्त्रोंका मुख्य स्थान है जम जम गुंथार हाता जाता है वन वन उत्पादनका पद्धति बल्लना जाता है। दुनियामें जब काँच प्रथा या मस्या अस्तित्वमें आनी है तब वह अपन माय अपन गममें ही अपन नामक तत्व भा बाहरूपमें लहर आता है। उत्पादनका काँच प्रथा आरम्भ

होकर विकसित होने होन व्यापक बनती है उसके साथ ही उसका नामके बीज भी व्यापक बनते रहते हैं। जब यह प्रथा विकासका एसी मजिल पर पत्त जाती है कि जिससे आगे उसका अधिक विकास होना सम्भव नही रहता तब वह मानव-जानिकी प्रगतिमें बाधक बन जाती है और इस प्रथाके साथ ही उत्पन्न हुए व विनाशक बीजरूप तत्त्व बड़ा आकार धारण कर लेते हैं और इस प्रथाको तोड़फोड़ कर फेंक देते हैं। गुलामाकी प्रथा जमातारी या जागीरी पद्धति गहरा और बन्धक स्वतंत्र कारीगर और व्यापारी—य सब उस समयकी आर्थिक जल्दताके कारण पत्त हुए और परिस्थितिया बदलन पर नये उत्पन्न हानवाले आर्थिक बदलके कारण नष्ट हो गये। जब मनुष्यन भौतिक शक्तिका उपयोग करना साक्षा तब उसकी मन्त्रमे बड़ बड़ कारखाने रेल जहाज आदि चलानके लिए बन् समुद्रा व्यापारियाके पास जमा हुई पूजी काममें आई। उत्पादनकी मात्रा जार उसकी विविधता बनी। मनुष्य पहले जितनी चीज काममें ला सकता था उनसे ज्यादा चीजें काममें लाना ज्यादा तेजीसे और ज्यादा मुविधाम यात्रा करन लगा और दूर दूरके देगामें बम हुए लगाके एक-दूसरेके सम्पर्कमें आनक साधन बढे। तार डाक अखबारो और पुस्तका आदि जरिये एक-दूसरेके बारेमें मनुष्याका जानकारी बहुत ही बन् गई। परन्तु इसके साथ ही इस उत्पादनकी बुनि यात्रामें ही जो दोष है उसके कारण एसी परिस्थितिया उत्पन्न हानी जाती हैं कि उत्पादन तो खूब बढ़ता है परन्तु आम जनताकी उम खरीदनेकी शक्ति घटती जाना है। इस दोषके कारण उत्पादनके साधन एक अधिमाधिक छाटा हाने जानवाले बगल हाथमें एकत्र हान जा रहे हैं और एक एसा मजदूर-बग बन्ता जा रहा है जिसके पास अपन हाथ-भरके सिवा और कोई साधन नही है। इसके सिवा यत्राकी बनावटमें लगातार हानवाल् गुधाराके कारण मानव शक्ति अथवा मजदूरका जल्दता भा कम होना जाना है इसलिए बकार लगाकी मर्यादा भा त्तिनात्तिन बढ़नी जाना है। उत्पादन बड़ जाने पर भी लोगोके वस्तुआकी तगा भुगतना पन्ती है। यह भारी विमगनता है। इससे समाजमें तीव्र असन्ताप पत्त हाना है। इस विमगनताका दूर करनके लिए और अपने दगाव गनीत्र तथा बकार लगाका काम कर उनका गरीबी दूर करनके लिए उद्योगमें आग बड़े हुए तैग पिछड़ हुए गगामें उपनिवेश स्थापित करन ह और आग बड़न हुए उत्पादनके लिए बड़ा बाजार गढ करते हैं। इससे यत्राद्यागामें आग बड़ हुए गगामें ना राहत मिलनी है परन्तु पिछड़ हुए दगाके प्राचान हाथ उद्योग नष्ट हो जान ह

और बहावा अथ रचना छिन्नभिन्न हो जाती है। फिर बहाव गरावा और बकारा बढ पमान पर फरता है। बहाव उल्लाहा लोग अपन देगमें यत्रो छाग खड करते ह आर पुरान यत्रोछागावागे देगामे हो लगाते ह। पुरान देगावा ता एक दूसरे साथ हाड चग हा करता ह। इस सारा हाडन कारण उद्या बघाम समय समय पर उधल-पुथल और तेजी मदी जाती रना ह कवाकि मागकी पूर्ति जी मागकी तुलामें सतुला कभी रहता ही नहा। और कम भा नयनर परिणाम यह हाता है कि बाजार पर अधि कार करनका व्यापारिक प्रतिस्पर्धाक कारण बार बार युद्ध हात ह। ज्या ज्या उद्याग दो द्रत हात जात ह त्या त्या जनकी रक्षा और फलावके लिए राज्यमत्ताका भा कर्त्तव्य बनना पता ह। ज्यागतर ब उद्याग अमुक स्थाना पर हा ज्यादा सुविधाके साथ चलाय जा सकत ह इसलिए मज दूर भा उहा स्थानामें बेद्विज हात ह और अनन लिए सुविधाए पानक सातिर सगठिन हात ह। सशपम जमुक देगाम हातवाला अधिक् उत्पादन कम उत्पादनकी विक्राफ लिए बाजार खोजनकी प्रतिस्पर्धा उत्पादनकी तुलनाम सत्र बाताको देखत हुए गगाकी बराद गस्तिमें हातवाग कभी अद्यान पूर्ति और मागका विपमता रसक कारण बाजारम जानवाग लम्बी अवधियाकी मना मजदूर-वगमें बन्ती जानवाणी गरावा और बकारी उसे दूर करनक लिए मजदूरका सगठिन हाता और हडनाग सादिक द्वारा मान्द्रिक साथ बगटना अपन गगक मजदूरका काम दनके सातिर दूसरे देगा पर आधिक जाग्रमग करना और इस सारा आधिक प्रतिस्पर्धति पदा हातवागे विरुधापी महायुद्ध — य सत्र बनमान पूजावादी अथ रचनाकी विमगनताए ह। य विमगनताए मनुष्य-जातिका प्रगतिका गला घाट रही ह। और सातिर मानव जति इन विमगनताजाना जम दनवाग पूजीवाणी अथ रचनासा नाग क्रिय गिग नहा रगा। य विमगनताए ही पूजीवादी अथ रचनासा नाग करता है। एना इस विचारसरणाका बाग भावन आधिक नियन्त्रिता (इकानामिक रिगिमिनिजम) नाम देना है। कमका अथ य है कि अमर मागका उगादन प्रथ जमक प्रवारका अथ रचनासा निमाग करना है। कम अथ रचनामें हा कम रचनाका नष्ट करनवाग आधिक बड उपद्रव जात है और पुगना अथ रचना तथा नथ उत्पादन ए आधिक बगके मन्मग पुराना अथ रचनासा नाग हाता ह और उममें ग नद अथ रचना रना हाता है और मानव जति निमानक जममें एग कर्म आग बन्ता है। एग ग अथ रचनासा फिर हातक बाग इसकी भा मना गगा हाता है।

और बगकी अथ रचना छिन्नभिन्न हो जाती है। फिर वहाँ गराबा और बगरी बल समान पाने जाती है। वहाँ उसाहा योग अपन देगमें यनो धाम बल करत ह और पुगन यनोद्यामावाले दगाम होड लगान ह। पुरान दगाका तो एक दूसरेके साथ हाड चक्रा हो करती ह। इस सारा हाडके कारण उद्याम यद्यम समय समय पर उबल पुबल और तेजी मदी आती रहता ह बगकि मागकी पूर्ति जीर भागकी तुलामें सतुल्य बभी रहना ही नग। और यमन भा भयानर परिणाम यह होता है कि वाचारा पर अधि कार करनका व्यापारिक प्रतिस्पर्धाक कारण बार बार युद्ध होते ह। ज्या ज्या उद्याम बद्धित हात पात ह त्या त्या उनकी रक्षा और फलावके लिए राज्यमत्ताका भा बद्धित यनता पन्ता ह। ज्यान्तर बड उद्याम अमुक स्थाना पर ही ज्यादा सुविधाके साथ चक्राय जा सकन ह इसलिए मज दूर भा उहा स्थानामें बद्धित हात ह और अपन लिए सुविधाए पानके खातिर सगर्ति होने ह। स यम अमुक देशोम हानवाका अधि उत्पादन वस्त उत्पादनकी विनाश लिए बाजार सोजनेकी प्रतिस्पर्धा उत्पादनकी तुलनाम सब वाताको देवत हुए लोकाकी खरीद शक्तिमें हानवाकी बभी अर्थात् पूर्ति और मागकी विषमता उसने कारण बाजारम जानवाका यन्वी अयधियाका मग मजदूर-बगमें बगता जानवाली गराबा और बकारा उसे दूर करनके लिए मजदूराका सगर्ति होना और हडताग आदिक द्वारा मागिकाके साथ बगडाता अपन यन मजदूराका काम देनके खातिर दूसरे दगा पर आर्थिक आक्रमण करना और इस सारी आर्थिक प्रतिस्पर्धसि पदा हानवाके विनाशको महायुद्ध — य सब वर्तमान पूजावाणी अथ रचनाका विमाननताए ह। य विमाननताए मनुष्य जातिकी प्रगतिका मग घाट रही ह। और इसलिए मानव जाति इन विमगतताआकी जन्म बनवाला पूजीवादी अथ रचनाका नाग निय धिग नहा र गी। य विमाननताए ही पूजीवाणी अथ रचनाका नाग करता ह। यनता इस विचारसरणीका बाल माक्स आर्थिक नियमिताए (व्यानामिक निर्मितिज्म) नाम देता है। इसका अथ यह है कि अमय समयका उत्तम प्रथा अमक प्रवाणी अथ रचनाका निमाय करता है। एग अथ रचनामें हा एम रचनाको नष्ट करनवाले आर्थिक बल यन्त्र गन ह आर पुगना अथ रचना तथा नय उत्तम हुए आर्थिक बगके मध्यम पुराना अथ रचनाका नाग हाता ह और उसमें न नई अथ राना उत्तम हाता है और मानव जाति विनाशक क्रममें एक बन्म जाग बगता है। एग नय अथ रचनाक स्थिर हासन या एमकी भा यही गग हाता है।

८ हम मुनियारु निर्यातका नाम करें तो पता चलेगा कि मतकारोंमें एम अनर मधुप्र हार = एम प्रत्यक्ष मधुपन मानव जातिका जाण धर्याया ० जोर नधि वम ना एम मरजोंस या मानव जाति प्रगति करेगा। समाजका जाधिक प्रातिक्रिष्टि यह धन नियत हूंगा = दमर्गिए इम नियमिवात्का नाम दिया गया है। एम मार कर्ममें मनुष्यना नतिन भावनाए जाण। तस्वनात दुनियावा गति गिवाज जाण धार्मिक विद्वाम मर गाण एन ह। या या कतिन कि इन मरका आहार उत्साहनता पत्ति पर जोर एमम पण हानवाया ममानता अय रचना पर एता =। ममानमें मरम उण जोर समाजका ध्यानवाया गतिन गाधिर बटाका है। मनुष्यन जावनव अय मर मना या पहटुआका रचना मनुष्यव अय सब विचार जोर यरगार धम जोर नातिकी भावनाए भा समय समय पर काम करतयाण वाधिक बराम उतम हानवाया अय रचनाए अनुमार निमाण हुना ह या गण जाना ह। जन्तुशकी प्रनियाए पर हा समाजक जावनवी मारा इमारा गण हुना है। यह मर का मावमा पुरान इतिहास आक उलाहरण एकर सिद्ध कर लिखाया ह एमलिए इम वात्का गिगारिया मगरियादिम * ना कहा जाता है। हम एमक गिग इतिहास फतिन नौतिकवाए गणना प्रयाग करग। इम वादक अनुमार वाट मानम य पहना चाहता है कि पूजायाया अय रचाा जिम नक्तिनाए पर यण, एर = जोर जिममें मग्गतिन यक्तिगत अधिकारका मम नाति वानून समाजक राति रिवाज जोर मनुष्यन वतमान स्वभावन स्वभार निजा = उम निर्याता हाण जोर उमरा गण ममान पूजा पर ममानता स्थाभिव स्थाभित करता गा। यहा पूजा पर समाजका स्वाभिव गण ध्यानमें रखने चाहिये। वराणि मनुष्यका नक्तिन यथाभरा राजा — एम कथन कितारों रहना ममान उताता मात्र मामान जाति पर ना व्यक्तिगत अधिकार है उम मिथानका यन धान नया ह। एम तरण व्यक्तिगत न्याभिवग गिवाका गायण नया हा गता। गारण ता पूजाक नक्तिन अधिकारत उपासनर माधनार नक्ति गत अधिकारा हाता है। धाडमें यण कण या मरना = कि गिग चाता कमार का ता मरना ह उम पर आरका व्यक्तिगत स्वाभिव नया हाता चाहिये। परमना उपाया जाण एर करें ता वाट एन नया। नक्तिनाता जाण फिराये पर = अध्यात् अय वाड एतन विद्य रिता एतन जाय करें

राजनीति डिर्गमिनिदम गिगारिया मगरियादिम इतिहासक मगेरियादिम — इन मर गणाता एम या अय है।

और चणकी अथ रचना उन्नतमित्र हा जाती ह । फिर वहा गरामा जीर वगारा वर पमात पर पता है । वहाय रसाहा लाग अपन देगमें यत्रो घाग बड करत ह आर पुगन यत्राद्यागावाते दगामे हा लगात ह । पुरान दगावा ती एव दूसरेके साथ हा चण हा करती ह । इस सारा हाडके कारण उद्याग वधाम समय समय पर उद्यत्र-भुयल और तजी मदी आती रहता ह क्वाकि मात्का प्रति जीर मागकी तुलाम सतुलन कमी रहता हा नग । जोर कम भा नयत्र परिणाम यह हाता है कि वानारा पर अधि वार करनका व्यापारिक प्रतिस्पर्धाक कारण वार वार युद्ध हात ह । ज्या ज्या उद्याग बे द्रत होत गत ह त्या त्यो उनकी रक्षा और फलावके लिए राज्यमत्ताका भा र्त्न वनना पता ह । ज्यान्तर बड उद्याग अमुक स्थाना पर ही ज्यादा मुविधाके साथ चणाय ना सकते ह इसलिए मज दूर भा उहा स्थानामें बेद्रित हाते ह और अपन लिए सुविधाए पानके खातिर मगन्ति हात ह । सत्पम अमुक दशाम होनवाला अधिब उत्पादन कम उत्पादनका विनाक रिण बाजार खोजनेकी प्रतिस्पर्धा उत्पादनकी तुलनाम सय वाताको देखत हुए गोगाकी खरीद शक्तिमें हानवाला कमी अर्थात् प्रति जीर मागका विषमता उसके कारण बाजारमें जानेवाला लम्बी अर्थावका मग मजदूर वगमें वती जानवाती गरीबी जीर वकारा उस दूर करनक लिए मजदूराका सगन्ति होना और हडताका आदिव द्वारा मात्काक साथ नगन्ता अपन दगरे मजदूराका काम इनके खातिर दूसरे दगा पर आर्थिक आश्रमग करना जर इस सारी आर्थिक प्रतिस्पर्धासि पदा हातवा मिश्र-वापा महायुद्ध — य सत्र वनमान पूजावाती अथ रचनाकी विमगनताए ह । य विमगनताए ननुप्य जातिका प्रगतिका मला घाट रही ह । जीर इगालिए मानव जाति कम विमगनताआका जम दनवात्रा पूजीवादी अथ रचनासा नाग निय बिग नहा र गा । य विमगनताए ही पूजीवादी अथ रचनासा नाग करता ह । वरना कम विचारसरणीका काल मानस आधिक नियनिया (इवानामिक निर्गमिन्म) नाम देता है । इसका अथ यह है कि अमर मपका उगान प्रथा अमुक प्रशारकी अथ रचनाका निमाण करता है । कम अथ रचनामें हा कम रचनाको नष्ट करनवाके आर्थिक वर उगान नाग है और पुराना अथ रचना नया नय उगान नए आर्थिक वरके सपथम पुराना अथ रचनासा नाग हाता ह और उगमें ग नइ अथ रचना नग हाता है जीर मानव जाति विमगन कममें एव कम जाग वती है । कम नइ अथ रचनाक फिर जानन वा इमकी भा यही गग हाता है ।

और वहाका अर्थ रचना छिन्नभिन्न हो जाती है। फिर वहा करावी और वकारी बड़ पमा पं पंता है। वहा उसाहा गोग अपन देगमें यशो द्याग खर करत ह आर पुरान यनाद्यागावाल दशमि हा गगते ह। पुरान दगागा ता एक दूसरेके साथ हा चला ग करती ह। इस सारी हाडके कारण उद्याग धधाम समय समय पर न्यल पुथल जीर तजी मदी आती रहता ह वनाकि माग्का पूर्ति जीर मागकी तुलाम सतुल कभी रहता हा नहा। जीर वमस भी नयकर परिणाम यह होता ह कि बानारा पर अधिकार करनका प्राधारि प्रतिस्पर्धाक कारण वार वार युद्ध होत ह। ज्या ज्या उद्याग वी त्त हात गान ह त्यो त्या उनकी रक्षा और फलावके लिए राज्यमत्ताका भा विति बनना पता ह। ज्यागतर बने उद्याग अमुक स्थाना पर ही ज्यादा सुविधाके साथ चगाय जा सकने ह इसलिए मज दूर भा उहा स्थानामें भेद्रिन हाने ह जीर अपन लिए सुविधाए पानक खातिर सगठिन हाने ह। सभपम जमुक दगाम हानवाला अधिक उत्पादन वस उत्पादनकी विधाके लिए बाजार सोजनकी प्रतिस्पर्धा, उत्पादनकी तुलनामें मय बाताको भेधते हए गगागा वरीद शक्तिमें होनवाग वमी अयान पूर्ति जीर मागकी विपमता उसके कारण बाजारमें जानवाला लम्बी अत्रियाका मग मजदूर वगमें बन्ता जानवागे करावा जीर वकारी उस दूर करनके लिए मजदूराका सगठिन होना और हडताग आदिक द्वारा माग्कार साथ चगगा अपन दगक मजदूराका काम देनेके खातिर दूसरे दगा पर अधिक आक्रमण करना जीर इस सारा आर्थिक प्रतिस्पर्धाके पग हानवागे वि वमपो महायुद्ध — य सब वतमान पूजावादी अर्थ रचनाका विमगननाए ह। य विमगननाए मनप्य जातिकी प्रगतिका गग घाट रही ह। और इनालिए मानव जाति वन विमगननाका जम दनवाला पूजीवादी अर्थ रचनाका नाग निय गिग नहा रगी। य विमगननाए ही पूजीवादी अर्थ रचनाका नाग करता ह। अपना इस विचारसरणीका काठ मानव आर्थिक नियन्त्रिता (व्यानामिक निर्गमिज्म) नाम दगा है। सवा अर्थ य है नि अमर समयकी उगागन प्रग अमुक प्रवारकी अर्थ रचनाका निमाण करता है। वन अर्थ रचनामें हा वन रचनाको नष्ट करनवागे जागिन वर उगाग गान ह जीर पुराना अर्थ रचना नया नय उपाय हए आर्थिक वगके समयका पुराना अर्थ रचनाका नाग हाना ह और उममें म नई अर्थ रचना उगाग गाना है जीर मानव जाति विनामक प्रममें एक वम जाग बन्ता ह। वन न अर्थ रचनाके लिए हानन वाग वमकी भा यही गगा हाना है।

८ हम टुलियात्र निगमना त्रिच कर ता पना चरगा कि मतवात्रमें एम अनेक मघर इग = एम प्रवत मघपन मानव जातिका जग यथाया ० और नविच्यम न। एम मघयाम न। मानव जाति प्रगति करगा। समाजका आरित प्रानिद रिग यह क्रम नियत हुगा है एमलिए एम नियतिवात्रना नाम लिया गया ह। एम मार एमम मनुष्यना नतिर भावनाए जात्र तत्त्वज्ञान दुनियावा गति रिवात्र जात्र धार्मिक विश्वास मत्र गाण एतन ह। या या कटिब रि इन मत्रना जात्रार एवात्रनका पन्ति पर और एमम पना हानवात्रा नमानना तय रचना पर एता =। समाजमें मत्रा एना और समाजना चरानवात्रा गतिर जर्बिस प्रगता =। मनुष्यन चावनक अय मत्र क्षता या पहटुआना रचना मनुष्यन अय मत्र रिवात्र और व्यवहार धम और नातिकी भावनाए भा समय ममय पर काम बननाए आरिसन धरामे उल्लघ्न हानवात्रा जय रचनाए अनुमार निमाण हाता = या गना जाती ह। अयनधकी रनियाए पर हा समाजन चावनक मारा दमारा खडा हाता है। य ए मत्र वात्र मानमा पुरान इतिगम। आत्र उताहरण एत्र सिद्ध कर लियाया = एमलिए एम वात्रका रिवात्रिकन मन्तरिखितरम * ना एता जाता है। एम एमर रिग इतिगम पन्ति भौतिकवात्रा' गल्का प्रयाग करग। एम वात्रक अनमार रात्र मानम य एहना चाहता है कि पूजावात्रा जय रचना तिम 'मन्तिवात्रा' पर एना दुर ह और जिममें सम्पत्तिर व्यक्तिगत अरिवात्रका एम नाति कानून समाजन गति रिवात्र और मनुष्यन वनमान स्वभावन स्वाकार रिवा = उम निगागा हागा और उमना जाह ममन्त पूजा पर समाजना स्वाभिव स्वागिा बना एना। यना पूजा पर समाजना स्वाभिवर गन्त ध्यानम रचन चात्रिय। कर्मा मनुष्यना व्यक्तिगत एपयोगना चात्रा — जो कपए किात्र रहना मरान उसना साज मामान आरि पर जा व्यक्तिगत अरिवात्र है उम निगागा य एतन एना है। एम तरगत व्यक्तिगत स्वाभिवरा निगागा गाराग बना हा मन्त। गावण ता पूजाए अरिवात्रन अरिवात्रन एवात्रन गाधना' व्यक्ति गत अरिवात्रना एता है। एममें य ए बना ज एता = रि रिग चावन कगाद का जा एहता = उम पर जावना व्यक्तिगत स्वाभिवर बना एता चात्रिय। मरानना उपयाग गात्र य ए कर्मे ता कर्मा एव नगा। अरिग त्यागा आत्र रिगय पर = अवात्र मय कर्मा एतन रिग रिगा एम आय कर्मे

दशासाधित रिवात्रिकन रिवात्रिकन मन्तरिखितरम चायगतिरम मन्तरिखितरम — इन मत्र गन्तना गत य जय है।

और वहाकी अथ रचना छिन्नभिन्न हो जाती है। फिर वहा गरीबी और
 दरारा बढ पमान पर फलता है। वहाय उत्साहा लाग अपन देशमें यत्रो
 द्याय करत ह आर पुगन यत्राद्यामावाते दगमि होड गगत ह। पुराने
 दगाका ता एक दूसरेके साथ हात चला हा करती ह। इस सारी हाडा
 कारण उद्याय घघाम समय समय पर उथरपुथल जीर तजी मदी आती
 रत्ना - दगाकि मात्का पूर्ति जीर मागकी तुलामें सतुल कभी रहता हा
 नग। जीर वसन भा भयकर परिणाम यह हाता ह कि बाचारा पर अवि
 वार करनका व्यापारिक प्रतिस्पर्धाक कारण बार बार युद्ध हात ह।
 ज्या ज्या उद्याय देतिन हात गत ह त्या त्या उनकी रक्षा और फलावके
 लिए रायमत्ताका भा र्तिन धनता पत्ता ह। ज्यागतर बड उद्याय अमुक
 स्थाना पर ही ज्यादा सुविधाके साथ चगाय जा सकने ह इसलिये मज
 दूर भा उही स्थानामें केद्रित हाने ह जीर जनन लिए सुविधाए पानक
 खातिर मगटिन हाने ह। स अपम अमुक दगाम होनवाला अधिक उत्पादन
 वस उत्पादनकी प्रिभाक लिए बाजार सोजनकी प्रतिस्पर्धा, उत्पादनकी
 तुटनाम मव प्राताको देखत हुए लगाको चराद गकिमें हानवाला कभी
 अमान पूर्ति और मागकी विपमता वसके कारण बाजारमें जानवाला लम्बी
 अवधिमाकी मग मजदूर वगमें वगती जानवालो गरावी जीर बकारा उन
 दूर करनके लिए मजदूराका मगटिन हाना और हडताका आदिक द्वारा
 मालिकाक साथ मगत्ता अपन दगर मजदूराका काम देनके खातिर दूसरे
 दगा पर आर्थिक आक्रमण करना जीर इस सारा आर्थिक प्रतिस्पर्धामे पदा
 हानवाले विचारणी महायुद्ध - य सय वनमान पूजावादी अथ रचनाका
 विमगननाए ह। य विमगननाए मनुष्य जातिकी प्रगतिका मग घाट रही
 ह। और त्मालिए मानव जाति वन विमगननाजाका जम देनवाला पूजावादी
 अथ रचनाका नाग निय विग नहा रभी। य विमगननाए ही पूजावादी
 अथ रचनाका नाग करती ह। अपना इस विचारसरणाका का नाम
 आर्थिक निपतिवा (चानामिक निर्मिनिश्म) नाम देता है। इसका अथ
 य है कि अमुर समयका उद्यायन प्रया अमुक प्रकारकी अथ रचनाका निमाण
 करता है। वम अथ रचनामें या वम रचनाका नाट करनवाले आर्थिक व
 उद्यम गत है और पुराना अथ रचना तथा नय उद्यम वए आर्थिक वगक
 मध्यम पुराना अथ रचनाका नाग हाता ह और उनमें म नइ अथ रचना
 रत्ता हाता है जीर मानव जाति विमगनन क्रममें एक वक्रम जाग वत्ता है।
 वन नय अथ रचनाक फिर हात बा इमका भी मग रत्ता हाता है।

तो वह पूजी हो जाती है और उस पर आपका व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं हो सकता।

९ उदासवा सन्तोंके बीचमें जब मावस यह सब लिखता था और अपन विचारोंको अमलमें लानके लिए प्रचार भी करता था तब उसे एसा लगता था कि आर्थिक नियतिवादके अनुसार मजदूरोंका विद्रोह विरुद्ध समीप है। उस यह भी लगता था कि मजदूरोंका विद्रोह उद्योग धंधामें आगे बढ़ हुए उन देशोंमें पहले होगा जहां पूजोवादका अधिकसे अधिक विकास हुआ है और जहां मजदूर अधिक संगठित हो गये हैं। इंग्लण्डके कारखानों और खानोंमें उस समय मजदूरों और उनके स्त्री-बच्चाकी एसी स्थिति हो रही थी जिसे देखकर कपकपी पदा हो जाय। उसन इनकी दुःशाका सचाट बणन किया है। उसकी मायताके अनुसार तो इंग्लण्डमें शान्ति जरूरी होनी चाहिय थी। किन्तु इंग्लण्डने अपने मास्के लिए अपन उपनिवेशोंके और हिन्दुस्तान जस दूसरे अधिकारमें लिय हुए देशोंके बाजार बूड निकाले और वहां चलायी हुई व्यापारिक लूटमें से उसने अपन यहाके मजदूरोंको भी कुछ टुकड़ डालने शुरू किये। इस तरह उसन मजदूरोंकी हालत अच्छी करके उन्हें सतुष्ट कर दिया और शान्तिकी परिस्थितिया दूर कर दी या उसे आगे ठल दिया। और इसमें आर्थिक परिस्थितियाकी अपेक्षा — क्याकि आर्थिक परिस्थिति तो उसके जमी अर्थ अनक देशोंमें खराब थी — राजनीतिक परिस्थिति अधिक अनुकूल होनेके कारण तथा इसको समय नेतत्व मित्र जानके कारण वहां सन १९१७ में शान्ति हुई। मनुष्य भूतकालकी बातोंका जितनी सावधानीसे और निश्चितताके साथ विचारण कर सकता है उतनी सावधानी और निश्चितताके साथ भविष्यकी घटनाओंकी सूचना नहीं दे सकता। इसलिए आर्थिक नियतिवादके प्रत्येक शब्दको यदि हम सही समझें तो घांटा खा जानका डर है। इसका सिवा युरोपके इतिहासको पढ़कर काल मावसन जो अनुमान निकाले ह वे हिन्दुस्तानके और एशियाके दूसरे देशोंके इतिहासस भी निकलन ही चाहिये अथवा निश्चित रूपसे निकल सकने ह या नहीं यह भी एक बड़ा प्रश्न है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि हमारे देशमें गुलामीका रिवाज बिल्कुल नहीं था परन्तु युरोपका तरह व्यापक तो वह हरगिज न था। यूनान और रोममें जम गुलामाने ही अर्थशास्त्रका सब काम कराया जाता था वसे हमारे देशमें बिल्कुल नहीं होता था। युरोपकी-मा जागीरदारगाही या सामन्तगाही हमारे देशमें थी और आज भी है फिर भी जागीरदारोंके सामने फिर उचा कर मचनवाली और अपन स्वयं और स्वामित्वको रक्षा कर

सकनेवाली ग्राम-पंचायतें जितनी यापक और बलवान हमारे यहा था उतनी यूरोपमें नही थी । इसक सिवा यूरोपक सामाजिक आंदान अथवा जा प्रधानता दी है और अथकी जसी पूजा का है वसा हमारे देगक सामाजिक आन्दाने कभी नहा की । इन सब कारणसे अगर हम यह कहें कि यूरोपमें जिस ढंगसे मजदूरकी मुक्तिका आन्दोलन हुआ है और हा रहा है उमा ढंगसे हमारे यहा भी होना चाहिय तो मानना पडगा कि हमन अपना इतिहास अच्छी तरह नहा पडा है ।

धन विग्रह

१० का- माक्सके आर्थिक तत्त्वनामका एन दूसरा धन सिद्धांत धन विग्रहका है । उसका यह कहना है कि इतिहासकी जाच करनसे मालूम हाता है कि अलग अलग समयमें अर्थोत्पादन और विनिमयकी जो विभिन्न प्रथाए उत्पन्न हुई ह उन प्रथाआके आधार पर ही उम उस समयका राज नातिक धार्मिक आदि प्रथाआकी रचना हुई है । मनुष्यकी सारा प्रवृत्तियाका स्पष्टीकरण उसने तत्कालीन अर्थोपादनकी पद्धतियामें खोजा है जा उन प्रवृत्तियाका प्रेरक कारण रहा ह । एस दृष्टिसे सारी एतिहासिक घटनाआकी जाच करके माक्सने यह सार निवाला है कि मनुष्य-जातिका इतिहास समाजमें पदा हुए वर्गोंके परस्पर विग्रहक इतिहासके सिवा दूसरा कुछ नही है । गोपक और गणित सत्ताधारी और पण्डित इन दोना वर्गोंके बीच सग ही विग्रह चलता रहा है । मालिक और गुलाम जमींदार और किसान व्यापारी और कारीगर इन वर्गोंके बीचक विग्रहन मानव जातिका आर्थिक प्रगति और विकासमें हाथ बटाया है । इम समय यह विग्रह पूजीपति और मजदूरक बीच चल रहा है । पूजीपतिके पास उत्पादनक सार माधन ह और रायमसता भी उमाके हाथमें है अथवा राज्यतन्त्रमें उमाकी चलना है । मजदूरक पाम उसके श्रमके सिवा और कुछ नहा है । वह अपना श्रम पूजीपतिको बेच तभी उगवा निर्वाह हो सक्ता है । क्याकि जिम पूजी अथवा उत्पादनक माधना पर वह श्रम कर सक्ता है उन सबन वट बचिन हा गया है । इमके सिवा जम जम नई नई यात्रिक और बानािक खार्जे हाता जाना ह धन धन उत्पादनक लिए मनुष्यक श्रमकी जरूरत कम होना जाना है । जा काम पहल मानवकी शक्तिम हाता था वह अब भौतिक शक्तिम हाता है । इमलिए मनुष्यका ता यत्र पर यह दगनका हा लडा रहना हाता है कि यत्र ठीकम चक्ता है या नही । इमलिए औरता और बच्चाम भी मजदूरके रूपमें काम लिया जा सक्ता है । इमक सिवा नई नई यात्रिके

कारण हमें उद्यागोकी अपेक्षा यह उद्यागामें मनुष्यका पुण्यताका कम जल्दतर हाना है। इस काम जिनमें कुण्ड मजदूरकी जरूरत पड़ती है त्रिंदादिन घटन जात हैं। क्योंकि यास हा वह कुण्डता प्राप्त हा जाता है। इस तरह मनुष्यकी कुण्डता और मनुष्यकी गति दानाग जरूरत लगातार कम हाता जाता है इसलिए उत्पादनक साधनाम बचित हुआ वस्तु वस्तु मजदूर वग वकार हाता जाता है। इस वकारास पण हानवानी करावाका नतीना यह हाता है कि पूजीपति जितना उत्पादन करता है उतना खरादनकी गति समाजम नहा हाता। दुनियाकी सारी जनसंख्याका किचार करें तो उसका उन्नत वस्तु भाग जाज साधनहीन प्रकार और कमाल दना हुआ है। इस भाग परिस्थितिका कारण वह छाटासा गोपक वग है। परन्तु जब यह गोपण वस्तु तिन नहा चक्र सत्ता क्योंकि गापित काम जब चमनक लिए चक्र हा याका नहा रहा है। इसलिए इस गोपक वाका नाम अनिवाय है यह इतिहासक प्रथम नियत हा चुका है। परन्तु पूजीपति गापणका उन्नत अपन भाग नहा होगा। मजदूर वगकी पूजीपति वगसे खिन्नाफ बहुत तीव्र वग विप्रस करके उसका जन्म नाग करना टागा। उन्नत नियतिको नजदीक जानक लिए मजदूर वगका इस उन्नत तम निमित्त बनना हागा। पूजीपति वगसे मित जानके बाद वगभक्त विस्तृत नहा रहेगा और सब प्रकारके गोपण और उत्पादनका अन्त हा पायगा। मारा जननाका एक पाय और मारा मक्तिके लिए नया उन्नत मानव जातिके लिए नियत हा चका है। मजदूर जितना उन्नत और मगठिन हाग उतने हा जाता वे अन्त यह इतिहास नियत बनव्य पूरा कर सकेंगे।

भी मागने ह और लाग यह माच जिना कि हमम हमारा जित है या नहा हमार देण पूजोपतिवाका ज्ञान ठीक ह या नहा राष्ट्रक नाम पर अनन दंगे पूजोपतिवाको दूसरे तरह पूजोपतिवाक विरुद्ध ज्ञानम मन्द भी करत ह। काज माकम रहता न कि यर सय वाचिवात वात ह। क्याकि जिना भा राष्ट्रमें वहाक मन्दूगरा क्या हागा न / राष्ट्रजा धन-मपतिमें — फिर वह बुद्धता हा या मनुष्यका महनतस पदा का हुर न — मा दूराका वाइ हिम्मा नय जाता। एक ज्ञान छात्र वग नया उपनाग करता ह और जविर मपति पर रहन लिए उनका उपया रगता है तत्र भी वह मजदूरका ता गोवण न करता है। राष्ट्रवा राष्ट्रमत्तान भी मज दूरका को हिम्मा नहा हाता। मजदूरका मताधिकार — वाच्य अधिकार — जल्द मिले होना न परलु सामान्य दावपेन बुज एस हात न कि अपने मताधिकारके जोरम राजतन्त्र द्वारा व अपना का उर नग ता नहा कर मजदूर जे कि पूजोपति-वग राजातिर पुष्पाका भा अपना उर्गिया पर नया रकता है। राष्ट्रम जा अरु जरा धम-मन्त्राय चला ह र ना पूजाति और सत्ताधारा वग हा जाबू रहत न। य धमाचार्य यर का कर कि धावान गम ता मुन भागा ह यर नर पूजात्मक गरभाता पर ह और मजदूर गगाका यि टुगा और वगा ज्ञानम रगता पडना है तो यर उनर पूजकमर वुर वमाका परिणाम है मजदूरका मिवात ह कि व धनिवामे मिलुन स्या न गय और अपना विनिम ताप मान कर ल्ट रन। समाजम भी धनवाका प्रविष्ट हाता है। अठ ममान जेठ सस्त माप पाती हस मानरा जग अज गि ता तथा डास्टरा गमी क्याग सपरा मवाण राष्ट्रमें धनिकाए लिए ही जाता ह और मजदूर न ससामें ता जिना हया रागनापी गती गारामें रगता जिभर वाग्गानम मन्त्र मेहनत रगता गगवना टुगानामें ग। हास्टरामें औ हारु रराव नर विश्राम गगा घरवाक करता सारगाराए पजमें पगा टुगता जीर जवन सत्रा-वचामि भा मजदूरा कराता हा जिना हाता । राष्ट्रवा धन दोन माहिय-मन्त्रर पच्छता जिना जिनाना ना गम मजदूरका, नया मिन्ता। फिर भा राष्ट्रका मपतिर ज्ञानम क्या जिम्मा न हा न ह और पूजातिवा गग अपन म्हाक जीर गमन लिए दूर राष्ट्रके माज गी हुर उद्योगान भा शत्रुवा तागाई गामा पामचार्य बनकर सत्ताधर लिए भी न हा जान है। यर जिनि गलन वाच्य नाम मन्दूरामे क्याता है कि 'कुम्हार लिए राष्ट्र उरग पाद पात है ही गय। राष्ट्रका

कारण हस्त उद्योगाकी अपेक्षा या उद्योगमें मनुष्यका कुशलताकी कम जरूरत होता है। एक काम जिनमें कुशल मजदूरोंकी जरूरत पड़ती है दिनादिन घटत जात है। क्योंकि यास हा वह कुशलता प्राप्त हो जाता है। इस तरह मनुष्यका कुशलता और मनुष्यकी गतिमानता जरूरत आतातार कम होता जाती है इसलिए उत्पादनके साधनमें बचत हुआ बहुत बड़ा मजदूर बग प्रकार होता जाता है। इस प्रकारके पत्र हानवारी करायाका नयाका यह होता है कि पूजीपति नितना उत्पादन करता है उतना खरीदनेकी गरिमा समाजमें नही होता। दुनियाकी मारा जनमर्यादा विचार कर तो उसका उन्नत का भाग आज साधनहीन प्रकार और कमाल का हुआ है। इस मांग परिस्थितिका कारण वह छाटासा गोपन कम है। परन्तु अब यह गोपण बहुत दिन नही चल सकता क्योंकि गणित वगम अब चूमनक लिए बन हो याका नया रना है। इसलिए इस प्रकार काका नाग अनिवाय है यह स्थितिपर क्रम नियत हो चका है। परन्तु पूजीवादी गणणका उन्नत अपन आप नही होगा। मजदूर वगका पूजीपति वगक खिलाफ उन्नत तीव्र बग विद्रोह करके उसका जन्म नाग करना होगा। इन नियतिका नजदार जानक लिए मजदूर वगका उन्नत तक निमित्त बनना होगा। पूजीपति वगक निट जानके बाद वगभट्ट विद्रोह ही रहेगा और सभ प्रकारके गणण और उद्योगनरा अत हो पायगा। मारा जनताका एक साथ और स्थायी मक्किने लिए नया काम उठाना मानव जातिक लिए नियत हो चका है। मजदूर नितन गती जाग्रत और सगठित होना उतने हो जल्दी के अपनया यह इतिहास नियत बनय पूरा कर सकत।

११ जात तक सारे अब प्रवृत्ति एक एक देशका या एक एक राष्ट्रको एक एक घटक मानकर रहे है। अब आम्हारे सारे प्रश्नाना विचार राष्ट्रना मर्गात राष्ट्रना आय राष्ट्रना आगार तथा राष्ट्रना धार्मिक गणकी स्थिति किया जाता है। परन्तु प्रत्येक राष्ट्रका बहुत बड़ा जनसमुदाय तो बनायाका होता है। प्रत्येक राष्ट्रना गमनति वाय व्यापार नका आदि वगम एक उन्नत उन्नत माग लिए हो जाना है। राष्ट्रका व्यापार उद्योग वग और वहाकी गमनति बड़ा ता उमम फायदा ना उन्नत राष्ट्रमें उन्नतवाय धार्मिक विनारी और पना गणान हो जाता है। वगम और गराय मजदूर-वगका उन्नत बनन वगम या नया बराबर हो सम्भव होता है। अग उन्नत देशके पूजादि एक-दूसरेना स्थायी बनन है और उन्नत स्पर्धामें अपन अपन राष्ट्रना नाम जाग करके राष्ट्रना तमाम लोगोंकी गणनभूति और मन्त्र

भी मागने ह और लग वह माव िना कि इसम हमारा िन ह या नहा हमार देग पूजापतिपाना वाग ठोर ह या नहा राष्ट्रके नाम पर अन्न देगके पूजापतिपानाको दूसर देग पूजापतिपाना विरुद्ध अन्नम मन्त्र भी बरने ह। अन्न मावम अन्ना - कि यह सय वाशियान वाग । क्याकि िना भी राष्ट्रमें बरान मजदूराता क्या हागा ? राष्ट्रका धन-मपनिमें — फिर वह कुतरता हा या मनुष्यकी मन्तनम पदा की हुइ हा — मा दूराता काइ हिस्सा नय गता। एक अन्न उठा वग नरा उपभाग करता ह और अविन मपनि पग अन्नम िग उनका उपयोग करता है तब भी वह मजदूराता ता गोरण ग करता है। राष्ट्रका राज्यतान भा मज दूराता को हिस्सा नहा हागा। मजदूराता मताधिकार — वाटका अधिकार — जरूर मिग हाता है परन्तु राज्यतान दावपेच कुठ गस हात ह कि अपने मताधिकारके तारम राज्यतान द्वारा व अपना काइ उग ला नहा कर सजत जय कि पूजापति-उग राजतानिय पुगपाका भा अपना उगिया पर नचा नकता ह। राष्ट्रम ता अग जग धन-मपत्रान चला ह व ना पूजापति और सताधारा बगत हा आरूठ रहत ह। य धमाधाय य व कर कि धावात गग ता मुन भात ह व उनक पूषामर मत्वमारा फर ह और मजदूर गवाका यी टुगा जोर उगा अगम अना पडता ह ता यह उनके पूषामर बुर बमारा परिणाम है मजदूराता मिग्यात ह कि व धनिकामे विरुद्ध श्या न गय आर जना विनिम ताय मान कर पडे रह। समाजम भी धनवानका प्रशिष्टा हाता है। अठ मका अठ राम्न गाप पाती हस गारा गमह अज गिगा तथा डास्टग नपा ववाग मयका मयाण राष्ट्रमें धनिकार िग ही हाता ह और मजदूरग नारामें ता िना हस रोगनावी गग गाराम राना िनर वरराजमें गम्य भहनत राना गरावना टुरानाम गग हाटगमें और हय रगा र विभामें ता बरवाग करता गारागारा पजमें फगत टुगता और अन्न राना-मपनी भी मजदूरग वराता ग लिता हाता । राष्ट्रका धन शीव गाशिय-मन्वार म्बुठता गिगा िनाका भा गम मजदूराता नहा मिग्या। फिर भा राष्ट्रका सम्पतिय अतामें क्या िग्या व हा अ ह और पूजापतिपाना गग अरा स्वाय और गमर िए दूमर राष्ट्रके माग ही ह्य अगारामें भा गपव। गगात गाग धामवाग धनम अगव िग भी व हा गत है। व िगि हातक वग्य माका मजदूरामे बरता है कि 'मुगार िग राष्ट्र म. पा. चीन है ही गग। राष्ट्रकी

कारण ट्रस्ट उद्यागाकी अपेक्षा यह उद्यागामें मनुष्यका कुशलताकी कम जरूरत हाता है। एम काम जिनमें कुशल मजदूरकी जरूरत पडती है दिनादिन घटत जात ह। बवाकि यास हों वह कुशलता प्राप्त हो जाता है। इस तरह मनुष्यका कुशलता और मनुष्यकी गविन दानाकी जरूरत उद्यागार कम हाता जाती है इसलिए उत्पादनके साधनास बचिन हुआ बहुत कम मजदूर बग प्रकार हाता जाता है। इस बचारास पन्ना हानपानी गरावीका मतवाजा यह हाता है कि पूजीपति जिनना उत्पादन करना है उनना खराबकी गविन ममाजम नहा हाता। दुनियाकी सारी जनसख्याका विचार करें ता उत्तरा मुनू वडा भाग आज मानवहीन प्रकार और कगाउ या हुआ है। इस भाग परिस्थितिका कारण वह छाटना गोपक बग ह। परन्तु अब यह गोपण बन्त जिन नयी चल सकता बयोकि गापित काम अब चूसनके लिए मन ही यास नया रहा है। इसलिए इस गोपक बाका नाग अनिवाय ह यन् प्रतिगमन कम नियत हा चका है। परन्तु पनीवादी गोपणका शत अपन आप नहा होगा। मजदूर बगका पूजीपति बगके सिवाफ बन्त तीव्र बग विव्र करके उसका काम नाग करारा हागा। इस नियतिको नजदीक गानके लिए मजदूर बगका कम हने तक निमित्त बनना हागा। पूजीपति बगके निरुत्तानक याद बगभर विव्रुत रहा रहेगा और सत्र प्रकारके गोपण और उगीनका अत हो जायगा। सारा जनताका एक साथ जा रमायी मक्किने लिए नया काम उठाना मानव जातिके लिए नियत हा चुका है। मजदूर जितन जती जायत धार संगठित होय उतन हा जरती ये अगता यह प्रतिगम नियत बन्ध्य पूरा कर सकन।

११ आज तक सारी अथ प्रवृत्ति एक एक दगाका या एक एक गष्टकी एक एक घटक मानकर हद है। अध्यासत्रे सारे प्रश्नाका विचार राष्ट्रकी मर्यादा राष्ट्रकी आय राष्ट्रका व्यापार तथा राष्ट्रका आर्थिक शक्तिके दृष्टिसे किया जाता है। परन्तु प्रत्येक राष्ट्रका बहुत कम जनमनयाय ता बगालाका हाता है। प्रत्येक राष्ट्रका मर्यादा आय व्यापार तथा आदि बन्धक एक बहुत कम मात्रा में ही हो जात है। राष्ट्रका व्यापार उद्याग कम और बहाकी मर्यादा यह ता उमम फायदा ता उम राष्ट्रमें रहनवाय थाडग विनारी और धारा व्यापार का हाता है। बगाल और गराय मजदूर-बगका काम बहुत कम या नहर बराबर हा मन्त्रय हाता है। अग अग दगाके पदापति एक दूसरेम स्थिति गच्छ बन्त ह और कम स्वर्धामें अपन अपन राष्ट्रका नाम जाग करके राष्ट्रके नामास योगका महानुभूति और मन्द

भी मागने ह और लाग यह सोचे बिना कि इसमें हमारा हित है या नहीं हमारे देश पूजापतिवादी का ठेका है या नहीं राष्ट्रके नाम पर भयानक पूजापतियोंको दूसरे देश पूजापतियों विरुद्ध लाना मन्द भी करने ह। काँग्रेस कहता है कि यह सब वास्तविक बात है। क्याकि किसी भी राष्ट्रमें बहाने मादुराज क्या हाता है? राष्ट्रका धन-संपत्तिमें — फिर यह कुत्ता ठो या मनुष्यकी मेहनतस गदा की हुई है — मादुराज कोई हिस्सा नहीं होता। एक बहुत छोटा वग उभा उपभाग करता है और अधिकांश संपत्ति का रखने का उभा उपभाग करता है तब भी वह मजदूरका तो शोषण हा करता है। राष्ट्रकी सामयिकता भी मजदूरका कोई हिस्सा नहीं होता। मजदूरका मतार्थिकार — वाटका अधिकार — जरूर मिला होता है परंतु सामयिक दावपेंच कुछ एक हात है कि अपने मतार्थिकारके तारम राज्यतक द्वाग व अपना का उभा उपभाग नहीं कर सकते जब कि पूजापति-वग राजनीतिक पुरपाकी भा अपना उगाधिया पर नचा करता है। राष्ट्रम जा अग जग धन-मन्त्रालय का ह व ना पूजापति जीर सत्ताधार वग है यावू रहन ह। व धमाचाय यह कह कर कि धाका गेग ता मुन भागत ह व उनर पूजापति का उगाधिया फर ह और मजदूर लगाका यदि दुगा जीर उगाधिया में रना पना है तो यह उनर पूजापति वर वमीका परिणाम ह मादुराजो मियाव ह कि व धनिकारि विगुट रिया न रख आर अपना स्विकार उताप मान कर उठ रह। समाज भी धनवाका प्रतिष्ठा हाकी है। अउ नरान अउ राम गाव पाती ह्या माता गह री गि ता तथा डाकरा नमां वनाग सबका मवाए राष्ट्रम धनिकार का ही हाता ह आर मजदूरका समाज तो जिग हना रोगनीकी गदी गामें रना गिभर कागतम गम्भ मेहनत रना करावना दुगागमें गग हाट्याम आ हक दराक र विग्राम ता वरवा करता गगाराग वजमें फगत दुगा जीर एन रना-यगि भी मजदूरका करता व लिता हाता । राष्ट्रकी धन दोन मास्त्रि-गम्भर नदरना गिग गिगना भा गभ मजदूरका नग मिया। फिर भी राष्ट्रका मन्त्रिकार उपागमें बडा रिम्मा व हा रन है और पूजापति का गग अन स्वाय गार गभर लिए द्वाग राद्री मार ला हउ उगाधियां भा गपुवा तागो गगन धामकाग वागर उदाय लिए भी व हा तात है। व गिगि हातस एरण नाग मादुराजो वरता है कि 'दुगाग लिए राष्ट्र का रान रीर है ही र्हा। राष्ट्रकी

कारण हस्त उद्योगोंकी अपेक्षा या उद्योगोंमें मनुष्यकी कुशलताकी कम जरूरत हाता है। एम काम जिनमें कुशल मजदूरोंकी जरूरत पडती है दिनादिन घटत जाते हैं। क्याकि यास हा वह कुशलता प्राप्त हा जाता है। इस तरह मनुष्यकी कुशलता और मनुष्यकी शक्ति दानाया जरूरत लगातार कम हाता जाती है इसलिये उत्पादनके साधनोति वचित हुआ बहुत बडा मजदूर बग वकार हाता जाता है। इस कारणस पना हानवाली गरावाका ताजा या हाता है कि पूजीपति तिनता उत्पादन करना है उतना खगदनकी शक्ति नमाजम नहा हाता। दुनियाका सारी जनसंख्याका विचार कर तो उमका उत्पन्न बडा भाग आज साधनहान प्रकार और कमाल बना हुआ है। इस सारी परिस्थितिका कारण वह छाटासा शोषक बग है। परन्तु अब यह शोषण बन्द जिन नयी चक सफता क्याकि शायित बगम अब बसनक लिए मन हा बाका नहा रहा है। इसलिए एम शोषक बाका नाम अनिवाय है या अनिवार्य क्रम नियत हो चुका है। परन्तु पूजीवादी शापणका अत अपन आप नहा हागा। मजदूर बगको पूजापति बगके खिलाफ बन्द तीव्र बग विद्रोह करने उसका जन्म नाम करना टागा। एम नियतिकी मजदूर जनके लिए मजदूर बगको इस हा तर मिमित्त बनता होगा। पूजीपति बगके मित्र मानव बाद बगम विद्रुक्त गयी रहेगा और सत्र प्रकारके शापण और उत्पादनका अन्त हो गयगा। सारी जनताकी एक साथ जार श्पास मक्जिने लिए नया बन्म उतना मानव जातिके लिए नियत हा चुका है। मजदूर तितन जन्मी जाप्रत और मगठिन हाग उतने हा जल्पा ये जपता या अनिवार्य नियत बाय पूरा कर ससग।

११ आज तब सारी जय प्रवृत्ति एक एक देगका या एक एक राष्ट्रकी एक एक घटक मानसर हुन है। जयगाम्त्रो सार प्रनावा विचार राष्ट्रका मर्ति राष्ट्रकी जाय गण्डे व्यापार तथा राष्ट्रक आर्थिक शक्ती दष्टिस दिया जाता है। परन्तु प्रत्येक राष्ट्रका बहुत बडा जनसंख्या ता बगालाका हाता है। प्रत्येक राष्ट्रक मर्ति बाय व्यापार नया आति बहावे एक उत्पन्न हात मक लिए न हाता है। राष्ट्रका व्यापार उद्योग बन्द और बगका मर्ति उड ता उबग फायग ता उम राष्ट्रमें रहनशाथ थात्त त्रिभारा और घना गगाना न हाता है। बगाल और ताराय मजदूर-बगका सम बन्द कम या नहावे बराबर ही मन्वय जाता है। जय जय देगावे पूजापति एक-दूसरम स्पर्धा जन्म करत है और एम स्पर्धामें अपन अपन राष्ट्रका नाम जाग करत राष्ट्रक तमाम गगाका महानुभूति और मन्व

भी मागते ह जीर लाग तह साच िना कि इसम हमारा हित है या नही हमारे देगन पूजापतिपात्री वात ठोर ह वा नहा राष्ट्रवे नाम पर अपन देगने पूजापतिपात्री दूसरे देगन पूजापतिपात्री विरुद्ध उन्मत्त मन्द भी करेते ह। एत मास कहता है कि य एत वाचियात वात ह। क्याकि किसी भी राष्ट्रम कहत मादुराता क्या हाता है? राष्ट्रवा धन-संपत्तिमें — फिर वह कुतरता हा वा मनुष्यनी महनतस पदा की हु, हा — मादुराता वाई हिस्सा नग होना। एक बहुत छाटा वग उमता उपभाग करता है जीर अधिन सपत्ति एत उमता तिए उमता उपयोग करता है तय भी वह मजदुराता ता गोपण ग करता है। राष्ट्रकी सयमतताम भा मजदुराता को हिस्सा नहा हाता। मजदुराता मताधिकार — वाच्य अधिकार — जरूर मिला होता है परतु सयमतताम दावपेच कुछ कम हात ह कि अपन मताधिकारके चारम राज्यतत्रक द्वारा व अपना का रडा गभ नग कर सकत जब कि पूजापति-वग राजतानिक पुग्ताका भा अपना उाचिया पर नचा उमता ह। राष्ट्रम जो अग जग धम-मजदुरात घात ह ए भा पूजापति आर सतापारा वगन हा जनबूल रहत ह। य घमाचाय दए वह कर कि घावात गग ता गुय भागत ह व उनक पूवजमन गतनाता फल ह जीर मजदुर गगताका घि दुता गीर वगा उगामें रहना पडता है तो य उमता पूवजमन दुर कर्मोता परिणाम है मादुराता मिलात ह कि व धनियामे विरुद्ध श्या न रय आर अपना स्थितिम उताप मान कर पड रहे। नमाताम भी घावातकी प्रतिष्ठा हाता है। अच्छ मान अछ राम्ता गाप पाता हस गात्री गह अछ गिया तथा डासग तसों वगात मयवा मवाण राष्ट्रमें धनियार गिण हा हाता ह जार मजदुरा नगातमें ता गिता हस रागनीवी गती गगामें रतना गिभर वाग्नातम मन्त महनत उरता गगवरी पुगतामें गग हागामें आर हव रता त वियामें गग वरवा करता गजगारात पजमें कमता उरता जीर एन स्त्री-वचनी भी मजदुरा उरता हा गिता हाता ह। राष्ट्रवा धन दोन गार्हिय-गम्भार रडछता गिभा गिमाता भा गम मजदुरात नग मिलाता। फिर भा राष्ट्रता गम्भार उतापान बग गिता ए हा एन ह जीर पूजापतिपात्री गग जन स्वाध जीर गभर तिए दूरर राष्ट्रमे मा ल हुद लडायातों भा गवरी ताता गगता घामगाय वनर रता गि गी ए हा तात है। य गिति हातस वाच्य नाम मादुरातमे कृता है कि 'गुगार गिण राष्ट्र उता वाइ पीत है हा तहा। राष्ट्रकी

वात तुम छोड़ लो। तुम्हारे राष्ट्रके हो या दूसरे राष्ट्रके तुम्हारे सच्चे गुरु तो पूजापति ही ह और तुम्हारे राष्ट्रके हा अथवा दूसरे राष्ट्रके हो तुम्हारे सच्चे भाई मजदूर ही ह। इसलिए दुनिया भरके मजदूरों तुम एक हो जाओ और पूजापतियाके विरुद्ध विद्रोह करके अपन पराकी बढिया ताड दा। दुनियामें तुम्हारे पाम इन बन्धियोंके सिवा और है ही क्या? तुम्हारे पाम खानका अगर बोझ चाज है तो य बढिया ही ह। *

* पूजापतिया और मजदूरोंके बीचके संबंधका यह पथक्करण या बणन सारे दुनियाके समस्त पूजापतिया और मजदूरोंका समग्र दृष्टिसे विचार करें ता सच्चा माना जा सकता है परन्तु प्रत्येक देशकी सच्ची परिस्थितियोंको देखते हुए इसकी सत्यता पर शका की जा सकती है। उदाहरणके लिए इंग्लैंडमें आज मजदूरोंका हात बसी नहीं है जसी ऊपर बणन की गई है। वहाँके पूजापति और राजनीतिक नेता दूरदेशी और समझनारास काम कर वहाँके मजदूरोंको सन्तुष्ट रखनेकी कोशिश करते निवार्द देते ह। साम्यवादी इस वस्तुस्थितिका यह स्पष्टीकरण करते ह कि इंग्लैंडके पूजापतियोंको इस तरहकी दूरदेशीभरी समझदारी या दूसरे शब्दोंमें कहें तो समझनारास साथ स्वायत्त साधनकी युक्ति पुमा सकती है क्योंकि गोपण करनेके लिए उनके पाम कई उपनिवेश पड ह। इसलिए इस बड़े गोपणमें से व अपन देशके मजदूरोंको हिस्सा दे सकते ह। इंग्लैंडके मजदूरोंको तो वहाँके पूजापतियोंके छान साथदार ही मानना चाहिये। य मजदूर राष्ट्र वाता हानक अथवा साम्राज्यवादी भा ह क्योंकि इंग्लैंडका साम्राज्य टिका रह तो ही उनके रहन-सहनका वतमान ऊचा स्तर टिका रह सकता है। व्यापार-उद्योगमें आगे बढ़ा हुआ प्रत्येक राष्ट्र आज साम्राज्य जमानकी बर्णना करता है और यदि वह साम्राज्य जमा नक तो उसकी लूटमें स अपने महाक मजदूरोंका भी शान्त-वन्त हिस्सा देना प्रयोग देना है। इसलिए तुम्हारे लिए राष्ट्र जसा बाझ चाज है ही नहा यह बात मजदूरोंको समझाना आरम्भ करनेका योग्य सौ वरम हाने आये तो भी अभा तक मजदूरोंमें स राष्ट्रीय भावना मिट नहीं सका। दूसरा दृष्टिस देखें ता राष्ट्रकी भावना हर मनुष्यके दिलमें गहरी जड़े जमाकर रहनेवाली एक बक्ति है। इसलिए इन मित्रोंके बचाव पड करनेका योग्य करना चाहिये। इसमें जा सकागत भरी है उन निकाल लिया जाय और राष्ट्रिय भावना आतर राष्ट्रीयता और विश्वव्युक्तका विरोधा भावना हा हा सकती है और अपन देशकी भूतना कामनाओंकी और गठत स्वार्थों आदिका राष्ट्रीय भावनाक

मजदूर-बलकी तानाशाही

१२ वतमान पूजीवांग समाज रचनाका रायका बहुत बडा सहारा है। जो इग्लण्ड और अमराका लाकतात्रिक ग्रासनवाल देग बह्लाते ह वहा भा गहरे जाकर दखें तो ग्रासनमें उद्योगपतिया और पूजीपतियाकी ही प्रत्यक्ष या परोक्ष सत्ता चलती है। पूजीपति और मजदूर-वगन वाच किसी छान या मामूनी प्रश्न पर गगडा हो जाय और उसम मजदूर-वगन कानूनका दृष्टिस सबा हो ता कानून जरूर मजदूरकी मदद करता ह। लेकिन अगर मजदूर और पूजीपतियाके बीच जीवन मरणका सघप छिड जाय तो हमम मन नहीं कि कानून व नीति सज तारुमें रखा रह जाती ह और राज्यसत्ता पूजा पतियाकी मदद पर अपनी सगानें और ममानगनं लखर खडा हा जाती है। राज्यतत्र पुकारा तो जाता है ओरगाहीके नामम परन्तु उसम उद्योगपति, लक्ष्मीपति मेनाननि और मत्तापति सत्रका मन्वदन रहता है और उनकी टोनी अपन वगके स्वार्थोंका ध्यान रखकर ही मारा राजराज चगाती है। इसीलिए मामम कहता है कि उद्योगके माधना पर यकिनगत स्वामित्वको स्वीकार करनेवागी अथ रचनाको मिटा कर मजदूरका पूजापतियान चगन्स निकलना हो ता पूजीपतियाके गिलाफ तत्र वग विग्रहका तयारी करनी होगी और बिगह करक मजदूर-वगका रायसत्ता पर अधिकार करना पडगा। रायसत्ताका हाथमें लना मजदूरकी श्रान्तिका पहना साटा है क्यानि श्रान्तिका काय ता रायसत्ता पर अधिकार करक वाग गृह हाता है। यह स्वाभाविक है कि मजदूरके इस विद्राहमें जमुग नेता हा भाग गेग। अन्तता उन्हें सार मजदूर-वगका महानुभूति और समथन मिलेगा। एगलिए रायसत्ता पहर तो उन नेताआने हायमें हा आयगा। व अगर पुरान गानत्रका कायम रखर चुनाव करने और विधानमभाग चगनक त्रकरमें पड जायग, तत्र ता पूजीपति-वग उनका श्रान्तिको भाग नहा बन्स दगा और उनक बिगहका सत्ता बना देगा। इगलिए श्रान्तिका टिकाय रखन उा आग बडान और श्रान्तिकारी मिडानान मुताबिक मारा समाज रचना बन्स बान्क गिग उन्हें गानत्रक जजालमें न पमतर और उगना स्वाग न रखर सार्थी ताना

नामम पापण दना चाहिय यह विचार दूर कर लिया जाय ता राष्ट्रीय भावनाएं अनर मनुष्याग हा गनन ह और मानव शान्ति विवातमें जात्र यह जो बहुत बग दरायट बनी हई है उगर बनाय अपन महायक बन सकती है।

वात तुम छोड़ दो। तुम्हारे राष्ट्रके हो या दूसरे राष्ट्रके तुम्हारे सच्चे गन्तु तो पूजीपति ही ह और तुम्हारे राष्ट्रके हो अथवा दूसरे राष्ट्रके हो तुम्हारे सच्चे भाई मजदूर ही ह। इसलिए दुनिया भरके मजदूरों तुम एक हो जाओ और पूजीपतियोंके विरुद्ध विद्रोह करके अपने पराकी बड़िया तोड़ दो। दुनियामें तुम्हारे पास इन बड़ियोंके सिवा और है ही क्या ? तुम्हारे पास खानको अगर कोई चीज है तो य बड़िया ही ह। *

पूजीपतिया और मजदूरोंके बीचके संबंधका यह पथक्करण या वणन सारी दुनियाके समस्त पूजीपतिया और मजदूरोंका समग्र दृष्टिसे विचार करें तो सच्चा माना जा सकता है परन्तु प्रत्येक देशकी सच्ची परिस्थितियोंका देखने हुए इसकी सत्यता पर शक की जा सकती है। उदाहरणके लिए इंग्लण्डमें आज मजदूरोंकी हालत बसी नहीं है जसी ऊपर वणन की गई है। वहाके पूजीपति और राजनीतिक नेता दूरदेशी और समझनारास काम लेकर वहाके मजदूरोंको सतुष्ट रखनकी कोशिश करते दिखाई देते ह। साम्यवादका इस वस्तुस्थितिका यह स्पष्टीकरण करते ह कि इंग्लण्डके पूजीपतियोंको इस तरहकी दूरदेशीभरी समझनारी या दूसरे गन्तव्यमें कहें तो समझनारास साथ स्वाय साधनकी यक्ति पुसा सकती है क्योंकि गोपण करनेके लिए उनके पास कई उपनिवास हैं। इसलिए इस बड़े गोपणमें से वे अपने दानके मजदूरोंको हिस्सा द सकते ह। इंग्लण्डके मजदूरोंको तो वहाके पूजीपतियोंके छाने साम्राज्य ही मानना चाहिये। य मजदूर राष्ट्रवादी हानके अथवा साम्राज्यवादी भी ह क्योंकि इंग्लण्डका साम्राज्य टिका रहे तो ही उनके रहन-सहनका वनमान ऊचा स्तर टिका रह सकता है। व्यापार उद्योगमें आगे बढ़ा हुआ प्रत्येक राष्ट्र आज साम्राज्य जमानकी कागिण करता है और यदि वह साम्राज्य जमा सके ता उसकी लूटमें से अपने महाके मजदूरोंका भी योग्य-वहुत हिस्सा देना प्रलोभन देना है। इसलिए तुम्हारे लिए राष्ट्र जसी कोई चीज है हा नहीं यह बात मजदूरोंको समझाना आरम्भ करनेको लगभग सौ बरस होन आय तो भी अभी तक मजदूरोंमें से राष्ट्रीय भावना मिट नहीं सकी। दूसरी दृष्टिसे देखें तो राष्ट्रकी भावना हर मनुष्यके हितमें गहरी जड़ें जमाकर रहनवाली एक वक्ति है। इसलिए इन मित्रानक बजाय गड्ड करनका कागिण करना चाहिये। इसमें जो मरगना भरा है उस निकाल लिया जाय और राष्ट्रीय भावना आन्तर राष्ट्रीयता और विश्व-भ्रातृत्वका विगना भावना हा हा सकती है और अपने राष्ट्रीय भूरा दाग कमजोरिया और गलत स्वार्थों आन्तिके राष्ट्रीय भावनाक

मजदूर-बल्की तानागाही

१२ वतमान पूजीवादा समाज रचनाया रायना बहुत बढा सहारा है। ता इग्लण्ड जीर अमरीका तकतात्रिक गायनवाले दगा कहलात ह वहा भा गहर जाकर देखें, ता गायनमें उद्योगपतिया जीर पूजीपतियाकी ही प्रत्यक्ष या परोक्ष सत्ता चलती है। पूजीपति और मजदूर बगव बीच किसी छोट या मामूली प्रश्न पर बगव हो जाय और उसमें मजदूर-बल्की कानूनकी दृष्टि सच्चा हो ता कानून जरूर मजदूरकी मन्त करता ह। लेकिन अगर मजदूर और पूजीपतियाके बीच जीवन मरणका सघप टिड जाय ता मम गव नही कि कानून व नीति मत्र ताकमें रखा रह जाती है और राज्यसत्ता पूजा पतियाकी मन्त पर अपनी सगलें जीर म्गानगन कर खडा हा जाता है। रायनत्र पुकारा ता जाता है तानागाहाके नाममे परन्तु उसमें उद्योगपति लक्ष्मीपति मनारति और सत्तापति सबका गठमधन रता है और उनका टांगी असन बगसे स्वायोंका ध्यान रखकर ही मारा राजराज चगती है। इगलिए मामम कहता है कि उत्पादनके गाधना पर अस्मिगत स्वामित्वको स्वीकार करनवागी अथ रचनाको मिया कर मजदूरका पूजापतियाय चगम निकलना हो ता पूजापतियाक गिलाफ तान बग विग्रहका तयारी करनी होगा और विद्राह करने मजदूर-बगको रायसत्ता पर अधिभार करना पन्गा। रायसत्ताको हाथमें रना मजदूरकी श्रान्तिका पहला सान है कयाकि श्रान्तिका काय ता रायसत्ता पर अधिभार करन वान गरू हाना है। यह स्वाभाविक है कि मजदूराने मस विद्राहमें अमुक नता हा भाग गेग। अल्पता उहें मार मजदूर-बगकी महानुभूति और समथन मिग्या। इगलिए रायसत्ता पहल ता इन नताअति ह्यमें हा आयगा। व अगर पुगन गानतप्रवा कायम रखकर चुताव करने और विधानमभाए चगना चक्रमें पड जायग तत्र ता पूजापति-बग उनका श्रान्तिका आग तहा बगन दगा और उनका विनेत्वा गफर बना दगा। इगलिए श्रान्तिका टिराय रखन उा आग बगन और श्रान्तिरारी मिद्वान्ताक मुताबिक मारा समाज रचना बन्त हागनक गिग उहें स्तोत्रप्रव जजात्रमें न पमकर और उमरा स्वाग न रचर साधी ताना

तामरा पापण दना श्रान्ति द व विचार दूर कर गिया जाय ता राष्ट्रीय भावनान अन्व सदुरायग हा सन ह और मानव श्रान्ति विभागमें आज यह जो बटुन बगे हरारट बना हुई है उमर बजाय अन्व सहायक बन गतनी है।

वात तुम छोड़ दो। तुम्हारे राष्ट्रके हा या दूसरे राष्ट्रके तुम्हारे सच्चे गुरु तो पूजीपति ही ह और तुम्हारे राष्ट्रके हा अथवा दूसरे राष्ट्रके हा तुम्हारे सच्चे भाई मजदूर ही ह। इसलिए दुनिया भरके मजदूरों तुम एक हो जाओ और पूजीपतियोंके विरुद्ध विद्रोह करके अपन पराकी बँडिया ताड़ दो। दुनियामें तुम्हारे पास इन बँडियोंके सिवा और है ही क्या? तुम्हारे पास खानेको अगर कोई चीज है तो य बँडिया ही ह। *

* पूजीपतियों और मजदूरोंके बीचके समझका यह पथकरण या वणन सारी दुनियामें समस्त पूजीपतियों और मजदूरोंका समग्र दृष्टिसे विचार करें तो सच्चा माना जा सकता है परन्तु प्रत्येक देशकी सच्ची परिस्थितियोंको देखते हुए इसकी सत्यता पर शक की जा सकती है। उदाहरणके लिए इंग्लण्डमें आज मजदूरोंकी हालत बसी नहीं है जसी ऊपर वणन की गई है। वहाँके पूजीपति और राजनीतिक नेता दूरदर्शी और समझदारोंस काम कर वहाँके मजदूरोंको सतुष्ट रखनकी कोशिश करते निराले दन ह। साम्यवादी इस बस्तुस्थितिका यह स्पष्टीकरण करते ह कि इंग्लण्डके पूजीपतियोंको इस तरहकी दूरदर्शीभरी समझारी या दूसरे देशमें रहें तो समझारीक साथ स्वाय साधनकी यक्ति पुसा सकती है क्योंकि गोपण करनेके लिए उनक पास कई उपनिवेश प ह। इसलिए इस बड़े गोपणमें म व अपने देशके मजदूरोंको हिस्ता द सकते ह। इंग्लण्डके मजदूरोंको तो वहाँके पूजीपतियोंके छोटे साधदार ही मानना चाहिये। य मजदूर राष्ट्रवादी होनेके अलावा साम्राज्यवादी भी ह क्योंकि इंग्लण्डका साम्राज्य टिका रहे तो हा उनके रहन-सहनका वतमान ऊचा स्तर टिका रह सकता है। पापार उद्योगमें आगे बढा हुआ प्रत्येक राष्ट्र आज साम्राज्य जमानकी कोशिश करता है और यदि वह साम्राज्य जमा सब तो उसकी लूटमें स अपने वहाँके मजदूरोंका भा थोड़ा-बहुत हिस्सा देनेका प्रलोभन देता है। इसलिए तुम्हारे लिए राष्ट्र जमा कोई चीज है ही नहीं यह बात मजदूरोंको समझाना आरम्भ करनेको लगभग सौ बरस होने आये तो भी अभी तक मजदूरोंमें स राष्ट्रीय भावना मिट नहीं सकी। दूसरी दृष्टिसे देखें ता राष्ट्रकी भावना हर मनुष्यक हितमें रहरी जहें जमाकर रहनवाली एक वक्ति है। इसलिए इन मिश्रणक बजाय एक करनकी कोशिश करना चाहिये। इसमें जो सजायना भरा है उसे निकाल लिया जाय और राष्ट्रीय भावना आन्तर राष्ट्रीयता और विश्वव्यापकी विशिष्टी भावना ही हा सकती है और अपन देशकी भूतों देशों कमजोरियों और गहन म्वाथों आदिको राष्ट्रीय भावनाक

मजदूर दलकी तानाशाही

१२ वतमान पूजीवादी समाज रचनाका राज्यका बहुत बडा सहारा है। जो इंग्लण्ड और अमरीका लोकतांत्रिक शासनवाले देश कहलाते हैं वहा भी गहरे जाकर देखें, ता शासनमें उद्योगपतिया और पूजापतियाकी ही प्रत्यक्ष या परोक्ष सत्ता चलती है। पूजीपति और मजदूर बगके बीच किराी छोट या मामूली प्रश्न पर चर्चा हो जाय और उसमें मजदूर पक्ष कानूनकी दृष्टिस सत्ता हा तो कानून जरूर मजदूरकी मजदूर करता है। लेकिन अगर मजदूर और पूजीपतिवाके बीच जीवन मरणका संधप छिड जाय तो मजदूर ही जि कानून व नीति सब ताकमें रखा रह जाती है और राज्यसत्ता पूजा पतियाकी मजदूर पर अपनी सगीन और मशानगन लकर लडा हा जाता है। राज्यतंत्र पुकारा तो जाता है जोकशाहीके नामस परंतु उसमें उद्योगपति लक्ष्मीपति सत्तापति और सत्तापति सबका गठबंधन रहता है और उनकी टोत्री अपन बगके स्वार्थोंका ध्यान रखकर ही मारा राजशासन चलाता है। इमालिए मानस कहता है कि उत्साहनक माधना पर व्यभिगत समाहितकी स्वीकार करनवागी अथ रचनाको मिटा कर मजदूरका पूजापतियात चमूत्त निकलना हो ता पूजापतिवाके खिलाफ तंत्र बग विप्लवकी सयारी चली होगी और किन्हे करके मजदूर-बगका राज्यसत्ता पर अधिकार चला पागा। राज्यसत्ताको हाथमें लेना मजदूरकी शान्तिवा पदवी मागा है। क्याकि शान्तिवा काय तो राज्यसत्ता पर अधिकार करताक मजदूर गुप्त राजा है। यह स्वाभाविक है कि मजदूरके इस विद्रोहमें अमुक राजा ही भाग ल्या। अत्यन्त उर्ध्व सार मजदूर-बगका महाभूमि और गमथा मिगा। शान्तिवा राज्यसत्ता पहच ता इन नताआन हाथमें हा आयगा। व अगर पुगा समाजतंत्रका कायम रखकर चुनाव करन और विपागमाण चलाता। शान्तिवा पद आयगा, तत्र ता पूजीपति-बग उनका शान्तिवा आग तर्क बडा मगा और ताव विप्लवकी अगस्त बना देगा। इमालिए शान्तिवा विपाग मगा, उग आग बडा और शान्तिवारी मिदान्तर मुनाधिर मारी मगात्र चला बग बग हा। व ता समाजतंत्रक जजातमें व पगकर और चला स्वांग म रखकर मारी मगा

नामम पाषण ता शान्तिव म विपाग दूर कर लिया ता म म शान्तिव भावतान अनन मजदूरका हा मजदूर व और मानव शान्तिव विप्लव जाय बग ता बगुत चला मगाकर बना बग है उगा वलाय मगा मगा बग बन मनना है।

शाही ही चगनी पडगा। नताजा और नातिकारी मजदूराकी इस तानाशाहीको अपना सत्ताकी मददसे समाजमें सारे नातिकारी परिवर्तन दाखिल करन पनेंगे। उसका विरोध करनवाला पर कोई न्या किय बिना उनका नाम निगान मिटा देना चाहिये। उसमें तिलाइ करनसे काम नही चठेगा। पूजीपति वगके माय पूजीवाली बत्तिका भा समाजम स उखाड फेंकना होगा। इसके लिए इस तानाशाहीका नीचे क्रिया कार्यक्रम हायमें लेकर अपनी सत्ताके द्वारा ययामभव जदी ही उम जमलम लाना होगा

(१) उत्पादनक तमाम साधना — जमीन कारखानो आदिको रायकी सम्पत्ति बनाकर रायकी ओरने खती करवाना और कारखान चठवाना चाहिये।

(२) उत्पादनक साधनाके सिवा दूसरी कोई व्यक्तिगत सम्पत्ति हा तो वह मनुष्यके पास रहे परन्तु उस सम्पत्तिका उपयोग वह किरामा व्याज या नफा वमानके काममें नहों कर सकगा।

(३) उत्तराधिकारका प्रथा मिटा दी जाय।

(४) जा लोग नातिका विराध करें उनको सारी जमीन-जायदाद जप्त करव उहें सजा ली जाय।

(५) देशम तमाम सराफ कामकाज सरकारके अधीन चठे।

(६) सत्तेग-व्यवहार यातायात तथा परिवहनके सार साधन सरकारके हायम रहे।

(७) समाजक आर्थिक विकासक लिए सुगठि याजना बनाकर उसके अनगार गता और दूसर उद्योगाका विश्वास सरकारको ओरम क्रिया जाय।

(८) इस योजनामें गता और दूसर उद्योग धधाके बीच उचित अनुपात बना रहना चाहिये ताकि गहरा और गावाके वाचका भू धारे धीरे मिट जाय और सार दगम जनमव्यासा उद्योगा समुचित रूपमें हा।

(९) मार सगवन स्त्री-पुरुषके लिए सरकारकी ओरम निश्चित क्रिया न्या समाजापयोगा श्रम करना अनिवाय हाना चाहिये। बीमार अपग और काम न कर सकनवालाके निवास्ता अन्ततम सरकारकी आरम होना चाहिये।

(१०) रायका गानाभाम तमाम बच्चाका मुफ्त निगा दा जाय और सर यत्नका अच्छाम अच्छा निगा पानका समान अवगार मिना।

वगविहीन समाज

१ यह कार्यक्रम जन गम जमलमें आना जायगा वन वग समाजस वगभू मिना जायगा और रायका समाजक मुख्यवस्तियन मचाउनक लिए

अपनी सत्ताका दिनाग्नि बम उपयोग करना पडगा। जैसे जैसे भ्रान्ति आगे बढ़ती जायगा वैसे वैसे राज्यके काम घटते जायग और जन्तम समाज वगवित्तान बन जायगा इसलिए किसी तरहके सघपका कारण नही रहेगा और राज्यसत्ताका भी जरूरत नही रहगा।

१४ भास्य कहता है कि पूजीवाणी समाजमें गेगेका तगी भुगतनी पडना ३ क्याकि उत्पादन उतना हा और उसी तरहका हाता है जिसस नफा हा। परंतु भ्रान्तिके वात् सव लाग सारे समाजकी आवश्यकतायें पूरी करनके लिए उत्पादन करग दगा कुत्तरती साधन-संपत्तिका पूरा पूरा उपयोग हागा यात्रिक तथा वनाग्नि वाताका लाभ सारे समाजका देनमें पूजीपतियाका तरफमें कोई र्कावट नहा रहगी इसलिए समाजकी उत्पादन शक्ति ५३ गुनी बढ जायगी और समाजकी सुख-सुविधाके सभा धारन निरन्तर बहन लग्य। तब साम्यवाणी समाज यह नारा बलद कर सवगा कि 'प्रत्येक अपनी शक्तिके अनुसार काम कर और प्रत्येकको अपनी जरूरतके अनुसार मिठ।

१५ मार्क्सके सिद्धान्ता और कायक्रमकी यह बहुत हा सक्षिप्त रूपरेखा है। समाजवादा समाजकी स्थापनाके लिए मजदूरके विद्रोह या हिंस्र भ्रान्तिका दूरभा भा बहुतस समाजवादी अनिवाय मानत ह। एम भी समाजवाणी ह जा वतमात गततत्रके जरिय अर्थात् मजदूर-वगके प्रतिनिधियाना पात्रमेण्यामें बहमत बनाकर तथा वधानिय पद्धतिस काा बनाकर समाजवात् स्थापित करनकी आगा रवत ह। आयकर और उत्तराधिवागकर धार धार मूव बना बना और वागसान रव्य एक आनि धार धार राज्य हायमें ले लना—यह उनका कायक्रम है। यह बात भी समाजवाणी मानन ग्य ह कि गण्ट्राय भावनाका अपालना बिलकुल उगा दनम हम भ्रान्ति नहा कर सवंगे। आजक साम्राज्यके गएव नाच जा राष्ट्र कुचर जा रह ह, उनका आजातीकी घोषणा पहल करनी पडगा। माय हा यह भा बाळनाय हागा कि स्वतंत्र प्रजायें अपने अपने राष्ट्रमें हा पहल समाजवाणी स्थापना करें। मार्क्स यह मानता था कि दूरभा राष्ट्र यदि पूजावाणी रचनावाल रहें ता एम राष्ट्रके बाच बाद साम्यवाणी राष्ट्र अपना भ्रान्तिकी त्रिवाय नग रग सवगा। इनागि एक राष्ट्रम साम्यवाणी भ्रान्ति हा तो उम दूरभा ग्यारे मजदूराना भा ऐगा हा भ्रान्ति करनके लिए आह्वान करना चाहिय और उनका मन् भी करना चाहिय। तब स्ममें भ्रान्ति दुई तब टाटनी चम् एग मनसा था कि दूरभा राष्ट्रमें भ्रान्ति करानके लिए स्मका भ्रान्तिका

गाही ही घटना पडगा। नताजा और श्रान्तिकारी मजदूराकी हम तानागाहीकी अपनी सत्ताकी मददमे समाजमें सारे श्रान्तिकारी परिवर्तन शक्ति करन पड़ेंगे। इसका विरोध करनवाला पर कोई क्या किय बिना उनका नाम निगान मिटा देना चाहिये। हममें लिगाइ करनसे काम नही चलेगा। पूजोपति-बगके साथ पूजोवादी बक्तिको भी समाजम स उखाड फरुना होगा। इसके लिए इस तानागाहीका नीचे लिखा कार्यक्रम हायमें रकर अपनी सत्ताके द्वारा यथासभन जल्दा ही उम अमरुम गाना होगा

(१) उत्पादनक तमाम साधना — जमीन कारखानो आदिको राज्यकी सम्पत्ति बनाकर राज्यकी ओरमे गती करवाना और कारखाने चरवाना चाहिये।

(२) उत्पादनक साधनाक सिद्धा दूसरा कोई व्यक्तिगत सम्पत्ति हो ता वह मनुष्यके पास रहे परन्तु उम सम्पत्तिका उपयोग वह किराया याज या नफा कमानके कामम नहा कर सकगा।

(३) उत्तराधिकारकी प्रथा मिटा दी जाय।

(४) जो लोग श्रान्तिका विरोध कर उनको सारी जमीन जायदाद जप्त करके उन्हें सजा दी जाय।

(५) देगका तमाम सगफर शमकाज सरकारके अधीन चले।

(६) सत्ते-व्यवहार यातायात तथा परिवहनके सारे साधन सरकारके हायमें रहें।

(७) समाजके आर्थिक विकासके लिए सुगठित योजना बनाकर उसके अनुसार पती और दूसरे उद्योगका विकास सरकारकी ओरसे किया जाय।

(८) इस योजनामें पती और दूसरे उद्योग धंधाके बाब उचित अनुपात बना रहता चाहिये ताकि गहरा और गावाके बीचका भेद धारे धीरे मिट जाय और सारे देगम जासग्याका धमारा समुचित रूपमें हा।

(९) सार सगफर स्थो-पुस्तकें लिए सरकारकी ओरमे निश्चित किया हुआ समाजापयोगी रम करना अनिवार्य होना चाहिये। बीमार अपग और काम न कर सकनवालेके निवासा कताम सरकारकी ओरमे हाना चाहिये।

(१०) राज्यका शासनमें तमाम बच्चानो मुफ्त शिक्षा दी जाय और सर बचका अछाम जेठी शिक्षा पानका समान अवसर मि।

व्यवहारीक समाज

१३ यह कार्यक्रम जम जम जमलमें आता जायगा वम वस समाजस काम मिटना जायगा और सपना समाजक मुव्यवस्थित सचालनक लिए

अपना मत्ताका दिनान्ति कम उपयोग करना पडगा। जसे जम प्राति आगे वन्ती जायगी वसे वसे राज्यक काम घटत जायग और जतम समाज वगविहान बन जायगा इसलिग विसा तरहवे सधपका कारण नहा रहेगा और राज्यमत्ताका भी जरूरत नहा रगा।

१४ मास कहता है कि पूनीवाना समाजमें लगाका तगा भुगतनी पडती है क्यारि उत्पादन उतना हा और उसी तरहका हाता है जिसका नफा हा। परंतु प्रातिवे वात् सभ गेग सार समाजका आवश्यकतायें पूरी करनक लिग उत्पादन करेग तगा बुजरती साधन-मपत्तिका पूरा पूरा उपयोग हागा यात्रिक तथा वनातिन खोलाका ताम सारे समाजका देनमें पूजीपतियाकी तरफम कोई रबावट नही रहगी इसलिग समाजका उत्पादन प्राति कइ गुनी वत् जायगी और समाजकी सुख-सुविधाके सभा धरने निरन्तर बहन लगग। तब साम्यवाना समाज यह नाग मुल्क कर सधगा कि 'प्रत्येक अपनी प्रातिक अनुसार काम कर और प्रत्येकको अपना जरूरतक अनुसार मिले।

१५ भावमक भिदाता और कायश्रमकी यह बहुत हा सदिपत रूपरगा है। समाजवाद समाजकी स्थापनाके लिग मजदूरक विद्राह या हिगक प्रातिना दूमरे भा बहुतने समाजवादी अनिवाय मानत ह। एग भा समाजवादी ह जा बनमाता शासनके जरिय अर्थात् मजदूर-वगवे प्रतिनिधियाना पारमण्यमें बहुमत बनाकर तथा वधानिक पद्धतिसे कानून बनाकर समाजवादी स्थापित करनकी आगा रखत ह। आयकर और उत्तगधिवानकर धीर धीर गूर घटा दना और कारमान रक्य धक आति धार धार रायरा हायमें ले रना—यह उनका कायश्रम है। यह बात भी समानवाना मानन गग ह कि राष्ट्राय भावनाका अपालना बिगुल उगा दनग हम प्राति नहा कर सवग। आजग साम्राज्यात् जुगल नीने ता राष्ट्र बुचल जा रह ह उनका आगनाका धारणा पट्ट करना पडगा। साथ ही यह भा बाछनाय हागा कि मन्त्र प्रनायें अपने अपने राष्ट्रम हा एग समाजवादी स्थापना करें। गाका यत् मानता था कि दूनर राष्ट्र यदि पूजावाना रचनावाल रहें, ता ऐग राष्ट्रके बाच बाद साम्यवाना राष्ट्र अपना प्रातिनी स्थाप नहा रग सधगा। तगलिग एक राष्ट्रमें साम्यवाना प्राति हा ता उम दूमर प्राति मजदूरका भा एगा ही प्राति करनक लिग आदान करना धारिय और उनका मत्ता भी करनी प्रािय। जब हममें प्राति हुई तब द्राटमी जम्न एग मताता था कि दूमर राष्ट्रमें प्राति करानक लिग हमका प्रातिवाना

सेनावी सहायतास उन राष्ट्रों पर चढ़ाई की जाय। लेकिन लेनिनने उसे रोक लिया। लेनिन यह मानता था कि रूसमें यदि क्रांति सफल हो गई, तो दूसरे राष्ट्रोंमें अपन आप भ्रान्ति होगी। परन्तु लेनिनके अवसानके बाद रूसकी सत्ता स्टालिनके हाथमें आई और कुछ जानकार कहे हैं कि आजकल वहाँका समाज साम्यवादी सिद्धान्ता पर नहीं चलता बल्कि वहाँ एक सङ्कुचित और जाग्रमणकारी राष्ट्रवाद पूरी तरह फल हुआ है। इसका सिवा वहाँ पूँजीवाँको भी खुली छूट मिलन लगी है। इन्कणके बारेमें कहा जाता है कि वहाँकी कुल राष्ट्रीय सम्पत्तिका $\frac{1}{5}$ भाग १० प्रतिशत गगाने हाथमें है परन्तु साम्यवादी कहलानवाले रूसमें आज राष्ट्रकी ५० प्रतिशत सम्पत्ति १० प्रतिशत लोगके हाथोंमें आ गई है।

१६ रूसके प्रयागके बारेमें अभी हम जतिम निगय घोषित नहीं कर सकते। फिर भी वहाँकी जो बातें बाहर आती हैं उनसे बहुतेरे समाजवादी जो मार्क्स और लेनिनके साहित्यसे प्ररणा पाकर ही समाजवादी बन हैं इस बारेमें गका करने लगे हैं कि मार्क्स और लेनिनके ही कार्यक्रमके अनुसार प्रत्यक्ष देशोंमें समाजवाद स्थापित हो सकता है।

२

समाजवादकी मीमासा

१ हम यह माननके तयार हो जाय कि मार्क्सने प्राचीन इतिहासका विश्लेषण करके और आजका आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितिया और बलाका समुचित आकृति करके जो आर्थिक नियतिवाद दुनियाके सामन प्रस्तुत किया है उसके अनुसार पूँजीवाँ समाज रचनाका बिनाग अनिवाय है। इस बिनागके चिह्न हमें स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। इन्कण जसे रूँवादी देशोंमें जब पालमेणमें अनुदार दक हाथमें सत्ता थी तब भी आय कर और उत्तराधिकारकरके बारेमें बड कानून बन हैं और आज वहाँ राष्ट्रके एक एक आत्मीकी आर्थिक सुरक्षाकी योजना पर विचार हो रहा है। ये सब बाय और योजनायें समाजवाँन आगमनकी पूव सूचना बनवाले हैं। जिस ह तब सरकार मार समाजक आर्थिक हितकी दृष्टिसे विचार करन और कानून बनान लगी है उस ह तब ता हम समाजवाँका ही प्रयाग समझा पा सकते हैं। हम तरह मार्क्सकी भविष्यवाणा सही मानी जायगी। लेनिन मजदूरोंके विरुद्धा अपवा मजदूरोंका हिसाब नानिम राज्यसत्ता पर अधिकार

करनेके बाद मजदूर वर्गकी तानाशाही स्थापित करनेका और उस तानाशाहीके बल पर समाजमें क्रान्ति फलानेका काम जस जस सिद्ध होना जायगा वसे वसे राज्यसत्ता धीरे धीरे क्षीण होती जायगी और अन्तमें विलक्षण नि गेप हो जायगी—ऐसा जो वायव्यम मान्तिने दिया है उसके बारेमें अलग अलग रायें और भावए जरूर पन होती ह।

२ हम मजदूरोंके विद्रोहका या हिंसक क्रान्तिके अनिवाय होनेका प्रश्न लें। आज युद्ध-सामग्रीमें जा भारी विकास हो चुका है और सरकारके पास एक हवाई तहाज और मशीनगत आदि सहारक साधनोंका जो एकाधिकार है उस देखते हुए कोई भी जनता अपन देाकी सरकारके सामने हिंसक विद्रोह करके टिक नके एसी स्थिति नहीं है। सरकारके पास हिंसाके जम साधन ह उनकें गखवें हिंसेके साधन भी जनता नहा जुटा सनती। जनताके विद्रोहकी सुली तयारा और सगठन तो सरकार वभी नहीं करन देगी और गुप्त रातिसे बहुत बडा सगठन कभी हा नहीं सकता और न एस हिंसाके शक्तिगाली साधन तयार किय जा सकते ह। यह बात सच है कि रनमें जनताने विद्रोह करके राज्यसत्ता हायमें ली। र्विन रूसको जो परिस्थितिपा मिल गई वसी बार बार सभी देाको नहा मिला करती। प्रथम महायुद्धम जाकरा खजाना खानी हो गया और जाकर अपनी सेनाका कपडा सुराक और हथियार तक न दे सका। इसलिए सना असतुष्ट और निरुत्साह हाकर ऊन गयी अधिकांशिके हुक्माका अनादर करन ग्या और अन्तमें अपन आप विगवरने लगा। इस तरह जब जाकरा सनिक वठ टूट गया तभी रूसके गानता रायसत्ता पर अधिकार कर पाय। सरकारके पास मना न रहनेका जा अवसर रूसकी प्रजाका मिल गया वह और देाका मिल हा जायगा यह नहीं माना जा सकता। रूसकी शान्तिक बाद जमनामें इटलीमें स्पनमें और पुनगायमें समाजवादियाने मगस्त्र विद्रोह करके वहाकी रायसत्ताका हायमें लेनेका कोशिश की था परन्तु व सफल नहा हुए। यह नहीं कहा जा सनता कि किमी देाको रूसक जमा अवसर मिल जायगा या नहा। आज ता यह हालत है कि सरकारमें किमी गद्य रायन लखनका शक्ति म न हा परन्तु हर देाकी सरकारमें अपना प्रजाका दबाकर रखनका शक्ति ता है ही। एसी आगा रमा जाना है कि सेनाका प्रजाके पामें कर गिया जाय ता विद्रोह सफल हो सनता है। र्विन जब तक सरकारका आगम सेनाका माना कपडा और पूरा वनन मिग्या रग्या तब तक एमा आगा रखना हवाई विग बनाने जसी बात है। हर देामें सरतारें अगती मनाका

सेनाकी सहायतासे उन राष्ट्रों पर चढ़ाई की जाय। लेकिन लेनिनने उसे रोक लिया। लेनिन यह मानता था कि रूसमें यदि नाति सफल हो गई तो दूसरे राष्ट्रोंमें अपन आप नाति होगी। परन्तु लेनिनके अवसानके बाद रूसकी सत्ता स्टालिनके हाथमें आई और कुछ जानकार कहते हैं कि आजकल वहाँका समाज साम्यवादी सिद्धान्त पर नहा चलता बल्कि वहाँ एक सकुचित और जात्रमणकारी राष्ट्रवाद पूरी तरह फला हुआ है। इसके सिवा वहाँ पूजावात्को भी खुली छट मिन्न लगी है। इंग्लण्डके बारेमें कहा जाता है कि वहाँकी कुल राष्ट्रीय सम्पत्तिका $\frac{1}{4}$ भाग १० प्रतिशत लोगोंके हाथमें है परन्तु साम्यवादी कहानवाल रूसमें आज राष्ट्रीय ५० प्रतिशत सम्पत्ति १ प्रतिशत लोगोंके हाथमें आ गई है।

१६ हमके प्रयोगके बारेमें अभी हम जतिम निगय घोषित नहीं कर सकते। फिर भी वहाँकी जो बातें बाहर आती हैं उनसे बहुतेरे समाजवादी, जो मार्क्स और लेनिनके साहित्यसे प्रेरणा पाकर ही समाजवादी बने हैं इस बारेमें शका करने लग हैं कि मार्क्स और लेनिनके ही कार्यक्रमके अनुसार प्रत्येक देशमें समाजवात् स्थापित हो सकता है।

२

समाजवादकी सीमासा

१ हम यह माननको तयार हो जाय कि मार्क्सने प्राचीन इतिहासका विश्लेषण करके और आजकी आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों और बलाका समुचित आकृति करके जो आर्थिक नियतिवाद दुनियाके सामने प्रस्तुत किया है उसने अनुसार पूजावादी समाज रचनाका विनाश अनिवार्य है। इस विनाशके चिह्न हमें स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। इंग्लण्ड जैसे रूढ़िवादी देशमें जत्र पालमण्टमें अनुदार दत्के हाथमें सत्ता थी तब भी आय कर और उत्तराधिकारकरके बारेमें नए कानून बने हैं और आज वहाँ राष्ट्रक एक एव आत्माकी आर्थिक सुरक्षाका याजना पर विचार हो रहा है। ये सब कार्य और योजनायें समाजवात्ने आगमनकी पूर्व सूचना देनवाले हैं। जिस हए तत्र सरकार सारे समाजक आर्थिक हितकी दृष्टिसे विचार करन और कानून बनान लगा है उस हए तक तो इस समाजवात्का ही प्रयोग समझा जा सकता है। इस तरह मार्क्सकी भविष्यवाणा सही मानी जायगी। लेकिन मजदूरोंके विनाशका अथवा मजदूरोंकी हितगत नातिसे रायमता पर अधिकार

करनेके वाग मजदूर बगकी तानाशाही स्थापित करनेका और उम तानाशाहीके बल पर समाजमें क्रान्ति फलानका काम जैसे जैसे सिद्ध होता जायगा वैसे वैसे राज्यसत्ता धीरे धीरे क्षीण होता जायगी और अन्तमें विलुप्त नि गेव हो जायगी— एसा जो कायक्रम माक्सने दिया है उसके बारमें अग्न जलग रायें और गकाए जरूर पग होता ह ।

२ हम मजदूरके विद्रोहका या हिंसक क्रान्तिके अनिवाय होनेका प्रश्न लें । आज युद्ध-सामग्रीमें जो भारी विकास हो चुका है और सरकारके पास टक हवाई जहाज और मशीनगन आदि सहारक साधनोका जो एकाधिकार है, उस देखत हुए कोई भी जनता अपन देगकी सरकारके सामने हिंसक विद्रोह करके टिक सके ऐसी स्थिति नही है । सरकारके पास हिंसाने जमे साधन ह उनक लाखवें हिस्सेके साधन भा जनता नहा जुटा सक्ता । जनताने विद्रोहकी खुली तयारी और सगठन तो सरकार कभी नही करने देगी और गुप्त रातिसे बहुत बडा सगठन कभी हा नही सक्ता और न एस हिंसाने गविनगाने साधन तयार किय जा सक्ते हैं । यह बात सच है कि रममें जनताने विद्रोह करके राज्यसत्ता हाथमें ली । क्विन रूसको जो परिस्थितिया मिल गइ वसी बार बार सभा देगोको नहा मिला करती । प्रथम महायुद्धमें जाकरा खजाना खाली हो गया और जार अपनी सनाका कपडा खुराक और हयियार तक न दे सका । इसलिए सना असतुष्ट और निरुत्साह हाकर ऊन गयी अधिकारियाके हुक्माका अनादर करन गयी और अन्तमें अपन आप किवरने लगी । इस तरह जब जाकरा सनिक बरू टूट गया तभी रूसके राजनता राज्यसत्ता पर अधिकार कर पाय । सरकारके पाग मना न रहनका जा अवसर रूसकी प्रजाको मित्र गया वह और देगाका मित्र हा जायगा यह नही माना गा सक्ता । रूसकी क्रान्तिके वाग जर्मनीम स्टगामें स्वेनम और पुतगामें समाजवादियाने सगस्र विगाह करके वहाकी राज्यसत्ताका हाथमें लेनेके कागिग की थी, परन्तु व सफर नहा हुए । यह नहा वहा जा सक्ता कि किसी देगाका रूसक जना अवसर मिल जायगा या नहा । आज तो या हागत है कि सरकारमें किसी गनु राज्य लडनका गक्ति भग न हा परन्तु हर देगाकी सरकारमें अपना प्रजाका दबाकर राखेका गक्ति ता है ही । ऐसी आगा रखा जाती है कि सेनारा प्रजाके पगमें कर गिया जाय ता विद्रोह सफर हो सक्ता है । क्विन जब तक सरकारकी आरग सनारा साना कपडा और पूरा बतन मित्रना रदेगा तब तक ऐसा आगा रखना हवाई किते बान जसी बान है । हर देगमें गरतारें अपना सनाको

दुनियाकी परिस्थितियोंमें और नय विचारसे इतना ज्यादा जवानम रखता ह और प्रजा कितना ही भूखा भरता ही और कष्ट सहती हो तो भी तनाका उसकी तुलनामें इतना अधिक सुख-सुविधास रखा जाता है कि काय कताआ और प्रचारकाके लिए सेनामें पहुँचकर उसे प्रजाके पक्षम जानक लिए समझाना असभव नहा तो अत्यन्त कठिन जरूर है । पिछल डट सौ बषक इतिहासमें इस बातका कइ मिनालें मौजूद ह कि सरकारका व्यवस्थित और भारा यात्रिक सनिक गनिक सामन प्रजाके मामूली हथियारास किय जानका उपद्रव तोडफोड और छुटपुट मारकाटसे कोई काम नहा बन सकता ।

३ इतन पर भी दलीलेके सातिर हम मान लेते ह कि मजदूराका विगह सफर हुआ और मजदूरका तानागाही स्थापित हो गयी । फिर भी यह तानागाहा सारे मजदूर-बगकी न होकर मजदूर बगके कुछ नताआकी ही हागी । देशक शान्ति विराधी पन्नाक उपद्रवा ताडफोड आदिसे शान्तिकी रक्षा करनक लिए उन्हें कडा सनिक शासन रखना हागा । देशक शान्ति और व्यवस्था बनाय रखनके लिए उन्हें सना और पुस्तिके अधिकारियाका कडा तत्र खडा करना पडगा । दूसरी जार कारवानो और खतामें हानवाले उत्पादनक कामका प्रबध करन और उसकी देखरेख रखनके लिए भी सरकारी कामकारियाता बना तत्र खडा करना हागा । यह तानागाही बहुत तडा अफसरगाही या नौकरगाहीके जरिय ही अपना काम कर सकेगी । भले ही तानागाहा भागनवाल मजदूर-नताआक त्रिमें मजदूरकाकी भगाई हा और वे अपना सत्ताका उपयोग मजदूरका लिए ही करना चाहत हा ता भा उनके हाथ-थर ता यह सनिक बगका नौकरगाही ही हागा । इम नौकरगाहीक मातहत मजदूर जनता किसा प्रकारकी स्वतन्त्रता भाग सकती है एसा मानना निरा भ्रम हागा । सारे उद्योग और समूचा उत्पादन-तत्र व्यक्तिगत स्वामिकता न रहकर सरकारी अधिकारमें आ जायगा परन्तु इस सरकारा तत्र पर गागाता कुछ भा अधिकार नहा रह सकगा । पुरान पूजापतिया और प्रबधकाका जगह नय सरकारा अफसर कारवाना बगराकी व्यवस्था करनमें लग जायगा । एग तरह मजदूर ता जहाना तहा हा रहेगा । बाग्याना कारानें शान्ति विराधी गग ताडफोड और हस्तभय न कर मक्के शमकी दतरन रखनकी सरकारका जना चिन्ता हागा कि उन व्यवस्थापक अधिकारियाका अफत विगाल और निरबुग सत्ता त्रिय बिना काम हा नहा सकगा । हमारो मुख्य प्रश्न यह नहा ह कि उत्पादनक साधना पर कानूनी

अधिकार विसना हो बल्कि यह है कि उन साधना पर मजदूर या आम जनताका अधिकार है या नहीं। मजदूर वगैरी तानाशाहीमें उत्पादनके साधना पर सरकारका स्वामित्व हान पर भी उन पर मजदूर वगैरी कोई नियंत्रण नहीं होगा। गत यह है कि किसी भा वड राज्यतंत्र पर—विनापन वडे औद्योगिक तंत्रवाये राज्यतंत्र पर—अकुण रक्षणक लिए जा बौद्धिक जिम्मेगारीकी शक्ति दुगलता और साम्राजिक विगाण भावना चाहिये वही अभी आम लोगामें नहीं आई है। और इसलिए वड वर राज्यतंत्रामें जहा चुनाव करके जनताका अपन प्रतिनिधि भजनेका अधिकार होता है वहा भी जाताका मरकारी कामकाज पर कोई विशय नियंत्रण नहीं रह सकता।

४ इसके सिवा यह राज्यतंत्र ता मजदूर वगैरे चुन हुए प्रतिनिधियारा न हानर अपन आप मजदूरकाके नेता बन हुए एक छोटम वग या पक्षकी तानाशाहीवाला होगा। और यह तो राजनीतिक पुरुषाके प्रतिनिधन अनुभवकी बात है कि तानाशाहा भागनवाग दल अपन हायमें आई हुई सत्ता छोड़नका तयार नहा हाना। जा वग या पक्ष अपनी ताकतम सत्ता प्राप्त करना है वह वग या वह पक्ष मताका अवन हो हायमें बनाय रचना चाहता है। गुरुमें तो वह यही मानता है कि आम जनताकी भगदक लिए हा उस सत्ता अपन हायमें रखनी चाहिय और उसकी यह मायता प्रमाणित भी होना है। परन्तु वारमें उमे मताका माह पदा हा जाता है। रम सम्बन्धी पुस्तका और वहा जाकर सारी स्थितिका निरीक्षण करके लौटनवालाक वणनसि मालूम हाना है कि अर ता उन्हान तानाशाहाका प्रनातंत्रका चाला पहना लिया है। फिर भा तानाशाहा वग तग भी कम नहा हुइ बल्कि बढ़ना जा रहा है। और जा मिद्वान मामन रगरर प्राति की गइ थी उन मिद्वानाका भी बलिगन किया जा रहा है। गानमें उत्पादनके साधना पर सरकारका अधिकार हान पर ना वहाक अलग-अलग वगैरी आयमें इतनी अनमानता है कि रगना गारा आपका आधा भाग वहाक दना म्यारह प्रतिगत गवाका भित्ता है और बाकी जाय हिन्दी आय नन्दे प्रतिगत लोगामें बटना है। सरदारग अधिकारिया और वारपानति व्यवस्थापकाका सत्ता रननी कम गई है कि उम हटा गनना मजदूरगा रण आय हिन्दी रगत जितना वं भा अगमर हा गया है। वग राज्यताक धार वारे विधान हा जा और न्तिम गाग प्रजाक रगप्र हा जनका आगा नहा रनी जा गना।

५ अब हम समाजवादके दूसरे स्वरूप पर विचार करें। हिंसक क्रान्तिके द्वारा नहीं बल्कि इंग्लैंड और अमरीकाके बहुतसे समाजवादी मानते हैं उस प्रकार वह उपायसि पार्लियामेण्टरी पद्धतिसे समाजवाद स्थापित किया जाय तो क्या स्थिति होगी? यह हो सकता है कि इसमें वे उपद्रव विद्रोह और तोड़फाड़ बगरा न हों जिनके बलपूर्वक स्थापित किये गये समाजवादमें नान्ति विरोधी और समाज विरोधी ताकनाकी तरफसे होना डर रहता है। (रूमम सन् १९३९ तक अर्थात् क्रान्ति हानिके बीस बरस बाद तक भी तोड़फाड़ और विद्रोहके कारण समय समय पर कठिनाइयाँ पदा होता रहता था।) फिर भी आम जनताके पास तो मताधिकारका एकमात्र साधन है उसका द्वारा विनाश राज्यतंत्र पर—जिसन बड़ बड़ उद्योग भी अपने अधिकारमें ठीक स्थिति हैं और इस कारणसे जो और भी अटपटा बन चुका हो—उचित अकुल नहीं रख सकनकी कठिनाई तो बनी ही रहगी। इसलिए एस समाजवादमें यह तो संभव है कि मजदूरोंको ज्यादा सुविधायें मिलें और उनकी आर्थिक स्थिति अमुक हूँ तक सुधरे परन्तु यह संभव नहीं दीवना कि उन्हें सच्ची स्वतंत्रता मिल जायगी और उनका अपने देशकी सरकार पर सच्चा नियंत्रण हो जायगा। यह सारा प्रश्न ही निराला है। सन्निव बरस पर टिके हुए राज्यतंत्रमें प्रजा सच्ची आजादी भोग ही नहीं सकती। गांधीजीने तो पुकार पुकार कर कहा है कि अहिंसाके सिद्धान्त पर रच हुए समाजके सिवा और कहीं भी सच्चा प्रजातंत्र या सच्चा समाजवाद संभव नहीं है।

६ अब हम उन गंवाआना जाच करण जो पूजावादो अयगास्त्री समाजवादी अय रचनाक वारमें खड़ी करत ह।

७ उनकी एक दलील यह है कि समाजवादीमें कारणाना और खती बगराकी व्यवस्था करनके लिए आपको व्यवस्थापक नियुक्त करने पड़ेंगे। इनका पारिस्थितिक निश्चिन्त किया हुआ हानक कारण य सरकारा नौकरा जत हंगे। पूजापति जब अपने कारणान या सताकी व्यवस्था करता है तब यदि व्यवस्था अच्छा है तो उस ज्यादा नफा कमानका प्रयत्न करता है। परन्तु सरकारा व्यवस्थापकका ऐसा काम प्रयत्न नहीं हाना। आरभमें क्रान्तिक नया जाण रहे तब तक तो संभव है कि निस्स्वाय और समाजवादी भाग चालनवादी व्यक्ति अच्छा व्यवस्था कर सकें यद्यपि उनमें भी अनभव और कुपान्ताका बराबर कारण पाए जा रहेंगे ह। परन्तु समय पाकर सारा प्रबंध एक नौकरानाका रूप में रखा और निम्ना स्वामाकी दखलख

बिना सारी प्रवस्था विगड़ जायगी। नद गात्र करके विशेष उत्पादन करनेका उत्साह किसीमें नहीं रहगा जोर दानकी आर्थिक प्रगति हर जायगी।

८ इसके खिलाफ यह कहा जा सकता है कि मौजूदा पूजीवादी समाजमें भी रंग तार डाल टैंगीफोन आदि सवाय मरकारी अधिनारमें ही चलती है और उनका प्रवस्था व्यक्तिगत स्वामित्ववादी व्यवस्थामें अधिक अच्छी होती है। म्युनिसिपलिटियाकी जोरस पानी बिजली और गस आदि देनेका काम भी सावजनिक ढंगस और कुशलतास साथ किया जाता है और लोगोंको सतोष भी दिया जाता है। अतः यहाँ यह सब काम काज सरकारी या सावजनिक पद्धतिस हान पर भी इनमें कम-ज्यादा बेतन ठके देनेका रिवाज जाति घातें ता पूजीवादा पद्धतिक जगा हा ह।

९ दूसरी तरफ व्यक्तिगत स्वामित्वके मातहत चम्नवांग बडे कारखाना, ट्रस्टा कम्प्याइना और सिडिक्टोके बारम यह कहा जा सकता है कि उनके मूल प्रवस्थापक तो बहुत हांगियार और महनती होत ह परंतु वास्में ये बडे कारखान उनक उत्तराधिकारियाके हाथमें पड जाते ह और व सभी लोग कुशल और परिश्रमी नहीं हात। साथ ही इन कारखानामें व दाप तो हान ही ह कि भानज भनीज जोर सग-सम्प्रधी लोग गलन तरीकेमे और बिना अधिकारके रख लिये जात ह।

१० इस तरह गुण और दोष इन दाना प्रयासाम रत्ने ह। फिर भी सावजनिक पद्धतिस चलनवादी प्रवस्थाम सामान्य लोग कुछ आयाज उठा सकते ह और चर्चा कर सकते ह। इसलिए कुछ मित्राकर दंग ता व्यक्तिगत स्वामित्वकी व्यवस्थाके सावजनिक प्रवस्थामें जागरो अधिन लाभ मिलनकी सम्भावना है।

११ दूसरी गवा यह उगाई जाना है कि अगर आपका आर्थिक अमानता मिटानी है तो सब तरफने काम करोवांगका आय एकसी कर देनी होगी। ज्यांग अच्छा ज्यांग कठिन या ज्यांग कुशलताका काम करनेवांगेको ज्यांग परिश्रमिक मित्र और दूसराको कम मित्र या ता समानवांगस मूल मिडान्नेके विगड़ है। दंग तरफ यदि गवरा सम्मान पारिश्रमिक देंग तथा कुशल और अकुशल गवरा काम और निश्चित आयका भरोसा करा देंग तो फिर कुशल आत्मी किमलिए लगान अच्छा काम करेगा? कठिन ऊंगनवाला या गला अथवा शरीरका पुसगान पदुचानवांग काम करनेस सभा इनबार कंगे तो फिर ये काम आप निगम करायेंग?

जो राग आरसी या मित्र-ज बनकर ठीक-काम नहा करे, उनस आप किस तरह काम करे? अपन सिद्धांतके अनुसार आप ऐसे लोगको भी खाना देनेसे इनकार तो कर नही सक्ये। कुछ मस्त ऋषि चित्रकार और दूसरे कलाकार उमर आने पर तो कलाकृतिका सजन करे और बाकीके समयम अपनी कल्पनाकी धनमें रमत रह्ये। एस रागाक कामका माप आप किस तरह माप्ये? मान श्रीजिध कि एस कोई कलाकार बपके अंतिम दिन एकाध सुन्दर कलाकृतिका सजन कर दे और इस तरह अपन पारिथमिकका अधिकारी बन जाय परन्तु साठ भर तक समाज उसका निर्वाह किस नियमस करेगा? समाजको इस बातका ता कोई भरासा नही होता कि बपके अंतिम दिन वह कुछ न कुछ सजन कर ही देगा। इस तरहके कई प्रश्न सड किय जा सक्ते ह। समाजवादी इनका इतना ही उत्तर देत ह कि समाजम आर्थिक समानता स्थापित करना तो हमारा अंतिम ध्येय ह। सब अपनी अपनी शक्तके अनुसार काम करे और सजको अपनी अपनी जरूरतके अनुसार मिल जाय इन ध्येय तन हमें पहुंचना है। लडिन समाजवादी क्रान्ति आरभ हो और अंतिम इस ध्येय तन हम पहुंचें इसस पहले बाचक समयम सिद्धांतके साथ अनेक तरहका समझौता करना ही पडगा। जब तक मनुष्यके मनसे सम्पत्ति और आयके पूजावादा विचाराका असर मिट नही जाता तब तक कुछ लोगोका ज्याण पारिथमिक जर कुछका कम पारिथमिक देना ही पटगा। परन्तु पूजावादी मापण मिटा दिया जायगा और यह सामधानी रखी जायगी कि कोई एसो निजी सम्पत्ति फिरम सग्रह न कर सके जिमके बल पर वह दूसराका मापण कर सक। इमलिए कम-अधिक आयके कारण समाजमें बरभाव उत्पन्न करनका असमानता नहा फल पायगी। पारिथमिक निश्चित करनके लिए सामान्य नाचक नियम हो सक्ते ह

(१) मनुष्यका शक्ति और कुशलताक अनुमार शयान उसकी बाजार बामतक अनुसार।

(२) मनुष्यका कितना कुरबाना करनी पन्ती है अर्थात् किसी काममें उमर गराकी कितना घिसाई हानी है वह काम उसक लिए कितना उदान बाग है एग आधार पर।

() इस आधार पर कि आत्मी कितन धन काम करता है।

१० जिन सामान्य श्रमर काममें विशेष कुशलताकी जरूरत न हो उनमें ता कामर घटाया नियम हा टान है। जिनमें मनुष्यका शिष्य बद्धि न लडाना पड और बतया हुआ काम नियत ढंगम करन रहना हा उस काममें

कामके घटावा नियम ही ऋग्भग मव जगह हाता है। इसव सिवा मगान पर काम करना हो तब मुख्य काम मगान करती है मनुष्यका ता कव मगान पर निगाह रखकर खड रहना पन्ता है। दूसर प्रकारका काम जिममें मनुष्यके शरार या मनका धिमाइ ज्यादा हाता है या ता मनुष्य गजदरीम करता है—दूसरा काम न मिलनके कारण और पटवा पट्टा भरना जनि वाय हानस लाचार होसर करता है या ज्यादा पारिश्रमिकने लालम करता है। समाजवादमें अचाराका तो प्रदन नहा हाता इसलिए लाचका हा प्रन रहता है। परन्तु पारिश्रमिक ज्यादा लिया जाय ता अधिक जनमानता पन होगी। इसलिए दूसरा को प्रलाभन हूटना चाहिय। अधिक पैम हा तो एकमात्र प्रलाभन नही हाता। एमे कामाके लिए पारिश्रमिक ता दूसरे कामाक बराबर ही रखा जाय परन्तु कामक घट दूसरे कामामे कम रख जाय ता समभव है कि इस लाचकस मनुष्य एस काम करनका तपार हा जाय कि अतिरिक्त समयमें बह दूसरा कोई भापसन् काम कर मरगा।

१३ तासरा नियम ज्यादा गकिन और कुशाहतावा मनुष्याका अधिक बाजार-बीमतका रहता है। यह बात मच है कि आज य ऋग् अपन पूजीपति माणिका ज्यादा नफा करवा देन ह इसलिए इनकी बाजार-कामत अधिक है। लकिन एक बार समाजमें स व्यक्तिगत मुनाफा और व्यक्तिगत सम्पत्ति प्राप्त करनका मिद्वान्त मिट गया कि फिर मनुष्याक विचार भा बदले गिना नहा रह्य। व्यक्तिगत मुनाफा और व्यक्तिगत सम्पत्तिक बजाय दूसरी गकिनया मनुष्यको काम करनका प्ररणा देंगी। मनुष्य-स्वभाव हा एमा है कि उसमें ना गकिन हाता है उन व्यक्ति किय बिना उग चन नहा पन्ता। कीर्ति या नामकी चाह अथवा समाजक लिए अधिक उपयोगा हानस आरम सताप या गिफ अच्छा काम करनर गातिर हा अच्छा काम करनका वृत्ति—य सब मनुष्यमें रहत हा ह। और अगर आजक नफावाण समाजमें भी नफका परवाह किय बिना य वतिया काम करन हूद पाद जाता ह ता नफका तत्त्व नप हा जानन बा ता इन वतियाक लिए और ना ज्यादा खबरन रग्या। पूजीवाण जपगास्त्रियान मनुष्यका निग अध परावण—कम थम करन ज्यादा नफा एनका वतियाण—उमकवर अपन मार सिद्वान्त रख ठान ह। एमालिए उन्हें य वतियाका बण मालूम हातो ह। माय ही एक एमा अयनत्र राढा करर जिममें मामाच था मियाके लिए निवाहने भापन प्राप्त करना चाणम चाण बडिन हा जाय एन एमा भम राढा कर लिया है कि मनुष्य ता तिरा अयनगण ३।

जो गण आलसी या निरलस बनकर ठीकस काम नहीं करेंगे, उनसे आप किस तरह काम करेंगे? अपने सिद्धान्तके अनुसार आप ऐसे लोगोंको भी खाना देनेसे इनकार तो कर नहीं सग्य। कुछ मस्न कवि चित्रकार और दूसरे कलाकार उमग आन पर तो कलाकृतिना सजन करग और बाकीके समयम अपनी कल्पनाकी धनम रमने रहग। एस लागेके कामका माप आप किस तरह लगायेंगे? मान गीजिय कि एस कोई कलाकार कपके अतिम दिन एकाध मुत्र कलाकृतिना सजन कर दे और इस तरह अपने पारिश्रमिकका अधिकारी बन जाय परन्तु साठ भर तक समाज उसका निवाह किस नियमस करेगा? समाजको इस बातका तो कोई भरासा नहीं होता कि कपके अतिम दिन वह कुछ न कुछ सजन कर ही देगा। इस तरहके कइ प्रश्न खड किय जा सकते ह। समाजवादी इनका इतना ही उत्तर देते ह कि समाजम आर्थिक समानता स्थापित करना तो हमारा अतिम ध्यय है। सब अपनी अपनी शक्तिके अनुसार काम कर और सबको अपनी अपना जरूरतस अनुसार मिल जाय एस ध्यय तब हमें पहुंचना है। किन समाजवादी नाति आरम हो और अतम इस ध्यय तक हम पहुंचें इसस पहल बीचक समयमें सिद्धान्तके साथ अनेक तरहका समझौता करना ही पडगा। जब तक मनुष्यके मनसे सम्पत्ति और आयके पूनावादी विचाराका अमर मिट नहीं जाता तब तक कुछ लागेका ज्याग पारिश्रमिक आर कुछको कम पारिश्रमिक देना ही पडगा। परन्तु पूजीवादी गोपण मिटा लिया जायगा और यह सावधानी रखी जायगी कि कोई एसी निजी सम्पत्ति फिरम सग्रह न कर सके जिसक बल पर वह दूसराका गोपण कर सक। इसलिए कम-अधिक आयक कारण समाजम धरभाव उत्पन्न करनवाली असमानता नहो फन्न पायगी। पारिश्रमिक निश्चित करनक लिए सामायत नाचेके नियम हो सकते ह

(१) मनुष्यका शक्ति और कुशलताके अनुसार अर्थात् उसकी बाजार कामनके अनुसार।

(२) मनुष्यको कितनी कुरवाना करनी पडता है अर्थात् किसी काममें उक्त गराका कितना धिमाई हाती है वह काम उसके लिए कितना ऊरान बाग है कम आधार पर।

() कम आधार पर कि आत्मी कितन धन काम करता है।

१२ जिन सामाय श्रमके काममें विगप कुशलताकी जरूरत न हो उनमें ता कामर घटाका नियम हो टाक है। तिममें मनुष्यका विगप मुद्धि न रहाना पर और घनाया हुआ काम नियत ढगम करत रहना हो उम काममें

कामके घटावा नियम ही लगभग सब जगह हाता है। इमके मिया मनीन पर काम करना हो तय मुख्य काम मनीन करती है मनुष्यका ता बव मनीन पर निगाह रखकर खड रहना पता है। दूसरे प्रकारका काम तिसम मनुष्यके गरार या मनसा धिसाइ ज्याग हाता है या ता मनुष्य मजजुरोम करता है—दूसरा काम न मिलनके कारण और पटका गड्डा भरना जनि वाय हानस लाचार हाकर करता है या ज्यादा पारिश्रमिकन लाचरम करता है। समाजवात्म लाचारीका ता प्रश्न नहा हाता इसणिए लाचरना ही प्रश्न रहता है। परन्तु पारिश्रमिक ज्याग दिया नाय तो आर्थिक अनमानना पना होगी। इसणिए दूसरा को प्रलोभन दूडना चाहिय। आर्थिक लोभ ही तो एकमात्र प्रलोभन नही होता। एमे कामाक ठिए पारिश्रमिक ता दूसरे कामाक बराबर ही रखा जाय परन्तु कामके घट दूसर कामाके कम रख जाय तो सभव है कि इस लाचरस मनुष्य एस काम करनका तयार हा जाय कि अतिरिक्त समयमें वट दूसरा कोई मापमन् काम कर सगगा।

१३ तासरा नियम ज्याग गकिन जोर कुगानावा मनुष्याका अधिक बाजार-बीमतवा रहता है। यह वान सच है कि आज य ताग अरन पूजीपति भाठिकाको ज्याग नफा बरवा देने हैं इसणिए इनका बाजार-बामत अधिक है। लेकिन एक बार समाजमें स व्यक्तिगत मुनाफा जोर यक्तिगत सम्पत्ति प्राप्त करनका सिद्धान्त मिट गया कि फिर मनुष्याक विचार भा बदल बिना नही रहग। यक्तिगत मुनाफा और व्यक्तिगत सम्पत्तिक बजाय दूसरी गकिनया मनुष्यको काम करनकी प्ररणा लेंगा। मनुष्य-स्वभाव हा एगा है कि उमम ना गकिन हाता है उन व्यक्ति विय बिना उम चन नहा पता। कौनि या नामकी चाह अथवा समाजन लिए अधिक उपयोगी हातना आम सताप या गिफ अच्छा काम करनन ग्यातिर हा अछा काम करनका वृत्ति—ये सब मनुष्यमें रटत हा ह। जोर अगर आजन नफायाग समाजमें भी नफना परवाट निय बिना य कतिया काम करता हुन पाई जाता है ता नफना तत्य नष्ट हो जानन बा ता इन वस्तियाक लिए जोर ना ज्याग यपराग रगना। पूजीवाग जपनाश्रियाग मनुष्यना गिग अर परायण—कम धर्म करन ज्याग नफा इनका वस्तियाग—ममताकर अपन सार सिद्धान्त रख डाडे ह। एगणिए उह ये वस्तियाग बटा मानूम हातो हैं। नाय ही एक एग जपान गटा करन जिगमें कामाक आ मियाक ठिए निवाटन मापन प्राप्त करना पानाग पाना कनि हा नाय उहान एगा धर्म सडा कर दिया है कि मनुष्य ता गिरा अयनगया है।

जो लोग आलसी या निष्क्रिय बनकर ठीकसे काम नहीं करेंगे, उनसे आप किस तरह काम लेंगे? अपने सिद्धान्तके अनुसार आप ऐसे लोगोंको भी खाना देनेसे इनकार तो कर नहीं सकेंगे। कुछ मस्त कवि चित्रकार और दूसरे कलाकार उमय जान पर तो कलाकृतिका सजन करग जीर बाकीके समयम अपनी कल्पनाकी धनमें रमन रहग एम लागाने कामका माप आप किस तरह लेंगयग? मान लाजिय कि एसा कोई कलाकार बपके अतिम दिन एकाध मुत्र कलाकृतिका सजन कर दे जीर इस तरह अपन पारिश्रमिकका अधिकारी बन जाय परन्तु माल भर तक समाज उसका निवाह किस नियमसे करेगा? समाजको इस बातका तो कोई भरासा नहीं होता कि बपके अतिम दिन वह कुछ न कुछ सजन कर ही देगा। इस तरहक कई प्रश्न खड किय जा सकते ह। समाजवादी इनका इतना ही उत्तर देते ह कि समाजमें आर्थिक समानता स्थापित करना तो हमारा अतिम ध्यय है। सब अपनी अपनी शक्तिके अनुसार काम करे जीर सबको अपनी अपनी जरूरतके अनुसार मिल जाय इस ध्यय तक हम पहुचना है। किन समाजवादो ज्ञानि जारम हो जीर जतम इस ध्यय तक हम पहुचें एसस पहल बाचक समयमें सिद्धान्ताके साथ अनक तरहका समझौता करना ही पन्गा। जब तक मनुष्यके मनसे सम्पत्ति जीर जायके पूजावादा विचाराका असर मिट नहा जाता तब तक कुछ लोगका ज्यादा पारिश्रमिक जार कुछका कम पारिश्रमिक देना ही पडगा। परन्तु पूजीवादी सापण मिटा लिया जायगा जीर यह सावधानी रखी जायगी कि कोई एसी निजी सम्पत्ति फिरम सग्रह न कर सके जिसके बल पर वह दूसराका सापण कर सक। इमलिए कम-अधिक आयक कारण समाजमें वरभाव उत्पन्न करनका असमानता नहीं फलन पायगी। पारिश्रमिक निश्चित करनके लिए सामायत नाचके नियम हो सकते ह

(१) मनुष्यकी शक्ति और कुशलताके अनुसार अथात् उसकी बाजार बामनके अनुसार।

(२) मनुष्यका कितना कुरवाना करनी पन्ती है अर्थात् किसी काममें उसका शरारकी कितना धिसाइ हाती है वह काम उसके लिए कितना ज्ञान बाग है एम आधार पर।

() एम आधार पर कि आत्मी कितन घट काम करता है।

१२ जिन सामायत अमक कामामें विगप कुशलताकी जरूरत न हा उनम ता कामक घटना नियम ही ठाक है। जिममें मनुष्यको विगप बडि न लधाना पन् जीर बनाया हुआ काम नियत ढगम करन रहना हा उम काममें

कामक घटावा नियम ही लगभग सब जगह हाता है। इसक सिवा मगान पर काम करना हा तब मस्य काम मगीन करती है मनुष्यका ता कवल मगान पर निगाह रखकर खड रहता पन्ता है। दूसर प्रकारका काम निममें मनुष्यक गरार या मनका धिमाइ ज्यान् हाता है या ता मनुष्य मजदुराक करना है—दूसरा काम न मिलनक कारण और पटका खट्टा भरना अनि वाय हानम लाचार हाकर करता है या ज्यान् पारिश्रमिकक गन्चम करता है। समाजवादमें लाचाराका ता प्रश्न नहा हाता इमलिए गन्चम ही प्रश्न रहता है। परन्तु पारिश्रमिक ज्यान् त्रिया नाय ता आर्थिक जनमाना पन् होगी। इमलिए दूसरा काइ प्रलाभन दूटना चाहिय। आर्थिक लाभ हा ता एकमात्र प्रलाभन नही हाता। एस कामाक लिए पारिश्रमिक ता दूसर कामाक बराबर ही रखा जाय परन्तु कामक घट दूसर कामाक कम रख जाय ता समभव है कि इस गन्चम मनुष्य एम काम करनका तयार हा जाय कि अतिरिक्त समयमें क दूसरा काई मापमन् काम कर मंगगा।

१३ तीमग नियम ज्यान् गकिन जोर कुणालतावा मनुष्याका अधिक बाजार-नामतना रहता है। यह बात सच है कि आज य गग अन पूजीपति मालिकाका ज्यान् नफा करवा लन ह इमलिए इनका बाजार-नामत अधिक है। गकिन एक गार समाजमें स व्यक्तिगत मुनाफा और व्यक्तिगत सम्पत्ति प्राप्त करनका सिद्धान्त मिट गया कि फिर मनुष्याक विचार भा बदले गिना नही रह्य। व्यक्तिगत मुनाफा और व्यक्तिगत सम्पत्तिक बजाय दूसरी गक्तिवा मनुष्यका काम करनका प्रेरणा देगा। मनुष्य-स्वभाव ता गमा है कि उममें ता गक्ति हाता है उन व्यक्ति किय गिना उसे चत नहा पन्ता। बीति या नामका चाह अववा समाजर लिए अधिक उपयोग हानरा आम सनाप वा मिफ अच्छा काम करनक गतिर हा अच्छा काम करनका वृत्ति—य सब मनुष्यमें रहत हा ह। और अगर आजक नफावाता ममानमें भी नफेका परवाह गिय बिना य वक्तिया काम करना हू पाइ जाता ह ता नफेका तत्व नष्ट हा जानक वा ता इन वक्तियाके लिए और भा ज्यान् बचराग रग्या। पूजावाता जयगान्त्रियान मनुष्यका निग अय परायण—कम श्रम करन ज्यान् नफा लनका वक्तिमान्—ममानकर अपन गार सिद्धान्त रख हा २। इमालिए उह य कठिनाइया बहा गाठूम हाती ह। माय हा एक एग अयतत्र गहा करत जिनमें मानाय आ मियाके लिए निवाहन मापन प्राप्त करना वागाम ज्यान् कठिन हा जाय उहान एग ध्रम गहा कर गिया है कि मनुष्य ता निग अय-गगण है।

जो लात आत्मी या निज-ज बनकर ठीकस काम नहीं करेगा, उनमें आप किस तरह काम लगे? अपने सिद्धांतों के अनुसार आप ऐसे लोगोंको भी खाना देनेमें इनकार तो कर नहीं सकेगा। कुछ मस्त्र ऋषि चित्रकार और दूसरे कलाकार उमर आन पर तो कलाकृतिका सजन करेगा और बाकीके समयमें अपनी कल्पनाकी धनमें रमते रहेंगे। हम लागाके कामका भाप आप किस तरह गायेंगे? मान औरजय कि एसा कोई कलाकार वपक अंतिम दिन एकाध मुंर कलाकृतिका सजन करे द और इस तरह अपने पारिश्रमिकका अधिकारी बन जाय परन्तु साठ भर तक समाज उसका निवां किस नियमसे करेगा? समाजका इस बातका तो कोई भरोसा नहीं होता कि वपके अंतिम दिन वह कुछ न कुछ सजन कर ही देगा। इस तरहके कई प्रश्न खड़े किये जा सकते हैं। समाजवादी इनका इतना ही उत्तर देते हैं कि समाजमें आर्थिक समानता स्थापित करना तो हमारा अंतिम ध्यय है। सब अपनी अपनी शक्तिके अनुसार काम करे और सबको अपनी अपनी जरूरतोंके अनुसार मिल जाय इस ध्यय तक हम पहुंचना है। लेकिन समाजवादो शक्ति आरंभ ही और अंतमें इस ध्यय तक हम पहुंचें "सब पले बीचके" समयमें सिद्धान्तोंके साथ अनेक तरहका समझौता करना ही पड़ेगा। जब तक मनुष्यके मनमें सम्पत्ति और आयके पूनावादा विचाराना असर मिट नहा जाता तब तक कुछ गायना उपाय पारिश्रमिक आरंभ कुछका कम पारिश्रमिक देना ही पड़ेगा। परन्तु पूजावादी गायण मिट गिया जायगा और यह सावधानी रखी जायगी कि काइ एसा निजी सम्पत्ति फिरन सके न कर सके जिमक वत पर वह दूसराका गायण करे सके। इसलिए कम-अधिक आयक कारण समाजमें बरभाव उत्पन्न करनेवाली असमानता नहा फल पायेगी। पारिश्रमिक निश्चित करनेके लिए सामान्यतः नाचक नियम ही सकते हैं।

(१) मनुष्यकी शक्ति और कुशलताके अनुसार तबत उमकी बाजार कीमतके अनुसार।

(२) मनुष्यका कितना कुरखाना करनी पतौ है अर्थात् किसी काममें उमके गराखा कितना घिमाई हाता है वह काम उसके लिए कितना उपाय बाता है इस आधार पर।

() हम जायान पर कि आत्मी कितन घट काम करता है।

१ जिन सामान्य श्रमक काममें विनाप कुशलताका जरूरत न हा उनमें तो कामक घटाता नियम हा ठान है। जिममें मनुष्यका विनाप बुद्धि न लाना पर और उताया हुआ काम नियम डगम करत राना हा उस काममें

कामके घटाका नियम हा लगभग मत्र जगह हाता है। इमन सिवा मगान पर काम करना हा तब मुख्य काम मगान करती है मनुष्यका ता क्वम मगान पर निगाह रखकर खट रहना पन्ता है। दूसर प्रकारका काम निममें मनुष्यक गरार या भनका धिमाइ ज्याग हाता है या ता मनुष्य मनचुराम करता है—दूसरा काम न मिलनक कारण और पटवा गडा भरना जनि बाय हानस लाचार हाकर करता है या ज्याग पारिश्रमिकक गच्छम करना है। समाजवात्म गचाराका ता प्रश्न नहा हाता इमलिए गच्छका हा प्रश्न रहता है। परन्तु पारिश्रमिक ज्याग लिया जाय ता आर्थिक अनमानता पना हागा। इमलिए दूसरा काइ प्रगभन दूटना चाहिय। आर्थिक गम हा ता एकमात्र प्रलाभन नहा हाता। एम कामाक लिए पारिश्रमिक ता दूसर कामाक बराबर ही रखा जाय परन्तु कामक घट दूसर कामामे कम रख जाय ता समभव है कि एम लालचस मनुष्य एम काम करनेका तयार हा जाय कि अतिरिक्त नमयमें बह दूसरा काई मापमन्त काम कर मरगा।

१३ तामरा नियम ज्याग गक्ति और बुगुगतावाक मनुष्याका अधिक वाजार-धीमतका रहता है। यह बात सच ह कि आज य गग अपन पूजीपति मात्तिकाका ज्याग नफा बग्वा मने ह इमलिए इनका वाजार-कामत अधिक है। गकिन एक प्रार समाजमें म व्यक्तिगत मुनाफा और व्यक्तिगत सम्पत्ति प्राप्त करनेका सिद्धान्त मिट गया कि फिर मनुष्याक विचार भा बन्ने विना नहा रहग। व्यक्तिगत मुनाफा आर व्यक्तिगत सम्पत्तिक प्रजाय दूसरा गक्तिया मनुष्यका काम करनेका प्रेरणा रेंगा। मनुष्य-स्वभाव ना एगा है कि उममें जा गक्ति हाता है उन व्यक्ति निय विना उग चन नहा पन्ता। कीर्ति या नामकी चाह अथवा समाजक लिए अधिक ग्ययागा हातका काम सनाप या गिक अच्छा काम करनेक मानिग हा अच्छा काम करनेका वक्ति—य सब मनुष्यमें रहन हा ह। और अगर आजके नफावाग समाजमें भी नफका परवाक निय विना य वक्तिया काम करना हूइ पाइ जाता ह ता नफका तत्त्व नष्ट हा जानन बाक ता इन वक्तियाके लिए और भा ज्याग गवनाग रगगा। पूजीवाग अध्यात्मिवाग मनुष्यका निग अर परगण—कम थम करक ग्याग नफा गनका वक्तिवाग—समयकर अपन सार सिद्धान्त रख डाक । इमलिए उहें य वक्तियाका बका मागूम हाता ह। माय ही एक एगा अथनत्र गडा बग्ग क्रियमें साम्राय आक मियाके गिग निर्वाइर माधन प्राप्त करना गगाम ग्याग बटिन ना ताग उहान एगा भ्रम गडा कर लिया है कि मनुष्य ता गिग अय-गगण ह।

वमे काम एसा चीज है ही नहीं जो मनुष्यको अच्छा न लग। आज ऐसी स्थिति पदा कर दी गई है कि अपनी आवश्यकताय पूरी करनेके लिए मनुष्यका अपने ही भाइयान् खिलाफ जीवन-संग्राम करना पड़ता है उसके दूर होने ही मालूम हो जायगा कि मनुष्य अर्थ-परायण नहीं परन्तु समाज परायण है। आलस्य कामचोरपन घूतता जमे सब दुगुण आजकी भ्रष्टावादी अर्थ रचनाके परिणाम ह। अर्थ रचना बदली कि य दुगुण अपन आप मिट जायग। बगक बीचके समयमें य सब प्रश्न कठिनाइया जरूर पदा करेगे। परन्तु जस जसे कठिनाइया खडी होती जायगा वसे वसे उनका हल भा निकलता जायगा क्याकि मूठ बात यह है कि मनुष्य निरा अर्थ-परायण नहीं है। इसलिए उसकी अर्थ-परायणताको ही आधार मानकर खडी की गई कठिनाइयाको हल कर सकना जरा भी मुश्किल नहीं है। पीटर ड्रुकर नामके लेखने अपनी दि एण्ड आफ डि इकानामिक भन नामकी पुस्तकमें बहुत अच्छी तरह बताया है कि पूजीवादी अर्थतंत्र द्वारा निर्माण किया हुआ अर्थ परायण मनुष्य तो कभाका स्वयं सिंघार गया है।

१४ पूजीवादी अर्थशास्त्री समाजवादकी सफलताके बारेमें तीसरी शका यह उठाते ह कि समाजवादो समाजमें कुटुम्ब मस्याके कायम रहनका कोई कारण बाकी नहीं रहता जिसने मानव जातिकी प्रगतिम अब तक इतना बडा हाथ बढाया है। एक ता इसमें उत्तराधिकारकी प्रथा मिट जाती है और दूसरे बच्चाकी शिक्षाकी तमाम जिम्मेदारी राज्य या समाज ले लेता है सब फिर कुटुम्ब-मस्याकी जरूरत ही कहा रह जाती है? कुटुम्ब मस्याका सबसे बडा उद्देश्य बच्चाकी शिक्षाका है। अपन पदा किये हुए बच्चाका स्त्रा और पुरुष दोना मिलकर अच्छी तरह पालन पोषण करें और उन्हें अच्छी तरह शिक्षा दें इसके लिए कुटुम्बकी जरूरत है और इसीमें कुटुम्बकी सायकता है। बालकके गवाणीण विकासक लिए जिस कुटुम्बता और निस्वार्थ प्रमदने वातावरणकी जरूरत है वह वातावरण कुटुम्बमें ही मिट सकता है। यदि आप बिलकुट छान बच्चाका तमरोमें रखें और उनमे जरा बडी उमरके बालकोके लिए या छानापाय मांगें ता फिर कुटुम्बकी जरूरत कहा रह जाती है? मानमन अपन कमनिस्म मनिफेस्टा में इसका बडा सचोत्तर उत्तर दिया है। वह कहता है कि आपकी दगात्र विच्छिन्न महा है परन्तु यह सब ता आप भंग लागार लिए है। कुठ जनगत्यान नव्य प्रतिगानम ऊपरका सल्यावाठ हम मजदूर गणारा कहा का उत्तराधिकार दन हैं? और कहा हमारे बालकोंको शिक्षा सस्टका तागम नना है? जना स्त्रियाको भा पुरुषाके माय काम पर

जाना पड़ता ही और कारखानामें काम करनेवाली स्त्रियांको अपने गिण्टुआका दूध पिलानके लिए भा मुश्किलम समय मिलता ही वहा बालकाका दूसरा सभा और शिक्षाकी तो बात ही पदा नहा हानी। अब आप कारखानामें झूल रगन लग ह परन्तु इसम पहे ता हम बच्चाको मगान विभागक गारगुलम हा रखत थ और फिर जब ब घर पर छा आन लायन हा जाते थ सत्र बचार हमारा गदा चागमें जोर ग मुहल्लामें आबारा फिरत फिरते बड हाने थ और ज्या हा बाडे मयान हाने त्या हा आपन कारखानामें काम पर आन लगने थ। हमार कुटुम्ब आपन कारखानाक लिए मजदूर पन करनक सिवा जोर क्या काम करत ह? अगर हमार कुटुम्ब नष्ट हा जाय ता माता पितान द्वारा हानवाग बच्चाका पापण नष्ट हानक सिवा और कुछ भा नष्ट नग हागा।

१५ इसम कौन इनकार कर सकता है कि मजदूर-बगवा आजकी स्थितिमें ता यह बात मागहा आन सच है? दूसरा जार इस बातम भा कौन इनकार कर सकता है कि बच्चाकी गिणाक लिए माता पिताका प्रममरा और गीतल छाया जरूरी है और उमरा स्थान नसरा या बाल छात्रालय नहा ल सतत? मच्छा उपाय एव हा है एसा अय रचना स्थापित करनका प्रयन किया जाय जिसमें माता पर कमाइ करनका भार न हो उमका प्रधान बतव्य बच्चाका पालन पापण और उन्हें गिणा दना हा हा तथा माताका इस तरहकी तागम गी जाय जिसस इस बतव्यम सम्बन्धित उमका ना और कुगलना ब। स्त्रियाक गिण ऊकी गिणाकी ज्याग जरूरत है, परन्तु डाक्टर बरीग या प्रोफेसर बदनके लिए नहा। जिन स्त्रियाका डाक्टर बकीग या प्रोफेसर बनना हा ब भग हा बने परन्तु उनका सग बडा काम ता भाग पातीग उत्तम रानिम पागन-पापण करन उन मुममगारी बनाना हा है। और इस कामक गिण कौगम्बिस चादन आवपर ह। यान यह काम पूरा करनक गिण बतमान अय रचनामें जडमूत परिपतन ता हाना ही चाहिय और स्त्रियाका पुगपति भी अधिन अठा गिणा थि थिना यह हा नहा गकगा।

१६ यह सच है कि पूजागणियाग ऊगका गीगामें बहूत गार नहा है। परन्तु गाकगा यह है कि गारा दुनियाका मनानवाग आनकी तमाम बुराइयाका इजाज ममाजवात्म हा गकगा या नग? गगक प्रयागन गग गमय जा गिगा परडी है उमग एगा आगा नहा बष सतता। यह गीग गग जा शकता है कि गगन तो समाजवात्म कुछ मूतमून गिदान्तानि चाप गमगोता

श्रम पर नहीं परन्तु फुरसत पर खड़ी करता है और ऐसा करव वह आजकी कई बुराइयाने लिए गुजाइग रखता है। फिर वह कहता है उस प्रकार यदि प्रत्येक मनुष्यके लिए कामके घट रोग चार या इससे भी कम किय जा सकेंगे तो बाकीके फुरसतके समयका लाग क्या उपयोग करेगा और उसमें कैसे किस प्रश्न पदा हाग यह एक बड़ी भारी समस्या है। आता फुरसतता सदुपयोग करनेकी गन्ति और बुगारता विरुधे मनुष्याम ही पाई जाता है और इसीलिए हम लोगाम यह कहावत पडी है कि ठाला बठा सत्यानास पाते ।

२० मनुष्य अपनी आर्थिक मुल्य गुविधार्ये बनाता चला पाय इसे समाज बाग मनुष्य जीवनका एक महत्वपूर्ण ध्यय मानता है। अर्थोत्पादन बनात हुए उपभागने साधन भी बनाते रहना इस वह सभस बडा सामाजिक पुरपाथ समताता है। परन्तु वह यह नहीं जानता कि इन दोना प्रवर्तितमा — जयों त्पादन और उपभोग अथवा अथ और 'काम —के अमुक सामा तक पहुच जानवे बाद उन पर राव लगानेकी जरूरत है। इसलिए यह डर घना रहता है कि दुनियासे आर्थिक स्पर्धा और युद्धको मिटानका उसका दावा होते हुए भी वह इसमें असाफल रहगा।

३

गांधीजीका आर्थिक कार्यक्रम

१ वर्तमान पूजीवाणी अथ रचनाका जिन अना बुराइयाने — गाता तीर पर बकारी मरावा और विचाराणा मुद्ध — दुनिया परगान है उनका उपायन रूपम समाजवादी अथ रचना स्थापित करनेका मूचता दा जाता है। उम अथ रचनाके मुख्य निदान्त मम मय चुक ह। इमने अनाम समाजवाणा सामासावाण प्रकरणमें समाजवाणा अथ रचनाक कुछ दापारी आर तथा मय बातका आर ध्यान गाता गया है कि व्यक्ति और मनाजय जायता सत्रध रणनवाणी महत्वपूर्ण गाता मूल्यातनाम मय अथ रचनाम वनियाना पत्रिवनत नहा हात। पूजीवाणी अथ रचनाका बुराया डूर करनक म्पि गाथावान ना एक आर्थिक कार्यक्रम लागान गाग प्रम्नुत मिया है। हा गाथावा गात्ररार नहा थ। इमन्मि वाग माकमका तम दुनिया म्पिनामका पाच करव और वाच दादगवा परमगवा समपादर उगात एम बाग वाग मदा नहा मिया है कि अमुक अथ रचनाके बाग अनुक अथ रचना ही निनाग हानी पात्रिय मा

होगा। गांधीजी तो अपन पसन्द किय हुए जीवनके कुछ विशय आदर्शके उपासक होनेके साथ साथ एक व्यावहारिक विचारक और सुधारक थ। और इस तरह उाके सामन जो जा प्रश्न आय उनका हल ढूढते ढूढते अथ वाताके साथ साथ आर्थिक वाताम भी के जमुक निणया पर पहुचे थ। उनका काय क्षम इतना व्यापक था कि जीवनम सम्भव रखनेवाले लगभग सभी प्रश्नाकी उह छानबीन करनी पडा है। आर इस तरह किसी भी क्षममें गारुन्कार या वाद निर्माण करनवाले न होकर भा या होनेका प्रयत्न न करते हुए भी उहान उन क्षममें सुधारका विस्तृत कार्यक्रम तो लिया ही है। इसके सिवा थ जीवनका समग्र दृष्टिस विचार करते थे इसलिए उनके कायक्रममें एक निश्चित विचारसरणीकी एकसूत्रता पाई जाती है। यह कहा जा सकता है कि उनका आर्थिक कायक्रम भा एसा एकसूत्रता रखनेवाला है।

२ यहा एक घात ध्यानमें रखना चाहिय। उहान जो आर्थिक कायक्रम प्रस्तुत किया है वह हमारे देाका परिस्थितियोंका ध्यान रख कर ही किया है। उनका कायक्रम यह बताता है कि हमारे देाके आर्थिक प्रश्न किस तरह हल किय जा सकते ह। लेकिन हमारे देाके आर्थिक प्रश्नाको दुनियासे अलग नही किया जा सकता। उनमें स ज्यादातर प्रश्न तो इंग्लण्डके साथ हमारा सम्बन्ध होनेके कारण ही पदा हुए थ। इंग्लण्ड हम पर राजनीतिक सत्ता जमाई उसका पहल उसन आर्थिक आक्रमण गुरु कर दिया था। वह हम पर सिर्फ राजनातिक सत्ता ही नहा भोगता था बल्कि आर्थिक सत्ता भी भोगता था। और इन दोनों सत्ताओंसे भी अधिक तो उसन हमारे शिक्षित समाज पर विचाराकी सत्ता जमा ली थी। इा सब सत्ताओंके खिलाफ किय गय युडे विनाहमें स गांधीजीके आर्थिक और दूसरे कायक्रमोंका जम हुआ है। उनके कायक्रममें व उपाय बताय गय ह जा एक गुणम प्रजाको आजा होनेके लिए करन चाहिय। इसलिए ऊपर ऊपरस दखन पर एसा लग सकता है कि गांधीजीका कायक्रम सिर्फ पराधान प्रजाओंका स्वतंत्रता प्राप्त करनका और शापणस मक्त होनेका कायक्रम है। परन्तु वह कायक्रम एसा है जा सत्ता भागनवाला या शापण करनवाला प्रजाओंको भा अली तरह लागू हो सकता है। उनका कायक्रमका बुनियातमें आर्थिक न्याय और समानताका तत्व है, इसलिए जा वह शापित प्रजाका दष्टिम उमक छुटकारेक लिए उपयोग है थन हा शापित प्रजा जा बन्धाय करता है उमन उसका उद्धार करनके लिए भा उपयोग है। उन मूल्य गांधीजीका कायक्रम सिर्फ हिन्दुस्तानक

लिए हाने पर भा दुनियामें गान्धि स्थापित करनेका दृष्टिमें वह दूसर दगा पर भा गगू किया जा सकता है।

२ गांधीजीका आर्थिक कार्यक्रममें एक तत्त्व यह ध्यानमें रखत जमा है कि व आर्थिक प्रश्ना पर सामाजिक और नानिक प्रश्नामें अलग विचार नहा करत। यह उनका एक मूळ सिद्धान्त है कि व्यक्ति या समाजमें सब रचनेवाला किसी भा प्रश्नका या किसी भा सामाजिक शास्त्रक सिद्धान्तका विचार करत समय धम और नानिका अथवा मानव जानिक श्रेष्ठ कल्याणका विचार सदा सामन रखना चाहिये। जयगाम्त्रा एमा कर्तन है कि आर्थिक प्रश्ना पर शुद्ध गाम्त्राय ढगस विचार बगना हा ता उममें धम या नीतिका बीचमें नहा लाना चाहिये। गांधीजी कर्तने है कि मनुष्य जायतन सम्प्रचित सिमा भा प्रश्नका विचार धम और नानिका छानकर करनेकी बात हा अगाम्त्राय है, क्यानि धमगाम्त्र नातिगाम्त्र रायगाम्त्र समाजगाम्त्र और कानूनगाम्त्र सब एक-दूसरक साथ हम तरह सम्प्रद्ध ह कि उन सबको एक-दूसरक अलग मानकर उनस सम्प्रचित प्रश्ना पर विचार किया हा नहा जा सकता।

४ गांधीजीका कार्यक्रम अधिक व्यापक और प्रश्नका जड तक जानवाला है। आजक जीवनमें वह बुनियाती परिवर्तनका तराजा करता है। हमारा आन्ता राति रियाजा फाना और विचारामें भा वह जडमूला परिवर्तन चाहता है। सभामें कहा जाय ता उमस सारे जावन पर नय निरा विचार करनेका आवश्यकता पर भार किया गया है। गांधीजीका कार्यक्रमका यह प्रधान स्वल्प ध्यानमें रखकर हम उमका विस्तृत चचा करेंग।

स्वदेशी

५ गांधीजीकी मपूर्ण आर्थिक योजनाका आधार स्वदेशी है। हमारे देशमें स्वदेशी आन्दोलनका जन्म विदेशी उद्योगधंधाका स्पर्धामें हमारे देशके उद्योगधंधाका बचानका और देशा कारागमका उत्तजन इनका सामर्थ्यताम हुआ है। जब हमारे देशमें विदेशी मालक हर जगह ग्य और देशा उद्योगधंधे नष्ट हान ग्य तब इन धंधाका बचानक लिए सरकारका विनियतन जरासा मात्र पर आधारितकर जगाना चाहिये था। परन्तु सरकार विदेशी उद्योग। उन भंग हमका चिन्ता क्या हा? एत निररान उनका नाश ता भारतका नुकसान पहुचानक अन्त एत उद्योगधंध बचानका था। हमरि स्वदेशी आन्दोलनक जरिये जगान क साम अन्त हायम किया। परन्तु स्वदेशी स्वदेशीका एना मनुजित अय शर्ती किया। गांधीजीक स्वदेशी धममें जिन्ह

विलायती यन्त्राद्योगादि विरुद्ध ही नहीं बल्कि अपने देशके कारखानेवालोंके विरुद्ध भी हमारे गांधीके घाघी रक्षा करनी बात है। हमारे देशके कितने ही उद्योग छोट धड़े मृतप्राय हो रहे हैं और कुछ तो मर भी गए हैं। उसका कारण देना और दियेगी बड़े कारखाने हैं। हमारे ग्रामोद्योग हमारी खेतीको बुरा पहचानवाले थे। हमारे किसानोंका बाराहा महीने काम नहीं रहता था इसलिए फुरसतके समय खाना अथवा दूसरा कोई उद्योग करके वे अपनी जीविका चलाते थे। परन्तु शुरूमें दियेगी और बादमें देशी मिलोंके कपड़ेके कारण सादाका उद्योग नष्ट हुआ और इस तरह कारखानोंमें तयार हुए दूसरे मालके कारण दूसरे ग्रामोद्योग नष्ट हो गये। हमारे देशके किसानोंको कमाया और अनिवाय बनारीको जिस रूपमें गांधीजीने देखा है उस रूपमें शायद हमारे देशमें बुरा जवाबदाना या अर्थशास्त्रज्ञ भी नहीं देखा होगा। इसका विचार करना पर गांधीजीका पता चला कि स्वदेशीका विस्मरण हमारी आजकी दुर्दशाका सबसे बड़ा कारण है। स्वदेशीको वे आजका युगधम कहते हैं। एसा स्वदेशी धम कौनसा हा सकता है जिसे सब लोग समझ सकें और जिसका पालन करनेकी इस युगमें सब देशमें बड़ी आवश्यकता है? एसा कौनसा स्वदेशी धम हा सकता है जिसके अल्प पालनसे भी हिन्दुस्तानके बुराया मनुष्योंकी रक्षा हा सकती है? इसका उत्तरमें चरखा और खानी मिला। दोनों हमारे ग्रामोद्योग भी उनमें शामिल कर लिये गये।

६ यह स्वदेशी धम सिर्फ हमारे ही देने लिए नहा बल्कि सब देशोंके लिए जरूरी है। आज प्रत्येक सम्य माना जानेवाला और उद्योग घघामें आग लगा हुआ देश अपने देशका माल दूसरे देशोंमें भरनेकी कोशिश कर रहा है। देशी उद्योग बाजार पर अधिकार करनेके लिए इन बड़े समझ जानवाले देशोंके बीच घघान प्रतिस्पर्धा चल रही है। फिर इसके लिए आयातकर लगाकर विदेशी मालका अल्प देशोंमें आनम राजनेकी और अपने देशके उद्योगोंका तरह तरहका महामता देकर अपने देशका माल दूसरे देशोंके बाजारोंमें भर देने और सम्मान बचनवा प्रयास भा आश्रय लिया जाता है। इसका सिवा बाजार पर अधिकार करनेके लिए राजनीतिक सत्ता तथा कूटनीति और सत्तिका बुराया भी चुने हाया उपाय किया जाता है। हर देशका अपने अपने व्यापार घघाने रक्षानेके लिए शास्त्रसि सज रचना पना है और जनता इस सत्तिका लक्ष्य बाक्षर नाच देखकर बराहता रहता है। प्रथम महायुद्ध भा द्विती व्यापारी स्पर्धाका परिणाम था और दूसरे महायुद्धका भा यहा कारण था। सारी दुनिया इन युद्धोंके मार ब्राहि ब्राहि पुकार रही है। युद्धका इस भयकर

परम्परास बचनेका एकमात्र उपाय यही है कि तमाम देश शुद्ध स्वदेशीका पालन करने लग जाय। इसीलिए गांधीजी स्वदेशीको इस युगके महाराजका रामबाण उपाय कहते हैं।

७ बड़े बड़े कारखानोंमें मजदूर-वर्गको चूसा जाता है और उत्पादन समाजकी आवश्यकतायें पूरी करनेके उद्देश्यसे नहीं बल्कि नफेके लिए होता है। इसलिए बहुतसा जरूरी चीजोंके बिना लाग मारे मार फिरत ह और अनावश्यक चीजोंका जबरनसे ज्यादा उत्पादन होता है। इसका उपाय काल माक्स यह बताता है कि उत्पादनके सब साधना पर समाज या राज्यका अधिकार करके उत्पादनका नियंत्रित कर लिया जाय। परन्तु समाजवादकी मीमांसामें हम दख चुके हैं कि उत्पादनके साधना पर राज्यका स्वामित्व हो जाय तो भी राज्य पर लोगोंका स्वामित्व नहीं हो पाता। कोई भी राज्य सच्चा लोकतंत्र तो तभी कहना सकता है जब राज्यकी ध्येयस्था पर आम लोगोंका सच्चा नियंत्रण हो। परन्तु इस तरहका नियंत्रण पश्चिमके लोकतांत्रिक बहलान वाले राज्यों से किसी भी राज्यमें—रूस तकमें—ऐसनमें नहीं आता। बड़ बड़ राजनीतिगोरा कहना है कि पश्चिमका लोकतंत्रका प्रयोग असफल रहा है। वरन् इस तंत्रकी रचनामें ही नष्ट बल्कि इसकी बुनियादमें भी दोष है। यह सारा तंत्र हिंसा पर रचा हुआ है जब कि गांधीजी कहते हैं कि जब तक समाजक तंत्रकी बुनियादके तौर पर—उसके मुख्य आधारके रूपमें—अहिंसाका स्वीकार नही किया जायगा तब तक सच्चा लोकतंत्र कभी स्थापित नही किया जा सकेगा। और समाजका अहिंसाके सिद्धान्त पर चगना हो ता मानव जातिसा प्रगतिका आजकी मजिलमें तो हम बहुत बड़ तंत्र तहा चल सकेंगे क्योंकि मनुष्यने मित्राल तंत्रको सिर्फ लोकमनन बल पर चलानया शक्ति और कुशलता अभी तक प्राप्त नही की है। मनुष्यका अभी तक इतना मित्राल नही हुआ है। इसलिए बड़े-बड़े तंत्र चलानके लिए राष्ट्र या मन्त्रि शक्ति अनिवार्य हो जाती है। उत्पादनका बर्द्धित करके बड़ पमान पर चगाने लिए बड़े बड़े कारखानोंकी और आन्तर राष्ट्रीय व्यापार तथा अर्थ-व्यवस्थाकी रक्षा करनेके लिए पश्चिम राष्ट्रियता—अर्थात् ही मन्त्रि शक्तिके बलवाली—का होना अनिवार्य है। इसलिए इस योजना मन्त्राल पत्रके छत्रकारा पाना हा ता गांधीजी कहत ह कि हमें आजक समाजक जटिल अर्थ-व्यवस्थाको निगरानि करनी हागा और हमारे व्यवहारका मरक बनाकर उन्हें छत्र क्षेत्रमें मर्यापित करना हागा जिसमें एक-दूसरे पर नरिण प्रभाव डाला जा मत। आजक अर्थिक और राजनीतिक संवालाकी चर्चामें बड़ बड़े दूरव्यवहारिक

उद्योगशास्त्रिया कानूनके पडिनो जीर दूसरे निष्णातोको रम आना होगा परन्तु सामान्य आदमीको उनकी एक भी बात समझमें नहीं आती। कुछ लोग अखबारोंमें इन प्रश्नोंकी चर्चा पढकर या विशासनो द्वारा प्रकट किये हुए मताको रटकर इन सब बातोंको समझनका दावा या ढोंग कर सकते ह परन्तु ऐसे प्रश्नोंके बारेमें निणय करनेकी सत्ता तो हर देशमें राज्यदड धारण करनेवाले छोटस गुटक हाथमें ही होती है। और दो देशोंके आपसी सम्बन्धोंके बारेमें भी जो दग बलवान हो उसीकी बात चलती है। इसलिए अन्तमें सब बातोंको देखते हुए सारी दुनियाको डरा सबनवाले बलवान देशोंके शासक-वग पर ही सारा आधार रहता है।¹⁾ इसलिए मामूली जादमियोंको आम लोगोंको अपनी आजादीका रक्षा करनी हो तो उह अपनी दुनियाको छोटी बना लेना पडेगा। उह अपन व्यवहारोंका दायरा इतना छोटा कर लेना पडेगा कि उन्हें वे समझ सकें और उन पर अपना ऋण भी रख सकें। अपन जीवनीकी बुनियादी चीजोंके लिए और जीवनीसे सम्बन्ध रखनवाली दूसरी बातोंके लिए उह दूर दूरक नहा बल्कि नजदीकके लोगोंके साथ व्यवहार रखना पडेगा। तभी वे स्वतन्त्रता भोग सकेंगे और तभी वे सच्चे प्रजातन्त्रका अनुभव कर सकेंगे। १)

८ जीवनीकी प्रतिदिनीकी आवश्यक चीजोंके बाजार आज तो ससार व्यापी हो गये ह। गांधीजीकी स्वदेशीकी योजनासे ये बाजार भी खतम हो गाने ह क्योंकि गांधीजी आजके उत्पादनकी समूची पद्धतिको ही बदल डारना चाहते ह। पूँजीवादी रचनामें व्यापारिया या सटारियाके लिए और समाजवादी रचनामें राज्यके अधिकारियोंकी सूचनाके अनुसार लोगोंके लिए उत्पादन होता है। इससे बजाय गांधीजीकी रचनामें उत्पादक लोग अधिकतर अपन ही लिए उत्पादन करते ह। जिस व्यवस्थामें एक गाव या एकसी कुत्तरी स्थितिवाला एक प्रदेश आर्थिक व्यवहारका लगभग स्वावलम्बा घटक बन जाय हर कुटुम्बके पास उत्पादनक माधन उसक अपन ही हो चीजाका उत्पादन नफके लिए या दूरके बाजारोंमें बेचनक लिए नहीं बल्कि हमारा अपनी और हमारे पन्गियोंका पहलस मोची हुई आवश्यकतायें पूरी करनेके लिए होता हो ऐसी व्यवस्थामें जन्म जन्म उत्पादनका प्रश्न ही खडा नहीं हाना। उस गाव या प्रान्तके जन्मतर कुत्तय अपन कामका लगभग सभी चीज स्वय तयार कर लें जा चीजें स्वय न बना सकें और फिर भी जो जरूरी हा ऐसा चीजें भी जहा तक पन्गमें तयार हानो हा वहा तक बाहरसे लाकर उपयोग न करनेका स्थानाविक धम पानन कर तो आज आयात निर्यातका जा व्यापार

अनावश्यक रूपमें बढ गया है और जिस व्यापारन दुनियाके देगाके बीच लडाईका रूप धारण कर लिया है वह व्यापार अपने आप कम हो जायगा। फिर तो जो चीजें हमारे पडासमें बन ही न सकती हा या बहुत अधिक थमस और न करने योग्य थमस ही बन सकती हा उन्हीका आयात हागा, और हमारे प्रन्तमें बननेवाली चीजसे सार पडासकी जरूरतें पूरी होनेके बाद जो चीजें बचेगी उन्हीका निर्यात हागा।

९ इस योजनामें मनुष्यको कुछ डानेवाली राशानी मानीं काममें नहीं ली जायगी इसलिए हो सकता है कि उत्पादनकी मात्रा कम हो जाये या आज साधारण मनुष्यको भी शारखानाकी बनी हुई जा अनेक तरहका चीजें उपयोगके लिए मिलती ह व न मिलें। आजके अथगास्त्री यह कह कर हमें समयाते ह कि पहले बड बडे अमार-उमरावा और राजा महाराजाआको भी जसी चीजें उपयोगके लिए नहीं मिलती थी ऐसी बितनी ही वस्तुए आज सामान्य आदमीको भी उपयोगके लिए मिलती ह इससे पता चलता है कि दुनियान बितनी बडी आर्थिक प्रगति की है। व यह भी कहते ह कि आप अगर इस तरह ग्रामोद्योगवाली अय रचना करग तो जीवनको अमुविधाआवाला ही बना रहने देंग। केविन गावामें घाडम आदमियाने टाच लाइट काममें ले ली कुछ नौजवानाने अगर रिस्त बाच बाघ ली या जवमें फाउंटन पेन रख लिया अगर गावक घोडम घरामें प्राइमम जलन लगा गावमें कार-स्वाहार पर पट्टामकम की रागनी हो गई गावके कुछ निठल नौजवानान हाटलमें बठरर चायके प्यान् पी लिय या मिगरेटें फूज दा या घाडस आन्मियान मात्र वममें यात्रा कर ली ता इसते क्या लागाना आट्टिघ मिट जाता है? क्या लागाना गानके लिए भग्पट अन्न मिलन लगना है? क्या लागाना गानके लिए अच्छी साग माजी मिलती है? क्या लागाने पेटमें दूध थी अधिक जाता है? क्मलिए हमें चुनाव करना है हानिनाख मौज-मौज और पीटिक् भाजनक बाच गापण और गुरशाने बीच तथा पराधानना ओर म्याधाननाक बीच।

१० इस स्वामी घम या नीतिने विरुद्ध यह क्या जाता है कि यह नाति ता अपन धारा आर दीवार गहा करक उनक बीच घुन्तर मर जानै जमी है। एमा भी कहा जाता है कि यह नाति अपना हिा माघनके लिए दूगराने रूप करनकी नीति है। परन्तु ये धाराए स्वामीका मच्चा अप न ममानम हा पना होना ह। यह तो कोई भी नहीं कान्गा कि विगाए या उन्तर दलि गानक बागण धारका धारा करनसे ओर टाकूका लूनस न रावा जाय। आजका

उद्योगशास्त्रियों वानूनके पंडितों और दूसरे निष्णातोंको रस आता होगा परन्तु सामान्य आदमीको उनकी एक भी बात समझमें नहीं आती। कुछ लोग अखबारोंमें इन प्रश्नोंकी चर्चा पढ़कर या विशपत्रों द्वारा प्रकट किये हुए मताको रटकर इन सब बातोंको समझनका दावा या ढोंग कर सकते हैं परन्तु ऐसे प्रश्नोंके बारेमें निणय करनेकी सत्ता तो हर देशमें राज्यदंड धारण करनेवाले छोटेसे गुटके हाथमें ही होती है। और दो देशोंके आपसी सम्बन्धोंके बारेमें भी जो दंग बलवान हो उसीकी बात चलती है। इसलिए अन्तमें सब बातोंको देखते हुए सारी दुनियाको टरा सकनवाले बलवान देशोंके शासक-वर्ग पर ही सारा आधार रहता है।^{१)} इसलिए मामूली आदमियोंको आम लोगोंका अपनी आजादीका रक्षा करनी ही तो उन्हें अपनी दुनियाका छोटी बना लेना पड़ेगा। उन्हें अपने व्यवहारोंका लक्ष्य इतना छोटा कर लेना पड़ेगा कि उन्हें वे समझ सकें और उन पर अपना अकुण भी रख सकें। अपने जीवनकी बुनियादी चीजोंके लिए और जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाली दूसरी बातोंके लिए उन्हें दूर दूर तक नहीं बल्कि नजदीकके लोगोंके साथ व्यवहार रखना पड़ेगा। तभी वे स्वतंत्रता भोग सकेंगे और तभी वे सच्चे प्रजातंत्रका अनुभव कर सकेंगे। १)

८. जीवनकी प्रतिदिनकी आवश्यक चीजोंके बाजार आज तो ससार व्याप्य हो गये हैं। गांधीजीकी स्वदेशीकी धारणासे ये बाजार भी खलम हो जाते हैं क्योंकि गांधीजी आजके उत्पादनकी समूची पद्धतिको ही बदल डालना चाहते हैं। पूँजीवादी रचनामें व्यापारियों या स्टोरियोंके लिए और समाजवादी रचनामें राज्यके अधिकारियोंकी सूचनाके अनुसार लोगोंके लिए उत्पादन होता है। इसके बजाय गांधीजीकी रचनामें उत्पादक लोग अधिकतर अपने ही लिए उत्पादन करते हैं। जिस व्यवस्थामें एक गाँव या एकसी कुदरती स्थितिवाला एक प्रदेश आर्थिक व्यवहारका लगभग स्वायत्तम्बी घटक बन जाय हर कुटुम्बके पास उत्पादनके साधन उसके अपने हाँ हैं। चीजोंका उत्पादन नफ़के लिए या दूरके बाजारोंमें बेचनेके लिए नहीं बल्कि हमारी अपनी और हमारे परिचितोंकी पहँच सोची हुई आवश्यकताओं पूरी करनेके लिए होना ही ऐसी व्यवस्थामें जहाँ जहाँ जहाँ उत्पादनका प्रश्न ही खड़ा नहीं होता। उस गाँव या प्रदेशके अन्दर कुटुम्ब अपने कामकी लगभग सभी चीजें स्वयं तैयार कर लें जाँ चार्जें स्वयं न बना सकें और फिर भी जो जरूरी है ऐसी चीजें भी जहाँ तक पड़ोसमें तैयार हानी है वहाँ तक बाहरसे लाकर उपयोग न करनेका स्वभाविक धर्म पालन करें तो आज आयात निर्यातका जो व्यापार

अनावश्यक रूपमें बढ़ गया है और जिस व्यापार दुनियाके देशके बीच लड़ाईका रूप धारण कर लिया है वह व्यापार अपने आप कम हो जायगा। फिर तो जो चीजें हमारे पड़ोसमें बन ही न सकती हैं या बहुत अधिक थमम जीर न करने योग्य थमसे ही बन सकती हैं उन्हें आयात होगा और हमारे प्रान्तमें बननवाली चीजसे सारे पड़ोसकी जरूरतें पूरी होनेके बाद जो चीजें बचेंगी उन्हें आयात होगा।

९. इस योजनामें मनुष्यका कुशल डालनवाला राष्ट्रीय मशीनों काममें नहीं ली जायगा इसलिए हो सकता है कि उत्पादनकी मात्रा कम हो जाये या आज साधारण मनुष्यको भी कारखानाकी बनी हुई या अनेक तरहकी चीजें उपयोगके लिए मिलती हैं व न मिलें। आजके अध्यापत्री यह कह कर हमें समझाते हैं कि पहले बड़े बड़े अमीर-उमरावा और राजा महाराजाओंको भी जसी चीजें उपयोगके लिए नहीं मिलती थीं वही कितनी ही वस्तुएं आज सामान्य आदमीको भी उपयोगके लिए मिलती हैं इससे पता चलता है कि दुनियात कितनी बड़ी आर्थिक प्रगति की है। वे यह भी कहते हैं कि आप अगर इस तरह प्रगतिवादी अर्थ रचना करण तो जीवनको अनुविधाआवाला ही बना रहने देंगे। लेकिन गावामें थोड़ा आधुनिक टाच लाइट काममें ले ली कुछ नौजवानाने अगर रिस्ट वाच बाघ ली या जबमें फाउंटेन पेन रख लिया अगर गावक घाडेम घरामें प्राइमम जलन लगा गावमें कार-ट्योहार पर पेट्रोलम का रानी हो गई गावके कुछ निष्ठाने नौजवानाने हाटलमें बठकर चापके प्याले पी लिये या सिगरेटें फूट दा या थोड़ा आधुनिक माटर कममें मात्रा कर ली तो इससे क्या लोगका दारिद्र्य मिट जाता है? क्या लोगको गानके लिए भरपूर अन्न मिलन लगता है? क्या लोगको गानके लिए अच्छी साग भाजा मिलती है? क्या लोगके पैरमें दूध पी अधिक जाता है? इसलिए हमें चुनाव करना है हानिकारक मोज गीर और पीछे भाजनके बीच गणप और मुख्याके बीच तथा पगधानता और स्वाधानता बीच।

१०. इस स्वयंसेवक या नीतिव विरुद्ध यह कहा जाता है कि यह नीति तो अन्न धारा और दीवार सहा करने उमक बीच घटार मर जाये जमी है। एसा भी कहा जाता है कि यह नीति अपना हित साधनके लिए दूसराने दूध करनेकी नीति है। परन्तु ये दावा स्वयंसेवक मन्त्रा अथ न समझनम हा पना होना है। यह तो बार्ड भी नग कहगा कि विद्यालय या उम्हारे दृष्टि रखनके कारण धारको धारो करने और दावको लूनस न राका जाय। आदर

उद्योगशास्त्रियों कानूनके पड़ितो जीर दूसरे निष्णाताको रस आता होगा परन्तु सामान्य आदमीको उनकी एक भी बात समझमें नहीं आती। कुछ लोग अखबारामें इन प्रश्नोंकी चर्चा पढ़कर या विशपत्रा द्वारा प्रकट किय हुए मतोंको रटकर इन सब बातोंको समझनका दावा या डोग कर सकते हैं परन्तु ऐसे प्रश्नोंके बारेमें निणय करनेकी सत्ता तो हर देशमें राज्यदंड धारण करनेवाले छोटेसे गुटके हाथमें ही होती है। और दो देशोंके आपसी सम्बन्धोंके बारेमें भी जो देश बलवान हो उसीकी बात चलती है। इसलिए अन्तमें सब बातोंको देखते हुए सारी दुनियाको डरानेवाले बलवान देशके शासक-वर्ग पर ही सारा आधार रहता है।¹⁾ इसलिए मामूली आदमियोंको आम लोगोंका अपनी आजादीकी रक्षा करनी हो तो उन्हें अपनी दुनियाको छोटी बना लेना पड़गा। उन्हें अपने व्यवहारोंका दापरा इतना छोटा कर लेना पड़गा कि उन्हें वे समय सकें और उन पर अपना अंकुश भी रख सकें। अपने जीवनकी दुनियादी चीजोंके लिए और जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाली दूसरी बातोंके लिए उन्हें दूर दूरके नहीं बल्कि नजदीकके लोगोंके साथ व्यवहार रखना पड़ेगा। तभी वे स्वतन्त्रता भोग सकेंगे और तभी वे सच्चे प्रजातन्त्रका अनुभव कर सकेंगे। १)

८ जीवनकी प्रतिदिनकी आवश्यक चीजोंके बाजार आज तो ससार व्यापार हो गये हैं। गांधीजीकी स्वदेशीकी योजनासे ये बाजार भी खतम हो जाने हैं क्योंकि गांधीजी आजके उत्पादनकी समूची पद्धतिको ही बदल डालना चाहते हैं। पूँजीवादी रचनामें व्यापारियों या सटोरियोंके लिए और समाजवादी रचनामें राज्यके अधिकारियोंकी सूचनाके अनुसार लोगोंके लिए उत्पादन होता है। इसका बजाय गांधीजीकी रचनामें उत्पादक लोग अधिकतर अपने ही लिए उत्पादन करते हैं। जिस व्यवस्थामें एक गाँव या एकसी कुदरती स्थितिवाला एक प्रदेश अधिक व्यवहारका लगभग स्वावलम्बी घटक बन जाय हर कुटुम्बके पास उत्पादनके साधन उसका अपने ही हैं। चीजोंका उत्पादन नफ्के लिए या दूरके बाजारोंके बचनके लिए नहीं बल्कि हमारी अपनी और हमारे पड़ोसियोंका पहचान सोची हुई आवश्यकतायें पूरी करनेके लिए हाता हो ऐसी व्यवस्थामें जन्मजन्म ज्यन्त उत्पादनका प्रश्न ही खड़ा नहीं होता। उस गाँव या प्रान्तके उत्पादन कुटुम्ब अपने कामकी लगभग सभी चीजें स्वयं तैयार कर लें जाँ चाँ स्वयं न बना सकें और फिर भी जाँ जरूरी हो ऐसी चीजें भी जन्म तब प्रान्तमें तैयार हाती हो वहाँ तक बाहरसे तैयार उपयोग न करनेका स्वाभाविक धर्म पालन कर तो आज आयात निर्यात जाँ व्यापार

अनावश्यक रूपमें बन्द गया है और जिस व्यापार दुनियाके देगारे बाच लडाईवा रूप धारण कर लिया है वह व्यापार अपने आप बन्द हो जायगा। फिर ता जा चीजें हमारे पडोसमें बन हा न सकता हा या बहुत अधिक धमस और न करने योग्य थमस हा बन सकती हा उन्हाका आयात हागा और हमारे प्रान्तमें बननवाली चाजसे मार पडामकी जरूरतें पूरा होनेके बाद जा चीजें बचेगा उन्हीका निर्यात हागा।

९ इस याजनामें मनुष्यको कुचल डालनेवाली राक्षसा मनीनें काममें नही ला जायगा इसलिए हा सकता है कि उत्पादनकी मात्रा कम हा जाय या आज साधारण मनुष्यको भा कारवानाकी बनी हुई जा अन्क तरहका चाजें उपयोगके लिए मिलता ह व न मित्रें। आजके अध्यात्मशा यह कह कर हमें समझाते ह कि पहल बडे बडे अमीर-उमरावा और राजा महाराजाआकी भी जनी चाजें उपयोगके लिए नहा मिलता था एसी कितनी ही धन्तुए आज सामान्य आत्मोको भी उपयोगके लिए मिलती ह इससे पता चटना है कि दुनियान कितनी बडी आर्थिक प्रगति का है। व यह भी वहां ह कि आप अगर इस तरह ग्रामोद्यागवाला अथ रचना करण तो जीवनको अनुविधाआवाला ही बना रहने देंग। लेकिन गावामें घाडम आत्मियोन टाच लाइट काममें ले ला कुछ नौजवानाने अगर 'रिफ्ट बाच बाघ ली या जबमें फाउटेन पेन' रख लिया अगर गावके घोडम घरामें 'प्राइमम जलने लगा गावमें बार-स्थागर पर 'पट्टोमकम की रागनी हो गई गावने कुछ निठान नौजवानाने हाटलमें बठनर चायक प्यापी लिय या मिगरेटें फूव दा या घाडस आत्मियोन मात्र धममें यात्रा कर ली ता इमने क्या लागारा दाखिध मिट जाता है? क्या लागको गानक लिए भरपेट अन्न मिलन लगता है? क्या लागका गानक लिए अच्छी साग भाजी मिन्ती है? क्या लागके पटमें दूध पी अधित जाता है? इमलिए हमें चुनार करना है हानिभारक भोज-जीव और पीष्टिक भाजनक बीच गायन और मुग्धाके बीच तथा पगाधानना और म्याधाननाक बीच।

१० इस स्वामी धम या नीतिक विरुद्ध यह क्या जाता है कि यह नाति ता अनन चारा बार दीवार सडा करव उमक बीच पुत्रर भर जाने जमी है। एमा भी कहा जाता है कि यह नाति अपना हित गायनक लिए दूगरामे दूध करनकी नाति है। परन्तु ये घाएण स्वामीरा मच्छा अथ न ममानत हा पना हानी ह। यह तो बाइ नी नहा कृगा कि किलाए या उतर दखि एराक बाण्य चारको घाए कराम और दाकूरा सूनम न राका गाय। भारत

व्यापार चोरी और लूट नहा तो और क्या है? हम स्वदेशी धमका पालन करके ग्रामोद्योगिके सिद्धान्त पर अथ रचना कर तो हो सकता है कि देशी और परदेशी मिलवालोका घाघा न चले। परन्तु इससे दुनियाका क्या नुकसान होगा? दुनियासे तो उतना गोपण और उतनी निरकुशता ही कम होगी। जा लोग अनुचित रीतिसे धन कमाते या सत्ता भागते ह उनके उस धन और सत्ताका नाश हो जाय तो इसमें उनका और जगतका लाभ ही है। जिन पड़ोसियाके बीच हम रात दिन जीवन बिताते ह जिनके और हमारे बीच कई मामलामें आपसी सम्बन्ध हो गय ह और होते रहते ह उन्हीके साथ हमारा व्यवहार पहले होना चाहिये। इस तरहके व्यवहारकी उपेक्षा करके सारी दुनियाके साथ व्यवहारका नाता जोड़नमें दम और ढोग ही होगा। और स्वदेशीके द्वारा जिस व्यवहारको तोड़नके लिए कहा जाता है वह ता गोपण और गापितके बीचका अत्याचारी और गुलामके बीचका व्यवहार है, मजदूरीसे अथवा बुटिल प्रयोगा द्वारा बाधा गया व्यवहार है। स्वावलम्बी और समान वलवाते समाज यदि एक-दूसरेसे स्वेच्छापूर्वक गुद्ध सम्बन्ध बाधे तो इसे स्वदेशी धम मना नहीं करता। गांधीजी कहते ह स्वदेशी धमको जाननेवाला अपन कुएमें डूब नहीं मरता। जो चीज हमारे देशमें न बनती हा या भारी कष्ट ही बनती हा उसे परदेशसे द्वेष रखकर अपन ही देशमें बनाने का ता इसमें स्वदेशी धम नहीं है। स्वदेशी धमको पालनवाला परदेशीसे कभी द्वेष कर हा नहीं सकता। संपूर्ण स्वदेशीमें किसीसे भी द्वेष नहीं होता। यह सकुचित धम नहीं है। यह प्रमत्त अहिंसासे उत्पन्न हुआ सुन्दर धम है। स्वदेशीके पालनमें जो आर्थिक सम्बन्ध छोड़ने पडते ह वे तो ऐसे ह जिनमें गन्त स्वाय भरा है गोपण भरा है, दगाबाजी भरा है लूट भरी है और गुलामी भरी ह। गुद्ध आर्थिक सम्बन्ध जितने जरूरी हा उतन चात्र रहने चाहिये। और आर्थिक मामलके सिवा विद्या सत्कार आदिके दूसरे सब सम्बन्ध ता बन हा रहने चाहिये। अगुद्ध आर्थिक सम्बन्ध खतम हो जायग तो दूसरे गुद्ध सम्बन्धाने लिए अधिन गुजाइग रहनी।

यत्रोंकी भर्पाना

११ गांधीजीकी ग्रामोद्योगकी हिमायन सुनकर एसा प्रश्न पूछा जाता है कि यत्राका जा कतना शोधे हुई है उनके कारण स्थान और कानून बधन कतने हैं। दुनिया माना मिमत्त कर छात्रा हो गई है और हमारी उत्पन्न शक्ति कतना गुना बर गई है। क्या ये सब सुविधायें छोड दी जाय? गांधीजी यत्राका विरोध जरूर करते हैं परन्तु व उनसे एकाधिक विरोधी नहीं हैं।

उन्होंने यत्रवा इसलिए कभी विगय नहा किया कि वह यत्र है। व यत्रकि अनुचित उपयोगका विगय करत है तहा यत्रकि उपयोगम लाभ न हा वहा भी यत्रको दामिग करनका विराय करते ह और उम स्थितिमें यत्रका विरोध करत ह तत्र यत्र मनुष्यका सेवक बननेके बदल माप्पका अपना गुलाम बनाता है और उमकी शक्तियकि विवामका रोककर उह कुठिन बना दना है। यत्राके बागमें गांधीजीका खब उनक खेलासे हा कुठ उद्धरण देकर हम स्पष्ट करण।

१२ मेरी आपत्ति यत्रकि विरुद्ध नहा है परंतु यत्रकि मोहने विरुद्ध है। जिन यत्राका श्रम बचानेबाणे कहा जाता है उनक लिए आज लागू पर मोह मवार हो गया ह। एक तरफ श्रमकी बचत हानी हा जाती ह और दूसरा तरफ गला आत्मी यत्राक कारण बकार हाकर भूमस तडपन हुए सटका पर मारे मारे फिरत ह। समय और श्रमका बचन म जरूर चाहता ह परन्तु यह विसा खास बगवे गिए नहा परन्तु मारी मानव-जातिक गिए हाना चाहिये। म यह नही चाहता कि सम्पत्ति कुछ इन गिने लागकि हाथामें द्रष्टी हो गाय बल्कि यह चाहता ह कि मयक हाथामें इकट्ठा हा। आज तो यत्र मुन्ठीभर आदमियाको करण लागकि कथा पर मवार हानमें मन्द व रह ह। आजकी इस व्यवस्थाने तिगफ म अपना सारी शक्ति लगाकर ल रहा ह।

१३ म इतना और जानना चाहता ह कि जिनान और यत्राकी बावें गभरा साधन न रहना चाहिये। एसा हा जान पर मजदूरसि उनका शक्तिन बाहर काम नही लिया जायता और यत्र स्थायट न बनकर मारण सहायन हा जायग। मरा ध्यय मय यत्राका नाग करना नही है, परन्तु उनका मयाग बाय दना है।

१४ परन्तु यत्रा पर समाजका अधिभार कर लिया जाय ता मजदूर बगवा आर्थिक शोषण बर किया जा सकता ह और यत्राके दूमर भा बटुनम दुखराग मिगय जा सकत ह। फिर भी यत्राके सावधिन उपयोगक तिगफ तो गांधीजीका विराय वाक्य ही रहता है। एर ता यत्राका उपयोग मास कर बढ पगानर उत्पादनक गिए न हा सकता है। और बर बाग्याना पर समाजका अधिभार कितना ही बग मात्रामें कया न ब्यागि कर लिया जाय तो भा उनमें व्यवस्थापन और विरोधकारी गता बना हा रहता है। म मना पर मजदूर-बग या आम लागता अटुग नहा हा सकता। इगलिए मजदूर बगवा आर्थिक शोषण हाना मर हर जाय परन्तु दूमरा मय स्तत्रनायें ता उह नही ही मिगता। दूमरा आपत्ति यह है कि ज्या ज्या यत्राके गुपार